हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड-पञ्चांग' मिदं दकारतु॥

श्री शंकर: शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तक:

आयुसाधन विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७०, शक संवत् १९३५
सन् २०१३-२०१४, जय हिन्द संवत् ६६-६७
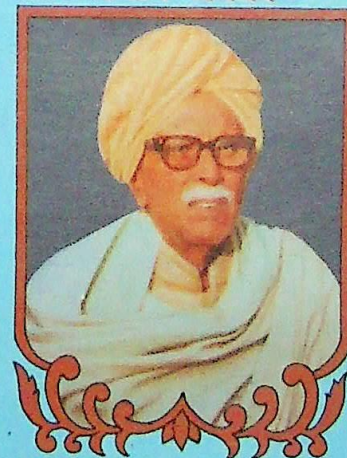
भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰पं॰श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा गुरु

मंत्री शनि

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰पं॰श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ८०वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स

टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य ८४.००

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्त्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च–** घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्त्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्त्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे–** मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्त्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	–[illegible] के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	–शुक्लपक्ष, शुक्रवार, [illegible]
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रस्तरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

आयुसाधन विशेषांक

विक्रम संवत् २०७०, शक संवत् १९३५
सन् २०१३-२०१४, जय हिन्द संवत् ६६-६७

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व.पं.श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्तण्ड पञ्चांगम्

राजा गुरु

मंत्री शनि

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व.पं.श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 86 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

मूल्य ८४.००

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०७० वि.)

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

आयुसाधन विशेषांक*

*इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 271 भी देखें।

'अभिजित् प्रकाशन',

Kothi No. 59, Sector 6, Panchkula (HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विज्ञापनपृष्ठ बारे निर्देश पृष्ठ 271 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद (मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म– श्रीशक्तिधरशर्म– श्रीमदिन्दुशेखर– शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध–स्फुट– गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांग धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र– दृग्गणितपद्धत्यनुसारि– व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष– गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव समाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड– पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक–लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः

'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2071 वि.) का विशेषांक– सं. 2071 वि. के श्री मार्तण्ड पंचांग में आयुनिर्णय के शेष बचे अन्य प्रकार विस्तार से स्पष्ट किए जाएंगे तथा इन सभी विभिन्न आयुनिर्णायक प्रकारों की विस्तृत तुलनात्मक समीक्षा भी [illegible] हो जाएगा। — प्रियव्रत शर्मा

आगामी वर्ष (सं. 2071 वि.) का विशेषांक– सं. 2071 वि. के श्री मार्तण्ड पंचांग में आयुर्निर्णय के शेष बचे अन्य प्रकार विस्तार से स्पष्ट किए जाएंगे तथा इन सभी विभिन्न आयुर्निर्णायक प्रकारों की विस्तृत तुलनात्मक समीक्षा भी यहीं की जाएगी। इस वर्ष आयुर्निर्णय पर हमारा यह विवेचन सम्पन्न हो जाएगा। — प्रियव्रत शर्मा

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक " व्रत–पर्व विवेक" पर आधारित)

जनवरी (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
इंग्लिश नववर्ष 2013 ई. प्रारम्भ	1 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	12 जन.	श.
मकर–संक्रान्ति	13 जन.	र.
माघस्नान प्रारम्भ	27 जन.	र.
पौषी पूर्णिमा	27 जन.	र.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	30 जन.	बु.

फरवरी (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
महोदययोग	9 फर.	श.
मौनी अमावस	10 फर.	र.
महाकुम्भ प्रयाग–प्रमुखस्नान	10 फर.	र.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	13 फर.	बु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	13 फर.	बु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	14 फर.	गु.
लक्ष्मी, सरस्वती पूजा	14 फर.	गु.
रथसप्तमी (आरोग्य सप्तमी) (पूर्वारुणोदय वाली)	17 फर.	र.
भीष्माष्टमी	18 फर.	चं.
भीष्म द्वादशी	22 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	25 फर.	चं.
माघस्नान समाप्त	25 फर.	चं.

मार्च (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च	र.
होलाष्टक प्रारम्भ	19 मार्च	मं.
महाविषुवदिन	20 मार्च	बु.
गोविन्द द्वादशी	24 मार्च	र.
होलिकादहन (प्रदोष में)	26 मार्च	मं.
होलाष्टक समाप्त	27 मार्च	बु.
वसन्तोत्सव	28 मार्च	गु.

अप्रैल (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
वारुणीपर्व	7 अप्रै.	र.
चान्द्र संवत् 2069 वि. पूर्ण	10 अप्रै.	बु.
चान्द्र संवत् 2070 वि. प्रा.	11 अप्रै.	गु.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	11 अप्रै.	गु.
वर्षफलश्रवण	11 अप्रै.	गु.
तैलाभ्यंग / ध्वजारोहण	11 अप्रै.	गु.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	श.
गौरी तृतीया (गणगौर)	13 अप्रै.	श.
आन्दोलन तृतीया	13 अप्रै.	श.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	15 अप्रै.	चं.
नागपंचमी	15 अप्रै.	चं.
हयव्रत	15 अप्रै.	चं.
स्कन्द षष्ठी	16 अप्रै.	मं.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	18 अप्रै.	गु.
श्रीरामनवमी	19 अप्रै.	शु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	19 अप्रै.	शु.
नवरात्र–व्रतपारणा	20 अप्रै.	श.
दोलोत्सव	22 अप्रै.	चं.
विष्णुदमनोत्सव	23 अप्रै.	मं.
अनंग त्रयोदशी	23 अप्रै.	मं.
शिवदमनोत्सव	24 अप्रै.	बु.
श्रीमहावीर जयन्ती	24 अप्रै.	बु.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	25 अप्रै.	गु.
चन्द्रग्रहण(भारत में दृष्य)	25 अप्रै.	

मई (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
श्रीपरशुराम जयन्ती	12 मई	र.
अक्षय तृतीया	13 मई	चं.
श्रीगंगा–जन्म	17 मई	शु.
श्रीजानकी–जयन्ती	19 मई	र.
श्रीनृसिंह–जयन्ती	23 मई	गु.
श्रीकूर्म–जयन्ती	24 मई	शु.
वैशाखी पूर्णिमा	25 मई	श.
श्रीबुद्धजयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा,	25 मई	श.
वैशाखस्नान समाप्त	25 मई	श.

जून (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
भद्रकाली एकादशी (पं.)	4 जून	मं.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	8 जून	श.
भावुका अमावस	8 जून	श.
रम्भा तृतीया (पूर्वविद्धा)	11 जून	मं.
अरण्य षष्ठी	15 जून	श.
विन्ध्यवासिनी–पूजा	15 जून	श.
श्रीगंगा दशहरा	18 जून	मं.
निर्जला एकादशी व्रत	18 जून	मं.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	23 जून	र.

जुलाई (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
रथयात्रा (पुरी)	10 जुला.	बु.
कुमार षष्ठी	14 जुला.	र.
विवस्वत् सप्तमी	15 जुला.	चं.
विष्णुशयनोत्सव	19 जुला.	शु.
गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)	22 जुला.	चं.
कोकिला व्रत	22 जुला.	चं.
शिवशयनोत्सव	22 जुला.	चं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	22 जुला.	चं.

अगस्त (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
हरियाली अमावस	6 अग.	मं.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	9 अग.	शु.
नागपंचमी	11 अग.	र.
श्रीदुर्गाष्टमी	14 अग.	बु.
ऋक् उपाकर्म	20 अग.	मं.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	20 अग.	मं.
रक्षाबन्धन (राखी)	20 अग.	मं.
श्रावणी पूर्णिमा	21 अग.	बु.
बहुला चतुर्थी	24 अग.	श.
श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी	24 अग.	श.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.)	28 अग.	बु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	29 अग.	गु.
श्रीगुग्गा नवमी	29 अग.	गु.

सितंबर (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तिथि	वार
कुशोत्पाटिनी अमावस	5 सितं.	गु.
पिठोरी अमावस	5 सितं.	गु.
साम उपाकर्म	7 सितं.	श.
हरितालिका तृतीया	8 सितं.	र.
गौरी तृतीया	8 सितं.	र.
कलंक चतुर्थी	8 सितं.	र.
सिद्धिविनायक व्रत	9 सितं.	चं.
ऋषि पंचमी	10 सितं	मं.
सूर्य षष्ठी व्रत	11 सितं.	बु.
श्रीराधाष्टमी	12 सितं.	गु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	12 सितं.	गु.
बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)	14 सितं.	श.
श्रीवामन जयन्ती	16 सितं.	चं.
अनन्त चतुर्दशी	18 सितं.	बु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	19 सितं.	गु.
पूर्णिमा श्राद्ध	19 सितं.	गु.
महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ	20 सितं.	शु.
चन्द्रषष्ठी व्रत	24 सितं.	मं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	26 सितं.	[illegible]

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

अक्तूबर (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
महालय श्राद्ध समाप्त	4 अक्तू.	शु.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	5 अक्तू.	श.
उपांगललिता व्रत	9 अक्तू.	बु.
सरस्वती आवाहन्	10 अक्तू.	गु.
सरस्वती पूजन	11 अक्तू.	शु.
सरस्वती के लिए बलिदान	12 अक्तू.	श.
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	12 अक्तू.	श.
महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए)	12 अक्तू.	श.
महानवमी (बलिदान के लिए)	13 अक्तू.	र.
नवरात्र समाप्त	13 अक्तू.	र.
सरस्वती विसर्जन	13 अक्तू.	र.
विजयादशमी (दशहरा)	13 अक्तू.	र.
भरतमिलाप	14 अक्तू.	चं.
कोजागर व्रत	18 अक्तू.	शु.
शरत् पूर्णिमा	18 अक्तू.	शु.
महर्षि वाल्मीकि–जयन्ती	18 अक्तू.	शु.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	18 अक्तू.	शु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	22 अक्तू.	मं.
अहोई अष्टमी (पंजाब–हरियाणा)	27 अक्तू.	र.
गोवत्स द्वादशी	31 अक्तू.	गु.

नवम्बर (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
धन त्रयोदशी	1 नवं.	शु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	1 नवं.	शु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	2 नवं.	श.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	3 नवं.	र.
अन्नकूट, गोवर्धनपूजा	4 नवं.	चं.
बलिपूजा, गोक्रीड़ा	4 नवं.	चं.
यमद्वितीया, भाई दूज	5 नवं.	मं.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	5 नवं.	मं.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	8 नवं.	शु.
गोपाष्टमी	10 नवं.	र.
अक्षय नवमी	11 नवं.	चं.
कूष्माण्ड नवमी	11 नवं.	चं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	13 नवं.	बु.
हरिप्रबोधोत्सव	14 नवं.	गु.
तुलसी विवाह	14 नवं.	गु.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	14 नवं.	गु.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	15 नवं.	शु.
कार्तिक पूर्णिमा	17 नवं.	र.
श्री गुरुनानक जयन्ती	17 नवं.	र.
कार्तिकस्नान समाप्त	17 नवं.	र.
भीष्म पंचक समाप्त	17 नवं.	र.
त्रिपुरोत्सव	17 नवं.	र.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	25 नवं.	चं.

दिसंबर (सन् 2013 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
स्कन्द–गुह षष्ठी	7 दिसं.	श.
चम्पा षष्ठी	8 दिसं.	र.
मित्र सप्तमी	8 दिसं.	र.
श्रीगीता जयन्ती	13 दिसं.	शु.
श्रीदत्त जयन्ती	16 दिसं.	चं.

जनवरी (सन् 2014 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
इंग्लिश नववर्ष 2014 ई. प्रारम्भ	1 जन.	बु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	चं.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	मं.
माघस्नान प्रारम्भ	16 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	16 जन.	गु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	19 जन.	र.
मौनी अमावस	30 जन.	गु.

फरवरी (सन् 2014 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
गौरी तृतीया (गोंतरी)	2 फर.	र.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	2 फर.	र.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	4 फर.	मं.
लक्ष्मी, सरस्वती पूजन	4 फर.	मं.
रथसप्तमी (आरोग्य सप्तमी) (पूर्वारुणोदय वाली)	6 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	7 फर.	शु.
भीष्म द्वादशी	11 फर.	मं.
माघी पूर्णिमा	14 फर.	शु.
माघस्नान समाप्त	14 फर.	शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर.	गु.

मार्च (सन् 2014 ई.)

व्रत–पर्व	तारीख	वार
होलाष्टक प्रारम्भ	8 मार्च	श.
गोविन्द द्वादशी	12 मार्च	बु.
होलिकादहन (प्रदोष में)	16 मार्च	र.
होलाष्टक समाप्त	16 मार्च	र.
वसन्तोत्सव	17 मार्च	चं.
महाविषुव दिन	20 मार्च	गु.
बारुणीपर्व	28 मार्च	शु.
चान्द्र संवत् 2070 वि. पूर्ण	30 मार्च	र.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2071) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
सन् 2014 ई.	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	31 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	7 अप्रै.
श्री रामनवमी	8 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	13 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	1 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	14 मई
श्री गंगा दशहरा	8 जून
गुरु पूर्णिमा	12 जुला.
रक्षाबन्धन	10 अग.
संकष्ट चतुर्थी	13 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	17 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	18 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	8 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	25 अक्तू.
श्री दुर्गाष्टमी	2 अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	3 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	7 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	8 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	11 अक्तू.
दीपावली	23 अक्तू.
भाई दूज	25 अक्तू.
श्री गुरु नानक जयन्ती	6 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	14 नवं.
(सन् 2015 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	24 जन.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	3 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	17 फर.

(पूर्वारुणोदय वाली) 2 नवं. श.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा 3 नवं. र.
इंग्लिश नववर्ष 2014 ई. प्रारम्भ 1 जन. बु.
चान्द्र संवत् 2070 वि. पूर्ण 30 मार्च र.
श्री गुरु रविदास जयन्ती 3 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत 17 फर.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक) —(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2013 ई.)

मास/पक्ष	तिथि
पौष कृष्ण	8 जन.
पौष शुक्ल	22 जन.
माघ कृष्ण	6 फर.
माघ शुक्ल	21 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	7 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	23 मार्च
चैत्र कृष्ण	6 अप्रै.
चैत्र शुक्ल	22 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	5 मई
वैशाख शुक्ल	21 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	4 जून
ज्येष्ठ शुक्ल (स्मा.)	19 जून
आषाढ़ कृष्ण	3 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	19 जुला.
श्रावण कृष्ण	2 अग.
श्रावण शुक्ल	17 अग.
भाद्रपद कृष्ण	1 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (स्मा.)	15 सितं.
आश्विन कृष्ण	30 सितं.
आश्विन शुक्ल	15 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	30 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	13 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	29 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	13 दिसं.
पौष कृष्ण	28 दिसं.
पौष शुक्ल (सन् 2014 ई.)	11 जन.
माघ कृष्ण	27 जन.
माघ शुक्ल	10 फर.
फाल्गुन कृष्ण (स्मा.)	25 फर.
फाल्गुन शुक्ल	12 मार्च
चैत्र कृष्ण	27 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)
वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2013 ई.)

पक्ष	तिथि
पौष शुक्ल	12 जन.
माघ कृष्ण	28 जन.
माघ शुक्ल	11 फर.
फाल्गुन कृष्ण	26 फर.
फाल्गुन शुक्ल	12 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च
चैत्र शुक्ल	11 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	26 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	11 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	26 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	9 जून
आषाढ़ कृष्ण	24 जून
आषाढ़ शुक्ल	9 जुला.
श्रावण कृष्ण	23 जुला.
श्रावण शुक्ल	7 अग.
भाद्रपद कृष्ण	21 अग.
भाद्रपद शुक्ल	6 सितं.
आश्विन कृष्ण	20 सितं.
आश्विन शुक्ल	5 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	19 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	4 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	18 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	3 दिसं.
पौष कृष्ण	18 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
पौष शुक्ल	2 जन.
माघ कृष्ण	17 जन.
माघ शुक्ल	31 जन.
फाल्गुन कृष्ण	15 फर.
फाल्गुन शुक्ल	2 मार्च
चैत्र कृष्ण	17 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	26 जन.
माघ	25 फर.
फाल्गुन	26 मार्च
चैत्र	25 अप्रै.
वैशाख	24 मई
ज्येष्ठ	22 जून
आषाढ़	22 जुला.
श्रावण	20 अग.
भाद्रपद	18 सितं.
आश्विन	18 अक्तू.
कार्तिक	17 नवं.
मार्गशीर्ष	16 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
पौष	15 जन.
माघ	14 फर.
फाल्गुन	16 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2013 ई.)

जयन्ती	तिथि
श्रीमत्स्य जयन्ती	13 अप्रै.
श्रीरामनवमी	19 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	12 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	23 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	24 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	25 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	12 अग.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	28 अग.
श्रीवराह जयन्ती	8 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	16 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	1 जन.
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	30 जन.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च
वैशाख	28 अप्रै.
ज्येष्ठ	28 मई
आषाढ़	26 जून
श्रावण	25 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	24 अग.
आश्विन	22 सितं.
कार्तिक	22 अक्तू.
मार्गशीर्ष	21 नवं.
पौष	21 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	19 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	20 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	15 जन.
माघ	13 फर.
फाल्गुन	15 मार्च
चैत्र	14 अप्रै.
वैशाख	14 मई
ज्येष्ठ	12 जून
आषाढ़	12 जुला.
श्रावण	10 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन	8 अक्तू.
कार्तिक	6 नवं.
मार्गशीर्ष	6 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
पौष	4 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	4 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2013 ई.)

मास/पक्ष	तिथि
पौष कृष्ण	9 जन.
पौष शुक्ल	24 जन.
माघ कृष्ण	8 फर.
माघ शुक्ल (शनि)	23 फर.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	9 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	24 मार्च
चैत्र कृष्ण	7 अप्रै.
चैत्र शुक्ल (भौम)	23 अप्रै.
वैशाख कृष्ण (भौम)	7 मई
वैशाख शुक्ल	22 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	5 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	21 जून
आषाढ़ कृष्ण	5 जुला.
आषाढ़ शुक्ल (शनि)	20 जुला.
श्रावण कृष्ण	4 अग.
श्रावण शुक्ल	18 अग.
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	2 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (भौम)	17 सितं.
आश्विन कृष्ण	2 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	16 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	1 नवं.
कार्तिक शुक्ल	15 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	30 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (शनि)	14 दिसं.
पौष कृष्ण (सोम)	30 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
पौष शुक्ल (सोम)	13 जन.
माघ कृष्ण (भौम)	28 जन.
माघ शुक्ल	12 फर.
फाल्गुन कृष्ण	27 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	28 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	10 मार्च
चैत्र	8 अप्रै.
वैशाख	8 मई
ज्येष्ठ	6 जून
आषाढ़	6 जुला.
श्रावण	5 अग.
भाद्रपद	03 सितं.
आश्विन	03 अक्तू.
कार्तिक	1 नवं.
मार्गशीर्ष	1 दिसं.
पौष	30 दिसं.
माघ (सन् 2014 ई.)	29 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	27 फर.
चैत्र	29 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2013 ई.) (स्नान–दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

मास	तिथि
पौष	27 जन.
माघ	25 फर.
फाल्गुन	27 मार्च
चैत्र	25 अप्रै.
वैशाख	25 मई
ज्येष्ठ	23 जून
आषाढ़	22 जुला.
श्रावण	21 अग.
भाद्रपद	19 सितं.
आश्विन	18 अक्तू.
कार्तिक	17 नवं.
मार्गशीर्ष	17 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
पौष	16 जन.
माघ	14 फर.
फाल्गुन	16 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2013 ई.)

मास	तिथि
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ) (2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	11 जन.
माघ	10 फर.
फाल्गुन (सोमवती)	11 मार्च
चैत्र	10 अप्रै.
वैशाख	9 मई
ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	8 जून
आषाढ़ (सोमवती)	8 जुला.
श्रावण (भौमवती)	6 अग.
भाद्रपद	5 सितं.
आश्विन	4 अक्तू.
कार्तिक	3 नवं.
मार्गशीर्ष (सोमवती)	2 दिसं.
(सन् 2014ई.)	
पौष	1 जन.
माघ	30 जन.
फाल्गुन (शनैश्चरी)	1 मार्च
चैत्र	30 मार्च

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	19 जन.
माघ	18 फर.
फाल्गुन	20 मार्च
चैत्र	18 अप्रै.
वैशाख	18 मई
ज्येष्ठ	17 जून
आषाढ़	16 जुला.
श्रावण	14 अग.
भाद्रपद	13 सितं.
आश्विन	12 अक्तू.
कार्तिक	10 नवं.
मार्गशीर्ष	9 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	7 फर.
फाल्गुन	8 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	5 जन.
माघ	3 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रै.
वैशाख	2 मई
ज्येष्ठ	31 मई
आषाढ़	30 जून
श्रावण	29 जुला.
भाद्रपद	28 अग.
आश्विन	27 सितं.
कार्तिक	27 अक्तू.
मार्गशीर्ष	25 नवं.
पौष	25 दिसं.
(सन् 2014ई.)	
माघ	24 जन.
फाल्गुन	22 फर.
चैत्र	23 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी (श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व) (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी) (2013 ई.)

मास	तिथि
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	9 मार्च
चैत्र	8 अप्रै.
वैशाख	7 मई
ज्येष्ठ	6 जून
आषाढ़	6 जुला.
श्रावण	4 अग.
भाद्रपद	3 सितं.
आश्विन	3 अक्तू.
कार्तिक	1 नवं.
मार्गशीर्ष	1 दिसं.
पौष	30 दिसं.
माघ (सन् 2014 ई.)	29 जन.
फाल्गुन	27 फर.
चैत्र	28 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2013 ई.)

श्राद्ध	तिथि
प्रोष्ठपदी / पूर्णिमा	19 सितं.
प्रतिपदा	20 सितं.
द्वितीया	21 सितं.
तृतीया	21 सितं.
चतुर्थी	22 सितं.
भरणी श्राद्ध	23 सितं.
पंचमी	24 सितं.
षष्ठी	25 सितं.
सप्तमी	26 सितं.
अष्टमी	27 सितं.
*नवमी	28 सितं.
दशमी	29 सितं.
एकादशी	30 सितं.
* द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध	1 अक्तू.
त्रयोदशी	2 अक्तू.
✕ चतुर्दशी	3 अक्तू.
सर्वपितृ, अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	4 अक्तू.
नाना / नानी का श्राद्ध	5 अक्तू.

*सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

*संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

✕ शस्त्र–विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

नोट— 23 सितंबर को कोई श्राद्धतिथि घटित नहीं होती। यहां केवल भरणीश्राद्ध ही बना है।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2013 ई.)

त्योहार	तिथि
नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	29 मार्च
ईस्टर सण्डे	31 मार्च
क्रिसमस डे	25 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
नया साल प्रारम्भ	1 जन.

(सन् 2014ई.)						
माघ	24 जन.	माघ (सन् 2014 ई.)	29 जन.	... का श्राद्ध, मघा श्राद्ध	1 अक्टू.	... कोई श्राद्धतिथि घटित नहीं होती। यहां
फाल्गुन	22 फर.	फाल्गुन	27 फर.			केवल भरणीश्राद्ध ही बना है।
चैत्र	23 मार्च	चैत्र	28 मार्च	त्रयोदशी	2 अक्टू.	

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2013 ई.)	
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	2 जन.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	7 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	8 फर.
मर्यादा महोत्सव	17 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	20 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	24 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	20 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	14 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	22 जुला.
चातुर्मास्य व्रत–नियम आदि प्रारम्भ	22 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	2 सितं.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	3 सितं.
संवत्सरी महापर्व	10 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	11 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	14 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	17 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	3 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	5 नवं.
ज्ञानपंचमी	7 नवं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	17 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	28 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	22 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	27 दिसं.
(सन् 2014 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	29 जन.
मर्यादा महोत्सव	6 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2013 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
स्वामी विवेकानन्द	3 फर.
श्रीरामानन्दाचार्य	3 फर.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	12 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	25 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	7 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	13 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	27 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	5 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	9 मई
श्रीछत्रपति शिवाजी	12 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	15 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	16 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	11 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	13 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्टू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्टू.
महाराज अग्रसेन जी	5 अक्टू.
श्रीमाध्वाचार्य	14 अक्टू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्टू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाँई बाबा	23 नवं.
श्रीवीर वैरागी	15 नवं.
(सन् 2014 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
स्वामी विवेकानन्द	23 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	1 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	14 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	24 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	3 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	16 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2013 ई.)	
चेहल्म	3 जन.
आखिरी चहार शम्बा	9 जन.
शहादत–ए–इमाम हसन	11 जन.
ईद–ए–मिलाद	25 जन.
ईद–ए–मौलाद	30 जन.
फतिहायज़दहुम	22 फर.
जन्म श्री हज़रत अली	24 मई
शब–ए–मिराज	7 जून
शब–ए–बरात	25 जून
रमज़ान का पहला दिन	11 जुला.
शहादत–ए–हज़रत अली	31 जुला.
जमतुल विदा	2 अग.
शब–ए–कद्र	6 अग.
ईद–उल–फित्र	9 अग.
इदुलज्जुहा	16 अक्टू.
मुहर्रम (ताज़िया)	14 नवं.
चेहल्म	23 दिसं.
(सन् 2014ई.)	
आखिरी चहार शम्बा	1 जन.
शहादत–ए–इमाम हसन	1 जन.
ईद–ए–मिलाद	14 जन.
ईद–ए–मौलाद	19 जन.
फतिहायज़दहुम	12 फर.

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्र-दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त, व्रतपर्व, तेज़ी–मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है– यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं–

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरणप्रवेश, वक्रता–मार्गिता, उदयास्त, लोप–दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व–निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त–गणित–फलित–सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हूँ–यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला– 134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिकदलों के चुनावचक्र में जय–पराजय, राजनेताओं का उत्थान–पतन; पाक्षिक–मासिक–वार्षिक फलादेश, यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति–विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवम् वायदा–हाज़र बाज़ार के चांस, सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक–मासिक–पाक्षिक–दैनिक तेजी–मन्दी– सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए–

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
PHONE: 0160-2641 277, FAX- 0160-2641 577

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उसके लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

—सम्पादक मण्डल

सिक्ख–पर्व (सं. 2070 वि.) (सन् 2013–14 ई.)

सिक्ख–पर्व संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2013 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख.			संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2013 ई.)			
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	संक्रान्ति*
श्री गुरु नानकदेव जी	17 नवं., 2013 ई.	अवतार दिन से	29 सितं., 2013 ई.	17 नवं., 2013 ई.	अवतार दिन से	22 सितम्बर	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, श्री अमृतसर की ओर से प्रकाशित मासिक–पत्रिका 'गुरुमत प्रकाश' (अप्रैल, 2010 ई.) के पृष्ठ 89 के अनुसार तारा अंकित पर्व और संक्रान्ति अब पुरातन परम्परा (विक्रमी) के अनुसार ही हुआ करेंगे।
श्री गुरु अंगददेव जी	11 मई, 2013 ई.	24 सितं., 2013 ई.	14 अप्रै. 2013 ई.	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल	
श्री गुरु अमरदास जी	24 मई, 2013 ई.	11 अप्रै. 2013 ई.	19 सितं., 2013 ई.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर	
श्री गुरु रामदास जी	20 अक्तू., 2013 ई.	17 सितं, 2013 ई.	8 सितं., 2013 ई.	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर	
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	1 मई., 2013 ई.	7 सितं., 2013 ई.	12 जून, 2013 ई.	2 मई	16 सितम्बर	12 जून,*	
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	24 जून, 2013 ई.	1 जून, 2013 ई.	15 अप्रै. 2013 ई.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च	
श्री गुरु हरिराय जी	12 फर., 2014 ई.	28 मार्च, 2014 ई.	28 अक्तू, 2013 ई.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर	
श्री गुरु हरकिशन जी	31 जुला., 2013 ई.	28 अक्तू, 2013 ई.	24 अप्रै., 2013 ई.	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल	
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	30 अप्रै., 2013 ई.	24 अप्रै., 2013 ई.	7 दिसं., 2013 ई.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	7 जन., 2014 ई.	5 दिसं., 2013 ई.	7 नवं., 2013 ई.	18 जनवरी, 2013*	24 नवम्बर	7 नवं., 2013 ई.*	
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	13 अप्रैल, 2013 ई.		13 अप्रैल, 2013 ई.*			
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	6 सितंबर, 2013 ई.		1 सितंबर, 2013 ई.			
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्त्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	5 नवंबर, 2013 ई.		5 नवंबर, 2013 ई.*			

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

इंग्लिश नववर्ष (2013 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	श्रीराम नवमी	19 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	24 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	12 अक्तू.
पोंगल	14 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	24 मई	दशहरा	13 अक्तू.
*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	18 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	25 मई	इदुलज्जुहा	16 अक्तू.
ईद–ए–मिलाद	25 जन.	रथयात्रा (पुरी)	10 जुला.	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	18 अक्तू.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	जमतुलविदा	2 अग.	दीपावली	3 नवं.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	25 फर.	इदुल–फित्र	9 अग.	भाई दूज	5 नवं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	10 मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	मुहर्रम (ताज़िया)	14 नवं.
गुड फ्राई डे	29 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	20 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	17 नवं.
गुड़ी पड़वा	11 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	24 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स.)	28 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.
विशु (केरल)	13 अप्रै.	ओणम (केरल)	16 सितं.		

(सन् 2014 ई.)	
इंग्लिश नववर्ष (2014 ई.) प्रारम्भ	1 जन.
*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	7 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
पोंगल	14 जन.
ईद–ए–मिलाद	14 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	14 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर.
होला, वसन्तोत्सव	17 मार्च

* श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी का अवतारपर्व संशोधित नानकशाही Calander के अनुसार पौष शुक्ल सप्तमी को ही मनाया जाना चाहिए।

वेशु (केरल)	13 अप्रै.	ओणम			

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2013 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2013 ई.	
लोहड़ी दांऊ (मोहाली) (पं.)	13 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) (पं.)	13 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	13 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	19 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	25 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	29 जन.
फरवरी 2013 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
वसन्त पंचमी	14 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	23 फर.
मार्च 2013 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	10 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	10 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	28 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	31 मार्च
अप्रैल 2013 ई.	
श्री दीरमदास, बघौछी (पटियाला)	2 अप्रै.
शीतला माता (कुराली) पं.	4 अप्रै.
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	9 अप्रै.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रै.
माईसरखाना (पं.)	16 अप्रै.
मेला नरीसैंभरी, मथुरा (उ.प्र.)	18 अप्रै.

नाम मेला/पर्व (सन् 2013 ई.)	तारीख
श्रीमनसादेवी (हरि.)	18 अप्रै.
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	18 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल–गुरदासपुर)	18 अप्रै.
ज.दि. भाई दित्त सिंह ज्ञानी,	21 अप्रै.
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	24 अप्रै.
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	24 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	24 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
मई 2013 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
पिंजौर (हरि.)	10 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज. दि. सं. बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	19 मई
जून 2013 ई.	
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	14 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझा) सोलन	14 जून
पुण्यतिथि सतुगुरु साईं टेऊँराम जी सप्त– सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	14 जून
क्षीर भवानी (ज़म्मू–काश्मीर)	17 जून
श्रीगंगा दशहरा	18 जून
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	19 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	20 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	20 जून
मेला पीरमीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	21 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	23 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2013 ई.)	तारीख
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	28 जून
जुलाई 2013 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा(पं.)/ बड़ू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
जयन्ती सतुगुरु साईं टेऊँराम जी सप्त– सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	14 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	17 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली), पं.	22 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	22 जुला.
अगस्त 2013 ई.	
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी(झाड़ साहिब वाले) गु. श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	12 अग.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	14 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	14 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	21 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	28 अग.
सितंबर 2013 ई.	
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	3 सितं.
ब. भ. दित्त सिंह ज्ञानी	6 सितं.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	7 सितं.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2013 ई.)	तारीख	नाम मेला/पर्व (सन् 2013 ई.)	तारीख	नाम मेला/पर्व (सन् 2014 ई.)	तारीख
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	9 सितं.	बाल मेला	14 नवं.	ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	10 सितं.	ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	15 नवं.	ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	10 सितं.	मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	16 नवं.	**फरवरी 2014 ई.**	
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	11 सितं.	श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	17 नवं.	वसन्त पंचमी	4 फर.
गुरुगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	13 सितं.	कपालमोचन (हरि.)	17 नवं.	बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	16 सितं.	श्रीपुष्करराज (राज.)	17 नवं.	ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	12 फर.
बाबा सोढल (जालन्धर)	18 सितं.	**दिसम्बर 2013 ई.**		श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	27 फर.
छपार (पं.)	18 सितं.	पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	2 दिसं.	नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	27 फर.
श्रीगोईदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	19 सितं.	ब. सं. बा. विसाखा सिंह, दुदेहर सा.(तरनतारन)	5 दिसं.	**मार्च 2014 ई.**	
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	21 सितं.	ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	12 दिसं.	ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
अक्तूबर 2013 ई.		ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.	होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	17 मार्च
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	4 अक्तू.	ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा–हरि.)	24 दिसं.	श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	18 मार्च
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	12 अक्तू.	जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.	शीतला माता (कुराली) पं.	20 मार्च
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	12 अक्तू.	संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं	श्री गुरु रामराय (देहरादून)	21 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	12 अक्तू.	ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.	ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	13 अक्तू.	**जनवरी सन् 2014 ई.**		पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	29 मार्च
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	17 अक्तू.	लोहड़ी दाऊ (मोहाली) (पं.)	14 जन.		
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	17 अक्तू.	लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) (पं.)	14 जन.		
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	17 अक्तू.	मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.		
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.	ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.		
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	29 अक्तू.				
नवंबर 2013 ई.					
दीपावली (अमृतसर)	3 नवं.				
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	13 नवं.				
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	13 नवं.				

यदि आप चाहते हैं कि– आपके नगर/ ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस सूची में प्रविष्ट किया जाए तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख, जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो– पूर्ण विवरणसहित लिख भेजें– धन्यवाद। – सम्पादक

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2070 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

स्थान	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.) स्मार्त / वैष्णव
	28 अप्रै., 2013 ई. घं. मि.	28 मई, 2013 ई. घं. मि.	26 जून 2013 ई. घं. मि.	25 जुला. 2013 ई. घं. मि.	24 अग. 2013 ई. घं. मि.	22 सितं. 2013 ई. घं. मि.	22 अक्तू. 2013 ई. घं. मि.	21 नवं., 2013 ई. घं. मि.	21 दिसं., 2013 ई. घं. मि.	13 जन., 2014 ई. घं. मि.	18 फर., 2014 ई. घं. मि.	20 मार्च, 2014 ई. घं. मि.	28/29 अग., 2013 घं. मि.
अजमेर	21 53	22 29	21 55	21 11	21 04	20 20	20 27	20 48	21 15	20 53	21 26	22 10	23 55
अमृतसर	22 02	22 37	21 59	21 12	20 59	20 12	20 16	20 38	21 09	20 50	21 28	22 17	23 44
अलवर	21 47	22 23	21 48	21 04	20 55	20 10	20 17	20 38	21 06	20 44	21 19	22 03	23 45
अलीगढ़	21 41	22 16	21 42	20 58	20 49	20 04	20 10	20 31	20 59	20 38	21 13	21 58	23 38
अहमदाबाद	21 55	22 33	22 00	21 19	21 16	20 33	20 42	21 02	21 27	21 03	21 33	22 14	24 09
आगरा	21 40	22 17	21 41	20 58	20 50	20 05	20 12	20 33	21 00	20 39	21 13	21 57	23 39
इलाहाबाद	21 21	21 58	21 24	20 41	20 36	19 51	19 59	20 20	20 46	20 24	20 56	21 38	23 27
उज्जैन	21 42	22 21	21 47	21 06	21 03	20 20	20 29	20 49	21 14	20 50	21 20	22 01	23 56
उदयपुर(रा.)	21 53	22 31	21 57	21 15	21 10	20 26	20 35	20 55	21 21	20 58	21 30	22 11	24 02
ऊना	21 56	22 31	21 53	21 06	20 53	20 06	20 11	20 32	21 03	20 44	21 23	22 11	23 38
कपूरथला	22 00	22 34	21 56	21 10	20 57	20 10	20 15	20 36	21 07	20 48	21 26	22 14	23 42
करनाल	21 49	22 25	21 48	21 03	20 52	20 06	20 11	20 33	21 0.2	20 42	21 18	22 05	23 39
कांगड़ा	21 57	22 32	21 53	21 06	20 53	20 05	20 10	20 31	21 02	20 43	21 23	22 12	23 37
कानपुर	21 29	22 06	21 31	20 48	20 41	19 56	20 04	20 24	20 51	20 29	21 03	21 46	23 31
कुरुक्षेत्र	21 51	22 26	21 49	21 03	20 53	20 06	20 12	20 33	21 02	20 42	21 19	22 06	23 39
कुल्लू	21 54	22 28	21 50	21 03	20 50	20 02	20 07	20 28	20 59	20 40	21 19	22 08	23 34
कोटा	21 45	22 23	21 49	21 06	21 01	20 17	20 25	20 45	21 11	20 49	21 21	22 03	23 52
कोलकाता	20 48	21 27	20 55	20 14	20 11	19 29	19 38	19 58	20 22	19 58	20 28	21 08	23 05
गुरदासपुर	22 01	22 35	21 57	21 10	20 56	20 09	20 13	20 35	21 06	20 47	21 26	22 15	23 41
ग्वालियर	21 38	22 15	21 40	20 57	20 50	20 06	20 13	20 34	21 01	20 39	21 12	21 55	23 41
चण्डीगढ़	21 52	22 27	21 50	21 03	20 52	20 05	20 10	20 31	21 01	20 42	21 20	22 07	23 37
चम्बा	21 59	22 33	21 54	21 07	20 53	20 05	20 09	20 31	21 02	20 44	21 24	22 13	23 37
चूरु	21 55	22 31	21 55	21 10	21 01	20 16	20 22	20 43	21 12	20 51	21 26	22 11	23 50
चेन्नई	21 06	21 48	21 20	20 45	20 51	20 13	20 26	20 45	21 04	20 35	20 57	21 29	23 54
जम्मू	22 05	22 38	22 00	21 12	20 58	20 10	20 14	20 36	21 07	20 49	21 29	22 18	23 41
जयपुर	21 49	22 25	21 50	21 07	20 59	20 14	20 21	20 42	21 10	20 48	21 22	22 06	23 49
जालन्धर	21 59	22 33	21 55	21 09	20 57	20 09	20 14	20 36	21 06	20 47	21 25	22 13	23 42
जोधपुर	21 59	22 36	22 01	21 18	21 11	20 27	20 34	20 55	21 22	21 00	21 33	22 16	24 02
दरभंगा	21 05	21 42	21 08	20 25	20 18	19 34	19 41	20 02	20 29	20 06	20 40	21 23	23 09
दिल्ली	21 47	22 22	21 46	21 02	20 52	20 07	20 13	20 34	21 02	20 42	21 17	22 03	23 40

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2070 वि.) (भा. स्टैं. टा.)

स्थान	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (I.S.T.)
	28 अप्रै., 2013 ई. घं. मि.	28 मई, 2013 ई. घं. मि.	26 जून 2013 ई. घं. मि.	25 जुला. 2013 ई. घं. मि.	24 अग. 2013 ई. घं. मि.	22 सित. 2013 ई. घं. मि.	22 अक्टू. 2013 ई. घं. मि.	21 नव., 2013 ई. घं. मि.	21 दिसं., 2013 ई. घं. मि.	19 जन., 2014 ई. घं. मि.	18 फर., 2014 ई. घं. मि.	20 मार्च, 2014 ई. घं. मि.	स्मार्त / वैष्णव 28/29 अग., 2013 घं. मि.
देहरादून	21 47	22 22	21 44	20 59	20 47	20 01	20 06	20 27	20 57	20 37	21 15	22 02	23 33
नागपुर	21 24	22 03	21 32	20 52	20 50	20 08	20 18	20 38	21 02	20 37	21 05	21 44	23 46
नाहन	21 50	22 25	21 47	21 01	20 50	20 03	20 08	20 30	21 00	20 40	21 18	22 05	23 36
पटना	21 16	21 53	21 19	20 36	20 30	19 46	19 54	20 14	20 41	20 18	20 51	21 33	23 21
पटियाला	21 53	22 28	21 51	21 05	20 54	20 07	20 13	20 34	21 04	20 44	21 21	22 08	23 40
पठानकोट	22 00	22 34	21 56	21 09	20 55	20 07	20 12	20 33	21 04	20 46	21 25	22 14	23 39
पुणे	21 42	22 22	21 51	21 13	21 14	20 33	20 44	21 04	21 26	21 00	21 26	22 03	24 12
फगवाड़ा	21 58	22 32	21 54	21 08	20 56	20 09	20 13	20 35	21 05	20 46	21 24	22 12	23 41
फिरोज़पुर	22 02	22 36	21 59	21 13	21 01	20 14	20 19	20 40	21 10	20 51	21 29	22 17	23 46
बंगलोर	21 17	21 59	21 32	20 56	21 02	20 24	20 38	20 57	21 16	20 47	21 08	21 40	24 05
बिलासपुर(हि.प्र.)	21 54	22 28	21 50	21 04	20 52	20 04	20 09	20 31	21 01	20 42	21 20	22 08	23 37
बीकानेर	22 01	22 37	22 02	21 17	21 09	20 23	20 30	20 51	21 19	20 58	21 33	22 18	23 57
बून्दी	21 47	22 24	21 50	21 07	21 01	20 17	20 25	20 46	21 12	20 49	21 22	22 04	23 52
भटिण्डा	21 59	22 34	21 57	21 11	21 00	20 13	20 19	20 40	21 10	20 50	21 27	22 14	23 46
भरतपुर	21 43	22 19	21 44	21 00	20 52	20 07	20 14	20 35	21 02	20 41	21 15	21 59	23 42
मण्डी	21 54	22 28	21 50	21 03	20 50	20 03	20 08	20 29	21 00	20 41	21 20	22 08	23 35
मथुरा	21 42	22 19	21 43	20 59	20 51	20 06	20 13	20 34	21 01	20 40	21 15	21 59	23 40
मुम्बई	21 47	22 27	21 56	21 17	21 17	20 37	20 48	21 07	21 30	21 04	21 30	22 07	24 15
रोपड़	21 54	22 29	21 51	21 05	20 53	20 06	20 11	20 32	21 03	20 43	21 21	22 09	23 38
रोहतक	21 49	22 25	21 49	21 04	20 54	20 08	20 15	20 36	21 04	20 44	21 20	22 05	23 42
लखनऊ	21 27	22 04	21 29	20 46	20 38	19 53	20 00	20 21	20 48	20 27	21 01	21 44	23 28
लुधियाना	21 57	22 31	21 54	21 07	20 56	20 09	20 14	20 35	21 05	20 46	21 24	22 11	23 41
वाराणसी	21 16	21 54	21 19	20 37	20 31	19 47	19 55	20 15	20 42	20 19	20 51	21 34	23 22
शिमला	21 52	22 26	21 49	21 02	20 50	20 03	20 08	20 29	21 00	20 40	21 19	22 06	23 35
श्रीनगर (का.)	22 08	22 41	22 01	21 13	20 57	20 08	20 11	20 33	21 06	20 48	21 30	22 21	23 39
संगरूर	21 55	22 30	21 53	21 07	20 56	20 10	20 15	20 36	21 06	20 46	21 23	22 10	23 43
सहारनपुर	21 48	22 23	21 46	21 00	20 50	20 03	20 09	20 30	20 59	20 39	21 16	22 03	23 36
सीकर	21 53	22 29	21 53	21 10	21 01	20 16	20 23	20 44	21 12	20 50	21 25	22 09	23 50
हरिद्वार	21 45	22 20	21 43	20 58	20 47	20 00	20 06	20 27	20 57	20 37	21 14	22 00	23 33
हिसार	21 54	22 29	21 53	21 08	20 58	20 12	20 18	20 39	21 08	20 47	21 23	22 09	23 45
होशियारपुर	21 58	22 32	21 54	21 07	20 55	20 07	20 12	20 34	21 04	20 45	21 24	22 12	23 40

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2013 से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

प्रारम्भ 2013 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013 ई.	घं.	मि.
— — —	— — —		2 जन.	12	58
9 जन.	7	24	11 जन.	2	11
17 जन.	17	40	19 जन.	21	47
27 जन.	16	29	29 जन.	18	41
5 फर.	15	19	7 फर.	11	35
14 फर.	2	59	16 फर.	6	03
24 फर.	0	16	26 फर.	1	53
4 मार्च	20	57	6 मार्च	18	13
13 मार्च	12	21	15 मार्च	14	53
23 मार्च	9	04	25 मार्च	10	48
1 अप्रै.	2	39	2 अप्रै.	23	34
9 अप्रै.	20	21	11 अप्रै.	23	06
19 अप्रै.	17	47	21 अप्रै.	20	20

प्रारम्भ 2013 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013 ई.	घं.	मि.
28 अप्रै.	10	25	30 अप्रै.	5	59
7 मई	2	40	9 मई	6	02
17 मई	1	28	19 मई	5	04
25 मई	20	23	27 मई	14	44
3 जून	8	11	5 जून	11	54
13 जून	7	55	15 जून	12	13
22 जून	7	11	24 जून	1	13
30 जून	14	23	2 जुला.	17	40
10 जुला.	13	41	12 जुला.	18	03
19 जुला.	17	04	21 जुला.	11	52
27 जुला.	22	13	30 जुला.	0	26
6 अग.	19	44	8 अग.	23	42
16 अग.	0	49	17 अग.	21	00

प्रारम्भ 2013 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013 ई.	घं.	मि.
24 अग.	7	33	26 अग.	8	38
3 सितं.	2	44	5 सितं.	6	20
12 सितं.	6	36	14 सितं.	3	51
20 सितं.	17	14	22 सितं.	17	46
30 सितं.	10	47	2 अक्तू.	14	27
9 अक्तू.	12	07	11 अक्तू.	9	16
18 अक्तू.	1	52	20 अक्तू.	2	40
27 अक्तू.	19	13	29 अक्तू.	23	30
5 नवं.	19	28	7 नवं.	15	24
14 नवं.	8	37	16 नवं.	10	14
24 नवं.	3	07	26 नवं.	8	13
3 दिसं.	5	26	5 दिसं.	0	06
11 दिसं.	14	07	13 दिसं.	16	15

प्रारम्भ 2013–14 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013–14 ई.	घं.	मि.
21 दिसं.	9	59	23 दिसं.	15	33
30 दिसं.	16	42	1 जन.	11	08
7 जन.	20	20	9 जन.	21	55
17 जन.	16	09	19 जन.	21	38
27 जन.	2	54	28 जन.	22	25
4 फर.	4	49	6 फर.	4	57
13 फर.	22	22	16 फर.	3	35
23 फर.	10	30	25 फर.	7	38
3 मार्च	15	11	5 मार्च	13	59
13 मार्च	5	17	15 मार्च	10	22
22 मार्च	16	06	24 मार्च	14	10
— —	— —		— —	— —	

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2013 से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

प्रारम्भ 2013 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013 ई.	घं.	मि.
14 जन.	6	12	18 जन.	19	24
10 फर.	16	44	15 फर.	4	09
10 मार्च	1	32	14 मार्च	13	18
6 अप्रै.	7	59	10 अप्रै.	21	29
3 मई	13	23	8 मई	4	08

प्रारम्भ 2013 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013 ई.	घं.	मि.
30 मई	19	41	4 जून	9	47
27 जून	4	03	1 जुला.	15	41
24 जुला.	14	08	28 जुला.	22	55
21 अग.	0	30	25 अग.	7	41
17 सितं.	9	32	21 सितं.	17	10

प्रारम्भ 2013–14 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2013–14 ई.	घं.	मि.
14 अक्तू.	16	24	19 अक्तू.	2	01
10 नवं.	21	50	15 नवं.	9	13
8 दिसं.	4	01	12 दिसं.	14	56
4 जन.	12	48	8 जन.	20	46
31 जन.	23	48	5 फर.	4	28

प्रारम्भ 2014 ई.	घं.	मि.	समाप्त 2014 ई.	घं.	मि.
28 फर.	10	52	4 मार्च	14	12
27 मार्च	19	53	— —	— —	

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2013 से 31 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

2013 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	6	13	20	27	—
फरवरी	3	10	17	24	—
मार्च	3	10	17	24	31
अप्रैल	7	14	21	28	—
मई	5	12	19	26	—
जून	2	9	16	23	30
जुलाई	7	14	21	28	—
अगस्त	4	11	18	25	—
सितंबर	1	8	15	22	29
अक्तूबर	6	13	20	27	—
नवंबर	3	10	17	24	—
दिसंबर	1	8	15	22	29

2014 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	5	12	19	26	—
फरवरी	2	9	16	23	—
मार्च	2	9	16	23	30

संवत् 2070 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–कुण्डलियां

(लेखक–प्रियव्रत शर्मा)

[ध्यान दें–यहां दी गईं ये कुण्डलियां विवाहमुहूर्तकालिक लग्न के निर्णय में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगी। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गईं इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयमपि लग्न की शुद्धि/अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अनायास ही कर सकते हैं।]
(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

यद्यपि जातकपद्धति एवम् ताजिक ग्रन्थों में द्वादश–भाव–साधनपूर्वक बनाई गई भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जन्मकुण्डली (राशिकुण्डली) को ही जातक एवम् प्रश्नसम्बन्धी फलादेश तथा मुहूर्त्त, मेलापक आदि में प्रयुक्त करने की परम्परा बनाए हुए हैं। जन्म, प्रश्न या मुहूर्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्त्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनाई गई जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाए हुए है। सच बात तो यह है– फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक रूप तो लगभग लुप्त सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2070 वि. में बनने वाली सभी (कुल 203) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **"किस तारीख के कितने बजे से किस तारीख के कितने बजे तक"**– कौन–सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन–किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश–कालानुसारी वर्षप्रवेशकुण्डली (वर्षप्रवेशकालिक ग्रहस्थिति– कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली) आदि– आदि तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति–कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास बना सकेंगे।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो तब उस देश के अभीष्ट स्टैण्डर्ड टाईम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में बदलकर, इन्हें प्रयोग में लाइए। **स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं–**

उदाहरण (1)– चण्डीगढ़(U.T.)में 11 अप्रैल, 2013 ई. को प्रातः 8 घं. 20 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उत्पन्न जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है–

क्योंकि, इस जातक का जन्म **"10 अप्रैल, 21 घं. 29 मि. से 12 अप्रैल, 19 घं. 35 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च–** चण्डीगढ़ में 11 अप्रैल को प्रातः 8 घं. 20 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर वृषलग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न–कुण्डली यह बनी–

2 गु.
3
चं. 1 के. शु.
4
12 मं. सू. बु.
5
11
6
8
10
श. 7 रा.
9

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (2)– 21 अप्रैल, 2013 ई. को अफगानिस्तान में अफ़गानी स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार 19 घं. 5 मि. पर कन्धार (अफ़गानिस्तान) में पैदा हुए जातक की जन्मलग्नकण्डली ज्ञात करनी है–

अफ़गानिस्तान के स्टैण्डर्ड टाईम से भा.स्टैं.टा. 1 घं. आगे रहता है, अतः स्पष्ट है– इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार 20 घं. 5 मि.

(शेष पृष्ठ 23 पर)

10 अप्रैल से 18 मई, सन् 2013 ई.

अवधि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
10 अप्रैल, 15 घं. 6 मि. से 10 अप्रैल, 17 घं. 30 मि.	के.	गु.					श. रा.					मं. चं. बु. शु. सू.
10 अप्रैल, 17 घं. 31 मि. से 10 अप्रैल, 21 घं. 28 मि.	के. शु.	गु.					श. रा.					मं. चं. बु. सू.
10 अप्रैल, 21 घं. 29 मि. से 12 अप्रैल, 19 घं. 35 मि.	चं. के. शु.	गु.					श. रा.					मं. बु. सू.
12 अप्रैल, 19 घं. 36 मि. से 13 अप्रैल, 7 घं. 50 मि.	मं. चं. शु. के.	गु.					श. रा.					सू. बु.
13 अप्रैल, 7 घं. 51 मि. से 14 अप्रैल, 1 घं. 27 मि.	मं. के. शु.	गु. चं.					श. रा.					सू. बु.
14 अप्रैल, 1 घं. 28 मि. से 15 अप्रैल, 20 घं. 13 मि.	मं. सू. शु. के.	गु. चं.					श. रा.					बु.
15 अप्रैल, 20 घं. 14 मि. से 18 अप्रैल, 8 घं. 51 मि.	मं. सू. शु. के.	गु.	चं.				श. रा.					बु.
18 अप्रैल, 8 घं. 52 मि. से 20 अप्रैल, 19 घं. 24 मि.	मं. सू. शु. के.	गु.		चं.			श. रा.					बु.
20 अप्रैल, 19 घं. 25 मि. से 23 अप्रैल, 2 घं. 25 मि.	मं. सू. शु. के.	गु.			चं.		श. रा.					बु.
23 अप्रैल, 2 घं. 26 मि. से 25 अप्रैल, 5 घं. 59 मि.	मं. सू. शु. के.	गु.				चं.	श. रा.					बु.
25 अप्रैल, 6 घं. 0 मि. से 27 अप्रैल, 7 घं. 20 मि.	मं. सू. शु. के.	गु.					श. रा. चं.					बु.
27 अप्रैल, 7 घं. 21 मि. से 28 अप्रैल, 18 घं. 25 मि.	मं. सू. शु. के.	गु.				चं.	श. रा.	चं.				बु.
28 अप्रैल, 18 घं. 26 मि. से 29 अप्रैल, 8 घं. 05 मि.	मं. सू. बु. शु. के.	गु.					श. रा.	चं.				
29 अप्रैल, 8 घं. 06 मि. से 1 मई, 9 घं. 44 मि.	मं. सू. बु. शु. के.	गु.					श. रा.		चं.			
1 मई, 9 घं. 45 मि. से 3 मई, 13 घं. 22 मि.	मं. सू. बु. शु. के.	गु.					श. रा.			चं.		
3 मई, 13 घं. 23 मि. से 5 मई, 0 घं. 27 मि.	मं. सू. बु. शु. के.	गु.					श. रा.				चं.	
5 मई, 0 घं. 28 मि. से 5 मई, 19 घं. 29 मि.	मं. सू. बु. के.	शु. गु.					श. रा.				चं.	
5 मई, 19 घं. 30 मि. से 8 मई, 4 घं. 07 मि.	मं. सू. बु. के.	शु. गु.					श. रा.					चं.
8 मई, 4 घं. 08 मि. से 10 मई, 14 घं. 56 मि.	मं. सू. बु. के. चं.	शु. गु.					श. रा.					
10 मई, 14 घं. 57 मि. से 13 मई, 3 घं. 20 मि.	मं. सू. बु. के.	शु. गु. चं.					श. रा.					
13 मई, 3 घं. 21 मि. से 13 मई, 8 घं. 37 मि.	मं. सू. बु. के.	शु. गु.	चं.				श. रा.					
13 मई, 8 घं. 38 मि. से 14 मई, 22 घं. 20 मि.	मं. सू. के.	शु. गु. बु.	चं.				श. रा.					
14 मई, 22 घं. 21 मि. से 15 मई, 16 घं. 08 मि.	मं. के.	बु. शु. गु. सू.	चं.				श. रा.					
15 मई, 16 घं. 09 मि. से 18 मई, 3 घं. 34 मि.	मं. के.	बु. शु. गु. सू.		चं.			श. रा.					

18 मई से 27 जून, सन् 2013 ई.

18 मई, 3 घं. 35 मि. से 20 मई, 11 घं. 52 मि.

बु.शु.2गु. सू. 12
3 मं. 1 के. 11
4 10
5 चं. श. 7 रा. 9
6 8

20 मई, 11 घं. 53 मि. से 22 मई, 16 घं. 23 मि.

बु.शु.2गु. सू. 12
3 मं. 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
चं. 6 8

22 मई, 16 घं. 24 मि. से 23 मई, 9 घं. 11 मि.

बु.शु.2गु. सू. 12
3 मं. 1 के. 11
4 10
5 चं. श. 7 रा. 9
6 8

23 मई, 9 घं. 12 मि. से 24 मई, 17 घं. 45 मि.

बु.शु.2गु. सू.मं. 12
3 1 के. 11
4 10
5 चं. श. 7 रा. 9
6 8

24 मई, 17 घं. 46 मि. से 26 मई, 17 घं. 30 मि.

बु.शु.2गु. सू.मं. 12
3 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 चं. 8

26 मई, 17 घं. 31 मि. से 28 मई, 0 घं. 42 मि.

बु.शु.2गु. सू.मं. 12
3 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. चं. 9
6 8

28 मई, 0 घं. 43 मि. से 28 मई, 17 घं. 33 मि.

शु.2गु.मं. सू. 12
बु.3 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. चं. 9
6 8

28 मई, 17 घं. 34 मि. से 29 मई, 10 घं. 54 मि.

शु.2गु.मं. सू. 12
बु.3 1 के. 11
4 चं. 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

29 मई, 10 घं. 55 मि. से 30 मई, 19 घं. 40 मि.

सू.2गु.मं. 12
शु. बु.3 1 के. 11
4 चं. 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

30 मई, 19 घं. 41 मि. से 31 मई, 6 घं. 47 मि.

सू.2गु.मं. 12
शु. बु.3 1 के. चं. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

31 मई, 6 घं. 48 मि. से 2 जून, 1 घं. 02 मि.

सू.2मं. 12
शु.गु. बु.3 1 के. चं. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

2 जून, 1 घं. 03 मि. से 4 जून, 9 घं. 46 मि.

सू.2मं. 12 चं.
शु.गु. बु.3 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

4 जून, 9 घं. 47 मि. से 6 जून, 21 घं. 03 मि.

सू.2मं. 12
शु.गु. बु.3 चं. 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

6 जून, 21 घं. 04 मि. से 9 जून, 9 घं. 40 मि.

सू.2मं.चं. 12
शु.गु. बु.3 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

9 जून, 9 घं. 41 मि. से 11 जून, 22 घं. 27 मि.

सू.2मं. 12
शु.गु. बु.3 चं. 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

11 जून, 22 घं. 28 मि. से 14 जून, 10 घं. 16 मि.

सू.2मं. 12
शु.गु. बु.3 1 के. 11
4 चं. 10
5 श. 7 रा. 9
6 8

14 जून, 10 घं. 17 मि. से 15 जून, 4 घं. 54 मि.

सू.2मं. 12
शु.गु. बु.3 1 के. 11
4 10
5 चं. श. 7 रा. 9
6 8

15 जून, 4 घं. 55 मि. से 16 जून, 19 घं. 46 मि.

2मं. 12
शु.गु. सू.3 बु. 1 के. 11
4 10
5 चं. श. 7 रा. 9
6 8

16 जून, 19 घं. 47 मि. से 19 जून, 1 घं. 50 मि.

2मं. 12
शु.गु. सू.3 बु. 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9
चं. 6 8

19 जून, 1 घं. 51 मि. से 21 जून, 4 घं. 20 मि.

2मं. 12
शु.गु. सू.3 बु. 1 के. 11
4 10
5 श.7 रा. चं. 9
6 8

21 जून, 4 घं. 21 मि. से 23 जून, 0 घं. 58 मि.

2मं. 12
शु.गु. सू.3 बु. 1 के. 11
4 10
5 श.7 रा. 9
6 8 चं.

23 जून, 0 घं. 59 मि. से 23 जून, 4 घं. 16 मि.

2मं. 12
बु.गु. सू.3 1 के. 11
शु. 4 10
5 श.7 रा. 9
6 8 चं.

23 जून, 4 घं. 17 मि. से 25 जून, 3 घं. 28 मि.

2मं. 12
बु.गु. सू.3 1 के. 11
शु. 4 10
5 श.7 रा. 9 चं.
6 8

25 जून, 3 घं. 29 मि. से 27 जून, 4 घं. 02 मि.

2मं. 12
बु.गु. सू.3 1 के. 11
शु. 4 चं. 10
5 श.7 रा. 9
6 8

27 जून से 11 अगस्त, सन् 2013 ई.

27 जून, 4 घ. 03 मि. से 29 जून, 7 घं. 50 मि.
2 मं. 12
बु. गु. सू. 3 — 1 के. — चं. 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

29 जून, 7 घ. 51 मि. से 1 जुलाई, 15 घं 40 मि.
2 मं. — चं. 12
बु. गु. सू. 3 — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

1 जुलाई, 15 घ. 41 मि. से 4 जुलाई, 2 घं. 51 मि.
2 मं. — 12
बु. गु. सू. 3 — 1 चं. के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा — 9
6 — 8

4 जुलाई, 2 घ. 52 मि. से 5 जुलाई, 1 घं. 11 मि.
चं. 2 मं. — 12
बु. गु. सू. 3 — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

5 जुलाई, 1 घ. 12 मि. से 6 जुलाई, 15 घं. 37 मि.
चं. 2 — 12
बु. गु. सू. 3 मं. — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

6 जुलाई, 15 घ. 38 मि. से 9 जुलाई, 4 घं. 20 मि.
चं. 2 — 12
बु. गु. सू. 3 मं. — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

9 जुलाई, 4 घ. 21 मि. से 11 जुलाई, 16 घं. 01 मि.
2 — 12
बु. गु. सू. 3 मं. — 1 के. — 11
चं. शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

11 जुलाई, 16 घ. 02 मि. से 14 जुलाई, 1 घं. 57 मि.
2 — 12
बु. गु. सू. 3 मं. — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
चं. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

14 जुलाई, 1 घ. 58 मि. से 16 जुलाई, 9 घं. 17 मि.
2 — 12
बु. गु. सू. 3 मं. — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. — 9
चं. 6 — 8

16 जुलाई, 9 घ. 18 मि. से 16 जुलाई, 15 घं. 44 मि.
2 — 12
बु. गु. सू. 3 मं. — 1 के. — 11
शु. 4 — 10
5 — श. 7 रा. चं. — 9
6 — 8

16 जुलाई, 15 घ. 45 मि. से 17 जुलाई, 19 घं. 32 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
शु. 4 सू. — 10
5 — श. 7 रा. चं. — 9
6 — 8

17 जुलाई, 19 घ. 33 मि. से 18 जुलाई, 13 घं. 25 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. चं. — 9
6 — 8

18 जुलाई, 13 घ. 26 मि. से 20 जुलाई, 14 घं. 37 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8 चं.

20 जुलाई, 14 घ. 38 मि. से 22 जुलाई, 14 घं. 11 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9 चं.
6 — 8

22 जुलाई, 14 घं. 12 मि. से 24 जुलाई, 14 घं. 07 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
4 सू. — 10 चं.
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

24 जुलाई, 14 घ. 8 मि. से 26 जुलाई, 16 घं. 31 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — चं. 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

26 जुलाई, 16 घं. 32 मि. से 28 जुलाई, 22 घं. 54 मि.
2 — चं. 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

28 जुलाई, 22 घ. 55 मि. से 31 जुलाई, 9 घं. 15 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. चं. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

31 जुलाई, 9 घ. 16 मि. से 2 अगस्त, 21 घं. 53 मि.
चं. 2 — 12
बु. गु. मं. 3 — 1 के. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

2 अगस्त, 21 घ. 54 मि. से 4 अगस्त, 21 घं. 28 मि.
2 — 12
बु. गु. मं. 3 चं. — 1 के. — 11
4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

4 अगस्त, 21 घ. 29 मि. से 5 अगस्त, 10 घं. 33 मि.
2 — 12
गु. मं. 3 चं. — 1 के. — 11
बु. 4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

5 अगस्त, 10 घ. 34 मि. से 7 अगस्त, 21 घं. 52 मि.
2 — 12
गु. मं. 3 — 1 के. — 11
बु. 4 सू. चं. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

7 अगस्त, 21 घ. 53 मि. से 10 अगस्त, 7 घं. 25 मि.
2 — 12
गु. मं. 3 — 1 के. — 11
बु. 4 सू. — 10
चं. शु. 5 — श. 7 रा. — 9
6 — 8

10 अगस्त, 7 घं. 26 मि. से 11 अगस्त, 20 घं. 47 मि.
2 — 12
गु. मं. 3 — 1 के. — 11
बु. 4 सू. — 10
शु. 5 — श. 7 रा. — 9
चं. 6 — 8

11 अगस्त से 19 सितंबर, सन 2013 ई.

11 अगस्त, 20 घ. 48 मि. से 12 अगस्त, 15 घं. 01 मि.
2 12
गु. मं.3 1 के. 11
बु. 4 सू. 10
5 श. 7 रा. 9
चं. 6 शु. 8

12 अगस्त, 15 घ. 02 मि. से 14 अगस्त, 20 घं. 17 मि.
2 12
गु. मं.3 1 के. 11
बु. 4 सू. 10
5 श. 7 रा. चं. 9
6 शु. 8

14 अगस्त, 20 घ. 18 मि. से 16 अगस्त, 23 घं. 05 मि.
2 12
गु. मं.3 1 के. 11
बु. 4 सू. 10
5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8 चं.

16 अगस्त, 23 घ. 06 मि. से 17 अगस्त, 0 घं. 06 मि.
2 12
गु. मं.3 1 के. 11
बु. 4 सू. 10
5 श. 7 रा. चं. 9
6 शु. 8

17 अगस्त, 0 घ. 07 मि. से 19 अगस्त, 0 घं. 00 मि.
2 12
गु. मं.3 1 के. 11
बु. 4 10
सू. 5 श. 7 रा. चं. 9
6 शु. 8

19 अगस्त, 0 घ. 01 मि. से 19 अगस्त, 1 घं. 58 मि.
2 12
गु. मं.3 1 के. 11
बु. 4 चं. 10
सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

19 अगस्त, 1 घ. 59 मि. से 21 अगस्त, 0 घं. 29 मि. तक
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. बु. 4 10 चं.
सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

21 अगस्त, 0 घं. 30 मि. से 21 अगस्त, 4 घं. 54 मि.
2 12
3 गु. 1 के. चं. 11
मं. बु. 4 10
सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

21 अगस्त, 4 घ. 55 मि. से 23 अगस्त, 2 घं. 27 मि.
2 12
3 गु. 1 के. चं. 11
मं. 4 10
बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

23 अगस्त, 2 घ. 28 मि. से 25 अगस्त, 7 घं. 40 मि.
2 चं. 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

25 अगस्त, 7 घ. 41 मि. से 27 अगस्त, 16 घं. 51 मि.
2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
मं. 4 10
बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

27 अगस्त, 16 घ. 52 मि. से 30 अगस्त, 4 घं. 58 मि.
चं. 2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

30 अगस्त, 4 घ. 59 मि. से 1 सितंबर, 17 घं. 36 मि.
2 12
चं. 3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

1 सितंबर, 17 घ. 37 मि. से 4 सितंबर, 4 घं. 44 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 चं. 10
बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

4 सितंबर, 4 घ. 45 मि. से 6 सितंबर, 0 घं. 53 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
चं. बु. सू. 5 श. 7 रा. 9
6 शु. 8

6 सितंबर, 0 घ. 54 मि. से 6 सितंबर, 8 घं. 39 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
चं. सू. 5 श. 7 रा. 9
बु. 6 शु. 8

6 सितंबर, 8 घ. 40 मि. से 6 सितंबर, 13 घं. 39 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
चं. सू. 5 शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 8

6 सितंबर, 13 घ. 40 मि. से 8 सितंबर, 20 घं. 32 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
सू. 5 शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 चं. 8

8 सितंबर, 20 घ. 33 मि. से 11 सितंबर, 1 घं. 43 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
सू. 5 चं. शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 8

11 सितंबर, 1 घ. 44 मि. से 13 सितंबर, 5 घं. 20 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
सू. 5 शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 चं. 8

13 सितंबर, 5 घ. 21 मि. से 15 सितंबर, 7 घं. 41 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
सू. 5 शु. श. 7 रा. चं. 9
बु. 6 8

15 सितंबर, 7 घ. 42 मि. से 17 सितंबर, 0 घं. 02 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 चं. 10
सू. 5 शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 8

17 सितंबर, 0 घ. 03 मि. से 17 सितंबर, 9 घं. 31 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 चं. 10
5 शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 सू. 8

17 सितंबर, 9 घ. 32 मि. से 19 सितंबर, 12 घं. 10 मि.
2 12
3 गु. 1 के. चं. 11
मं. 4 10
5 शु. श. 7 रा. 9
बु. 6 सू. 8

19 सितंबर से 2 नवंबर, सन् 2013 ई.

19 सितंबर, 12 घं. 11 मि. से 21 सितंबर, 17 घं. 09 मि.
2 12 च.
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
शु.
5 श. 7 रा. 9
बु. 6 सू. 8

21 सितंबर, 17 घं. 10 मि. से 24 सितंबर, 1 घं. 28 मि.
2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
मं. 4 10
शु.
5 श. 7 रा. 9
बु. 6 सू. 8

24 सितंबर, 1 घं. 29 मि. से 25 सितंबर, 6 घं. 34 मि.
चं. 2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
शु.
5 श. 7 रा. 9
बु. 6 सू. 8

25 सितंबर, 6 घं. 35 मि. से 26 सितंबर, 12 घं. 53 मि.
चं. 2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
बु. शु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8

26 सितंबर, 12 घं. 54 मि. से 29 सितंबर, 1 घं. 29 मि.
2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
मं. 4 10
बु. शु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8

29 सितंबर, 1 घं. 30 मि. से 1 अक्तूबर, 12 घं. 52 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
चं. मं. 4 10
बु. शु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8

1 अक्तूबर, 12 घं. 53 मि. से 2 अक्तूबर, 14 घं. 53 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
चं. बु. शु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8

2 अक्तूबर, 14 घं. 54 मि. से 3 अक्तूबर, 21 घं. 34 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
चं. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8 शु.

3 अक्तूबर, 21 घं. 35 मि. से 5 अक्तूबर, 19 घं. 39 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
मं. 4 10
बु.
5 श. 7 रा. 9
चं. 6 सू. 8 शु.

5 अक्तूबर, 19 घं. 40 मि. से 6 अक्तूबर, 3 घं. 34 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. बु.
5 श. 7 रा. 9
चं. 6 सू. 8 शु.

6 अक्तूबर, 3 घं. 35 मि. से 8 अक्तूबर, 7 घं. 39 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. चं. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8 शु.

8 अक्तूबर, 7 घं. 40 मि. से 10 अक्तूबर, 10 घं. 42 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. चं. 8 शु.

10 अक्तूबर, 10 घं. 43 मि. से 12 अक्तूबर, 13 घं. 25 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. बु.
5 श. 7 रा. चं. 9
6 सू. 8 शु.

12 अक्तूबर, 13 घं. 26 मि. से 14 अक्तूबर, 16 घं. 23 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10 चं.
मं. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8 शु.

14 अक्तूबर, 16 घं. 24 मि. से 16 अक्तूबर, 20 घं. 18 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11 चं.
4 10
मं. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8 शु.

16 अक्तूबर, 20 घं. 19 मि. से 17 अक्तूबर, 11 घं. 59 मि.
2 12 चं.
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 सू. 8 शु.

17 अक्तूबर, 12 घं. 00 मि. से 19 अक्तूबर, 2 घं. 00 मि.
2 12 चं.
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. सू. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 8 शु.

19 अक्तूबर, 2 घं. 01 मि. से 21 अक्तूबर, 10 घं. 14 मि.
2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
4 10
मं. सू. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 8 शु.

21 अक्तूबर, 10 घं. 15 मि. से 23 अक्तूबर, 21 घं. 09 मि.
चं. 2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. सू. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 8 शु.

23 अक्तूबर, 21 घं. 10 मि. से 26 अक्तूबर, 9 घं. 40 मि.
2 12
चं. 3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. सू. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 8 शु.

26 अक्तूबर, 9 घं. 41 मि. से 28 अक्तूबर, 21 घं. 36 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
चं. 4 10
मं. सू. बु.
5 श. 7 रा. 9
6 8 शु.

28 अक्तूबर, 21 घं. 37 मि. से 30 अक्तूबर, 14 घं. 23 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. सू. बु.
चं. 5 श. 7 रा. 9
6 8 शु.

30 अक्तूबर, 14 घं. 24 मि. से 31 अक्तूबर, 6 घं. 53 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. सू. बु.
चं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

31 अक्तूबर, 6 घं. 54 मि. से 2 नवंबर, 12 घं. 45 मि.
2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
सू. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 चं. 8

2 नवंबर से 16 दिसंबर, सन् 2013 ई.

2 नवंबर, 12 घ. 46 मि. से 4 नवंबर, 15 घं. 49 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
सू. चं. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

4 नवंबर, 15 घ. 50 मि. से 6 नवंबर, 17 घं. 25 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
सू. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8 चं.

6 नवंबर, 17 घ. 26 मि. से 8 नवंबर, 19 घं. 02 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
सू. बु. चं.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

8 नवंबर, 19 घं. 03 मि. से 10 नवंबर, 21 घं. 49 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10 चं.
सू. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

10 नवंबर, 21 घ. 50 मि. से 13 नवंबर, 2 घं. 27 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11 चं.
4 10
सू. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

13 नवंबर, 2 घ. 28 मि. से 15 नवंबर, 9 घं. 12 मि.

2 12 चं.
3 गु. 1 के. 11
4 10
सू. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

15 नवंबर, 9 घ. 13 मि. से 16 नवंबर, 11 घं. 47 मि.

2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
4 10
सू. बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8

16 नवंबर, 11 घ. 48 मि. से 17 नवंबर, 18 घं. 04 मि.

2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
4 10
बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8 सू.

17 नवंबर, 18 घ. 05 मि. से 20 नवंबर, 4 घं. 58 मि.

चं. 2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8 सू.

20 नवंबर, 4 घ. 59 मि. से 22 नवंबर, 17 घं. 23 मि.

2 12
चं.
3 गु. 1 के. 11
4 10
बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8 सू.

22 नवंबर, 17 घ. 24 मि. से 25 नवंबर, 5 घं. 51 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
चं. 4 10
बु.
मं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8 सू.

25 नवंबर, 5 घ. 52 मि. से 26 नवंबर, 19 घं. 31 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
मं. बु.
चं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
6 8 सू.

26 नवंबर, 19 घ. 32 मि. से 27 नवंबर, 16 घं. 17 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
बु.
चं. 5 श. 7 रा. 9 शु.
मं. 6 8 सू.

27 नवंबर, 16 घ. 18 मि. से 29 नवंबर, 23 घं. 07 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
बु.
5 श. 7 रा. 9 शु.
मं. 6 चं. 8 सू.

29 नवंबर, 23 घ. 08 मि. से 1 दिसंबर, 10 घं. 04 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
चं. बु.
5 श. 7 रा. 9 शु.
मं. 6 8 सू.

1 दिसंबर, 10 घ. 05 मि. से 2 दिसंबर, 2 घं. 14 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
चं.
5 श. 7 रा. 9 शु.
मं. 6 बु. 8 सू.

2 दिसंबर, 2 घं. 15 मि. से 4 दिसंबर, 2 घं. 49 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. 9 शु.
मं. 6 चं. बु. 8 सू.

4 दिसंबर, 2 घ. 50 मि. से 5 दिसंबर, 14 घं. 15 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10
5 श. 7 रा. शु. 9 चं.
मं. 6 बु. 8 सू.

5 दिसंबर, 14 घ. 16 मि. से 6 दिसंबर, 2 घं. 46 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10 शु.
5 श. 7 रा. 9 चं.
मं. 6 बु. 8 सू.

6 दिसंबर, 2 घ. 47 मि. से 8 दिसंबर, 4 घं. 00 मि.

2 12
3 गु. 1 के. 11
4 चं. 10 शु.
5 श. 7 रा. 9
मं. 6 बु. 8 सू.

8 दिसंबर, 4 घं. 01 मि. से 10 दिसंबर, 7 घं. 55 मि.

2 12
3 गु. 1 के. चं. 11
4 10 शु.
5 श. 7 रा. 9
मं. 6 बु. 8 सू.

10 दिसंबर, 7 घ. 56 मि. से 12 दिसंबर, 14 घं. 55 मि.

2 चं. 12
3 गु. 1 के. 11
4 10 शु.
5 श. 7 रा. 9
मं. 6 बु. 8 सू.

12 दिसंबर, 14 घ. 56 मि. से 15 दिसंबर, 0 घं. 30 मि.

2 12
3 गु. चं. 1 के. 11
4 10 शु.
5 श. 7 रा. 9
मं. 6 बु. 8 सू.

15 दिसंबर, 0 घ. 31 मि. से 16 दिसंबर, 2 घं. 26 मि.

चं. 2 12
3 गु. 1 के. 11
4 10 शु.
5 श. 7 रा. 9
मं. 6 बु. 8 सू.

16 दिसंबर, 2013 से 28 जनवरी, सन् 2014 ई.

16 दिसंबर, 2 घं. 27 मि. से 17 दिसंबर, 11 घं. 51 मि.
चं. 2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, बु. 8

17 दिसंबर, 11 घं. 52 मि. से 20 दिसंबर, 2 घं. 14 मि.
2, 12, 3 गु. चं., 1 के., 11, 4, 10 शु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, बु. 8

20 दिसंबर, 2 घं. 15 मि. से 20 दिसंबर, 20 घं. 55 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4 चं., 10 शु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, बु. 8

20 दिसंबर, 20 घं. 56 मि. से 22 दिसंबर, 12 घं. 52 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, चं. 4, 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, 8

22 दिसंबर, 12 घं. 53 मि. से 25 दिसंबर, 0 घं. 17 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., बु., चं. 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, 8

25 दिसंबर, 0 घं. 18 मि. से 27 दिसंबर, 8 घं. 44 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6 चं., 8

27 दिसंबर, 8 घं. 45 मि. से 29 दिसंबर, 13 घं. 10 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., चं., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, 8

29 दिसंबर, 13 घं. 11 मि. से 31 दिसंबर, 14 घं. 05 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, चं. 8

31 दिसंबर, 14 घं. 06 मि. से 2 जनवरी, 13 घं. 13 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू. चं., मं. 6, 8

2 जनवरी, 13 घं. 14 मि. से 4 जनवरी, 12 घं. 47 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, चं. 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, 8

4 जनवरी, 12 घं. 48 मि. से 6 जनवरी, 14 घं. 53 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11 चं., 4, 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, 8

6 जनवरी, 14 घं. 54 मि. से 6 जनवरी, 23 घं. 35 मि.
2, 12 चं., 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 शु., बु., 5, श. 7 रा., 9 सू., मं. 6, 8

6 जनवरी, 23 घं. 36 मि. से 8 जनवरी, 13 घं. 18 मि.
2, 12 चं., 3 गु., 1 के., 11, 4, 10, बु., 5, श. 7 रा., 9 सू. शु., मं. 6, 8

8 जनवरी, 13 घं. 19 मि. से 8 जनवरी, 20 घं. 45 मि.
2, 12 चं., 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 सू. शु., मं. 6, 8

8 जनवरी, 20 घं. 46 मि. से 11 जनवरी, 6 घं. 12 मि.
2, 12, 3 गु., चं. 1 के., 11, 4, 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 सू. शु., मं. 6, 8

11 जनवरी, 6 घं. 13 मि. से 13 जनवरी, 17 घं. 55 मि.
चं. 2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 सू. शु., मं. 6, 8

13 जनवरी, 17 घं. 56 मि. से 14 जनवरी, 13 घं. 11 मि.
2, 12, चं. 3 गु., 1 के., 11, 4, 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 सू. शु., मं. 6, 8

14 जनवरी, 13 घं. 12 मि. से 16 जनवरी, 6 घं. 29 मि.
2, 12, चं. 3 गु., 1 के., 11, 4, सू. 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 शु., मं. 6, 8

16 जनवरी, 6 घं. 30 मि. से 18 जनवरी, 18 घं. 57 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, चं. 4, सू. 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 शु., मं. 6, 8

18 जनवरी, 18 घं. 58 मि. से 21 जनवरी, 6 घं. 35 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, सू. 10 बु., चं. 5, श. 7 रा., 9 शु., मं. 6, 8

21 जनवरी, 6 घं. 36 मि. से 23 जनवरी, 16 घं. 10 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, सू. 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 शु., मं. 6 चं., 8

23 जनवरी, 16 घं. 11 मि. से 25 जनवरी, 22 घं. 24 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, सू. 10 बु., 5, चं. श. 7 रा., 9 शु., मं. 6, 8

25 जनवरी, 22 घं. 25 मि. से 26 जनवरी, 23 घं. 53 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., 11, 4, सू. 10 बु., 5, श. 7 रा., 9 शु., मं. 6, चं. 8

26 जनवरी, 23 घं. 54 मि. से 28 जनवरी, 0 घं. 55 मि.
2, 12, 3 गु., 1 के., बु. 11, 4, सू. 10, 5, श. 7 रा., 9 शु., मं. 6, चं. 8

28 जनवरी से 12 मार्च, सन् 2014 ई.

28 जनवरी, 0 घं. 56 मि. से 30 जनवरी, 0 घं. 43 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10 | चं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
मं. 6 | 8

30 जनवरी, 0 घं. 44 मि. से 31 जनवरी, 23 घं. 47 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10 चं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
मं. 6 | 8

31 जनवरी, 23 घं. 48 मि. से 3 फरवरी, 0 घं. 24 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | चं. बु. 11
4 | सू. 10
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
मं. 6 | 8

3 फरवरी, 0 घं. 25 मि. से 4 फरवरी, 14 घं. 18 मि.

2 | 12 चं.
3 गु. | 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
मं. 6 | 8

4 फरवरी, 14 घं. 19 मि. से 5 फरवरी, 4 घं. 27 मि.

2 | 12 चं.
3 गु. | 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

5 फरवरी, 4 घं. 28 मि. से 7 फरवरी, 12 घं. 38 मि.

2 | 12
3 गु. | चं. 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

7 फरवरी, 12 घं. 39 मि. से 10 फरवरी, 0 घं. 02 मि.

चं. 2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

10 फरवरी, 0 घं. 03 मि. से 12 फरवरी, 12 घं. 43 मि.

2 | 12
चं. 3 गु. | 1 के. | बु. 11
4 | सू. 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

12 फरवरी, 12 घं. 44 मि. से 13 फरवरी, 2 घं. 11 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. 11
चं. 4 | सू. 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

13 फरवरी, 2 घं. 12 मि. से 15 फरवरी, 1 घं. 04 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. सू. 11
चं. 4 | 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

15 फरवरी, 1 घं. 05 मि. से 17 फरवरी, 12 घं. 18 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. सू. 11
4 | 10
मं.
चं. 5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

17 फरवरी, 12 घं. 19 मि. से 18 फरवरी, 17 घं. 42 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | बु. सू. 11
4 | 10
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
चं. 6 | 8

18 फरवरी, 17 घं. 43 मि. से 19 फरवरी, 21 घं. 52 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
चं. 6 | 8

19 फरवरी, 21 घं. 53 मि. से 22 फरवरी, 5 घं. 05 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | 10 बु.
चं. मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

22 फरवरी, 5 घं. 06 मि. से 24 फरवरी, 9 घं. 19 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8 चं.

24 फरवरी, 9 घं. 20 मि. से 26 फरवरी, 10 घं. 49 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | 10 बु.
मं. | चं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

26 फरवरी, 10 घं. 50 मि. से 26 फरवरी, 11 घं. 55 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | चं. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9 शु.
6 | 8

26 फरवरी, 11 घं. 56 मि. से 28 फरवरी, 10 घं. 51 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
शु.
4 | चं. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

28 फरवरी, 10 घं. 52 मि. से 2 मार्च 11 घं. 19 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | चं. सू. 11
4 | शु. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

2 मार्च, 11 घं. 20 मि. से 4 मार्च 14 घं. 11 मि.

2 | 12 चं.
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | शु. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

4 मार्च, 14 घं. 12 मि. से 6 मार्च 20 घं. 48 मि.

2 | 12
3 गु. | चं. 1 के. | सू. 11
4 | शु. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

6 मार्च, 20 घं. 49 मि. से 9 मार्च 7 घं. 09 मि.

चं. 2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | शु. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

9 मार्च, 7 घं. 10 मि. से 11 मार्च 19 घं. 36 मि.

2 | 12
चं. 3 गु. | 1 के. | सू. 11
4 | शु. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

11 मार्च, 19 घं. 37 मि. से 12 मार्च 9 घं. 33 मि.

2 | 12
3 गु. | 1 के. | सू. 11
चं. 4 | शु. 10 बु.
मं.
5 | श. 7 रा. | 9
6 | 8

12 मार्च से 31 मार्च, सन् 2014 ई.

कालावधि	कुण्डली में अंकित
12 मार्च, 9 घं. 34 मि. से 14 मार्च 7 घं. 58 मि.	2, 12, बु. सू., 3 गु., 1 के., 11, चं. 4, शु. 10, मं., 5, श. 7 रा., 9, 6, 8
14 मार्च, 7 घं. 59 मि. से 14 मार्च 23 घं. 05 मि.	2, 12, बु. सू., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, मं., चं. 5, श. 7 रा., 9, 6, 8
14 मार्च, 23 घं. 06 मि. से 16 मार्च 18 घं. 49 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, मं., चं. 5, श. 7 रा., 9, 6, 8
16 मार्च, 18 घं. 50 मि. से 19 मार्च 3 घं. 41 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, मं., 5, श. 7 रा., 9, चं. 6, 8
19 मार्च, 3 घं. 42 मि. से 21 मार्च 10 घं. 31 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, चं. मं., 5, श. 7 रा., 9, 6, 8
21 मार्च, 10 घं. 32 मि. से 23 मार्च 15 घं. 18 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, मं., 5, श. 7 रा., 9, 6, 8 चं.
23 मार्च, 16 घं. 19 मि. से 25 मार्च 9 घं. 51मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, मं., 5, श. 7 रा., 9 चं., 6, 8
25 मार्च, 9 घं. 52 मि. से 25 मार्च 18 घं. 13 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, 5, श. 7 रा., 9 चं., 6 मं., 8
25 मार्च, 18 घं. 14 मि. से 27 मार्च 19 घं. 52 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10 चं., 5, श. 7 रा., 9, 6 मं., 8
27 मार्च, 19 घं. 53 मि. से 29 मार्च 21 घं. 26 मि.	2, 12 सू., बु., 3 गु., 1 के., 11 चं., 4, शु. 10, 5, श. 7 रा., 9, 6 मं., 8
29 मार्च, 21 घं. 27 मि. से 31 मार्च 0 घं. 15 मि.	2, 12 सू. चं., बु., 3 गु., 1 के., 11, 4, शु. 10, 5, श. 7 रा., 9, 6 मं., 8

(पृष्ठ 14 का शेष)

पर हुआ। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"20 अप्रैल 19 घं. 25 मि. से 23 अप्रैल 2 घं. 25 मि."** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक– कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरुप होगी। **किञ्च– कंधार** में इसके जन्म के समय लग्न तुला होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी–

कुण्डली में अंकित
8, 6, 9, 7 श. रा., 5 चं., 10, 4, 11, सू. मं. 1 शु. के., 3, 12 बु., गु. 2

इसी प्रकार वर्षप्रवेशकालिक एवम् प्रश्नकालिक आदि लग्नकुण्डलियां बनाना भी अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे– कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

सं 2070 वर्षीय उपरोक्त इन राशि–कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में भारी सहयोग के लिए **'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष एवं पंचांग कार्यालय '– कुराली (पं.)** के कार्यकर्ता ग्राम सुन्हाड़–सौर, सोलन–हि.प्र., निवासी [संप्रति कुराली– मोहाली (पं.) वास्तव्य] प्रबुद्ध विद्वान् आचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा, M.A.,शास्त्री, वेदाचार्य, साहित्याचार्य** को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता।

– प्रियव्रत शर्मा

ग्रहण-विवरण (सं. 2070 वि.)

–प्रियव्रत शर्मा,

इस वर्ष सं. 2070 वि. (11 अप्रैल, 2013 ई. से 30 मार्च, 2014 ई. तक की अवधि) में भूगोल पर निम्नांकित तीन ग्रहण दिखाई पड़ेंगे–

(i) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (25/26 अप्रैल, 2013 ई.)
(ii) कंकण सूर्यग्रहण (10 मई, 2013 ई.)
(iii) कंकण/खग्रास सूर्यग्रहण (3 नवम्बर, 2013 ई.)

इनमें से केवल 25/26 अप्रैल, 2013 ई. को घटित होने वाला खण्डग्रास चन्द्रग्रहण ही भारत में दृश्य होगा, शेष दोनों ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(i) कंकण सूर्यग्रहण (10 मई, 2013 ई.)–

यह ग्रहण वैशाख अमा शुक्रवार को ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, न्यूगिनी, इण्डोनेशिया, जापान देशों तथा प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इसकी कंकण आकृति ऑस्ट्रेलिया में दिखाई पड़ेगी। भूगोल पर इस ग्रहण का घटनास्थल आदि विवरण पृष्ठ 26 पर चित्र–2 में देखें।

(ii) कंकण/खग्रास सूर्यग्रहण (3 नवम्बर, 2013 ई.) –

यह ग्रहण कार्तिक अमा, रविवार को घटित होगा। यह एक अद्भुत सूर्यग्रहण है, जो भूगोल के कुछ स्थलों पर कंकण और कुछ स्थलों पर खग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा। इस प्रकार का संकर (Hybrid) ग्रहण कभी–कभी (बहुत वर्षों बाद) घटित हुआ करता है। यह ग्रहण अफ्रीका, मेडागास्कर, स्पेन, इटली, टर्की, इराक, साऊदी अरब व दक्षिणी अमेरिका आदि में दिखाई देगा। स्पष्टता के लिए पृष्ठ 26 पर इस ग्रहण का घटनास्थल प्रदर्शक चित्र–3 देखें।

भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विस्तृत विवरण

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (25/26 अप्रैल, 2013 ई.)

यह ग्रहण चैत्री पूर्णिमा, गुरुवार के दिन 25/26 अप्रैल, 2013 ई. की मध्यगत रात्रि में अत्यन्त अल्प (एक अंगुल से भी कम) ग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा। भास्कर आदि कुछ आचार्यों ने ऐसे अंगुलाल्पग्रास वाले ग्रहण को अनादेश्य (न बतलाने योग्य) बतलाया है। लेकिन सूर्यसिद्धान्त आदि मूल सिद्धान्तग्रन्थों में ऐसा नहीं लिखा है। हम इन मूल सिद्धान्तग्रन्थों के प्रमाण पर इस ग्रहण को अनादेश्य नहीं मानते, क्योंकि ग्रहण जब गणित से सिद्ध हो रहा है, तब उसे जनसामान्य को न बतलाया जाए– यह उनके साथ प्रवञ्चना है, यह शास्त्रीय अपराध भी है। [अंगुलाल्प ग्रहण को अनादेश्य मानना अनुचित क्यों है– इसका विशकलन यहां पृष्ठ 27 पर किया गया है, वहां देखें।]

यह 25/26 अप्रैल, 2013 ई. वाला ग्रहण भारत, पाकिस्तान, अफ्रीका, बर्मा, यूरोप, चीन, ऑस्ट्रेलिया, इण्डोनेशिया, जापान तथा फिलिपींस में लगभग 32 मिनट के लिए दिखाई पड़ेगा। इस ग्रहण का घटनास्थल–प्रदर्शक भूगोलचित्र (1) पृष्ठ 25 पर देखें। इस ग्रहण के स्पर्श आदि काल (भा.स्टै.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.	से.	
स्पर्श	1	21	25	25/26 अप्रैल, 2013 ई. (भा.स्टै.टा.)
मध्य	1	37	35	
मोक्ष	1	53	37	

पर्वकाल = 32मि. 12से.

चन्द्रग्रहण 25/26 अप्रैल, 2013 ई.; परमग्रास मान [1घं 38मि. (भा.स्टै.टा.)]

सामने दिए चित्र को सिर के ऊपर आकाश में ऐसे फैलाकर देखिए कि इसकी पूर्व आदि दिशाएं ठीक स्थिति में हों।

स्पर्श उ. मोक्ष
पू. प.
द.
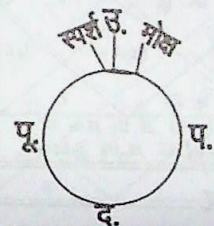
सूतक– इस ग्रहण का सूतक 25 अप्रैल को 16घं. 21मि. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

भारत में दृश्य ग्रहण का राशिफल :– यह ग्रहण स्वाती नक्षत्र एवम् तुला राशि में घटित हो रहा है। अतः स्वाती नक्षत्र एवं तुला राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष कष्टप्रद रहेगा– **"तुलायामुपरागश्चेत् दशार्णबल– काहवाः। मरुतश्चापरान्त्याश्च पीड्यन्ते यति–साधवः।।"**

तुला राशि में ग्रहण होने से दशर्ण–बल(सेनानी), काहव एवं अन्य (अपरान्त) देशवासी भी येनकेन प्रकारेण पीड़ाग्रस्त होते हैं।

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	[illegible]

ग्रहण का वार फल– यह ग्रहण चैत्री पूर्णिमा एवं गुरुवार को घटित हो रहा है। अतः सोना, गुड़, चन्दन, लालमिर्च, सभी तेल एवं सुगन्धित पदार्थ तेजी की तरफ रहेंगे– **"गुरौ पीत–रक्त–वस्तु तैल–गन्धादि–लाभदम्।"**

अयनफल :– यह ग्रहण उत्तरायण में घटित हो रहा है, अतः आगामी मासों में सवर्ण (ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य) लोगों को राजनैतिक परेशानी रहे। गोजाति पर निर्दयतापूर्ण व्यवहार हो। चना, गेहूं, जौ एवं दालवाना महंगे हों।

ग्रहण–मास फल– यह ग्रहण चैत्री पूर्णिमा एवं वैशाख मास में घटित होने से तिल, तेल, मूंगी, कपास आदि की फसलों को हानि पहुंचे–

वैशाखे तिल–तैल–मुद्गान् कुरुते कार्पासकं नाशयेत्।"

ग्रहण–नक्षत्र फल– स्वाती नक्षत्र में ग्रहण होने से तीसरे, पांचवें एवम् नवम मास में सभी प्रकार के अनाजों (दालों) से उत्तम लाभ प्राप्त हो–

"त्रि–पंच–नवमिर्मासै स्वातौ लाभोऽन्नसंग्रहात्।"

ग्रहण–योग फल– यह ग्रहण सिद्धियोग में घटित होगा। अतः कहीं वायुवेग से हानि, कहीं सत्पुरुषों को कष्ट एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी संभव है। राजनैतिक दृष्टि से सिद्धियोग में ग्रहण नवचेतना को जागृत करे।

चन्द्र उपच्छाया ग्रहण (19 अक्तू., 2013 ई.)

भारत में दृश्य इस उपरोक्त एकमात्र चन्द्रग्रहण के अतिरिक्त चन्द्र का एक उपच्छाया ग्रहण भी 19 अक्तू., 2013 ई. को भारत में दिखाई पड़ेगा। जिसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.	
स्पर्श	3	21	19 अक्तूबर, 2013 ई. को प्रातः
मध्य	5	20	
मोक्ष	7	20	

ध्यान रहे– उपच्छाया ग्रहण वास्तव चन्द्रग्रहण नहीं होता। इस ग्रहण के समय चन्द्र की चान्दनी केवल कुछ धुंधली–सी दिखाई पड़ती है। इस तथाकथित ग्रहण का वेध (सूतक, स्नान–दानादि माहात्म्य) भी नहीं होता।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण– 25/26 अप्रैल, 2013 ई. (भारत में दृश्य)
ग्रहण का घटनास्थल

चित्र

NoEclipse Visible
Eclipse at Moon rise
All Eclipse Visible
Eclipse at Moon set
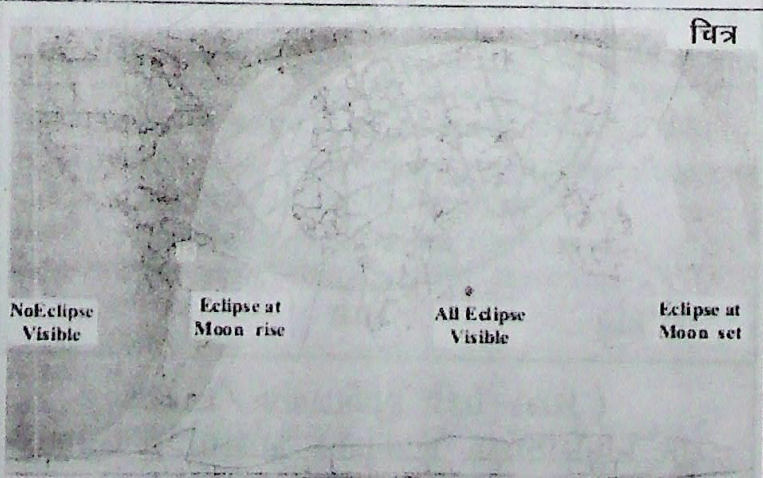
बाएं और दाएं वाले काले (Dark) और धुँधले (Dim) भागस्थ स्थलों के अलावा चित्रस्थ शेष भाग पर यह ग्रहण दृश्य होगा।

कंकण सूर्यग्रहण (10 मई, 2013 ई.)

(भारत में अदृश्य)

(ग्रहण घटनास्थल, स्पर्शकाल, परमग्रासमान और कंकणाकृति दृश्य–स्थल)

चित्र (2)

उत्तर

पश्चिम

पूर्व

दक्षिण

(i) पश्चिम से पूर्व और उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली वक्र रेखाओं से बने पिंजरे (Cage) के अन्तर्गत भूभाग पर ही यह ग्रहण घटित होगा।

(ii) उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली वक्र रेखाओं पर ग्रहणस्पर्श का U.T. (Universal time) है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ने पर भा.स्टैं.टा. ज्ञात होगा।

(iii) पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाली वक्र रेखाओं पर परमग्रासमान अंकित है।

(iv) बीच से गुज़र रही पूर्व–पश्चिम पट्टी पर कंकणग्रहण दृश्य होगा।
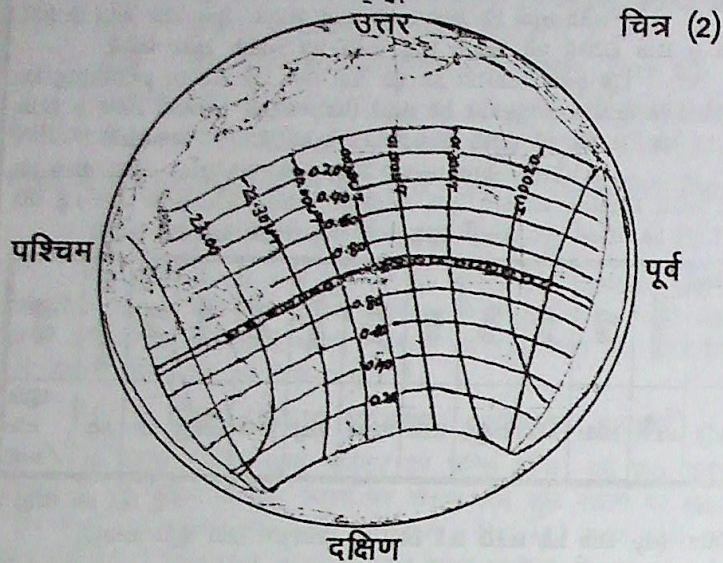
संकर (खग्रास/कंकण) सूर्यग्रहण

(3 नवंबर, 2013 ई.) (भारत में अदृश्य)

(ग्रहण घटनास्थल, स्पर्शकाल, परमग्रासमान और खग्रास/कंकणाकृति दृश्य–स्थल)

चित्र (3)

उत्तर

पश्चिम

पूर्व

दक्षिण

(i) पश्चिम से पूर्व और उत्तर से दक्षिण की ओर जा रही वक्र रेखाओं से बने पिंजरे (Cage) के अन्तर्गत भूभाग पर ही यह ग्रहण दृश्य होगा।

(ii) उत्तर से दक्षिण की ओर जा रही वक्र रेखाओं पर ग्रहणस्पर्श का U.T. (Universal time) है। इसमें 5 घं. 30 मि. जोड़ने पर भा.स्टैं.टा. ज्ञात होगा।

(iii) पश्चिम से पूर्व की ओर जा रही वक्र रेखाओं पर परमग्रासमान अंकित है।

(iv) बीच से जा रही काली पूर्व–पश्चिम पट्टी पर खग्रास/कंकणग्रहण दृश्य होगा।

क्या 25/26 अप्रैल, 2013 ई. का खण्डग्रास चन्द्रग्रहण अनादेश्य*है ?

(लेखक :– प्रियव्रत शर्मा)

आचार्य भास्कर, गणेश दैवज्ञ आदि कुछेक **सिद्धान्त–करणग्रन्थ–कारों** का कहना है कि–अंगुलाल्प (लगभग 3 कला से कम) ग्रास वाला ग्रहण अनादेश्य (जनसामान्य को बतलाने अयोग्य) है, क्योंकि इतने अल्पग्रास वाला ग्रहण दृष्टिग्राहय नहीं होता⊕। प्रकारान्तर से ये ज्योतिर्विद्वान् अंगुलाल्प ग्रास वाले ग्रहण को ग्रहण नहीं मानते। अत एव ऐसे ग्रहण को ये स्नान–दान–जपादि के अयोग्य सिद्ध करते हैं तथा उसे ये कालदूषक भी नहीं मानते। यह बात ठीक है कि– अंगुलाल्प ग्रहण को जनसामान्य की दृष्टि भाँप नहीं पाती, लेकिन गणितसिद्ध किसी भी ग्रहण को हम उपेक्ष्य नहीं कर सकते, ऐसा करने से ग्रहणसाधन के उपपत्तिसिद्ध सिद्धान्त की प्रामाणिकता को अस्वीकार करने का शास्त्रापराध तो है ही, साथ ही यह जनसामान्य के साथ प्रवञ्चना भी है। यदि ये आचार्य अंगुलाल्प ग्रहण को वस्तुतः नगण्य, अमान्य मानते हैं, तब उन्हें खग्रास, त्रिपादग्रास, अर्धग्रास, पादग्रास आदि अंगुलाल्पाधिक ग्रास वाले ग्रहणों का प्रारम्भ(स्पर्श) तभी मानना होगा जब ग्रहणग्रास अंगुलतुल्य हो जाए और ग्रहण का मोक्ष भी उन्हें तभी मान लेना पड़ेगा, जबकि ग्रहणग्रास अंगुलतुल्य शेष बचा हो, क्योंकि ग्रहण के इन दोनों (प्रारम्भ और समाप्ति के) कालों में अंगुलाल्पग्रास सामान्य जन की दृष्टि से ग्राह्य नहीं होता। लेकिन कोई भी सिद्धान्त–करणकार ऐसा नहीं मानता। वे तो ग्रहणग्रास की प्रारम्भिक शून्य ग्रासमात्रा से मोक्षकालिक शून्यग्रासमात्रा तक के पूरे काल को ग्रहण का पूरा पर्वकाल मानते हैं। अतः स्पष्ट है– ग्रहण का स्पर्शानन्तरवर्त्ती अंगुलाल्पग्रास और मोक्षपूर्ववर्त्ती अंगुलाल्पग्रास– दोनों ग्रहण के ही भाग हैं। उन्हें स्नानदान–जपादि के अयोग्य नहीं माना जा सकता, भले ही वे जनता की दृक्शक्ति से अलक्ष्य हैं।

ध्यान रहे–सूर्यसिद्धान्त आदि मूल सिद्धान्तग्रन्थों में अंगुलाल्प ग्रहण को जनदृष्टि द्वारा अग्राह्य तो अवश्य बतलाया है, लेकिन उन्होंने इसे अनादेश्य (जन सामान्य को बतलाने अयोग्य) कदापि नहीं माना।

सूर्यसिद्धान्त के अनुसार चन्द्र का द्वादशांश (लगभग 2 कला) और सूर्य का 3 कला से कम ग्रास दृष्टिग्राह्य नहीं हो पाता–

"स्वच्छत्वाद् द्वादशांशोऽपि ग्रस्तश्चन्द्रस्य दृश्यते।
लिप्ता त्रयमपि ग्रस्तं तीक्ष्णत्वाच्च विवस्वतः।।"
–(*सूर्यसिद्धान्त*)

लगभग यही बात **वृद्ध वसिष्ठ** ने कही है कि चन्द्र का 2 कला और सूर्य का 3 कला से अल्प ग्रास दिखाई नहीं पड़ता–

"ग्रस्तं शशांकस्य कलाद्वयं चेत् कलात्रयं भानुमतो न लक्ष्यम्।"
–(*वृद्ध वसिष्ठ*)

देखिए– ये आर्षसिद्धान्त 2–3 अंगुलों से अल्पग्रास को निःसन्देह दृष्टिग्राह्य नहीं मानते हैं, लेकिन उसे ये अनादेश्य भी बिल्कुल नहीं बतलाते। इससे सिद्ध है– ऐसे अल्पग्रास वाले ग्रहण को अनादेश्य

---

* *जनता को बतलाने अयोग्य।*

⊕ *दृष्टि से अग्राह्य ग्रहणग्रास का मान जो विभिन्न आचार्यों ने बतलाया है, उसमें थोड़ा–थोड़ा अन्तर है। कुछ ने तो 2½ एवं 2 कला वाले ग्रास को भी दृष्टि द्वारा अग्राह्य लिखा है। देखिए– आचार्य भास्कर के अनुसार चन्द्र का ग्रस्त षोडशांश (लगभग 2 कला) तथा सूर्य का द्वादशांश (लगभग 2½ कला) दृष्टिग्राह्य नहीं होता–*

" इन्दोर्भागःषोडशः खण्डितोऽपि तेजः पुंजच्छन्नभावान्न लक्ष्यः।
तेजस्तैक्ष्ण्यात् तीक्ष्णगोर्द्वादशांशो नादेश्योऽतोऽल्पो ग्रहो बुद्धिमद्भिः।।"
– (*सिद्धान्तशिरोमणि*)

गणेशदैवज्ञ तो सूर्य और चन्द्र दोनों के अंगुलाल्प (लगभग 3 कला से अल्प) ग्रस्त भाग को अलक्ष्य बतलाते हैं–

" ग्रासो नादेश्योंऽगुलाल्पो रवीन्द्वोः।" –(*ग्रहलाघव*)

सूर्यसिद्धान्तकार के अनुसार चन्द्र का द्वादशांश (लगभग 2½ कला) से और सूर्य का 3 कला से कम ग्रस्त भाग अदृश्य होता है।

वृद्ध वसिष्ठ के मतानुसार तो चन्द्र की ग्रस्त 2 कलाएं और सूर्य की 3 कलाएं दृष्टिग्राह्य नहीं होतीं।

बतलाने वाला सिद्धान्त अनार्ष है। यह परवर्त्ती कुछ सिद्धान्त–करणग्रन्थ–कारों की ही कल्पना है। अतः आर्षमतानुसार ये अंगुलाल्प ग्रास वाला ग्रहण निर्विवादरूप से धर्मशास्त्रोदित स्नान–दान–जपादि के सर्वथा योग्य है और इससे विद्ध दूषितकाल तथा नक्षत्र को मुहूर्त्तशास्त्रानुसार विवाहादि शुभकृत्यों में वर्जित भी करना ही होगा।

कुछ भ्रान्त लोग **'धर्मसिन्धु'** का यह (निम्नांकित) वाक्य उद्धृत कर यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि– अंगुलाल्प ग्रहण अदृश्य रहता है। अतः उसका काल ग्रहण के पुण्यकाल में समाविष्ट नहीं है-

"चन्द्र–सूर्यग्रहणं यावच्चाक्षुष–दर्शनयोग्यं तावान् पुण्यकालः।"

– (***धर्मसिन्धु***)

लेकिन **धर्मसिन्धु** के इस वाक्यानुसार ग्रहण के स्पर्शानन्तरवर्त्ती तथा मोक्षपूर्ववर्त्ती अंगुलाल्प ग्रासों के काल को ग्रहणकाल (ग्रहण–पुण्यकाल) से बाहय नहीं माना जा सकता। क्योंकि ऐसा मानने पर तो सुदीर्घ परम्परा से चली आ रही ग्रहणपुण्यकाल की परिभाषा ही बदल जाएगी और तदनुसार ग्रहण–पुण्यकाल का आरम्भ स्पर्शोत्तरवर्त्ती अंगुलाधिक ग्रास से और उसकी समाप्ति मोक्षपूर्ववर्त्ती अंगुलात्मक ग्रास पर ही हो जाएगी। लेकिन ऐसा तो किसी भी सिद्धान्त–करणकार ने नहीं माना है। वे सभी स्पर्शारम्भ से मोक्षान्त तक की पूरी कालावधि को ग्रहण का सर्वकाल, जिसे **'ग्रहणपर्व–काल'** कहा जाता है, मानते हैं। **ध्यान रहे– ग्रहण के अलक्ष्य ग्रास वाले काल को निरपवादरूप से सभी भारतीय पंचांगकार भी ग्रहण–पर्वकाल में समाविष्ट कर, उसे धर्मकृत्यों के अनुष्ठान के योग्य युग–युगान्तर से निर्दिष्ट करते चले आ रहे हैं। धार्मिक जनता भी तदनुसार ही ग्रहण–सम्बन्धी धर्मशास्त्रोक्त विधि–निषेधों का पालन करती चली आ रही है।** अतः स्पष्ट है– **'धर्मसिन्धु'** के उपरोक्त **'चन्द्र–सूर्यग्रहणं यावच्चाक्षुषदर्शनयोग्यम्.........'** में **" चाक्षुष–दर्शनयोग्य ग्रहण"** का अभिप्राय **"गणितागत पूर्ण ग्रहणकाल"** से ही है। **देखिए– धर्मसिन्धुकार** ने ही ग्रहणनिर्णय में स्पष्ट लिखा है कि–ग्रहण के स्पर्श (प्रारम्भ) और मोक्ष (समाप्ति)– दोनों के समय स्नान करना चाहिए–

"ग्रहणस्पर्शकाले स्नानं,मध्ये होमः,सुरार्चनं श्राद्धं च मुच्यमाने दानं, मुक्ते स्नानमिति क्रमः।।"– (***धर्मसिन्धु***)

धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य भी स्पष्ट करता है कि– ग्रहणस्पर्श और ग्रहणमोक्ष कालान्तरवर्त्ती पूरी अवधि **ग्रहणपर्व-काल** है। यहां अंगुलाल्प ग्रासों का काल भी समाविष्ट है।

'ज्योतिर्निबन्ध' का यह वाक्य देखिए, जो स्पष्ट कहता है कि स्नानादि के लिए ग्रहण के स्पर्श–मोक्ष के गणितागत काल को ही प्रामाणिक मानना चाहिए–

"स्पर्श–मुक्तिनिमित्तं तु स्नानं च गणितागते।
काले कुर्वीत सूर्योन्द्वोः मेघाच्छादितयोः⊗ग्रहे।।"–(*ज्योतिर्निबन्ध*)

यहां यह बतला देना भी आवश्यक है कि– इस वैज्ञानिक युग में वेध (Observation) से सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिणाम देने वाले यन्त्र वेधशालाओं (Observatories) में उपलब्ध हैं, जो अंगुलाल्प की बात तो छोड़िए , किसी भी सीमा तक के अल्पाल्पतर ग्रास को भी स्पष्टता से दिखाने में पूरी तरह समर्थ हैं। **सन् 2013 ई. के पाश्चात्य एवं भारतीय नॉटिकल आल्मनाकों में आप देखेंगे– वहां इस (25/26 अप्रैल, 2013 ई. वाले) अंगुलाल्प चन्द्रग्रहण को कितनी स्पष्टता से दिखाया जाएगा। T.V. पर भी यह प्रसारित होगा।**

सारांश यह है कि– 25/26 अप्रैल, 2013 ई. वाले इस अंगुलाल्प–ग्रास चन्द्रग्रहण द्वारा वेधित, शूलित काल में धर्मनिष्ठ जनता को धर्मशास्त्रोक्त विधि–निषेधों का पालन करना चाहिए तथा दैवज्ञों को इस ग्रहण से वेधित/शूलित दिनों व ग्रहणकालीन नक्षत्र (स्वाती) को मंगलकृत्यों में वर्जित करना होगा, क्योंकि यह गणितशास्त्रसिद्ध वास्तव ग्रहण है।

पुनश्च– ध्यान दीजिए– 25/26 अप्रैल, 2013 ई. वाले इस चन्द्रग्रहण का परमग्रास यद्यपि परमाल्प (अंगुल से भी कहीं अल्प, केवल 2.1 प्रतिशत अथवा 0.69 कलामात्र) है, लेकिन इसका पर्वकाल 32 मिनट से भी अधिक है, जो स्नान–दान–जपादि के लिए पर्याप्त है। यह भी जान लेना चाहिए– यदि ग्रहण का पर्वकाल पलमात्र भी है तो भी वहां धर्मशास्त्रनिर्दिष्ट विधि–निषेधों का यथासम्भव पालन करना आवश्यक है, क्योंकि ग्रहणसम्बन्धी विधि–निषेधों के ख्यापक शास्त्रवाक्यों से स्पष्ट है कि– अल्पतम ग्रास वाले ग्रहण भी उनके क्षेत्र में आते हैं।

⊗ *यहां "मेघाच्छादितयोः" शब्द " दृशा अलक्ष्ययोः" का भी उपलक्षण है।*

डॉ. शक्तिधर शर्मा का महाप्रयाण– एक श्रद्धाञ्जलि

प्राच्य–नव्य ज्ञान–विज्ञान के मूर्त्तिमान् महान् कोष, भौतिक विज्ञान, सिद्धान्त–ज्योतिष, गणित एवं भारतीयदर्शन आदि विविध विषयों पर अतिलोक आधिपत्य के कारण **अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त हमारे परमप्रिय डॉ. श्री शक्तिधर शर्मा 12 अगस्त, 2012 ई. को लम्बी बीमारी के बाद हमसे बिछुड़ गए।** आपने गणित, खगोलशास्त्र की विकटता से उलझीं ऐसी अनेक समस्याओं के चमत्कारक समाधान किए, जो शताब्दियों से दुःसमाधेय मानकर विद्वानों द्वारा उपेक्षित थीं। भारतीय पौराणिक एवं दार्शनिक अनेक ऐसे प्रतिपादन, जिन्हें विगत सहस्राब्दियों की परम्परा गल्प मानती थी, उन्हें अपनी वैज्ञानिक गणितीय दिव्य प्रतिभा से बुद्धिस्पर्शी आश्चर्यकर रूप में विश्लिष्ट कर विज्ञान–संगत सिद्ध कर दिखलाया।

दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा,
M.Sc. Physics (Punjab University),
Ph.D. Nuclear Physics (U.S.A.),
M.A. (Sanskrit) (P.U. Patiala),
सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य(वाराणसी),
F.R.A.S. (London),
[10 जन., 1938 से 12 अग., 2012 ई.]

शरीर से दुबले–पतले, क्या पहना है, कैसे पहना है– उन्हें कोई सुध–बुध नहीं थी। देखने वाला कोई भी उन्हें सहसा एक सामान्य व्यक्ति समझने की भारी गलती अक्सर कर बैठता था। ऐसे भ्रामक व्यक्तित्व के धनी डॉ. शक्तिधर शर्मा की बहुमुखी प्रखर प्रतिभा में पौरस्त्य एवं पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान का नितान्त रोचक, आश्चर्यकर तथा प्रभावक एक ऐसा मिश्रण था, जो प्रयासपूर्वक ढूंढने पर भी अन्यत्र शायद ही कहीं मिल पाए। **पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के भौतिकी विभाग के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त डॉ. शर्मा के 272 भौतिक शास्त्रीय तथा अन्य प्रौढ़ शोधनिबन्ध अन्तर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।** Theoretical Nuclear Physics; Theoretical Indian Astronomy; Jain Astronomy; Buddhist Astronomy; jain Atomism (परमाणु पुद्गलवाद); Study of comets and asteroids; Common origin, Cometary distribution; Planets beyond Neptune, Pluto and Explanet; Astronomy B Stars; Indian Mathematics advancements and applications; Quantum Mechanics; Six Schools of Indian Philosophy, Ayurveda- इस तरह की सर्वथा परस्पर विसंवादी दिशाओं की प्राचीन–अर्वाचीन ज्ञानशाखाओं में अनेक छात्रों ने इनके सशक्त निर्देशन में शोध उपाधियां प्राप्त की हैं। अनेक प्राचीन भारतीय मूल के गणितप्रकारों को स्वयं विकसित कर, उनसे विज्ञान की अनेक जटिल समस्याओं को सरल बना डालने वाले विधिसूत्रों की स्थापना डॉ. शर्मा की एक विशेष ऐतिहासिक उपलब्धि है। इन्हीं विधिसूत्रों का विशद विवेचन आपने **'भौतिकी गणितम्'** आदि अपनी अनेक संस्कृत–पुस्तकों में किया है, जो संस्कृत पर आपके पूर्ण प्रभुत्व एवं इस देवभाषा के प्रति परम अनुराग, निष्ठा को अभिव्यक्त करता है। पूर्व एवं पश्चिम का चमत्कृत करने वाला ऐसा अचिन्त्य, विरल संगम डॉ. शर्मा थे। English माध्यम से भौतिक शास्त्रीय अध्यापन, शोध–निर्देशों में दशाब्दियों तक निरन्तर निमग्न रहते हुए भी संस्कृत भाषा में आपकी प्रौढ़ लेखन–भाषण की श्लाघ्य अमन्द क्षमता से प्रभावित **"मानव संसाधन विकास मन्त्रालय"** भारत–सरकार द्वारा आपको **'संस्कृत–मित्रम्'** जैसी अश्रुतपूर्व उपाधि से अलंकृत कर सम्मानित किया गया। वे ज्ञानात्मा देवरूप हमारे प्रिय भाई थे – यह चिन्तन सचमुच हमें गर्वान्वित करता है।

ईश्वर से प्रार्थना है– आप अपने पावन चरणों में इन्हें शरण दें। हम आपसे इनके लिए निर्वाण नहीं मांगेगे। **भगवन् !** आप इन्हें किसी प्रबुद्ध सुवंश में जन्म दीजिए, ताकि ये विश्व में फैले अज्ञानान्धकार को कुछ और निरस्त कर सकें।

शोकाकुल भाई – प्रियव्रत–इन्दुशेखर

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2070 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

गत संवत् 2069 वि. में 4 अगस्त, सन् 2012 ई. को 08 घं. 49 मि. पर शतभिषा नक्षत्र और कुम्भ राशिस्थ चन्द्र के समय शनिदेव मार्गी गति से तुला राशि में पदार्पण कर सं. 2070 वि. के अन्त तक तुलाराशि में ही विचरण करते रहेंगे।

तुला राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(4 अगस्त, सन् 2012 ई. से सं. 2070 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
कर्क	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्त–विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान– हानि, व्यापारहानि, राजभय।
कन्या	साढेसाती	सुवर्ण	पाद	उतरती	निजीजन–विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथाव्यय, धनहानि।
तुला	साढेसाती	रजत	हृदय	– –	व्यापार में प्रगति, धन–धान्यसमृद्धि, प्रभाववृद्धि, सम्मान– प्राप्ति, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मंगलकार्य हों।
वृश्चि.	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्त–विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान– हानि, व्यापारहानि, राजभय।
मीन	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरकष्ट, रक्त–पित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं संतान– हानि, व्यापारहानि, राजभय।

नोटः– ऊपर दिए गए कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है; उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल तुलाराशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है,– यह समझ लें।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि–मन्त्रजापमहं करोमि"– इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि–मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर पीपल के नीचे दीपक जलाएं।

मन्त्रजाप की विधि– अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्तसमय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अञ्जलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली–धूप–लालचन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर **"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"**– इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटे) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें :–

" ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति–कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि–रूपाय कृतान्ताय च ते नमः।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जाएं। किसी अच्छे विद्वान्, दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) नीली नग या नीलम धारण करना भी ठीक रहेगा।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः, शं ॐ"।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शनैश्चर–स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

" ॐ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

संवत् 2070 वि. में गुरुसंचार का शुभाशुभ फल

विगत सं. 2069 वि. में 17 मई, सन् 2012 ई. को 9 घं. 34 मि. पर रेवती नक्षत्र, प्रीति योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव वृषराशि में प्रविष्ट होकर सं. 2070 वि. में 31 मई, सन् 2013 ई. तक वृषराशि में ही रहेंगे।

वृष–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(17 मई, सन् 2012 ई. से संवत् 2070 वि. में 31 मई, सन् 2013 ई तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट

मिथुन–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

31 मई, सन् 2013 ई. को 6 घं. 48 मि. पर धनिष्ठा नक्षत्र, वैधृति योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव मिथुन–राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2070 वि. के अन्त तक मिथुन राशि में ही रहेंगे।

मिथुन–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(31 मई, सन् 2013 ई. से संवत् 2070 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग–भय	सुख	धनहानि

गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो :– गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़–शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरुग्रह के बीजमन्त्र का 19 हजार जाप करें। गुरु का जपनीय बीजमन्त्र यह है:– " ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला पुखराज 5/7 रत्ती तर्जनी अंगुली में धारण करें।

राहु के संचार का शुभाशुभ फल
(सं. 2070 वि.)

विगत संवत् 2069 वि. में 23 दिसंबर, सन् 2012 ई. को 18 घं. 7 मि. पर भरणी नक्षत्र, शिवयोग एवं मेषस्थ चन्द्र के समय राहु तुलाराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2070 वि. के अन्त तक तुलाराशि में ही संचरण करेगा।

तुला–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल
(23 दिसंबर, सन् 2012 ई. से संवत् 2070 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि

राहु जन्माङ्ग में या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो कम्बल, तिल–तैल, नारियल, लौंग एवम् काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणा–सहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु का बीजमन्त्र (" ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।") का 18 हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहु–शान्त्यर्थ गोमेद 5/7 रत्ती धारण कर सकते हैं।

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम–संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव-संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियङ्गु कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।

नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2070 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

1. संवत् 2070 वि. का राजा गुरु एवं मन्त्री शनि परस्पर विरुद्ध प्रकृति के होने से राजनीति के क्षेत्र में इसवर्ष काफी उलटफेर होंगे।
2. इसवर्ष 'पराभव' संवत्सर में केन्द्र एवं कुछ प्रान्तों में शक्तिपरीक्षण के परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।
3. इस वर्ष 'धनेश' चन्द्र होने से आर्थिक सुधारों के प्रयास समृद्धिप्रद होने पर भी परिणाम निराशाजनक रहेंगे। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। जनता के आक्रोश के परिणाम दूरगामी होंगे।
4. 'मेघेश' शुक्र एवं 'विवह' नामक वायु–विचार से इसवर्ष समुद्रतटवर्ती भूभाग आंधी–तूफान, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि के शिकार होंगे।
5. संवत् के प्रारम्भ से 7 जुलाई, 18 अगस्त से 4 अक्तूबर, सन् 2013 ई. तक एवं 4 फरवरी, 2014 ई. से संवत् 2070 वि. के अन्त तक की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार असम, उड़ीसा, मुम्बई(महाराष्ट्र), काश्मीर एवं बंगाल आदि में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, कहीं पृथक्तावादी तत्त्वों से जनधनहानि के योग हैं।
6. भारत की राजनैतिक पार्टियों में परस्पर कूटनीति से तोड़–फोड़ द्वारा राष्ट्रीय नेतृत्व के विकल्प भविष्य।
7. कांग्रेस एवं भाजपा की कार्यशैली एवं दिशा।
8. नया–मोर्चा एवं पार्टियों की दिशाहीन कार्यशैली।
9. महामहिम श्री राष्ट्रपति जी एवं प्रधान–नेतृत्व की ग्रहस्थिति पर ग्रहगोचर का प्रभाव– पढ़ें आकाशी कौंसिल में।

अज्ञात–अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री–बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी–विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहिर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं। हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिष–शास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है,–

"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तदज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।" – (श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण–विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त समाज, व्यक्ति किंवा देश की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मनः।।"

यह बात भी नितांत सत्य है, कि– ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि– आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है – इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 86वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2070 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 85 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 86 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित, समस्या समाधान, प्रामाणिक ग्रहणगणित, शोधपूर्ण लेखों एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

[भारत–पाकविभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाकयुद्ध; भारत–चीनयुद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभानिर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी–लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004 ई. को अमरीका में भूकम्प एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है।]

अपि च– संवत् 2063 वि. में इराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा; 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी; भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन सिंह जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना; मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण; 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई. को पीरु के भयंकर भूकम्प; 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान; 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प; *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा; 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी; 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प; 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प; सं. 2065 वि. में मुंबई स्थित ताज होटल पर सब से बड़े उग्रवादी हमले की भविष्यवाणी; 14 नवम्बर, 2008 ई. को चन्द्रमा पर भारत का तिरंगा फहराना एवं भारत के विश्व की चौथी शक्ति के रूप में उदय की भविष्यवाणी; *सं. 2066 वि. में नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति एवम् गणतन्त्र की स्थापना, सं 2066 वि. में अमरीका में बराक ओबामा के राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी, श्री मनमोहन सिंह जी का पुनः प्रधानमन्त्री बनना; 12/13 जनवरी, 2010 ई. को हैती के विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी; 10/11 अगस्त, 2010 को जापान एवं चीन में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी* एवम् अन्य अवाक् कर देने वाली सहस्रों सफल भविष्यवाणियों का श्रेय "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग" को ही जाता है।

इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह एकमात्र प्रामाणिक 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' सम्पूर्ण भारत में ही नहीं किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

विगत सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं है, लेकिन सं. 2070 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व गत दो–तीन वर्षों की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) भविष्यवाणी– "13 जनवरी, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल वक्री रहेंगे। यह समय अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। धार्मिक–सांप्रदायिक झगड़े, हत्याकाण्ड, कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक

आपदाओं का सामना इस देश को जनवरी, 2010 से मार्च, 2010 तक करना पड़ेगा।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 43, कॉलम 2)

(i) **" Deadly quake jolts Chile"- Daily Tribune, Chandigarh-dated 28/2/2010.** चिल्ली में 8.8 magnitudes के भयंकर भूकम्प से 27 फरवरी, 2010 ई. को 147 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु। सुनामी अलर्ट।

(ii) 17 जनवरी, 2010 ई. को सम्माननीय ज्योतिवसु स्वर्ग सिधारे, जोकि भारतीय राजनीति के एक युगपुरुष थे। भारतीय राजनीति में यह एक भारी दुःखद घटना रही है।

(iii) 15 मई, 2010 ई. को महामहिम पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत जी स्वर्ग सिधारे– यह घटना भी भारतीय राजनीति के क्षेत्र में एक भारी दुःखद घटना के रूप में जानी जाती है।

इस प्रकार संवत् 2066 वि. के अन्तिम चरण में शनि–मंगल के वक्रत्व के फल की भविष्यवाणी स्पष्टतः सत्य सिद्ध हुई।

(2) भविष्यवाणी– 24 जुलाई को गुरु वक्री होगा। आगे श्रावण चान्द्रमास में (27 जुलाई से 24 अगस्त तक) 5 मंगलवार होने से अगस्त के दूसरे सप्ताह में कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि संभव है।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 39, कॉलम 1)

(i) लेह (लद्दाख) में 5/6 अगस्त की रात्रि में भयंकर 'बादल–विस्फोट' की घटना में जो जनधनहानि हुई है, वह भारी दुःखद एवं अविस्मरणीय प्राकृतिक प्रकोप के रूप में जानी गई है। हवाई अड्डा ध्वस्त हुआ, अनगिनत लोग मारे गए।

(ii) इसी दौरान (27 जुलाई से 24 अगस्त के मध्य) पाकिस्तान एवं चाइना में भयंकर बाढ़ से हज़ारों व्यक्तियों के मरने, लाखों के बेघर होने की सूचना भी समाचारपत्रों में प्रकाशित और टी. वी. चैनल्ज़ पर प्रसारित हुई है।

ये दोनों घटनाएं उल्लिखित भविष्यवाणी की सत्यता को अक्षरशः प्रमाणित करती हैं।

(3) भविष्यवाणी– 16 मार्च से 14 अप्रैल तक सूर्य–शनि का समसप्तकयोग बनेगा। दोनों प्रबल शत्रुग्रह हैं। नक्सली अपनी शक्तिसत्ता का विस्तार करेंगे। भारत के आसाम–त्रिपुरा–नागालैण्ड– झारखण्ड आदि में इनकी शक्ति को नज़र अन्दाज़ करना आगे चलकर भयानक परिणामों वाला सिद्ध होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अप्रैल, सन् 2010 ई. में धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखना होगा, क्योंकि इस समय उग्रवादजन्य किसी घटना किंवा किसी दुर्घटना से जनधनहानि के योग बनते हैं।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2067 वि., पृ. 34, कॉलम 1)

(i) "14 अप्रैल, 2010 ई. को तिब्बत के पठार में 7.1 रिएक्टर के भूकम्प से भारी तबाही ।"– *'दैनिक भास्कर '*

इस भूकंप में 400 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई, 10,000 से अधिक घायल हुए।

(ii) 14 अप्रैल, 2010 ई. को हरिद्वार में अन्तिम शाहीस्नान के समय "सूखी नदी पर बने पुल की रेलिंग टूटी।"

भगदड़ में सात व्यक्ति मारे गए एवं 17 श्रद्धालु घायल हुए।

(iii) 10 अप्रैल, 2010 ई. को पोलैण्ड के राष्ट्रपतिसहित 96 लोग विमानदुर्घटना में मरे।

(iv) 13/14 अप्रैल को रात्रि में 40 मिनट चले भयंकर तूफान से बिहार, पश्चिमी बंगाल एवं असम में भारी जनधनहानि हुई। तूफान से उत्तरी दिनाजपुर ज़िले में 50,000 घर गिर गए। बिहार में अरिया, असम में धुबरी, जोरहाट, तिनसुकिया, शिवसागर व कामरूप ज़िलों में भारी विनाशलीला देखी गई।

आगे सं. 2067/2068 वि. की कुछ प्रसिद्ध किंवा अवाक् कर देने वाली कुछ और भविष्यवाणियों की चर्चा हम संक्षेपतः कर रहे हैं :–

(1) " 3 जनवरी को ऑस्ट्रेलिया में भीषण बाढ़ से तबाही। लाखों लोग बेघर हुए।" इस भविष्यवाणी की सत्यता का आलेख पढ़ें सं. 2067 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृ. 118 पर " लोकभविष्य " जिसमें स्पष्ट लिखा है – "(पौष कृष्ण) अमावस (4 जन. 2011 ई. को) मंगलवारी है, अतः कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।"

" मिश्र में बगावत, सऊदी अरब में बगावत, 23 जनवरी को ट्यूनेशिया में बगावत, जॉर्डन–यमन में बगावत, 12 फरवरी को पाक में गिलानी–मन्त्रिमंडल भंग, बहरीन में हालात बिगड़े " –

इन सारी घटनाओं का संकेत " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " सं. 2067 वि. की आकाशी कौंसिल पृ. 33, कॉलम 1 में स्पष्टरूप से पहले ही निम्न शब्दों में कर दिया गया था, पढ़ें –

" पाकिस्तान एवं अन्य मुस्लिमराष्ट्रों के नायकों के लिए भी यह संवत् 2067 संकटापन्न स्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, विस्फोट कुछ राष्ट्रों की शान्ति को भंग करेंगे। प्रधान नेतृत्व के लिए यह योग विशेष चिन्ताकारक है।"

(2) 21 फरवरी, 2011 ई. सोमवार को लगातार 42 वर्ष तक लीबिया पर शासन करने वाले तानाशाह कर्नल गद्दाफी को लीबिया छोड़कर भागना पड़ा। संसद व सरकारी भवनों को आग लगा दी गई, सैकड़ों लोग मारे गए।

इस घटनाक्रम को स्पष्टरूप से " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. की आकाशी–कौंसिल में पृ. 30 पर ' मुस्लिम राष्ट्र " शीर्षक के अन्तर्गत इन शब्दों में चिरकाल पहले ही लिख दिया था, –

"मुस्लिमराष्ट्रों में उग्रवाद एवम् आन्तरिक अशान्ति से जनधनहानि के योग बनते हैं। यहां के विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन को खतरा है। इन्हें अपने सुरक्षाप्रबन्धों को सुदृढ़ करना होगा। सेना किंवा सुरक्षात्मक पंक्ति में भी आई. एस. आई. के एजेंट स्थानीय नेतृत्व को परेशानी में डाल सकते हैं। दिसम्बर, 2010 ई. से विशेषतः 15 फरवरी से संवत् 2068 वि. के अन्त तक शनि–मंगल की स्थिति किसी मुस्लिमराष्ट्र की शासनसत्ता में अचानक परिवर्तन ला सकती है। यहां के शासकों के लिए ग्रहस्थिति काफी चिन्तनीय मालूम देती है।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार ही –

(i) मिश्र में 30 साल के तानाशाह शासनकाल का अन्त; राष्ट्रपति मुबारक का इस्तीफा, सेना के हाथ सत्ता।

(ii) ट्यूनिशिया के राष्ट्रपति के विरुद्ध बगावत, त्यागपत्र देकर इन्हें देश छोड़कर भागना पड़ा।

ये भी इस उपरोक्त भविष्यवाणी की सत्यता को स्पष्ट कह रहे हैं।

(3) 11 मार्च, 2011 ई. को जापान में अब तक इस सदी के भयंकर विनाशकारी भूचाल एवं सुनामी से जो विनाश हुआ था, उसका उल्लेख सं. 2067 वि. के " श्रीमार्त्तण्ड पंचाग " में स्पष्टरूप से कर दिया गया था, देखें पृ. 122 "लोकभविष्य"–

" इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से अमरीका, जापान एवं अन्य देशविशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड व ज्वालामुखी–विस्फोट से जनधनहानि के संकेत मिलते हैं।"

इस भयंकर जापानी दुर्घटना को The Times of India ने इस प्रकार लिखा था–" **Quake, Tsunami Pummel Japan, 8.9 Temblor Triggers Wall of water, Many fires, Houses, cars Tossed Ground like Toys."**

दैनिक पंजाब केसरी ने इस घटना को– "महाभूकम्प / महासुनामी" रूप में घोषित किया।

समाचारपत्रों के अनुसार यह 140 वर्षों में सबसे भयानक भूकम्प था, इसमें 1,000 लोग मारे गए। इस सुनामी का प्रभाव फिलिपीन्स एवं अमरीका में भी देखा गया।

(4) "Terror Back in Mumbai"- Hindustan Times, dated 14th July, 2011;-

" मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा पुनः 13/7/2011 को कहर बरपाया गया"–

इस वारदात की भविष्यवाणी पढ़ें– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि., पृ. 29, कॉलम 1 में–

12 जून से मंगल वृषराशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं केतु के साथ मेल करेगा। पहले ही 7 जून को राहु वृश्चिक एवं केतु वृष में प्रविष्ट होकर दोनों संवत् 2068 के अन्त तक इन्हीं राशियों में चलेंगे। इसी मध्य अघटित घटनाचक्र चलेगा। उग्रवादी विदेश एवं स्वदेश के महानगरों में कहर बरपाएंगे। जानी–माली नुकसान से विश्व में अशान्ति व्याप्त होगी। कहीं समुद्री तूफान, यानदुर्घटना एवं वरिष्ठ व्यक्तिविशेष के निधन किंवा हत्या से जनजीवन अस्त–व्यस्त होगा।

(5) 2 मई को आतंकवादी नेता लादेन की हत्या कर दी गई– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. पृ. 29, कॉलम 1 में पढ़ें–

" विश्व के यावनराष्ट्रों एवं अमेरिका, भारत आदि राष्ट्रों में उग्रवादजन्य घोर अशान्ति, विस्फोट आदि से जनधनहानि एवं किसी व्यक्ति के हत्याकाण्ड की घटना शनि–मंगल के समसप्तक के कारण होगी। शनि–मंगल का यह समसप्तक 2 मई, 2011 ई. तक प्रभावी रहेगा।"

(6) " हम तीसरे सबसे शक्तिशाली देश " – दैनिक भास्कर, दिनांक 22/10/2010, यह समाचार अमेरिका की सरकारी रिपोर्ट 'ग्लोबल गवर्नेंस 2025' में खुलासा किया गया।

इस सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि. के पृ. 31, कॉलम 1 में इस प्रकार की गई थी–

" स्वतन्त्र भारत के 64वें वर्ष का उदय मिथुन लग्न में हो रहा है। लग्नेश बुध मुन्था के क्षेत्र में लग्न से तृतीयस्थ है। तृतीयेश सूर्य मुन्थेश होकर द्वितीय स्थान में गुरु से दृष्ट है। ग्रहगति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि– आगामी समय में एशियन देशों में भारत तेज़ी से आर्थिक प्रगति की ओर अग्रेसर होगा। भारत द्वारा सभी क्षेत्रों में विकास, बचत की बढ़ती दर प्रगतिशील देशों को आश्चर्यचकित कर सकती है। दूसरे देशों द्वारा पूंजीनिवेश विशेषरूप से भारत में होगा और देश प्रगतिपथ पर आगे बढ़ेगा। लेकिन 64वें वर्ष की स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में चतुर्थ भावस्थ शनि–मंगल एवम् नीच शुक्र कन्या नामराशि वाले किंवा मीन, मेष, वृश्चिक राशि वाले देशों में से किसी देशविशेष (पाक, चीन या नेपाल आदि) के साथ सीमाप्रान्तों पर अशान्ति बनेगी। सीमामुद्दा गरमाएगा, सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे।"

इसी भविष्यवाणी का सत्यापन दैनिक भास्कर ने इस प्रकार किया है–

" दुनिया में हमारी बढ़ती ताकत को स्वीकार करते हुए अमेरिका की एक सरकारी रिपोर्ट में भारत को दुनिया का तीसरा सबसे शक्तिशाली देश घोषित किया है। यह सम्भावना भी जताई गई है कि– भारत की ताकत 2025 तक और बढ़ जाएगी।

2010 के सबसे ताकतवर देशों की सूची में भारत को अमेरिका और चीन के बाद तीसरा सबसे शक्तिशाली देश बताया गया।"

पाक–चीन दोनों देशों की सीमाओं पर गतिविधि भारत–सरकार के लिए चिन्ताजनक ही बनी हुई है– यह सर्वविदित है।

(7) (A) संवत् 2068 वि. में 20 अक्तूबर को लीबिया के शासक कर्नल गद्दाफी के मारे जाने की भविष्यवाणी–

(B) 24 अक्तूबर, 2011 को तुर्की में 7.2 रिक्टर के भूकम्प से लाखों लोग बेघर हुए एवं हजारों लोग मारे जाने का समाचार समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

इन दोनों भविष्यवाणियों बारे पढ़ें–" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2068 वि., पृ. 29, कॉलम 2 में–

" 20 सितंबर को चित्रा नक्षत्र का शनि एवं 26 सितम्बर को शनि का अस्त होना तथा 'खप्परयोग' कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन का संकेत देते हैं– "यदा चित्रांगतः सौरिः छत्रभंगस्तदा भवेत्।" कहीं किसी राष्ट्र में आन्तरिक स्थिति विकृतरूप धारण करेगी। कहीं शासनसत्ता में आकस्मिक परिवर्तन हो। भूकम्प, चक्रवात, समुद्री तूफान (सुनामी) आदि से किंवा यानदुर्घटना से भारी हानि भी संभव है।"

सं. 2069 के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" से आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध भविष्यवाणियों का उल्लेख–

(8) (i) 22 जुलाई, सन् 2012 ई. को ईराक में सबसे खूनी दिन, 107 मरे– ईराक के बग़दाद में बम–धमाकों एवं गोलाबारी की घटनाओं में 214 ज़ख्मी, 13 शहरों में बम हमले और गोलाबारी की 27 वारदातें। – पंजाब केसरी, 23 जुलाई, 2012 ई.।

" ध्यान दें– चान्द्रमास श्रावण एवं कार्त्तिक (4 जुलाई से 2 अगस्त, 2012 ई. तक) की ग्रहस्थिति विश्व के राष्ट्रों के लिए भारी आपदाओं को लेकर उपस्थित हो रही है। सितम्बर तक की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अलकायदा के बड़े विनाशकारी हमले से सितम्बर तक भारी जनधनहानि को नकारा नहीं जा सकता।"

(" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 34, कॉलम 1)

उपरोक्त घटना को यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध करती है।

(ii) " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " की अवाक् करने वाली भविष्यवाणी–

संवत् 2069 वि. के " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " में पृ. 36, कॉलम 1 में स्पष्ट घोषणा की गई थी कि– 12 अगस्त, 2012 से आगे का समय केन्द्रीय शासनतन्त्र में भयंकर गतिरोध वाला है–

'पाठक नोट करें– 66वें स्वतन्त्र–भारत के वर्षलग्न में लग्नेश–गुरु, छठे भाव में वृषराशिस्थ केतु के साथ राहु एवं मंगल की दृष्टि में है। अतः यह वर्ष 12 अगस्त, 2012 ई. से अप्रैल, 2013 ई. तक केन्द्रीय शासनतन्त्र में भयंकर गतिरोध वाला है। शासनतन्त्र जनता का विश्वास प्राप्त करने का भरसक प्रयास करने पर भी लाचार मालूम देगा। परिणाम दूरगामी मालूम देते हैं। भारत की वर्षकुण्डली में नवमेश सूर्य एवं दशमेश–बुध पर शनि की दृष्टि होने से यह वर्ष वरिष्ठ नेतृत्व एवं वंशानुगत राजनैतिक सदस्यों व प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भारी उलझनपूर्ण एवं भयावह सिद्ध होगा।"

पाठको ! इस भविष्यवाणी की शतप्रतिशत सफलता आज संसद सत्र में भयंकर गतिरोध एवं प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह के कोयला घोटाले को लेकर जो पदत्याग की जबरदस्त मांग की जा रही है, उससे पूर्णरूप से सत्य सिद्ध हो रही है।

(iii) भारत की वित्तीय नीति एवं भारतीय नेतृत्व की अशक्तता की भविष्यवाणी पढ़ें–(" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 36, कॉलम 2)

" इस संवत् 2069 वि. में जगत् लग्नकुण्डली एवं भारतीय गणतन्त्र–कुण्डली के विचार से भारत की कमज़ोर वित्तीय नीति से आर्थिक सुधारों को आगे ले जाने में भारतीय नेतृत्व अभी कुछ अशक्त रहेगा। वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अभी और उलझनें आने वाले योग हैं। कर्ज–संकट पूरे यूरोप को चपेट में ले लेगा। भारत में भी राजस्व घाटे और उच्च मुद्रास्फीति के कारण आर्थिक सुधार–प्रक्रिया पर बुरा असर पड़ने के योग हैं।"

(iv) 'जनलोकपाल बिल' पर सरकार की प्रतिबद्धता इस वर्ष सिद्ध नहीं हुई– (पढ़ें–" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 40, कॉलम 2)

" लोकपाल–विधेयक पर सत्तारूढ़ दल की कोई विशेष–प्रतिबद्धता नज़र नहीं आएगी। क्योंकि, भ्रष्टाचाररूपी खौफनाक शेर की पूंछ को पकड़कर उसे पिंजरे में डालना तब तक सरकार के लिए संभव नहीं होगा, जब तक वह लोकतन्त्र की आत्मा को देशभक्त नेताओं को समर्पित नहीं करती। "

(v) महामहिम श्रीप्रणव मुखर्जी महाभाग के विशेष पदाप्तियोग एवं प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह एवं श्री राहुल गांधी के बारे की गई भविष्यवाणी–

" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के सह सम्पादकमण्डल के सदस्य श्री संयमी शर्मा ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य, M.A. ने अपनी U.S. यात्रा के दौरान पत्रकारों से वार्ता करते हुए 21 जुलाई, 2011 ई. को इन शब्दों में उपरोक्त भविष्यवाणी कर दी थी– जोकि U.S.A. में प्रकाशित होने वाले " **India Tribune" dated 22 जुलाई, 2011** में इस प्रकार प्रकाशित हुई थी :–

" Sanyami Sharma, who was on a tour of the U.S., spoke to India Tribune about his hall mark predictions.

He claims that he and his father have accurately predicted the Indonesian and Japanese tsunamis, Barack Obama's ascendance to the Presidency of the USA, A.B. Vajpayee becoming the Prime Minister of India, the assassination of the former Indian Prime Minister Indira Gandhi, the end of

royalty in Nepal replaced by Maoist-backed government, and terrorist attack on Taj Hotel in Mumbai. He observed that the continuation of Dr. Manmohan Singh as the Prime Minister of India is doubtful for two reasons-his frail health and the pressure exerted by the Opposition parties.

But the future is very bright for Union Finance Minister Parnab Mukherjee, who will rise in his stature because the stars are in his favour for growth.

The stars of Congress Party secretary Rahul Gandhi are very strong and he will one day become the Prime Minister of India."

" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2069 वि.) में पृ. 41 पर महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी की ग्रह स्थिति पर चर्चा करते हुए लिखा था कि– " इस समय केतु की महादशा में बृहस्पति का अन्तर 20 अक्तूबर, 2012 ई. तक प्रभावी रहेगा। इन्हें कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व की प्रमुख कड़ी के तौर पर जाना जाएगा। ....ग्रहस्थिति श्रीप्रणव मुखर्जी के लिए विशेष पदाप्ति का योग बनाती है।"

इसी समयावधि में श्री प्रणव मुखर्जी 'महामहिम राष्ट्रपति' पद पर आसीन हैं;– इस भविष्यवाणी की सफलता पर हज़ारों पत्र प्राप्त हुए हैं।

(vi) 3 अगस्त (2012 ई.) को चीन में भीषण तूफ़ान से 10 लाख लोग बेघर। पढ़ें– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 33–34)

" .... राशि वाले देश में समुद्रतटवर्ती भूमाग पर समुद्री तूफान.........से भारी जनधनहानि के योग हैं। "

चीन के तटीय इलाकों में 2 भीषण तूफ़ानों से 10 लाख से ज्यादा लोग बेघर हुए।

(vii) 27 अगस्त (2012 ई.) को केरल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान, मुम्बई, नेपाल, उत्तरप्रदेश के कई ज़िले जलग्रस्त, लाखों लोग बेघर हुए।

पढ़ें– " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 100 पर– " आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश रात्रि के समय हुआ है। बुध–चन्द्रयोग आंधी–तूफान, दक्षिण–पश्चिम में सामान्य से अधिक वर्षा का सकेत देता है। पूर्वी एवं पश्चिमी भूमाग में कहीं असामयिक वर्षा भी हो। "

ईरान में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन " नाम " (भावी शक्ति) के रूप में सम्पन्न–

" इसवर्ष शनि–मंगल एवं शनि–राहु की स्थिति के अनुसार चीन की दोस्ती पाक के पड़ौसी देश के लिए भयावह रहेगी। मुस्लिमराष्ट्र पाक, सऊदी अरब, लेबनान, इराक, ईरान, टर्की, अफ़ग़ानिस्तान, बंगलादेश आदि राष्ट्रों में एकता की बात से यूरोपीय देशों के खिलाफ विश्वव्यापी संगठन बनाने के योग नज़र आएंगे। "

'नाम ' आन्दोलन उन 120 देशों का है, जो आज तक U.S.A., रूस, फ्रांस आदि के प्रभाव में दबे रहे हैं।

(viii) जुलाई–अगस्त में असम में जातीय हिंसा में 400 गांव चपेट में आए। अनेकों लोग मारे गए। स्थिति पर नियन्त्रण पाने के लिए केन्द्र को 1400 अर्धसैनिक बल भेजने पड़े।

इस उल्लिखित घटनाचक्र की सकेतक भविष्यवाणी पढ़ें–

" श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " संवत् 2069 वि., पृ. 38, कॉलम 1 पर–

" श्रावण चान्द्रमास (4 जुलाई से 2 अगस्त, 2012 ई. तक की अवधि) में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों एवं प्रान्तों में भारी कष्टमय एवं उग्रवादजन्य गतिविधियों से संकटमय स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। आसाम, गुजरात, उड़ीसा, महाराष्ट्र एवं बंगाल की ओर शासकों को सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत गतिविधि एवं उग्रवादियों की मारधाड़ से बचाव के लिए जनसाधारण की रक्षा के लिए सचेत रहना होगा।"

[नोट– स्थानाभाव के कारण सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा करना यहां सम्भव नहीं है।]

पाठको ! श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गईं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2070 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की

इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2070 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

इस संवत् को शास्त्रों ने ' पराभव ' नामक संज्ञा दी है। शास्त्रानुसार इस 'पराभव संवत्सर' में राजनैतिक दलों में परस्पर शक्तिपरीक्षण की भावना बलवती हो जाती है। क्षुद्र धान्य बाजरा, जौ एवं दालवाना आदि की फसल पर्याप्त हो, वर्षा समयानुसार कम हो–

"पराभवाब्दे राज्ञां स्यात् समरः सह शत्रुभिः।
आमयः क्षुद्र सस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः।।"

किञ्च– इस 'पराभव संवत्सर' में कुछ प्रान्तों में अकाल की स्थिति बने। अनाज एवं औषधियों के मूल्य पहुंच से अधिक लगने लगें। ग्रीष्म ऋतु में वर्षा हो–

" पीडिताश्च प्रजाः सर्वाः क्षुधार्ताः स्युः पराभवे।
धान्यौषधानि नश्यन्ति ग्रीष्मे वर्षति माधवः।।"

इस संवत् 2070 वि. का राजा देवगुरु बृहस्पति है। शासन तन्त्र में सुधार, आर्थिक स्थिति पर विशेष मन्थन से नए आयाम उपस्थित होंगे। जनहितार्थ नई योजनाएं बनेंगी। गतवर्ष (सं. 2069 वि.) का राजा एवं मन्त्री दैत्यगुरु शुक्र होने से इससे विपरीत ग्रहस्थिति का संकेत मिला था; जोकि हमने पृष्ठ 32, कॉलम 1 पर इस प्रकार लिखा था–

" यह ' विश्वावसु ' नामक (सं. 2069 वि.) संवत्सर है, यह संवत् देश के लिए आर्थिक संकट वाला रहेगा। वर्षा अच्छी; चावल, गेहूं, जौ, ज्वार एवं दालवाना की फसल उत्तम रहेगी। सोना, चान्दी आदि धातुओं के भाव निरन्तर बढ़ते जाएंगे।

संवत् 2069 वि. का राजा शुक्र होने से राजस्थान (मारवाड़ आदि) में भी अच्छी वर्षा से किसान अच्छी उपज प्राप्त करेंगे। ध्यान दें– इसवर्ष वर्षा अधिक होने से चावल आदि बहुजलीय अनाजों की उपज काफी होगी। "

गतसंवत् 2069 वि. में पृष्ठ 32, कॉलम 2 पर ' ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव ' शीर्षक के अन्तर्गत हमने देश के प्रान्तों मे भयंकर बाढ़, राजनैतिक संकट, आर्थिक संकट की स्पष्ट घोषणा इन पंक्तियों में की थी, जोकि आज केन्द्रीय शासनसत्ता को स्पष्टरूप से अनुभव करना पड़ रहा है। सटीक भविष्यवाणी फलितज्योतिष की गरिमा को स्पष्ट करती है :–

" इस संवत् (2069 वि.) में महाक्रूर ग्रह शनि को धान्याधिपति पद प्राप्त है। अतः कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण शासकों को कठिन परिस्थिति एवं आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। देश में राजनैतिक दल शक्तिपरीक्षणार्थ अन्तर्मन से तैयारी में सन्नद्ध मालूम देंगे। केन्द्रीय सत्तारूढ़ दल के लिए कई प्रश्नचिह्न उपस्थित होंगे, जिसका हल सहज संभव न मालूम देगा।"

इन पंक्तियों की सत्यता का मूल्यांकन जनता स्वयं कर सकती है। कोयला–घोटाला आदि को उजागर करके विपक्षी दल ने केन्द्रीय शासनतन्त्र के आगे प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी से त्यागपत्र की मांग करके प्रश्नचिह्न उपस्थित कर दिया है। क्या इसे विपक्षी दल के शक्तिपरीक्षण का अन्तर्मन न समझें ?

इस वर्तमान सं. 2070 वि. का मन्त्री शनि होने से शासकों का लोकविरुद्ध किंवा नीतिविरुद्ध व्यवहार जनता में असन्तोष बढ़ाए एवं जनता को शासनतन्त्र में परिवर्तन के लिए प्रेरित करेगा। आर्थिक समृद्धि बाधित होने से नए करों से जनता परेशान रहे।

वर्तमान संवत् (2070 वि.) में सस्येश एवं नीरसेश दो पद मंगलग्रह को, भेघेश–फलेश एवं दुर्गेश– ये तीन पद वर्षेश गुरु के शत्रुग्रह शुक्र को प्राप्त हैं। इस प्रकार 6 प्रमुख पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त हैं। स्पष्ट है कि– यह संवत् (2070 वि.) अनेक प्रान्तों में भारी प्राकृतिक आपदाओं से हानि के संकेत दे रहा है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार प्रतिष्ठित शासनतन्त्र सत्ता–सुख भोग रहे राजनीतिक दल एवं प्रतिष्ठित नेताओं के लिए यह संवत् (2070 वि.) संकटपूर्ण समस्याओं को लेकर उपस्थित हो रहा है। संवत् 2070 वि. के उत्तरार्ध के लगभग परिणाम राजनीतिक जगत् के लिए आश्चर्यजनक सिद्ध होंगे।

संवत् 2070 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत् लग्नकुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नजर

वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली

10 | 8
11 | 9 | 7 श.रा.
बु. 12 | 6
शु.के. सू. 1 मं. | 3 | 5
2 चं.गु. | 4

13 / 14 अप्रैल, 2013 ई. 25 घं. 28 मि.(IST)

सं. 2070 वि. में जगत्लग्न का प्रारम्भ धनु लग्न में हो रहा है। लग्नेश एवं चतुर्थेश गुरु शत्रुक्षेत्र (शुक्र की राशि) में उच्चस्थ–चन्द्र के साथ बैठा है। द्वितीय एवं तृतीय भावेश शनि राहु के साथ अपनी उच्चस्थिति में है। यहां राहु के साथ शनि भी वक्री है। यहां सूर्य, मंगल, शुक्र, केतु– ये ग्रह शनि–राहु के साथ समसप्तक बना रहे हैं। इस संवत् 2070 वि. की जगत्कुण्डली की ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– मेष राशिस्थ सूर्य, मंगल, शुक्र, केतु पर शनि की पूर्ण दृष्टि होने से इस वर्ष अमेरिका, अफग़ानिस्तान, ईरान, अरबराष्ट्र, नेपाल, पाकिस्तान, कोरिया, ऑस्ट्रिया, सीरीया, बंगलादेश एवं चीन आदि में विशेष राजनैतिक उपद्रव, आर्थिक संकट एवं समुद्रतटवर्ती देश के इलाकों में किंवा भारत के महानगरों में कहीं समुद्री

तूफान, विशेष प्राकृतिक आपदा, भूकम्प किंवा कहीं भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि के योग जुलाई से सितंबर, 2013 ई. के मध्य बनेंगे।

मुस्लिम–राष्ट्रों में कहीं अचानक शासकीय परिवर्तन, कहीं आन्तरिक–क्रान्ति, कहीं सेना द्वारा सत्ता हथियाना भी संभव है।

भारत की प्रभाव राशि मकर का स्वामी शनि राहु के साथ है, इन पर मंगल की दृष्टि भी है। अतः भारत के उत्तरांचल, महाराष्ट्र, आसाम, मणिपुर, उडीसा, जम्मू–काश्मीर किंवा बंगाल में भयंकर आतंकियों की गतिविधि पर सरकार को विशेष ध्यान देना होगा। माओवादी किंवा अन्य उग्रवादी ग्रुप भारत के महानगरों में इसवर्ष (सं. 2070 वि. में) कहीं समुद्रतटवर्ती भूभाग पर उग्रवाद प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, तूफान, सुनामी आदि से भयंकर हानि के संकेत गोचर ग्रहस्थिति से स्पष्ट नजर आ रहे हैं– भगवान् रक्षा करे ! भारत के दक्षिणी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप का प्रभाव अधिक अनुभव होगा। **नववर्षप्रवेश तृतीया, शनिवार को होने से श्रावण से आश्विन के अंदर एवं माघ–फाल्गुन में विशेष कष्टपूर्ण घटनाएं घटेंगी।** प्राकृतिक आपदाएं इसवर्ष जनता एवं शासकों के लिए अधिक घातक एवं कष्टप्रद होगी।

अगस्त 2013 ई. से अक्तूबर, 2013 ई. तक की अवधि में शनि, राहु का मंगल के साथ चतुर्थ–दशम–दृष्टिसम्बन्ध होने से एवं वर्षेश–कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष सं. 2070 वि. में इण्डोनेशिया, जापान, चीन, अमेरिका, भारत के समुद्रतटवर्ती भूभाग, महाराष्ट्र, गुजरात एवं पर्वतीय क्षेत्रों तथा कुछ अन्य देशों/क्षेत्रों में कहीं विनाशकारी भूकम्प, समुद्री तूफान, सुनामी किंवा ज्वालामुखी–विस्फोट से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2013 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

7 श. रा. | 5
8शु. | 6 | 4 चं.
सू. 9 बु. | 3
मं.10 | 12 | 2 गु.
11 | के. 1

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1 जनवरी, 2014 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

7 श. रा. | 5
8 | मं. 6 | 4
सू. 9 बु. चं. | 3 गु.
शु.10 | 12 | 2
11 | के. 1

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1) के अनुसार जनवरी, 2013 ई. में मंगल अतिचारी है। लगभग 19 मार्च, 2013 ई. तक मंगल का अतिचार चलेगा। शान्ति के नए कार्यक्रम, नई योजनाएं, अनेकत्र नए शासनाध्यक्ष बनेंगे।

1 जनवरी, 2013 ई. की यूरोपीय देशों की कुण्डली के अनुसार धनस्थान में शनि–राहु की स्थिति होने से वैश्विक अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए प्रयास होंगे। नैवमेश शुक्र एवं कर्मेश बुध की अपने–अपने भाव पर दृष्टि होने से कुछ अप्रत्याशित कार्यक्रम लागू होंगे। महान् छवि वाले देशों की अर्थव्यवस्था में बिगाड़ आने से अन्यदेश प्रभावित होंगे। जिससे महंगाई भयंकर रूप धारण करेगी और शासनतन्त्र एवं प्रशासकों की छवि बिगड़ेगी।

इस सन् 2013 ई. में धनुसंक्रान्ति शनिवारी, मकरसंक्रान्ति रविवारी एवं कुम्भसंक्रान्ति मंगलवारी होने से यहां 'खप्पर योग' बन रहा है, जोकि प्रधान नेताओं के लिए कष्टप्रद किंवा कहीं विशिष्टनेता के लिए विघातक भी है।

18 फरवरी, 2013 ई. को शनि वक्री होकर संवत् 2070 वि. में 8 अगस्त, 2013 ई. तक वक्र राहु के साथ एकराशिसम्बन्ध बना रहा है। इस समयावधि में यानदुर्घटना किंवा भीषण प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग बनते हैं। खडी फसलों को हानि पहुंचेगी, परिणामस्वरूप महगाई उत्तरोत्तर बढती जाएगी और शासनतन्त्र को अकर्मण्य सिद्ध कर देगी।

सं. 2070 वि. के प्रारम्भ में 12/13 अप्रैल, 2013 ई. से सूर्य, मंगल, शुक्र एवं केतु के साथ शनि–राहु का समसप्तक योग बन रहा है। शुक्र–मंगल अस्त हैं, शनि वक्री है। संवत् के प्रारम्भ में मंगल एवं बुध– दोनों अतिचारी भी हैं।

यूरोपीय देश भयंकर आर्थिक संकट की चपेट में आएंगे। कहीं आन्तरिक अव्यवस्था शासकों के लिए भारी सिरदर्द बनेगी। कहीं युद्धाग्नि से भारी अव्यवस्था नज़र आएगी। राजनैतिक हत्याकाण्ड विश्वशान्ति को झझकोर देंगे। **राहु–शनि का वक्रस्थिति में लगभग जुलाई, 2013 ई. तक एकसाथ चलना कहीं भयंकर क्रान्ति को जन्म देगा। कहीं प्रतिष्ठित राजनैतिक हत्याकाण्ड, कहीं भयंकर सुनामी, भूकम्प किंवा कहीं उग्रवादजन्य विस्फोट से वातावरण चिन्तनीय बनेगा।** प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि के संकेत मिलते है–

" यदा राहुस्तुलां याति क्रूरग्रह समन्वितः।
मेदिन्यां सस्यनाशःस्यात् दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।।"

" तुलायां तु यदा सौरिः क्रूरग्रह–समन्वितः।
त्रिभागशेषा पृथिवी –मांस–शोणितकर्दमैः।।"

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस संवत् में U.K.(ब्रिटेन), अमेरिका आदि महत्त्वपूर्ण देशविशेष के प्रधान नायकों के लिए एवं किसी राजतन्त्र–वंश के प्रधान व्यक्तिविशेष के लिए विघातक किंवा भारी कष्टप्रद ग्रहस्थिति है। जापान, जर्मनी,

ऑस्ट्रिया एवं कुछ प्रमुख यूरोपीय राष्ट्रों में तुला, वृश्चिक, मेष, सिंह राशि वाले देशों एवं समुद्रतटवर्ती भूभाग पर समुद्री तूफान, भयावह भूकम्प किंवा उग्रवादजन्य– हत्याकाण्डों से कहीं भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।

4 मई, 2013 ई. से 22 जून तक गुरु–शुक्र वृष राशि में रहेंगे। यह ग्रहस्थिति कहीं आकालिक वर्षा, कहीं युद्धमय वातावरण से अशान्ति बनाएगी।

जुलाई के प्रथम सप्ताह से लगभग 17 जुलाई, 2013 ई. तक मंगल, बुध, सूर्य, गुरु का मिथुन राशि में रहना कहीं भयंकर वर्षा किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का संकेत देता है।

चान्द्रमास श्रावण में (23 जुलाई से 21 अगस्त तक) पांच मंगलवार होने से किसी विशिष्ट–व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

अक्तूबर/दिसंबर, 2013 ई. तक की ग्रहस्थिति कहीं भयंकर अकाल की स्थिति बना सकती है। नवम्बर मास में कहीं प्रधान शासन–सत्ता में परिवर्तन के आसार बनते हैं।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (2) के अनुसार 22 जनवरी, 2014 ई. तक यूरोपीय देशों में कहीं प्राकृतिक आपदा से संकटापन्न स्थिति बनेगी। कहीं हिमपात, कहीं समुद्री तूफान से भारी हानि के योग हैं।

4 फरवरी, सन् 2014 ई. से 25 मार्च, सन् 2014 ई. तक शनि, मंगल, राहु– ये तीनों तुला राशि में चलते रहेंगे। 1 मार्च (शनैश्चरी अमा) को मंगल वक्री एवं 2 मार्च को शनि भी वक्री हो रहा है। इस प्रकार खलत्रयी का सम्बन्ध बहुत ही अघटित घटनाओं को जन्म देगा। इस समयावधि में कहीं उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, कहीं भयंकर यान–दुर्घटना से जनधनहानि, कहीं भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाओं से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

अमेरिकी राष्ट्रपति–निर्वाचन :– श्री मिट–रोमनी जी का जन्म 12 मार्च, 1947 को 9घ. 51मि. पर Detroit, U.S.A. में हुआ है। इस अनुसार इस समय इनका सूर्य में बुधान्तर 9 मार्च, 2013 ई. तक चलेगा। तत्पश्चात् [illegible]न्तर जुलाई, 2013 ई. तक इन्हें प्रभावित करेगा। ग्रहस्थिति के अनुसार इन्हें निर्वाचन–संग्राम में सफलता का योग नहीं।

श्री बराक ओबामा जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुनस्थ गुरु इनके (जोकि 31 मई, 2013 से शुरु है) भाग्यस्थान में एवं शनि भी तुला–राशिस्थ होकर इनके लग्न (तुला राशि) में राहु के साथ केन्द्रस्थ होगा। जोकि इन्हें राजयोग पुनः प्रदान करता है।

मुस्लिम राष्ट्र

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
16 नवं., सन् 2012 ई., शुक्रवार,
17 घं. 20 मि. (सूर्यास्त समय)

3 | 1 | 4 | के. 2 गु. | 12 | 5 | 11 | 6 शु. | 8 सू. बु. रा. | 10 | श. 7 | चं. 9 मं.

हिजरी सन् 1434 (1 मुहर्रम)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
05 नवं., सन् 2013 ई., मंगलवार,
17 घं. 27 मि. (सूर्यास्त समय)

2 | 12 | गु. 3 | के. 1 | 11 | 4 | 10 | 5 मं. | सू. 7 बु. श. रा. | 9 शु. | 6 | चं. 8

हिजरी सन् 1435 (1 मुहर्रम)

कुण्डली (1) –मुस्लिमराष्ट्रों की कुण्डली (1) की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शुक्र योजनास्थान में नीच है, योजनास्थान का मालिक बुध सूर्य और राहु के साथ वृश्चिकराशि में बृहस्पति से दृष्ट है। इस समय गुरु वक्रगति से चल रहा है एवं शुक्र के क्षेत्र में है। संकेत मिलता है कि – बहुचर्चित मुस्लिमराष्ट्र में कहीं सत्ताहस्तान्तरण हो। कहीं विस्फोट आदि उग्रवादजन्य गतिविधि से जनधनहानि हो। 28 जनवरी से 7 जुलाई, सन् 2013 ई. तक वक्री शनि–राहु की स्थिति मुस्लिम राष्ट्रों की कुनीति से इन्हें भयावह स्थिति में लाकर खड़ा कर देगी–

" तुला–वृश्चिक–चापेषु यदा याति शनैश्चरः ।
त्रिभागशेषा पृथिवी मांस–शोणित–कर्दमैः ।।"

4 मई से 22 जून, सन् 2013 ई. तक की ग्रहस्थिति मुस्लिम–राष्ट्रों में उग्रवादजन्य–भयंकर जनधनहानि, प्राकृतिक आपदा से किंवा राजनैतिक उथल– पुथल वाली रहेगी।

ईरान देश इस वर्ष (सं. 2070 वि. में) परमाणु–कार्यक्रम को लेकर अमेरिका की आंखों में खटकेगा। परमाणु–प्रतिबन्धन का पालन न करने से एवं संयुक्तराष्ट्र सुरक्षा–परिषद, आई. ए. ई. ए. एवम् अन्य अन्तर्राष्ट्रीय निकायों के प्रति अपनी बाध्यताओं का पालन करने में असमर्थ रहने के कारण भारी समस्याओं में उलझेगा। शान्ति भंग होने का भी योग है।

18 अगस्त से 5 अक्तूबर, सन् 2013 ई. तक राहुयुत शनि का मंगल के साथ दशम–चतुर्थ सम्बन्ध बनेगा। इस समयावधि में अफगानिस्तान, पाकिस्तान में उग्रवादी ग्रुप के मुखिया चरमपंथी एवं उनके अधीन काम कर रहे मुस्लिम–गुटों द्वारा सीमाप्रान्तों–महानगरों में नरसंहार करने में सफल होंगे। अलकायदा एवं इससे प्रेरित गुट अफगानिस्तान, पाक, माली, नाइजर, ईराक, सीरिया, अलजीरिया में उपद्रव कर

सकते हैं। ग्रहगोचर के अनुसार इसवर्ष तुर्की एवं सीरिया की ग्रहस्थिति परस्पर ठीक नहीं। कहीं आन्तरिक उलझनों से स्थिति संकटमय हो सकती है।

कुण्डली (2) –मुस्लिमराष्ट्रों की कुण्डली (नं. 2) की ग्रहस्थिति के अनुसार नीचस्थ सूर्य के साथ शनि–बुध एवं राहु का एक राशि में होना अफगानिस्तान, पाक एवं इराक–ईरान के लिए अनेकों आर्थिक–राजनैतिक एवं उग्रवाद नेतृत्व के पोषण की समस्याओं को लेकर उपस्थित हो रहा है। सन् 2014 ई. मे अफगानिस्तान मे आर्थिक–स्थिति विषम होगी, अमेरिका फिर भी आर्थिक सहायतार्थ आगे आएगा।

ध्यान दें कि– 4 फरवरी, 2014 ई. से 25 मार्च, 2014 ई. तक शनि, मंगल, राहु– ये खलग्रह (खलत्रयी) तुला राशि में चलेंगे। इसी दौरान 1 मार्च से संवत् 2070 वि. के अन्त एवं कुछ आगे तक शनि–मंगल वक्रगति से चलेंगे। सं. 2070 वि. का यह अन्तिम समय मुस्लिमराष्ट्रों में कहीं बम्बारी, कहीं आन्तरिक क्रान्ति, कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, कहीं राष्ट्रनायक की पदरिक्तता आदि घटनाओं से विशेष कष्टपूर्ण मालूम देता है।

संवत् 2070 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत–सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि– ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।"

ऋग्वेद में स्पष्ट लिखा है– कि एक विलक्षण तेज श्रोत से सूर्य सहित समस्त ज्योति–पिण्ड देदीप्यमान हैं। उस सूर्य से समस्त आकाशस्थ व सांसारिक पदार्थ प्रकाशित हो रहे हैं। **स्पष्ट है कि– सूर्य व सौर–मण्डल ही इस चरान्तर समस्त पदार्थों का नियन्ता है।**

" एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।।"

इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किंवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 66वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत की 66वें वर्ष की कुण्डली में उच्चस्थ–शनि के साथ मंगल का एकराशि– सम्बन्ध एवं आगे वृश्चिक राशि में राहु–मंगल का गोचर में एकराशिसम्बन्ध भी देश में प्राकृतिक व उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग बनाता है। (यह समय नवम्बर, 2012 ई. तक अधिक नेष्टरूप से प्रभावी रहेगा।)

9 नवम्बर से 17 दिसम्बर, 2012 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी सीमाप्रान्तों पर विशेषरूप से अशान्ति का कारण बनेगी। इस समय चीन–पाकिस्तान की कुनीति से देश की रक्षा हेतु सतर्क रहना आवश्यक है। इससे आगे की ग्रहस्थिति राजनीतिज्ञों एव पार्टियों में मतभेद पैदा करने वाली है।

स्वतन्त्र भारत का 66 वां वर्ष
14 अग., 2012 ई. (15 घं. 56 मि.)(I.S.T.)

10 | 8 रा. | 11 | 9 | 7श.मं. मुंथा | 12 | 6 | 1 | चं. 3 शु. | 5 | 2 गु. के. | सू. 4 बु.

गत संवत् 2069 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" के पृ 36, कॉलम 1 पर अगस्त, सन् 2012 ई. से अप्रैल, 2013 तक केन्द्रीय शासनतन्त्र में भयंकर गतिरोध की घोषणा इन शब्दों में की थी, जोकि कोल–घोटाला, ममता बनर्जी की पार्टी T.M.C. के U.P.A. (II) का सम्बन्ध– विच्छेद होने से एवं भाजपा द्वारा पार्लियामैन्ट में अमूतपूर्वगतिरोध पैदा करने एवं प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी का त्यागपत्र की मांग से पूर्णतया स्पष्ट हो गया है। पढ़ें–

" पाठक नोट करें– 66वें स्वतन्त्र–भारत के वर्षलग्न में लग्नेश–गुरु, छठे भाव में वृषराशिस्थ केतु के साथ राहु एवं मंगल की दृष्टि में है। अतः यह वर्ष 12 अगस्त, 2012 ई. से अप्रैल, 2013 ई. तक केन्द्रीय शासनतन्त्र में भयंकर गतिरोध वाला है। शासनतन्त्र जनता का विश्वास प्राप्त करने का भरसक प्रयास करने पर भी लाचार मालूम देगा। परिणाम दूरगामी मालूम देते हैं। भारत की वर्षकुण्डली में नवमेश सूर्य एवं दशमेश–बुध पर शनि की दृष्टि होने से यह वर्ष वरिष्ठ–नेतृत्व एवं वंशानुगत राजनैतिक सदस्यों व प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भारी उलझनपूर्ण एवं भयावह सिद्ध होगा।"

ग्रहस्थिति के आधार पर स्वतन्त्र भारत के 66वें वर्षलग्न के अनुसार मुंथेश शुक्र अस्त है, शुक्र चन्द्रमा के साथ मिथुनराशि में है। शुक्र, चन्द्र का शत्रु है। यह 66वां वर्ष भारतीय रूलिंग पार्टी के लिए भारी कठिनाइयों वाला ही है।

स्वतन्त्र भारत का 67वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत के 67वें वर्ष (15 अगस्त, 2013 ई. से आगे) की ग्रहस्थिति के अनुसार मुंथेश–मंगल मिथुन राशि में गुरु के साथ है। लेकिन 18/19 अगस्त को मंगल कर्क (अपनी नीच) राशि में आकर शनि–राहु के साथ दशम–चतुर्थ सम्बन्ध बना लेगा; जोकि 4/5 अक्तूबर तक इसी तरह बना रहेगा। यह ग्रहस्थिति सीमाप्रान्तीय क्षेत्रों पर शत्रु की गतिविधि से सावधान रहने एवं समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों एवम् कुछ पर्वतीय भूभाग पर प्राकृतिक आपदा– भूकम्प, समुद्री तूफान, किंवा महानगरों में कहीं उग्रवादजन्य जनधनहानि का संकेत देती है। सरकार को इस समयावधि में सतर्क रहना होगा।

ध्यान दें– इस (अगस्त से अक्तूबर 2013 ई. की) समयावधि में प्रमुख राष्ट्रनायकों विशेषतः कन्या, सिंह, तुला एवं कुम्भ राशि वाले नेताओं को अपनी सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना अनिवार्य है। क्योंकि कन्याराशि का स्वामी बुध इस (67वें वर्ष की कुण्डली के) समय अतिचारी है, कन्याराशि में नीच शुक्र पर मंगल की दृष्टि भी है। शनि–राहु तुलाराशिस्थ हैं। शनि की सिंह–राशीश–सूर्य पर विशेष दृष्टि भी है। मुंथा अष्टमभाव में नीच–चन्द्र के साथ है। अतः यह वर्ष भारतीय राजनीति में भारी अस्थिरता एवं परिवर्तन को लेकर आ रहा है। केन्द्रीय शासनतन्त्र के सहयोगी दल यू. पी. ए. के गठबन्धन से छिटकते मालूम देंगे एवं केन्द्रीय शासन–सत्ता को भारी झटका लगने का योग है।

स्वतन्त्र भारत का 67 वां वर्ष
14 अग., 2013 ई. (22 घं. 05 मि.)(I.S.T.)

2
12
3 गु.
मं.
1 के.
11
सू. 4 बु.
10
5
श. 7 रा.
9
6 शु.
मुंथा 8 च

मार्च, 2014 ई. से संवत् के अन्त तक की शनि, मंगल के वक्रत्व वाली ग्रहस्थिति राजनीतिज्ञों के लिए अश्चर्यजनक परिणामों वाली ही रहेगी।

भारतीय गणतन्त्र का 64वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 64वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश शुक्र, गुरु (शत्रु) के क्षेत्र में अष्टमस्थ है। जोकि इस गणतन्त्र के प्रमुख नेताओं के समक्ष अघटित–घटनाचक्र को उपस्थित करेगा। लेकिन लग्नस्थ गुरु के साथ लग्नेश शुक्र का राशि–व्यत्यय महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा समस्याओं के समाधान के संकेत देता है। संभव है, कुछ समय के लिए सत्ता को स्वयं इन्हें ही संभालना पड़े।

भारतीय गणतन्त्र का 64 वा वर्ष
26 जन. 2013 ई.(13घं. 57मि.)(I.S.T.)

3 मुन्था
1 के.
4 चं.
2 गु.
12
5
11 मं.
6
8
10 सू.
बु.
श. 7 रा.
शु. 9

धनेश–बुध अभी अस्त है, जोकि नवमभाव में मकर राशिस्थ सूर्य के सन्निकर्ष में है। अतः भारत अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सक्षम मालूम नहीं देगा। इस विषय पर चर्चा करते हुए हमने गतवर्ष सं. 2069 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में स्पष्ट घोषणा पृ. 39, कॉलम 2 पर इन शब्दों में की थी– **" इस संवत् 2069 वि. में जगतलग्नकुण्डली एवं भारतीय गणतन्त्र– कुण्डली के विचार से भारत की कमज़ोर वित्तीय नीति से आर्थिक सुधारों को आगे ले चाने में भारतीय नेतृत्व अभी कुछ अशक्त रहेगा।"** वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अभी और उलझनें आने वाले योग हैं। कर्ज–सकट पूरे यूरोप को चपेट में ले लेगा। भारत में भी राजस्व घाटे और उच्च मुद्रास्फीति के कारण आर्थिक सुधार–प्रक्रिया पर बुरा असर पड़ने के योग हैं।

भविष्य की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत कर्क के गुरु से आगे 5/7 वर्षों में आर्थिक दृष्टि से विश्व के प्रतिष्ठित देशों में अपना स्थान अवश्य बना लेगा।

वर्तमान गणतन्त्र कुण्डली के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था केवल कठोर राजनैतिक फैसले लिए जाने के कारण ही रुग्ण नहीं है, खराब प्रबन्धन एवं राजनेताओं द्वारा किए गए घोटाले भी इसके लिए दोषी हैं, जिससे भारत की बडी योजनाएं लटकी पडी हैं।

गणतन्त्र कुण्डली में नवमेश एव दशमेश–शनि उच्च एवं राहुयुत होकर छठेभाव में है। स्पष्ट है, यह वर्ष गणतन्त्र के संरक्षक महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी को भी भारत की राजनैतिक–परिस्थिति से चिन्तित कर सकता है। लेकिन बृहस्पति की सूर्य–बुध पर विशेष दृष्टि इस गणतन्त्र की महिमा को खराब न होने देगी।

इस वर्ष 4 मार्च 2013 से 22 मई 2013 ई. तक, 18 अगस्त 2013 से 5 अक्तूबर, 2013 ई. तक एव 1 मार्च, 2014 से संवत् 2070 वि. के अन्त तक का समय राजनैतिक दृष्टि से अस्थिरता किंवा उथल–पुथल वाला है।

इन समयावधियों में देश में कहीं भयंकर (प्राकृतिक आपदा) भूकम्प, विस्फोट एवं कहीं समुद्री विनाश से प्रलयकारी दृश्य भी उपस्थित हो सकता है। ग्रहस्थिति से ऐसा संकेत मिलता है, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

संवत् 2070 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व 'कार्य–कारण सिद्धान्त' पर अपनी गतिमत्ता बनाए हुए है। ज्योतिषशास्त्र 'ग्रहस्थिति' को कारण मानकर सम्पूर्ण विश्व में संचालित घटनाचक्र का आकलन करता है।

'श्रीमद्भागवतपुराण' के चतुर्थ स्कन्ध के 11वें अध्याय के श्लोक नं. 17 में स्पष्टरूप से घोषित किया है कि–निर्गुण परमात्मा तो संसारचक्र को संचालित करने में केवल निमित्तमात्र है। उसी के आश्रय से कार्य–कारणात्मक जगत् उसी प्रकार भ्रमण करता है, जिस प्रकार चुम्बक के प्रभावक्षेत्र में रहता हुआ लौहखण्ड चुम्बक के अनुरूप इधर–उधर संचलित होने पर विवश होता है–

" निमित्तमात्रं तत्रासीन्निर्गुणः पुरुषर्षभः।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र भ्रमति लौहवत्।।"

नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली
संवत् 2070 वि.

6
4
7 रा. श.
5
3
8
गु. 2
9
11
1 के.
12
10
सू.चं.मं.बु.शु.

10 अप्रैल, सन् 2013 ई.
(15 घं. 5 मि.)(I.S.T.)

शुभसंवत् 2070 वि. का शुभारम्भ 10 अप्रैल, सन् 2013 ई. को 15 घं. 5 मि. पर सिंह लग्न में हो रहा है। इस समय चैत्र कृष्ण अमावस बुधवार को रेवती नक्षत्र, वैधृति योग एवं मीनस्थ चन्द्र है।

नववर्ष–प्रवेश कुण्डली में लग्नेश सूर्य, मंगल, बुध एवं चन्द्र के साथ अष्टमभाव में मीन राशिस्थ (उच्च) शुक्र के साथ बैठे हैं। चन्द्र–मंगल लग्नेश सूर्य के मित्र हैं, लेकिन शुक्र तो लग्नेश–सूर्य का शत्रु है। मंगल अस्त है। यहां शुक्र ग्रह विपक्षी राजनैतिक–दलों के नेतृत्व का प्रतीक है, जोकि प्रबल है। संकेत मिलते हैं कि– यह वर्ष भारतीय–केन्द्रीय शासन–सत्ता को विषम चक्रव्यूह में लाकर खड़ा कर देगा। दिग्गज राष्ट्रीय नेताओं को भी विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। अन्ततः विपक्ष भारी पड़ेगा। यह भी संभव है कि– समयावधि से पूर्व ही राजनैतिक–शक्तिपरीक्षण का सामना करने के लिए केन्द्र को मजबूर होना पड़े।

गतवर्ष सं. 2069 वि. के पंचांग में हमने पृ. 37 पर कॉलम 1 में केन्द्रीय शासनतन्त्र में जो आज घटित हो रहा है, उस बारे जो लिखा था उस ओर ध्यान दिलाना प्रासंगिक समझते हैं, उसे पढ़ें–

" इस नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली (सं. 2069 वि.) पर यदि गहराई से चिन्तन करें तो स्पष्ट है कि– इस कुण्डली में अष्टमेश एवं तृतीयेश–मंगल, लग्नेश एवं सरकारी तन्त्र (दशम–भाव) का स्वामी बुध तथा योजना एवं विरोधी ग्रुप (पंचम–छठे भाव) का स्वामी शनि– ये तीनों महत्त्वपूर्ण ग्रह वक्री हैं। शुक्र–गुरु ये दोनों परस्पर शत्रुभाव वाले ग्रह अष्टम भाव में एकत्र हैं– यह ग्रहस्थिति भारत के सत्तारूढ़–दलीय प्रधान नेताओं के लिए अग्निपरीक्षा की है। स्पष्ट है कि– सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी बहुत शीघ्र अल्पकाल में ही एक कठिन चक्रव्यूह में फंस सकती है, जिससे बाहिर निकलना बहुत कठिन मालूम देता है। सत्तारूढ़ दल के संघटक–दल साथ छोड़ने पर मजबूर होने लगेंगे।"

सं. 2070 वि. की वर्षप्रवेश कुण्डली में नवमेश–मंगल, द्वितीयेश (धनेश) एवं आयेश बुध अस्त होकर बलहीन हैं। वर्षप्रवेश कुण्डली में कर्मेश शुक्र प्रबल है। कर्मेश शुक्र एवं योजनास्थानेश एवं अष्टमेश गुरु का राशि–व्यत्यय भारत की गरिमा को अवश्य बनाए रखेगा। जनहितार्थ नई–नई योजनाएं बनेंगी। लेकिन विपक्षीदल स्वार्थपरक राजनीति के कारण इन योजनाओं को नकारेगा। षष्ठेश एवं सप्तमेश उच्चस्थ शनि, राहु के साथ तृतीयस्थ है, जोकि विशेष राजनैतिक किंवा सुधारात्मक परिस्थितियों को जन्म देगा।

यहां तुलास्थ शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों पर है। अफगानिस्तान, इराक, ईरान, सीरिया, टर्की, चीन आदि पर दृष्टि विशेष होने से यहां कहीं प्राकृतिक आपदाओं से विशेष जनधन हानि के योग हैं। उल्लिखित देशों में कहीं विशेषतः मुस्लिम देशों में आन्तरिक विद्रोह, सैन्य संघर्ष, किसी वरिष्ठ देश की दखलान्दाजी से वातावरण अशान्त होगा। मुस्लिम–राष्ट्र विशेष में प्रधानपद रिक्त होने का योग नाटकीय ढंग से बनेगा।

सिंहलग्न में नववर्ष प्रवेश होने से दक्षिणी प्रान्तों में रोग–विशेष से कष्ट हो। पूर्व में खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में शासकों में तालमेल न रहे। उत्तरी भारत में कहीं भयंकर वर्षा से हानि हो।

इसवर्ष चैत्र चान्द्रमास में (28 मार्च, 2013 ई. से 25 अप्रैल, 2013 ई. तक) पांच गुरुवार एवं पांच शुक्रवार हैं। संवत् का स्वामी गुरुग्रह ही है, अतः शुक्र विपक्षीदल का प्रतिनिधि होने से पश्चिमी देशों का वातावरण अशान्त रहेगा। भारत के राजनैतिक–पटल पर भी विशेष संशोधन–परिवर्तन के आसार हैं। कहीं शासन–सत्ता में अचानक परिवर्तन के भी योग हैं–

" चैत्र मासे पंचवारं जीवो भ्रमति सन्ततम्।
दुर्भिक्ष–देशभङ्गाद्यैश्चछत्र–भंगस्य कारणम्।।"

अप्रैल, 2013 ई. में सूर्य, मंगल, शुक्र, केतु का वक्री शनि एवं राहु के साथ समसप्तक योग महाराष्ट्र, उड़ीसा, आसाम आदि प्रान्तों के साम्प्रदायिक एवं कट्टरपन्थी समुदायों में पनप रही अंदरूनी चिंगारी भड़काने का काम करेगा।

ध्यान दें– 18 फरवरी, सन् 2013 ई. से 7 जुलाई, 2013 ई. तक शनि वक्री हालत में राहु के साथ चलता रहेगा। हमारे नेतागण वोटबैंक की राजनीति को प्रमुख रखते हुए देश को धर्मनिरपेक्ष बनाम सांप्रदायिकता में बांट देने का अपराध कर बैठेंगे। भारत के सत्ताकांक्षी राजनीतिक–दल मुस्लिम, जाट आदि के आरक्षण से किंवा अप्रवासियों को भी शरण प्रदान करके तोषणनीति द्वारा देश के भविष्य की परवाह नहीं करेंगे। इससे असम, पश्चिमी बंगाल, नागालैण्ड, मणिपुर, बिहार, त्रिपुरा, उत्तर–प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान एवं दिल्ली में भी अप्रवासियों की संख्या आगे चलकर भारत के भविष्य के लिए प्रश्नचिन्ह बनेगी। जिसका परिणाम कहीं साम्प्रदायिक दंगे, कहीं उग्रवादजन्य भयंकर जनधनहानि भी संभव है।

4 मई से 22 जून तक गुरु–शुक्र का एकराशि सम्बन्ध महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि में प्राकृतिक आपदा (भयंकर वर्षा, भूकम्प एवं तूफान आदि) से जनधनहानि का योग बनाता है। कहीं आन्तरिक अशान्ति का वातावरण बने–

" गुरु–शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।।"

22 से 29 मई के लगभग कहीं भूकम्प, सुनामी किंवा उग्रवादजन्य विस्फोट आदि से हानि के योग बनते हैं।

31 मई को गुरु मिथुन राशि में आकर बुध–शुक्र के साथ मेल करेगा। इस समय उ. भारत में वर्षा की कमी अनुभव हो तथा राजनैतिक–दल सत्ता–परीक्षण की तैय्यारी में रहें–

" मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र मेघा स्वल्पजलप्रदाः।।"

जून, 2013 ई. की ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य, शुक्र, बुध, गुरु की स्थिति महंगाई को उत्तरोत्तर बढ़ावा देने वाली है। सरकार महंगाई रोकने में विवश रहेगी।

जुलाई के प्रथम सप्ताह में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु का एकत्र होना एवं 8 जुलाई को शनि का मार्गी होना हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू–काश्मीर, महाराष्ट्र, उड़ीसा किंवा बिहार में प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देता है। किंवा इस समयावधि में पाक के I.S.I. के आदमी बंगलादेश के रास्ते भारत में प्रवेश करके उग्रवाद को बढ़ावा देंगे। शासनतन्त्र को सावधान रहना होगा। 30 जून से शनि एवं राहु दोनों ग्रह स्वाती नक्षत्र में अक्तूबर, 2013 ई. तक चलेंगे। इस समयावधि में विपक्षी राजनैतिक पार्टियां महंगाई एवं लगातार चर्चित केन्द्रीय पार्टियों के घोटाले निर्वाचन–क्षेत्र में विशेष मुद्दे सत्तापरिवर्तन में तो सहायक होंगे, लेकिन आगे एकपार्टी सरकार न बनकर पुनः गठजोड़ (त्रिशंकु) सरकार का ही निर्माण सुनिश्चित है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनचेतना का जागरण भी इस बनने वाली पार्लियामेन्ट में एक विशेष पहलू होगा।

17 जुलाई से 10 अगस्त, 2013 ई. तक शुक्र सिंह राशि में रहेगा, जोकि अनेक प्रान्तों में वर्षा की कमी किंवा सूखे की स्थिति बना सकता है।

18 अगस्त से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक नीच–राशिस्थ मंगल की शनि–राहु पर एवं शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि रहेगी। इस समयावधि में भयंकर बाढ़, उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, भूकम्प, समुद्रीतूफान, विस्फोट आदि से भारी जनधनहानि के योग हैं। इस समय राजनीतिक उठापटक एवं सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत–गतिविधि से भी सावधान रहना होगा।

अगस्त से अक्तूबर, 2013 ई. तक भारत को काश्मीर एवं सीमांप्रान्तीय क्षेत्रों पर चीन एवं शत्रुपक्ष से विशेष सावधान रहना होगा। पूर्वीचीन सागर में स्थित द्वीप–समूह के बारे में चीन–ईरान, जापान एवं अमेरिका से भी उलझ सकता है। अतः हमें भी सीमाप्रान्तों पर सावधान रहना ही होगा। असम में बोडोलैण्ड समस्या पुनः उजागर होगी। कहीं हत्याकाण्ड एवं पुनः यहां (असम में) अगस्त से अक्तूबर, 2013 ई. तक अराजकता का वातावरण बनना संभव है। सरकार को सावधान रहना होगा।

30 अक्तूबर से 4 दिसंबर, 2013 ई. तक गुरु–शुक्र का समसप्तक कहीं सूर्य के अन्दर विस्फोट से पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र को प्रभावित कर सकता है। 21 दिसंबर, 2013 से 31 जनवरी, सन् 2014 ई. तक शुक्र एवं गुरु वक्र गति से चलेंगे। इस दौरान किसी प्रतिष्ठित–व्यक्ति का पदरिक्त होगा। कहीं शासनसत्ता का हस्तान्तरण भी संभव है। इस समयावधि में (अक्तूबर, 2013 से जनवरी, 2014 ई. तक) भारतीय जनता अनुभव करने लगेगी कि– भ्रष्टचार की महामारी हमारी शासन व्यवस्था को जर्जर कर रही है, सरकार कौमा में एवं राजनीति मदहोश है। बहुराष्ट्रीय कम्पनीयां देश को लूट रही हैं। इसे सुधारार्थ जनता सचेष्ट होंगी। परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।

ध्यान दें– 4 फरवरी, 2014 ई. से मंगल तुला राशि में आकर शनि–राहु के साथ 24 मार्च, 2014 ई. तक इकट्ठे चलेंगे। 1 मार्च, 2014 ई. से शनि–मंगल दोनों वक्री पोजीशन में भी रहेंगे। सत्ता–प्राप्ति के लिए क्षेत्रीय–पार्टियों की भाजपा द्वारा पीठ थपथपाना उतना ही अपराध है जितना संसद सत्र की कारवाई को रोकना। जनता इस पग को राजनैतिक स्वार्थ के लिए सुधार की राह में रुकावट ही समझेगी।

फरवरी से मार्च तक किंवा सं. 2070 वि. के अन्त तक का समय देश की राजनीति में तूफान लेकर आएगा। चाहे सत्तापक्ष कोई भी हो। यह समय देश में भयंकर आपदा, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, सुनामी से भी परेशान कर सकता है।

महामहिम श्री प्रणवमुखर्जी महाभाग (राष्ट्रपति भारत गणतन्त्र)

गतवर्ष के श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2069 वि. में पृ. 41 पर, 20 अक्तूबर, सन् 2012 ई. तक इन्हें विशेष पदाप्ति का योग बनने की बात लिखी थी, जोकि अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है।

महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी का जन्म मिराती (वीरभूम) West Bengal में 11 दिसंबर, 1935 ई. को मिथुन लग्न में हुआ था। इनकी यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

जन्मकुण्डली श्री प्रणव मुखर्जी

4, 2, 5, चं. 3 के., 1, 6, 12, शु. 7, 9 रा., 11 श., सू. बु. 8 गु., 10 मं.

भाग्येश–शनि भाग्यस्थान में एवं कर्मेश–गुरु की कर्मस्थान पर विशेषदृष्टि है। शुक्र की महादशा में राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में इन्हें राष्ट्रपतिपद प्राप्त हुआ। शुक्र में शनि एवं बुध का प्रत्यन्तर 3 नवंबर, 2013 तक प्रभावी रहेगा। इस समयावधि में इन्हें अच्छे राजनैतिक कर्त्तव्य निभाने होंगे। शुक्र की महादशा में राहु के अन्तर एवं केतु के प्रत्यन्तर (6 जनवरी, 2014 ई.) तक भारतीय गणतन्त्र की गरिमा को उजागर रखने के लिए कुछ कठोर पग भी उठाने पड सकते हैं, जिन्हें ये महत्वपूण ढंग से निभाएंगे। इसके बाद की ग्रहस्थिति इनकी सेहत के लिए विशेष सावधानी वाली है। ऐसे सुयोग्य संरक्षण में भारत अच्छी महिमा को प्राप्त करे– यही प्रार्थना है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस— संवत् 2070 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार तुलाराशिस्थ शनि–राहु की कांग्रेस–स्थापना कुण्डली में लग्न, पंचमभाव एवं अष्टमेश–चन्द्र पर विशेष–पूर्णदृष्टि है। परिणाम–स्वरूप इस पार्टी के प्रतिष्ठित–राजनेता विकट–समस्याओं में उलझकर चर्चा का केन्द्रबिन्दु बने रहेंगे।

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली

भाव	ग्रह
9	रा.11
10	10 मं.
8	सू. 8 बु. नेप.
7	शु. 7 गु.
6	6 प्लू. यूरे
5	5 के.
4	4
3	3
2	2
1	चं. श. 1
12	12

सं. 2070 वि. की प्रारम्भिक–ग्रहस्थिति के अनुसार फरवरी, सन् 2013 ई. से 7 जुलाई, सन् 2013 ई. तक शनि वक्री होकर स्वभावतः वक्री राहु के साथ तुला राशि मे ही रहेगा। 22 मई, 2013 ई. तक मंगल अतिचारी होकर शनि–राहु के साथ समसप्तक योग भी बनाएगा। यह ग्रहस्थिति कांग्रेस पार्टी के लिए अघटित घटनाओं वाली सिद्ध होगी। कई पार्टियों का सहयोग खोना पडेगा। नए गठबन्धन उभरेंगे।

गतवर्ष सं. 2069 वि. के पंचांग में कांग्रेस पार्टी के बारे जो भविष्यवाणी की थी, उसपर पाठक ध्यान दें– पृ. 39, कॉलम 2– " **21 जून, 2012 ई. से 3 अगस्त तक तथा 14 अगस्त से 27 सितंबर तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेताओं के लिए भारी संकटापन्न स्थिति वाला है।** "

ठीक, उल्लिखित लाईनों के अनुसार प्रधाननेताओं विशेषतः प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी से विपक्ष ने कोयला घोटाला को मुद्दा बनाकर त्यागपत्र की माग कर डाली। सं. 2069 वि. में 9 नवंबर से 17 दिसंबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार भी कांग्रेस को अपनी छवि सुधारने के लिए भारी प्रयास करने होंगे, अन्यथा परिणाम दूरगामी होंगे।

सं. 2070 वि. में 18 अगस्त, 2013 ई. से लगभग 5 अक्तूबर तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ दृष्टि सम्बन्ध भारत की राजनीति में भारी उलटफेर का संकेतक है। **इस दौरान राजनैतिक पार्टियों की स्वार्थ परकता एवं सत्तालोलुपता तीसरे मोर्चे का गठन करेगी, जिसका प्रभाव बड़ी पार्टी कांग्रेस पर आंशिकरूप से होगा, लेकिन सत्ता प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा फलवती नहीं होगी। तीसरा मोर्चा कुछ राजनीतिज्ञों के लिए मृगतृष्णामात्र सिद्ध होगा। त्रिशंकु सरकार ही बनेगी।**

4 फरवरी, 2014 ई. को मंगल, शनि, राहु– ये तीनों खलग्रह तुला राशि में 24 मार्च, 2014 ई. तक एकराशि में ही रहेंगे। विशेषतः 1 मार्च से 24 मार्च 2014 ई. तक मंगल वक्रगति से शनि–राहु के साथ चलेगा।

इस समयावधि में (फरवरी से मार्च, 2014 तक) कांग्रेस पार्टी के कई दिग्गज नेता जनता को लुभाने के लिए अनेक वायदे करने पर भी जनता का हित (मत) प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे;– परिणाम कांग्रेस पार्टी के लिए आश्चर्यजनक रहेंगे। प्रधानमन्त्रीपद के लिए यदि युवा नेता का नाम आगे आए तो पार्टी संभल सकेगी।

भारतीय जनता पार्टी— संवत् 2070 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष शनि–राहु तुला राशि में चलेंगे। शनि भाजपा की स्थापना कुण्डली में भाग्येश होगर उच्चस्थ है, कर्मेश गुरु केन्द्रेश होकर 31 मई, 2013 ई. से मिथुन राशि में आकर संवत् 2070 वि. के अंत तक मिथुनस्थ ही रहेगा एवं भाग्येश–शनि पर कर्मेश गुरु की दृष्टि भी रहेगी। यह ग्रहिस्थिति भारतीय जनता पार्टी एवं सहयोगी पार्टियों को राजनैतिक–बल प्रदान करेगी। इस प्रकार भाजपा को इस संवत् में गतवर्ष की अपेक्षा कुछ गरिमा प्राप्त होगी।

कुण्डली भारतीय जनता पार्टी

भाव	ग्रह
3	3
4	4
2	2 शु.
5	गु.श. मं.रा.5
1	1
6	6
12	12 सू.
9	9
7	7
11	11 के.बु.
8	8 चं.
10	10

गतवर्ष सं 2069 वि. के पंचांग में हमने भाजपा के भविष्य के बारे में जो घोषणा की थी, वही बात इस संवत् की ग्रहस्थिति में घटित होने वाली है। **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' संवत् 2069 वि., पृ. 40, कॉलम 1 पर पढ़ें–**

" **केन्द्रीय शासन सत्ता लकवाग्रस्त जैसी छवि के कारण आगामीवर्ष में नवम्बर, 2013 ई. से मार्च, 2014 तक की ग्रहस्थिति इस पार्टी को कुछ राहत देगी। वैसे भी, इस पार्टी की कुण्डली में शनि, गुरु, राहु की दृष्टि नवमभाव पर होने से** इस पार्टी का अस्तित्व बना रहेगा। लेकिन शनि, मंगल, राहु (ये खलत्रयी) एकसाथ होने से इस पार्टी के प्रधानपद को सर्वसम्मति से स्वीकार करने में एकराय का न होना भाजपा के हित में नहीं जाता।"

ठीक, यही बात इसवर्ष 2070 वि. में भी गोचर ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए आज भी भाजपा एवं इससे सम्बन्धित पार्टियो के लिए सत्ताप्राप्ति में रुकावट बनेगी। संसद के निर्वाचन–संग्राम में कोई भी एक पार्टी सत्ता में नहीं आ सकेगी। पार्टियों में तोड़–फोड़ एवं नए राजनैतिक संगठन एकत्र होकर ही कांग्रेस किंवा भाजपा शासन–सत्ता पा सकेंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार फरवरी, 2013 से जुलाई, 2013 ई. के मध्य का समय शनि–राहु की स्थिति से सुधारात्मक एवं कांग्रेस पार्टी पर आक्रमात्मक रुख भाजपा का बना रहेगा।

31 मई से 17 अगस्त तक का समय भाजपा के नेतृत्व के बारे में विवाद समाप्त होकर एक राय बन सकती है। लेकिन 31 मई से अक्तूबर, 2013 ई. तक की ग्रहस्थिति किसी वरिष्ठ नेता का पद रिक्त होने का संकेत देती है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस– संवत् 2070 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार तुलाराशिस्थ शनि–राहु की कांग्रेस–स्थापना कुण्डली में लग्न, पंचमभाव एवं अष्टमेश–चन्द्र पर विशेष–पूर्णदृष्टि है। परिणाम–स्वरूप इस पार्टी के प्रतिष्ठित–राजनेता विकट–समस्याओं में उलझकर चर्चा का केन्द्रबिन्दु बने रहेंगे।

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली

10 मं.
सू. 8 बु. नेप.
शु.
रा.11
9
7 गु.
12
6 प्लू. यूरे.
चं.
श. 1
3
5 के.
2
4

सं. 2070 वि. की प्रारम्भिक–ग्रहस्थिति के अनुसार फरवरी, सन् 2013 ई. से 7 जुलाई, सन् 2013 ई. तक शनि वक्री होकर स्वभावतः वक्री राहु के साथ तुला राशि में ही रहेगा। 22 मई, 2013 ई. तक मंगल अतिचारी होकर शनि–राहु के साथ समसप्तक योग भी बनाएगा। यह ग्रहस्थिति कांग्रेस पार्टी के लिए अघटित घटनाओं वाली सिद्ध होगी। कई पार्टियों का सहयोग खोना पड़ेगा। नए गठबन्धन उभरेंगे।

गतवर्ष सं. 2069 वि. के पंचांग में कांग्रेस पार्टी के बारे जो भविष्यवाणी की थी, उसपर पाठक ध्यान दें– पृ. 39, कॉलम 2– " **21 जून, 2012 ई. से 3 अगस्त तक तथा 14 अगस्त से 27 सितंबर तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेताओं के लिए भारी संकटापन्न स्थिति वाला है।** "

ठीक, उल्लिखित लाईनों के अनुसार प्रधाननेताओ विशेषतः प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी से विपक्ष ने कोयला घोटाला को मुद्दा बनाकर त्यागपत्र की माग कर डाली। सं. 2069 वि. में 9 नवंबर से 17 दिसंबर तक की ग्रहस्थिति के अनुसार भी कांग्रेस को अपनी छवि सुधारने के लिए भारी प्रयास करने होंगे, अन्यथा परिणाम दूरगामी होंगे।

सं. 2070 वि. में 18 अगस्त, 2013 ई. से लगभग 5 अक्तूबर तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ दृष्टि सम्बन्ध भारत की राजनीति में भारी उलटफेर का संकेतक है। **इस दौरान राजनैतिक पार्टियों की स्वार्थ परकता एवं सत्तालोलुपता तीसरे मोर्चे का गठन करेगी, जिसका प्रभाव बड़ी पार्टी कांग्रेस पर आंशिकरूप से होगा, लेकिन सत्ता प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा फलवती नहीं होगी। तीसरा मोर्चा कुछ राजनीतिज्ञों के लिए मृगतृष्णामात्र सिद्ध होगा। त्रिशंकु सरकार ही बनेगी।**

4 फरवरी, 2014 ई. को मंगल, शनि, राहु– ये तीनों खलग्रह तुला राशि में 24 मार्च, 2014 ई. तक एकराशि में ही रहेंगे। विशेषतः 1 मार्च से 24 मार्च 2014 ई. तक मंगल वक्रगति से शनि–राहु के साथ चलेगा।

इस समयावधि में (फरवरी से मार्च, 2014 तक) कांग्रेस पार्टी के कई दिग्गज नेता जनता को लुभाने के लिए अनेक वायदे करने पर भी जनता का हित (मत) प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे;– परिणाम कांग्रेस पार्टी के लिए आश्चर्यजनक रहेंगे। प्रधानमन्त्रीपद के लिए यदि युवा नेता का नाम आगे आए तो पार्टी संभल सकेगी।

भारतीय जनता पार्टी– संवत् 2070 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष शनि–राहु तुला राशि में चलेंगे। शनि भाजपा की स्थापना कुण्डली में भाग्येश होगर उच्चस्थ है, कर्मेश गुरु केन्द्रेश होकर 31 मई, 2013 ई. से मिथुन राशि में आकर संवत् 2070 वि. के अंत तक मिथुनस्थ ही रहेगा एवं भाग्येश–शनि पर कर्मेश गुरु की दृष्टि भी रहेगी। यह ग्रहिस्थिति भारतीय जनता पार्टी एव सहयोगी पार्टियों को राजनैतिक–बल प्रदान करेगी। इस प्रकार भाजपा को इस संवत् में गतवर्ष की अपेक्षा कुछ गरिमा प्राप्त होगी।

कुण्डली भारतीय जनता पार्टी

4
2 शु.
गु.श.
मं.रा.5
3
1
6
12 सू.
7
9
11 के.बु.
8 चं.
10

गतवर्ष सं 2069 वि. के पंचांग में हमने भाजपा के भविष्य के बारे में जो घोषणा की थी, वही बात इस संवत् की ग्रहस्थिति में घटित होने वाली है। 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' संवत् 2069 वि., पृ. 40, कॉलम 1 पर पढ़ें–

" **केन्द्रीय शासन सत्ता लकवाग्रस्त जैसी छवि के कारण आगामीवर्ष में नवम्बर, 2013 ई. से मार्च, 2014 तक की ग्रहस्थिति इस पार्टी को कुछ राहत देगी। वैसे भी, इस पार्टी की कुण्डली में शनि, गुरु, राहु की दृष्टि नवमभाव पर होने से** इस पार्टी का अस्तित्व बना रहेगा। लेकिन शनि, मंगल, राहु (ये खलत्रयी) एकसाथ होने से इस पार्टी के प्रधानपद को सर्वसम्मति से स्वीकार करने में एकराय का न होना भाजपा के हित में नहीं जाता।"

ठीक, यही बात इसवर्ष 2070 वि. में भी गोचर ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए आज भी भाजपा एवं इससे सम्बन्धित पार्टियों के लिए सत्ताप्राप्ति में रुकावट बनेगी। संसद के निर्वाचन–संग्राम में कोई भी एक पार्टी सत्ता में नहीं आ सकेगी। पार्टियों में तोड़–फोड़ एवं नए राजनैतिक संगठन एकत्र होकर ही कांग्रेस किंवा भाजपा शासन–सत्ता पा सकेंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार फरवरी, 2013 से जुलाई, 2013 ई. के मध्य का समय शनि–राहु की स्थिति से सुधारात्मक एवं कांग्रेस पार्टी पर आक्रमात्मक रुख भाजपा का बना रहेगा।

31 मई से 17 अगस्त तक का समय भाजपा के नेतृत्व के बारे में विवाद समाप्त होकर एक राय बन सकती है। लेकिन 31 मई से अक्तूबर, 2013 ई. तक की ग्रहस्थिति किसी वरिष्ठ नेता का पद रिक्त होने का संकेत देती है।

30 अक्तूबर से 4 दिसंबर तक एवं 21 दिसंबर, 2013 से 30 जनवरी, 2014 ई. तक गुरु–शुक्र का वक्रत्व एवं शुक्र, गुरु का समसप्तक योग भाजपा में नई शक्ति एवं प्रेरणा को जन्मदेगा तथा निर्वाचन के लिए सुसन्नद्ध रहने का अवसर शीघ्र आने का संकेत मिलेगा। महंगाई एवं घोटालों को मुद्दा बनाकर भाजपा चुनावक्षेत्र में उतरेगी, जिससे पर्याप्त लाभ होने का योग है। निर्वाचन समय से पूर्व भी संभव है।

4 फरवरी, 2014 ई. से 24 मार्च, 2014 ई. तक शनि–मंगल एवं राहु का एकराशि–सम्बन्ध भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टियों भाजपा–कांग्रेस एवं अन्य सहयोगी पार्टियों के लिए भारी चक्रव्यूह की रचना वाला है। इस समयावधि में भारतीय राजनीति को एक विशेष दिशा मिलेगी एवं स्वच्छ–पारदर्शी–छवि वाली पार्टी सत्ता को सम्भालेगी;– सन्देह है, परन्तु परिवर्तन के योग हैं।

भारतीय राजनीति में संभावित तीसरा विकल्प एवं बहुजन समाज पार्टी– गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार बहुजन समाज पार्टी, उत्तरप्रदेश की समाजवादी पार्टी एवम् कुछ दक्षिण की पार्टियों का एक पार्टी में खड़े होना राजनैतिक–स्थिति एवं बड़ी पार्टियों की शक्ति को कमजोर कर सकता है, लेकिन सत्ता का पाना संभव नहीं। इसका कुछ लाभ भाजपा को मिलना संभव है। कांग्रेस इस दृष्टि से कुछ शक्तिक्षय की ओर रहेगी।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्रीमती सोनिया गांधी– कांग्रेस पार्टी की सुप्रीमो श्रीमती सोनिया गांधी की जन्मकालिक–ग्रहस्थिति के अनुसार केतु की महादशा में शुक्रान्तर चल रहा है। शुक्र चतुर्थ स्थान में अपनी (तुला) राशि में शत्रु ग्रह गुरु के साथ आयेश होकर बैठा है। इस समय गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार तुला–राशि में शनि–राहु भी शुक्र के साथ मेल कर रहे हैं।

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी,
जन्म 9 दिसं.,1946, 21 घं. 15 मि. (स्टैं.टा.)
TURIN (ITALY)

5 | 3 चं. | नेप. 6 | प्लू. 4 श. | 2 रा. यूरे. | शु. 7 गु. | 1 | सू. 8 के.बु. | 10 | 12 | 9 मं. | 11

नवीनतम घोटाले कांग्रेस नेतृत्व को भारी पड़ेंगे। विधान–सभाई चुनावों में भी कांग्रेस नेताओं (सुप्रीमो) की छवि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। केन्द्र में बन रही धमाकेदार परिस्थितियां कांग्रेस पार्टी एवं सुप्रीमो के महत्त्व को क्षीण कर सकती हैं। अतः बहुत सोच–समझ कर ही राजनीति में पग उठाने होंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सं. 2070 वि. में 18 अगस्त से 5 अक्तूबर, 2013 ई. तक एवं 4 फरवरी, 2014 ई. से 24 मार्च, 2014 ई. तक का समय श्रीमती सोनिया गांधी के लिए राजनैतिक क्षेत्र एवं प्रशासकीय दिशा में भारी दिशाविहीनता एवं कठिनाइयों से भरपूर मालूम देता है। 18 अगस्त, सन् 2013 ई. से मार्च, 2014 तक श्रीमती सोनिया गांधी–परिवार को अपने स्वास्थ एवं सुरक्षा के बारे में भी सावधान रहना परमावश्यक है।

प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह– वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी की ग्रहस्थिति के अनुसार जन्मकालिक–ग्रहस्थिति के आधार पर गोचर में योजनास्थान (पंचमभाव) पर राहुयुत– शनि की नीच दृष्टि है। द्वितीयेश एवं तृतीयेश–शनि जोकि इनकी देश की समृद्धि एवं हित में लिए गए निर्णयों को असामयिक होने से विपक्षीदल नकारने की नीति अपनाएंगे, जिससे इन्हें राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

जन्माङ्ग प्रधानमन्त्री, डॉ. मनमोहन सिंह
26 सितं., 1932, 14 घं. 0 मि. (गाहा–पाक)

श. 10 | 8 | 11 रा. | 9 | 7 | 12 | 6 बु. सू. | 1 | 3 | 5 के.गु. | 2 | 4 चं. मं. शु.

इस समय श्री मनमोहन सिंह महाभाग जी की जन्मकालिक–दशा के अनुसार राहु की महादशा चल रही है। राहु इनके तीसरे (पराक्रम) स्थान में विपरीत–परिस्थियों में भी विपक्षी दल को हतप्रभ कर सकता है। लेकिन राहु में शन्यन्तर से मंगलान्तर तक का समय इनके राजनैतिक–महिमा को क्षीण करता है एवं आगे स्वास्थ्य की दृष्टि से भी राजनीति से विमुख कर सकता है। गोचर–ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् 2070 वि. के प्रारम्भ से 7 जुलाई तक, 18 अगस्त से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ सम्बन्ध एवं 4 फरवरी, 2014 ई. से लगभग 24 मार्च, 2014 ई. तक शनि–मंगल– राहु इन तीन खलग्रहों के एकसाथ तुलाराशि में होने से श्री मनमोहन सिंह जी की खराब सेहत एवं राजनैतिक–विशेष उपलब्धि वाला मालूम नहीं देता; सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

श्रीराहुल गान्धी– श्री राहुल गांधी जी की जन्मकालिक दशा के अनुसार 27 अगस्त, 2013 ई. तक चन्द्रमा में शनि का अन्तर इन्हें राजनैतिक–उच्चपदाप्ति में यद्यपि बाधक होने पर भी शनि–भाग्येश एवं कर्मेश होकर इन्हें फिर भी राजनीति में प्रतिष्ठित जगह पर स्थापित अवश्य करता है।

जन्मकुण्डली श्रीराहुल गांधी
19 जून, 1970 ई., नई दिल्ली (5-05 A.M)

सू. 3 मं. | श. 1 | 4 शु. | 2 बु. | 12 | 5 के. | 11 रा. | 6 | 8 चं. | 10 | 7 गु. | 9

गतवर्ष के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2069 वि. में हमने पृ. 41, कॉलम 1 पर स्पष्ट घोषणा की थी–

" 28 जनवरी, 2012 ई. से 28 अगस्त, 2013 ई. की ग्रहस्थिति (चन्द्र में शनि का अन्तर) राजनैतिक दृष्टि से कुछ अनुकूल नहीं। कठिन परिस्थितियां राजनैतिक जागृति में बाधक रहेंगी। कांग्रेस की छवि को सुधारने के लिए भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की भारी पराजय हुई।

श्री राहुलगांधी कांग्रेस की स्थिति को संभाल नहीं पाए, यहां तक कि– **अमेठी में भी कांग्रेस को पराजय का मुंह देखना पड़ा।**

आगे अगस्त, सन् 2013 ई से सं. 2070 वि. के अन्त तक कांग्रेस में वैचारिक–दिशाहीनता को छोड़कर समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए श्री राहुलगांधी जी को एक नई विचारधारा की आवश्यकता है। प्रशासन एवं राजनीति आपस में गडमड हो गए हैं, बहुत बड़ी चुनौती आपके सामने है, अन्यथा कांग्रेस पार्टी ऐसे चक्रव्यूह में फंस जाएगी, जिसके परिणाम निराशाजनक होंगे। जनता विशेषतः युवावर्ग को युवानेता श्री राहुल जी से बड़ी उम्मीदें हैं। यदि इन्हें पार्टी में प्राथमिकता दी जाए तो भविष्य में परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।

श्री लालकृष्ण आडवानी– शनि की महादशा के प्रभाव में चल रहे हैं। शनि की महादशा में केतु–शुक्र –सूर्य, चन्द्र एवं मंगल का अन्तर इन्हें राजनैतिक विशेष उपलब्धि वाला नहीं सिद्ध होगा। लेकिन भाजपा नेता **श्री गड़करी** एवं **श्रीमती सुषमा स्वराज** की ग्रहस्थिति राजनीति के क्षेत्र में विशेष उत्कर्षाधायक है। इन्हें श्री आडवानी जी का मार्गदर्शन मिलने का श्रेय प्राप्त होता रहेगा।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब–इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के शुरु से शनि–राहु का तुला में एकसाथ रहना एवं संवत् के शुरु से 22 मई तक एवं 18 अगस्त से 4 अक्तूबर सन् 2013 ई. तक शनि का मंगल के साथ दशम–चतुर्थ सम्बन्ध यहां के शासकों के समक्ष भारी चुनौतियों को उपस्थित करेगा। अकाली–भाजपा सरकार की कारगुज़ारी निराशाजनक रहेगी। वित्तीय–संकट सरकार पर भारी पड़ेगा। कृषि सम्बन्धी नई विधिताओं को अपनाने के लिए नई योजनाएं बनेंगी। किसानों को एग्रो–फोरेस्ट्री की तरफ ध्यान देने पर भी सरकार ध्यान दिलाएगी ताकि जल की कमी एवं बिजली संकट का भी सामना किया जा सके। पंजाब में नए टैक्सों से जनता में आक्रोश बढ़ेगा। औद्यौगिक क्षेत्रों की स्थिति भी भारी संकट में आ सकती है। कुछ जिलों में उग्रवादी अपनी उपस्थिति जाहिर करेंगे, जोकि जनता में क्षोभ पैदा कर सकता है। 26 नवंबर, 2013 ई. से आगे विशेषतः फरवरी, 2014 ई. से संवत् 2070 वि. के अन्त तक का समय पंजाब की स्थिति एवं राजनीतिज्ञों के लिए संकटापन्न है।

हरियाणा– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि मिथुन है। यह वर्ष राजनैतिक दृष्टि से काफी उथल–पुथल वाला मालूम देता है। अगस्त, 2013 से अक्तूबर तक शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ दृष्टि–सम्बन्ध यहां राजनैतिक महाभारत का रूप लेगा। कांग्रेस, इनेलो एवं हरियाणा विकास पार्टी में सत्तासंघर्ष जोर पकड़ने लगेगा। लेकिन कांग्रेस यहां अपना दबदबा बनाए रखेगी। विकासकार्यों के लिए नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी। कृषि की दृष्टि से यहां नई योजनाएं बनेंगी एवं विद्युत् उत्पादनक्षेत्र में नए थर्मलप्लान्ट लगाकर समृद्धि की ओर यह प्रान्त अग्रेसर होगा।

विपक्षी नेता श्री ओमप्रकाश चौटाला साहिब की जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवं गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार राजनैतिक दृष्टि से ये सत्तारूढ़दल पर आक्रामक रहेंगे एवं इनका वर्चस्व काफी बढ़ेगा, जिससे सत्तारूढ़दल चिन्तित होगा। फरवरी, 2014 ई. से संवत् 2070 वि. का समय समय यहां की राजनीति में विशेष कठिन परिस्थितियों वाला है।

हिमाचल प्रदेश– इस प्रान्त की नामराशि कर्क एवं प्रभावराशि मीन है। 31 मई, 2013 ई. को गुरु मिथुन राशि में आकर शनि–राहु को प्रभावित करेगा। आगे 18 अगस्त से 4 अक्तूबर तक शनि–मंगल की परस्पर विशेष दृष्टि यहां की राजनीति में विस्फोटात्मक स्थिति बनाएगी। हि. प्र. राजनीति का कुरुक्षेत्र बनेगा। कांग्रेस–भाजपा द्वारा महाभारत प्रारम्भ होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा का अन्तर्कलह पार्टी के खेल को बिगाड़ सकता है। लेकिन 8 जुलाई, 2013 ई. से, विशेषतः 18 अगस्त से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक इस प्रान्त की राजनीति विस्फोटक स्थिति में आ जाएगी। इस समय कांग्रेस एवं भाजपा की स्थिति बेहतर नहीं लगेगी।

स्वास्थ्य–सेवा, बिजली सस्ती, बागवानी की समृद्धिप्रद योजनाओं से इस प्रान्त की चहुंमुखी प्रगति एवं Tourism को बढ़ावा मिलेगा।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है। इसवर्ष राहु–शनि दोनों सं. 2070 वि. के शुरु से अन्त तक तुला राशि में ही चलेंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 7 जुलाई, 2013 ई. तक एवं 18 अगस्त के लगभग से 4 अक्तूबर, 2013 ई. तक इस प्रान्त में भयंकर प्राकृतिक आपदा एवं भीषण उग्रवादजन्य विस्फोटक–स्थिति से भारी जनधनहानि के योग हैं। सीमाप्रान्तों पर आपसी झड़पों से अशान्ति रहेगी। Tourism को बढ़ावा देने के बावजूद इस प्रान्त की आर्थिक–राजनैतिक–सामाजिक स्थिति चिन्तनीय रहेगी। आगे फरवरी, 2014 से संवत् 2070 वि. के अन्त तक भी यह प्रान्त उग्रवाद एवं प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त रहेगा; ऐसा गोचर ग्रहस्थिति से मालूम देता है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

पाठको ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
20 सितम्बर, सन् 2012 ई.
(ऋषिपंचमी)

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु. पो. कुराली,
(अजीतगढ़– मोहाली), (पंजाब)।

PIN - 140 103, PHONE – 0160-2641277 FAX-2641577

संवत् 2070 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा–विचार

– संयमी शर्मा,

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि–उत्पादन-- ये प्राकृतिक चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चारस्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा– ऐसी मान्यता है। लेकिन " जल एवं वायु "– ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "अन्न स्तम्भ" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज संभव नहीं। अतः सं. 2070 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। आशा करते हैं कि– यह संक्षिप्त लेख किसानों/ बाग़वानी वालों के लिए एक दिशा–निर्देशक सिद्ध होगा।

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से ही भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन माना जाता है।

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली
(21/22 जून, 2013 ई., 28 घं. 33 मि.)(भा.स्टैं.टा.)

सू.बु.3 गु.शु.
1 के.
2 मं.
4
12
5
11
6
8 चं.
10
7 श.रा.
9

इसवर्ष (सं. 2070 वि.) की आर्द्रा– प्रवेश कुण्डली के अनुसार अनुराधा नक्षत्र के समय 28 घं. 33 मि. पर वृष लग्न में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। ग्रहचाल के अनुसार चन्द्र पर मंगल की दृष्टि जलशोषक है। जोकि पहले अनेक प्रान्तों में विशेषतः उत्तर भारत में वर्षा का संकट पैदा करेगी। आर्द्राप्रवेश–कालीन ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–राहु का मंगल के साथ षडष्टक योग, सूर्य से पंचम राहु–शनि, छठे नीच चन्द्र, सूर्य से बारहवें मंगल एवं मिथुन राशि में बुध--गुरु--शुक्र का सूर्य के साथ एकराशिस्थ होना इसवर्ष कहीं भयंकर अकाल की स्थिति का संकेत देता है। लेकिन द.भारत के महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, तामिलनाडु आदि में कहीं भयंकर बाढ़, समुद्रतटवर्ती भूभाग पर समुद्रजन्य विनाश (सुनामी) आदि से भयंकर हानि का भी कारण बनेगा-- ऐसी ग्रहस्थिति है– सर्वज्ञ तो प्रभु हैं। कहीं सूखे से फसलों को हानि होगी, कहीं बाढ़ व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों के नष्ट हो जाने से कृषकवर्ग एवं कष्टप्रद महंगाई से जनता कष्टप्रद जीवन जीए--

" वह्नि–वेदाष्ट--नन्देंद्रा एतत्-संख्यासु भास्करः।
तिथिष्वार्द्रा यदा याति कष्टदः शेषके शुभः ।।"

इसवर्ष नवमेघविचार से 'तम' नामक मेघ है। सामयिक वर्षा न होने से नाना प्रकार के रोगों से जनता परेशान रहे। चतुर्मेघों में 'संवर्तक' नामक मेघ होने से द. भारत में काफी वर्षा हो, अनेकत्र बाढ़ की स्थिति भी बने।

इसवर्ष सप्तवायुविचार से 'विवह' नामक वायु प्रभावी रहेगी। परिणामस्वरूप, दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग पर एवं विदेशों के कुछ–कुछ समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों में समुद्री तूफान, भूचाल, भूमध्यगत वायुतरंगों से भारी हानि होने की स्थिति बनेगी। कहीं बाढ़ से भारी तबाही भी सम्भावित है।

इसवर्ष रोहिणी का वास 'समुद्र' में होने से कुछ प्रान्तों में महावृष्टि का योग है। महावृष्टि से अभिप्राय कहीं सुनामी एवं कहीं बाढ़ का संकेत समझें। कहीं वायुवेग, आंधी, तूफान से हानि भी होगी। कहीं ज्वालामुखी–विस्फोट किंवा भूचाल आदि से हानि भी संभव है।

संवत् 2070 वि. में जलस्तम्भ 25.7 प्रतिशत होने से पंजाब, हरियाणा आदि में जल की कमी रहे। दक्षिणी भूभाग पर अ कालिक जलवर्षा से हानि हो।

वायुस्तम्भ पर ध्यान दें;– इसवर्ष वायुस्तम्भ 96.2 प्रतिशत होने से स्पष्ट मालूम देता है कि– इसवर्ष पृथ्वी के अन्तराल में सीस्मोग्राफिक वेवज़ सक्रिय होंगी, जिससे भूकम्प, सुनामी एवं ज्वालामुखी--विस्फोट आदि से कहीं भारी जनधनहानि से दक्षिण में या विदेशी समुद्री भूभाग पर विनाशकारी दृश्य उपस्थित हो सकते हैं। यह योग दशिण–पश्चिमी भूभाग पर विशेषरूप से प्रतिफलित होगा।

अब हम नीचे गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षाविचार लिख रहे हैं।

ध्यान दें–यहां जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों में वर्षा यत्र–तत्र अवश्य होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

अप्रैल (2013 ई.)– 12, 13, 19, 20, 21, 23, 28 से 30 अप्रैल को आसाम, पश्चिमी राजस्थान, उड़ीसा, भूटान, विन्ध्यप्रदेश, सिक्किम एवं केरल में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि व कहीं बादलचाल रहे।

ध्यान दें– इस समय मंगल अतिचारी है। बुध भी 25 मई तक अतिचारी रहेगा। शनि–राहु के साथ वक्री है, अतः उ.भारत में गर्मी का प्रभाव रहेगा। वर्षा की आगे भी कमी अनुभव होगी–

" यदा राहुस्तुलां याति क्रूरग्रह–समन्वितः।
मेदिन्यां सस्यनाशः स्यात् दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।।"

मई– 2, 4, 5, 6, 9, 11 से 15, 17, 18, 22, 23, 27, 29 एवं 31 मई को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, मुम्बई, गुजरात, हि. प्र., भूटान, आसाम एवं बिहार के कुछ क्षेत्रों में वायुवर्षा के योग हैं।

ध्यान दें– 31 मई को गुरु मिथुन राशि में आकर शुक्र–बुध के साथ मेल करेगा। इस समय कहीं दक्षिण–पश्चिम में ज़ोरदार वर्षा के योग बनते हैं–

" गुरु–शुक्रौ यदैकस्थौ भवेदेकार्णवा मही।।"

जून– 3, 5, 6, 7, 10, 14, 15, 21 से 30 जून तक हि.प्र., हरियाणा, पंजाब के कुछ क्षेत्रों में तापमान बढ़े, लू से अनेकत्र हानि–कष्ट के समाचार मिलें। भूटान, शिलांग, आसाम, मुम्बई, उड़ीसा एवं केरल में भारी वर्षा के योग हैं।

ध्यान दें– संवत् 2070 वि. के प्रारम्भ से 8 जुलाई तक शनि–राहु वक्रगति से चल रहे हैं। शनि की दृष्टि पश्चिमी भूभाग पर रहेगी, अतः पश्चिमी प्रान्तों में प्राकृतिक उत्पात से हानि के योग हैं।

जुलाई– 1 से 8 जुलाई, 13 से 21 जुलाई तक एवं 25, 29 जुलाई को भारत के उत्तर–पश्चिमी भागों में अनेकत्र वायुवेग के साथ व्यापक वर्षा के योग हैं। गुजरात, उड़ीसा, बिहार, आसाम आदि में कहीं बाढ़ किंवा वायुवेग, तूफान से हानि भी संभव है। उ.भारत के कुछ प्रान्तों में कहीं बादल आएं और हवावेग से पश्चिम की ओर बढ़ेंगे।

अगस्त– 2, 3, 4, 6, 7, 8, 11, 12, 13, 14, 16, 18 से 24 एवम् 27, 28 के लगभग जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़, हि. प्र., महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा एवम् बिहार में अच्छी वर्षा के योग हैं।

ध्यान दें– 7 से 28 अगस्त तक बुध अतिचारी होने से कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त रहे एवं कहीं बाढ़ का प्रकोप संभव है।

सितम्बर– 1 से 7 तक, 9, 11, 13, 16, 20, 23, 24, 26 एवं 29 सितंबर को पश्चिमी प्रान्तों में कहीं बादलचाल, कहीं वायुवेग का प्रकोप रहे। उ.भारत का तापमान कम होने लगेगा।

नोट– शनि, राहु, शुक्र पर मंगल की दृष्टि होने से कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है।

अक्तूबर– 2, 3, 5, 7, 9, 12, 13, 19, 20, 23, 26, 27, 29, 30 अक्तूबर को जम्मू–काश्मीर एवं हि.प्र. के उच्च शिखरों पर हिमपात हो। पंजाब, हि.प्र. एवं उ.प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ हल्की बौछारें संभव हैं। उ.भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

ध्यान दें– 17 अक्तूबर से शनि, राहु, सूर्य, बुध–ये चारों एकराशि में आकर वर्षा के अवरोधक हैं। कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा के कारण भी बन सकते हैं।

नवम्बर– 1 से 8 नवं., 10, 13, 16, 19 से 26 नवं. एवं 29 से मासान्त तक जम्मू–काश्मीर, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के सुदूर भागों पर हिमपात से यातायात बाधित होगा। उ.भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। धुन्द का वातावरण भी रहेगा।

दिसम्बर– 1 से 6 दिसं., 12 से 17 दिसं., 20 से 23 दिसं. एवं 28 दिसं. से मासान्त तक उ.भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में रहेगा। पर्वतीय भूभाग हिमाच्छादित होंगे। धुन्द से यातायात बाधित रहेगा।

नोट– 21 दिसं. तक गुरु–शुक्र का वक्रत्व कहीं प्राकृतिक आपदा का कारण बन सकता है। यानदुर्घटना भी संभव है।

जनवरी (सन् 2014 ई.)– 4 से 14 जनवरी, 19 से 26 जनवरी एवं 31 जनवरी को हि. प्र., काश्मीर, उत्तराखण्ड आदि में हिमस्खलन, बादल फटने एवं भयंकर वर्षा से हानि हो। उ.भारत में कहीं भारी शीत से जनजीवन शान्त रहे।

फरवरी (सन् 2014 ई.)– 4, 6, 12, 18 से 28 फरवरी को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उ. भारत में हवा का ज़ोर रहेगा, वसन्त ऋतु का आगमन होगा।

मार्च (सन् 2014 ई.)– 2, 3, 4, 6, 8, 10, 12 से 14 मार्च, 18 से 20 मार्च, 24, 25 एवं 28 मार्च को आसाम, प. राजस्थान, हि. प्र., जम्मू–काश्मीर में तेज़ हवाओं के साथ कहीं खण्डवृष्टि सम्भव है। उत्तरी भारत में गर्मी अनुभव होने लगेगी।

ध्यान दें– 2 मार्च से संवत् के अन्त किंवा आगे तक शनि–मंगल दोनों वक्री चलेंगे। यह ग्रहस्थिति अनेकत्र वर्षा की अवरोधक होने के साथ राजनैतिक उलटफेर (परिवर्तन) किंवा अग्निकाण्ड आदि से हानि का संकेत भी देती है–

" भौमे–वक्रे त्वनावृष्टिः शनौ वक्रे महाभयम्।
द्विवक्रे तु महाकष्टं राहुः स्यादग्निकारकः।।"

व्यापार–विमर्श (संवत् 2070 वि.)

(संवत् 2070 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाजारों में घटाबढी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। 'तेज़ी–मन्दी'– इन दो शब्दों से व्यापारी अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा--यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार--चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । इस विज्ञान के युग में समस्त संसार का गठबन्धन हो चुका है। किसी भी राष्ट्र की क्रान्ति या राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव तत्काल दूसरे राष्ट्र किंवा विश्वजनीन व्यापारक्षेत्र पर अमूमन देखा गया है। आजकल व्यापार के दो भाग महत्त्वपूर्ण हैं; पहला वायदा (सट्टा) एवम् दूसरा हाज़र। अमेरिकी या विश्व के किसी भी बाज़ार या घटनाओं से विशेषतः सोना, चान्दी, पैट्रोलियम आदि सभी प्रकार के बाज़ारों में जब उठापटक होती है, तो लाखों रुपयों का नफा–नुक्सान मिनटों में होता है। इसप्रकार प्रत्येक प्रमुख देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ग्रहगोचर को अच्छी तरह आंक कर ही हम इस व्यापार–विमर्श में कुछ व्यापारिक तेज़ी–मन्दी लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार--विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2070 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् सोना, चान्दी, तांबा में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2070 वि. में व्यापारिक बन्धु दालवाना, गुड़, ग्वार, सोना, चान्दी आदि धातु; चावल, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज; तेल, तिलहन, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय--समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। 'व्यापार--विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार--विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2069 वि. में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी रुई, दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में भयंकर तेज़ी से और आश्चर्यजनक तेज़ी एवं मन्दे के Reactions से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। *व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2013 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेज़ी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन;*

जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर Advance Report प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

Note- व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

ध्यान दें– किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते, अर्थात् व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2070 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2070 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2070 वि. '**पराभव**' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"पराभवाब्दे राज्ञां स्यात् समरः सहशत्रुभिः।
आमय क्षुद्र–सस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः ।।"

किञ्च– "पीड़िताश्च प्रजाः सर्वाः क्षुधार्ता स्युः पराभवे।
धान्यौषधानि नश्यन्ति ग्रीष्मे वर्षति माधवः ।।"

अर्थात्– शासकों किंवा राजनैतिक पार्टियों में इस संवत् में परस्पर शक्तिपरीक्षण किंवा विघटन के कारण बनें। सत्ता–संघर्ष के लिए परस्पर राजनीतिज्ञों में दावे प्रबल हों। अनेकत्र प्रजा अकालग्रस्त क्षेत्रों से स्थानांतरण करे। वर्षा सामयकी न होने से दालवाना, चावल, अन्य अनाज, जड़ी–बूटियों को भारी हानि पहुंचे। कहीं ग्रीष्म ऋतु में भारी वर्षा भी हो।

संवत् 2070 वि. का राजा "गुरु" होने से देश में सुख–शान्ति बने एवं प्रजाहितार्थ शासक सचेष्ट रहें। अनाज की कमी होने पर भी जनता को जनजीवनोपयोगी वस्तुएं सुलभ बनाई जाएं। सरकार किसानवर्ग को उनके लिए समृद्ध व नई योजनाओं द्वारा अपने पक्ष में करे। गतवर्ष सं. 2069 वि. में पृ. 46, कॉलम 2 के शुरु में हमने स्पष्ट घोषणा की थी कि– सं. 2069 में सोना, चान्दी एवं चावल आदि में इसवर्ष (सं. 2069 वि. में) विशेष लाभ होगा; –

" संवत् 2069 वि. का राजा एवं मन्त्रीपद (दोनों पद) 'शुक्र' ग्रह को प्राप्त हैं। अधिक जलीय धान्य, चावल आदि की उपज ठीक हो एवं चावल, सोना, चान्दी के व्यापारी इस वर्ष विशेष लाभ प्राप्त कर सकेंगे।"

व्यापारी लोग जानते हैं कि– गत संवत् में सोना–चान्दी के भाव आसमान को छू गए और चावल आदि की फसल उत्तम हुई।

इस संवत् 2070 वि. का मन्त्री शनि होने से केन्द्रीय शासनतन्त्र की नीतियों, मन्त्रियों के घोटालों एवं महंगाई के विरुद्ध जनता का आक्रोश असन्तोष का कारण बनेगा।

वर्तमान संवत् का सस्येश 'मंगल' होने से दुधारु पशुओं में रोगविशेष से हानि हो। परिणामस्वरूप, दूध–घी आदि महंगे हों। कहीं वर्षा के अभाव से खाद्यान्नों व पशुचारे में ज़ोरदार महंगाई हो।

इस संवत् का धान्येश 'सूर्य' होने से वर्षा की भयंकर कमी होने से मूंग, मोठ आदि दलहनों एवं तिल, एरण्ड, सरसों, तोड़िया, अलसी आदि तिलहनों में ज़ोरदार तेजी से स्टॉकिस्टों को लाभ मिलेगा।

सं. 2070 वि. में **मेघेश**, **चतुर्मेघ** एवं **नवमेघों** पर दृष्टिपात करने से 'संवर्तक' एवं 'तम' नामक मेघ होने से कहीं वायुवेग, बवंडर, तूफ़ान, भूकम्प किंवा सुनामी के प्रलयंकारी दृश्य से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। एतदर्थ शासनतन्त्र को प्राकृतिक आपदा के प्रबन्धन के लिए सचेष्ट रहना होगा।

शरत्सस्यजातक–ग्रहस्थिति के अनुसार गन्ना, मक्का, चावल, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, अरहर, कपास एवं तिल आदि फसलों को हानि पहुंचेगी।

ग्रीष्मसस्यजातक–कुण्डली के अनुसार गेहूं, चना, जौ एवं सरसों आदि तिलहन की फसलें अच्छी होने पर भी फसलों को प्राकृतिक गतिविधि से हानि पहुंचे।

व्यापारी ध्यान दें– संवत् 2070 वि. में *ग्रहों के वक्र–मार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहन,*

लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे। **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी जिन्स/धातु की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स/ प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

अप्रैल (सन् 2013 ई.)

[सज्जनों! संवत् के आरम्भ से पहले सं. 2069 वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति के अनुसार 14, 15, 16 मार्च, सन् 2013 ई. को वायदा एवं शेयर बाज़ारों में तेज़ी रहेगी। 17 से 21 मार्च तक बाज़ार के रुख के मुताबिक काम करें। आगे 22 से 29 मार्च तक वायदा एवं शेयर बाज़ार तेज़ रहें। 1 से 10 अप्रैल, 2013 ई. तक सभी बाज़ारों में झटके का मन्दा आ सकता है, सावधानी से काम करें।]

11 अप्रैल से 25 अप्रैल तक मंगल अतिचारी पोज़ीशन में चल रहा है। अतः मासारम्भ में तूफानी घटाबढ़ी का संकेत मिलता है। वायदा व्यापारी बड़ी सावधानी से काम करें। ध्यान दें– यदि तेज़ी का रुख बने तो तूफानी तेज़ी, यदि मन्दे का रुख बने तो ज़ोरदार मन्दा बनने का योग है– यह समझें।

ग्रहगोचर के अनुसार 11 अप्रैल को मेष राशि का चन्द्रदर्शन रुई, सूत, ऊन, तेल, सरसों अलसी आदि तिलहनों में तेज़ी करेगा।

12 अप्रैल को मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आ जाता है। इसी दिन बुध उ.भा. में प्रविष्ट एवं प्लूटो वक्री भी हो रहा है। मेष–राशि में मंगल अपने ही प्रभावक्षेत्र में है। यह बाज़ारों को मन्दी में रोक कर तेज़ी की तरफ बढ़ाएगा। लेकिन मन्दे के भी झटके आ सकते हैं।

इन दिनों चान्दी में घटाबढ़ी चलेगी। ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, गेहूं, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना एवं सोना तेज़ रहेंगे। इस ग्रहस्थिति का प्रभाव 15 दिन तक होगा।

13 अप्रैल शनिवार को सूर्य मेष राशि में आकर शुक्र–मंगल एवं केतु के साथ मेल कर रहा है। मेष राशि में इन ग्रहों का एकराशि में होना एवं इन पर शनि–राहु की दृष्टि से उत्तम तेज़ी बनेगी। रुई, कपास, सूत, घी, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चान्दी, सोना, लोहा, तांबा, लालचन्दन, हींग, मेथी, लोंग, इलायची तेज़ रहेंगे। अनाज एवं दालवाना में तेज़ी–मन्दी के ज़ोरदार झटके आएंगे।

ध्यान दें– इसी दिन (13 अप्रैल को ही) गुरु रोहिणी–4 में प्रविष्ट होगा। अतः गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी में यदि पहले मन्दा बने तो तुरन्त माल पकड़ें, जल्दी ही लाभ मिलेगा। 13 से 19 अप्रैल तक बाज़ारों में ज़ोरदार उठापटक रहेगी।

20 अप्रैल को शुक्र पश्चिम में उदित होगा। घी, गुड़, खाण्ड मन्दे हों। 21 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र एवं शुक्र भरणी नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे। इस समय रुई, वस्त्र, सूत, सण, सोना, चान्दी, तिल, चावल, लालचन्दन, लालमिर्च, केसर, मजीठ, कुसुम्भ तेज रहेंगे। लेकिन यह तेज़ी ठहरेगी नहीं। वायदा व्यापारी जल्दी ही लाभ लें। जल्दी ही मन्दा आ जाने का योग है। 22 से 24 अप्रैल तक बाज़ार अस्थिर रहेंगे। मन्दे में खरीदें और तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।

25 अप्रैल गुरुवार को चन्द्रग्रहण सोना, गुड़, लालचन्दनादि लाल चीज़ों तथा सुगन्धित पदार्थों में तेज़ी का रुख बनाएगा।

आगे व्यापारी विशेष ध्यान दें– क्योंकि, 26 अप्रैल से आगे 25 मई के लगभग तक बालग्रह बुध अतिचारी पोज़ीशन में ही रहेगा। तिलहन बाज़ारों पर अतिचारी बुध का विशेष प्रभाव पड़ता है। तेल, सरसों सोयाबीन, एरण्ड आदि तिलहनों के वायदा बाज़ार में अफवाहों के साथ ज़ोरदार तेज़ी एवं मन्दे के रिएक्शन्ज़ आया करते हैं। सावधानी से काम करें।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र एवं 28 अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर सूर्य, मंगल, शुक्र एवं केतु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना लेगा। यहां शनि–राहु के साथ इनका समसप्तक चलता है। राजनैतिक प्रक्रिया में विशेष उठापटक के कारण व्यापार प्रभावित होगा।

यहां वायदा एवं हाज़र बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दा या तेज़ी बनेगी– सावधान रहें। हमारे विचार से सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, गेहूं, चना, जौ, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं घी में तेज़ी बनेगी।

ध्यान दें– यद्यपि मेष राशि का बुध मन्दी कारक होता है, परन्तु बुध का अतिचार एवं सूर्य–मंगल–केतु–शुक्र का एकसाथ होना एवं शनि की दृष्टि से बाज़ारों में हमें ज़ोरदार तेज़ी मालूम देती है। चान्दी में कुछ मन्दा बन सकता है।

29 अप्रैल को बुध के पूर्व में अस्त होने से वायदा बाज़ारों में कुछ उठापटक हो सकती है। लेकिन 30 अप्रैल को भरणी नक्षत्र का मंगल एवं मृगशिर नक्षत्र में गुरु का दाखिल होना अनाजों, सोना, चान्दी, रुई में तेज़ी बनाएगा।

[12, 13, 20, 26, 27 एवम् 30 अप्रैल को शेयर (बैंकिंग, लोहा एवं क्रूड ऑयल के) बाज़ारों में तेज़ी से लाभ मिले।]

मई (सन् 2013 ई.)

मासारम्भ में बाज़ार कुछ सामान्यतया तेज़ रहकर 2 मई को शुक्र के कृत्तिका नक्षत्र में आने पर जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना, हीरा, मणि, मोती में मन्दा बने। लेकिन बुध अतिचारी है एवं मेषराशिस्थ चतुर्ग्रही योग अस्थायी मन्दे के बाद अच्छी तेज़ी करेगा। माल पकड़ें।

4 मई को शुक्र वृष राशि में आकर शत्रुक्षेत्रस्थ गुरु के साथ मेल करेगा। सीमाप्रान्तों पर कहीं अशान्ति, अकालिक वर्षा किंवा राजनैतिक उठापटक व्यापार को प्रभावित करेगी–

"गुरु–शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेत् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः।।"

रुई, कपास में अच्छी मन्दी बने। सोना, चान्दी में पहले घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेज़ी बनती है। अनाज, दालवाना में मन्दा रहे। ध्यान दें– यदि मन्दे की जगह तेज़ी का रुख बने तो इस समय तेज़ी में ही रहें।

5 मई को भरणी नक्षत्र में बुध आकर सूर्य–मंगल के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्र–सम्बन्ध बनाएगा। यह योग बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बना सकता है। भरणी नक्षत्र का सम्बन्ध रेशम, ऊन, पशमीना, मसरी, गेहूं, जौ, लालचन्दन, शराब, सरसों, गोंद, हल्दी, जड़ीबुटी, सोना, तांबा, मशीनरी एवं शेयर बाज़ारों से है। अतः यहां उल्लिखित चीज़ों के शेयर एवं वायदा बाज़ारों में तेज़ी से लाभ मिलेगा। 4 से 8 मई तक वायदा बाज़ारों में अच्छी तेज़ी से लाभ लें।

9 मई को वक्री शनि स्वाती के दूसरे चरण में आएगा। शनि तुला राशि में राहु के साथ मित्रक्षेत्र में बैठा है। शनि–राहु ये दोनों सू. मं. बु. चं. के. के साथ समसप्तकयोग बना रहे हैं। जब भी शनि स्वाती नक्षत्र में आता है, खाद्यतेल, सरसों, तोड़िया, अलसी, एरण्ड, मूंगफली, तिल आदि तिलहनों में ज़बरदस्त तेज़ी का तूफान बनने लगता है। स्वाती के दूसरे चरण में आकर शनि तेज़ी को और बढ़ावा देगा। सावधानी से काम करें एवं समय पर ताज़ा मशवरा प्राप्त करें। इस समय गुड़, चीनी, खाण्ड, चावल, चान्दी, सोना भी तेज़ रहें। इस ग्रहगति का प्रभाव उत्तम–मध्यमरूप से 14 मई तक चलेगा।

11/12 मई को सूर्य एवं बुध दोनों कृत्तिका नक्षत्र में आ जाते हैं एवं वृष राशि में शनिवार को चन्द्रदर्शन भी है। 12 मई को शुक्र रोहिणी में आकर सोना, अलसी, घी, रुई, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनाए। चान्दी एवं अफीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी रहे।

12 मई को रोहिणी नक्षत्र में शुक्र के आने पर वायदा बाज़ारों में अचानक कुछ अस्थायी मन्दा आ सकता है– सावधान रहें। लेकिन सोने–चान्दी की बिकवाली आगे ज़्यादा होगी।

13 मई, सोमवार को अक्षयतृतीया के दिन बुध वृषराशि में आकर गुरु–शुक्र के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इस दिन प्रायः सभी वस्तुओं में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। चान्दी में मन्दी होकर तेज़ी आए। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, अरहर, कपास, सूत, अफीम, तिलहन एवं तेल तेज़ हों।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध, शुक्र, गुरु के साथ मेल करेगा।भारतीय एवं विदेशीय राजनैतिक घटनाचक्र का प्रभाव व्यापारिक क्षेत्र पर पड़ेगा। चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल,तिल, तेल, सरसों आदि में तेज़ी से लाभ मिलेगा। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल कुछ मन्दे हो सकते हैं।

16/17 मई को गुरु के मृगशिरा नक्षत्र के दूसरे चरण में प्रविष्ट होने एवं बुध के रोहिणी नक्षत्र में आने पर रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड तेज़ रहें।

18 मई को मंगल कृत्तिका नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा। इस समय गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चान्दी, सूत में तेज़ी बनेगी। रुई में पहले तेज़ी, फिर मन्दी बनेगी।

23 मई को मंगल वृष राशि में आकर सूर्य, शुक्र, बुध, गुरु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। मंगल वृषराशि में आकर शनि–राहु की दृष्टि से निकल जाएगा, लेकिन वृषराशि में पंचग्रहीयोग बन जाएगा, जोकि अफवाहों से वायदा एवं हाज़र बाज़ारों में उछाल ला सकता है। एक मास में लाल रंग की चीज़ें, अनाज, रुई, कपास, सूत, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चान्दी, तांबा, जस्ता एवं शेयर बाज़ारों में तेज़ी बने।

[14 से 23 मई तक शेयर एवं वायदा बाज़ार तेज़ रहेंगे।]

24 मई को बुध मृगशिरा नक्षत्र में आएगा। तेल, तिलहन एवं अनाजों में मन्दे का झटका आएगा। चान्दी में घटाबढ़ी एवं रुई में तेज़ी रहे।

25 मई को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य तिलहन, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सण, सुपारी, लालमिर्च, राई में तेज़ी करेगा। इस समय चान्दी मन्दी रहे।

27 मई को बुध मिथुन राशि में आ रहा है। 15 दिन में रुई, सोना, चान्दी, मन्दे होंगे। सरसों, तारामीरा आदि तिलहनों में घटाबढी चलेगी।

29 मई को शुक्र भी मिथुनराशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। ध्यान दें– अकेला शुक्र ही कभी–कभी बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दी करता है। जब यह बुध के साथ मेल करता है तो मन्दी की ताकत और बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में अगर बाज़ार मन्दे हों तो ज़ोरदार मन्दी की लाइन बनाता है, यदि बाज़ार तेज़ हों तो शुक्र साधारण तेज़ी का वातावरण बनाता है। इस समय गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन एवं सोना–चान्दी में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। बाज़ार के रुख को देखकर काम करें।

31 मई को गुरु मृग. के तृतीय चरण एवं मिथुन राशि में प्रवेश करके बुध–शुक्र के साथ मेल करेगा। शुक्र–बुध दोनों ग्रह गुरु के शत्रु हैं। अतः इन दिनों रुई में भयंकर मन्दी बनेगी। गुड़, सोना, चान्दी, सूत, नारियल, सुपारी, अलसी, मूंगफली, सरसों, तांबा, लोहा तेज़ रहें। घी, तेल–तिलहन के व्यापारी सावधान रहें, ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।

[24 मई से मासान्त तक शेयर बाज़ारों, सोना–चान्दी, रुई एवं तिलहन के बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में माल पकड़ें, तेज़ी में बेचें। वायदा व्यापारी इस समय तेज़ी–मन्दी खेलकर अच्छा लाभ ले सकते हैं।]

जून (सन् 2013 ई.)

मास के आरम्भ में गेहूं, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ एवं तेल, सरसों आदि में कुछ मन्दे का वातावरण रहे।

3 जून को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आकर बुध ग्रह के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध बनाएगा। गुरु–शुक्र–बुध ये तीनों एकराशि में ही हैं। अतः इस समय व्यापारी बाज़ार के रुख को देखकर ही काम करें। वर्षा–वायु के विचार से कहीं खड़ी फसलों को लाभ हो। अफवाहों से बाज़ार मन्दे की तरफ अचानक बढ़ेंगे– यह समय माल पकड़ने का है। वायदा व्यापारियों को 6 जून केलगभग रुई एवं शेयरों में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

3 जून के लगभग अनाजों में ज़ोरदार मन्दा बनेगा। तकरीबन सभी बाज़ार मन्दे रह सकते हैं।

6 जून को गुरु अस्त होगा। इस समय वृष का गुरु शुक्र–बुध के साथ है। वृष राशि का गुरु रुई, कपास, तेलवाना, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, व अनाजों में तेज़ी करता है। इस समय कई चीज़ों के Export का ऐलान भी हो सकता है, जिससे तेज़ी बनेगी।

ध्यान दें– 7 जून को नेप्च्यून वक्री होगा एवं 8 जून को सूर्य, चन्द्र, मंगल– ये तीनों रोहिणी नक्षत्र में मौजूद रहेंगे। 8 जून को शनैश्चरी अमावस भी है। रुई, सूत, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, नारियल तेल एवं अन्य खाद्य तेलों में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। यह तेज़ी 9 जून तक चल सकती है।

[3 से 10 जून तक सोना, चान्दी, तेल, तिलहन एवं शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिलेगा।]

10 जून को पुनर्वसु नक्षत्र का बुध एवं चन्द्रदर्शन होने से सोना तेज़ रहे। चांदी, कपास, सूत, सण में ज़ोरदार मन्दी का झटका आ सकता है।

नोट– यह मन्दी स्थिर नहीं रहेगी। 13 जून तक तेज़ी के **Reactions** आएंगे।

14 जून शुक्रवार को सूर्य मिथुन राशि में आकर गुरु–शुक्र–बुध के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस समय बुध, गुरु, शुक्र– ये तीनों पुनर्वसु नक्षत्र में चल रहे हैं। रुई, रेशम, सूत, कपास, पाट, बारदाना, हल्दी, मसाले, सरसों आदि तिलहन, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि अनाजों में तेज़ी रहे।

नोट–14 जून को बाज़ार खुलते ही शुक्र के पुनर्वसु में आने से चावल, सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत में अगर मन्दा बने तो चिन्ता न करें, रात तक अच्छी तेज़ी बनेगी।

14 से 23 जून तक शेयर, हाज़र एवं वायदा बाज़ारों में तेज़ी–मन्दी के अच्छे रिएक्शन्ज़ आएंगे। बाज़ार के रुख को देखकर काम करते रहें।अच्छा लाभ मिलेगा।

इसी दौरान 21 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आकर रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ एवं चान्दी में तेज़ी करेगा। सोने में घटाबढ़ी चलेगी।

22 जून को शुक्र कर्क राशि में आकर शनि की नज़र में आ जाता है। शुक्र का प्रभाव विशेषतः कपास, रुई, गुड़, खाण्ड, तिलहन तथा चान्दी के बाज़ारों पर अनुभव किया गया है। रुई में पहले अच्छी मन्दी आकर बाद में

ज़ोरदार तेज़ी आएगी। अलसी, अरण्ड आदि तिलहन, खाद्य तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चान्दी, गेहूं, जौ, चना, मटर एवं अरहर तेज़ रहें।

25 जून को मंगल मृगशिरा एवं शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय शुक्र, बुध, सूर्य– ये तीनों मिथुन राशि में ही हैं। तिल, चान्दी, सोना, रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन व अनाज तेज़ रहें। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग में कुछ मन्दा संभव है। गुड़, खाण्ड, घी में उठापटक रहे।

26 जून को बुध वक्री होगा। इस समय शनि–राहु भी वक्री ही हैं। वक्र होकर जब बुध सूर्य के साथ होता है तो बाज़ारों में तेज़ी करता है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, खाद्य तेल, सरसों, तोड़िया, एरण्ड, मूंगफली, तिल, अलसी आदि में अच्छी तेज़ी सम्भव है।

नोट– बुध वक्र होने पर बाज़ारों का रुख बदल देता है, लेकिन ग्रहों की पोज़ीशन के मुताबिक हमें 26 जून के लगभग तेज़ी मालूम देती है। यदि बाज़ार मन्दे बनें तो समझ से काम लें; ताज़ा मशवरा प्राप्त करें। इस ग्रहगति का प्रभाव 28 जून तक चलेगा।

28 जून को मंगल के उदय होने पर रुई, उड़द, तिल, तेल, अलसी में तेज़ी संभव है। अनाज मन्दे रहें। 29 जून को गुरु के आर्द्रा प्रथम चरण में आने पर सोना, चान्दी, तांबा आदि धातु, मोती, पुखराज आदि रत्न, नारियल, लौंग आदि सुगन्धित–पदार्थ एवं नमक तेज़ होंगे। रुई में मन्दी रहे।

29 जून को राहु स्वाती के चतुर्थ चरण में आकर शनि ग्रह के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्रसम्बन्ध बनाएगा। ये दोनों वक्री हैं। यह योग ज़ोरदार तेज़ी का है। काली मिर्च, लौंग, ज़ीरा, मेथे, दाख, छुहारा, लाख एवं रुई, तेल, तिलहनों को यह ग्रहस्थिति प्रभावित करेगी।

शनि–राहु दोनों क्रूर ग्रहों को जिन्सों की पैदावारों को आंधी, वर्षा आदिप्राकृतिक प्रकोपों से फसलों को नष्ट करते देखा गया है। जिससे खपत के मुताबिक पैदावार न होने से बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ते हैं। अतः मूंगफली, सरसों, तारामीरा, तिल, खाद्य तेल, सरसों तेल, बिनौला, खल, मैंथा ऑयल, ग्वार, बाजरा, मसाले आदि में ज़ोरदार तेज़ी आएगी, लाभ लें। इस ग्रहस्थिति का प्रभाव 30 जून तक चल सकता है।

[नोट– 26, 27, 29, 30 जून को सोना, चान्दी, मसाले, तेल, तिलहन एवं शेयरों में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा।]

जुलाई (सन् 2013 ई.)

जुलाई की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार 1 जुलाई को गुरु का उदित एवं इसी दिन (1 जुलाई को ही) बुध का पश्चिम में अस्त होना वायदा एवं हाज़र बाज़ारों में मन्दी करेगा।

इस समय हमारे विचारानुसार पाट, हैसियन, तेल, तिलहन, सोने एवं शेयर बाज़ारों में झटके के साथ अच्छी मन्दी बन सकती है। रुई में भी झटके की मन्दी बनेगी। चान्दी एवं अनाज कुछ तेज़ी की तरफ रहेंगे। यह मन्दी 4 जुलाई तक चल सकती है।

5 जुलाई को मंगल मिथुन–राशि में आकर सूर्य, गुरु, बुध के साथ मेल करेगा। यह ग्रहस्थिति विश्व के प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं देशविशेष के लिए कष्टप्रद घटना वाली रहेगी, जिसका प्रभाव व्यापारिक जगत् तथा वायदा बाज़ारों पर स्पष्टरूप से देखा जाएगा–

" एक–राशौ यदा यान्ति चत्वारः–पंच खेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।"

उधर शनि एवं राहु– ये दोनों स्वाती नक्षत्र एवं तुला राशि में चल रहे हैं। इस समय बाज़ार का Trend (रुख) देखकर ही काम करें। रुई, कपास, तेलवाना, सोना, चान्दी, तांबा, घी आदि के व्यापारी सावधानी से काम करें, उत्तम लाम मिलेगा। यहां एकतरफा एक महीने की लम्बी लाईन बन सकती है। यहां गुड़, खाण्ड, अलसी, अफीम, कुसुम्भ, मजीठ एवं सोने में हमारे विचार से अच्छी तेज़ी बनेगी। लाल रंग की चीज़ों में विशेष तेज़ी रहे। फिर भी समय पर ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।

6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध भी बनाएगा। रुई, सोना, चान्दी, गुड़, कपास, सरसों, बिनौला, एरण्ड आदि तिलहन, लाख, सभी दालें, हरड़, सुपारी, करयाणा में अच्छी तेज़ी बनेगी। वायदा बाज़ारों में तेज़ी एवं शेयर बाजारों में भयंकर उठापटक रहेगी, सावधान रहें।

6 जुलाई को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आकर 12 दिन में रुई में मन्दी बनाएगा; वायदा बाज़ारा तेज़ रहेंगे।

[4 से 6 जुलाई तक सोना, चान्दी, तेल, तिलहन एवं शेयर बाज़ारों में यदि तेज़ी मिले तो तुरन्त लाभ लें, आगे अचानक मन्दा बने।]

7 जुलाई को शनि मार्गी होगा। राहु एवं शनि दोनों– तुला राशि एवं

स्वाती नक्षत्र में हैं। यद्यपि स्वाती नक्षत्र द्वितीय चरण का शनि बाज़ारों में तेज़ी को बढ़ावा देता है, लेकिन चान्दी–रुई में झटके की मन्दी बनाकर तेज़ी करेगा। तेल एवं तिलहनों में जब भी मन्दा आए स्टॉक करें, आगे अगस्त/सितम्बर में टॉप के भाव बनेंगे, सर्वोत्तम लाभ मिलेगा।

7 जुलाई से लगभग 9 जुलाई तक खाद्य तेल, खल, बिनौला, घी, गुड़, चीनी, सोना–चान्दी एवं शेयर बाज़ारों में भारी उठापटक के योग हैं। सावधानी से काम करें। हमारा विचार रुई, तिलहन एवं शेयर बाज़ारों में इस समय मन्दे का है।

10 जुलाई को चन्द्रदर्शन के अनुसार चान्दी, सोना, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अनाज, दालवाना अस्थायी मन्दे रहें।

13 जुलाई को गुरु आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। साथ ही 15 जुलाई को मंगल भी आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता है। इस प्रकार भारी वर्षा–वायु का प्रभाव बाज़ारों पर पड़ेगा। सावधानी से काम करें। रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, नमक, तेल, लौंग आदि सुगन्धित पदार्थ, नमक तेज़ रहें। चान्दी में मन्दी रहे।

यह ग्रहचाल 15 जुलाई तक रहेगी।

16 जुलाई को कर्कराशि में सूर्य एवं बुध वक्री अवस्था में आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता है। सूर्य पर शनि की दृष्टि भी है। सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सूत, बादाम, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना तेज़ रहें। लेकिन गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल, मोठ में मन्दे का झटका आ सकता है।

17 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होगा। चान्दी में कुछ दिन के लिए मन्दा बन सकता है। लेकिन सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालचन्दन, मजीठ, लालमिर्च, गुड़, शक्कर में तेज़ी रहेगी।

18 जुलाई को मिथुन राशिस्थ वक्री बुध पूर्व में उदित होगा। "नोत्पात–परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्"– प्रमाणानुसार कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, जिससे व्यापारों में उठापटक रहे। तिल, घी, लालमिर्च, चना तेज़ हों। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी आए।

20 जुलाई को बुध मार्गी होकर बाज़ारों में नया Trend बनाएगा। सावधानी से काम करें। वायदा व्यापारी सावधान रहें। इस समय मूंग, मोठ, चना मन्दे हों। 3 दिन में रुई में मन्दी का झटका आकर तेज़ी हो। चान्दी भी मन्दी रहे। 8 दिन में चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाखू तेज़ रहें।

[16, 17 जुलाई को शेयर बाज़ार तेज़ रहें। 18, 23 जुलाई को शेयरों में ज़ोरदार मन्दा किंवा तेज़ी बनेगी। समझ से काम लें।]

24 जुलाई को बुध पुनर्वसु में आ जाएगा। 8 दिन में चान्दी, रुई, कपास, सूत एवं सण में ज़ोरदार मन्दी आएगी।

28 जुलाई को पू.फा. में शुक्र के आने पर 14 दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दा बनेगा।

29 जुलाई को बृहस्पति आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आकर सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, नमक एवं करयाणा में भी तेज़ी करे।

[नोट– 24 से 28 जुलाई तक वायदा बाज़ार एवं शेयरों में अच्छा मन्दा बन सकता है। सावधानी से काम करें।]

29 से 31 जुलाई तक बाज़ार कुछ तेज़ी की तरफ रहें।

अगस्त (सन् 2013 ई.)

मासारम्भ में बाज़ार कुछ तेज़ रहें। 2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र एवं 3 अगस्त को मंगल पुनर्वसु नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इस समय सूर्य पर शनि की दृष्टि भी है। सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, खाद्य–तेल, तिल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ एवं नील में तेज़ी रहेगी।

4 अगस्त को बुध कर्क में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य–बुध पर शनि की दृष्टि भी है। जब भी बुध का मेल सूर्य के साथ होता है तो बुध क्रूर हो जाता है। जिस तरफ बाज़ार बढ़ रहा होता है, उसी तरफ तेज़ी या मन्दी को बढ़ावा देता है। अतः हमारे विचार से रुई–चान्दी में ज़ोरदार मन्दी के बाद अच्छी तेज़ी बनेगी। इस समय हमारी निजी राय है कि– रुई, चान्दी में मन्दी न आकर तेज़ी ही रहे, क्योंकि शनि की दृष्टि मन्दी को रोकेगी। गुड़, शक्कर, दूध, मूंगफली, सरसों आदि तिलहन एवं सोने में पहले तेज़ी आकर कुछ मन्दा बने।

6 अगस्त मंगलवारी अमावस को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर रुई, तेल, तिलहन एवं सोना–चान्दी में मन्दे के आसार होने पर भी कुछ तेज़ी करे – ऐसा विचार है, फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर काम करें।

8 अगस्त को सिंह राशि में चन्द्रदर्शन गुरुवार को होगा। रुई, सूत, ऊन, रेशम, तिल, खाद्य तेल, घी, अफीम एवं नशीली चीज़ें तेज़ रहें। सोने–चान्दी में घटाबढ़ी चले। 9 से 10 अगस्त तक बाज़ारों में उठापटक चलेगी।

11 अगस्त को शुक्र कन्या राशि में आएगा। यहां शुक्र नीचराशि में है। कन्या का शुक्र यद्यपि मन्दीकारक माना जाता है, फिर भी ध्यान देने लायक बात यह है कि– 7 से 28 अगस्त तक बुध अतिचारी पोज़ीशन में चलेगा। सूर्य–बुध की एक राशि में स्थिति, 17 अगस्त तक शुक्र पर मंगल की दृष्टि होने से हमें 18 अगस्त तक वायदा एवं हाज़र बाज़ारों में ज़बरदस्त तेज़ी ही मालूम देती है। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तिलहन बाज़ारों एवं रुई–कपास में तेजी बनेगो। अतिचारी बुध के पीरियड में अगर कदाचित् मन्दी ही बने तो तेज़ी का ही धन्दा करें, विशेषतः सोना–चान्दी एवं तेल–तिलहन के बाज़ारों में टॉप के भाव बन सकते हैं। चावलों में भी विशेष तेज़ी का झटका आ सकता है।

[4 अगस्त एवं 9 से 18 अगस्त तक गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना, चान्दी, खाद्य तेल, सरसों आदि तिलहन एवं शेयर बाज़ारों में ज़बरदस्त तेज़ी बनेगी। इस समय ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।]

12 अगस्त को बुध के पूर्व में अस्त होने पर अनाज, घी आदि में अस्थायी मन्दा आने पर घबराएं नहीं, तेज़ी में रहें। इस समय रुई में घटाबढ़ी चलेगी। रुई में पहले तेज़ी, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज़ी बने। सोने में घटाबढ़ी के बाद फिर तेज़ी बने।

[आगे 14 से 19 अगस्त तक शेयर बाज़ार एवं हाज़र और वायदा व्यापार में हमें उत्तम तेज़ी के योग मालूम देते हैं, फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ावें।]

14 से 19 अगस्त तक की ग्रहस्थिति का विचार नीचे लिख रहे हैं–

14 अगस्त को बुध आश्लेषा नक्षत्र में दाखिल हो सूर्य के साथ एक/दो दिन के लिए एकनक्षत्र–सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन (14 अगस्त को ही) गुरु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। इस समय बुध अतिचारी ही है। अतः तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली, सोना, चान्दी, तांबा में अच्छी तेज़ी बनेगी।

16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होगा। सिंह सूर्य की अपनी राशि है। सोना, चान्दी, रुई, मूंग, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन तथा लालमिर्च आदि सभी लालरंग की चीज़ों एवं हीरे–जवाहरात आदि रत्नों में अच्छी तेज़ी बनेगी। इस दिन शेयर कुछ मन्दे रहें। माल पकड़ें।

18 अगस्त को मंगल अपनी नीचराशि कर्क में दाखिल होगा। कर्क–राशि के मंगल की शनि पर एवं शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि रहेगी। यह ग्रहस्थिति सरसों, एरण्ड, अलसी, तेल में मन्दी की उम्मीद होने पर भी तेज़ी करेगी। गुड़, शक्कर, घी, अनाज तेज़, चौपाए भी तेज़ हों–

"भूमिपुत्रो यदा कर्के सर्वधान्य–महर्घता।
महिषीक्ष्वो महर्घत्वं भवेन्नैवान्न संशयः।।"

[नोट–16, 18, 19 अगस्त को शेयर बाज़ार, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी में अच्छी तेज़ी के योग हैं।]

20 अगस्त को शुक्र हस्त में आकर रुई, चावलों में मन्दा करे। यदि इस बीच अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा। इस समय गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चले।

ध्यान दें– 20 अगस्त को बुध भी मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा। सूर्य एवं अतिचारी बुध का सिंह राशि में एकसाथ होना गेहूं, जौ, चना, रुई, सूत, ऊन, सोना, चान्दी एवं खट्टे पदार्थों में तेज़ी कर सकता है। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी में 23 अगस्त तक कुछ मन्दा सम्भव है।

23 अगस्त को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर चान्दी और रुई में घटाबढ़ी एवं सोने में विशेष तेज़ी का झटका ला सकता है।

[नोट– भाद्रपद कृष्णपक्ष में 24 अगस्त को शनिवारी चतुर्थी होने से कहीं सत्ता–परिवर्तन किंवा दुर्भिक्ष की स्थिति या प्राकृतिक आपदा से व्यापार प्रभावित हो सकता है। व्यापारी लोग सावधानी से व्यापार करें।]

27 अगस्त को गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाज मन्दे हों। 30 अगस्त को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में आकर 14 दिन में ज़ीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, उड़द, रुई, सूत तेज़ करेगा। इस समय चान्दी में अस्थिरता रहे।

31 अगस्त को चित्रा नक्षत्र का शुक्र सोना, चान्दी एवं अनाजों के भावों को कन्ट्रोल में ही रखेगा।

सितम्बर (सन् 2013 ई.)

सितम्बर मास के आरम्भ में वायदा एवं हाज़र बाज़ार यदि कमज़ोर हों तो खूब माल पकड़ें, आगे उत्तम लाभ प्राप्त होगा।

1 सितंबर को गुरु पुनर्वसु–1 में एवं राहु स्वाती–3 में दाखिल होगा। यहां ध्यान दें कि– 3 सितंबर को शनि के स्वाती के तीसरे चरण में प्रवेश करने से शनि–राहु दोनों एकराशि, एकनक्षत्र एवं एक ही नक्षत्रचरण में चलेंगे।

इस समय तेज़ी की पावर बढ़ने लगेगी। तेल, सारे तिलहन, रुई, कपास, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना आदि के व्यापारियों को मन्दे की तरफ ध्यान न देकर तेज़ी का काम करने की सलाह है। उड़द, मोठ, मूंग, अरहर, मसूर आदि दालवाना भी तेज़ रहेंगे।

5 सितंबर को बुध अपनी राशि कन्या में आएगा। इस समय कन्या राशि में शुक्र भी है। कन्या राशि रुई, कपास, तेलवाना आदि जिन्सों की पैदावार व फसल की प्रभावराशि है। बुध ग्रह में बाज़ारों में अफवाहों के ज़रीए घटाबढ़ी करने की ताकत शुक्र से अधिक अनुभव की गई है। सावधानी से काम करें। फिर भी हमारे विचार से गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, तेल, तिलहन में तेज़ी ही रहेगी। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने।

6 सितंबर को शुक्र तुला राशि में आकर शनि एवं राहु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस समय इन पर मंगल की विशेष दृष्टि है एवं मंगल पर शनि की भी विशेष दृष्टि बनी हुई है। तुलाराशि निर्यात (Export) की राशि है। वायदा एवं सट्टे का कारोबार भी इसी तुलाराशि से सम्बन्धित है। तीनों क्रूर ग्रह यहां इकट्ठे हो गए हैं। तिलहन की पैदावार कम होने से तेल अलसी, खाद्य तेल एवं हरेक तिलहन में भारी तेज़ी बनेगी। रुई, सूत, अफीम, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी में भी अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। राहु के शनि के साथ होने से दालवाना एवं मसाले भी तेज़ी में रहेंगे। सरकारी Export-नीति के कारण भी अनाज, तेल, सोना, चान्दी, गुड़, चीनी एवं वायदा बाज़ारों में तेज़ी बन सकती है।

[1, 5, 6, 7, 8 सितंबर को वायदा एवं शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी की संभावना है।]

9 से 12 सितंबर तक बाज़ारों में मन्दी रहने का योग है।

9 सितंबर को बुध के पश्चिम में उदित होने पर कई शेयर 15 दिन तक लुढ़केंगे। 9 सितंबर को बुध के उदित होने पर बाज़ारों का रुख अचानक बदल सकता है– सावधानी से काम करें।

11 सितंबर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। ध्यान दें– शनि एवं राहु भी स्वाती नक्षत्र में काफी अरसा से चल रहे हैं। इस प्रकार ये तीनों ग्रह एकमत होकर चलने लगे हैं। बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी चलेगी। जिस दिशा में बाज़ार चलें, उसी दिशा में व्यापार बढ़ाते जाएं– उत्तम लाभ का चांस है। सोना, चान्दी, रुई, मूंगफली एरण्ड, अलसी, सरसों, तिल आदि तिलहन, कपास, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, चीनी, खाद्य तेल, दालें, दूध, खोवा में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिलेगा। शेयर मार्कीट में लोहे, बैंक, लोकोमोटिव आदि के शेयरों से लाभ रहे।

यह तेज़ी 13 सितंबर तक उत्तम–मध्यमरूप से चलेगी।

13 सितंबर को उ.फा. नक्षत्र में सूर्य एवं आश्लेषा नक्षत्र में मंगल रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस एवं नील में तेज़ी करेंगे।

थोड़ा ध्यान दें– आश्लेषा नक्षत्र का मंगल, जोकि 14 सितंबर को प्रभावी होगा, चान्दी में एकदम झटके की मन्दी बना सकता है– सावधान रहें।

[11 से 14 सितंबर तक वायदा बाज़ार एवं शेयर बाज़ारों में विशेषतः 11/12 सितंबर को अच्छी तेज़ी बने।]

16 सितंबर को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस समय दालवाना, चावल, तेल–तिलहन, रुई, नारियल, सुपारी, गुड़, चीनी, लालमिर्च, सोने में अच्छी तेज़ी बने। इस समय चान्दी एवं शेयर बाज़ारों में मन्दे का झटका आ सकता है।

ध्यान दें– सोना, चांदी, रुई एवं अनाजों में मन्दे की चाल बन सकती है। 17 से 25 सितंबर तक बहुत बड़ी तेज़ी की संभावना किसी भी वायदा एवं हाज़र बाज़ार में नहीं बनती।

20. सितंबर को बुध के चित्रा नक्षत्र में आने पर चान्दी, सोना, तिलहन में तेज़ी की प्रतिक्रिया आएगी। चित्रा नक्षत्र का सम्बन्ध विशेषतः सोने से है। क्योंकि, यहां सूर्य के साथ बुध का मेल है, अतः इस समय अनाजों, दालवाना, तेल, तिलहन, गुड़, चीनी आदि एवं सोना–चान्दी में तेज़ी बनेगी।

21 से 22 सितंबर तक बाज़ार अनिश्चित रहेंगे।

23 सितंबर को गुरु पुनर्वसु–2 एवं शुक्र विशाखा में आकर अनाजों में तेज़ी के बाद मन्दी बनाए। चान्दी एवं रुई में भी मन्दे का वातावरण रहे।

25 सितंबर को चित्रा नक्षत्र का बुध तुला राशि में आकर शनि, राहु एवं शुक्र के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना लेगा। यह योग बाज़ारों में फिर से ज़ोरदार तेज़ी बनाएगा। रुई, गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, लौंग, इलायची, मेथे, नमक में तेज़ी का रुख रहे।

26 सितंबर को सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर 15 दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, लकड़ी नमक, हल्दी, हींग, हरड़ एवं

धनिया में तेज़ी करे।

30 सितंबर को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर शनि–राहु के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्र–सम्बन्ध भी बना लेगा। इस समय तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, गुड़, चीनी, लोहा, तांबा आदि एवं शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी की संभावना है।

[नोट– 20 से 30 सितंबर तक हाज़र एवं वायदा बाज़ार तेज़ रहें। शेयर बाज़ारों में भी तेज़ी से लाभ मिले।]

अक्तूबर (सन् 2013 ई.)

मासारम्भ तेज़ी से होगा। 2 अक्तूबर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर गुरु एवं मंगल की दृष्टि से निकल जाएगा। कपास, रुई, गुड़, खाण्ड, तिलहन एवं चान्दी के व्यापार को शुक्र विशेषरूप से प्रभावित करता है। अकेला शुक्र कभी–कभी बाज़ार को ज़ोरदार मन्दी की ओर ले जाता है। अतः बाज़ार के रुख को देखकर ही व्यापार करें। हमारे विचार से यह गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी, अफीम, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ आदि अनाजों में अच्छी घटाबढ़ी करेगा, सावधानी से काम करें।

5 अक्तूबर को शुक्र के अनुराधा नक्षत्र में आने पर गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में मन्दी संभव है। लेकिन 5 अक्तूबर को ही मंगल मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आएगा। समयानुकूल वर्षा आदि के अभाव से उडद, मूंग, मोठ, तिल–तिलहन की फसलों को हानि पहुंचे एवं महंगाई बढ़े। सिंह राशि का मंगल सोना, चान्दी, तांबा, आदि धातु, शस्त्र, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, अलसी, रुई, लालमिर्च, तेल, तिलहन में भी तेज़ी करे–

"सिंह–राशिगतो भौमः काञ्चनं रौप्यं ताम्रकम्।
आरक्तं सर्व-द्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि।।"

6 अक्तूबर रविवार को तुला राशि का चन्द्रदर्शन सोना, चान्दी, ऊन में तेज़ी करेगा एवं रुई में घटाबढ़ी चलेगी।

7 अक्तूबर को स्वाती के चतुर्थ चरण में शनि के प्रविष्ट होने पर बाज़ार जिधर भी चलें, एक–दो दिन बाज़ार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ावें–लम्बी लाईन बन सकती है। शनि का सबसे बड़ा असर तिलहन बाज़ारों पर पड़ता है। क्योंकि, शनि बहुत बड़ा प्रभावी ग्रह है, जो बुध, राहु के साथ है, अतः यह सभी बाज़ारों को प्रभावित करेगा। हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, सभी तिलहन, तेल, घी, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, दही, दूध– ये सब अच्छे तेज़ रहेंगे।

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा एवं 12 अक्तूबर को बुध विशाखा में आकर 15 दिन के लिए रुई, सूत, सोना, चान्दी, गुड, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, लालमिर्च एवं अनाजों में तेज़ी करे।

ध्यान दें– सूर्य का विशेष प्रभाव वायदा बाज़ारों पर पड़ता है। रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सरसों, बिनौला, तिल, सभी तेल, कपास, अनाज, सोना, चान्दी एवं शेयर बाज़ार 10 अक्तूबर से 17 अक्तूबर तक अच्छे तेज़ हो सकते हैं।

[नोट– 1, 7, 10 से 17 अक्तूबर तक वायदा बाज़ार एवं शेयरों में तेज़ी रहे।]

17 अक्तूबर को सूर्यदेव तुला राशि में प्रविष्ट होकर शनि, राहु एवं बुध के साथ मेल करेगा। यह समय ज़ोरदार तेज़ी का समझें। तुला राशि में सूर्य नीच राशि में माना जाता है। सूर्य–शनि पिता एवं पुत्र होने पर भी शत्रुभाव रखते हैं। राहु भी सूर्य का शत्रुग्रह है। गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, लालमिर्च, लालचन्दन, श्रीफल, सुपारी, मजीठ में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। रुई और चान्दी में भी सामान्य तेज़ी रहे।

17 अक्तूबर को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर अनाजों एवं दालवाना में तेज़ी बनाएगा। इस समय यह सरसों, चावल, तिल, तेल, हींग में कुछ मन्दा कर सकता है।

19 अक्तूबर को तुला राशि में शनि अस्त होगा। शनि ग्रह का सीधा प्रभाव कच्ची फसल एवं पैदावार पर होता है। रुई, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, बिनौला,सरसों आदि की फसल शनि के असर से कई बार खराब हो जाती है, जिससे आशा से कम पैदावार होती है। परिणामस्वरूप, बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ते हैं।

इस समय हमारे विचार से अनाज एवं तिलहन बाज़ार तेज़ रहेंगे। रुई, शेयर बाज़ार एवं सोने में मन्दा बने।

20 अक्तूबर को शनि अस्त हो जाता है। इस समय राहु,सूर्य,शनि के साथ तुला राशि में स्थित बुध 21 अक्तूबर को वक्री हो जाता है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेज़ी बनेगी। तेल, तिलहन, गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में कुछ उठापटक संभव है। इस समय संभलकर काम करें, क्योंकि अफवाहों से बाज़ारों में उठापटक बन सकती है। मन्दे में खरीदें और तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।

23 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आएगा। ध्यान दें– इस समय शनि–राहु भी स्वाती नक्षत्र में ही हैं। इस समय कुछ राजनैतिक परिस्थिति के कारण बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी या मन्दी बनेगी। बाज़ार के रुख को देखकर

काम करें। लेकिन हमारी राय के अनुसार इस समय रुई, सूत, ... तुलाराशि में ये तीनों/चारों ग्रह हैं, तुलाराशि

काम करें। लेकिन हमारी राय के अनुसार इस समय रुई, सूत, सण, रेशम, कपास, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, सूरजमुखी, राई, हींग एवं गुग्गुल एवं सभी प्रकार के तेलों में भी तेज़ी रहेगी।

[17, 20, 23 से 25 अक्तूबर तक वायदा एवं शेयर बाज़ार तेज़ रहेंगे।]

26 अक्तूबर को वक्री बुध के अस्त होने पर रुई में झटके के साथ शीघ्र ही मन्दी आएगी। पाट, हैसियन एवं शेयर बाज़ार भी मन्दे रहेंगे। चान्दी कुछ तेज़ रहे।

27 अक्तूबर को मंगल पू. फा. नक्षत्र में आएगा। 20 दिन के अन्दर तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक तेज़ करे।

29 अक्तूबर को वक्री बुध स्वाती नक्षत्र में आएगा। ध्यान दें कि– इस समय सूर्य, शनि, राहु भी स्वाती नक्षत्र में ही हैं। बुध में एक विशेषता यह है कि– यह जब कभी क्रूर ग्रह/ग्रहों के साथ मेल करता है तो क्रूर प्रकृति हो जाता है, एवं जब शुभ ग्रहों से मेल करता है तो शुभ बन जाता है। इस समय एक ही नक्षत्र एवं एक ही राशि में सूर्य, बुध, राहु, शनि एकसाथ हैं, अतः इस समय बुध की तेज़ी की पावर बढ़ गई है। तेल, घी, प्रत्येक तिलहन, रुई एवं अनाजों में ज़ोरदार तेज़ी से लाभ मिलेगा।

30 अक्तूबर को शुक्र धनुराशि में आकर शनि एवं गुरु की नज़र में आ जाता है। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चान्दी, सोना, तांबा एवं शेयर बाज़ारों में तेज़ी बनेगी। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर फिर तेज़ी हो। सोने एवं चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी रहे।

31 अक्तूबर को पुनः बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ने का योग है।

नवम्बर (सन् 2013 ई.)

1 नवंबर को धनत्रयोदशी वाले दिन सोना, चान्दी, तांबा एवं पीतल के व्यापार में लाभ की स्थिति बनेगी।

3 नवंबर को स्वाती के दूसरे चरण में राहु एवं केतु अश्विनी के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। शनि, सूर्य, बुध एवं चन्द्र इस समय तुला राशि एवं स्वाती नक्षत्र में ही हैं। हमारे विचार के अनुसार इस समय 4 नवंबर के बाद 9 नवंबर तक बाज़ार तेज़ रहेंगे। क्योंकि, जब भी शनि–राहु एवं सूर्य (ये तीनों क्रूर ग्रह) एक राशि में आते हैं तो खड़ी फसल एवं पैदावार को खराब कर देते हैं, जिससे तेज़ी का तूफान आता है। तुलाराशि में ये तीनों/चारों ग्रह हैं, तुलाराशि वायुतत्त्व से सम्बन्धित है। कहीं तूफान, सुनामी एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप किंवा राजनैतिक गतिविधि से आने वाले दो मासों में बाज़ार ऊपर–नीचे होंगे। हमारे विचार से रुई, अलसी, एरण्ड, मूंगफली, बिनौला, सूरजमुखी, तोडिया आदि की फसल को हानि पहुंचने से तेल, तिलहन, दालवाना, गेहूं, चावल, बाजरा, सोना, चान्दी, तांबा, रंग तेज़ रहें।

4 नवंबर को चन्द्रदर्शन, 6 नवंबर को विशाखा नक्षत्र में सूर्य का दाखिल होना जौ, चावल, गेहूं, मसूर, बाजरा, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम एवं दालवाना में तेजी करेगा।

ध्यान रहे– शनि–सूर्य दोनों विशाखा में ही हैं। 7 नवंबर को मिथुन राशि में गुरु वक्री होगा। इस समय बाज़ार के रुख को देखकर काम करें। जो वस्तुएं महंगी हैं, वे मन्दे की तरफ बढ़ सकती हैं, जो चीज़ें मन्दी हैं, वे तेज़ी की तरफ बढ़ सकती हैं। इस समय हमारे विचार से गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, अलसी आदि तिलहन एवं घी में मन्दा बने। सोना, चान्दी आदि धातु एवं सूत व ऊन में तेज़ी रहे।

8 नवंबर को बुध के पूर्व में उदय होने पर गेहूं–चना आदि अन्न, तिल, घी, पाट, हैसियन, लालमिर्च तेज़ रहें। रुई, चान्दी में मन्दे का रुख रहे।

[ध्यान दें– बुध के उदय एवं गुरु के वक्री होने पर 8 नवंबर के लगभग बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी या मन्दी का रिएक्शन आएगा– सावधानी से काम करें।]

4 से 9 नवंबर तक शेयर, वायदा एवं हाज़र बाज़ार तेज़ रहेंगे।

10 नवंबर को शनि–सूर्य–राहु के साथ तुला राशि का बुध मार्गी हो रहा है। वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। बाज़ारों का रुख पलट सकता है। इस समय रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी; चांदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। तिलहन, गुड़–शक्कर एवं दालवाना के व्यापारी भी बाज़ार के खिलाफ काम न करें। हमारे विचार से आगामी 8 दिनों में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज़ रहें। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, सूरजमुखी, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ मन्दे हों। लेकिन यहां जो तेज़ी–मन्दी बनेगी, वह टैम्परेरी ही होगी।

13 नवंबर को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आएगा। 13 दिन में मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों एवं नमक तेज़ रहें।

16 नवंबर शनिवार को सूर्य वृश्चिक (मंगल की) राशि में आकर सिंह राशि (सूर्य की राशि) में स्थित मंगल की नज़र में आ जाता है। इस प्रकार सूर्य-मंगल की एक-दूसरे की राशि में स्थिति एक-दूसरे की पोषक है। मंगल भूमि का पुत्र है, कच्ची फसलों का मालिक है। सूर्य फसलों को पकाता है। अतः हमारे विचार से इस समय हरेक वस्तु में ज़ोरदार घटाबढ़ी होगी। किसी में अच्छी तेज़ी और किसी में अच्छी मन्दी आएगी। अतः विशेष सावधानी से काम करें। हमारे विचार से रुई, चान्दी, सोना, तांबा एवं ऊनी वस्त्र तेज़ होंगे। लालरंग की चीज़ों में कुछ मन्दा बने।

10 से 18 नवंबर तक बाज़ारों में ज़ोरदार उथल-पुथल रहेगी। मन्दा प्रभावी रहेगा, यदि ज़ोरदार मन्दा बने तो माल पकड़ें, आगे लाभ होगा।

19 नवंबर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आ जाएगा। अनुराधा नक्षत्र मंगल का नक्षत्र है, मंगल की सूर्य पर दृष्टि भी है। अतः जौ, चना आदि अनाज, ऊन, सोना, चान्दी, तांबा आदि धातु, अलसी, सरसों आदि तिलहन, लालमिर्च में भी तेज़ी रहे।

20 नवंबर को मंगल उ.फा. नक्षत्र में आकर 23 दिनों में गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना-चांदी में तेज़ी करे।

24 नवंबर को शनि उदित होगा एवं इसी दिन बुध विशाखा नक्षत्र में आएगा। रुई, शेयर बाज़ार, तेल, तिलहन एवं अनाजों में मन्दी रहे। सज्जी, लोहा, जस्ता, सीसा, रंग, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड तेज़ हों। ध्यान दें- इस समय रुई में धमाके की मन्दी आ सकती है। सावधानी से काम करें।

26 नवंबर को मंगल कन्या राशि में आकर बाज़ारों में तेज़ी करेगा। रुई और सोने-चान्दी में झटके की तेज़ी बनेगी। कपास, तेल, खाद्य तेल, घी, तिलहन, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, ऊनी-सूती वस्त्र, अलसी, गेहूं एवं अन्य लालरंग की चीज़ें भी अच्छी तेज़ी में रहें।

29 नवंबर को शुक्र उ.षा. में आएगा। इस समय धनु राशि के शुक्र पर शनि-मंगल एवं गुरु की दृष्टि भी है। गेहूं, जौ, चना, बाजरा आदि अनाज, रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेज़ी बनेगी।

[नोट- नवंबर 19 से 23 तक एवं 26 से 30 नवंबर तक गुड़, शक्कर, चना, चावल, गेहूं, बाजरा, जौ, सोना, चान्दी एवं शेयर बाज़ारों में तेज़ी का रुख रहेगा। 24 नवंबर के लगभग शेयरों एवं वायदा बाज़ारों में मन्दे का अनुमान है।]

दिसम्बर (सन् 2013 ई.)

1 दिसंबर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनाएगा। सूर्य के साथ जब एक राशि में बुध होता है तो यह क्रूर होकर तेज़ी करता है। घी, तेल, सरसों आदि तिलहन, अनाज, सोना, चान्दी, शेयर, हल्दी, कालीमिर्च, लौंग एवं अफीम में कुछ तेज़ी रहेगी।

2 दिसंबर सोमवती अमावस वाले दिन सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। सूर्य-बुध एक साथ हैं। सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेज़ी का ही रुख रहे। रुई में यह पहले मन्दी बाद में तेज़ी करे।

3 दिसंबर को शनि विशाखा नक्षत्र के दूसरे चरण में आएगा। इसी दिन बुध अनुराधा नक्षत्र में दाखिल होगा। शनि पर बृहस्पति की दृष्टि है। अतः विशाखा नक्षत्र का शनि भयंकर तेज़ी से निकल जाने का संकेत देता है। धीरे-धीरे बाज़ार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। बाज़ार की चाल को धीरे-धीरे घटते देखकर मन्दे का व्यापार करें। हमारे विचार से रुई, सूत, सण, सोना-चान्दी में मन्दा आकर तेज़ी बनेगी। क्योंकि, शनि ने राहु का साथ नहीं छोड़ा, अतः विशेष मन्दे की उम्मीद अभी न करें। गेहूं, चावल तेज़ रहें।

4 दिसंबर को बुध पूर्व में अस्त होगा एवं इसी दिन बुधवार को चन्द्रदर्शन भी होगा। चान्दी, सोना, सूत, सण, गुड़, शक्कर, खाण्ड मन्दे रहें। रुई में पहले मन्दी, कुछ दिन बाद झटके की तेज़ी आए। अनाज एवं दालवाना में तेज़ी एवं मन्दी के झटके आएंगे।

5 दिसंबर को शुक्र मकर राशि में आकर बृहस्पति की दृष्टि से निकल जाता है। शनि की राशि में शुक्र के आने पर हमें तेज़ी मालूम देती है। अकेला शुक्र कई बार मन्दा करता है, कई बार बाज़ारों को तेज़ी की तरफ ले जाता है। यह शनि की राशि में स्थित होने से रुई, सूत, कपड़ा, कपास, गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना के बाज़ारों में जोश ला देगा। यह यहां शेयर बाज़ार, अफीम, घी, गेहूं, चना आदि में भी तेज़ी करे।

[1 से 4 दिसंबर तक वायदा, हाज़र एवं शेयर बाज़ारों में उठापटक रहे।, मन्दा प्रधान रहे। 5 से 11 दिसंबर तक बाज़ार उठापटक के साथ तेज़ीप्रधान रहें।]

12 दिसंबर को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकराशि एवं एकनक्षत्र-सम्बन्ध 14 दिसंबर तक जारी रखेगा। अफवाहों के साथ वायदा एवं

हाज़र बाज़ारों में तेज़ी ही रखेगा। रुई, कपास, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड एवं चावल में तेज़ी का ही विचार है। चान्दी, सोना में भी तेज़ी रहेगी।

15 दिसंबर रविवार को मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में सूर्य दाखिल होगा। इसी दिन मंगल हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सूर्य पर शनि–मंगल एवं बृहस्पति की नज़र भी है। बड़े ग्रहों की दृष्टि से तेज़ी तो बनेगी, लेकिन उठापटक वाले बाज़ारों में अक्लमन्दी से काम करके ही लाभ मिलेगा। इस समय हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, अलसी, एरण्ड, मूंगफली, सरसों, बिनौला, तोड़िया, तेल, खल, सोना, चान्दी, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजार में अच्छी तेज़ी का योग है, लेकिन बाज़ार के रुख को समझकर ही काम करें। इसी दिन मंगल के हस्त नक्षत्र में आने से दालें, घी, गुड़, खाण्ड एवं नमक में तेजी बनेगी।

20 दिसंबर को बुध भी मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में दाखिल होकर सूर्य के साथ एक राशि एवं एकनक्षत्र–सम्बन्ध बना लेगा, जोकि 27 दिसंबर तक चलेगा। राहुयुत शनि और मंगल एवं मिथुनस्थ गुरु की इन पर दृष्टि भी है। यद्यपि धनु राशि का बुध मन्दीकारक है, फिर भी यहां हमें तेज़ी के झटके मालूम देते हैं। रुई, कपास, वस्त्र, सूत, अनाज, सोना, चान्दी में तेज़ी–मन्दी के झटके आएंगे, लेकिन तेज़ी प्रधान रहेगी।

[12, 15, 18, 20 दिसंबर को वायदा एवं शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी के साथ मन्दी के भी अच्छे झटके आएंगे।]

21 दिसंबर को शुक्र वक्री हो रहा है। इस समय गुरु भी वक्री है। इस समय भारत की राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव भी बाज़ारों पर नज़र आएगा। इस समय गुरु पुनर्वसु नक्षत्र में है, जोकि विपरीत जलवायु के कारण फसलों को हानि पहुंचाता है। यह इस समय मन्दे की लाईन भी बना सकता है। यह घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में तेज़ी करे एवं रुई में पहले तेज़ी होकर बाद में मन्दी करे। फिर भी बाज़ार के रुख को देखकर काम करें।

22 दिसंबर को वक्री गुरु पुनर्वसु 1 में प्रवेश करेगा। 12 दिन में अनाजों में तेज़ी आए। 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, कपूर, ऊनी वस्त्र, सण, चान्दी एवं रुई में तेज़ी रहे।

28 दिसंबर को सूर्य एवं बुध पू.षा. में आएंगे। सूर्य–बुध का एक नक्षत्र एवं एकराशि में चलना एवं इन पर शनि–मंगल एवं गुरु की दृष्टि होना कुछ चीज़ों में विशेष मन्दी एवं कुछ में विशेष तेज़ी का कारण बनेगा। बिनौला, सरसों आदि तिलहन, तेल, गुड़, खाण्ड एवं वायदा बाज़ार तो तेज़ रहें, दालवाना, अनाज एवं सोना–चान्दी में विशेष मन्दी के झटके आने के योग हैं।

[21 से 31 दिसंबर तक बाज़ार अनिश्चित स्थिति में रहेंगे। बाज़ार के रुख को जांचकर ही काम करें। घी, तेल, तिलहन में ज़ोरदार घटाबढ़ी एवं अनाजों में मन्दे का वातावरण रहे। शेयर बाज़ार भी गिरेंगे।]

जनवरी (सन् 2014 ई.)

अंग्रेज़ी नववर्ष की शुभ–कामनाओं के साथ जनवरी मास में तेज़ी–मन्दी का विवेचन आगे प्रस्तुत है–

2 जनवरी गुरुवार, मकर राशिस्थित चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। रुई, सूत, रेशम, ऊनीवस्त्र, सरसों, घी, तेल में तेज़ी रहे। सोना, चान्दी एवं गुड़–खाण्ड मन्दे रहे।

4 जनवरी को राहु स्वाती के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा और साथ ही 5 जनवरी को शनि विशाखा के तीसरे चरण में दाखिल होगा। शनि–राहु तुला राशि में एकसाथ हैं, लेकिन इन पर शुभग्रह गुरु की दृष्टि है। गेहूं, चावल, रुई, चांदी, ऊनीवस्त्र, तिलहन, कालीमिर्च, गुड़, मूंगफली में तेज़ी का योग बनता है। लेकिन गुरु की दृष्टि बाज़ारों को उठने न देगी। सरकार की नीति भी बाज़ारों को मन्दा रखने की ही होगी।

6 जनवरी को बुध एवं वक्री शुक्र उ.षा.–1 धनुराशि में आ रहा है। बुध, शुक्र– दोनों सूर्य के साथ हैं। शनि, मंगल, गुरु की इन पर दृष्टि भी है। गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, चान्दी, सोना, तांबा एवं शेयर बाज़ार में तेज़ी से लाभ मिलेगा। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तिल, अलसी, एरण्ड आदि में कुछ मन्दे के बाद तेज़ी रहे।

8 जनवरी को बुध मकर राशि में आ जाता है। तेल, तिलहन एवं सोने–चान्दी में अफवाहों से मन्दे का वातावरण बन सकता है– सावधानी से काम करें। लेकिन शनि की राशि में बुध अकेला कभी ज़ोरदार मन्दा और कभी तेज़ी बनाएगा। गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, चान्दी, सोना, तांबा, ऊनी–सूती वस्त्र एवं शेयर बाज़ार तेज़ रह सकते हैं। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी, पीछे तेज़ी रहे।

9 जनवरी को वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त हो जाएगा। इस समय अस्त शुक्र पर शनि, मंगल एवं बृहस्पति की दृष्टि है। गुरु शुक्र का शत्रु एवं शनि ग्रह शुक्र का मित्र है। शुक्र ग्रह गुरु के क्षेत्र में अस्त हुआ है। अतः सोना, चान्दी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, सूरजमुखी, तोड़िया आदि तिलहनों में मन्दे का झटका आ सकता है। यह मन्दा

13 जनवरी तक चलेगा।

12 जनवरी, 2014 ई. को वक्री शुक्र पूषा. नक्षत्र में आएगा। इस समय सूर्य के साथ शनि–मंगल से दृष्ट– शुक्र बृहस्पति के नक्षत्र एवं बृहस्पति के क्षेत्र में बृहस्पति की नज़र में भी है। अतः मूंग, मोठ, उड़द एवं बिनौला कुछ तेज़ रहें। घी, तेल, अलसी, एरण्ड, मूंगफली एवं क्षारद्रव्य नमक आदि में मन्दे का रुख रहे। रुई में तेज़ी का वातावरण रहे।

[1 से 13 जनवरी, 2014 ई. तक सोना, चान्दी, तिल, तिलहन, गुड़, शक्कर में ज़ोरदार तेज़ी के बाद मन्दा बनेगा। इस समय शेयर बाज़ारों में भी ज़ोरदार तेज़ी के बाद मन्दा बने।]

14 जनवरी, सन् 2014 ई. को सूर्यदेव मकर राशि में दाखिल होकर बुध के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएंगे। पौष शुक्ल चतुर्दशी को मंगलवारी मकरसंक्रान्ति 15 मुहूर्ती है। बुध के साथ सूर्य का मेल होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, अलसी एवं अन्य तिलहनों में तेज़ी बने। गेहूं आदि अनाज, दालें व बारदाना में मन्दे का रुख रहे। इसी दिन अर्थात् 14 जनवरी, 2014 ई. को ही मंगल चित्रा एवं बुध श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा।

ध्यान दें– 12 दिन में गेहूं, चावल, चना, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, गुड़, खाण्ड, अलसी एवम् दालवाना में तेज़ी से लाभ मिलने का योग है।

15 जनवरी को शुक्र पूर्व में उदित होगा। शुक्र की वर्तमान स्थिति के अनुसार सोना, चान्दी, गुड़, सूत, रुई, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहनों एवं चावलों में तेज़ी का झटका आने का योग है।

16 जनवरी को वक्री गुरु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में आएगा। शुक्र–गुरु दोनों आमने–सामने हैं। दोनों वक्रगति से चल रहे हैं। मंगल, शनि की भी इन पर दृष्टि है। सुगन्धित पदार्थ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन एवं अनाजों में ज़ोरदार मन्दा बन सकता है। सोने–चान्दी में घटाबढ़ी, नमक, करयाणा में पहले तीन मास तेज़ी के बाद मन्दा बने।

14 से 18 जनवरी, सन् 2014 ई. तक शेयर बाज़ार, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावल, तेल, तिलहन में तेज़ी प्रधान रहेगी।

19 जनवरी को पश्चिम दिशा में बुध का उदय ऊन, कपास, रुई एवं शेयरों में 15 दिन में तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। हमारे विचार से रुई, ऊन एवं शेयर बाज़ारों में पहले तेज़ी की सम्भावना है। बाद में मन्दी बन सकती है।

22 जनवरी को बुध घनिष्ठा में आकर चावल, स्वांक में तेज़ी; रुई में घटाबढ़ी; सोने–चान्दी में मन्दा करे।

24 जनवरी को श्रवण नक्षत्र में सूर्य के आने पर दो सप्ताह में गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सोने–चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी एवं लौंग में तेज़ी बनेगी।

26 जनवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर गुरु ग्रह की नज़र में आ जाता है। शुभग्रहदृष्टि होने से अलसी, रुई, चान्दी एवं अनाजों में मन्दी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड में सामान्य तेज़ी आकर मन्दा बन सकता है।

31 जनवरी को शुक्र मार्गी होगा। शुक्र पर गुरु एवं शनि की दृष्टि भी इस समय है। इस समय रुई में मन्दी बने। 5 दिन बाद सोने, चान्दी एवं जवाहरात में तेज़ी बनेगी। चावल आदि अनाजों एवं गुड़, घी के स्टॉक से 4 फरवरी, 2014 ई. के बाद उत्तम लाभ मिलेगा।

[19 से 23 जनवरी तक बाज़ार ऊपर–नीचे रहेंगे। 24 जनवरी के लगभग तेज़ी के अच्छे झटके आकर मासान्त तक बाज़ारों में मन्दी प्रधान रहेगी]

फरवरी (सन् 2014 ई.)

मासारम्भ में 3 फरवरी तक जो भी वस्तु मन्दी हो, तुरन्त स्टॉक करें, आगे उत्तम लाभ की स्थिति बनेगी।

4 फरवरी को मंगल तुला राशि में आकर शनि–राहु के साथ मेल करेगा। यद्यपि इन तीनों ग्रहों पर गुरु की दृष्टि है, फिर भी तीनों ग्रहों का तुला राशि में रहना कुछ चीज़ों में विशेष तेज़ी बनाएगा। गुरु वक्री है। रुई, कपास, तेलवाना, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, सोने, चान्दी आदि सभी बाज़ारों में तेज़ी बनेगी। इस समय ताज़ा मशवरा या हमारी विस्तृत मासिक तेज़ी–मन्दी की **Report** से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

[नोट– 4 फरवरी से 7 फरवरी तक गुड़, चीनी, खाण्ड, घी, सोने–चान्दी में तेज़ी बनेगी, लेकिन शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी या भयंकर मन्दा भी बन सकता है, सावधानी से काम करें।]

6 फरवरी को बुध वक्री हो जाएगा। इस समय घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन में तेज़ी एवम् गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों में भी कुछ तेज़ी बन सकती है। इसी दिन (6 फरवरी को) सूर्य धनिष्ठा में आएगा। इस समय इस पर मंगल की दृष्टि है। दालवाना, मोटे अनाज, गुड़, शक्कर, चान्दी, सोना तेज़ रहें। तेल, तिलहन में भी तेज़ी से लाभ मिले।

8 फरवरी को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा और इस पर गुरु की नज़र भी रहेगी। इस समय 8 से 11 फरवरी तक बाज़ारों का रुख एकदम बदल सकता है, सावधान रहें। रुई में अचानक झटके की मन्दी आ सकती है। इस समय पाट, हैसियन एवं शेयर बाजार भी मन्दे रहें। चान्दी में कुछ तेज़ी का रुख रहे।

12 फरवरी को वक्री बुध धनिष्ठा में आएगा। इसी दिन यानी 12 फरवरी को ही सूर्य कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर वक्री बुध के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध भी बना लेगा। जब भी बुध–सूर्य का इस प्रकार संगम होता है तो बाज़ार अच्छी तेज़ी में चलने लगते हैं। वायदा व्यापारी सावधानी से बाज़ार के रुख को आज़मा कर काम करें। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, राई, बिनौला, एरण्ड, सूरजमुखी, खाद्य तेलों, चावल, स्वांक में अच्छी तेज़ी बनेगी। ऐसा विचार है। सोना, चान्दी, रुई, अनाज, दालवाना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में अच्छी तेज़ी या मन्दी के झटके आ सकते हैं– सावधान रहे।

[12 से 17 फरवरी तक कुछ बाज़ार तेज़ और कुछ बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दे के Reactions आएंगे। शेयर बाज़ारों में तेज़ी प्रधान रहेगी।]

18 फरवरी को वक्री बुध फिर से मकर राशि में आकर मंगल की नज़र में आ जाता है। रुई, सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, दालवाना में तेज़ी का माहौल रहेगा।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा में आएगा। 14 दिनों में सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, बिनौला आदि तिलहन, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ में तेज़ी बनेगी।

21 फरवरी को शुक्र उ.षा. में एवं वक्री गुरु आर्द्रा के तृतीय चरण में प्रवेश करेगा। यहां ध्यान दें कि– शुक्र–गुरु दोनों परस्पर समसप्तकयोग बना रहे हैं। अतः गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी मन्दे रहें। रुई में ज़ोरदार घटाबढ़ी चले। तेल एवं तिलहन में कुछ तेज़ी एवं मन्दे की उठापटक चले।

22 फरवरी को बुध के पूर्व में उदय होने पर रुई में पहले मन्दी होकर फिर झटके की तेज़ी से लाभ मिलेगा। गेहूं, चना, घी, तिल, पाट, हैसियन, लालमिर्च एवं तेल–तिलहन के बाज़ारों में तेज़ी रह सकती है, क्योंकि इस समय मकर–राशि के बुध पर मंगल की खास नज़र है।

26 फरवरी को शुक्र मकर राशि में आकर वक्री बुध के साथ एकराशि-सम्बन्ध बना लेगा। मन्दे या तेज़ी की अफवाहों के साथ मकर राशि में बुध उठापटक करता है। वायदा व्यापारी सावधान रहें। इस समय बुध–शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। अतः हमारा विचार है कि– शेयर बाज़ार, घी, गुड़, खाण्ड, चावल, चना आदि सभी अनाजों एवं तेल, तिलहन में तेज़ी से लाभ मिलेगा। रुई, चान्दी में पहले घटाबढ़ी होकर अन्त में तेज़ी रहेगी।

28 फरवरी को (6 फरवरी से वक्री पोज़ीशन में चल रहा) बुध मार्गी हो जाता है। इस समय बुध–शुक्र दोनों मकर राशि में ही हैं। इन पर शनि–राहुयुत मंगल की दृष्टि भी है। अतः रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी होगी। गेहूं, चावल, जौ, चना, मूंग, मोठ, अरहर, घी, तेल, अलसी, रेशम, गुड़,, बिनौला, एरण्ड, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ तेज़ रहेंगे।

[19, 22 से 28 फरवरी तक तेल, तिलहन, शेयर बाज़ार एवं अनाज ज़ोरदार ऊपर–नीचे चलेंगे।]

मार्च (सन् 2014 ई.)

मार्च मास के प्रारम्भ में ही शनैश्चरी अमावस वाले दिन (1 मार्च को) मंगल वक्रगति से चलने लगता है। इस समय शनि–राहु के साथ मंगल का मिलना कुछ राजनैतिक गतिविधि एव परिवर्तन से व्यापार को प्रभावित करेगा। इस समय मंगल एवं शनि परम मन्दगति में चलेंगे। आगे वर्षा की कमी रहेगी एवं बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ने लगेंगे–

" राहुरंगारकश्चैक–राशि–ऋक्षगतोऽपि वा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते।।"

ध्यान दें– राहु मंगल के साथ वक्री है। राहु–मंगल दोनों चित्रा नक्षत्र में भी हैं। इन पर गुरु की दृष्टि होने पर भी मन्दे का विचार न करें, क्योंकि इस समय गुरु भी वक्री है। मंगल, शनि, राहु–ये तीनों क्रूर ग्रह तुला राशि में ही हैं, अतः चावल, चना, दालें, गेहूं, ज्वार, बाजरा, तेल, घी, सरसों, बिनौला, एरण्ड, मूंगफली, सूरजमुखी आदि तिलहन, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना एवं शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ भी तेज़ रहेंगे। उत्तम लाभ का चांस है।

2 मार्च रविवार को उ.भा. नक्षत्र एवं मीनस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। यह स्थिति कुछ मन्दे की तरफ इशारा करती है, लेकिन इसी दिन अर्थात् 2 मार्च को ही तुला राशि में वक्री मंगल एवं वक्री राहु के साथ शनि भी वक्रगति से चलने लगता है। इस प्रकार महाक्रूर तीन ग्रहों के एकराशि में वक्री होने पर हमें वायदा एवं शेयर बाज़ारों में इस समय तूफानी तेज़ी मालूम देती है, फिर भी राजनैतिक उलट–फेर के योग भी इस समय बन रहे हैं, अतः कहीं वायदा बाज़ार उलटे न पड़ जाएं, सावधानी से काम करें–

" वक्रे क्रूरत्रये पीड़ा छत्रभंगस्य कारणम्।"

हमारे मुताबिक सिक्का, कली , पीतल, ज्वार, चावल, उड़द, मूंग, मोठ, चना, गेहूं, बाजरा, घी, तेल, अलसी, सरसों, तोड़िया, तिल, तम्बाखू, लोहा, सोना, चान्दी, सीमेण्ट, गुग्गुल एवं रुई में तेज़ी सम्भव है।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आ जाता है। इस समय सूर्य पर वक्री गुरु की दृष्टि भी है। सूर्य शनि के क्षेत्र में है। अतः कुछ ही दिनों में रेशम, सूत, ऊन, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, उड़द, ग्वार, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल रुई, दालों एवं तिलहनों में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

6 मार्च को गुरु मार्गी हो रहा है। क्योंकि, गुरु की दृष्टि शनि, राहु, मंगल पर है, अतः बाज़ारों का रुख अचानक बदल सकता है– सावधानी से काम करें। रुई एवं चान्दी में गिरावट आएगी। 8 दिन में चावल, अलसी, सरसों एवं गुड़ में तेज़ी बने।

8 मार्च को राहु चित्रा–4 एवं केतु अश्विनी- 2 में आ जाता है। राहु–मंगल–शनि एकसाथ वक्री पोज़ीशन में हैं। राहु एवं मंगल– दोनों एक नक्षत्र में भी हैं। अतः यह चांस भी तेज़ी का ही है। गुड़, खाण्ड, घी, खाद्यतेल, सरसों, बिनौला, एरण्ड, सूरजमुखी, तोड़िया, मूंगफली, दालें, चना आदि अनाज, लाख, कांसी, सोने–चान्दी में भी तेज़ी के आसार रहें।

10 मार्च को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आता है। इस समय शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। तेल, तिलहन, चान्दी एवं रुई में मन्दी के बाद तुरन्त तेज़ी बनेगी। सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, अलसी, गेहूं, चना, दालें भी तेज़ रहें।

[1 से 10 मार्च तक बाज़ारों में भयंकर तेज़ी की सम्भावना है। यदि कदाचित् मन्दे का झटका भी आए तो ठहरेगा नहीं, तेज़ी के वायदा व्यापारी 10/11 मार्च तक लाभ में रहेंगे। शेयर बाज़ार भी तेज़ी प्रधान रहेंगे।]

12 मार्च को बुध कुम्भराशि में आकर संवत् के अन्त तक कुम्भ राशि में ही रहेगा। इस समय इस पर गुरु की शुभ दृष्टि भी रहेगी। अतः इस समय सामान्यतया बाज़ारों में मन्दा आ सकता है। अलसी, रुई, चान्दी, सोना, मूंग, मोठ, उड़द आदि अनाजों में घटाबढ़ी रहे। घी, तेल, गुड़, खाण्ड में कुछ तेज़ी रहे।

14 मार्च शुक्रवार को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेगा। गुरु की राशि में सूर्य मन्दी करता है, लेकिन इस समय प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेज़ी, बाद में मन्दी बन सकती है। गोचर ग्रहगति के अनुसार हमारे विचार से तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई एवं सोना में सामान्यतया तेज़ी–मन्दी के Reactions आकर तेज़ी रहे। 16 मार्च रविवार को होलिकादहन होने से तेज़ी का संकेत मिलता है।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। इसी दिन बुध शतभिषा में आ रहा है। चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल, तिलहन तेज़ रहें। सोने–चान्दी में कुछ मन्दा आकर तेज़ी रहे। अनाजों में भी कुछ तेज़ी ही रहे।

19 मार्च को गुरु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में आएगा। 25 दिनों में सुगन्धित पदार्थ, गुड़, शक्कर, गेहूं मन्दे हों।

24 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आकर मंगल की विशेष नज़र में आएगा। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चीनी, चान्दी, सोना, रुई एवं कपास में तेज़ी रहे। गेहूं कुछ मन्दी रहे।

[14 से 24 मार्च तक वायदा बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दी एवं तेज़ी की प्रतिक्रिया रहेगी। इस समय मन्दी प्रधान रह सकती है। वायदा बाज़ार भी ज़ोरदार उछल कर नीचे आ सकते हैं।]

25 मार्च को मंगल वक्री पोज़ीशन में वक्री शनि–राहु को छोड़कर फिर से कन्या राशि में आ जाएगा। इस समय इस पर सूर्य की नज़र भी है। सूर्य व मंगल का समसप्तक तेज़ी करेगा। इस समय रुई और चान्दी में झटके के साथ ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। तांबा, सोना, ऊनी एवं सूती कपड़े, अलसी, गेहूं, गुड़, खाण्ड, चीनी, शक्कर, सरसों, सभी तिलहन, खाद्य तेल, दालों एवं लाल रंग की चीज़ों में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

[25 मार्च सन् 2014 से मार्च के अन्त तक तेल, तिलहन, सोना, चान्दी, तांबा, घी, दालवाना एवं शेयरों में तेज़ी के व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

विशेष सूक्ष्म विचार एवं प्रतिमास विस्तृत दैनिक तेज़ी–मन्दी जानने के लिए फोन नंबर 0160–2641277 पर सम्पर्क करें।]

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी– मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है तो हम उत्तरदायी न होंगे। वैसे, हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि– आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियो के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है–*"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2013 ई. से 30 मार्च, सन् 2014 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रो के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल
(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् 2013 ई.			
19 जन.	21 22	20 जन.	9 22
18 फर.	11 32	18 फर.	23 32
20 मार्च	10 32	20 मार्च	22 32
19 अप्रै.	21 34	20 अप्रै.	09 34
20 मई	20 38	21 मई	08 38
21 जून	04 34	21 जून	16 34
22 जुला.	15 25	23 जुला.	03 25
22 अग.	22 32	23 अग.	10 32
22 सितं.	20 15	23 सितं.	08 15
23 अक्तू.	05 39	23 अक्तू.	17 39
22 नवं.	03 19	22 नवं.	15 19
21 दिसं.	16 40	22 दिसं	4 40
सन् 2014 ई.			
20 जन.	03 22	20 जन.	15 22
18 फर.	17 30	19 फर.	05 30
20 मार्च	16 26	21 मार्च	04 26

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल
(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् 2013 ई.			
21 जन.	14 44	22 जन.	06 58
03 फर.	11 45	03 फर.	19 20
15 फर.	08 37	15 फर.	15 15
28 फर.	14 21	28 फर.	19 39
12 मार्च	12 30	12 मार्च	17 45
25 मार्च	19 59	26 मार्च	01 06
06 अप्रै.	16 12	06 अप्रै.	21 31
19 अप्रै.	21 50	20 अप्रै.	04 24
01 मई	15 53	01 मई	23 04
14 मई	6 22	14 मई	20 31
20 जुला.	10 22	20 जुला.	13 30
31 जुला.	07 48	31 जुला.	20 30
13 अग.	13 14	13 अग.	20 29
25 अग.	05 14	25 अग.	11 28
07 सितं.	14 26	07 सितं.	19 59
02 अक्तू.	16 17	02 अक्तू.	21 53
14 अक्तू.	15 55	14 अक्तू.	21 27
27 अक्तू.	11 55	27 अक्तू.	19 29
08 नवं.	10 32	08 नवं.	19 32
सन् 2014 ई.			
26 जन.	12 33	27 जन.	05 02
06 फर.	17 34	07 फर.	02 31
20 फर.	02 40	20 फर.	09 18
03 मार्च	17 42	03 मार्च	23 07
29 मार्च	00 34	29 मार्च	05 38

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ– समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

सूर्य–चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ 24 देखिए।

वारुणी पर्व (सन् 2013 ई.)
(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
7 अप्रैल	15 24	7 अप्रैल	सूर्यास्त
(सन् 2014 ई.)			
28 मार्च	7 52	28 मार्च	सूर्यास्त
महोदययोग (सन् 2013 ई.)			
9 फरवरी	15 19	9 फरवरी	सूर्यास्त
गजच्छाया योग (सन् 2013 ई.)			
4 अक्तू.	15 51	4 अक्तू.	सूर्यास्त

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन-संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़-निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा 'यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के लिए साधनाकाल' की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल-प्रच्छन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(1) वाक्सिद्धि के लिए मन्त्र-प्रयोग

मन्त्र–" ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्त-प्रकाशिनि एह्येहि त्वर-त्वर वरं देहि लिहि-लिहि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि-ब्रूहि स्वाहा।"

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सिद्ध करें एवम् खीर-खाण्ड भोजन कन्याओं को कराकर भूमिशयन करें। प्रतिदिन प्रातः मन्त्रजाप करते रहें। जो उच्चारण करोगे, सत्य ही सिद्ध होगा- अनुभव करें।

(2) धन-धान्यसमृद्धि एवम् प्रगतिलाभार्थ लक्ष्मी-मन्त्रप्रयोग

मन्त्र– "ॐ क्लीं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् क्लीम् ॐ।।"

विधि– आगे अंकित पंचदशी यन्त्र को शुद्ध केसर, अष्टगन्ध आदि से भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप करके कन्या एवं बटुक (छोटे बच्चे) को मीठा देकर उपरोक्त सिद्ध मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने कैश-बॉक्स या गल्ले में सिन्दूर एवम् लाल फूलों से सुसज्जित करके स्थापित करें। आप अनुभव करेंगे कि– कारोबार में वृद्धि एवम् धनधान्यसमृद्धि की ओर आप बढ़ रहे हैं। अपनी आय में से दशांश भाग या बीसवां अंश लक्ष्मी माता या अपनी कुलदेवी (कुलमाता) के निमित्त अवश्य निकाला करें। **ध्यान दें–** प्रतिदिन यन्त्र को धूप दें एवम् कमल पर स्थित लक्ष्मी का ध्यान भी प्रतिदिन करते रहें।

पंचदशी यन्त्र		
६	१	८
७	५	३
२	९	४

(3) आरोग्य-सौभाग्यलाभार्थ, मुकद्दमें में विजयलाभ एवम् शत्रुओं को हतप्रभ करने के लिए दुर्गामन्त्र

मन्त्र–" ॐ क्लीम् देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि क्लीम् ॐ।।"

विधि– शुक्लपक्ष की अष्टमी वाले दिन प्रातः शुद्धासन पर बैठ कर

भगवती माता का ध्यान करके **'शत्रुकृत नेष्टफल–शान्त्यर्थ'** किंवा **'अभियोग–विजयार्थ'** संकल्पपूर्वक उल्लिखित मन्त्र का जाप करें। छोटी इलायची एवम् मिसरी एक बर्तन में सामने रख लें। इस उल्लिखित मन्त्र की दो माला प्रतिदिन जाप करें। मन्त्रजाप के बाद इलायची–मिसरी में हाथ चला दें। जब कठिन परिस्थिति बने एक इलायची एवम् थोड़ी मिसरी अपने मुंह में डालें। कोर्ट, कचहरी में फतह होगी, शत्रु कमज़ोर हो जाएंगे।

(4) क्या आप कर्ज (ऋण) से परेशान हैं ?

(ऋणमुक्ति के लिए निम्नांकित भैरव–मन्त्र का अनुष्ठान)

मन्त्र– " ॐ ऐं क्लीम् ह्रीम् भम् भैरवाय मम ऋणविमोचनाय मह्यं महाधनप्रदाय क्लीम् स्वाहा।''

विधि– रविवार को शुक्लपक्ष में पुष्य या हस्त नक्षत्र हो तो उस दिन संकल्पपूर्वक उल्लिखित मन्त्र का जाप प्रारम्भ करके प्रतिदिन बारह माला 21 दिन तक लगातार करें। रविवार एवं मंगलवार को कन्याओं एवं छोटे बच्चों को मीठा भोजन दें। शीघ्र ही कर्जे से मुक्ति मिलेगी एवं कारोबार में प्रगति भी होगी।

(5) ऋणनिवृत्ति व धन–प्राप्त्यर्थ विशेष मंत्र

मन्त्र– " ॐ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रियः पतिः श्रीः परमः श्रीः निकेतनः श्रीधराय नमःॐ। "

विधान– शुक्लपक्ष के पुष्यनक्षत्र में उपरोक्त मन्त्र की 108 माला जाप करके मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर प्रतिदिन एक माला जाप करता रहे। निश्चितरूप से कर्जा दूर होकर परिवार में धनधान्य–समृद्धि आती है। यह सिद्धमन्त्र अग्निपुराण में मिलता है।

(6) दुकान में बिक्री बढ़ाने के लिए अनुभूत प्रयोग

**मन्त्र–"भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहाकर मेरा।
उठै जो डंडी बिकै जो माल, भंवरवीर सोखे नहीं जाए।।"**

विधि– इस मन्त्र को दीवाली की रात को पढ़कर सिद्ध कर लें, फिर आवश्यकता पड़ने पर रविवार के दिन काले उड़द लेकर 21 बार इन उड़दों पर इस मन्त्र को पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें एवम् दुकान में इधर–उधर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए डाल दें। तीन रविवारों में ही बिक्री चौगुणी हो जाएगी।

(7) अभीष्टफल प्राप्त्यर्थ अद्भुत मन्त्रप्रयोग

निम्नलिखित मन्त्र को नवरात्रों में जपने से अभीप्सित फल की प्राप्ति होती है। सपादलक्ष संख्या में जपकर दशमी के दिन क्षीरहवन करना चाहिए। भगवती जगदम्बा को मन्त्रपाठ करते हुए सर्वदा अपने अन्तस्तल में विराजमान रखें। आप अवश्य अपने अभीष्ट कार्य में सफलता की ओर अग्रेसर होंगे।

**मन्त्र :– ''ॐ नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते शंकरप्रिये ॐ।।''**

(8) रूठा/घर से भागा व्यक्ति शीघ्र घर वापिस आए

(i) सम्मुख दिए पंचदशी यन्त्र को शुद्ध केसर, अष्टगन्ध आदि से अनार की कलम के साथ भोजपत्र पर लिखकर **आगे दिए गए मन्त्र का जाप करके अभिमन्त्रित करें।** धूप–दीप आदि से इस यन्त्र की पूजा कर के भगौड़े व्यक्ति का नाम यन्त्र के नीचे लिखकर, घर से भागे हुए व्यक्ति के वस्त्र के साथ वज़न देकर सुरक्षित, शुद्ध स्थान पर रख दें। 21 दिन तक इस यन्त्र को दबाव के नीचे रखें। वस्त्र एवम् यन्त्र हिलने नहीं चाहिएं। प्रतिदिन धूप–दीप करते रहें। घर से भागा हुआ व्यक्ति यदि जीवित है तो शीघ्र ही घर वापिस आ जाएगा। अगर व्यक्ति बन्धन में हो तो पता चल जाता है– यह अनुभूत है।

पंचदशी यन्त्र		
६	१	८
७	५	३
२	९	४
रूठे या घर से भागे व्यक्ति का नाम		

मन्त्र–'' ॐ क्लीम् ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति क्लीम् ॐ।।''

(ii) काले धतूरे के पत्तों के रस एवं गोरोचन के साथ कनेर की कलम से भोजपत्र पर पीछे दिया गया **'पंचदशी यन्त्र'** लिखें। यन्त्र के नीचे रूठे किंवा घर से भागे हुए व्यक्ति का नाम लिखें। इस यन्त्र को खदिर (खैर) की लकड़ी की अग्नि में तपाएं (जलाएं नहीं)। व्यक्ति जल्दी ही वापिस आएगा। यह अनुभूत प्रयोग है। व्यक्ति के वापिस आ जाने पर यन्त्र की पूजा करके शुद्ध जल में प्रवाहित कर दें।

(9) वशीकरणार्थ एक सरल मन्त्र

आजकल के युग में परिवार बिखरते जा रहे हैं। बच्चे नशे में या कुसंग में पड़कर माता–पिता का जीना दूभर कर रहे हैं; आज्ञा का पालन न करके निठल्ले बैठे अपना एवम् माता–पिता का जीवन नीरस बना देते हैं। एतदर्थ यह सरल संक्षिप्त वशीकरण मन्त्र रामबाण सिद्ध हुआ है–

मन्त्र–''ॐ क्लीम् क्लीम् 'अमुकं' मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।''

मन्त्र में **'अमुक'** के स्थान पर जिसे कंट्रोल में लाना है, उसके नाम का उच्चारण करें। इस मन्त्र को दीपावली या शुभ मुहूर्त में सिद्ध करें। मन्त्रजाप के समय लौंग, इलायची, मिसरी को एक बर्तन में रखकर मन्त्रोच्चारण द्वारा अभिमन्त्रित करते रहें। ये तीनों चीज़ें वश्यंकर व्यक्ति को प्रतिदिन चाय में या भोग के तौर पर खिलाते रहें, व्यक्ति आपकी आज्ञा का पालन करने लगेगा।

(10) पति–वशीकरणार्थ मन्त्र

(परगामी पति के वशीकरणार्थ मन्त्रप्रयोग)

मन्त्र–'' ॐ ह्रीम् नमो मोहिन्यै (अमुकं) मे वश्यं कुरु–कुरु हुं फट् स्वाहा'' ।

मन्त्र में **'अमुकं'** शब्द की जगह व्यक्ति (पति) का नाम लेकर मन्त्रजाप करें।

विधि–उल्लिखित मन्त्र से जल को 21 बार अभिमन्त्रित करें; फिर वश्यंकर व्यक्ति (पत्नी) पति के सामने उस जल से मुंह धोकर जाएं अथवा उससे बात करें। 7 दिन के प्रयोग से व्यक्ति का वशीकरण हो जाएगा। इस बारे शास्त्रों में लिखा है–

''वशे भवन्ति सर्वे तु सप्तभिर्क्षालिते मुखे।
सर्वेषु वश्यमन्त्रेषु मन्त्रमेतदनुत्तमं मतम्।।''

(11) घोररूपिणी–मन्त्रप्रयोग

मन्त्र :– '' ॐ नमः कट–विकट घोररूपिणि स्वाहा।''

विधि :– इस मन्त्र को शुभ मुहूर्त में पहले सिद्ध कर लें। फिर भोज्य पदार्थ को इसी मन्त्र द्वारा सात बार अभिमन्त्रित करके, जिसका नामलेकर ७ दिन तक खाएंगे, वह निश्चय ही वश में हो जाता है।

(12) वश्यमुखी–मन्त्रप्रयोग

मन्त्र– ''ॐ वश्यमुखि राजमुखि स्वाहा। ''

विधि :–दाएं हाथ में तेल लेकर, अनामिका अंगुली से तीन बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, फिर तीन बार उल्लिखित मूलमन्त्र को पढ़कर, मुख पर एवम् सिर पर तेल मले। राजा, जज एवम् विरोधी भी वश में आ जाते हैं।

(13) कुछ अनुभूत तन्त्रप्रयोग

(i) **वशीकरण तन्त्र–** छायाशुष्क (छाया में सूखे हुए) बिल्वपत्र व फल को कपिला (पूर्णरूप से काली) गाय के दूध में रगड़कर गोली बना लें। राजदरबार या जिसे वश में करना हो, उसका नाम लेकर **'' ॐ क्लीं क्लीं 'अमुकं' मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।''**–इस मन्त्र का जाप करते हुए उस गोली को चन्दन की तरह घिसकर तिलक लगाकर सामने

जाएं। जज या व्यक्ति आपकी तरफ झुक जाएगा। मन्त्र में 'अमुकं' की जगह वश्यंकर व्यक्ति का नाम बोलें।

(ii) सभी प्रकार के कार्यों में सफलता हेतु दुर्गाहवन–विभूतिप्रयोग– ' दुर्गासप्तशती 'किंवा दुर्गासप्तशती के किसी मन्त्रविशेष से जब भी (अनुष्ठान के बाद) हवन करें तो हवन की कुछ शुद्ध विभूति शुद्ध स्वच्छ पात्र में सुरक्षित रख लें। इष्टकार्य–सिद्धि हेतु इस विभूति को **"ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।"**–इस मन्त्र के साथ पुनः अभिमन्त्रित करके रोग, कष्ट, प्रेतबाधा आदि शान्त्यर्थ कागज़ में रखकर व्यक्ति विशेष के कार्यसिद्ध्यर्थ भगवती जगदम्बा के सामने रख दें। प्रार्थनापूर्वक विभूति देने पर निश्चित कार्य सिद्ध हो जाता है– अनुभूत है। यदि किसी विद्यार्थी का मन पढ़ाई में न लगे तो सरस्वती के मूल मन्त्र से इस विभूति को अभिमन्त्रित करके प्रतिदिन मामूली मात्रा जल में पिला दें, विवेक जागृत होगा, पढ़ाई में रुचि बढ़ेगी।

(iii) सन्तानतन्त्र– जिस स्त्री के गर्भ न होता हो या गर्भक्षय होता रहा हो, उसके लिए यह तन्त्र रामबाण है–

अजवायन 1 ग्राम, 40 दानों के लगभग शिवलिंगी–बीज(साबुत) कवोष्ण (सामान्यतःगर्म) गाय के दूध के साथ **रात को सोते समय** (शिवलिंगी के बीजों को बिना चबाए ही) निगल लें। गाय गर्भिणी (नए दूध) हो तो उसका दूध उत्तम रहेगा।

मासिक–धर्म के बाद प्रतिदिन 5 दिन उल्लिखित प्रयोग **सायंकाल** करें। दो या तीन मासिकधर्म के बाद इस प्रयोग से निश्चित गर्भ ठहरेगा। तत्पश्चात् **सन्तानगोपालयन्त्र** एवम् **गर्भरक्षायन्त्र** धारण कराएं।

(iv) सम्मोहनार्थ तन्त्र–

(क)– **"बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च।**
अजाक्षीरेण सम्पिष्टा तिलकं मोहयेत् जनम्।।"

अर्थात्– बिलपत्र एवं बिजोरा नींबू के पत्रों को बकरी के दूध में पीसकर तिलक धारण करें। इच्छितजन सम्मोहित होगा।

(ख)– **'श्वेतार्क–मूलमादाय श्वेत–चन्दनसंयुतम्।**
अनेन तिलकं भाले मोहनं सर्वतो जगत्।।"

अर्थात्– सफेद आक की जड़ एवम् सफेद चन्दन को घिसकरतिलक करने से सम्पूर्ण व्यक्ति सम्मोहित हो जाते हैं।

(14) राजदरबार में विजयार्थ कुछ तन्त्रप्रयोग

(i) तुलसी के बीज सहदेव (दण्डोत्पला) के रस के साथ पीसकर इतवार को तिलक करें, सारे व्यक्ति अनुकूल वातावरण वाले रहेंगे–

'' तुलसी– बीज– चूर्णस्य सहदेव– रसैः सह।
तिलकं यो रवौ कुर्यात् स जगन्मोहकृद् भवेत्।।''

(ii) हरिताल (हड़ताल), असगन्धा को केले के रस में पीसकर गोरोचन के साथ मिलाकर तिलक करके कोर्ट–कचहरी जाएं। सभी वशंवद हो जाएंगे–

''हरितालाश्वगन्धा तु कदली रसपेषिता।
गोरोचनयुतस्तस्य तिलको राजमोहनः।।''

(15) कुछ लाभप्रद टोटके

(i) सिरदर्द नाशक औषध–सफेद फारमी गेहूं $1\frac{1}{2}$ तोला साफ करके रात को पानी में भिगो दें। प्रातः गेहूं को निथार (जल से छान कर निकाल) कर $1\frac{1}{2}$ तोला पोस्त के दाने मिलाकर खूब अच्छी तरह बारीक पीस लें। यह लुगदी बन जाएगी। इसमें इच्छानुसार गाय का असली (शुद्ध) घी एवं मिश्री मिलाकर हलवा बना लें। प्रातः थोड़ी मात्रा में कुछ दिन सेवन करें। पुराने से पुराने सिरदर्द से मुक्ति मिल जाएगी।

(ii) पेटदर्द/उदरशूल की औषध– सफेद कच्ची फिटकरी 2 माशा अच्छी तरह से पीस लें। इसमें 2 माशा असली शहद मिलाकर रोगी को चटा दें। पेटदर्द किंवा उदरशूल तुरन्त शान्त होगा– यह चामत्कारिक टोटका है।

(iii) पिशाचग्रस्त व्यक्ति को राहत मिले

काले धतूरे को रविवार के दिन सफेद सूत से ३ गाठें लगाकर दाईं बाजू पर बांधें। डाकिनी, पिशाचिनी आदि से ग्रस्त व्यक्ति को राहत मिलेगी।

(iv) मिरगीरोग–शान्त्यर्थ

ब्रह्मबूटी की जड़ को उखाड़कर, काले सूत की गांठ लगाकर, रोगी के गले में पहिना दें। असाध्य मिरगीरोग से मुक्ति मिलेगी।

(v) बवासीर से मुक्ति हेतु

काले धतूरे की जड़ को काले डोरे से कमर में बांध दें। पुरानी से पुरानी बवासीर ठीक हो जाएगी।

(16) अभीष्ट फलप्रद कुछ यन्त्रप्रयोग

(i) सर्वसिद्धिप्रद हनुमान् यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से सवालाख बार लिखकर रखें।

"ॐ आंजनेयाय नमः"–इस मन्त्र से पूजन करता रहे। यह यन्त्र 'सर्वकार्य सिद्धिकारक" है। इस यन्त्र का धूप, दीप करके नैवेद्यसहित पूजन करें। चांदी या तांबे में मढ़ाकर इसे लाल धागे से गले में डालें या दाईं भुजा में बांधें– सब काम जल्द ही सफल होंगे।

श्री हनुमान् यन्त्र			
नं.	छं.	जं.	चं.
दं.	दं.	चं.	चं.
जं.	छं.	जं.	वं.
छं.	नं.	जं.	हं.

(ii) बुरे स्वप्नों से मुक्ति मिले

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूप दें और कण्ठ में धारण करें। बुरे स्वप्न से मुक्ति मिलेगी।

दुःस्वप्ननाशक यन्त्र			
गं.	छं.	जं.	चं.
छं.	नं.	जं.	ठं.
ठं.	जं.	ठं.	चं.
नं.	छं.	जं.	टं.

(iii) वाक्सिद्धि यन्त्र

इस वाक्सिद्धि यन्त्र को कुलिंजन से भोजपत्र पर लिखकर चांदी में मढ़ाकर कण्ठ में धारण करें। जो भी उच्चारण करेंगे, सत्य सिद्ध होगा।

वाक्सिद्धि यन्त्र			
६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

(iv) इच्छा–प्राप्तिकर यन्त्र

इस यन्त्र को चन्दन से बिल्ववृक्ष के पत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास में हररोज़ ३० दिन तक शिवलिंग पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाएं। भगवान् श्रीशंकर के प्रसाद से सारी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

इच्छा–प्राप्तिकर यन्त्र			
वं.	वं.	वं.	वं.
पं.	पं.	पं.	पं.
दं.	दं.	दं.	दं.
लं.	लं.	लं.	लं.

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे;

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**—अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें — वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो— इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

दो०— मीन-मिथुन-सिंह-तुला-मेष होय तत्काल।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्यां शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भावे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि– पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर ले, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दोः– "धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वावीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तराद्धे) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन मृगृ मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्क षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय।।४।। जन्मलग्न है शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो0– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– झे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नवगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोडी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोडी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्में तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोडकर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता या कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशनेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम्	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो.	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरु की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थान	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल				
समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु 1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन 2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज 3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् 4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत 5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु 6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री 7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु 8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म 9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म 10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ 11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय 12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु 1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन 2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज 3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् 4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत 5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु 6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति 7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु 8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म 9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म 10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ 11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय 12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपाद जो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राझया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफ़ेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूडे, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्‌भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्त्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष..........." इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायय़ेति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोघर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोररराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करें। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गऐ ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व भृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रुरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहने, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उडद तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगडे में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवडी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वोषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :–.......राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य- उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोधृत, सफेद चन्दन।

शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है। गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र → चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशि →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र → चरण ↓	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चादभवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो माषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तायेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने धूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्मूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये धफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2070 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (13 अप्रैल से 13 मई, सन् 2013 ई.)

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– सूर्य–मंगल–शुक्र–केतु का शनि–राहु के साथ समसप्तक योग पाक, इरान, अफगानिस्तान आदि राष्ट्रों के लिए भयावह स्थिति बनाएगा। द्वितीय भाव में उच्चस्थ चन्द्र के साथ बृहस्पति का मेल आर्थिक स्थिति के लिए सुधारात्मक संकेत देता है। गुड़, घी, तेलों में भारी महंगाई बनेगी।

वैशाखसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

2 गु. चं.
12 बु.
3
सू. मं.1 शु. के.
11
4
10
5
7 श. रा.
9
6
8

मेषसंक्रान्ति प्रवेशकाल =13 अप्रैल, 2013 ई.; 25 घं. 28 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मंगल–सूर्य–शुक्र एवं केतु का उच्च शनि एवं राहु के साथ समसप्तक शारीरिक एवं मानसिक परेशानी देने वाला है। यद्यपि आर्थिक स्थिति कुछ ठीक रहेगी, लेकिन विरोधीपक्ष प्रबल रहेगा। मित्र–बन्धु से मदद मिलेगी। स्थायी सम्पत्ति–सम्बन्धी विवाद एवं गुप्तशत्रु से सावधान रहें। **अप्रैल** 18, 19, 20, 27, 28, 29; मई 5, 6, 7 अशुभ हैं।

वृष– लग्नस्थ गुरु–चन्द्र शुभ–समाचार एवं मानसिक शान्ति के प्रतीक हैं। छठे भाव में शनि–राहु शत्रु किंवा विरोधीपक्ष को कमजोर करेंगे। राजकार्यों में विजय, स्त्रीसुख रहे। मासान्त में कारोबार मे कमज़ोरी से मन चिन्तित रहे। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय शुभ है। अप्रैल 20, 21, 22, 29, 30; मई 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

मिथुन– लग्नेश बुध नीच है। अतः सेहत का विशेष ध्यान रखें। धनेश चन्द्र उच्च एवं गुरुयुत होने से आर्थिक–सुधार होंगे। कारोबार में कुछ परिवर्तन के साथ लाभप्रद स्थिति बनेगी। मित्र–बन्धु वर्ग का सहयोग बनेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए किंवा सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। आय से व्यय अधिक हो। **अप्रैल** 13, 14, 15, 23, 24, 25, मई 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक रहे। धनेश सूर्य उच्चस्थ होने पर भी शनि–राहु की स्थिति आर्थिक संकट को बनाए रखेगी। वृथा उलझनों एवं वृथा व्यय से बचें। निजीलोगों से अनबन रहे। कारोबार ठीक रहे, लेकिन आर्थिक हानि के लिए निजीलोग जिम्मेदार होंगे। यात्रा में कष्ट संभव है। **अप्रैल** 15, 16, 17, 18, 25, 26, 27; मई 3, 4, 5, 13 अशुभ।

सिंह– रक्तपित्तविकार से परेशानी हो। निजीलोगों से परेशानी बढ़े। कारोबार में प्रगति एवं नई योजनाएं सफल हों। स्थायी–सम्पत्ति–लाभ हो। सन्तानपक्ष से शुभ समाचार मिले। शनि–मंगल का दान करना लाभप्रद रहे। **अप्रैल** 18, 19, 20, 27, 28, 29; मई 5, 6, 7 अशुभ।

कन्या– शुभ–समाचार मिले, सेहत ठीक एवं आर्थिक लाभ होकर हानि के योग हैं। शुभकार्यार्थ विशेष खर्च हो। कारोबार ठीक रहे। सम्पत्ति–सम्बन्धी विवाद हल हों। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। विद्यार्थियों के लिए समय चिन्ताकारक है। **अप्रैल** 20, 21, 22, 29, 30; मई 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

तुला– लग्न में शनि–राहु का मंगल–केतु के साथ समसप्तक शारीरिक एवं मानसिक उलझनें पैदा करेगा। गुप्त–शत्रु से सावधान रहें। स्त्रीपक्ष से लाभ की स्थिति बने। कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ रहे। चोट वा वाहन से सावधान रहें। अप्रैल 13, 14, 15, 23, 24, 25; मई 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक– शुभ–समाचार मिले एवं सेहत ठीक रहे। आर्थिक लाभ हो, उलझे हुए मसले हल हों। सन्तानपक्ष से कुछ परेशानी बने, मित्र व स्त्रीपक्ष से मदद मिले। कारोबार में कुछ उलझनें पेश आएं। अप्रैल 15, 16, 17, 18, 25, 26, 27, मई 3, 4, 5, 13 अशुभ।

धनु– कफ–पित्त–विकार से सेहत गड़बड़ रहे। धनेश शनि राहु के साथ होने से धनलाभ होकर भी वृथाव्यय हो। निजीलोगों से मन–मुटाव रहे। सन्तानहेतु विशेष खर्च हो, गुप्तशत्रु से सावधान रहें। कारोबार की नई योजना बने। अप्रैल 18, 19, 20, 27, 28, 29; मई 5, 6, 7 अशुभ हैं।

मकर– लग्नेश शनि की मंगल पर दृष्टि वृथा विवादों में उलझाने वाली

है। जमीन–जायदाद सम्बन्धी कार्य सिरे चढ़ें। सन्तानपक्ष से शुभ–समाचार मिले। मित्र–बन्धु मिलाप हो। नई योजना से लाभ हो। अप्रैल 20, 21, 22, 29, 30; मई 1, 8, 9, 10 अशुभ हैं।

कुम्भ– निजीजन से मेल हो। कार्यक्षेत्र में विशेष प्रगति के योग हैं। शुभकार्य हेतु व्यय हो। बन्धुओं से कुछ मन–मुटाव रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। मानसिक–शान्ति के लिए शनि–मंगल का मन्त्रजाप शुभ रहेगा। अप्रैल 13, 14, 15, 23, 24, 25; मई 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

मीन– वात–पित्त विकार से परेशानी रहे। आर्थिकलाभ काफी, लेकिन खर्च भी विशेष हो। भाई–बन्धु से मदद मिलेगी। सन्तानपक्ष से खुशी मिलेगी। विरोधीपक्ष एवं राजपक्ष से भय रहे। वृथाविवाद से बचें। अप्रैल 15, 16, 17, 18, 25, 26, 27; मई 3, 4, 5, 13 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 13 जून, सन् 2013 ई.)

(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– सूर्य–शुक्र–गुरु एवं बुध लग्नस्थ हैं, कहीं सूखा पड़े। महाराष्ट्र आदि में भयंकर प्राकृतिक आपदा से हानि के योग हैं। कहीं अचानक राजनैतिक– हिलजुल होगी। खाद्य–पदार्थों में भारी महंगाई होने से जनता में आक्रोश रहेगा।

ज्येष्ठसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

3 चं. | 1 के. मं.
4 | सू. गु. 2 बु. शु. | 12
5 | 11
6 | 8 | 10
श. 7 रा. | 9

वृषसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मई, 2013 ई.; 22 घं. 21 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– धनेश–लग्नेश (शु. बु.) गुरु–सूर्य के साथ होने से शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे, लेकिन त्वचा–रोग से कुछ परेशानी संभव है। छठे भाव में राहु–शनि विरोधी पक्ष को प्रबल बनाते हैं, लेकिन अन्ततः आप विजयी रहेंगे। लड़ाई–झगड़े से बचें। मई 15, 16, 17, 24, 25, 26; जून 2, 3, 4, 5, 11, 12, 13 अशुभ।

वृष– कफ–वायुविकार से कष्ट रहे। रीढ़ में दर्द, वृथा व्यय हो। कारोबार में बिगाड़, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले। सन्तानपक्ष से चिन्ता बने। स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार बने। मई 18, 19, 20, 26, 27, 28; जून 4, 5, 6 अशुभ।

मिथुन– लग्नेश चन्द्र द्वादशस्थ है, सेहत कुछ गड़बड़ रहेगी। कारोबार की हालत में कुछ सुधार हो। बन्धुसुख मिले। जमीन–जायदाद से सम्बन्धित विवाद उलझेंगे। मासान्त में विशेष व्यय एवं मन चिन्तित रहे। मई 20, 21, 22, 28, 29, 30; जून 6, 7, 8, 9 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक रहे। बन्धु–विशेष के लिए व्यय हो। स्त्रीपक्ष से लाभ हो। कारोबार ठीक रहेगा। सन्तानपक्ष से सुख, विद्यार्थियों के लिए सफलता का लाभ हो। मई 14, 15, 22, 23, 24, 30, 31; जून 9, 10, 11 अशुभ।

सिंह– सूर्य, बुध, गुरु की स्थिति सुखद वातावरण बनाती है। धनलाभ होकर वृथाव्यय हो। कलह–क्लेश से बचें। नई योजनाएं कार्यान्वित हों। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, क्रोध बढ़े। नेत्रकष्ट की सम्भावना है। मई 15, 16, 17, 24, 25, 26; जून 2, 3, 4, 5, 11, 12, 13 अशुभ।

कन्या– शनि–मंगल का दृष्टि–सम्बन्ध कष्टभय का संकेत देता है। लड़ाई झगड़े एवं दुर्घटना से सावधान रहें। यात्रा में कष्ट सम्भव है। गुप्तशत्रु से सावधान रहें। सन्तानपक्ष से शुभ–सन्देश मिले। कारोबार में रद्दोबदल हो। मई 18, 19, 20, 26, 27, 28; जून 4, 5, 6 अशुभ।

तुला– पेट में गड़बड़ी रहे। स्त्रीपक्ष से विशेष उत्साह–वर्धक सहायता के योग हैं। कारोबार ठीक रहे। सन्तान हेतु विशेष खर्च हो। मासान्त में कष्टभय है। मई 20, 21, 22, 28, 29, 30; जून 6, 7, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– क्रोध बढ़ेगा, कलह–क्लेश से दूर रहें। राजपक्ष किंवा स्त्रीपक्ष से चिन्ता। सन्तानपक्ष से शुभ–समाचार मिले। शत्रुपक्ष कमज़ोर होगा। कारोबार प्रायः ठीक रहे। मई 14, 15, 22, 23, 24, 30, 31; जून 9, 10, 11 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे। अर्थलाभ होकर वृथाव्यय से परेशानी रहे। विद्यार्थियों के लिए सफलता के योग हैं। सन्तानपक्ष से खुशी, कारोबार में प्रगति एवं नई योजनाओं से लाभ रहे। मई 15, 16, 17, 24, 25, 26; जून 2, 3, 4, 5, 11, 12, 13 अशुभ।

मकर– रक्त–पित्त–विकार से परेशानी रहे। निजीजन सहयोग, बन्धुकष्टभय। सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर से विशेष लाभ की आशा बने। मासान्त में विशेष खर्च हो। मई 18, 19, 20, 26, 27, 28; जून 4, 5, 6 अशुभ।

कुम्भ– कफ–वायुविकार से कष्ट रहे। आर्थिकलाभ अच्छा रहे। अच्छे मित्र–बन्धु से मेल–मुलाकात हो। स्त्रीसुख, मन में प्रसन्नता रहे। कारोबार या पार्टनरशिप में रद्दोबदल हो। मई 20, 21, 22, 28, 29, 30; जून 6, 7, 8, 9 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक रहे। लेकिन पेट में गड़बड़ी से कभी–कभार परेशानी रहे। नेत्र व शिरोरोग से भी सावधान रहें। भाई–बन्धु हेतु खर्च हो। स्त्री से अनबन हो। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। मई 14, 15, 22, 23, 24, 30, 31; जून 9, 10, 11 अशुभ।

आषाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (14 जून से 15 जुलाई, सन् 2013 ई.)

(क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में बुधादित्य योग गुरु–शुक्र के सन्निकर्ष में है। यह मास राजनैतिक दृष्टि से प्रगतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करेगा। मुस्लिमराष्ट्र, ब्रिटेन, अमेरिका एवं अन्यत्र कहीं राजनैतिक परिवर्तन एवं कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी सम्भव है। अनाज व दालवाना तेज़ रहें।

आषाढ़संक्रान्ति–ग्रहस्थिति

4
2 मं.
चं. 5
सू. बु. 3 गु. शु.
1 के.
6
12
7 श. रा.
9
11
8
10

मिथुनसंक्रान्ति प्रवेशकाल =14 जून, 2013 ई., 28 घं. 55 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– राजकीय कार्यों में सफलता मिले। सेहत ठीक रहे, भाई–बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से विशेषव्यय, स्त्रीपक्ष शुभ रहे। कारोबार में विशेष प्रगति के योग हैं। जून 14, 21, 22, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10, 11 अशुभ।

वृष– आर्थिक चिन्ता रहे। सेहत ठीक; निजीलोगों से अनबन रहे। स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। कारोबार में रुकावट; आय से व्यय अधिक हो। यात्रा में कष्टयोग हैं, सावधान रहें। जून 14, 15, 16, 23, 24; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

मिथुन– कफ–वायुविकार रहे। आर्थिक स्थिति में सुधार हो। स्थायी सम्पदा–सम्बन्धित झगड़े हों। स्त्रीकष्ट, मासान्त में लाभप्रद वातावरण बने। जून 16, 17, 18, 25, 26; जुलाई 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

कर्क– शनि–राहु का चन्द्र के साथ मेल मानसिक परेशानी का कारण बनेगा। मित्र–बन्धु से मेल हो एवं मदद मिले। विद्यार्थी चिन्तित रहें। स्त्रीपक्ष से अनबन रहे। कारोबार में सुधार हो। जून 19, 20, 27, 28, 29; जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।

सिंह– रक्त–पित्तविकार रहे। आर्थिक उलझनें परेशान करें। सत्पुरुष की मदद से लाभ हो। राजसी कामों में परेशानी रहे। कारोबार में कुछ रद्दोबदल लाभप्रद रहे।। जून 14, 21, 22, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कन्या– गुरु–बुध–मंगल की स्थिति समस्याओं के समाधान का संकेत देती है। खर्च तो होगा, परन्तु मित्र–बन्धु का सहयोग रहेगा। कारोबार ठीक। जून 14, 15, 16, 23, 24; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

तुला– कारेबार में रुकावट आने पर भी प्रगति के चांस बनें। स्त्री से अनबन, वृथाव्यय से कलह हो। विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। सन्तानहेतु विशेष व्यय हो। जून 15, 17, 18, 25, 26; जुलाई 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

वृश्चिक - पेट में विकार रहे। आर्थिक–लाभ से स्थिति बेहतर रहे। सन्तानपक्ष से परेशानी। उलझनें किसी की मध्यस्थता से हल हों। कारोबार में नए कार्यक्रम बनें। जून 19, 20, 27, 28, 29; जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।

धनु– रक्त–पित्त किंवा त्वचासम्बन्धी विकार से परेशानी रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ, सन्तानपक्ष से सुखद समाचार मिले। कारोबार ठीक एवं नई योजनाएं कार्यान्वित हों। मासान्त शुभ है। जून 14, 21, 22, 29, 30; जुलाई 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मकर– धनलाभ होकर हानि हो। मित्र–बन्धुकष्ट, मानसिक अशान्ति रहे। नई याजनाएं बनें। जमीन–जायदाद सम्पदा लाभ हो। कारोबार में प्रगति हो। जून 14, 15, 16, 23, 24; जुलाई 1, 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ– वात–व्याधि हो, नेत्रकष्ट, गुप्तशत्रु से भय, धर्म–कर्म में मन

लगे। मित्र–बन्धु से मेल हो। स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक रहे। जून 16, 17, 18, 25, 26; जुलाई 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

मीन– राज–भय, शरीरपीड़ा, अर्थलाभ हो। पारिवारिक सुख ठीक रहे। कारोबार में कठिनाइयों के बावजूद वृद्धि हो। मासान्त में सत्पुरुषों से मेल हो। जून 19, 20, 27, 28, 29; जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 15 अगस्त, सन् 2013 ई.)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नेश चन्द्र खलाक्रान्त है। प्रधान–शासकों को इस मास में भारी राजनैतिक विपत्तियों का सामना करना होगा। शनि–राहु कहीं भीषण प्राकृतिक आपदा का संकेत देते हैं। व्ययस्थ–नीचाकांक्षी मंगल मुस्लिम देशों में राजनैतिक गतिरोध पैदा करेगा। भारत में विपक्षीदल केन्द्रीय–मन्त्रिमण्डल को महंगाई के मुद्दे पर घेरेंगे।

श्रावणसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

5
मं. 3 गु. बु.
6
सू. 4 शु.
2
चं. 7 श. रा.
1 के.
8
10
12
9
11

कर्कसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 16 जुलाई, 2013 ई.; 15 घं. 45 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मानसिक परेशानी बढ़े। वृथा–विवादों से दूर रहना होगा अन्यथा स्थिति बिगड़ेगी। कारोबार कुछ ठीक रहे, सन्तानपक्ष से समय शुभ है। शत्रुपक्ष कमज़ोर, स्थानान्तरण का विचार बने। जुलाई 18, 19, 20, 26, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

वृष– नेत्र कष्टमय है। निजीलोगों से अनबन हो। विद्यार्थियों के लिए सफलता का समय है। सन्तानपक्ष से खुशी मिले। स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल का मन बने। जुलाई 20, 21, 22, 28, 29, 30, 31; अगस्त 7, 8, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– सेहत का ध्यान रखें। नेत्र व सिरपीड़ा से परेशानी बने। मित्र–बन्धु से मेल हो। सम्पत्तिलाभ के योग बनेंगे। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़ हो। जुलाई 16, 22, 23, 24, 31; अगस्त 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

कर्क– राजपक्ष से भय। उदरविकार, सम्पदालाभ का योग है, गुप्तशत्रु से सावधान रहें। कारोबार में तरक्की एवं मासान्त में लाभ की स्थिति बने। जुलाई 16, 17, 18, 24, 25, 26; अगस्त 2, 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

सिंह– क्रोध बढ़ेगा। वृथाव्यय, मित्रबन्धु से सहायता मिले। अपमानभय है, सामाजिक–कार्यों में विशेष रुचि रहे। कारोबार काफी कमज़ोर रहे। जुलाई 18, 19, 20, 26, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट रहे। कारोबार में विघ्न–बाधाएं उपस्थित हों। गुरु–शनि–मंगल का दान करें। जुलाई 20, 21, 22, 28, 29, 30, 31; अगस्त 7, 8, 9, 10 अशुभ।

तुला– रक्त–पित्तविकार, धनलाभ होकर हाथ से निकले। ज़मीन–जायदाद–सम्बन्धी झगड़े बढ़ें। स्त्रीपक्ष से लाभ की स्थिति बने। कारोबार में प्रगति हो। जुलाई 16, 22, 23, 24, 31; अगस्त 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक रहे, धनलाभ हो। भाई–बन्धु कष्ट, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री से अनबन। कारोबार ठीक रहे। जुलाई 16, 17, 18, 24, 25, 26; अगस्त 2, 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

धनु– गुप्तशत्रु से भय, वृथाव्यय हो। मित्र–बन्धु से वाद–विवाद हो। अचानक धनलाभ हो, मनोरंजन के कार्यों में व्यय हो। विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। जुलाई 18, 19, 20, 26, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

मकर– पेट में गड़बड़ रहे। धनलाभ हो, गुप्तक्षत्रु से भय है। शुक्र–सूर्य प्रॉपर्टी सम्बन्धी विवाद में उलझा सकते हैं, सावधान रहें। कारोबार ठीक रहे। जुलाई 20, 21, 22, 28, 29, 30, 31; अगस्त 7, 8, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– धनलाभ होगा, नेत्र में कष्ट से परेशानी बने। शुभ समाचार, शत्रु कमज़ोर रहें। कारोबार ठीक रहे। यात्रा में कष्ट सम्भव। जुलाई 16, 22, 23, 24, 31; अगस्त 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

मीन– मास कुण्डली में मंगल, गुरु एवं बुध की स्थिति राजपक्ष से भयकारक है। अचानक वृथाव्यय से मन परेशान रहे। सन्तानपक्ष से खुशी का समाचार मिले। कार्यान्तर से लाभ। जुलाई 16, 17, 18, 24, 25, 26; अगस्त 2, 3, 4, 5, 12, 13, 14, अशुभ।

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (16 अगस्त से 15 सितंबर, सन् 2013 ई.)

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– गुरु की उच्च शनि एवं चन्द्र पर दृष्टि अनेकत्र वर्षा–बाढ़ से हानि का संकेत देती है। लग्नस्थ सूर्य राजनैतिक प्रक्रिया को व्यवस्थित करेगा। लेकिन देश की आर्थिकस्थिति कमज़ोर रहेगी। राजनैतिक पार्टियों में शासन के विरुद्ध राजनैतिक उलटफेर जारी रहे। मुस्लिम–देशों की स्थिति कमज़ोर रहे। पैट्रोलियम प्रोडक्ट महंगे होंगे।

भाद्रपदसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

शु. 6
4 बु.
श.7 रा.
सू. 5
3मं. गु.
8
2
9 चं.
11
1 के.
10
12

सिंहसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 16 अगस्त, 2013 ई.; 24 घं. 07 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक रहे। शुभ समाचार मिले। उत्साह बढ़े, कार्यक्षेत्र में प्रगति, जमीन खरीदने की योजना बने। सन्तानपक्ष शुभ, कारोबार कमज़ोर रहे। अगस्त 16, 23, 24, 25; सितंबर 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

वृष– कफविकार से परेशानी रहे। धनलाभ हो। कारोबार में प्रगति हो। मासान्त में वृथाव्यय एवं अच्छे लोगों से मुलाकात हो। अगस्त 16, 17, 18, 25, 26, 27; सितंबर 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

मिथुन– कारोबार में हानि से मन परेशान रहे। अचानक धनलाभ हो। निजीलोगों से स्नेह–सम्बन्ध बनें। कारोबार ठीक रहे। अगस्त 19, 20, 27, 28, 29, 30; सितंबर 6, 7, 8, 15 अशुभ।

कर्क– धनलाभ हो, कर्जा सिर से उतरे। बन्धुकष्ट, सन्ततिसुख, विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। चन्द्र–गुरु की दृष्टि शुभ समाचार देने वाली है। अगस्त 21, 22, 30, 31; सितंबर 1, 8, 9, 10 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, मन प्रसन्न रहे। कारोबार में तरक्की के योग हैं। स्त्रीपक्ष से उत्साहवृद्धि एवं आर्थिक मदद मिले। अगस्त 16, 23, 24, 25; सितंबर 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कन्या– मित्र–बन्धु से मन–मुटाव रहे। आर्थिक संकट से मन खिन्न हो। कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। स्त्री व सन्तानपक्ष से चिन्ता रहे। अगस्त 16, 17, 18, 25, 26, 27; सितंबर 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

तुला– यात्रा में कष्ट, धनहानि का योग भी है। निजी लोगों के साथ अनबन से बचें। मित्र–मिलाप, सन्तानपक्ष से खुशी मिले। स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति हो। अगस्त 19, 20, 27, 28, 29, 30; सितंबर 6, 7, 8, 15 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक रहे। अर्थलाभ होकर अचानक वृथाव्यय हो। सत्पुरुषों मे मेल हो। ऐशोइशरत में मन लगे। गुप्तशत्रु से सावधान रहें। अगस्त 21, 22, 30, 31, सितंबर 1, 8, 9, 10 अशुभ।

धनु– पेट गड़बड़ रहे। कारोबार की नई योजनाएं बनें। आय से व्यय अधिक हो। निजीजन सहयोग रहे। सन्तानपक्ष से शुभ–सन्देश मिले। अगस्त 16, 23, 24, 25; सितंबर 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मकर– नेत्रकष्ट रहे। धनलाभ हो, शुभ समाचार मिले। नई योजनाएं कार्यान्वित हों। हौसला बुलन्द रहे। कारोबार ठीक। अगस्त 16, 17, 18, 25, 26, 27; सितंबर 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ– राजपक्ष से भय। कष्टप्रद यात्रा हो। मासमध्य शुभ, स्त्रीपक्ष शुभ रहे। कारोबार में तरक्की के योग बनें। अगस्त 19, 20, 27, 28, 29, 30; सितंबर 6, 7, 8, 15 अशुभ।

मीन– राजपक्ष शुभ नहीं है। विशेष खर्च अचानक आ पड़े। शुभकार्य में मन लगे। मासान्त में विरोधीपक्ष विशेष परेशानी का कारण बने। अगस्त 21, 22, 30, 31; सितंबर 1, 8, 9, 10 अशुभ।

आश्विन मास

कन्या–संक्रान्ति (16 सितम्बर से 16 अक्तूबर, सन् 2013 ई.)

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

आश्विनसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

शु.श.रा 7 | 5 | 8 | सू. 6 बु. | मं. 4 | 9 | 3 गु. | चं.10 | 12 | 2 | 11 | 1 के.

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नेश उच्च–बुध सूर्य के साथ **'बुधादित्ययोग'** बनाता है, जो राजनीति में जागृति का प्रतीक है। अष्टमेश–नीच मंगल आय स्थान में शत्रुक्षेत्री चन्द्र को देख रहा है, जोकि कहीं भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप का सूचक है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार केन्द्रीय शासन–सत्ता में उथल–पुथल संभव है। जन–जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई से जनता परेशान रहे।

कन्या–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 सितंबर, 2013 ई.; 24 घं. 03 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– स्थानान्तरण का योग बने, राजपक्ष से भय,। धनलाभ होकर हानि हो, बनते कार्य में बाधा उपस्थित हो। नेत्रकष्टभय है। मित्र–बन्धु से मदद लेनी पड़े। मासान्त में स्थिति में सुधार हो। **सितंबर** 19, 20, 21, 29, 30; **अक्तूबर** 1, 8, 9, 10, 16 अशुभ।

वृष– विरोधीपक्ष हतप्रभ हो। आय से व्यय अधिक हो। नेत्र व पेट में विकार से परेशानी रहे। सम्पत्ति–सम्बन्धित विवाद से बचें। गुप्तशत्रु से भय हो। अच्छे लोगों से मेल हो। दुःखद समाचार मिले। **सितंबर** 21, 22, 23; **अक्तूबर** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– क्रोध बढ़े, मंगलवार को गाय को गुड़ दें। कारोबार ठीक, धनलाभ हो। निजीजनों को कष्ट, शत्रुपक्ष कमज़ोर हो। अचानक नेत्र–सिरपीड़ा से कष्ट हो। मासान्त में वृथाव्यय हो। **सितंबर** 16, 17, 24, 25, 26; **अक्तूबर** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

कर्क– रक्त–पित्तविकार से कष्ट, वृथाव्यय हो। विद्याक्षेत्र में निराशा का सामना करना पड़े। स्त्री–मित्र व प्रियबन्धु से मिलन हो। पापकार्य में मन लगे। कारोबार में प्रगतिप्रद योजनाएं बनें। **सितंबर** 17, 18, 19, 26, 27, 28; **अक्तूबर** 6, 7, 8, 14, 15, 16 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, अचानक लाभ की स्थिति बने। सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद खड़े हों। मासमध्य में मित्र–बन्धु हेतु व्यय करना पड़े। स्त्रीपक्ष से कष्ट हो। कारोबार ठीक, लाभ रहे। **सितंबर** 19, 20, 21, 29, 30; **अक्तूबर** 1, 8, 9, 10, 16 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे। उलझे मसले हल हों। कारोबार में तरक्की हो, आर्थिक–संकट से मुक्ति मिले। अच्छे लोगों से मेल, नई योजना से लाभ मिले। **सितंबर** 21, 22, 23; **अक्तूबर** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

तुला– शत्रु बढ़ें, वृथाव्यय हो। बन्धु से मदद मिले। सम्पदा लाभ हो। स्त्रीपक्ष की ओर से मानसिक सन्तोषप्रद वातावरण बने। मासान्त में हानि से मन परेशान रहे। **सितंबर** 16, 17, 24, 25, 26; **अक्तूबर** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक– उदरविकार, जमीन–जायदाद–सम्बन्धी विवाद से परेशानी हो। मित्र–बन्धु से विरोध, धर्म–कर्म में मन लगे। मासान्त में कारोबार एवं कार्यान्तर से लाभ मिले। **सितंबर** 17, 18, 19, 26, 27, 28; **अक्तूबर** 6, 7, 8, 14, 15, 16 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे, अर्थलाभ हो। बन्धुकष्ट का समाचार मिले। सन्तानपक्ष से सुख, शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। गुप्तशत्रु से सावधान, मासान्त में कारोबार में हानि रहे। **सितंबर** 19, 20, 21, 29, 30; **अक्तूबर** 1, 8, 9, 10, 16 अशुभ।

मकर– अकस्मात् नेत्र व सिर में कष्ट, धनहानिभय है। मित्र–बन्धु से आर्थिक लाभ हो। स्त्रीपक्ष शुभ। पुराने मसले हल हों। सन्तान सुख हो। सुखद–यात्रा हो। कारोबार ठीक रहे। **सितंबर** 21, 22, 23; **अक्तूबर** 1, 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– मंगल कष्टप्रद है। शनि–मंगलवार को यात्रा न करें। भाई–बन्धु की मदद मिले। स्त्रीकष्ट रहे। कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार हो। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। **सितंबर** 16, 17, 24, 25, 26; **अक्तूबर** 3, 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

मीन– कफ–वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो। कारोबार की सांझेदारी में रद्दोबदल हो। सट्टा व शेयर बाजार से लाभ हो। विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। **सितंबर** 17, 18, 19, 26, 27, 28; **अक्तूबर** 6, 7, 8, 14, 15, 16 अशुभ।

कार्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 15 नवम्बर, सन् 2013 ई.)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य एवं केन्द्रेश–त्रिकोणेश बुध–शनि, राहु के साथ हैं जो कि राजनीति में नई संभावनाओं को उजागर करते हैं। आर्थिकदृष्टि से भी नई योजनाओं को कार्यान्वित होने का संकेत मिलता है। तुलाराशि में क्रूरग्रह–सन्निधि यावन–राष्ट्रों के लिए भयावह है।

कार्तिकसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

शु. 8
6
9
सू. बु.7 श. रा.
5 मं.
10
4
11
के. 1
गु. 3
चं. 12
2

तुला–संक्रान्ति प्रवेशकाल =17 अक्तूबर, 2013 ई.; 12 घं. 00 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल सारा दिन,

कार्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– राजनैतिक एवं शारीरिक–स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं। कारोबार ठीक रहे। निजीजन से सुख–सहानुभूति मिले। नई योजनाओं में रुकावट। मासान्त ठीक रहे। **अक्तूबर** 17, 18, 26, 27, 28; **नवम्बर** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे। अचानक अच्छे लाभ की स्थिति बने। सन्तानपक्ष से सुखलाभ हो। कारोबार में लाभ एवं कई समस्याओं का हल निकले। **अक्तूबर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, 31; **नवम्बर** 6, 7, 8, 15 अशुभ।

मिथुन– मानसिक प्रसन्नता मिले। निजीजन से अनबन, मित्र–बन्धु से सहयोग। सन्तानहेतु विशेषखर्च। स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 21, 22, 23, 31; **नवम्बर** 1, 2, 8, 9, 10, अशुभ।

कर्क– सेहत में बिगाड़ एवं मन परेशान रहे। सूर्य–शनि का दान करें। आर्थिकलाभ होकर शुभ में व्यय हो। स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ रहे। **अक्तूबर** 23, 24, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ।

सिंह– रक्त–पित्तविकार से परेशानी हो। अचानक धनलाभ का योग बने। विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। नई योजना से लाभ मिले। गुप्तशत्रु से सावधान, कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 17, 18, 26, 27, 28, **नवम्बर** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, वृथाव्यय हो। निजीजन सहयोग मिले, अच्छे काम में खर्च हो। विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में लाभ। **अक्तूबर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, 31; **नवम्बर** 6, 7, 8, 15 अशुभ।

तुला– रोगभय, रक्त–पित्तविकार, बन्धुकष्ट, नई योजना में रुकावट, स्त्रीकष्ट, मासान्त में आय ठीक लेकिन व्यय अधिक हो। शनि–सूर्य का मन्त्रजाप एवं दान करें। **अक्तूबर** 21, 22, 23, 31; **नवम्बर** 1, 2, 8, 9, 10, अशुभ।

वृश्चिक– कफ–वायुविकार। उच्च रक्तचाप (Blood Pressure) से परेशानी। कारोबार में रुकावट, कर्जा चढे। स्त्रीपक्ष से लाभ रहे। कारोबार में रद्दोबदल हो। **अक्तूबर** 23, 24, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ।

धनु– कफविकार, निजीजन कष्ट। अर्थलाभ हो, स्त्रीपक्ष से लाभ। मनःशान्ति के लिए गुरु–शनि का मन्त्रजाप एवं दान कराएं। कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 17, 18, 26, 27, 28; **नवम्बर** 4, 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।

मकर– शनि उच्च राशि में शुभ है। आर्थिकलाभ अच्छा होने पर भी मंगल कर्ज़े में रखेगा। मंगलवार को गुड़ गाय को दें। निजीलोगों से हौसला मिले। विरोधीपक्ष कमज़ोर। **अक्तूबर** 19, 20, 21, 28, 29, 30, 31; **नवम्बर** 6, 7, 8, 15 अशुभ।

कुम्भ– वायुविकार से कष्ट रहे। भाई–बन्धु का स्नेह–सद्भाव बना रहे। धनलाभ हो, सन्तानपक्ष से सुख, सुखद–यात्रा। स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक रहे। आय से व्यय अधिक हो। **अक्तूबर** 21, 22, 23, 31; **नवम्बर** 1, 2, 8, 9, 10, अशुभ।

मीन– धनलाभ हो। शनि–सूर्य–मंगल धनहानिप्रद हैं। चोट से बचें, यात्रा में सावधान रहें। नेत्रकष्ट संभव है। भाई–बन्धु सहयोग रहे। स्त्री–सुख, कारोबार में प्रगति के चांस हैं। **अक्तूबर** 23, 24, 25, 26; **नवम्बर** 2, 3, 4, 10, 11, 12 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (16 नवम्बर, से 14 दिसम्बर, सन् 2013 ई.)

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– वृश्चिक में सूर्य पर मंगल की विशेष दृष्टि है। राजनैतिक–दृष्टि से समय अनुकूल है। यावन देशों के शासकों के लिए समय संघर्षपूर्ण है। देश की आर्थिक–स्थिति में सुधार हो। सरकार महंगाई पर नियन्त्रण के लिए प्रयत्नशील रहे। ज्वार, बाजरा, चना महंगे ही रहें।

मार्गशीर्षसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

शु. 9 | रा.7 श. बु. | 10 | सू. 8 | 6 | 11 | 5 मं. | 12 | 2 | 4 | चं.1 के. | 3 गु.

वृश्चिक–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 नवंबर, 2013 ई.; 11 घं. 48 मि. (I.S.T.) मु. 15, पुण्यकाल सारा दिन,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक रहे। धनेश गुरु की धनस्थान पर पूर्णदृष्टि है, धनलाभ अच्छा हो। मासमध्य में दुःखद समाचार मिले। स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में रद्दोबदल हो। मासान्त में आय से अधिक व्यय हो। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

वृष– कारोबार में बाधाएं आएं। विरोधीपक्ष प्रबल, नेत्र व सिरकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ। नई योजना पर खर्च हो। व्यवसाय में विशेष रद्दोबदल हो। शेयरों में घाटा रहे। नवम्बर 16, 17, 25, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

मिथुन– कारोबार घाटे में रहे। मन परेशान, मित्र–बन्धु से मदद मिले। यात्रा में परेशानी, कर्जा बढ़े, वृथाविवाद व चोट से बचें। नवम्बर 17, 18, 19, 27, 28, 29; दिसम्बर 6, 7 अशुभ।

कर्क– धनलाभ हो। कोई खुशखबरी मिले। सन्तान व स्त्रीकष्ट सम्भव, कारोबार में ऋद्धि–सिद्धि रहे। जमीन–जायदाद सम्बन्धी लाभ के योग बनें। नवम्बर 20, 21, 22, 29, 30; दिसम्बर 1, 8, 9, 10 अशुभ।

सिंह– कफ–वायुविकार, धनलाभ होकर हाथ से निकले। भाई–बन्धु को कष्ट। शुभहेतु खर्च हो। सम्पत्ति लाभ हो। गुप्तशत्रु से सावधान रहें। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

कन्या– शरीर में वायुरोग से परेशानी रहे। वृथाव्यय अधिक हो। निजीलोगों से मेल हो, सन्तान की तरफ से चिन्ता। लड़ाई–झगड़े से दूर रहें। कारोबार ठीक रहे। नवम्बर 16, 17, 25, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

तुला– धनलाभ हो। मासमध्य में कष्टयोग है। यात्रा में सावधान। जमीनी विवाद से बचें, शत्रु प्रबल रहें। स्त्री से अनबन रहे। कारोबार में लाभ रहे। नवम्बर 17, 18, 19, 27, 28, 29; दिसम्बर 6, 7 अशुभ।

वृश्चिक– वृथाविवाद से बचें। निजी लोगों से अनबन रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ। कार्यान्तर व स्थानान्तर से लाभ मिले। नवम्बर 20, 21, 22, 29, 30; दिसम्बर 1, 8, 9, 10 अशुभ।

धनु– धनलाभ हो, नेत्रकष्ट संभव, शत्रुपक्ष जोर पकड़े। किसी की मदद अनिवार्यतः लेनी पड़े। स्त्रीपक्ष से लाभ की स्थिति बने। नवम्बर 22, 23, 24; दिसम्बर 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।

मकर– शनि प्रबल है, मंगल कष्टप्रद रहेगा। गाय को गुड़ दें। भाई–बन्धु की सहायता मिले। नई योजना में रुकावट, यात्रा में लाभ रहे। सन्तान–सुख मिले। राजपक्ष से भय हो। नवम्बर 16, 17, 25, 26, 27; दिसम्बर 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ– धनलाभ होकर हानिभय है। भाई–बन्धु से मदद मिले। अचानक धनप्राप्ति का योग है। शुभकार्य में मन लगे। कारोबार में तरक्की के प्रोग्राम बनें। नवम्बर 17, 18, 19, 27, 28, 29; दिसम्बर 6, 7 अशुभ।

मीन– झगड़े–झंझटों से दूर रहें, राजपक्ष से भय है। व्यापार में अचानक हानि से मन परेशान रहे। मास–मध्य में कहीं से लाभ की स्थिति बने। मासान्त में वातावरण शान्त रहे। नवम्बर 20, 21, 22, 29, 30; दिसम्बर 1, 8, 9, 10 अशुभ।

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (15 दिसम्बर, 2013 से 13 जनवरी, सन् 2014 ई.)

(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– सूर्य, बुध एवं गुरु की स्थिति भारतीय शासनतन्त्र में संशोधन का संकेत देती है। मकर (मित्र) राशिस्थ शुक्र शुभ है। महंगाई का मुद्दा विशेष ज़ोर पकड़ेगा। भारत की राजनीति में विशेष सुधारात्मक योजनाओं का सन्देश मिलता है।

पौषसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति		
शु.10		8 बु.
11	सू. 9	7 श. रा.
12		6 मं.
के.1	गु. 3	5
2 चं.		4

तुला राशिस्थ राहु–शनि पर गुरु की दृष्टि मुस्लिम–राष्ट्रों में भी कहीं परिवर्तन का संकेत देती है।

धनु–संक्रान्ति प्रवेशकाल =15 दिसंबर, 2013 ई.; 26 घं. 27 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– उदरविकार रहे, आर्थिक एवं कारोबार की दृष्टि से समय अनुकूल रहे। सम्पदालाभ का योग है। सन्तान व विद्या की दृष्टि से समय चिन्ताजनक है। स्त्रीपक्ष शुभ रहे। **दिसम्बर** 20, 21, 22, 29, 30, 31; **जनवरी** (2014 ई.) 6 ,7, 8 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक, अर्थलाम होकर हानि का योग है। स्त्रीपक्ष से उत्साहवर्धक स्थिति बने। कारोबार में रुकावट एवं कार्यान्तर का विचार बने। विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। अशुभ समाचार मिले। **दिसम्बर** 22, 23, 24, 31; **जनवरी** (2014 ई.) 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ।

मिथुन– उत्साह बढ़े, वायु रोग से परेशानी। सन्तानपक्ष से सुख–समाचार मिले। शत्रु बढ़ें, कारोबार में विशेष रद्दोबदल से लाभ रहे। **दिसम्बर** 15, 16, 17, 25, 26, 27; **जनवरी** (2014 ई.) 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

कर्क– राजभय के कारण वृथाव्यय हो। भाई–बन्धु से लाभ व उत्साह मिले। स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। शनि–राहु का दान करें। **दिसम्बर** 17, 18, 19, 27, 28, 29; **जनवरी** (2014 ई.) 4, 5, 6, 13 अशुभ।

सिंह– कफ–वायुविकार, धनहानि एवं वृथाव्यय से परेशानी। कार्यान्तर से अचानक लाभ की स्थिति बने। वृथाविवाद व कलह से बचें। कारोबार कुछ ठीक रहे। **दिसम्बर** 20, 21, 22, 29, 30, 31; **जनवरी** (2014 ई.) 6, 7, 8 अशुभ।

कन्या– स्वास्थ्य ठीक रहे। कारोबार में तरक्की एवं धनलाभ हो। सन्तानहेतु विशेष व्यय हो। शत्रुपक्ष कमज़ोर, मानसिक शान्ति रहे। शुभकार्यों में मन लगे। **दिसम्बर** 22, 23, 24, 31; **जनवरी** (2014 ई.) 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ।

तुला– स्वास्थ्य बिगड़े, कष्टभय है। निजीजन कष्ट। मित्र–बन्धु से मदद मिले। स्त्रीपक्ष से मन–मुटाव रहे। कारोबार प्रायः ठीक चले। **दिसम्बर** 15, 16, 17, 25, 26, 27; **जनवरी** (2014 ई.) 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ

वृश्चिक– सुख–धनलाभ, विरोधी प्रवल रहें। अशुभ समाचार मिले। हरा घास एवं गुड़ गाय को दें। मास–मध्य में शारीरिक कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ हो। कार्यान्तर का विचार बने। **दिसम्बर** 17, 18, 19, 27, 28, 29; **जनवरी** (2014 ई.) 4, 5, 6, 13 अशुभ।

धनु– नेत्र व सिर वेदना हो। शत्रु कमज़ोर, धनलाभ हो। मित्र–बन्धु से मेल, लाभ मिले। स्त्रीकष्ट से परेशानी। कारोबार में रद्दोबदल हो। **दिसम्बर** 20, 21, 22, 29, 30, 31; **जनवरी** (2014 ई.) 6, 7, 8 अशुभ।

मकर– राजकार्यों में विशेष परेशानी रहे। शारीरिक–कष्ट रहे। आर्थिक–हानि से कर्ज़ा सिर चढ़े। निजीजनों से परेशानी रहे। मासान्त में कार्यान्तर व शेयर बाज़ार से अचानक उत्तम लाभ मिले। **दिसम्बर** 22, 23, 24, 31; **जनवरी** (2014 ई.) 1, 2, 8, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ– कफ–वायुविकार रहे। कारोबार ठीक, धनलाभ हो। गुप्तशत्रु से सावधान रहें। बन्धुकष्ट का समाचार मिले। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। **दिसम्बर** 15, 16, 17, 25, 26, 27; **जनवरी** (2014 ई.) 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ

मीन– सुख–समाचार मिले। विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। अर्थलाभ होकर हाथ से निकले। स्त्रीपक्ष से लाभ हो। कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **दिसम्बर** 17, 18, 19, 27, 28, 29; **जनवरी** (2014 ई.) 4, 5, 6, 13 अशुभ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी, से 11 फरवरी, सन् 2014 ई.)

(भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– मकर–राशिस्थ सूर्य–बुध राजनैतिक उलटफेर करेंगे। देश में सुधारात्मक सक्रिय–पग उठेंगे। आर्थिक–स्थिति में सुधार होगा।

मुस्लिम–राष्ट्रों की स्थिति गंभीर रहेगी। इस मास में प्राकृतिक आपदाएं भी परेशान करेंगी।

माघसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

11		9 शु.
12	सू. 10 बु.	8
1 के.		रा. 7 श.
2	4	6 मं.
गु. 3 चं.		5

मकर–संक्रान्ति प्रवेशकाल =14 जनवरी, 2014 ई.; 13 घं. 12 मि. (I.S.T.) मु. 15, पुण्यकाल सारा दिन,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– मकरस्थ–सूर्य–बुध प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए भयप्रद हैं। राजपक्ष से भय एवं कदाचित् बन्धनभय बने। निजीलोगों से अनबन हो। मासमध्य में रोग से परेशानी रहे। कारोबार में हानि एवं परेशानी रहे। शनि–मंगल का मन्त्रजाप–दान करें। जनवरी 16, 17, 18, 26, 27; फरवरी 3, 4 अशुभ।

वृष– सुखलाभ हो, बनते काम में विघ्न उपस्थित हों। सन्तानपक्ष से सुख मिले। पापकर्म में मन लगे, कारोबार में रद्दोबदल हो। स्त्रीकष्ट, व्यय अधिक हो। जनवरी 18, 19, 20, 28, 29; फरवरी 5, 6, 7 अशुभ।

मिथुन– वृथाव्यय हो, स्थायी सम्पदाहेतु खर्च हो। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, शत्रु–पक्ष प्रबल रहे। कारोबार ठीक एवं मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। जनवरी 21, 22, 23, 30, 31; फरवरी 7, 8 9 अशुभ।

कर्क– पेट गड़बड़ रहे, धनलाभ हो स्त्रीपक्ष से अशान्ति रहे। कार्यान्तर से अधिक लाभ हो। निजी–काम में तबदीली की योजना बने। बन्धु–मित्र से मेल हो। जनवरी 14, 15, 16, 23, 24, 25, 31; फरवरी 1, 2, 10, 11 अशुभ।

सिंह– धनलाभ के अच्छे योग हैं। अचानक धनहानि के योग बनें। सन्तानपक्ष से चिन्ता, विरोधीपक्ष कमजोर रहे। किसी अपरिचित व्यक्ति से धोखा मिले। जनवरी 16, 17, 18, 26, 27; फरवरी 3, 4 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ अच्छा रहे। निजीलोगों से अनबन रहे। घरेलू झंझट बढ़ें। कारोबार ठीक, गुप्तशत्रु से सावधान रहें। जनवरी 18, 19, 20, 28, 29; फरवरी 5, 6, 7 अशुभ।

तुला– गुरु–शनि की स्थिति अचानक कष्ट का संकेत देती है। कारोबार में लाभ की स्थिति बने। धर्म–कर्म में वृत्ति लगे। पुत्र–स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। घरेलू झंझट बढ़ें। जनवरी 21, 22, 23, 30, 31; फरवरी 7, 8 9 अशुभ।

वृश्चिक– वात–व्याधि से परेशानी बने। नेत्रकष्ट भी संभव है। आकस्मिक धनलाभ होकर व्यय अधिक हो। सन्तति–सुख, विद्या में सफलता मिले। शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। कारोबार ठीक रहे। जनवरी 14, 15, 16, 23, 24, 25, 31; फरवरी 1, 2, 10, 11 अशुभ।

धनु– कफ से कष्ट रहे। कारेबार में अधिक धन व्यय हो। ज़मीन–जायदाद का लाभ हो। कारोबार में वृद्धि हो। घरेलू–झंझटों से मुक्ति मिले। जनवरी 16, 17, 18, 26, 27; फरवरी 3, 4 अशुभ।

मकर– आर्थिक–संकट बढ़े। कर्ज़ा सिर चढ़े। यात्रा में चोट–भय है। शनि–राहु एवं मंगल का दान करें। वृथाविवाद एवं कलह से दूर रहें। स्त्रीकष्ट, मासान्त में विशेष खर्च हो। जनवरी 18, 19, 20, 28, 29; फरवरी 5, 6, 7 अशुभ।

कुम्भ– सुख, धनलाभ हो। गुप्तशत्रु से भय, सावधान रहें। शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। मासमध्य में घरेलू झंझट एवं परेशानी बढ़े। मासान्त में आर्थिक संकट से मन परेशान रहे। जनवरी 21, 22, 23, 30, 31; फरवरी 7, 8 9 अशुभ।

मीन– विरोधीपक्ष कमज़ोर रहे। धनलाभ होकर हानि हो। बुद्धि से काम लें, अपमान–भय है। स्त्रीपक्ष से सुख एवं मदद मिले। मासान्त में कारोबार से लाभ हो। सन्तानहेतु विशेष खर्च हो। जनवरी 14, 15, 16, 23, 24, 25, 31; फरवरी 1, 2, 10, 11 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (12 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2014 ई.)

(गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— नवम भाव में शनि, मंगल, राहु का एकसाथ होना आश्चर्यजनकरूप से राजनैतिक–उलटफेर करने वाला है। महंगाई एवं राजनैतिक घोटाले शासन तन्त्र के लिए सिरदर्द बनेंगे। अमेरिका एवं मुस्लिम–राष्ट्रों में भी अघिटत–घटना चक्र चलेगा।

फाल्गुनसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

12
10
1के.
सू. 11 बु.
9 शु.
2
8
3 गु.
5
7 मं. श. रा.
4 चं.
6

कुम्भसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 12 फरवरी, 2014 ई.; 26 घं. 12 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— राजपक्ष से भय एवं स्थानान्तरण का योग है। निजीलोगों से अनबन रहे। सन्तानपक्ष से खुशी मिले। कारोबार में विशेष खर्च होने पर भी विशेष लाभ नहीं। फरवरी 12, 13, 14, 22, 23, 24; मार्च 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

वृष— शुभकार्य में खर्च हो, स्थायी सम्पत्तिलाभ हो। अच्छे लोगों से मेल हो। गुप्तशत्रु से सावधान रहें। आय से व्यय अधिक हो। फरवरी 15, 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 4, 5, 6 अशुभ।

मिथुन— सेहत गड़बड़ रहे। आर्थिक लाभ हो। निजीजन सहयोग रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता एवं स्त्रीकष्ट से भी परेशानी रहे। कारोबार पहले से ठीक रहे। फरवरी 17, 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 6, 7, 8, 9 अशुभ।

कर्क— उलझी समस्याएं सुलझें। आर्थिक–स्थिति अच्छी बने। कारोबार में उलझनें पेश आएं। लेकिन कार्यान्तर से लाभ हो। नई योजनाएं सफल हों। फरवरी 19, 20, 21, 22, 28; मार्च 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

सिंह— कष्टभय है, लेकिन आर्थिक लाभ रहेगा। शत्रुपक्ष प्रबल रहे। सन्तानपक्ष से विशेष चिन्ता रहे। स्त्रीपक्ष से सहयोग मिले। फरवरी 12, 13, 14, 22, 23, 24; मार्च 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

कन्या— सेहत ठीक रहे। अचानक आर्थिक–संकट बने। बन्धुकष्ट, निजीजनों से अनबन, शत्रुपक्ष प्रबल हो। स्त्रीपक्ष से मदद किंवा मनोबल बढ़े। कारोबार में रद्दोबदल हो। फरवरी 15, 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 4, 5, 6 अशुभ।

तुला— धनलाभ हो, सन्तानपक्ष से शुभ–समाचार मिले। ज़मीन–जायदाद सम्बन्धी विवाद बढ़ें। स्त्रीपक्ष से परेशानी रहे। कार्यान्तर से लाभ हो। फरवरी 17, 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 6, 7, 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक— सेहत बिगड़े, नेत्रकष्ट रहे। आय से व्यय अधिक हो। मित्र–बन्धु से सहयोग मिले। विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। कारोबार पहले से ठीक रहे। फरवरी 19, 20, 21, 22, 28; मार्च 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

धनु— रोग व शत्रुपक्ष से हानि, निजीजन सहयोग से मनोबल प्रबल रहे। आर्थिक लाभ हो, घरेलू झंझट बढ़ें। कारोबार में प्रगति एवं नई योजना से लाभकी स्थिति बने। फरवरी 12, 13, 14, 22, 23, 24; मार्च 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

मकर— सिर व नेत्रकष्ट, कारोबार बढ़िया रहे, अर्थलाभ अच्छा हो। निजीलोगों से कुछ अनबन रहे। सन्तानपक्ष से चिन्ता व वृथाव्यय हो। स्त्रीपक्ष शुभ रहे। मासान्त में राजपक्ष से भय है। फरवरी 15, 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 4, 5, 6 अशुभ।

कुम्भ— शत्रु कमजोर रहें। कारोबार में प्रगति, मासमध्य में ज़मीन या धन से सम्बन्धित विवाद खड़े हों। राजनैतिक–पद प्राप्ति के योग हैं। प्राकृतिक आपदा से कष्टभय भी रहे। फरवरी 17, 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 6, 7, 8, 9 अशुभ।

मीन— धनलाभ होकर हानि हो। सिर व नेत्रकष्ट रहे। निजीलोगों से अनबन रहे। स्त्रीपक्ष से लाभ मिले। मासान्त में कारोबार में उलझनें या विशेष रद्दोबदल के योग बनें। फरवरी 19, 20, 21, 22, 28; मार्च 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 13 अप्रैल, सन् 2014 ई.)

(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– चैत्र मास में नई दिशा, नए आयाम, नई योजनाएं लागू होंगी। प्राकृतिक प्रकोप, अग्निकाण्ड आदि से कहीं हानि भी हो। अफग़ानिस्तान, ईरान, पाक आदि में राजनैतिक उलझनें एवं परेशानियां बढ़ें। पैट्रोल एवम् खाद्य वस्तुएं तेज़ हों ।

चैत्रसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

1 के.
11बु.
2
सू. 12
10 शु.
3 गु.
9
4
6
8
5 चं.
7 मं. रा. श.

मीनसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मार्च, 2014 ई.; 23 घं. 06 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– स्थानान्तरण व कार्यान्तर का योग है। वृथाव्यय अधिक हो। शनि–मंगल एवं राहु का दान करें। अच्छे लोगों से मेल मुलाकात हो। स्त्रीपक्ष से चिन्ता रहे। मार्च 14, 21 22, 23, 29, 30, 31; अप्रैल, 8, 9, 10 अशुभ।

वृष– उदरविकार रहे। निजीजन से मेल, बनते कार्य में रुकावट आए, घरेलू झगड़े–झंझट अधिक परेशान करें। कारोबार में सुधारात्मक पग उठाने पड़ें। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। मार्च 14, 15, 16, 23, 24, 25; अप्रैल 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– धनलाभ, मित्र–बन्धु से मेल हो। कारोबार में विशेष प्रगति हो। सन्तानपक्ष से शुभलाभ एवं शत्रुपक्ष कमज़ोर हो। स्त्रीपक्ष से अनबन, मासान्त में बिगड़े काम बनें। मार्च 16, 17, 18, 25, 26, 27; अप्रैल 3, 4, 5, 13 अशुभ।

कर्क– अचानक लाभ की स्थिति बने। शत्रुपक्ष कमज़ोर हो। सन्तानपक्ष से कुछ परेशानी रहे। कारोबार में तरक्की एवं लाभ हो। स्त्रीपक्ष से उत्साहवर्धक वातावरण रहे। मार्च 19, 20, 21, 27, 28, 29; अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

सिंह– घरेलू झंझट बढ़ें, निजीजन कष्ट रहे। स्त्रीसुख, गुप्तशत्रु से सावधान रहें। कारोबार में बाधा एवं विशेष रद्दोबदल करने पड़ें। मार्च 14, 21 22, 23, 29, 30, 31; अप्रैल, 8, 9, 10 अशुभ।

कन्या– कारोबार में वृद्धि एवं लाभ हो। निजी बन्धुओं के साथ उलझन में न फसें। गुप्तरूप से शत्रु की चाल से सावधान, अचानक धनहानि का भय है। स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में लाभ। मार्च 14, 15, 16, 23, 24, 25; अप्रैल 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

तुला– नेत्र व सिर में कष्टभय है। धनहानि किंवा वृथाव्यय हो। सन्तानसुख, विद्यार्थियों को विद्यालाभ हो। कारोबार में यथोचित लाभ न हो। स्त्री से अनबन रहे। शनि–मंगल का दान करें। मार्च 16, 17, 18, 25, 26, 27; अप्रैल 3, 4, 5, 13 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत का ध्यान रखें। घरेलू झंझटों से बचें। सम्पत्तिलाभ की स्थिति बने। सन्तानपक्ष से चिन्ता। शत्रुपक्ष कमज़ोर रहे। स्त्रीपक्ष से परेशानी रहे। मार्च 19, 20, 21, 27, 28, 29; अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

धनु– सुख–धनलाभ हो। सेहत गड़बड़ रहे। अर्थिक–स्थिति में अच्छा सुधार हो, निजीजन सुख रहे। मित्र–बन्धु से स्नेह–सद्भाव रहे। कारोबार में विशेष प्रगति के योग हैं। मार्च 14, 21 22, 23, 29, 30, 31; अप्रैल, 8, 9, 10 अशुभ।

मकर– अच्छे लोगों से मेल–मुलाकात हो। मन खुश, सेहत ठीक रहे। धनलाभ, कारोबार ठीक रहे। मित्र–बन्धु किंवा सन्तानहेतु विशेष खर्च होगा। मार्च 14, 15, 16, 23, 24, 25; अप्रैल 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– विरोधीपक्ष कमज़ोर हो। कार्यान्तर से उत्तम लाभ हो, स्त्रीपक्ष से भी लाभ हो। निजीलोगों से अनबन, चोटभय है। घरेलू झंझट बढ़ेंगे। कारोबार ठीक रहे। मार्च 16, 17, 18, 25, 26, 27; अप्रैल 3, 4, 5, 13 अशुभ।

मीन– बन्धनभय, वृथाव्यय अधिक हो। भाई–बन्धु को कष्ट, सन्तानपक्ष से शुभ–समाचार मिले। स्त्रीपक्ष से सुखलाभ रहे। मासान्त में आय से व्यय अधिक हो। मार्च 19, 20, 21, 27, 28, 29; अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

अथ वर्षराजादि–फलविचार (संवत् २०७० वि.)

(सन् २०१३–१४ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९११४, सृष्टि संवत् १९५५८८५११४, श्रीविक्रम संवत् २०७०, शक संवत् १९३५, श्रीकृष्ण-जन्म संवत् ५२४६, कलि-संवत् ५११४, सप्तर्षि-संवत् ५०८९, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५३८–३९, श्रीबुद्ध संवत् २६३६–३७, हिजरी सन् १४३४–३५, फसली सन् १४२०–२१, ईस्वी सन् २०१३–१४ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'पराभव' नामक संवत्सर है । (यह विष्णुविंशति का अन्तिम संवत्सर है।) इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-

" पार्थिवैर्मण्डलेशैश्च सामन्तैर्दण्डनायकैः।
क्षुत्पिपासातुरा लोकाः पीड्यन्ते वै पराभवे।।"

अर्थात्– 'पराभव' नामक संवत्सर में शासकवर्ग, ज़िला अधिकारी, राज्य–सरकारों किंवा दण्डाधिकारियों द्वारा जनता को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। अनेक प्रान्तों में खाद्यान्न व पेयजल की कमी किंवा दुर्भिक्ष की स्थिति से भी परेशानी बनेगी।

' भविष्यफलभास्कर ' में ' पराभव ' संवत्सर का फल इस प्रकार है–

" पराभवाब्दे राज्ञां स्यात् समरः सहशत्रुभिः।
आमय–क्षुद्र–सस्यानि प्रभूतान्यल्प–वृष्टयः।।"

अर्थात् – ' पराभव ' संवत्सर में राजाओं किंवा विरोधी राजनैतिक पार्टियों में परस्पर युद्ध व संघर्ष की स्थिति बने। क्षुद्रान्नों (दालवाना आदि) की उपज अच्छी हो, नानाविध रोगों से जनता त्रस्त रहे। वर्षा की न्यूनता रहे।

किञ्च –" पराभव–संवत्सरे केतुः स्वामी, द्वादशमास–वर्षणम्, परं मध्यमा वृष्टिः, चैत्रे–वैशाखे चान्नं महर्घम्, मेघ–गर्जित–विद्युद्वायवः, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, उद्दण्ड–वायुः, आषाढेऽल्पमेघः, अन्ने द्विगुणो लाभः, श्रावणे महती वर्षा, अन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, परं दुर्भिक्षम्, धातु–समर्घता।

" पीड़िताश्च प्रजाः सर्वाः क्षुधार्ताः स्युः पराभवे।
धान्यौषधानि नश्यंति ग्रीष्मे वर्षति माधवः।।"

अनेकत्र अकाल की स्थिति बने, अनाज एवं औषधियों का नाश हो। ग्रीष्म ऋतु में वर्षा हो।

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद के प्रधान) गुरु, मन्त्री शनि, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) मंगल, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) रवि, मेघेश (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) शुक्र, रसेश (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) गुरु, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) मंगल, फलेश (फल–फूल आदि के स्वामी) शुक्र, धनेश (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) चन्द्र एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) शुक्र हैं।

संवत् २०७० वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है –

(१) संवत्सर २०७० वि. के राजा गुरु का फल–

"सुवर्ष–यज्ञोत्सव–सम्प्रदानो नीरुग्–व्यथो धर्मपरोऽवनीशः।
स्फीतान्न–पानैर्बहु सस्यकर्मा गुरोः स्वकर्म–प्रयत–प्रजोऽब्दः।।"

अर्थात्– संवत्सर का स्वामी गुरु हो तो संवत् में सुख–शान्ति रहे, यज्ञ–उत्सव आदि शुभकार्य अधिक हों, प्रजा निरोग रहे, शासकवर्ग (राजा लोग) धर्मपरायण रहें। अनाज–वर्षा काफी हो, कृषक लोग समृद्ध हों, प्रजा अपने–अपने कार्यों में संल्लग्न रहे।

(२) मन्त्री शनि का फल–

"रविसुते यदि मन्त्रिणि पार्थिवा विगत–शीलवशाद बहुदुःखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदो जनपदेषु सुखं धनजं क्वचित्।।"

अर्थात्– शनि संवत् का मन्त्री हो तो शासकों के लोक–विरोद्ध किंवा नीतिविरुद्ध व्यवहार से जनता में आक्रोश एवम् असन्तोष रहता है। बादल–वर्षा कम रहे।

देश में कुछ लोग (वर्ग) तो समृद्धि की ओर अग्रेसर रहें और कुछ वर्ग आर्थिक समृद्धि से वञ्चित रहते हैं।

(३) सस्येश मंगल का फल-

"अथ च सस्यपतौ धरणीसुते गज–तुरंग–खरोष्ट्रगवामपि।
भवति रोगहतिश्च घना जलं ददति नैव तुषान्न–विनाशनम्।"

अर्थात्– मंगल के सस्येश होने से हाथी–घोड़े–गधे–ऊँट, गो आदि दुधारू पशुओं में रोग फैलने से हानि हो सकती है। वर्षा की कमी किंवा अवर्षण से कुछ प्रान्तों में पशुचारा की कमी किंवा खाद्यान्नों की फसलों को भारी क्षति पहुंचे।

(४) धान्येश सूर्य का फल-

" सूर्ये धान्याधिपे जाते स्वल्प–तोयप्रदा घनाः।
माष–मुद्ग–तिलादीनां महर्घं जायते ध्रुवम्।।"

अर्थात्– सूर्य धान्येश होने से वर्षा कम हो। शीतकालीन धान्य मोठ–मूंग आदि दलहन; बाजरा एवम् तिल आदि तिलहनों में तेज़ी बने। व्यापारियों को तेज़ी से लाभ मिले।

किञ्च– " विग्रहो भूभृतां, धान्यं महर्घं, ज्वरपीड़नम्।।"– अर्थात् सूर्य धान्येश होने पर राजनीतिज्ञों किंवा विरोधी देशों में परस्पर वैमत्य से शक्तिपरीक्षण (युद्ध) की स्थिति बने, कहीं रोगविशेष से जनता परेशान हो– ऐसा फलादेश भी मिलता है।

(५) मेघेश शुक्र का फल-

"भृगुसुतो जलदस्य पतिर्यदा जलयुता जलदा दिवि शोभिनः।
घन–निधान–युता नरपालका अपि च ते जनता-सुखकारकाः।।"

अर्थात्– इस संवत् का मेघेश शुक्र होने से वर्षा काफी (पर्याप्त) हो। उत्पादन श्रेष्ठ होने से राजकीय कोष में वृद्धि हो, शासकवर्ग जनकल्याणार्थ नई नीतियों को कार्यान्वित करे।

(६) रसेश गुरु का फल-

"यदि गुरौ रसपे सुखिनो जनाः समधिकेन फलादि युता द्रुमाः।
जनपदा जन–नायक–सैनिका हय–हयायुध–वाह विगाहिताः।।"

अर्थात्– रसेश गुरु होने से जनता में सुख–समृद्धि रहे। फल–फूलों से वृक्ष सुशोभित रहें। किसी जनपद या सीमाप्रान्तों पर शासक–प्रशासक व पुलिस सैन्याधिकारी अपने शस्त्रबल व वाहनबलों का परीक्षण करें।

(७) नीरसेश मंगल का फल-

" नीरसेशो यदा भौमः प्रवाल–रक्तवाससाम्।
रक्त–चन्दन–ताम्राणामर्घ–वृद्धिर्दिने–दिने।। "

अर्थात्– मंगल के नीरसेश होने से मूंगा, लालवस्त्र, लालचन्दन, तांबा, सोना आदि धातुओं के बाज़ारों में प्रतिदिन तेज़ी का रुख रहे।

(८) फलेश शुक्र का फल-

"भृगुसुते फलपे धरणी तदा वितत–पादप–पुष्प–फलोत्कटा।
बहुविधेन नृपा नयशालिनो द्विजवराः श्रुतिकर्म–परायणाः।। "

अर्थात्– शुक्र फलेश होने से पेड़ों व फल–फूलों की उत्पत्ति अधिक हो, शासकवर्ग (देश की प्रगति के लिए) सर्वतोभावेन प्रगतिप्रद योजनाओं से देशहितार्थ काम करें। सभ्य समाज का आचरण नीति व धर्म के अनुकूल रहे।

(९) धनेश चन्द्र का फल-

"धनपतिर्मृग–लांछनको यदा रसचयात् क्रय–विक्रयतो धनम्।
वसन–शालि–सुगन्ध–घृतादिजं बहु भवेदथ शासन–मंगलम्।।"

अर्थात्– चन्द्र के धनेश होने से रस–पदार्थ (घी–गुड़–शर्करा आदि) के व्यापार से लाभ प्राप्त होता है। वस्त्र, चावल, सुगन्धित पदार्थ एवं घी आदि के व्यापार में वृद्धि हो। लोग देशहितार्थ कानूनों का सहर्ष पालन करते हुए कर आदि का भुगतान भी करें।

(१०) दुर्गेश शुक्र का फल-

" भृगुसुतो यदि कोट्टपतिर्भवेद् बहुसुखं कुशलं च तदा मतम्।
वसु–विभूतिकरं नयशासनमथ वने भुवनेऽपि च शं भवेत्।।"

अर्थात्– शुक्र के दुर्गेश होने से जनता में सुख–समृद्धि, कुशल–क्षेम रहे तथा दृढ़ नीतियुक्त शासन से वातावरण सर्वत्र शान्त रहे।

सूचना– यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु

विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; रसेश का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ६, धान्य ६, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १३, तृषा ६ निद्रा ११, आलस्य १३, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६ फल १३ उत्साह ११, उग्रता १, पाप १७, पुण्य ५, व्याधि ३, व्याधिनाश १७, आचार १७, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५, स्वेदज १३, टिड्डी ३, तोता १३, मूषक ३, सोना १७, तांबा १६ स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्विश्वा ८ हैं।

चतुर्मेघविचार :– आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'संवर्तक'** नामक मेघ है।

फल :– वायुवेग के साथ अनेकत्र अच्छी वर्षा हो –

"संवर्ताख्यो नीरदः स्याद्धि यत्र पूर्वो वायुर्वाति सर्वत्र तत्र।"

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में **' तम '** नामक मेघ है।

फल :– नाना प्रकार के रोगों से जनता परेशान रहे। अनैतिक कार्य अधिक हों, बादल हों, परन्तु वर्षा न हो; शासकों की स्वार्थ परायणरता किंवा घोटालों से जनता परेशान रहे– **" यस्मिन् वर्षे स्यात्तमो नाम मेघस्तस्मिन् दुःखं प्राप्नुयाल्लोकसंघः।।"**

अनन्तादि अष्टनाग– अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष **'पद्म'** नामक नाग है।

फल :– विषाक्त (शराब आदि), विषैले सर्पदंश एवं नशीली दवाइयों के सेवन से युवावर्ग विशेषरूप से प्रभावित हो। कहीं वर्षा, कहीं तूफान किंवा बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो।

सुबुध्नादि द्वादश नाग– बारह नागों में इसवर्ष **'वासुकि'** नामक नाग है।

फल :– संवत् २०७० में 'वासुकि' नामक नाग होने से देश में धन–धान्यसमृद्धि रहे। भारत के अनेक प्रान्तों में वर्षा बहुत हो – " वासुकि सस्यकर्ता च बहुसस्यकरः शुभः।" 'वासुकि' नाग की स्थिति में गत कुछेक वर्षों के अनुभव के अनुसार महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार, बंगाल एवं उत्तरी भारत में बाढ़–वर्षा से हानि के योग भी देखे गए हैं।

आवह आदि सप्तवायु–विचार– इस वर्ष 'वायुसप्तक' में 'विवह' नामक वायु है।

फल– आंधी–तूफान से देश के दक्षिणी–पश्चिमी भूभाग पर एवं विश्व के समुद्र–तटवर्त्ती देशों में समुद्री तूफान (सुनामी), भूचाल किंवा भारी बाढ़–वर्षा से भयंकर जनधनहानि के योग इस वर्ष जनजीवन को अस्त–व्यस्त करेंगे। शासन इस स्थिति को संभालने में असमर्थ अनुभव करेगा। भूमध्यगत वायुतरंगों से होने वाले इस प्राकृतिक प्रकोप का परिणाम अनेक देशों के लिए विध्वंसकारी रहेगा।

संवत् २०७० वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'गुरु' होने पर संवत्सर का वाहन "चातक" है। कुछ संहिताग्रन्थ वर्षेश गुरु होने पर संवत्सर का वाहन 'नौका' मानते हैं।

फल :– अत्यधिक वर्षा किंवा अनेकत्र अवर्षण से खड़ी फसलों को हानि होगी। कहीं बाढ़, कहीं दुर्भिक्ष से जनधनहानि हो। प्रान्त–विशेष में कहीं जनता विशेष कारणवश पलायन करे। आतंकियों से भय एवं रोग से चतुष्पद् हानि हो।

संवत् २०७० वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) २५.७ प्रतिशत है।

(२) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र)६६.२ प्रतिशत है।

(३) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ६.० प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ८४.६ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ– इस वर्ष जलस्तम्भ २५.७ प्रतिशत होने से कुछ

जीरा, मक्का, गेहूं चावल, बाजरा आदि की फसल अच्छी होने पर भी अन्ततः झाड़ पर्याप्त नहीं मिलेगा। विद्युत्–उत्पादन की दर कम रहेगी, जिससे औद्योगिक क्षेत्र प्रभावित होंगे। इसवर्ष चतुर्मेघ एवं नवमेघ 'संवर्तक' एवम् 'तमस्' संज्ञक होने पर भी वर्षा की कुछ क्षेत्रों में भारी कमी रहेगी, कहीं समुद्री तूफान (सुनामी) आदि समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों में भारी विनाश का कारण भी बनेगा।

(२) वायुस्तम्भ– इस वर्ष 'वायुस्तम्भ' ६६.२ प्रतिशत होने से बहुत सशक्त है। इस वर्ष भूगर्भान्तर्गत उष्णीय तरंगों से विश्व के कुछ देशों एवं भारत के समुद्रतटवर्ती किंवा सीमान्त–प्रदेशों में भीषण प्राकृतिक आपदा [भूकम्प, समुद्रीतूफान (सुनामी), ज्वालामुखी–विस्फोट, बवण्डर] आदि से भारी जनधन–हानि संभव है। दक्षिण–पश्चिमी भूभाग पर यह आपदा विशेष प्रभावी रहेगी। कहीं वायुवेग से वर्षा–बादलों का अभाव रहेगा। अनेकत्र अग्निकाण्ड से हानि हो।

(३) तृणस्तम्भ– इस वर्ष तृणस्तम्भ ६ प्रतिशत ही है। यह स्तम्भ काफी क्षीण है। फसलों (खाद्यपदार्थों) को हानि पहुंचेगी। कृषकसम्पदा (खेती) कमज़ोर होने से महंगाई बढ़ेगी। शासन को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। पशुचारा भी महंगा होगा। ग़रीब एवं मध्यमवर्ग में प्रशासन के विरुद्ध रोष रहेगा।

(४) अन्नस्तम्भ– इस वर्ष अन्नस्तम्भ ८४.६ प्रतिशत है। ध्यान दें– इस वर्ष स्तम्भ–चतुष्टय के विचार से यह वर्ष सामान्यतः मध्यम है। जल अच्छा बरसेगा, लेकिन वायुवेग से फसलों को हानि की सम्भावना है। तृणस्तम्भ बहुत कमज़ोर होने से अनाजों की फसलें कम होंगी। कृषकवर्ग असन्तुष्ट रहेगा। कृषियोग्य भूमि की उपलब्धता पर विशेष ध्यान देना होगा। गेहूं, चना, ग्वार, बाजरा एवं दालवाना के व्यापारी व कृषक सम्पन्नता प्राप्त करेंगे। वर्षरक्षाहेतु उल्लिखित चार स्तम्भों के मध्यमबली होने से यह संवत् नई उपलब्धियों एवम् नई योजनाओं को कार्यान्वित करने में अक्षम है, नए आयाम लेकर देश अग्रेसर तो होगा।

आर्षमान–विचार (सं २०७० वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष** (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) १३.३ प्रतिशत है।

(२) **द्वितीय आर्ष** (गत संवत् २०६६ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) का अभाव है।

(३) तृतीय आर्ष (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) १५.८ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष (कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ३६.३ प्रतिशत है।

इस वर्ष देश की रक्षा के लिए स्थापित उल्लिखित चार दुर्गों (किलों) के विचार से यह संवत् (२०७० वि.) देश की सैन्य–समृद्धि, शासनसत्ता एवं केन्द्रशासित पार्टी के लिए विशेष अस्थिरता वाला ही है– ऐसा संकेत मिलता है। चारों दुर्ग इस वर्ष कमज़ोर होने से भारत की सैन्य गतिविधि पर भी प्रश्नचिन्ह पैदा करते हैं।

प्रथम आर्ष इस वर्ष अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र १३.३ प्रतिशत होने से बहुत क्षीण है। **स्पष्ट है** कि– इस संवत् में प्राकृतिक आपदाओं सुनामी, समुद्री–दुर्घटनाएं, भूकम्प, अग्निकाण्ड आदि से अनेकत्र भारी जनधनहानि होगी। चीन, श्रीलंका, पाक किंवा अन्य मुस्लिम–राष्ट्रों में विशेष आपदाओं का संकेत है। भारत के कुछ भूभाग किंवा समुद्रतटवर्ती प्रदेश भी आपदाग्रस्त रह सकते हैं।

द्वितीय आर्ष – गत संवत् २०६६ वि. की पौष अमा को मूल नक्षत्र का अभाव रहने से यह संवत् जल–वायु–स्थल सैन्य की शस्त्रास्त्र एवं कार्यक्षमता को कमज़ोर कर सकता है। चीन, पाक के भारत के साथ सम्बन्ध स्वस्थ न रहेंगे। काश्मीर एवं राजस्थान के सीमाप्रान्त एवं तिब्बत की ओर से भी भारत को सशक्त रहना ज़रूरी है।

तृतीय आर्ष – सं. २०७० वि. की श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र १५.८ प्रतिशत होने से इस संवत् में राजनीतिज्ञों एवं उनके कृपापात्रों द्वारा किए गए राजनैतिक / आर्थिक घोटाले विशेष चर्चा का विषय रहेंगे। जिससे केन्द्रीय शासनतन्त्र हतप्रभ होकर चक्रव्यूह में फंसेगा। परिणाम दूरगामी होंगे। राजनीतिज्ञों के लिए सुधारात्मक एवं देश के गिर रहे आर्थिक संकट को स्वस्थ बनाने के लिए भारी प्रयास करने होंगे।

चतुर्थ आर्ष– इस सं. २०७० वि. में कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ३६.३ प्रतिशत है। इस वर्ष सैन्यशक्ति को सशक्त बनाने के लिए विशेष व्यय होगा। देश की सीमाओं पर नेपाल, चीन, पाक की कुनीति से बहुत सावधान रहना परमावश्यक है। साथ ही राजस्थान, काश्मीर, लाहौलस्पीति किंवा तिब्बत की ओर से भी देश की रक्षार्थ चिन्तनीय स्थिति संभव है।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्यो कृतिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।।"

रोहिणी का वास– इस संवत् में मेष संक्रान्ति कृत्तिका नक्षत्र में लगी है, अतः रोहिणी का वास 'समुद्र' में है।

फल– रोहिणी का वास इस वर्ष 'समुद्र' में होने से " समुद्रे तु

महावृष्टिः"– अनुसार वर्षा बहुत हो। बाढ़ आदि से अनेक प्रान्तों में भारी जनधन–हानि भी हो। बहुत जल चाहने वाले चावल आदि अनाजों की उपज अधिक हो। न्यूनवर्षा वाले बागड़ आदि मरुस्थलों में भी वर्षा से कृषक लोगों को सहारा मिलेगा। समुद्र–तटवर्ती भूभाग सुनामी व अन्यविध प्राकृतिक प्रकोपों से हानि में रहें–

" यदा पयोनिधिस्थले गतो विंरचिमं तदा।
अतीव वर्षणं भवेत् समस्त–धान्यवर्धनम्।।"

संवत्सर(समय) का वास– इस संवत् २०७० वि. में रोहिणी का वास समुद्र में होने से 'समय का वास' 'धोबी के घर' है।

फल– तालाब, नदी, बावड़ी आदि जलपूर्ण रहेंगे। औषधियां बहुत मात्रा में उपलब्ध होंगी। जलीय अन्न भी अधिक होंगे।

शनि की दृष्टि– इस वर्ष शनि संवत् २०७० वि. के प्रारम्भ से संवत् के अन्त तक तुलाराशि में ही रहेगा। अतः स्पष्ट है कि– तुलाराशिस्थ शनि की दृष्टि पश्चिम (पश्चिमी राष्ट्रों) की तरफ रहेगी। अतः संवत् २०७० वि. में पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्रीतूफान (सुनामी) एवं कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध (सत्तापरिवर्तनार्थ) आन्दोलन, ज्वालामुखी–विस्फोट, हवाई हादसे किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग नज़र आते हैं। भारत भी इस वर्ष शनि की दृष्टि से अप्रभावित नहीं रह सकेगा। सिंह, कुम्भ एवं तुला राशि के नेताओं के लिए यह वर्ष विशेष उलझनें लेकर उपस्थित हो रहा है। कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ से हानि व कहीं राजनैतिक उलटफेर (सत्तापरिवर्तन) भी हो–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०७० वि. में–

(१) सोमवती अमावस्याएं वि. संवत् २०७० में दो हैं –

(i) श्रावण कृष्णपक्ष (८ जुलाई, सन् २०१३ ई.)
(ii) मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (२ दिसंबर, सन् २०१३ ई.)

(२) भौमवती अमावस्या वि. सं. २०७० में केवल एक ही है –

(i) श्रावण कृष्णपक्ष (६ अगस्त, सन् २०१३ ई.)

(३) शनिवारी अमावस्याएं सं. २०७० वि. में दो हैं–

(i) ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (८ जून, सन् २०१३ ई.)
(ii) फाल्गुन कृष्णपक्ष (१ मार्च, सन् २०१४ ई.)

नोट– सोमवती अमा वाले दिन अन्न(चावल), दूध दान करना चाहिए।

मंगलवारी अमा को गुड़ दान गऊशाला में दें।

शनैश्चरी अमा के दिन तेलदान, तुलादान, काला कपड़ा एवं काली दाल देने का महत्त्व है।

ध्यान दें :– इन अमाओं में तीर्थस्नान आदि का विशेष महत्त्व शास्त्रों में प्रतिपादित है।

शरत्सस्य जातक

संवत् २०७० वि. में वैशाख शुक्ल चतुर्थी (तात्कालिक पंचमी), मंगलवार, तदनुसार १४ मई, सन् २०१३ ई. को पुनर्वसु नक्षत्र, शूल योग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव २२ घंटा २१ मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर धनु लग्न के समय वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्यजातक–कुण्डली
(१४ मई, सन् २०१३ ई., २२ घं. २१ मि.)

१० ८
११ ९ ७ श.रा.
१२ ६
के. १ मं. चं. ३ ५
सू.बु.२ गु.शु. ४

फल– शरत्सस्यजातक कुण्डली में केन्द्रेश गुरु–बुध एवम् षष्ठेश–आयेश शुक्र–ये तीनों सूर्य की सन्निधि में हैं। गन्ना, मक्का, चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, अरहर, कपास एवं तिल आदि खरीफफसलों को हानि पहुंचेगी।

इस कुण्डली में मंगल–केतु एवम् शनि–राहु का समसप्तक विशेष खाद्यान्नों एवं राजनैतिक गतिविधि पर भी विशेष प्रभाव डालेगा। खरीफ की फसलों के बारे सूर्य के साथ अस्त बुध एवं शुक्र की सन्निधि से "**कार्मुक–मृग–घटसंस्थः शारद–सस्यस्य तद्वदेव रविः। संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूरग्रहयोगात्।।**"– प्रमाणानुसार गेहूं, आदि महंगे होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०७० वि. में कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी, शनिवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०१३ ई. को भरणी नक्षत्र, व्यतीपात योग एवं मेषस्थ चन्द्र के समय ११ घं. ४८ मि. (भा. स्टै. टा.) पर मकर लग्न के समय सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्यजातक–कुण्डली
(१६ नवं., २०१३ ई., ११ घं. ४८ मि.)

११ शु. ९
१२ १० ८ सू.
१ के. चं. ७ बु. श. रा.
२ ४ ६
३ गु. ५ मं.

फल– ग्रीष्मसस्य कुण्डली में सूर्य से दूसरे शुक्र एवं द्वादशस्थ बुध गुरुदृष्ट हैं, जोकि ग्रीष्मसस्य (गेहूं, चना, सरसों आदि तिलहन, दालों एवम् जौ) की अच्छी फसल का संकेत देते हैं–

"अर्कात्सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव वा स्थितयोः।
व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्टया।।"

लेकिन अच्छा योग बनने पर भी इस वर्ष ग्रीष्मान्न (रबी) की फसलों, सूर्य से दशमस्थ मंगल एवं द्वादशस्थ राहु–शनि होने पर खड़ी फसलों को भारी हानि पहुंचने का योग भी है।

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

संवत् २०७० वि. में ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी (तात्कालिक चतुर्दशी) शुक्रवार, तदनुसार २१/२२ जून, सन् २०१३ ई. को अनुराधा नक्षत्र, साध्य योग एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र के समय २८ घं. ३३ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर वृषलग्न के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य आर्द्राप्रवेश–कुण्डली
(२१/२२ जून, सन् २०१३ ई., २८ घं. ३३ मि. (भा.स्टैं.टा.))

सू.बु.३ गु.शु. १ के.
४ २ मं. १२
५ ११
६ ८ चं. १०
७ श.रा. ९

फल– सूर्य वृषलग्न के समय आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट हुआ है। इस समय शनि–राहु का मंगल के साथ षडष्टकयोग चल रहा है। सूर्य से पंचम राहु–शनि, छठे नीच (जलशोषक मंगल की राशि में) चन्द्र एवं सूर्य से बारहवें मंगल है। मिथुनस्थ बुध, शुक्र, गुरु– ये सूर्य के सन्निकर्ष में हैं। अतः कहीं भयंकर वर्षा, बाढ़ या सूखे से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश चतुर्दशी–तिथि के दिन होने से व्यापारिकवर्ग, कृषकवर्ग एवम् साधारणजन के लिए कष्टपद रहेगा–

" वह्नि–वेदाष्ट–नन्देंद्रा एतत् संख्यासु भास्करः।
तिथिष्वार्द्रां यदा याति कष्टदः शेषके शुभः।।"

संवत् २०७० वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०६९ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, बुधवार, तदनुसार १० अप्रैल, सन् २०१३ ई. को रेवती नक्षत्र, वैधृति योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् २०७० वि. का शुभारम्भ १५ घं. ५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सिंह लग्न में हुआ है।

शुभ संवत् २०७० वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

६ ४
७ रा. श. ५ ३
८ २ गु.
९ ११ १ के.
१० १२ सू.चं.मं.बु.शु.

१० अप्रैल, सन् २०१३ ई., (१५ घं. ५ मि.)

फल– संवत् २०७० वि. का शुभारम्भ सिंह लग्न में हो रहा है। लग्नेश सूर्य मंगल, बुध एवम् चन्द्र के साथ अष्टम–स्थान (भाव) में उच्चस्थ (मीनस्थ) शुक्र के साथ स्थित है। चन्द्र–मंगल सूर्य के मित्र हैं, शुक्र सूर्य (लग्नेश) का शत्रु है। इस समय मंगल–शुक्र अस्त हैं। यहां शुक्र, विपक्षी नेतृत्व का प्रतीक है, जोकि प्रबल है। स्पष्ट संकेत मिलता है कि– राजनैतिक दृष्टि से यह वर्ष भारत की केन्द्रीय शासनसत्ता को विषम चक्रव्यूह में लाकर खड़ा कर देगा। दिग्गज राष्ट्रीय नेताओं को भी विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा; अन्ततः विपक्ष भारी पड़ेगा। समय से पूर्व ही राजनैतिक शक्तिपरीक्षण का सामना करने को मजबूर होना पड़ेगा। नवमेश मंगल, द्वितीयेश (धनेश) एवं आयेश बुध अस्त होने से बलहीन हैं। कर्मेश शुक्र प्रबल है। कर्मस्थान में शत्रुक्षेत्रीय गुरु अष्टमेश एवम् योजनास्थान का स्वामी होने से गलत धारणाओं एवम् योजनाओं से सत्तारूढ़ दल को नकारने में योगदान करेगा। षष्ठेश एवम् सप्तमेश उच्चस्थ शनि राहु के साथ तृतीय भाव में है, जोकि विशेष राजनैतिक सुधारात्मक परिस्थितियों को जन्म देगा और परिवर्तन लाएगा।

यहां तुलास्थ शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों पर है। विशेषतः अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, सीरिया आदि मुस्लिम राष्ट्रों में सैन्य गतिविधि, अराजकता रहे किंवा विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होगा। सिंह लग्न में नववर्ष का उदय होने से दक्षिण में सर्पादि किंवा भयंकर रोगविशेष से कष्ट हो, 6 मास तक चावल आदि अनाज सस्ता रहे, बादल–वर्षा हो। पश्चिम में धातु–निर्मित वस्तुएं एवं फल आदि मंहगे हों। उत्तर में भयंकर वर्षा से बाढ़ की स्थिति बने। शासक एवम् शासित में तालमेल (सुखमय वातावरण) रहे। पूर्व में फसलें खराब हों। मध्यप्रदेश में किंवा अन्यत्र पांच मास तक शासकों में तालमेल न रहे। कहीं युद्धमय स्थिति बने–

" सिंहलग्ने पश्चिमायां दंष्ट्रामयमुदीरयेत्।
प्रान्ते समर्घता मास–षट्कं घनो महान्।।
पश्चिमायां धातुवस्तु फलादीनां महर्घता।
उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च।।
पूर्वस्यामर्घ–निष्पत्तिः श्रेयोऽग्रे मासपंचकम्।
मध्यदेशे राजयुद्धं मास–पंचकमादिशेत्।।"

वर्षेश(जगत)लग्न कुण्डली (सं. २०७० वि.)

वर्तमान संवत् २०७० वि. में चैत्र शुक्ल तृतीया (तात्कालिक चतुर्थी) शनिवार, तदनुसार १३/१४ अप्रैल, सन् २०१३ ई. को कत्तिका नक्षत्र, आयुष्मान् योग एवं वृषस्थ चन्द्र के समय २५ घं. २८ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर धनु लग्न के समय सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

वर्षेश(जगत)लग्नकुण्डली
(संवत् २०७० वि.)

१० | ८ | ११ | ९ | ७श.रा. | १२ बु. | ६ | सू.शु.मं.के.१ | ३ | ५ | गु. २ चं. | ४

१३/१४ अप्रैल, २०१३ ई.,२५घं. २८ मि(I.S.T.)

फल–मेष–संक्रमणकालीन कुण्डली में लग्नेश एवम् चतुर्थेश गुरु छठे भाव में उच्चस्थ चन्द्र के साथ शत्रु (शुक्र) के क्षेत्र में है। द्वितीयेश–तृतीयेश शनि राहु की सन्निधि में उच्चस्थ है। शनि वक्रगति है। मंगल, सूर्य, शुक्र, केतु पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। संकेत मिलता है, कि– अमेरिका, अफ़ग़ानिस्तान, अरबराष्ट्र, ईरान, कोरिया, पाक, बंगलादेश, सीरिया आदि में राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे। कहीं शासक एवम् शासित में आन्तरिक विद्रोह, कहीं सेना द्वारा अवांछनीय शासक के विरुद्ध सत्ता–हथियाना भी सम्भव है।

भारत के उत्तरांचल, महाराष्ट्र, आसाम, मणिपुर, उड़ीसा, जम्मू–काश्मीर, बिहार, दिल्ली, पश्चिमी बंगाल में आतंकी घटनाओं से जनधनहानि के योग भी हैं। भारत के दक्षिणी भूभाग पर समुद्री तूफान एवं कुछ प्रान्तों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जनधनहानि के योग भी इसवर्ष शासन को स्तब्ध कर सकते हैं। नववर्षप्रवेश तृतीया, शनिवार को होने से प्राकृतिक आपदाएं अधिक हानिप्रद होंगी।

श्रावण–भाद्रपद, आश्विन एवं माघ–फाल्गुन मास विशेष दुःखद घटनापूर्ण सिद्ध होंगे।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिए–

(१) प्रथम भाव से शरीरसुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि, (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्रीसुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म–कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख–साधनप्राप्ति, तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें–

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलामस्तृतीये च - कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु पराजयःस्यात्।।"

"स्त्री–सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः।
लाभे लाभः सुख–धनचयो दुःख–दारिद्र्यमन्त्ये
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने।।"

यदि " जगत्लग्न " अपने ' जन्मलग्न ' से 6, 8, या 12वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा– ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा–विचार (सन् २०१३-१४ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

संवत् २०६६ वि. में कार्त्तिक शुक्ल–तृतीया शुक्रवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०१२ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन शुक्रवार होने से हिजरी सन् १४३४ का बादशाह शुक्र ही होगा।

फल– शासकों, राजनैतिक दलों में परस्पर राजनैतिक संघर्ष की स्थिति बने। कई मुस्लिम राष्ट्रों में भयंकर युद्ध की स्थिति बनेगी। वर्षा समय पर न हो, अग्निकाण्ड एवं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि हो। चोर–उच्चकों से सावधान रहें। शासकवर्ग प्रजाहितार्थ काम करे। जनजीवनोपयोगी किंवा खाद्य वस्तुओं में बहुत महंगाई होगी। पशुओं में रोग व्याप्त हो।

सवत् २०७० वि. में कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया मंगलवार, तदनुसार ५ नवम्बर, सन् २०१३ ई. को यकम (१) मुहर्रम वाले दिन मुस्लिम सन् १४३५ का उदय होगा।

यहां यकम मुहर्रम वाले दिन मंगलवार होने से इस हिजरी सन् १४३५ का बादशाह मंगल होगा।

फल– अनेक प्रान्तों एवम् मुस्लिम देशों में अनेकत्र अकाल की स्थिति बनेगी। वर्षा समय पर न हो, खड़ी फसलें नष्ट हों, व्यापारीवर्ग धान्य किंवा खाद्यफसलों की कमी से अनुचित लाभ लें। मुस्लिम राष्ट्रविशेष की स्थिति चिन्तनीय हो, कहीं यावनराष्ट्र में आन्तरिक युद्ध की स्थिति बने। पशुओं को बीमारी से हानि हो। फल, धान की कमी रहे। गुड़, शक्कर, कपास, तिलहन, गेहूं, सोना, चान्दी के भाव आकाश को छूएं। कुछ स्थानों पर भयंकर अग्निकाण्ड, तूफान, सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि हो।

आय–व्यय–चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ–व्यय–अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

विशेष– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सैंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल– ये सब कूट–पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात–पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से भी मुक्ति मिलती है।

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2070 वि.)

लेखक- प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)-134109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए. - प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

(1) वासन्त नवरात्रसमाप्ति (पारणा)(चैत्र शुक्ल नवमी)

नवरात्र की पारणा नवमी को की जाए या दशमी को ?- इस विषय में दोनों मतों के पक्ष-विपक्ष में परस्पर विरोधी शास्त्रवाक्य मलते हैं। जैसे-

"दशम्या मिश्रिता यत्र पारणे नवमी भवेत्।
सप्तजन्मकृतं पुण्यं तत्क्षणादेव नश्यति।।"

लेकिन मीमांसकों ने यहां दशमी में ही पारणा का समर्थन किया है। क्योंकि नवमी में उपवास रखने के दृढ़ प्रमाण मिलते हैं। देखिए-

"तस्मादियं महापुण्या नवमी पापनाशिनी।
उपोष्या सुप्रयत्नेन सततं पार्थिवैरिति।।"- *(भविष्य)*

यदि नवमी की वृद्धि हो तो पहिली नवमी को उपवास और दूसरी नवमी के दिन दशमी में नवरात्रपारणा करनी चाहिए; -ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

इस अनुसार इसवर्ष वासन्तनवरात्र का अन्तिम (नवम) व्रत 19 अप्रैल, 2013 ई. को और इसकी समाप्ति (पारणा) 20 अप्रैल, 2013 ई. को नवमी की समाप्ति के बाद पूर्वाह्ण में ही होगी।

(2) श्रीगंगादशहरा (ज्येष्ठ शुक्ल दशमी)

पूर्वाह्णव्यापिनी ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को पृथ्वी पर गंगावतरण हुआ था। इसीलिए पूर्वाह्णव्यापिनी दशमी के दिन **'गंगादशहरा'** मनाया जाता है। यदि दशमी दो दिन पूर्वाह्णव्यापिनी हो तब निम्नांकित दस योगों में से अधिकतर योगों का संयोग जिस दिन हो, उसी दिन यह पर्व होता है। **ये दस योग इस प्रकार हैः-**

(1) ज्येष्ठमास, (2) शुक्लपक्ष, (3) दशमी तिथि, (4) बुधवार, (5) हस्त नक्षत्र, (6) व्यतिपात योग, (7) गरकरण, (8) आनन्द योग (बुध और हस्त के संयोग से उत्पन्न योग), (9) कन्यास्थ चन्द्र और (10) वृषस्थ रवि।

यदि दोनों दिन इन योगों की संख्या समान (5-5) हो जाए तो यह पर्व पहले दिन होगा- **"दशमी चैव कर्त्तव्या सदुर्गा मुनिसत्तम।"**

- *(स्कन्दपुराण)*

इसवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल दशमी 18 और 19 जून, 2013 ई.- दोनों दिन पूर्वाह्णव्यापिनी है। यहां उपरोक्त दशहरानिर्णायक दस योगों में से 5-5 योग दोनों दिन उपलब्ध हैं। 18 जून को पूर्वाह्ण में 5 योग [(i) ज्येष्ठ मास, (ii) शुक्ल पक्ष, (iii) दशमी तिथि, (iv) हस्तनक्षत्र, (v) कन्यास्थ चन्द्र] प्राप्त हैं। तथा च- 19 जून को भी 5 योग [(i) ज्येष्ठ मास, (ii) शुक्ल पक्ष, (iii) दशमी तिथि, (iv) बुधवार, (v) गरकरण] प्राप्त हैं। इस स्थिति में **"दशमी चैव कर्त्तव्या सदुर्गा मुनिसत्तम।"** "-प्रमाणानुसार **इसवर्ष गंगादशहरा नवमीयुता पूर्वाह्णव्यापिनी दशमी के दिन 18 जून को ही मनाया जाएगा।**

(3) निर्जला एकादशी (ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी)

इसवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी का क्षय है। इस स्थिति में धर्मशास्त्र-निर्णयानुसार **स्मार्त लोगों को एकादशी व्रत सूर्योदय-दशमीविद्धा एकादशी के ही दिन 19 जून, 2013 ई. के दिन तथा वैष्णवों को 20 जून के दिन करना होगा। इसका विस्तृत निर्णय इसप्रकार है-**

द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों को दशमीयुता एवं वैष्णवों को द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए।

यहां **पद्मपुराण** का वाक्य है-

**" एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः।।"**

इस वाक्यानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। अतः यहां **पद्मपुराण** का यह वाक्य प्रकारान्तरेण स्मार्त्तों को सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन एकादशीव्रत करने की ओर संकेत करता है। इसी स्थिति में दशमीमिश्रित एकादशी में व्रत करने का स्पष्ट निर्देश **वृद्धवसिष्ठ** के इस वाक्य में भी है–

"द्वादशी स्वल्पमल्पापि यदि न स्यात्परेऽहनि।
दशमी–मिश्रिता कार्या महापातकनाशिनी।।"

ध्यान दें– यहां **वृद्धवसिष्ठ** के इस विशेष वचनानुसार सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन स्मार्त्तों का व्रत निर्धारित किया गया है, जोकि **"उदयोपरि विद्धा तु दशम्यैकादशी यदि। दानवेभ्यः प्रीणनार्थं दत्तवान् पाकशासनः।।" कण्व** के इस सामान्य नियमानुसार निःसन्देह निषिद्ध है। लेकिन शास्त्रों द्वारा स्मार्त्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गई है। यदि इस (द्वादशीक्षय की) स्थिति में स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के साथ कर दिया जाए तो स्मार्त्तों को व्रत की पारणा त्रयोदशी में करने की स्थिति आ पड़ेगी। अतः अन्य विकल्प के अभाव में स्मार्त्तों को दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति दी गई है। **किंच–** इस प्रकार की स्थिति में जब स्मार्त्तों को त्रयोदशी में पारणा करने की नौबत आ पड़े तब दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति **ऋष्यशृंग** ने भी इस वाक्य में स्पष्ट दी है–

"पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयापि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः।।"

(4) मधुस्रवा तृतीया (श्रावण शुक्ल तृतीया)

मधुस्रवा पर्व, जिसे पंजाब आदि में संधारातीज भी कहा जाता है, चतुर्थीविद्धा श्रावण शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है–

"श्रावणशुक्ल–तृतीया मधुस्रवाख्या मुर्जरेषु प्रसिद्धा।
सा परयुता ग्राह्येति दिवोदासः।।"

– (*निर्णयसिन्धु*)

इसवर्ष श्रावण शुक्ल तृतीया 10 अगस्त, 2013 ई. को चतुर्थीविद्धा नहीं है, क्योंकि इसदिन यह त्रिमुहूर्तव्यापिनी नहीं है। अतः 9 अगस्त, **2013 ई. को ही यह पर्व मनाया जाएगा।**

(5) नागपंचमी (श्रावणशुक्ल–पंचमी)

परविद्धा (षष्ठीविद्धा) श्रावणशुक्ल–पंचमी के दिन यह पर्व मनाया जाता है– **पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।**

– (*चमत्कार–चिन्तामणि*)

परविद्धा पंचमी न मिलने पर इसे पहले ही दिन मनाया जाएगा।

इसवर्ष 12 अगस्त, 2013 ई. को पंचमी त्रिमुहूर्त्तन्यूना होने से परविद्धा नहीं है। **अतः यह पर्व पहले दिन 11 अगस्त को ही होगा।**

(6) रक्षाबन्धन (श्रावणी पूर्णिमा)

रक्षाबन्धन अपराह्नव्यापिनी श्रावण पूर्णिमा में मनाया जाता है। भद्रा में यह निषिद्ध है;– **"भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।"**

जब पहिले दिन अपराह्न में भद्रा हो, दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्तत्रयव्यापिनी हो और भले ही वह अपराह्न से पूर्व ही समाप्त हो जाए, तब भी दूसरे दिन अपराह्न में रक्षाबन्धन करना चाहिए। क्योंकि, उस समय साकल्यापादित पूर्णिमा का अस्तित्व होगा। **'पुरुषार्थ–चिन्तामणि'** कार का वचन है,– **"यदा द्वितीयापराह्णात् पूर्वं समाप्ता, तदापि 'भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये..... ......" इति भद्रायां निषेधादुत्तरैव। तत्र तिथ्यनुरोधेन अपराह्णात्पूर्वम् अनुष्ठाने अपराह्णस्य सर्वथा बाधापत्तेः, अपराह्ने ज्योतिशशास्त्रप्रसिद्ध–तिथ्यभावेऽपि साकल्य–बोधित–तिथि– सत्त्वात्तत्रैव अनुष्ठानम्।"**

जब दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्तत्रयव्यापिनी न हो तब अपराह्न में साकल्यापादित पूर्णिमा भी नहीं होगी– ऐसी स्थिति में पहिले दिन भद्रा समाप्त होने पर प्रदोष के उत्तरार्ध में रक्षाबन्धन करना चाहिए। **'पुरुषार्थचिन्तामणि'** का ही वाक्य है–**"यदा तूत्तरत्र मुहूर्त्तद्वय (त्रय) मध्ये किंचित् न्यूना पौर्णमासी तदापराह्ने सर्वथा तदभावात्, प्रदोष–पश्चिमौ यामौ दिनवत् कर्म चाचरेत्, इति पराशरात् भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठानम्।"**

धर्मसिन्धुकार भी कहते हैं– **"उदय–पूर्णिमायां त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे पूर्वेद्युः भद्रारहिते प्रदोषादिकाले कार्यम्।"**

इसवर्ष 20 अगस्त, 2013 ई. को अपराह्णव्यापिनी पूर्णिमा में भद्रादोष है और दूसरे दिन 21 अगस्त को यह पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी नहीं है। अतः पूर्वोक्त निर्णयानुसार **इसवर्ष 20 अगस्त को ही प्रदोषकाल के बाद भद्रारहितकाल में अर्थात् 20 घं. 49 मि. बाद रक्षाबन्धन करना चाहिए। इस स्थिति में रक्षाबन्धन निशीथ से पूर्व ही किया जाए– यह शास्त्रादेश है।**

20 अगस्त को पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, जम्मू–काश्मीर में प्रदोषकाल लगभग 18 घं. 55 मि. से 21 घं. 07 मि. तक रहेगा।

पंजाब आदि अनेक प्रान्तों मे परम्परा के अनुसार रक्षाबन्धन के लिए अपराह्णकाल को स्वीकार नहीं किया जाता और मध्याह्न से पूर्व (विशेषतया प्रातःकाल में) ही रक्षाबन्धन कर लिया जाता है। लेकिन भद्रा में तो रक्षाबन्धन शास्त्रों द्वारा सर्वथा वर्जित है।

(7) यजु उपाकर्म (श्रावण–पूर्णिमा)

सभी (शुक्ल, कृष्ण) यजुर्वेदियों के उपाकर्म के तीन काल हैं– (i) श्रावण पूर्णिमा, (ii) श्रावणशुक्ल–पंचमी, (iii) श्रावणशुक्ल में हस्त नक्षत्र। यहां उपाकर्म का मुख्यकाल श्रावणी पूर्णिमा है।

इन दोनों यजुर्वेदियों के उपाकर्म के दिन का निर्णय **धर्मसिन्धुकार** अनुसार निम्नांकित चार स्थितियों से सम्बद्ध है–

(i) यदि खण्डा तिथि होने पर पूर्णिमा पहले दिन कुछ मुहूर्त्त बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन छः मुहूर्त्तव्यापिनी हो तो सभी (शुक्ल एवं कृष्ण) यजुर्वेदियों का उपाकर्म दूसरे ही दिन होता है।

(ii) जब पूर्णिमा शुद्धाधिका होकर दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी हो तो सभी यजुर्वेदी पहले ही दिन उपाकर्म करते हैं।

(iii) यदि पूर्णिमा पहले दिन एक मुहूर्त्त या इससे अधिक काल बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन तीन मुहूर्त्त से अधिक और छः मुहूर्त्तों से कम हो तो कृष्ण यजुर्वेदियों का उपाकर्म दूसरे दिन और शुक्ल यजुर्वेदियों का पहले दिन होता है।

(iv) यदि पहले दिन कुछ मुहूर्त्त बाद पूर्णिमा प्रारम्भ होकर दूसरे दिन तीन मुहूर्त्त से कम हो अथवा क्षय हो जाने पर दूसरे दिन को स्पर्श ही न करे तो सभी यजुर्वेदियों का उपाकर्म पहले ही दिन होता है।

इस वर्ष पूर्णिमा पहले दिन (20 अगस्त, 2013 ई. को) लगभग 6 मुहूर्त्त बाद प्रारम्भ होकर दूसरे दिन (21 अगस्त को) 3 मुहूर्त्त से कम है। यह उपरोक्त चार स्थितियों में से चौथी स्थिति है। अतः इस स्थिति के निर्णयानुसार इस वर्ष शुक्ल एवम् कृष्ण– दोनों यजुर्वेदियों का उपाकर्म पहले ही दिन (20 अगस्त को) होगा।

(8) श्रीकृष्णजयन्ती योग (भाद्र. कृष्ण अष्टमी)

अर्धरात्रिव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी को चन्द्रोदय के समय रोहिणी नक्षत्र से योग होने पर कृष्णजन्माष्टमी को **'श्रीकृष्णजयन्ती'** के नाम से भी पुकारा जाता है। **इसवर्ष 28 अगस्त को अर्धरात्रिव्यापिनी चन्द्रोदयकालीन अष्टमी रोहिणीयुता है। अतः यहां 'श्रीकृष्णजयन्तीयोग' है।**

(9) दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शुक्ल अष्टमी)

यह व्रत स्त्रियों द्वारा भाद्र. शुक्ल अष्टमी को किया जाता है।

इस व्रत को **'रौहिण'** मुहूर्त्त (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त अष्टमी में करने का निर्देश है। रौहिण मुहूर्त्त के समय ज्येष्ठा और मूलनक्षत्र न हों– यह भी शास्त्रनिर्देश है। यदि ये नक्षत्र किसी स्थिति में वर्जित करने असम्भव हों तो इनके सम्पर्क में भी यह व्रत किया जा सकता है। अगस्त्य तारा के उदय (रात्रि में दृश्य) हो जाने पर इस व्रत का सर्वथा निषेध है। (अगस्त्य तारा वर्षा ऋतु की लगभग समाप्ति के दिनों में रात्रि के समय दक्षिण की ओर दिखाई देने लगता है)। ध्यान रहे–कन्यार्क भी इस व्रत में वर्जित है। सिंहस्थ सूर्य के काल मे इस व्रत के अनुष्ठान को महत्त्व दिया गया है–

" शुक्ले भाद्रपदे मासि दूर्वा–संज्ञा तु साष्टमी।
सिंहार्क एव कर्त्तव्या न कन्यार्के कदाचन।।"
सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनुदिते मुनिसत्तमे।" –(स्कन्द)

यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पहले ही अगस्त्य दृश्य हो जाए (रात्रि के समय आकाश में दिखाई देने लगे) तो शास्त्रकारों का कहना है कि– ऐसी स्थिति में भाद्रपद शुक्ल से निरन्तर पूर्ववर्ती ऐसे अन्य रौहिणव्यापिनी किसी भी कृष्ण या शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन यह व्रत करना चाहिए, जबकि अगस्त्य तारा अस्त (अदृश्य) हो।

इसवर्ष पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली आदि प्रदेशों में 18 सितंबर (भाद्र.शुक्ल अष्टमी) से पहले ही अगस्त्य उदय हो जाएगा। जिससे इसवर्ष भाद्र. शुक्ल अष्टमी को इन प्रदेशों में यह व्रत नहीं हो सकेगा। **अतः उपरोक्त निर्णयानुसार यह व्रत इसवर्ष रौहिण (नवम) मुहूर्तव्यापिनी भाद्र. कृष्ण अष्टमी, बुधवार (28 अगस्त) को ही किया जाएगा। इसदिन सूर्य सिंह राशि में भी है। ध्यान रहे– इस दिन श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत भी किया जाएगा। अतः व्रती को मध्याह्न में दूर्वापूजन और अर्धरात्रि में श्रीकृष्णपूजन करना होगा।**

(10) गोवर्धन–पूजा (कार्त्ति. शुक्ल प्रतिपदा)

कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन **'गोवर्धनपूजा'** एवम् इससे सम्बद्ध **'बलिपूजा'** तथा **'अन्नकूट'** पर्व मनाए जाते हैं। **पुराणकारों** की यह चेतावनी है कि– उसी दिन ये पर्व मनाए जाएं, जिस दिन शाम को चन्द्रदर्शन न हो, अन्यथा अनिष्ट होगा– **"गवां क्रीड़ादिने यत्र रात्रौ दृश्येत चन्द्रमाः। सोमो राजा पशून् हन्ति सुरभिः पूजकांस्तथा।।"** –*(पुराण–समुच्चय)*। इसलिए यदि शाम को सूर्यास्त के समय कार्त्तिक–शुक्ल प्रतिपदा के दिन चन्द्रदर्शन होने वाला हो तब गोक्रीड़ा, गोवर्धन–पूजादि– ये पर्व पूर्वयुता (अमायुता) प्रतिपदा के दिन ही करने चाहिएं। लेकिन चन्द्रदर्शन आज शाम को होगा या नहीं, इसका प्रतिज्ञापूर्वक निर्णय कर सकना गणितद्वारा भी कई बार दूषित वातावरणादि के कारण सम्भव नहीं होता, अतः ऐसे स्थलों पर गोक्रीड़ा आदि इन पर्वों का निर्णय कर सकना सचमुच समस्यापूर्ण है। अतः धर्मशास्त्रकारों ने इसका समाधान **'स्थूल चन्द्रदर्शन'** द्वारा किया है। उनका निर्णय है कि– उदयव्यापिनी प्रतिपदा के दिन यदि 'स्थूल चन्द्रदर्शन' का अभाव हो तो उस दिन गोक्रीड़ा आदि मनाने चाहिएं, अन्यथा इन्हें पूर्वयुता (अमायुता) प्रतिपदा के दिन मनाया जाए। उनका निर्देश है कि– यदि प्रतिपदा सूर्योदयानन्तर कम से कम 9 मुहूर्त तक विद्यमान हो तब उस दिन भले ही सूक्ष्म (वास्तविक) चन्द्रदर्शन शाम को हो जाए, लेकिन वहां 'स्थूल चन्द्रदर्शन' का अभाव माना जाए और तदनुसार गोक्रीड़ा आदि पर्व उसी दिन मनाए जाएं। यदि प्रतिपदा 9 मुहूर्त्त से कम हो तो उस दिन, भले ही सूक्ष्म चन्द्रदर्शन न हो, 'स्थूल चन्द्रदर्शन' मानकर इन पर्वों को पहिले दिन (अमायुता प्रतिपदा को) ही मनाना चाहिए।

इसवर्ष कार्त्तिक का चन्द्रदर्शन दक्षिणी केरल और दक्षिणी तामिलनाडू में 4 नवंबर को और शेष सम्पूर्ण भारत में 5 नवंबर को होगा– यह गणित द्वारा ज्ञात किया गया है (देखें– पृष्ठ **170** पर **"अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें"**)। अतः दक्षिण केरल और दक्षिण तामिलनाडू को छोड़कर भारत के शेष सभी प्रदेशों में **गोवर्धनपूजा, बलिपूजा** और **अन्नकूट पर्व 4 नवंबर, 2013 ई. (कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रवार) को ही निःशंक मनाए जाएंगे।** ध्यान रहे– वैसे भी यहां कार्त्ति. शुक्ल प्रतिपदा (4 नवं. को) सूर्योदयानन्तर 9 मुहूर्त्त से कहीं ज़्यादा (13 मुहूर्त्त) है। अतः इन प्रदेशों में स्थूल चन्द्रदर्शन भी नहीं है। इस दृष्टि से भी इन प्रदेशों में इसदिन गोवर्धनपूजा आदि पर्व युक्तियुक्त हैं। अब रही बात दक्षिण केरल और दक्षिण तामिलनाडू की। इन प्रदेशों में 4 नवंबर को सूर्योदय 6 घं. 9 मि., एवं सूर्यास्त 17 घं. 54 मि.के लगभग होगा। इससे भी गणना करने पर इन प्रदेशों में 4 नवंबर को कार्त्ति. शुक्ल पूर्णिमा सूर्योदयानन्तर लगभग 12 मुहूर्त्त तक विद्यमान सिद्ध होती है। इस प्रकार इन प्रदेशों में भी जहां गणितागत चन्द्रदर्शन है, स्थूल चन्द्रदर्शन का अभाव है। अतः इन प्रदेशों में भी गोवर्धनपूजादि पर्व 4 नवंबर को ही होंगे– यह सिद्ध है।

पाठक भ्रान्त न हों– तिथ्यादि पंचांग वाले पृष्ठ 125 और **145** पर हमने चन्द्रदर्शन 4 नवंबर को ही दर्शाया है। इसका पाठकों को हमारे उपरोक्त गोवर्धनपूजा–दिननिर्णय से विरोध नहीं समझना चाहिए, क्योंकि देश के किसी भी स्थल पर यदि चन्द्रदर्शन गणित से सिद्ध हो (या वस्तुतः दृश्य हो) तब मुस्लिम कैलेण्डर के नियमानुसार उसी दृश्य चन्द्रदर्शन की तारीख से ही पूरे देश में मुस्लमानी मास की प्रारम्भ–समाप्ति का निर्णय किया जाता है। क्योंकि, इसवर्ष दृश्य चन्द्रदर्शन केरल व तामिलनाडू के दक्षिणी भाग में 4 नवं. को ही होगा– यह गणित द्वारा समर्थित है, अतः

इसी आधार पर यहां चन्द्रदर्शन हमने 4 नवंबर, 2013 ई. को ही माना है और तदनुसार ही मुस्लिम मुहर्रम मास का प्रारम्भ 5 नवंबर को लिखा गया है। वैसे, इसदिन (4 नवं. को) स्थूल चन्द्रदर्शन नहीं है, जिसके आधार पर गोवर्धनपूजा आदि को भी इसी दिन बतलाया गया है।

(11) एकादशी व्रत (पौष कृष्ण)

यदि दशमी अरुणोदयकाल को स्पर्श कर रही हो (यानी दशमी का समाप्तिकाल 56 घड़ी से अधिक हो) तो दशमी द्वारा अरुणोदयवेध माना जाता है। इस स्थिति में वैष्णव दूसरे दिन (त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन) व्रत करते हैं। स्मार्त्त तो उसी दिन द्वादशीयुता एकादशी में व्रत कर लेते हैं, अर्थात् दशमी द्वारा अरुणोदयवेध स्मार्त्तों को त्याज्य नहीं है, यह वैष्णवों को त्याज्य है।

यहां प्रमाणार्थ '**गरुड़पुराण**' का यह वाक्य है–

"दशमी शेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः।
नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशी व्रतम्।।"

इसवर्ष पौषकृष्ण नवमी, शुक्रवार के दिन दशमी अरुणोदय को स्पर्श कर रही है। अतः **उपरोक्त प्रमाणानुसार स्मार्त्त लोग 28 दिसंबर, 2013 ई., शनिवार को और वैष्णव 29 दिसंबर, रविवार को एकादशीव्रत करेंगे।**

(12) एकादशी व्रत (फाल्गुन कृष्ण)

इसवर्ष स्मार्त्त और वैष्णवों के फाल्गुन कृष्ण एकादशी व्रत के दिनों का निर्णय भी उपरोक्त (पौष कृष्ण) एकादशी व्रत की तरह ही है।

इस निर्णय के अनुसार 25 फरवरी, 2014 ई. को स्मार्त और 26 फरवरी, 2014 ई. को वैष्णव इस वर्ष एकादशी व्रत करेंगे।

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं। लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह** जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशंस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफरीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* सोलन (हि.प्र.) निवासी चि. *श्रीकृष्णशर्मा, शास्त्री,* M.A., वेदाचार्य, साहित्याचार्य, ; नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा तथा *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि) भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्जवल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(११ से २५ अप्रैल तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्मऋतु।

मं. अस्त है। शु. २० अप्रै. से सायं पश्चिम में दिखाई देना शुरु हो जाएगा। प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में और शनि पश्चिमकपाल में होगा। सायं गु. को पश्चिम में देखें। २५ अप्रै. को चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	अप्रैल	चैत्र	ज.उ.स.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	४०	१	गु.	२४	४७	अश्वि.	४२	३७	वि.	५१	५३	ब.	२४	४७	२९	११	२१	२९	मेष			६	४	१८	४४	११	२७	१३	१८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, चान्द्रसंवत्सर २०७० वि. प्रारम्भ, (A)
३१	४५	२	शु.	२८	२३	भर.	४८	०	प्री.	५२	३१	कौ.	२८	२३	३०	१२	२२	ज.१	मेष			६	२	१८	४४	११	२८	१२	१२	मंगल अश्वि. मेष में ३३/५५, बुध उ.भा. में १५/३०, (B)
३१	४९	३	श.	३३	११	कृत्ति.	५४	२८	आ.	५४	२	तै.	०	४७	वै.१	१३	२३	२	वृष	४	३३	६	१	१८	४५	११	२९	११	३	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ४८/३७, मु. ३०, पुण्यकाल (C)
३१	५४	४	र.	३८	५६	रोहि.	६०	०	सौ.	५६	११	व.	६	०४	२	१४	२४	३	वृष			६	०	१८	४६	०	०	९	५२	भ. ६/०४ से ३८/५६ तक,
३१	५८	५	चं.	४५	१६	रोहि.	१	४६	शो.	५८	४१	ब.	१२	०६	३	१५	२५	४	मिथुन	३५	३८	५	५९	१८	४६	०	१	८	३८	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
३२	३	६	मं.	५१	४०	मृग.	९	३०	अ.	६०	०	कौ.	१८	२८	४	१६	२६	५	मिथुन			५	५८	१८	४७	०	२	७	२३	स्कन्द षष्ठी,
३२	७	७	बु.	५७	३५	आर्द्रा	१७	४	अ.	१	९	ग.	२४	३७	५	१७	२७	६	मिथुन			५	५७	१८	४८	०	३	६	५	भ. ५७/३५ बाद,
३२	११	८	गु.	६०	०	पुन.	२३	५७	सु.	३	१३	वि.	३०	०१	६	१८	२८	७	कर्क	७	२१	५	५६	१८	४८	०	४	४	४५	भ. ३०/०१ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु (D)
३२	१६	८	शु.	२	२७	पुष्य	२९	४०	धृ.	४	३०	ब.	२	२७	७	१९	२९	८	कर्क			५	५५	१८	४९	०	५	३	२३	सूर्य सायन वृष में ५४/०७, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (E)
३२	२०	९	श.	५	५३	आश्ले.	३३	५०	शू.	४	३५	कौ.	५	५३	८	२०	३०	९	सिंह	३३	५०	५	५४	१८	४९	०	६	१	५९	बुध रेवती में ५५/०५, शुक्र पश्चिम में उदित १८ घं.४६ मि.(F)
३२	२४	१०	र.	७	२८	मघा	३६	९	गं.	३	१६	ग.	७	२८	९	२१	वै.१	१०	सिंह			५	५२	१८	५०	०	७	०	३२	भ. ३७/१८ बाद, शुक्र भरणी में १५/४०, अगस्त्य अस्त, (G)
३२	२८	११	चं.	७	९	पू.फा.	३६	३६	वृ.	०	३०	वि.	७	९	१०	२२	२	११	कन्या	५१	२५	५	५१	१८	५१	०	७	५९	४	भ. ७/०६ तक, कामदा एकादशी व्रत(स.), दोलोत्सव,
									ध्रु.	५६	१४																			
३२	३३	१२	मं.	४	५७	उ.फा.	३५	१७	व्या.	५०	३४	बा.	४	५७	११	२३	३	१२	कन्या			५	५०	१८	५१	०	८	५७	३३	शुक्र बाल्य समाप्त १८ घं. ४६ मि.,श्रीविष्णु दमनोत्सव, (H)
३२	३७	१३	बु.	०	५९	हस्त	३२	२४	ह.	४३	४२	तै.	०	५९	१२	२४	४	१३	कन्या			५	४९	१८	५२	०	९	५६	०	भ. ५५/३७ बाद, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), श्रीशिवदमनोत्सव,
अवम		१४	बु.	५५	३७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३२	४१	१५	गु.	४९	७	चित्रा	२८	१४	व.	३५	५०	वि.	२२	२२	१३	२५	५	१४	तुला	०	२६	५	४८	१८	५३	०	१०	५४	२६	भ. २२/२२ तक, चैत्री पूर्णिमा, (I)

पराभव संवत्सर

शुक्र उदित- २० अप्रैल

चन्द्रग्रहण-२५/२६ अप्रैल

(A) वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्रप्राशन, चन्द्रव्रत, (B) प्लूटो वक्री ४७/३०, जमद उस्सानी मु. प्रारम्भ, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु रोहि. ४ में २६/०७, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, मेषसंक्रान्ति, वैशाखी (पं.), (D) नक्षत्र १५ घं. ३१ मि. तक), (E) श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त (देखें पृ. 106), (F) नवरात्र-पारणा (देखें पृ. 106), (G) शक वैशाख प्रारम्भ, (H) अनङ्ग त्रयोदशी (पूर्व-विद्धा), भौमप्रदोष व्रत, (I) श्री हनुमान् जयन्ती(द.भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 24),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० ५ ३ २४	३ १० २३ ४६	० ४ ५० ५	११ १३ २६ ५२	१ २१ २ २५	० १० ३१ ११	६ १४ ५२ १६	६ २३ ४६ ४२	० २३ ४६ ४२
५८ ३५	७३६ १०	४५ ३	६६ ५४	११ ३७	७४ १०	४ २८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२ अश्वि.	३ पुष्य	२ अश्वि.	४ उ.भा.	४ रोहि.	४ अश्वि.	३ स्वा.	२ विशा.	४ भर.

कुण्डली सूर्योदय (१६ अप्रैल)

- १: मं. शु. सू. के.
- २: गु.
- ३
- ४: चं.
- ५
- ६
- ७: श. रा.
- ८
- १०
- ११
- १२: बु.

लोक-भविष्यः- चैत्र चान्द्रमास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में वातावरण अशान्त रहे। यावन देशों में कहीं गृहयुद्ध का वातावरण बने। भारत के राजनीतिक पटल पर भी विशेष संशोधन, परिवर्तन के आसार हैं -"चैत्रमासे पंचवारे जीवो भ्रमति सन्ततम्। दुर्भिक्ष-देश-भंगाधिक्य-भंगस्य कारकम् ॥" पक्षारम्भ में मंगल-सूर्य का शनि-राहु के साथ समसप्तक योग इसवर्ष राजनैतिक परिवर्तन का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १२/१३ अप्रैल को एकनक्षत्र एवं एकराशिस्थ सूर्य-मंगल अनाज, दालवाना, गुड़, सोना, चान्दी एवं तिलहन में तेज़ी करे। २० अप्रैल को मेष राशि में शुक्रोदय भी अनाजों एवं अन्य जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेज़ी का संकेतक है-" मेषे शुक्रोदये धान्यं महर्घं रोगसंभवः।" चैत्री पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण खड़ी फसलों को हानि एवं रोगभय कारक है। **आकाशलक्षण :-** अप्रैल १२, १३, १६, २० एवं २३ को मुम्बई, प. राजस्थान, उ.प्र. के कुछ भागों एवं हि.प्र. में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उ.भारत में ग्रीष्म ऋतु के आसार बनें।

कुण्डली सूर्योदय (२५ अप्रै.)

- १: मं. शु. सू. के.
- २: गु.
- ३
- ४
- ५
- ६: चं.
- ७: श. रा.
- ८
- १०
- ११
- १२: बु.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० १० ५४ २६	५ २६ ४२ ६	० ६ १६ ३८	११ २३ ३३ २५	१ २२ १३ १४	० १७ ५५ ५१	६ १४ २५ १७	६ २३ ३० ३८	० २३ ३० ३८
५८ २३	८६८ २४	४४ ४५	१०७ ०	१२ ३	७४ ३	४ ३३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ अश्वि.	२ चित्रा	३ अश्वि.	३ रेव.	४ रोहि.	२ भर.	३ स्वा.	२ विशा.	४ भर.

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(२६ अप्रैल से १० मई तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

मं. अस्त है । बु. भी २६ अप्रै. से पूर्व में लुप्त हो जाएगा । प्रातः श. पश्चिमक्षितिजासन्न होगा । सायं गु. पश्चिम में और शु. पश्चिमक्षितिज में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. वैशाख	मु. ज.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३२	४५	१	शु.	४१	४९	स्वाती	२३	९	सि.	२७	१४	बा.	१५	२८	१४	२६	६	१५	तुला			५	४७	१८	५३	०	११	५२	४९	
३२	४९	२	श.	३४	४	विशा.	१७	३०	व्य.	१८	१२	तै.	७	५६	१५	२७	७	१६	वृश्चिक	३	५५	५	४६	१८	५४	०	१२	५१	११	सूर्य भरणी में २८/५८,
३२	५३	३	र.	२६	१४	अनु.	११	३८	व. प.	९ ५९	० ५२	व.	०	१०	१६	२८	८	१७	वृश्चिक			५	४५	१८	५५	०	१३	४९	३०	म. ०/१० से २६/१४ तक, बुध अश्वि. मेष में ३१/४२,(A)
३२	५७	४	चं.	१८	३७	ज्येष्ठा	५	५५	शि.	५१	८	बा.	१८	३७	१७	२९	९	१८	धनु	५	५५	५	४४	१८	५५	०	१४	४७	४९	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ४४ मि.,
३३	१	५	मं.	११	३१	मूल पू.षा.	० ५६	३७ ५	सि.	४२	५७	तै.	११	३१	१८	३०	१०	१९	धनु			५	४४	१८	५६	०	१५	४६	५	मंगल भरणी में २२/३०, गुरु मृग. १ में २७/५५,
३३	५	६	बु.	५	१२	उ.षा.	५२	२९	सा.	३५	३१	व.	५	१२	१९	म. १	११	२०	मकर	१०	७	५	४३	१८	५७	०	१६	४४	२०	म. ५/१२ से ३२/३० तक, मई प्रारम्भ,
अवम		७	बु.	५९	४९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३३	९	८	गु.	५५	३७	श्रव.	५०	१	शु.	२८	५७	बा.	२७	४३	२०	२	१२	२१	मकर			५	४२	१८	५७	०	१७	४२	३४	शुक्र कृत्ति. में ४/३२,
३३	१३	९	शु.	५२	३८	धनि.	४८	४६	शु.	२३	२२	तै.	२४	०७	२१	३	१३	२२	कुम्भ	१९	१५	५	४१	१८	५८	०	१८	४०	४६	पंचक प्रारम्भ १९/१५,
३३	१७	१०	श.	५०	५७	शत.	४८	४६	ब्र.	१८	४८	व.	२१	४८	२२	४	१४	२३	कुम्भ			५	४०	१८	५९	०	१९	३८	५६	म. २१/४८ से ५०/५७ तक, शुक्र वृष में ४७/०१,
३३	२०	११	र.	५०	३३	पू.भा.	५०	३	ऐं.	१५	१७	ब.	२०	४५	२३	५	१५	२४	मीन	३४	३८	५	३९	१८	५९	०	२०	३७	५	बुध भरणी में १८/५७, वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), (B)
३३	२४	१२	चं.	५१	२५	उ.भा.	५२	३४	वै.	१२	४६	कौ.	२०	५९	२४	६	१६	२५	मीन			५	३८	१९	०	०	२१	३५	१३	
३३	२८	१३	मं.	५३	३०	रेव.	५६	१६	वि.	११	१४	ग.	२२	२७	२५	७	१७	२६	मेष	५६	१६	५	३८	१९	१	०	२२	३३	२०	म. ५३/३० बाद, पंचक समाप्त ५६/१६, भौमप्रदोष व्रत,
३३	३१	१४	बु.	५६	४२	अश्वि.	६०	०	प्री.	१०	३७	वि.	२५	०५	२६	८	१८	२७	मेष			५	३७	१९	१	०	२३	३१	२५	म. २५/०५ तक,
३३	३५	३०	गु.	६०	०	अश्वि.	१	३	आ.	१०	५२	च.	२८	४८	२७	९	१९	२८	मेष			५	३६	१९	२	०	२४	२९	२८	व. शनि स्वाती २ में २५/४२, यूरेनस रेवती १ में १७/०२,
३३	३८	३०	शु.	०	५५	भर.	६	५१	सौ.	११	५३	ना.	०	५५	२८	१०	२०	२९	वृष	२३	२६	५	३५	१९	३	०	२५	२७	३०	

(A) राहु विशा. १, केतु भरणी ३ में २०/०५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	०	०	१	०	६	६	०
१७	११	१४	६	२३	२६	१३	२३	२३
४२	३७	३१	३८	३८	३३	५३	८	८
३४	५७	५०	२३	५६	४७	२४	२३	२३
५८	८३२	४४	११८	१२	७३	४	३	३
१२	३०	२४	५८	२६	५५	३३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२ मई)

२ गु. | १२
३ | १ सू. मं. बु. शु. के. | ११
४ | १० चं.
५ | ७ श. रा. | ९
६ | ८

लोक-भविष्य:- इस पक्ष में सू. मं. बु. शु. एवं केतु का शनि-राहु के साथ समसप्तकयोग चल रहा है । पाकिस्तान, सीरिया, ईरान आदि मुस्लिमराष्ट्रों में राजनैतिक हत्याकाण्ड किंवा उलट-फेर होंगे । समुद्रतटवर्ती भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के संकेत मिलते हैं- "युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ ।" छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं बंगाल आदि में आतंकवादियों द्वारा अशान्ति बने । इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने- " दुर्भिक्षं पञ्चमन्देषु ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- इस पक्ष में सू. बु. मं. मेषस्थ होने से सोना, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना आदि अनाज महंगे हों । चान्दी में झटके की मन्दी एवम् तिलहन तेज़ रहें । ३० अप्रैल को बाज़ार बदल सकता है, सावधान रहें । ४ मई को सोना-चान्दी में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेज़ी आए । पक्षान्त में अनाज कुछ तेज़ रहें । **आकाशलक्षण:-** अप्रैल २८, ३० एवं मई २, ४, ५ को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि. प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम, आसाम, केरल के कुछ भागों में मौनसून दस्तक देंगे । पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में गर्मी का प्रकोप रहेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१० मई)

२ गु. शु. | १२
३ | १ सू. मं. बु. चं. के. | ११
४ | १०
५ | ७ श. रा. | ९
६ | ८

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१० मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	०	०	१	१	६	६	०
२५	२५	२०	२३	२५	६	१३	२२	२२
२७	१४	२५	१२	२०	२४	१७	४२	४२
३०	२७	३८	७	२२	४४	३०	५७	५७
५८	७२२	४३	१२६	१२	७३	४	३	३
१	१४	५९	४०	५५	४७	२४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(११ से २५ मई तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

मं. अस्त है । बु. २३ मई को पश्चिम में उदित होगा । सायंकाल में श. पूर्व में उदय होता दिखाई देगा । इस समय गु. शु. पश्चिमक्षितिज के पास क्रमशः ऊपर-नीचे दिखाई देंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु. ज.उ.स.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	४२	१	श.	६	४	कृत्ति.	१३	२७	शो.	१३	३३	ब.	६	४	२९	११	२१	३०	वृष			५	३५	१९	३	०	२६	२५	३०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सूर्य कृत्ति. में १४/४७, बुध कृत्ति. में (A)
३३	४५	२	र.	११	५२	रोहि.	२०	४३	अ.	१५	४५	कौ.	११	५२	३०	१२	२२	र.१	मिथुन	५४	२९	५	३४	१९	४	०	२७	२३	२९	शुक्र रोहि. में ५४/५५, रजब मु. प्रारम्भ, श्री शिवाजी (B)
३३	४९	३	चं.	१८	६	मृग.	२८	२०	सु.	१८	१५	ग.	१८	६	३१	१३	२३	२	मिथुन			५	३३	१९	५	०	२८	२१	२६	भ. ५१/१७ बाद, बुध वृष में ७/४२, अक्षय तृतीया,
३३	५२	४	मं.	२४	२७	आर्द्रा	३६	१	धृ.	२०	५१	वि.	२४	२७	ज्ये.१	१४	२४	३	मिथुन			५	३२	१९	५	०	२९	१९	२१	भ. २४/२७ तक, सं. सूर्य वृष में ४२/०२, मु. ४५, (C)
३३	५५	५	बु.	३०	२९	पुन.	४३	२०	शू.	२३	१४	बा.	३०	२९	२	१५	२५	४	कर्क	२६	३५	५	३२	१९	६	१	०	१७	१५	श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	५८	६	गु.	३५	४७	पुष्य	४९	५१	गं.	२५	६	कौ.	३	०८	३	१६	२६	५	कर्क			५	३१	१९	७	१	१	१५	७	गुरु मृग. २ में ६/५२, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
३४	१	७	शु.	३९	५५	आश्ले.	५५	११	वृ.	२६	७	ग.	७	५१	४	१७	२७	६	सिंह	५५	११	५	३१	१९	७	१	२	१२	५७	भ. ३६/५५ बाद, बुध रोहि. में ४४/०७, श्रीगंगा जन्म,
३४	४	८	श.	४२	२९	मघा	५८	५४	धु.	२६	०	वि.	११	१२	५	१८	२८	७	सिंह			५	३०	१९	८	१	३	१०	४५	भ. ११/१२ तक, मंगल कृत्ति. में ३२/५७,
३४	७	९	र.	४३	१४	पू.फा.	६०	०	व्या.	२४	३२	बा.	१२	५१	६	१९	२९	८	सिंह			५	३०	१९	८	१	४	८	३२	श्रीजानकी जयन्ती,
३४	१०	१०	चं.	४२	३	पू.फा.	०	५०	ह.	२१	३२	तै.	१२	३८	७	२०	३०	९	कन्या	१६	२	५	२९	१९	९	१	५	६	१७	सूर्य सायन मिथुन में ५२/५२,
३४	१३	११	मं.	३८	५५	उ.फा. हस्त	० ५८	५० ५७	व.	१६	५९	व.	१०	२९	८	२१	३१	१०	कन्या			५	२८	१९	१०	१	६	४	०	भ. १०/२६ से ३८/५५ तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	१६	१२	बु.	३४	०	चित्रा	५५	२१	सि.	१०	५६	ब.	६	२७	९	२२	ज्ये.१	११	तुला	२७	२०	५	२८	१९	१०	१	७	१	४२	प्रदोषव्रत, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१९	१३	गु.	२७	३१	स्वाती	५०	१९	व्य. व.	३ ५४	२९ ५५	कौ.	०	४५	१०	२३	२	१२	तुला			५	२८	१९	११	१	७	५९	२३	मंगल वृष में ६/२०, शुक्र मृग. में ४७/०, बुध पश्चिम (D)
३४	२१	१४	शु.	१९	४७	विशा.	४४	१०	प.	४५	२८	व.	१९	४७	११	२४	३	१३	वृश्चिक	३०	४५	५	२७	१९	१२	१	८	५७	२	भ. १६/४७ से ४५/२८ तक, बुध मृग. में १३/३७, (E)
३४	२४	१५	श.	११	१०	अनु.	३७	२०	शि.	३५	२६	ब.	११	१०	१२	२५	४	१४	वृश्चिक			५	२७	१९	१२	१	९	५४	४०	सूर्य रोहि. में ५/४०, वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध(F)

(A) ३५/४७, (B) जयन्ती, श्रीपरशुराम जयन्ती (प्रदोषव्यापिनी तृतीया में), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (D) में उदित १६ घं. ११ मि., श्रीनृसिंह जयन्ती, (E) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	०	१	१	१	६	६	०
३	०	२६	१०	२७	१६	१२	२२	२२
१०	५६	१६	३४	४	१४	४३	१७	१७
४५	३३	४	३	५१	३२	२०	३१	३१
५७	७५४	४३	१२७	१३	७३	४	३	३
४७	१८	३४	४३	१४	३८	५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. २	मघा १	भर. ४	रोहि. १	मृग. २	रोहि. २	स्वा. २	विशा. १	भर. ३

कुण्डली सूर्योदय (१८ मई)

३ | १ मं. के. | २ सू. बु. गु. शु. | ४ | १२ | चं. ५ | ११ | ६ | ८ | १० | श. ७ रा. | ९

लोकभविष्यः- इस पक्ष में प्रतिपदा एवं पूर्णिमा शनिवारी हैं। शनि-राहु एवं मंगल-केतु का समसप्तकयोग यानदुर्घटना, अग्निकाण्ड से हानि एवं कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का संकेत दे रहा है।
मुस्लिम राष्ट्रविशेष में अराजकता का वातावरण रहे । मंगलवारी ज्येष्ठसंक्रान्ति 'महोदरी' संज्ञक है, अतः दक्षिण में उग्रवादजन्य हानि से सावधान रहें ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, घी, सोना-चान्दी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों तेज़ रहें । बाद में चान्दी, अफ़ीम में खास घटाबढ़ी होकर मन्दी हो । १३/१४ मई के लगभग सोना, चान्दी, गुड़, चीनी, तेल, तिलहन एवं अनाजों में तेज़ी रहे। सोना-चान्दी की खरीददारी विशेष हो । पक्षान्त में २३ मई के लगभग सोना, चान्दी, तांबा, लालचन्दन, केसर, जस्ता एवं शेयर बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी । पश्चात में घी, तिलहन, चना आदि तेज़ रहें ।

आकाशलक्षणः- मई ११ से १५, १७, १८ एवं २२, २३ मई को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, मुम्बई, हि. प्र., भूटान, आसाम एवं बिहार के कुछ क्षेत्रों में वायु-वर्षा के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२५ मई)

३ | १ के. | २ सू. बु. मं. गु. शु. | ४ | १२ | ५ | ११ | ६ | चं. ८ | १० | श. ७ रा. | ९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१	१	१	१	६	६	०
६	७	१	२४	२८	२४	१२	२१	२१
५४	१६	१६	४६	३८	४६	१५	५५	५५
४०	१४	५०	४५	११	३३	४६	१५	१५
५७	६०५	४३	११४	१३	७३	३	३	३
३६	४६	११	१५	२७	२६	४४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ४	अनु. २	कृत्ति. २	मृग. १	मृग. २	मृग. १	स्वा. २	विशा. १	भर. ३

श्री वि.सं. २०७०, शाक १९३५, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२६ मई से ८ जून तक, सन् २०१३ ई.) उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. रजब				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. पूर्ववत् अस्त है। गु. ६ जून को पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । सायं बु. शु. पश्चिमक्षितिज के पास और श. पूर्वकपाल में होगा ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२६	१	र.	२	४	ज्येष्ठा	३०	१२	सि.	२५	१०	कौ.	२	०४	१३	२६	५	१५	धनु	३०	१२	५	२६	१९	१३	१	१०	५२	१६	
अवम		२	र.	५२	५३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	२९	३	चं.	४४	२	मूल	२३	१४	सा.	१४	५९	व.	१८	२७	१४	२७	६	१६	धनु			५	२६	१९	१३	१	११	४९	५१	भ. १८/२७ से ४४/०२ तक, बुध मिथुन में ४८/१२,
३४	३१	४	मं.	३५	५४	पू.षा.	१६	४९	शु. शु.	५ ५६	१३ १०	ब.	९	५८	१५	२८	७	१७	मकर	३०	२०	५	२६	१९	१४	१	१२	४७	२६	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, गुरु अस्त- ६ जून
३४	३३	५	बु.	२८	५०	उ.षा.	११	२२	ब्र.	४८	७	कौ.	२	२२	१६	२९	८	१८	मकर			५	२५	१९	१५	१	१३	४४	५९	शुक्र मिथुन में १३/४५,
३४	३५	६	गु.	२३	८	श्रव.	७	१२	ऐं.	४१	१७	व.	२३	०८	१७	३०	९	१९	कुम्भ	३५	४१	५	२५	१९	१५	१	१४	४२	३१	भ. २३/०८ से ५१/०५ तक, पंचक प्रारम्भ ३५/४१,
३४	३७	७	शु.	१९	२	धनि.	४	३४	वै.	३५	४८	ब.	१९	०२	१८	३१	१०	२०	कुम्भ			५	२५	१९	१६	१	१५	४०	३	बुध आर्द्रा में ४४/५०, गुरु मृग. ३ मिथुन में ३/२८,
३४	३९	८	श.	१६	४१	शत.	३	३९	वि.	३१	४४	कौ.	१६	४१	१९	जू.१	११	२१	मीन	४९	७	५	२४	१९	१६	१	१६	३७	३३	जून प्रारम्भ,
३४	४१	९	र.	१६	५	पू.भा.	४	२८	प्री.	२९	४	ग.	१६	०५	२०	२	१२	२२	मीन			५	२४	१९	१७	१	१७	३५	३	भ. ४६/३७ बाद,
३४	४३	१०	चं.	१७	११	उ.भा.	६	५९	आ.	२७	४३	वि.	१७	११	२१	३	१३	२३	मीन			५	२४	१९	१७	१	१८	३२	३२	भ. १७/११ तक, शुक्र आर्द्रा में ४०/५०, गुरुवार्यक्य (A)
३४	४५	११	मं.	१९	४७	रेव.	१०	५९	सौ.	२७	३०	बा.	१९	४७	२२	४	१४	२४	मेष	१०	५९	५	२४	१९	१८	१	१९	३०	१	पंचक समाप्त १०/५६, अपरा एकादशी व्रत (स.), (B)
३४	४६	१२	बु.	२३	३९	अश्वि.	१६	१५	शो.	२८	१५	तै.	२३	३९	२३	५	१५	२५	मेष			५	२४	१९	१८	१	२०	२७	२९	प्रदोषव्रत,
३४	४८	१३	गु.	२८	३०	भर.	२२	३०	अ.	२९	४५	व.	२८	३०	२४	६	१६	२६	वृष	३९	१२	५	२४	१९	१९	१	२१	२४	५६	भ. २८/३० बाद, मंगल रोहि. में ७/५२, गुरु अस्त (C)
३४	४९	१४	शु.	३४	५	कृत्ति.	२९	२९	सु.	३१	४७	वि.	१	१७	२५	७	१७	२७	वृष			५	२३	१९	१९	१	२२	२२	२२	भ. १/१७ तक, नेप्च्यून वक्री २१/३२,
३४	५१	३०	श.	४०	७	रोहि.	३६	५५	धृ.	३४	११	च.	७	०६	२६	८	१८	२८	वृष			५	२३	१९	२०	१	२३	१९	४८	सूर्य मृग. में ०/३०, वट सावित्री व्रत (अमापक्ष), (D)

(A) प्रारम्भ १६ घं. १६ मि., (B) भद्रकाली एकादशी (पं.), (C) १६ घं. १६ मि., (D) भावुका अमा, शनैश्चरी अमा,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	२	२	२	६	६	०
१६	१६	६	७	०	३	११	२१	२१
३७	१४	२१	४	१२	२३	५१	३३	३३
३३	१६	१	४४	५२	३६	१	०	०
५७	७६०	४२	९३	१३	७३	३	३	३
३०	४२	४६	३२	३७	२३	९७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	शत. ४	कृत्ति. ३	आर्द्रा १	मृग. ३	मृग. ४	स्वा. २	वि. १	भ. ३

कुण्डली सूर्योदय (१ जून)

बु. ३ गु. शु.
१ के.
४
सू. २ मं.
१२
५
चं. ११
६
८
१०
श. ७ रा.
९

लोकभविष्यः– ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा रविवारी होने से वायुवेग से कई जगह हानि हो। शनि के साथ मंगल-सूर्य का षडष्टक राजनीतिज्ञों एवं राजनैतिक पार्टियों के लिए संघर्षपूर्ण स्थिति बनाएगा । महंगाई से जनता का आक्रोश बढ़ता जाएगा । पक्षमध्य में शु. गु. का मिथुन राशि में एकत्र होना कहीं भयंकर बाढ़, कहीं युद्धमय वातावरण से हानि एवं अशान्ति करे- "गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् । अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः ।।"

कुण्डली सूर्योदय (८ जून)

बु. ३ गु. शु.
१ के.
४
सू. चं. २ मं.
१२
५
११
६
८
१०
श. ७ रा.
९

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	२	२	२	६	६	०
२३	१६	११	१६	१	११	११	२१	२१
१९	५	१९	५५	४८	५६	२९	१०	१०
४८	४८	४०	४७	३२	५८	३६	४४	४४
५७	७१०	४२	७१	१३	७३	२	३	३
२५	४१	२८	५६	४३	१६	४५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	रोहि. २	रोहि. १	आर्द्रा ४	मृग. ३	आर्द्रा २	स्वा. २	वि. १	भ. ३

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः– पक्षारम्भ में गेहूं, जौ, चना, चावल तेज; अलसी, घी में घटाबढ़ी; कपास, तिलहन मन्दे रहें । २९ से ३१ मई तक रुई में वायदा व्यापारी ज़ोरदार मन्दे से लाभ लें । सोना, चान्दी, तांबा तेज़ रहें । ६/७ जून को सोना–चान्दी, लालमिर्च, दालवाना एवं शेयर तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः– मई २७ से ३१ एवं जून ३, ६, ७, ९ के लगभग मुम्बई, आसाम, उड़ीसा, केरल, हि. प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ वर्षा के योग बनते हैं।

श्री वि.सं. २०७०, शाक १९३५, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(९ से २३ जून तक, सन् २०१३ ई.)
उत्तर–दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु।

मं. गु. अस्त रहेंगे । सायं बु. शु. पश्चिमक्षितिज में और श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	तारीखें अं. जून	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. रजब	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५२	१	र.	४६	२१	मृग.	४४	३३	शू.	३६	४५	किं.	१३	१४	२७	९	१९	२९	मिथुन	१०	४३	५	२३	१९	२०	१	२४	१७	१३	
३४	५३	२	चं.	५२	३३	आर्द्रा	५२	१०	गं.	३९	२०	बा.	१९	२७	२८	१०	२०	३०	मिथुन			५	२३	१९	२०	१	२५	१४	३६	चन्द्रदर्शन, मु. १५, बुध पुन. में ४०/२०,
३४	५४	३	मं.	५८	२८	पुन.	५९	३०	वृ.	४१	४४	तै.	२५	३०	२९	११	२१	शा.१	कर्क	४२	४३	५	२३	१९	२१	१	२६	११	५९	रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती(राज.), शाबान (A)
३४	५५	४	बु.	६०	०	पुष्य	६०	०	धु.	४३	४५	व.	३१	०८	३०	१२	२२	२	कर्क			५	२३	१९	२१	१	२७	९	२१	भ. ३१/०८ बाद, बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
३४	५६	४	गु.	३	४९	पुष्य	६	१८	व्या.	४५	१२	वि.	३	४९	३१	१३	२३	३	कर्क			५	२३	१९	२२	१	२८	६	४३	भ. ३/४६ तक,
३४	५७	५	शु.	८	१८	आश्ले.	१२	१६	ह.	४५	४९	बा.	८	१८	आ.१	१४	२४	४	सिंह	१२	१६	५	२३	१९	२२	१	२९	४	३	सं. सूर्य मिथुन में ५८/५०, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (B)
३४	५७	६	श.	११	३६	मघा	१७	३	व.	४५	२४	तै.	११	३६	२	१५	२५	५	सिंह			५	२३	१९	२२	२	०	१	२२	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
३४	५८	७	र.	१३	२७	पू.फा.	२०	२४	सि.	४३	४३	व.	१३	२७	३	१६	२६	६	कन्या	३६	०	५	२४	१९	२३	२	०	५८	४१	भ. १३/२७ से ४३/३१ तक,
३४	५८	८	चं.	१३	३५	उ.फा.	२२	४	व्य.	४०	३७	ब.	१३	३५	४	१७	२७	७	कन्या			५	२४	१९	२३	२	१	५५	५८	
३४	५९	९	मं.	११	५३	हस्त	२१	५४	व.	३६	२	कौ.	११	५३	५	१८	२८	८	तुला	५१	८	५	२४	१९	२३	२	२	५३	१५	श्रीगंगा दशहरा (देखें पृष्ठ 106),
३४	५९	१०	बु.	८	२०	चित्रा	१९	५५	प.	२९	५७	ग.	८	२०	६	१९	२९	९	तुला			५	२४	१९	२३	२	३	५०	३१	भ. ३५/३९ बाद, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.), (C)
३४	५९	११	गु.	३	०	स्वाती	१६	१०	शि.	२२	२८	वि.	३	०	७	२०	३०	१०	वृश्चिक	५७	२१	५	२४	१९	२४	२	४	४७	४६	भ. ३/०० तक, निर्जला एकादशी व्रत (वै.)(देखें पृष्ठ 106),(D)
अवम		१२	गु.	५६	४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३४	५९	१३	शु.	४७	५२	विशा.	१०	५५	सि.	१२	४५	कौ.	२१	५८	८	२१	३१	११	वृश्चिक			५	२४	१९	२४	२	५	४५	१	सूर्य आर्द्रा में ५७/५२, सूर्य सायन कर्क में १२/५५, (E)
३४	५९	१४	श.	३८	४३	अनु. ज्येष्ठा	४ ५७	२७ ११	सा. शु.	४ ५२	४ ४१	ग.	१२	१७	९	२२	आ.१	१२	धनु	५७	११	५	२५	१९	२४	२	६	४२	१५	भ. ३८/४३ बाद, शुक्र कर्क में ४८/५५, शक आषाढ़ प्र.,(F)
३४	५९	१५	र.	२९	३	मूल	४९	३१	शु.	४२	५८	वि.	३	५३	१०	२३	२	१३	धनु			५	२५	१९	२४	२	७	३९	२८	भ. ३/५३ तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष),

(A) मु. प्रारम्भ, (B) दिन मध्याह्न तक, गुरु मृग. ४ में ३६/३०, शुक्र पुन. में ३६/१०, व. स्फुटे पू.षा. पू.षा.१ में १७/५५(C) (देखें पृष्ठ 106), (D) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (E) वर्षा ऋतु प्रारम्भ, दक्षिणायन प्रारम्भ, प्रदोषव्रत, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१	२	२	२	६	६	०
१	५	१७	२५	३	२२	११	२०	२०
५५	१४	३६	३६	५२	५५	७	४२	४२
५६	३३	५०	३१	१८	३७	५८	७	७
५७	७६३	४१	३६	१३	७३	१	३	३
१७	१०	५८	४४	४७	५	५६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. ३	उ.फा. ३	रोहि. ३	पुन. २	मृग. ४	पुन. १	स्वा. २	विशा. १	भर. ३

कुण्डली सूर्योदय (१७ जून)

४ | मं. २
बु. गु. सू. ३ शु.
५ | १ के.
६ चं. | १२
रा. ७ श. | ९ | ११
८ | १०

लोकभविष्य:- इस पक्ष में गु. शु. एकराशि में हैं एवं १४ जून को सूर्य भी इनके साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेता है । अतः गु. शु. एकत्र वर्षाकारक हैं, सूर्य वर्षा का अवरोधक होने से महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ती जाएगी । कई जगह बाढ़, कई जगह सूखा पड़ने से जनता परेशान रहे- "गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् । अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः ।।" शनि-मंगल का षडष्टक कहीं प्राकृतिक आपदा का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १० जून के लगभग चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में खासी मन्दी बने । १४ जून के लगभग चावल, बिनौला, तेल, सोना, चान्दी, रुई, कपास मन्दे हों । १५/१६ जून के लगभग बारदाना, कपास, तिलहन, गुड़, चीनी, घी, दालवाना तेज़ हों । २२/२३ जून को बाज़ार अस्थिर रहें ।

आकाशलक्षण:- जून १०, १४, १५, २१, २२ एवं २४ को हि. प्र., हरियाणा एवं पंजाब के कुछ क्षेत्रों में लू चले, तापमान अधिक रहे। भूटान, शिलांग, आसाम, मुम्बई, उड़ीसा, केरल में भारी वर्षा के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२३ जून)

शु. ४ | मं. २
गु. सू. ३ बु.
५ | १ के.
६ | १२
रा. ७ श. | चं. ९ | ११
८ | १०

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१	२	२	३	६	६	०
७	०	२१	२८	५	०	१०	२०	२०
३६	४६	५०	३५	१४	१३	५७	२३	२३
२६	२६	५०	६	५४	४३	२६	२	२
५७	६१६	४१	१३	१३	७२	१	३	३
१३	५६	४०	५७	४५	५६	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा १	मूल १	रोहि. ४	पुन. ३	मृग. ४	पुन. ४	स्वा. २	विशा. १	भर. ३

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(२४ जून से ८ जुलाई तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

मं. २८ जून को और गु. १ जुला. को पूर्व में उदित हो जाएगा। बु. १ जुला. को लुप्त होगा। सायंकाल शु. को पश्चिमक्षितिज में और श. को याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	तारीखें अं. जून	तारीखें श. आषाढ़	तारीखें मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५९	१	चं.	१९	१८	पू.षा.	४१	५८	ब्र.	३२	१७	कौ.	१९	१८	११	२४	३	१४	मकर	५५	८	५	२५	१९	२४	२	८	३६	४१	
३४	५८	२	मं.	९	५४	उ.षा.	३४	५९	ऐं.	२२	०	ग.	९	५४	१२	२५	४	१५	मकर			५	२५	१९	२५	२	९	३३	५४	भ. ३५/३७ बाद, मंगल मृग. में ८/४५, शुक्र पुष्य में ३३/३०,
३४	५८	३	बु.	१	१९	श्रव.	२९	१	वै.	१२	२९	वि.	१	१९	१३	२६	५	१६	कुम्भ	५६	३४	५	२६	१९	२५	२	१०	३१	६	भ. १/१६ तक, पंचक प्रारम्भ ५६/३४, बुध वक्री ३३/००,(A)
अवम		४	बु.	५३	५८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३४	५७	५	गु.	४८	१२	धनि.	२४	३०	वि. प्री.	४ ५७	४ १	कौ.	२१	०५	१४	२७	६	१७	कुम्भ			५	२६	१९	२५	२	११	२८	१९	गुरु उदित 1 जुलाई
३४	५६	६	शु.	४४	१९	शत.	२१	४६	आ.	५१	३३	ग.	१६	१५	१५	२८	७	१८	कुम्भ			५	२६	१९	२५	२	१२	२५	३१	भ. ४४/१६ बाद, मंगल उदित ५ घं. २६ मि.,
३४	५६	७	श.	४२	२९	पू.भा.	२१	१	सौ.	४७	४४	वि.	१३	२४	१६	२९	८	१९	मीन	६	१	५	२७	१९	२५	२	१३	२२	४३	भ. १३/२४ तक, गुरु आर्द्रा १ में १२/०२,
३४	५५	८	र.	४२	४३	उ.भा.	२२	१९	शो.	४५	३४	बा.	१२	३६	१७	३०	९	२०	मीन			५	२७	१९	२५	२	१४	१९	५६	राहु स्वाती ४, केतु भरणी २ में १४/४०,
३४	५४	९	चं.	४४	५३	रेव.	२५	३६	अ.	४४	५५	तै.	१३	४८	१८	जु. १	१०	२१	मेष	२५	३६	५	२७	१९	२५	२	१५	१७	८	पंचक समाप्त २५/३६, बुध पश्चिम में अस्त १९ घं. २५ मि.(B)
३४	५३	१०	मं.	४८	४१	अश्वि.	३०	३१	सु.	४५	३१	व.	१६	४७	१९	२	११	२२	मेष			५	२८	१९	२५	२	१६	१४	२१	भ. १६/४७ से ४८/४१ तक,
३४	५२	११	बु.	५३	४३	भर.	३६	४६	धृ.	४७	६	ब.	२१	१२	२०	३	१२	२३	वृष	५३	३०	५	२८	१९	२५	२	१७	११	३४	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५०	१२	गु.	५९	३३	कृत्ति.	४३	५४	शू.	४९	१९	कौ.	२६	३८	२१	४	१३	२४	वृष			५	२९	१९	२५	२	१८	८	४७	मंगल मिथुन में ४६/१७, गुरु बाल्य समाप्त ५ घं. २७ मि.,
३४	४९	१३	शु.	६०	०	रोहि.	५१	३०	गं.	५१	५३	ग.	३२	३९	२२	५	१४	२५	वृष			५	२९	१९	२५	२	१९	६	०	सूर्य पुन. में ५६/४०, प्रदोषव्रत,
३४	४८	१३	श.	५	४६	मृग.	५९	१२	वृ.	५४	३२	व.	५	४६	२३	६	१५	२६	मिथुन	२५	२२	५	२९	१९	२५	२	२०	३	१३	भ. ५/४६ से ३८/५४ तक, शुक्र आश्ले. में ३३/००,
३४	४६	१४	र.	१२	२	आर्द्रा	६०	०	ध्रु.	५७	३	श.	१२	०२	२४	७	१६	२७	मिथुन			५	३०	१९	२४	२	२१	०	२७	
३४	४५	३०	चं.	१८	४	आर्द्रा	६	४२	व्या.	५९	१६	ना.	१८	०४	२५	८	१७	२८	कर्क	५७	७	५	३०	१९	२४	२	२१	५७	४१	शनि मार्गी १३/०२, सोमवती अमावस,

(A) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (B) गुरु उदित ५घं. २७ मि., जुलाई प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	१	२	२	३	६	६	०
१४	११	२६	२८	६	८	१०	२०	२०
१९	५३	४१	३७	५०	४३	४९	०	०
५६	२३	२१	०	५८	४६	२९	४६	४६
५७	७६७	४१	९७	१३	७२	०	३	३
१२	२२	९८	२४	४१	४७	४६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	उ.भा. ३	मृग. २	पुन. ३	आश्ले. १	पुष्य २	स्वा. २	विशा. १	भर. ३

कुण्डली सूर्योदय (३० जून)

शु. ४ | मं. २
गु. सू. ३ बु.
५ | १ के.
६ | १२ चं.
रा. ७ श. | ९ | ११
८ | १०

लोकभविष्यः- इसपक्ष में भी रा. श. का एकराशि एवं एकनक्षत्र-सम्बन्ध चल रहा है, जोकि कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाएगा, कहीं उग्रवादजन्य अपराध एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि कराए - "यदा राहुस्तुलां यातः क्रूरः क्रूरसमन्वितः । मेदिन्यां सस्यनाशः स्याद् दुर्भिक्षं तत्र दारुणम् ॥" इस पक्ष में ६ जुलाई से पंचग्रहीयोग भी कहीं बाढ़ व सुनामी से, कहीं अराजकता से हानि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में तेल, तिलहन, रुई, सूत, ऊन, अनाज तेज़ रहें। २५ जून के लगभग वायदा बाज़ार मन्दे रहें। २९ जून के लगभग सोना, चान्दी, तांबा, लौंग, नमक, कालीमिर्च, गुड़, रुई, चान्दी, तिलहन तेज़ रहें। ३० जून से ३ जुलाई तक बाज़ार का रुख बदल सकता है। ४ जुलाई से सोना, गुड़, खाण्ड, अलसी, अफीम, तांबा, कुसुम्भ खास तेज़ रहें। आगे बाज़ार अस्थिर रहें।

आकाशलक्षणः- जून २४ से २८ तक एवं ३० जून से ८ जुलाई तक मुम्बई, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., हि.प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़ में व्यापक वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (८ जुला.)

शु. ४ | २
मं. गु. सू. ३ बु. चं.
५ | १ के.
६ | १२
रा. ७ श. | ९ | ११
८ | १०

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	२	२	३	६	६	०
२१	१८	२	२४	८	१८	१०	१९	१९
५७	४०	१०	४६	४०	२५	४६	३५	३५
४१	८	२३	४९	०	२२	८	२०	२०
५७	७१४	४०	३७	१३	७२	०	३	३
१४	५	५५	४९	३२	३६	१	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. १	श्ले. ४	पुन. ३	पुन. २	श्ले. १	आश्ले. १	स्वा. २	स्वा. ४	भर. २

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(९ से २२ जुलाई तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

बुध १६ जुला. को पूर्व में उदित होगा। प्रातः मं. गु. पूर्वक्षितिज में; सायं शु. पश्चिम में और श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. शाबान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४३	१	मं.	२३	३९	पुन.	१३	५०	ह.	६०	०	ब.	२३	३९	२६	९	१८	२९	कर्क			५	३१	१९	२४	२	२२	५४	५४	
३४	४१	२	बु.	२८	३८	पुष्य	२०	२४	ह.	१	४	कौ.	२८	३८	२७	१०	१९	३०	कर्क			५	३१	१९	२४	२	२३	५२	८	चन्द्रदर्शन, मु. १५, रथयात्रा (श्रीजगदीश रथोत्सव) पुरी, (A)
३४	३९	३	गु.	३२	५२	आश्ले.	२६	१६	व.	२	२१	तै.	०	४४	२८	११	२०	र.१	सिंह	२६	१६	५	३२	१९	२४	२	२४	४९	२२	रमज़ान मु. प्रारम्भ,
३४	३७	४	शु.	३६	१२	मघा	३१	१६	सि.	२	५९	व.	४	३२	२९	१२	२१	२	सिंह			५	३२	१९	२३	२	२५	४६	३६	भ. ४/३२ से ३६/१२ तक,
३४	३५	५	श.	३८	२६	पू.फा.	३५	१३	व्य.	२	५२	ब.	७	१९	३०	१३	२२	३	कन्या	५१	२	५	३३	१९	२३	२	२६	४३	५०	गुरु आर्द्रा २ में ५६/०५,
३४	३३	६	र.	३९	२४	उ.फा.	३७	५७	व. प.	१ ५९	४९ ४३	कौ.	८	५५	३१	१४	२३	४	कन्या			५	३४	१९	२३	२	२७	४१	४	मंगल आर्द्रा में ३६/४३, कुमार षष्ठी,
३४	३१	७	चं.	३८	५४	हस्त	३९	१४	शि.	५६	२५	ग.	९	०९	३२	१५	२४	५	कन्या			५	३४	१९	२२	२	२८	३८	१८	भ. ३८/५४ बाद, विवस्वत् सप्तमी,
३४	२८	८	मं.	३६	५०	चित्रा	३८	५८	सि.	५१	४९	वि.	७	५२	श्रा.१	१६	२५	६	तुला	९	१८	५	३५	१९	२२	२	२९	३५	३२	भ. ७/५२ तक, सं. सूर्य कर्क में २५/२५, मु. ३०, (B)
३४	२६	९	बु.	३३	६	स्वाती	३७	५	सा.	४५	५३	बा.	४	५८	२	१७	२६	७	तुला			५	३५	१९	२२	३	०	३२	४६	शुक्र मघा सिंह में ३४/५५, यूरेनस वक्री ४३/१२,
३४	२४	१०	गु.	२७	४७	विशा.	३३	३५	शु.	३८	४०	तै.	०	२६	३	१८	२७	८	वृश्चिक	१९	३५	५	३६	१९	२१	३	१	३०	०	भ. ५४/२३ बाद,
३४	२१	११	शु.	२१	०	अनु.	२८	४०	शु.	३०	१६	वि.	२१	००	४	१९	२८	९	वृश्चिक			५	३६	१९	२१	३	२	२७	१५	भ. २१/०० तक, सूर्य पुष्य में ५५/०२, बुध पूर्व में (C)
३४	१८	१२	श.	१३	०	ज्येष्ठा	२२	३३	ब्र.	२०	५४	बा.	१३	००	५	२०	२९	१०	धनु	२२	३३	५	३७	१९	२०	३	३	२४	२९	बुध मार्गी ४५/३५, शनि प्रदोषव्रत,
३४	१६	१३	र.	४	८	मूल	१५	३७	ऐं.	१०	५०	तै	४	०८	६	२१	३०	११	धनु			५	३७	१९	२०	३	४	२१	४४	भ. ५४/४५ बाद,
अवम		१४	र.	५४	४५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	१३	१५	चं.	४५	१८	पू.षा.	८	१६	वै. वि.	० ४९	२५ ५७	वि.	२०	०२	७	२२	३१	१२	मकर	२१	२३	५	३८	१९	१९	३	५	१९	०	भ. २०/०२ तक, सूर्य सायन सिंह में ३६/२७, गुरु पूर्णिमा (D)

(A) (पुष्य नक्षत्र १३ घं. ४१ मि. तक), (B) पुण्यकाल सारादिन, व. बुध आर्द्रा में ४८/१५, (C) उदित ५ घं. ३६ मि., हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु शयनोत्सव, (D) (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	२	२	२	३	६	६	०
२९	२७	७	२०	१०	२८	१०	१९	१९
३५	५३	३६	१७	२७	५	४९	९	९
३३	१०	११	१०	३४	१८	६	५४	५४
५७	८१०	४०	२१	१३	७२	०	३	३
१४	५६	२९	१५	१९	२१	४९	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१६ जुलाई)

शु. ४ | २
मं. गु. सू. ३ बु.
५ | १ के.
६ चं. | १२
रा. ७ श. | ९ | ११
८ | १०

लोकभविष्य :- इस पक्ष में मंगलवारी प्रतिपदा, अष्टमी को मंगलवारी संक्रान्ति एवं शनिवारी पंचमी होने से अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि हो। कहीं समुद्री तूफान, भयंकर बाढ़ किंवा भूकम्प एवं तूफान आदि प्राकृतिक आपदा से भारी हानि सम्भव है -" वृष्टिः सुवृष्टिरतिवृष्टिरूर्ध्वं वातः प्रवातः प्रलयंकरः स्यात् ।" लेकिन भारत-भू पर धनधान्य-समृद्धि एवं सुखमय वातावरण रहे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में बाज़ार मन्दे रहें । १३ से १६ जुलाई तक सोना, तांबा, चान्दी, लौंग, मसाले, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, तिल, सरसों, बादाम, ऊन, सुपारी, लालचन्दन, जौ, चना, गेहूं तेज़ रहें। २० जुलाई से बाज़ार नर्म हो सकते हैं।

आकाशलक्षण:- १३ से २० जुलाई तक भारत के उत्तरी-पश्चिमी भागों में धायुवेग के साथ व्यापक वर्षा के योग हैं । कहीं आंधी-तूफान, कहीं बाढ़ से हानि भी संभव है ।

कुण्डली सूर्योदय(२२ जुला.)

५ शु. | ३ मं. बु. गु.
६ | ४ सू. | २
७ श. रा. | के. १
८ | १० | १२
चं. ९ | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	२	२	२	४	६	६	०
५	२४	११	१९	११	५	१०	१८	१८
१९	२९	३८	२३	४६	१८	५५	५०	५०
०	१६	२२	१	५४	५३	२७	४९	४९
५७	९१०	४०	९	१३	७२	१	३	३
१६	४०	११	४९	६	८	२४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, श्रावण कृष्ण पक्ष ८

(२३ जुलाई से ६ अगस्त तक, सन् २०१३ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

प्रातः मं. बु. गु. पूर्व में दिखाई देंगे । सायं शु. पश्चिम में और श. याम्योत्तरवृत्त-लंघन करता दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	तारीखें अं. जुलाई	तारीखें श. श्रावण	तारीखें मु. रमज़ान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१०	१	मं.	३६	१५	उ.षा. श्रव.	० ५४	५९ १४	प्री.	३९	५१	बा.	१०	४६	८	२३	१	१३	मकर			५	३९	१९	१९	३	६	१६	१६	शक श्रावण प्रारम्भ,
३४	७	२	बु.	२८	२	धनि.	४८	२९	आ.	३०	३०	तै.	२	०८	९	२४	२	१४	कुम्भ	२१	१०	५	३९	१९	१८	३	७	१३	३२	भ. ५४/३५ बाद, पंचक प्रारम्भ २१/१०, बुध पुन. में (A)
३४	४	३	गु.	२१	६	शत.	४४	१२	सौ.	२२	१४	वि.	२१	०६	१०	२५	३	१५	कुम्भ			५	४०	१९	१८	३	८	१०	४९	भ. २१/०६ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	१	४	शु.	१५	५१	पू.भा.	४१	४३	शो.	१५	२१	बा.	१५	५१	११	२६	४	१६	मीन	२७	९	५	४०	१९	१७	३	९	८	७	
३३	५८	५	श.	१२	३५	उ.भा.	४१	१९	अ.	१०	५	तै.	१२	३५	१२	२७	५	१७	मीन			५	४१	१९	१६	३	१०	५	२५	
३३	५५	६	र.	११	२८	रेव.	४३	५	सु.	६	३३	व.	११	२८	१३	२८	६	१८	मेष	४३	५	५	४२	१९	१६	३	११	२	४५	भ. ११/२८ से ४२/०० तक, पंचक समाप्त ४३/०५, (B)
३३	५२	७	चं.	१२	३०	अश्वि.	४६	४९	धृ.	४	४४	ब.	१२	३०	१४	२९	७	१९	मेष			५	४२	१९	१५	३	१२	०	६	गुरु आर्द्रा ३ में १०/२०,
३३	४९	८	मं.	१५	३०	भर.	५२	१८	शू.	४	२८	कौ.	१५	३०	१५	३०	८	२०	मेष			५	४३	१९	१४	३	१२	५७	२७	
३३	४५	९	बु.	२०	५	कृत्ति.	५९	३	गं.	५	२९	ग.	२०	०५	१६	३१	९	२१	वृष	८	५३	५	४३	१९	१४	३	१३	५४	५०	भ. ५२/५५ बाद,
३३	४२	१०	गु.	२५	४५	रोहि.	६०	०	वृ.	७	२६	वि.	२५	४५	१७	अ. १	१०	२२	वृष			५	४४	१९	१३	३	१४	५२	१४	भ. २५/४५ तक, अगस्त प्रारम्भ,
३३	३९	११	शु.	३१	५९	रोहि.	६	३१	ध्रु.	९	५५	बा.	३१	५९	१८	२	११	२३	मिथुन	४०	२४	५	४५	१९	१२	३	१५	४९	३९	सूर्य आश्ले. में ५१/५७, कामिका एकादशी व्रत (स.),
३३	३५	१२	श.	३८	१५	मृग.	१४	१३	व्या.	१२	३३	कौ.	५	०७	१९	३	१२	२४	मिथुन			५	४५	१९	११	३	१६	४७	५	मंगल पुन. में ३३/२२,
३३	३२	१३	र.	४४	९	आर्द्रा	२१	४२	ह.	१५	०	ग.	११	१२	२०	४	१३	२५	मिथुन			५	४६	१९	११	३	१७	४४	३२	भ. ४४/०९ बाद, बुध कर्क में ३६/१७, प्रदोषव्रत,
३३	२८	१४	चं.	४९	२५	पुन.	२८	३८	व.	१७	३	वि.	१६	४७	२१	५	१४	२६	कर्क	११	५८	५	४७	१९	१०	३	१८	४२	०	भ. १६/४७ तक, श्रावण शिवरात्रि,
३३	२४	३०	मं.	५३	५३	पुष्य	३४	५१	सि.	१८	३२	च.	२१	३९	२२	६	१५	२७	कर्क			५	४७	१९	९	३	१९	३९	२९	बुध पुष्य में ५३/३२, हरियाली अमा, मौमवती अमा ,

(A) ३९/४५, अशून्यशयन व्रत, (B) शुक्र पू.फा. में ४०/१५,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	२	२	४	६	६	०
१२	१५	१६	२३	१३	१४	११	१८	१८
५७	५६	५८	२६	३०	५४	६	२५	२५
२८	१२	३४	६	२६	५६	१६	२३	२३
५७	७३०	३६	५६	१२	७१	२	३	३
२२	१२	४६	४०	४४	५१	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ३	भर. १	आर्द्रा ४	पुन. २	आर्द्रा ३	पू.फा. १	स्वा. २	स्वा. ४	भ. २

कुण्डली सूर्योदय(३० जुला.)

५ शु. | ३ मं. बु. गु. | ६ | ४ सू. | २ | ७ श. रा. | चं. १ के. | ८ | १० | १२ | ९ | ११

लोकभविष्यः- श्रावण चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार होने से वरिष्ठ व्यक्तिविशेष के लिए समय कष्टप्रद रहेगा । राजनीतिज्ञों एवं गण्यमान्य व्यक्तियों को सुरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ रखनी चाहिए -" मंगले म्रियते राजा बुधे रसक्षयो भवेत्।"

कहीं खड़ी फसलों को हानि भी पहुंचे । सूर्य पर शनि की दृष्टि प्रयान राजनायकों के लिए नेष्ट है, लेकिन शनि पर गुरु की दृष्टि रक्षाकारक है। इस चान्द्रमास २३ जुला. से २१ अग. तक की समयावधि विशेष प्राकृतिक आपदाओं एवं संकटापन्न स्थिति वाली रहेगी ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में २८ जुलाई तक अनाज, चान्दी, रुई, कपास, सूत में झटके की मन्दी बने । २६ जुलाई से ४ अगस्त तक सोना-चान्दी, गुड़, खाण्ड, तिलहन, दालदाना तेज़ रहें। ४ अग. के लगभग सोना, चान्दी में ज़ोरदार मन्दा बन सकता है। ६ अग. के लगभग बाज़ार तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः- जुलाई २४, २८, २९, ३०; अगस्त २, ३, ४, ६ को हि. प्र., उ. प्र., पंजाब, जम्मू-काश्मीर, हरियाणा आदि में व्यापक वर्षा के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (६ अग.)

५ शु. | ३ मं. गु. | ६ | सू. चं. ४ बु. | २ | ७ श. रा. | १ के. | ८ | १० | १२ | ९ | ११

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	२	३	२	४	६	६	०
१९	६	२१	१	१४	२३	११	१८	१८
३९	२९	३६	५६	५८	१७	२६	३	३
३०	१४	१७	६	३५	४	१६	७	७
५७	७२८	३९	६२	१२	७१	२	३	३
३०	२७	२९	४८	२२	३४	४८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. १	पुष्य २	पुन. १	पुन. ४	आर्द्रा ३	पू.फा. ३	स्वा. २	स्वा. ४	भ. २

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, श्रावण शुक्ल पक्ष ६																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(७ से २१ अगस्त तक, सन् २०१३ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु । बु. १२ अग. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा । प्रातः मं. गु. पूर्वकपाल में होंगे । सायं शु. पश्चिम में और श. पश्चिमकपाल में होगा ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. रमज़ान				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	२१	१	बु.	५७	२८	आश्ले.	४०	१३	व्य.	१९	२२	किं.	२५	४०		२३	७	१६	२८	सिंह	४०	१३	५	४८	१९	८	३	२०	३७	०	
३३	१७	२	गु.	६०	०	मघा	४४	४२	व.	१९	३०	बा.	२८	४८		२४	८	१७	२९	सिंह			५	४८	१९	७	३	२१	३४	३१	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र उ.फा. में ४६/२७,
३३	१३	२	शु.	०	८	पू.फा.	४८	१८	प.	१८	५५	कौ.	०	०८		२५	९	१८	श.१	सिंह			५	४९	१९	६	३	२२	३२	३	मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज), (देखें पृ. 107), शव्वाल (A)
३३	९	३	श.	१	५२	उ.फा.	५०	५६	शि.	१७	३५	ग.	१	५२		२६	१०	१९	२	कन्या	४	३	५	५०	१९	५	३	२३	२९	३६	भ. ३२/१४ बाद,
३३	६	४	र.	२	३६	हस्त	५२	३३	सि.	१५	२८	वि.	२	३६		२७	११	२०	३	कन्या			५	५०	१९	४	३	२४	२७	१०	भ. २/३६ तक, शुक्र कन्या में ३७/२५, नाग पंचमी (B)
३३	२	५	चं.	२	१८	चित्रा	५३	५	सा.	१२	३१	बा.	२	१८		२८	१२	२१	४	तुला	२२	५८	५	५१	१९	४	३	२५	२४	४५	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ५१ मि., श्रीकल्कि जयन्ती,
३२	५८	६	मं.	०	५२	स्वाती	५२	२५	शु.	८	३८	तै.	०	५२		२९	१३	२२	५	तुला			५	५१	१९	३	३	२६	२२	२१	भ. ५८/१३ बाद, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
अवम		७	मं.	५८	१३	००	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३२	५४	८	बु.	५४	१८	विशा.	५०	३०	शु. ब्र.	३ ५७	४८ ५५	वि.	२६	१५		३०	१४	२३	६	वृश्चिक	३६	५	५	५२	१९	२	३	२७	१९	५८	भ. २६/१५ तक, बुध आश्ले. में १६/००, गुरु आर्द्रा (C)
३२	५०	९	गु.	४९	९	अनु.	४७	२०	ऐं.	५१	१	बा.	२१	४३		३१	१५	२४	७	वृश्चिक			५	५३	१९	१	३	२८	१७	३६	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४६	१०	शु.	४२	५१	ज्येष्ठा	४३	२	वै.	४३	११	तै.	१६	००		भा.१	१६	२५	८	धनु	४३	२	५	५३	१९	०	३	२९	१५	१५	सं. सूर्य मघा सिंह में ४५/३५, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (D)
३२	४२	११	श.	३५	३६	मूल	३७	४६	वि.	३४	३४	व.	९	१३		२	१७	२६	९	धनु			५	५४	१८	५९	४	०	१२	५४	भ. ६/१३ से ३५/३६ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३२	३८	१२	र.	२७	३९	पू.षा.	३१	४९	प्री.	२५	२१	ब.	१	३७		३	१८	२७	१०	मकर	४५	१४	५	५४	१८	५८	४	१	१०	३५	मंगल कर्क में ५०/१२, प्रदोष व्रत,
३२	३४	१३	चं.	१९	२१	उ.षा.	२५	३२	आ.	१५	५०	तै.	१९	२१		४	१९	२८	११	मकर			५	५५	१८	५६	४	२	८	१७	
३२	२९	१४	मं.	११	५	श्रव.	१९	२०	सौ. शो.	६ ५७	१९ ९	व.	११	०५		५	२०	२९	१२	कुम्भ	४६	२३	५	५६	१८	५५	४	३	६	०	भ. ११/०५ से ३७/१२ तक, पंचक प्रारम्भ ४६/२३, (E)
३२	२५	१५	बु.	३	१७	धनि.	१३	३९	अ.	४८	३९	ब.	३	१७		६	२१	३०	१३	कुम्भ			५	५६	१८	५४	४	४	३	४५	श्रावणी पूर्णिमा,

(A) मु.प्रारम्भ, (B) (देखें पृ. 107), (C) ४ में २०/४०, श्रीदुर्गाष्टमी, (D) दिन मध्याह्न तक, (E) बुध मघा सिंह में ५७/२७, शुक्र हस्त में ३/२५, श्रीसत्यनारायण व्रत, रक्षाबन्धन (राखी)(देखें पृ. 107), ऋक् उपाकर्म, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म (देखें पृ. 108), श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	२	३	२	५	६	६	०
२७	२१	२६	१६	१६	२	११	१७	१७
१९	३१	५०	०	३५	४८	५१	३७	३७
५९	१४	४६	५४	४४	२३	४	४१	४१
५७	८२८	३९	११७	११	७१	३	३	३
३८	२५	५	४४	५०	११	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ४	विशा. १	पुन. ३	पुष्य ४	आर्द्रा ३	उ.फा. २	स्वा. २	स्वा. ४	भर. २

कुण्डली सूर्योदय (१४ अग.)

५   गु. ३ मं.
६ शु.   सू. ४ बु   २
श. चं. ७ रा.   के. १
८   १०   १२
९   ११

लोकभविष्य:- श्रावण शुक्ल पक्ष में सप्तमीतिथि का क्षय होना इसवर्ष कार्तिकमास के लगभग किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का संकेत देता है- " श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत् । तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तु जायते ।।" १८ अगस्त को कर्कराशि में मंगल के आने पर शनि-मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध राजनैतिक दृष्टि से स्थिति को खराब कर सकता है । कहीं यानदुर्घटना एवं कहीं उग्रवादज़न्य अशान्ति व प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ८ से १० अग. तक बाज़ार अस्थिर रहें । ११ से १९ अग. तक एवं २१ अग. को सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, चावल में अच्छी तेज़ी रहेगी ।

कुण्डली सूर्योदय (२१ अग.)

शु. ६   ४ मं.
७ श. रा.   सू. ५ बु   ३ गु.
८   २
९   ११ चं.   के. १
१०   १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	३	४	२	५	६	६	०
४	३	१	०	१७	११	१२	१७	१७
३	४	२३	२	५७	५	१७	१५	१५
४५	१	२०	५६	५	३२	१०	२६	२६
५७	८७१	३८	१२०	११	७०	४	३	३
४६	५८	४५	५५	१९	४८	३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा २	धनि. ३	पुन. ४	मघा १	आर्द्रा ४	हस्त १	स्वा. २	स्वा. ४	भर. २

आकाशलक्षण:- अग. ८, ११, १२, १४, १५, १६, १८, १९, २०, २१ को जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., हि.प्र., दिल्ली, महाराष्ट्र, चण्डीगढ़ आदि में वर्षा के योग हैं ।

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(२२ अगस्त से ५ सितंबर तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद् ऋतु।

बु. अदृश्य है । प्रातः मं. गु. पूर्वकपाल में होंगे। सायं शु. पश्चिम और श. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	बु.	५६	२०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३२	२१	२	गु.	५०	४०	शत.	८	५५	सु.	४१	१०	तै.	२३	३०	७	२२	३१	१४	मीन	५१	१६	५	५७	१८	५३	४	५	१	३०	सूर्य सायन कन्या में ५६/२७, शरद् ऋतु प्रारम्भ,
३२	१७	३	शु.	४६	३८	पू.भा.	५	३४	धृ.	३४	५८	व.	१८	४०	८	२३	भा.१	१५	मीन			५	५७	१८	५२	४	५	५९	१७	भ. १८/४० से ४६/३८ तक, मंगल पुष्य में ५६/४५, (A)
३२	१३	४	श.	४४	३२	उ.भा.	३	५७	शू.	३०	१७	ब.	१५	३१	९	२४	२	१६	मीन			५	५८	१८	५१	४	६	५७	६	श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (B)
३२	८	५	र.	४४	३०	रेव.	४	१६	गं.	२७	१४	कौ.	१४	३१	१०	२५	३	१७	मेष	४	१६	५	५९	१८	५०	४	७	५४	५६	पंचक समाप्त ४/१६,
३२	४	६	चं.	४६	२९	अश्वि.	६	३७	वृ.	२५	४७	ग.	१५	२९	११	२६	४	१८	मेष			५	५९	१८	४९	४	८	५२	४८	भ. ४६/२९ बाद,
३२	०	७	मं.	५०	१५	भर.	१०	५२	ध्रु.	२५	४९	वि.	१८	२२	१२	२७	५	१९	वृष	२७	१३	६	०	१८	४८	४	९	५०	४२	भ. १८/२२ तक, बुध पू.फा. में ४१/३७,
३१	५५	८	बु.	५५	२५	कृत्ति.	१६	४३	व्या.	२७	२	बा.	२२	५०	१३	२८	६	२०	वृष			६	०	१८	४६	४	१०	४८	३८	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.), (चन्द्रोदय देखें पृ. 11) (C)
३१	५१	९	गु.	६०	०	रोहि.	२३	४०	ह.	२९	४	तै.	२८	२४	१४	२९	७	२१	मिथुन	५७	२५	६	१	१८	४५	४	११	४६	३५	गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), श्रीगुग्गा नवमी,
३१	४७	९	शु.	१	२३	मृग.	३१	११	व.	३१	२९	ग.	१	२३	१५	३०	८	२२	मिथुन			६	१	१८	४४	४	१२	४४	३४	भ. ३४/२८ बाद, सूर्य पू.फा. में ३५/२०,
३१	४२	१०	श.	७	३४	आर्द्रा	३८	३९	सि.	३३	५३	वि.	७	३४	१६	३१	९	२३	मिथुन			६	२	१८	४३	४	१३	४२	३६	भ. ७/३४ तक, शुक्र चित्रा में २३/४२,
३१	३८	११	र.	१३	२८	पुन.	४५	३७	व्य.	३५	५३	बा.	१३	२८	१७	सि.१	१०	२४	कर्क	२८	५७	६	३	१८	४२	४	१४	४०	३२	गुरु पुन. १ में १६/४२, राहु स्वाती ३, केतु भरणी १ (D)
३१	३३	१२	चं.	१८	३७	पुष्य	५१	४२	व.	३७	१४	तै.	१८	३७	१८	२	११	२५	कर्क			६	३	१८	४०	४	१५	३८	४३	सोमप्रदोष व्रत,
३१	२९	१३	मं.	२२	४४	आश्ले.	५६	४४	प.	३७	४५	व.	२२	४४	१९	३	१२	२६	सिंह	५६	४४	६	४	१८	३९	४	१६	३६	५०	भ. २२/४४ से ५४/१३ तक, बुध उ.फा. में ५३/२२, (E)
३१	२४	१४	बु.	२५	४३	मघा	६०	०	शि.	३७	२३	श.	२५	४३	२०	४	१३	२७	सिंह			६	४	१८	३८	४	१७	३४	५९	
३१	२०	३०	गु.	२७	३३	मघा	०	३८	सि.	३६	७	ना.	२७	३३	२१	५	१४	२८	सिंह			६	५	१८	३७	४	१८	३३	९	बुध कन्या में ४७/०२, कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा ,

(A) द. नेप्च्यून शत. १ में ५४/५५, शक भाद्रपद प्रारम्भ, (B) बहुला चतुर्थी, (C) (अर्धरात्रि में अष्टमी-रोहिणी योग/जयन्ती योग) (देखें पृ. 103), श्रीदूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 108), (D) में ७/२५, अजा एकादशी व्रत (स.), सितम्बर प्रारम्भ, (E) शनि स्वाती ३ में ५१/२६, पर्युषण पर्व (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	३	४	२	५	६	६	०
१०	६	५	१३	१६	१६	१२	१६	१६
४८	२३	५३	५३	१४	१६	४७	५३	५३
३८	१७	३६	३	३३	४६	६	११	११
५७	७३६	३८	११४	१०	७०	४	३	३
५८	४४	२६	३४	४३	२१	३४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ४	[illegible] ३	[illegible] १	[illegible] १	[illegible] ४	[illegible] ३	स्वा. २	स्वा. ४	भर. २

कुण्डली सूर्योदय (२८ अग.)

शु. ६ | ४ मं. | ७ श. रा. | सू. ५ बु | ३ गु. | ८ | २ चं. | ९ | ११ | के. १ | १० | १२

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार हैं । पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर अराजकता रहे; कहीं उग्रवादजन्य जनसंहार एवं कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि भी संभव है- " यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः । विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते ।।" भाद्र-कृष्ण चतुर्थी शनिवारी है। अतः कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो, कहीं अकाल की स्थिति से जनता परेशान रहे- "शनौ भाद्रपदे कृष्णे चतुर्थी यदि जायते । देशभंगश्च दुर्भिक्षं लोके भिक्षापि दुर्लभा ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सोने में झटके की तेज़ी बने । ३० अग. के लगभग ज़ीरा, धनिया, गुड़, खाण्ड, घी, तिलहन, चावल, ऊन, रुई, सोना, सूत तेज़ रहें । चान्दी में घटाबढ़ी चले । १ सितं. को दिन में लौंग, कालीमिर्च, गुड़, मूंगफली, रुई, चान्दी, कपास, घी एवं तिलहन तेज़ रहें । ३ से ५ सितं. तक दालवाना, जौ, चना, गुड़, शक्कर, हल्दी, तेल, चान्दी मन्दे रहें ।

आकाश लक्षण:- अग. २७, २९, ३०, ३१ एवम् सितं. १, ३, ५ को लंका, आसाम, भूटान, सिक्किम, शिलांग एवं उ.भारत में कहीं बादलचाल व वायुवेग के साथ वर्षा भी हो। तापमान गिरेगा। उ.भा. में शीत ऋतु का आगमन अनुभव होगा ।

कुण्डली सूर्योदय (५ सितं.)

शु. ६ | ४ मं. | ७ श. रा. | सू. ५ बु चं. | ३ गु. | ८ | २ | ९ | ११ | के. १ | १० | १२

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	३	४	२	५	६	६	०
१८	१२	१०	२८	२०	२८	१३	१६	१६
३३	५३	५६	३५	३७	४०	२५	२७	२७
६	५३	४१	१७	३८	५७	३६	४५	४५
५८	७६३	३८	१०४	९	६९	५	३	३
१२	२१	२	४६	५६	५०	८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	[illegible] ४	[illegible] ३	उ.फा. १	पुन. १	[illegible] २	स्वा. ३	स्वा. ३	भर. १

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ (६ से १९ सितंबर तक, सन् २०१३ ई.)

दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

६ सितं. को बुध पश्चिम में उदित होगा । प्रातः मं. पूर्वकपाल में और इससे ऊपर गु. होगा । सायं शु. श. पश्चिमकपाल में होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	१५	१	शु.	२८	१६	पू.फा.	३	२६	सा.	३३	५९	ब.	२८	१६	२२	६	१५	२९	कन्या	१८	५७	६	५	१८	३६	४	१९	३१	२१	शुक्र तुला में ६/२६,
३१	११	२	श.	२७	५८	उ.फा.	५	११	शु	३१	४	कौ.	२७	५८	२३	७	१६	३०	कन्या			६	६	१८	३४	४	२०	२९	३४	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, साम उपाकर्म, मेला श्री डेरा बाबा (A)
३१	६	३	र.	२६	४५	हस्त	६	१	शु	२७	२५	ग.	२६	४५	२४	८	१७	जि.१	तुला	३६	७	६	७	१८	३३	४	२१	२७	४९	भ. ५५/४३ बाद, श्रीवराह जयन्ती, कलंक चतुर्थी (B)
३१	२	४	चं.	२४	४१	चित्रा	५	५९	ब्र.	२३	५	वि.	२४	४१	२५	९	१८	२	तुला			६	७	१८	३२	४	२२	२६	६	भ. २४/४१ तक, बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ३२ मि.,(C)
३०	५७	५	मं.	२१	४८	स्वाती	५	९	ऐं.	१८	६	बा.	२१	४८	२६	१०	१९	३	वृश्चिक	४९	१	६	८	१८	३१	४	२३	२४	२५	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
३०	५३	६	बु.	१८	८	विशा.	३	३१	वै.	१२	२८	तै.	१८	०८	२७	११	२०	४	वृश्चिक			६	८	१८	२९	४	२४	२२	४५	बुध हस्त में ४३/४५, शुक्र स्वाती में ५१/१६, सूर्यषष्ठी व्रत,
३०	४८	७	गु	१३	४२	अनु. ज्येष्ठा	१ ५८	८ १	वि. प्री.	६ ५९	१३ २४	व.	१३	४२	२८	१२	२१	५	धनु	५८	१	६	९	१८	२८	४	२५	२१	६	भ. १३/४२ से ४१/०७ तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी(D)
३०	४४	८	शु	८	३३	मूल	५४	१५	आ.	५२	२	ब.	८	३३	२९	१३	२२	६	धनु			६	९	१८	२७	४	२६	१९	२९	सूर्य उ.फा. में १९/२५, मंगल आश्लेषा में ५८/०५,
३०	३९	९	श.	२	४७	पू.षा.	४९	५७	सौ.	४४	१३	कौ.	२	४७	३०	१४	२३	७	धनु			६	१०	१८	२६	४	२७	१७	५४	बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
अवम		१०	श.	५६	३१	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
३०	३५	११	र.	४९	५७	उ.षा.	४५	२०	शो.	३६	८	व.	२३	१५	३१	१५	२४	८	मकर	३	४८	६	१०	१८	२४	४	२८	१६	२०	भ. २३/१५ से ४९/५७ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स्मा.),
३०	३०	१२	चं.	४३	२०	श्रव.	४०	३९	अ.	२७	५६	ब.	१६	३८	आ.१	१६	२५	९	मकर			६	११	१८	२३	४	२९	१४	४८	सं. सूर्य कन्या में ४४/४०, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (E)
३०	२५	१३	मं.	३६	५७	धनि.	३६	११	सु	१९	५२	कौ.	१०	०८	२	१७	२६	१०	कुम्भ	८	२०	६	१२	१८	२२	५	०	१३	१८	पंचक प्रारम्भ ८/२०, भौमप्रदोष व्रत,
३०	२१	१४	बु.	३१	८	शत.	३२	१७	धृ.	१२	१०	ग.	४	०२	३	१८	२७	११	कुम्भ			६	१२	१८	२०	५	१	११	४९	भ. ३१/०८ से ५८/४१ तक, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (F)
३०	१६	१५	गु	२६	१५	पू.भा.	२९	१७	शू. ग.	५ ५९	७ ०	ब.	२६	१५	४	१९	२८	१२	मीन	१४	५५	६	१३	१८	१९	५	२	१०	२२	प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध,

(A) गोसाईं आणां (कुराली) पं., (B) (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २० घं. १२ मि.), गौरी तृतीया, हरितालिका चतुर्थी, ज़िल्काद मु. प्रा., (C) श्रीसिद्धिविनायक व्रत, (D) व्रत प्रारम्भ (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में), (E) दिन मध्याह्न तक, पद्मा एकादशी व्रत (वै.), श्रीवामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी, वामन द्वादशी, (F) श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १३ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	३	५	२	६	६	६	०
२६	०	१६	१२	२१	७	१४	१६	१६
१९	५	२	०	५४	५७	८	२	२
३०	७	३४	३३	३	२७	२५	१९	१९
५८	८४३	३७	६५	९	६६	५	३	३
२५	४०	३८	३४	२	११	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१३ सितं.)

बु. ६ | ४ मं. | ७ शु. श.रा. | सू. ५ | ३ गु. | ८ | २ | ९ चं. | ११ | के. १ | १० | १२

लोकभविष्य:- इस पक्ष में शनि, राहु, शुक्र - ये तीनों तुला राशि में हैं; इन पर मंगल की दृष्टि है । मकर राशि पर मंगल की उच्च दृष्टि भी है, अतः भारतीय राजनीतिक पार्टियों में खींचातानी बढ़ेगी । आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला जोर पकड़ेगा । प्रमुख पार्टियों को सत्ता प्राप्त करने की चिन्ता सताने लगेगी । ग्रहगोचर अनुसार पश्चिमी राष्ट्र संकटापन्न स्थिति में रहेंगे। महंगाई से जनमानस असन्तुष्ट रहे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ६ से ८ सितं. तक राई, अफीम, सोना, चान्दी, रुई, सूत, ऊन, अलसी आदि तिलहनों में जोश आएगा। ९/१० सितं. को अचानक मन्दा आ सकता है। १३ से १६ सितं. तक रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, घी, चावल, उड़द, ज्वार, गुड़ एवं सरसों आदि तिलहन तेज़ रहें ।

आकाशलक्षण:- शनि, राहु, शुक्र एकत्र होने से वर्षा का प्रायः अवरोध रहेगा । सितं. ६, ७, ९, ११, १३, १६ के लगभग भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१६ सितं.)

शु.७ श. रा. | ५ | ६ सू. बु. | ८ | ४ मं. | ९ | गु. ३ | १० | १२ | २ | चं.११ | के. १

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	३	५	२	६	६	६	०
२	२६	१९	२१	२२	१४	१४	१५	१५
१०	६	४७	१७	४६	५१	४२	४३	४३
२२	४	३३	४८	२७	४	५५	१५	१५
५८	८३३	३७	८९	८	६८	५	३	३
३५	२६	२०	८	१७	३५	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(२० सितंबर से ४ अक्तूबर तक, सन् २०१३ ई.) दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त के पास दिखाई देगा । सायं बु. पश्चिमक्षितिज की ओर और शु. श. इससे कुछ ऊपर होंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्विन	सितंबर	भाद्रपद	ज़िल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	११	१	शु.	२२	३५	उ.भा.	२७	३३	वृ.	५३	५९	कौ.	२२	३५	५	२०	२९	१३	मीन			६	१३	१८	१८	५	३	८	५७	बुध चित्रा में २०/४५, प्लूटो मार्गी ३६/४७, महालय (A)
३०	७	२	श.	२०	२७	रेव.	२७	१९	ध्रु.	५०	१७	ग.	२०	२७	६	२१	३०	१४	मेष	२७	१९	६	१४	१८	१७	५	४	७	३३	भ. ५०/१४ बाद, पंचक समाप्त २७/१९, द्वितीया का (B)
३०	२	३	र.	२०	३	अश्वि.	२८	४८	व्या.	४७	५९	वि.	२०	०३	७	२२	३१	१५	मेष			६	१४	१८	१५	५	५	६	१२	भ. २०/०३ तक, सूर्य सायन तुला में ५०/०२, दक्षिण(C)
२९	५८	४	चं.	२१	२७	भर.	३२	२	ह.	४७	४	बा.	२१	२७	८	२३	आ.१	१६	वृष	४८	७	६	१५	१८	१४	५	६	४	५३	गुरु पुन. २ में ७/०, शुक्र विशा. में २६/१०, भरणी (D)
२९	५३	५	मं.	२४	३४	कृत्ति.	३६	५३	व.	४७	२५	तै.	२४	३४	९	२४	२	१७	वृष			६	१६	१८	१३	५	७	३	३६	पंचमी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
२९	४८	६	बु.	२९	१०	रोहि.	४३	६	सि.	४८	४६	व.	२९	१०	१०	२५	३	१८	वृष			६	१६	१८	११	५	८	२	२१	भ. २६/१० बाद, बुध तुला में ०/४७, षष्ठी का श्राद्ध,
२९	४४	७	गु.	३४	४८	मृग.	५०	११	व्य.	५०	४७	वि.	१	५९	११	२६	४	१९	मिथुन	१६	३५	६	१७	१८	१०	५	९	१	९	भ. १/५९ तक, सूर्य हस्त में ५८/०२, सप्तमी का (E)
२९	३९	८	शु.	४०	५५	आर्द्रा	५७	३६	व.	५३	४	बा.	७	५१	१२	२७	५	२०	मिथुन			६	१७	१८	९	५	९	५९	५९	अष्टमी का श्राद्ध,
२९	३५	९	श.	४६	५६	पुन.	६०	०	प.	५५	९	तै.	१३	५५	१३	२८	६	२१	कर्क	४८	२	६	१८	१८	८	५	१०	५८	५१	व. यूरेनस उ.भा. ४ में ५२/४५, नवमी का श्राद्ध, (F)
२९	३०	१०	र.	५२	१६	पुन.	४	४५	शि.	५६	४१	व.	१९	३७	१४	२९	७	२२	कर्क			६	१८	१८	६	५	११	५७	४५	भ. १६/३७ से ५२/१६ तक, दशमी का श्राद्ध,
२९	२५	११	चं.	५६	३०	पुष्य	११	९	सि.	५७	२२	ब.	२४	२३	१५	३०	८	२३	कर्क			६	१९	१८	५	५	१२	५६	४२	बुध स्वाती में ०/४०, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (G)
२९	२१	१२	मं.	५९	२२	आश्ले.	१६	२४	सा.	५६	५९	कौ.	२७	५६	१६	अ.१	९	२४	सिंह	१६	२४	६	२०	१८	४	५	१३	५५	४१	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (H)
२९	१६	१३	बु.	६०	०	मघा	२०	१६	शु.	५५	२८	ग.	३०	०३	१७	२	१०	२५	सिंह			६	२०	१८	३	५	१४	५४	४२	शुक्र वृश्चिक में २१/२५, त्रयोदशी का श्राद्ध, प्रदोषव्रत,
२९	११	१३	गु.	०	४५	पू.फा.	२२	४१	शु.	५२	४८	व.	०	४५	१८	३	११	२६	कन्या	३८	५	६	२१	१८	१	५	१५	५३	४५	भ. ०/४५ से ३०/४३ तक, शस्त्र-विषादि से मृतों (I)
२९	७	१४	शु.	०	४१	उ.फा.	२३	४४	ब्र.	४९	३	श.	०	४१	१९	४	१२	२७	कन्या			६	२२	१८	०	५	१६	५२	५०	महालय अमा, सर्वपितृ श्राद्ध, अज्ञात मृत्युतिथि/चतुर्दशी/ (J)
अवम		३०	शु.	५९	१७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

(A) (पितृपक्ष) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध, (B) श्राद्ध, तृतीया का श्राद्ध, (C) गोल प्रारम्भ, विषुवदिन, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, (D) श्राद्ध, (इसदिन कोई तिथिश्राद्ध घटित नहीं होता), शक आश्विन प्रारम्भ, (E) श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में), (F) सौभाग्यवती श्राद्ध, (G) एकादशी का श्राद्ध, (H) अक्तूबर प्रारम्भ, (I) (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (J) अमावस एवं पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध,महालय(श्राद्ध)समाप्त, गजच्छाया योग (१५घं ५१मि. से सूर्यास्त तक),

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.) २७ सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	३	६	२	६	६	६	०
९	८	२४	२	२३	२३	१५	१५	१५
५९	१३	४४	४०	४९	५६	३१	१७	१७
५९	१७	४२	८	५	३७	४७	४६	४६
५८	७११	३६	८०	७	६७	६	३	३
५२	४०	५५	६	१३	४१	१९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	आर्द्रा १	आश्ले. ३	चित्रा ३	पुन. २	विशा. २	स्वा. ३	स्वा. ३	भ. १

कुण्डली सूर्योदय (२७ सितं.)

शु.७ श. रा. बु.
५
८
६ सू.
४ मं.
९
गु. ३ चं.
१०
१२
२
११
के. १

लोकभविष्यः- गतपक्ष में ३ सितं. से शनि-राहु स्वाती नक्षत्र के तृतीय चरण में चल रहे हैं । शुक्र-बुध-राहु-शनि पर मंगल की दृष्टि भी है, अतः अनेकत्र उपवादजन्य विस्फोट आदि से (विशेषतः मुस्लिम राष्ट्रों में) जनधनहानि हो । काश्मीर एवं सीमाप्रान्तों पर भी अशान्ति रहे - " स्वात्यां काश्मीर-काम्बोज-भूपतीनां विनाशकौ ।" मंगल आश्लेषा अर्थात् अग्निमंडल के नक्षत्र में होने से अनेकत्र अग्निकाण्ड से हानि भी संभव है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई व चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने । २३ सितं. को रुई, चान्दी मन्दे एवम् अनाज तेज़ हों । २४ सितं. को रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफ़ीम में तेज़ी; चान्दी एवं तिलहन मन्दे हों । २६ सितं. को सभी बाज़ार तेज़ हों । २ अक्तू. को रुई, शेयर, चान्दी, अफ़ीम में मन्दी आकर तेज़ी बने । दालदाना एवम् अनाज भी तेज़ रहें ।

कुण्डली सूर्योदय (४ अक्तू.)

बु.७ श. रा.
५
शु. ८
चं. ६ सू.
४ मं.
९
गु. ३
१०
१२
२
११
के. १

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५घं. ३०मि. (I.S.T.) ४ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	३	६	२	७	६	६	०
१६	४	२९	११	२४	१	१६	१४	१४
५२	१८	१	३१	३६	४७	१६	५५	५५
५१	४७	५७	५६	२६	४०	५३	३४	३४
५९	७६५	३६	६९	६	६६	६	३	३
७	२८	३१	४२	९	४४	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ३	उ.फा. ३	आश्ले. ४	स्वा. २	पुन. २	विशा. ४	स्वा. ३	स्वा. ३	भ. १

आकाशलक्षणः- सितं. २०, २३, २४, २६, २९ एवम् २ अक्तू. के लगभग पश्चिमी भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल, कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो । उत्तरी भारत में तापमान नीचे गिरे ।

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(५ से १८ अक्तूबर तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु ।

प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तर-वृत्तासन्न दीखेगा । सायं बु. श. पश्चिमक्षितिज में और शु. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	तिथि समाप्तिकाल घ.	तिथि समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	नक्षत्र समाप्तिकाल घ.	नक्षत्र समाप्तिकाल प.	योग	योग समाप्तिकाल घ.	योग समाप्तिकाल प.	करण	करण समाप्तिकाल घ.	करण समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. आश्विन	तारीखें अं. अक्तू.	तारीखें श. आश्विन	तारीखें मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	२	१	श.	५६	४३	हस्त	२३	३२	ऐं.	४४	२३	किं.	२८	००	२०	५	१३	२८	तुला	५३	३	६	२२	१७	५९	५	१७	५१	५८	मंगल मघा सिंह में ३३/१४, शुक्र अनु. में २०/५२, (A)
२८	५८	२	र.	५३	१३	चित्रा	२२	१८	वै.	३८	५४	बा.	२४	५८	२१	६	१४	२९	तुला			६	२३	१७	५८	५	१८	५१	७	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२८	५३	३	चं.	४८	५८	स्वाती	२०	१२	वि.	३२	४७	तै.	२१	०५	२२	७	१५	ज़ि.१	तुला			६	२३	१७	५७	५	१९	५०	१९	शनि स्वाती ४ में २६/३७, ज़िलहिज्ज मु. प्रारम्भ,
२८	४८	४	मं.	४४	१०	विशा.	१७	२७	प्री.	२६	११	व.	१६	३४	२३	८	१६	२	वृश्चिक	३	११	६	२४	१७	५५	५	२०	४९	३२	भ. १६/३४ से ४४/१० तक,
२८	४४	५	बु.	३८	५९	अनु.	१४	१५	आ.	१९	१२	ब.	११	३५	२४	९	१७	३	वृश्चिक			६	२५	१७	५४	५	२१	४८	४७	उपाङ्गललिता व्रत,
२८	३९	६	गु.	३३	३३	ज्येष्ठा	१०	४५	सौ.	१२	०	कौ.	६	१६	२५	१०	१८	४	धनु	१०	४५	६	२५	१७	५३	५	२२	४८	४	सूर्य चित्रा में ३०/००, सरस्वती आवाहन,
२८	३५	७	शु.	२८	०	मूल	७	४	शो. अ.	४ ५७	३९ १९	ग.	०	४६	२६	११	१९	५	धनु			६	२६	१७	५२	५	२३	४७	२३	भ. २८/०० से ५५/१५ तक, सरस्वती पूजन,
२८	३०	८	श.	२२	२९	पू.षा. उ.षा.	३ ५९	२२ ४७	सु.	५०	०	ब.	२२	२९	२७	१२	२०	६	मकर	१७	२७	६	२७	१७	५१	५	२४	४६	४४	बुध विशा. में १३/४२, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, महानवमी(B)
२८	२६	९	र.	१७	६	श्रव.	५६	२४	धृ.	४२	५१	कौ.	१७	०६	२८	१३	२१	७	मकर			६	२७	१७	५०	५	२५	४६	६	महानवमी (बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, सरस्वती (C)
२८	२१	१०	चं.	११	५९	धनि.	५३	२३	शू.	३५	५९	ग.	११	५९	२९	१४	२२	८	कुम्भ	२४	४९	६	२८	१७	४८	५	२६	४५	३०	भ. ३६/३६ बाद, पंचक प्रारम्भ २४/४६, श्रीमाध्वाचार्य (D)
२८	१७	११	मं.	७	१९	शत.	५०	५६	गं.	२९	३१	वि.	७	१९	३०	१५	२३	९	कुम्भ			६	२९	१७	४७	५	२७	४४	५६	भ. ७/१६ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.),
२८	१२	१२	बु.	३	१४	पू.भा.	४९	१३	वृ.	२३	३५	बा.	३	१४	३१	१६	२४	१०	मीन	३४	३३	६	२९	१७	४६	५	२८	४४	२४	प्रदोषव्रत,
अवम		१३	बु.	५९	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२८	८	१४	गु.	५७	४०	उ.भा.	४८	२५	ध्रु.	१८	२०	ग.	२८	४९	का.१	१७	२५	११	मीन			६	३०	१७	४५	५	२९	४३	५३	भ. ५७/४० बाद, सं. सूर्य तुला में १३/४५, मु. ४५, (E)
२८	३	१५	शु.	५६	३२	रेव.	४८	४४	व्या.	१३	५५	वि.	२७	०७	२	१८	२६	१२	मेष	४८	४४	६	३१	१७	४४	६	०	४३	२४	भ. २७/०७ तक, पंचक समाप्त ४८/४४, कोजागर व्रत, (F)

(A) नाना-नानी का श्राद्ध, शारद नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती, (B) (पूजा एवम् उपवास के लिए), (C) विसर्जन, विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (D) जयन्ती, भरत मिलाप, (E) पुण्यकाल सारादिन, शुक्र ज्येष्ठा में ३२/५७, (F) शरत् पूर्णिमा, कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ, श्रीवाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
१२ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	४	६	२	७	६	६	०
२४	२५	३	१९	२५	१०	१७	१४	१४
४६	१८	५२	४६	२१	३७	१०	३०	३०
४४	३८	२५	४८	७	७	३६	६	६
५९	८४०	३६	४६	४	६५	६	३	३
२३	५६	२	१२	५१	२३	५१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा १	पू.षा. ४	मघा २	स्वा. ४	पुन. २	अनु. ३	स्वा. ४	स्वा. ३	भर. १

कुण्डली सूर्योदय (१२ अक्तू.)

बु.७ श. रा. | ५ मं. | शु. ८ | ६ सू. | ४ | चं. ९ | गु. ३ | १० | १२ | २ | ११ | के. १

लोकभविष्यः- सिंह राशिस्थ मंगल महंगाई को बढ़ावा देगा । बुध, शनि, सूर्य, राहु- ये चारों ग्रह तुला-राशिस्थ होने से पक्षान्त में (१६ से १८ अक्तू. तक) प्राकृतिक प्रकोप से हानिकारक हैं । पश्चिमी देशों एवं मुस्लिम राष्ट्रों में व अन्यत्र भी किसी वरिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होना संभावित है । राजनैतिक अशान्ति भी रहे- "यत्र मासे पंचवारा जायंते च बृहस्पतेः । विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धं च जायते ।।" भारत की राजनैतिक पार्टियों में भी विशेष तोड़-फोड़ जारी रहे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से १७ अक्तूबर तक सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, अलसी, रुई, लालमिर्च, दालवाना एवं मूंगफली आदि तिलहन, सूत, सण, सुपारी, मजीठ, अनाज तेज़ रहें ।

आकाशलक्षणः- अक्तू. ५, ६, ७, ६, १२, १३, १७ को श्रीलंका, आसाम, बंगाल एवम् उ. प्र. के कुछ भागों में बादलचाल एवं वर्षा के योग है । शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा । हि.प्र. में बर्फबारी भी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१८ अक्तू.)

८ शु. | ६ | श. बु. ७ सू. रा. | ५मं. | ९ | १० | ४ | ११ | १ के. | गु. ३ | चं. १२ | २

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
१८ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	११	४	६	२	७	६	६	०
०	१८	७	२३	२५	१७	१७	१४	१४
४३	४१	२७	३८	४७	६	५२	११	११
२५	२२	४०	६	३३	१७	५	४	४
५९	७९२	३५	२०	३	६४	७	३	३
३३	५८	३९	३४	४७	४	०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	रेव. १	मघा ३	विशा. २	पुन. २	ज्ये. १	स्वा. ४	स्वा. ३	भर. १

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

(१६ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु।

पक्षारम्भ में ही श. तथा २६ अक्तू. को बु. पश्चिम में अस्त हो जाएगा । प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा । सायं शु. पश्चिम में दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	श. आश्विन	मु. ज़िल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	५९	१	श.	५६	४३	अश्वि.	५०	२०	ह.	१०	२७	बा.	२६	३७	३	१९	२७	१३	मेष			६	३१	१७	४३	६	१	४२	५८	
२७	५४	२	र.	५८	२०	भर.	५३	१९	व.	८	२	तै.	२७	३१	४	२०	२८	१४	मेष			६	३२	१७	४२	६	२	४२	३३	शनि अस्त १७ घं. ४२ मि.,
२७	५०	३	चं.	६०	०	कृत्ति.	५७	४०	सि.	६	४४	व.	२९	५१	५	२१	२९	१५	वृष	९	१५	६	३३	१७	४१	६	३	४२	१०	भ. २९/५१ बाद, बुध वक्री २३/३५,
२७	४६	३	मं.	१	२३	रोहि.	६०	०	व्य.	६	३१	वि.	१	२३	६	२२	३०	१६	वृष			६	३४	१७	४०	६	४	४१	४९	भ. १/२३ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (A)
२७	४१	४	बु.	५	४३	रोहि.	३	१५	व.	७	१६	बा.	५	४३	७	२३	का.१	१७	मिथुन	३६	३०	६	३४	१७	३९	६	५	४१	३१	सूर्य स्वाती में ५६/०५, सूर्य सायन वृश्चिक में १२/४३,(B)
२७	३७	५	गु.	११	९	मृग.	९	५३	प.	८	४९	तै.	११	०९	८	२४	२	१८	मिथुन			६	३५	१७	३८	६	६	४१	१५	
२७	३३	६	शु.	१७	१३	आर्द्रा	१७	८	शि.	१०	५१	व.	१७	१३	९	२५	३	१९	मिथुन			६	३६	१७	३७	६	७	४१	१	भ. १७/१३ से ५०/२० तक,
२७	२८	७	श.	२३	२५	पुन.	२४	३१	सि.	१३	१	ब.	२३	२५	१०	२६	४	२०	कर्क	७	४१	६	३६	१७	३६	६	८	४०	४९	बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. ३६ मि.,
२७	२४	८	र.	२९	११	पुष्य	३१	२८	सा.	१४	५६	कौ.	२९	११	११	२७	५	२१	कर्क			६	३७	१७	३५	६	९	४०	३९	मंगल पू.फा. में ५५/०७, अहोई अष्टमी (पं.-हरि.),
२७	२०	९	चं.	३३	५९	आश्ले.	३७	३०	शु.	१६	११	तै.	१	३५	१२	२८	६	२२	सिंह	३७	३०	६	३८	१७	३४	६	१०	४०	३२	
२७	१६	१०	मं.	३७	२३	मघा	४२	७	शु.	१६	२७	व.	५	४०	१३	२९	७	२३	सिंह			६	३९	१७	३३	६	११	४०	२७	भ. ५/४० से ३७/२३ तक, वक्री बुध स्वाती में १०/००,
२७	११	११	बु.	३९	६	पू.फा.	४५	८	ब्र.	१५	३०	ब.	८	१४	१४	३०	८	२४	सिंह			६	४०	१७	३२	६	१२	४०	२४	शुक्र मूल धनु में १९/२१, रमा एकादशी व्रत (स.),
२७	७	१२	गु.	३९	१	उ.फा.	४६	२४	ऐं.	१३	१०	कौ.	९	०३	१५	३१	९	२५	कन्या	०	३७	६	४०	१७	३१	६	१३	४०	२३	गोवत्स द्वादशी,
२७	३	१३	शु.	३७	१२	हस्त	४५	५९	वै.	९	२७	ग.	८	०६	१६	न.१	१०	२६	कन्या			६	४१	१७	३०	६	१४	४०	२४	भ. ३७/१२ बाद, धनत्रयोदशी, श्री हनुमान् जयन्ती (C)
२६	५९	१४	श.	३३	४७	चित्रा	४४	३	वि. प्री.	४ ५८	२५ १४	वि.	५	३०	१७	२	११	२७	तुला	१५	१०	६	४२	१७	३०	६	१५	४०	२७	भ. ५/३० तक, नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदयवाली),
२६	५५	३०	र.	२९	२	स्वाती	४०	५०	आ.	५१	२	च.	१	२४	१८	३	१२	२८	तुला			६	४३	१७	२९	६	१६	४०	३२	राहु स्वाती २, केतु अश्वि. ४ में ०/५०, दीपावली, (D)

(A) (करवा चौथ) (चन्द्रोदय २० घं. १२ मि.), (B) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ, (C) (उ.भा.), यमप्रीत्यर्थ दीपदान, प्रदोषव्रत, नवम्बर प्रारम्भ, (D) श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २७ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	४	६	२	७	६	६	०
६	६	१२	२२	२६	२६	१८	१३	१३
४०	४६	४६	८	१५	३३	५५	४२	४२
४०	४०	१०	१३	२	३७	४२	२८	२८
५९ ५२	७२० २०	३५ ३	५२ ५२	२ ७	६१ ३६	७ ६	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा. १	पुष्य २	मघा ४	विशा. १	पुन. २	ज्ये. ३	स्वा. ४	स्वा. ३	अश्वि. १

कुण्डली सूर्योदय (२७ अक्तू.)

८ शु. | ६
श. बु. ७ सू. रा.
९ | ५मं.
१० | ४ चं.
११ | १ के. | गु. ३
१२ | २

लोकभविष्यः- पक्षारम्भ में ही शनि अस्त हो रहा है । बुध-राहु वक्री हैं । शनि, बुध, राहु, सूर्य- ये सब एक राशि में है । निश्चितरूप से तुला प्रभावराशि वाले देशों एवं मेष-मकर प्रभावराशि वाले देशों में राजनैतिक उलट-फेर होंगे । इस चान्द्रमास में ५ शनि एवं ५ इतवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं सत्तापरिवर्तन, कहीं भूकम्प, सुनामी व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि भी हो-" एकमासे रवेर्वाराः पञ्च न स्युः शुभावहाः । दुर्भिक्षं पञ्चमन्देषु छत्रभंगस्तु कुत्रचित् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में ही बाज़ारों में उठा-पटक रहेगी । कुछ देर बाद घी, गुड़, खाण्ड, तेज़ होंगे । २३ अक्तू. को रुई, सूत, रेशम, कपड़ा, सोना, चान्दी, गुड़, बिनौला, तिलहन, हींग, गुग्गुल तेज़ रहें । २६ अक्तू. को रुई एवं शेयरों में झटके की मन्दी बने । ३० अक्तू. से पक्षान्त तक बाज़ार ठीक रहें ।

आकाशलक्षणः- अक्तू. १९, २०, २३, २६, २७, २९, ३० एवम् ३ नवं. के लगभग जम्मू-काश्मीर, पंजाब, हि. प्र. एवं उ. प्र. में कहीं बादलवाल, वायुवेग रहे । हि. प्र. में कहीं वर्षा भी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (३ नवं.)

८ | ६
चं. श. बु. ७ सू. रा.
शु. ९ | ५ मं.
१० | ४
११ | १ के. | गु. ३
१२ | २

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	४	६	२	८	६	६	०
१६	९	१६	१४	२६	३	१९	१३	१३
४०	४०	४६	२	२५	३७	४५	२०	२०
३३	५८	५८	३५	४४	४८	५४	१२	१२
६० ७	८४८ ५६	३४ ३१	७३ ७	० ४४	५९ ८	७ १२	३ ११	३ ११
		मा.	द.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा. ४	स्वा. १	पूफा. २	स्वा. ३	पुन. २	मूल २	स्वा. ४	स्वा. ३	अश्वि. १

125
(४ से १७ नवम्बर तक, सन् २०१३ ई.)

वि. सं. २०७०, शाक १९३५, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(४ से १७ नवम्बर तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

श. अस्त है । बु. ८ नवं. से पूर्व में उदित हो जाएगा । प्रातः मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा । सायं शु. पश्चिम में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु.
२६	५१	१	चं.	२३	१५	विशा.	३६	३९	सौ.	४३	६	ब.	२३	१५	१९	४	१३	२९
२६	४७	२	मं.	१६	४४	अनु.	३१	५०	शो.	३४	४०	कौ.	१६	४४	२०	५	१४	मु.१
२६	४३	३	बु.	९	५०	ज्येष्ठा	२६	४२	अ.	२६	०	ग.	९	५०	२१	६	१५	२
२६	३९	४	गु.	२	५१	मूल	२१	३५	सु.	१७	२१	वि.	२	५१	२२	७	१६	३
अवम		५	गु.	५६	६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	३६	६	शु.	४९	४७	पू.षा.	१६	४७	धृ.	८	५५	कौ.	२२	५६	२३	८	१७	४
२६	३२	७	श.	४४	८	उ.षा.	१२	३०	शू. ग.	० ५३	५६ २९	ग.	१६	५७	२४	९	१८	५
२६	२८	८	र.	३९	१९	श्रव.	८	५८	वृ.	४६	४३	वि.	११	४३	२५	१०	१९	६
२६	२४	९	चं.	३५	२७	धनि.	६	१९	ध्रु.	४०	४४	बा.	७	२३	२६	११	२०	७
२६	२१	१०	मं.	३२	३७	शत.	४	३८	व्या.	३५	३३	तै.	४	०२	२७	१२	२१	८
२६	१७	११	बु.	३०	५०	पू.भा.	३	५९	ह.	३१	१३	व.	१	४२	२८	१३	२२	९
२६	१४	१२	गु.	३०	९	उ.भा.	४	२२	व.	२७	४३	ब.	०	२९	२९	१४	२३	१०
२६	१०	१३	शु.	३०	३३	रेव.	५	४९	सि.	२५	४	कौ.	०	१८	३०	१५	२४	११
२६	७	१४	श.	३२	३	अश्वि.	८	२०	व्य.	२३	१५	ग.	१	१८	मा.१	१६	२५	१२
२६	४	१५	र.	३४	३७	भर.	११	५३	व.	२२	१६	वि.	३	२०	२	१७	२६	१३

तिथि	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
१	वृश्चिक	२२	४४	६	४४	१७	२८	६	१७	४०	३९	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, शनि विशा. १ में ५४/२७, (A)
२	वृश्चिक			६	४४	१७	२७	६	१८	४०	४८	यमद्वितीया, भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, मुहर्रम (B)
३	धनु	२६	४२	६	४५	१७	२६	६	१९	४०	५९	भ. ३६/२० बाद, सूर्य विशा. में १५/५०,
४	धनु			६	४६	१७	२६	६	२०	४१	११	भ. २/५१ तक, गुरु वक्री ६/२८, ज्ञान पञ्चमी (जैन),
५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पञ्चमी तिथिक्षय,
६	मकर	३०	३९	६	४७	१७	२५	६	२१	४१	२५	बुध पूर्व में उदित ६ घं. ४७ मि., सूर्यषष्ठी (बिहार),
७	मकर			६	४८	१७	२४	६	२२	४१	४०	भ. ४४/०८ बाद,
८	कुम्भ	३७	३३	६	४९	१७	२४	६	२३	४१	५७	भ. ११/४३ तक, पंचक प्रारम्भ ३७/३३, बुध (C)
९	कुम्भ			६	४९	१७	२३	६	२४	४२	१५	अक्षयनवमी, कूष्माण्ड नवमी,
१०	मीन	४९	४	६	५०	१७	२३	६	२५	४२	३५	
११	मीन			६	५१	१७	२२	६	२६	४२	५६	भ. १/४२ से ३०/५० तक, शुक्र पू.षा. में (D)
१२	मीन			६	५२	१७	२१	६	२७	४३	१८	चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, हरिप्रबोधोत्सव, (E)
१३	मेष	५	४९	६	५३	१७	२१	६	२८	४३	४२	पंचक समाप्त ५/४६, श्री वैकुण्ठ चतुर्दशी, प्रदोषव्रत,
१४	मेष			६	५४	१७	२०	६	२९	४४	७	भ. ३२/०३ बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में १२/१५, (F)
१५	वृष	२७	५६	६	५४	१७	२०	७	०	४४	३४	भ. ३/२० तक, त्रिपुरोत्सव, कार्तिक पूर्णिमा, (G)

(A) गोवर्धनपूजा (देखें पृ.109), बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा, (B) (हिजरी सन् १४३५) मु. प्रारम्भ, (C) मार्गी ४६/४३, गोपाष्टमी, (D) ६/३७, नेप्च्यून मार्गी ४३/३२, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), भीष्मपंचक प्रारम्भ, (E) श्रीतुलसी विवाह, (F) मु. १५, पुण्यकाल सारा दिन, (G) श्रीगुरुनानक जयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिकस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला पुष्करराज (राज.) (पद्मक योग ११ घं. —— ४० मि. बाद), (पुष्करस्नान माहात्म्य),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	४	६	२	८	६	६	०
२३	२०	२०	८	२६	१०	२०	१२	१२
४१	२७	४६	३०	२६	२२	३६	५७	५७
५७	३४	४७	४३	४२	२२	१८	५७	५७
६०	८३६	३३	४	०	५५	७	३	३
१८	६	५५	२०	४०	५१	११	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१० नवं.)

८ | ६ | श. बु. ७ सू. रा. | शु. ९ | ५ मं. | १० चं. | ४ | ११ | १ के. | गु. ३ | १२ | २

लोकभविष्य:- गुरु-शुक्र का समसप्तकयोग चल रहा है । १५ नवं. तक शनि, राहु, बुध एवं सूर्य का एकराशि-सम्बन्ध भी बना हुआ है । शनि-सूर्य दोनों विशाखा में हैं । अतः कहीं वर्षा की भयंकर कमी हो, कहीं सीमावर्ती किंवा समुद्रतटवर्ती भूभागों पर प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि हो- "क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम् । अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि ।।" पक्षमध्य में बुध का उदय भी प्राकृतिक उत्पात से हानि का संकेत देता है -"नोत्पात-परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम् ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ से चावल, बाजरा, दालदाना, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, लालमिर्च, सरसों, तिल, एरण्ड, अफ़ीम तेज़ रहें । ७ नवं. के लगभग सभी बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बने । १० नवं. को बाज़ार अचानक मन्दे बनें। १३ से १६ नवं. तक सभी अनाज, सोना, चान्दी, नमक, ऊनी वस्त्र तेज़ रहें ।

आकाशलक्षण:- ४ से ६ एवं ७, ८, १०, १३, १६ नवं. के लगभग जम्मू-काश्मीर, हि. प्र. के उन्नत शृंगों पर हिमपात हो; शीत जोरदार पड़े । उ.भा. में कहीं वर्षा, बादलचाल रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (१७ नवं.)

शु. ९ | रा. बु. ७ श. | १० | ८ सू. | ६ | ११ | ५ मं. | १२ | २ | ४ | चं. १ के. | गु. ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १७ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	४	६	२	८	६	६	०
०	२३	२४	११	२६	१६	२१	१२	१२
४४	२७	४५	२७	१७	४०	२६	३५	३५
३५	२५	१६	४५	५२	५०	२६	४२	४२
६०	७४६	३३	५६	२	५१	७	३	३
२८	४	१६	५८	३	२७	८	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७०, शाक १६३५, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(१८ नवम्बर से २ दिसम्बर तक, सन् २०१३ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

श. २४ नवं. से पूर्व में दृश्य होगा । प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, मं. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा । सायं शु. पश्चिम में दिखाई देगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	०	१	चं.	३८	१६	कृत्ति.	१६	२७	प.	२२	५	बा.	६	२६	३	१८	२७	१४	वृष			६	५५	१७	१९	७	१	४५	२	
२५	५७	२	मं.	४२	५३	रोहि.	२२	१	शि.	२२	४०	तै.	१०	३४	४	१९	२८	१५	मिथुन	५५	८	६	५६	१७	१९	७	२	४५	३२.	सूर्य अनु. में ३०/३५,
२५	५४	३	बु.	४८	२२	मृग.	२८	२५	सि.	२३	५५	व.	१५	३७	५	२०	२९	१६	मिथुन			६	५७	१७	१९	७	३	४६	३.	भ. १५/३७ से ४८/२२ तक, मंगल उ.फा. में २४/०२,
२५	५१	४	गु.	५४	२८	आर्द्रा	३५	२९	सा.	२५	४२	ब.	२१	२५	६	२१	३०	१७	मिथुन			६	५८	१७	१८	७	४	४६	३६.	श्रीगणेश-चतुर्थी व्रत,
२५	४८	५	शु.	६०	०	पुन.	४२	५५	शु.	२७	४८	कौ.	२७	३९	७	२२	मा.१	१८	कर्क	२६	३	६	५९	१७	१८	७	५	४७	११	सूर्य सायन धनु में ५/४६, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,
२५	४५	५	श.	०	५०	पुष्य	५०	१७	शु.	२९	५६	तै.	०	५०	८	२३	२	१९	कर्क			७	०	१७	१८	७	६	४७	४७	
२५	४२	६	र.	६	५९	आश्ले.	५७	८	ब्र.	३१	४७	व.	६	५९	९	२४	३	२०	सिंह	५७	८	७	०	१७	१७	७	७	४८	२५	भ. ६/५६ से ३६/४५ तक, बुध विशाखा में १२/३५,(A)
२५	४०	७	चं.	१२	२९	मघा	६०	०	ऐं.	३२	५८	ब.	१२	२९	१०	२५	४	२१	सिंह			७	१	१७	१७	७	८	४९	५	श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
२५	३७	८	मं.	१६	४८	मघा	२	५६	वै.	३३	९	कौ.	१६	४८	११	२६	५	२२	सिंह			७	२	१७	१७	७	९	४९	४६	मंगल कन्या में ३१/१५,
२५	३४	९	बु.	१९	३१	पू.फा.	७	१८	वि.	३२	३	ग.	१९	३१	१२	२७	६	२३	कन्या	२३	९	७	३	१७	१७	७	१०	५०	२९	भ. ४६/५५ बाद,
२५	३२	१०	गु.	२०	२०	उ.फा.	९	५४	प्री.	२९	२७	वि.	२०	२०	१३	२८	७	२४	कन्या			७	४	१७	१७	७	११	५१	१४	भ. २०/२० तक,
२५	२९	११	शु.	१९	८	हस्त	१०	३३	आ.	२५	१८	बा.	१९	०८	१४	२९	८	२५	तुला	४०	९	७	५	१७	१६	७	१२	५२	०	शुक्र उ.षा. में ५०/१७, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	२७	१२	श.	१५	५८	चित्रा	९	१५	सौ.	१९	३५	तै.	१५	५८	१५	३०	९	२६	तुला			७	५	१७	१६	७	१३	५२	४८	शनिप्रदोष व्रत,
२५	२५	१३	र.	१०	५९	स्वाती	६	१०	शो.	१२	२७	व.	१०	५९	१६	दि.१	१०	२७	वृश्चिक	४७	५०	७	६	१७	१६	७	१४	५३	३६	भ. १०/५६ से ३७/४५ तक, बुध वृश्चिक में ७/२७,(B)
२५	२३	१४	चं.	४	२९	विशा. अनु.	१ ५५	३२ ४७	अ. सु.	४ ५४	५ ५०	श.	४	२९	१७	२	११	२८	वृश्चिक			७	७	१७	१६	७	१५	५४	२७	सूर्य ज्येष्ठा में ४०/५२, सोमवती अमावस,
अवम		३०	चं.	५६	५३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस तिथिक्षय,

(A) शनि उदित ६ घं. ०० मि., बलिदानदिन श्रीगुरु तेग़बहादुर जी (नानक-शाही), (B) दिसम्बर प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २६ नवंबर,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	४	६	२	८	६	६	०
९	११	२६	२२	२५	२३	२२	१२	१२
४६	५७	४१	२३	५२	५५	३०	७	७
४७	१	५	५६	२४	१०	६	५	५
६०	७४२	३२	८५	३	४३	६	३	३
४३	३५	२०	३६	४७	४५	५६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२६ नवं.)

शु. ९ | रा. बु. ७ श.
१० | ८ सू. | ६
११ | चं. ५ मं.
१२ | २ | ४
१ के. | गु. ३

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास मे पांच चन्द्रवार एवं पांच मंगलवार हैं । अतः भारत में धन-धान्यसमृद्धि रहे । लेकिन पश्चिमी देशों विशेषतः मुस्लिमराष्ट्रों में कहीं युद्धमय वातावरण बने, कहीं आश्चर्यजनकरूप से सत्ता-हस्तान्तरण हो - " यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्चवासराः । रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥" किञ्च- मार्गशीर्ष में अमावस का क्षय भी है, जोकि कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन व आगे कहीं शासनसत्ता मे पतिवर्तन का संकेत देता है- " मार्गशीर्षादि मासेषु कृष्णपक्षे तिथिक्षयः । दुःस्वास्थ्यं छत्रभंगो वा कुत्रचिद्राजविग्रहः ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सभी बाज़ार मन्दे हों तो माल पकड़ें । २० नवं. से पक्षान्त तक गुड़, खाण्ड, शक्कर, सीसा, जस्ता, लहसुन, चावल तेज़ रहें। २६ नवं. को रुई, अनाज, सोना, ऊन, सूत, तिलहन, तेल, चावल, गेहूं, जौ, चना, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी तेज़ हों ।

कुण्डली सूर्योदय (२ दिसं.)

शु. ९ | रा. ७ श.
१० | बु. ८ सू. चं. | मं. ६
११ | ५
१२ | २ | ४
१ के. | गु. ३

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २ दिसम्बर,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	५	७	२	८	६	६	०
१५	१	२	१	२५	२८	२३	११	११
५४	५८	५३	१३	२६	१	११	४८	४८
२८	२६	२२	०	५७	१९	३५	०	०
६०	८८४	३१	६०	४	३६	६	३	३
५१	१	३७	४४	५२	५२	४९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण:- नवं. १६ से २६ तक एवं २९ नवं. से २ दिसं. तक जम्मू-काश्मीर, हि.प्र. एवं उत्तराखण्ड के सुदूर भागों में बर्फबारी हो, उ. भारत शीतलहर की चपेट में रहेगा । अनेकत्र धुन्ध से यातायात बाधित हो ।

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७

(३ से १७ दिसम्बर तक, सन् २०१३ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

४ दिसं. को बु. पूर्व में अदृश्य हो जाएगा । प्रातः श. पूर्वक्षितिज के पास, मं. पूर्वकपाल में और गु. पश्चिम में होगा । सायंकाल शु. पश्चिमक्षितिज के पास दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२१	१	मं.	४८	२९	ज्येष्ठा	४९	१५	धृ.	४४	५५	किं.	२२	४१	१८	३	१२	२९	धनु	४९	१५	७	८	१७	१६	७	१६	५५	१८	बुध अनु. में १६/४७, शनि विशा. २ में १०/०,
२५	१९	२	बु.	३९	४७	मूल	४२	२३	शू.	३४	४२	बा.	१४	०८	१९	४	१३	३०	धनु			७	९	१७	१६	७	१७	५६	११	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पूर्व में अस्त ७ घं. ६ मि.,
२५	१७	३	गु.	३१	११	पू.षा.	३५	४०	गं.	२४	३३	तै.	५	२९	२०	५	१४	स. १	मकर	४९	३	७	१०	१७	१६	७	१८	५७	४	भ. ५७/०७ बाद, शुक्र मकर में १७/४५, सफर मु. प्रारम्भ,
२५	१५	४	शु.	२३	६	उ.षा.	२९	३०	वृ.	१४	४७	वि.	२३	०६	२१	६	१५	२	मकर			७	१०	१७	१६	७	१९	५७	५९	भ. २३/०६ तक,
२५	१४	५	श.	१५	५५	श्रव.	२४	१५	ध्रु. व्या.	५ ५७	४२ ३५	बा.	१५	५५	२२	७	१६	३	कुम्भ	५२	५	७	११	१७	१६	७	२०	५८	५५	पंचक प्रारम्भ ५२/०५, बलिदानदिन श्रीगुरु तेग़बहादुर जी(A)
२५	१२	६	र.	९	५६	धनि.	२०	१४	ह.	५०	३२	तै.	९	५६	२३	८	१७	४	कुम्भ			७	१२	१७	१७	७	२१	५९	५१	चम्पा षष्ठी, मित्र सप्तमी,
२५	११	७	चं.	५	२३	शत.	१७	४०	व.	४४	४४	व.	५	२३	२४	९	१८	५	कुम्भ			७	१३	१७	१७	७	२३	०	४८	भ. ५/२३ से ३३/५४ तक,
२५	९	८	मं.	२	२४	पू.भा.	१६	४०	सि.	४०	११	ब.	२	२४	२५	१०	१९	६	मीन	१	४६	७	१३	१७	१७	७	२४	१	४६	
२५	८	९	बु.	१	१	उ.भा.	१७	१३	व्य.	३६	५२	कौ.	१	१	२६	११	२०	७	मीन			७	१४	१७	१७	७	२५	२	४४	
२५	७	१०	गु.	१	११	रेव.	१९	१३	व.	३४	४०	ग.	१	११	२७	१२	२१	८	मेष	१९	१३	७	१५	१७	१७	७	२६	३	४२	भ. ३१/५७ बाद, पंचक समाप्त १६/१३, बुध ज्येष्ठा में (B)
२५	६	११	शु.	२	४५	अश्वि.	२२	३०	प.	३३	२७	वि.	२	४५	२८	१३	२२	९	मेष			७	१५	१७	१८	७	२७	४	४२	भ. २/४५ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती,
२५	५	१२	श.	५	३०	भर.	२६	५३	शि.	३३	४	बा.	५	३०	२९	१४	२३	१०	वृष	४३	९	७	१६	१७	१८	७	२८	५	४२	शनिप्रदोष व्रत,
२५	४	१३	र.	९	१७	कृत्ति.	३२	११	सि.	३३	२४	तै.	९	१७	पौ. १	१५	२४	११	वृष			७	१७	१७	१८	७	२९	६	४२	सं. सूर्य मूल धनु में ४७/४५, मु. ४५, पुण्यकाल अगले (C)
२५	४	१४	चं.	१३	५३	रोहि.	३८	१२	सा.	३४	१७	व.	१३	५३	२	१६	२५	१२	वृष			७	१७	१७	१९	८	०	७	४३	भ. १३/५३ से ४६/३२ तक, प्लूटो पू.षा. २ में (D)
२५	३	१५	मं.	१९	१०	मृग.	४४	४८	शु.	३५	३९	ब.	१९	१०	३	१७	२६	१३	मिथुन	११	२६	७	१८	१७	१९	८	१	८	४४	यूरेनस मार्गी ३६/४२,

(A) (पुरातन परम्परा अनुसार), (B) ०/१२, (C) दिन मध्याह्न तक, मंगल हस्त में ४८/४७, (D) ३७/२२, श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	५	७	२	९	६	६	०
२४	२८	७	१३	२४	२	२४	११	११
१	३८	२	२७	४३	१५	५	२२	२२
४६	११	३१	२५	२९	४८	१२	३३	३३
६०	७९९	३०	९२	६	२४	६	३	३
५९	३४	३१	४२	८	३४	३३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ ज्ये.	३ पू.भा.	४ उ.फा.	४ अनु.	२ पुन.	२ उ.षा.	२ विशा.	२ स्वा.	४ अश्वि.

कुण्डली सूर्योदय (१० दिसं.)

८ — रा. ७ श. — शु. १० — बु. ८ सू. — मं. ६ — ११ चं. — ५ — १२ — २ — ४ — १ के. — गु. ३

लोकभविष्यः- इस पक्ष में प्रतिपदा, अष्टमी एवं पूर्णिमा मंगलवारी है । सीमाप्रान्तों पर सैन्य हलचल रहे । कश्मीर, बंगलादेश, पाक, ईरान आदि में वातावरण अशान्त रहे । मकर राशि का शुक्र होने से महंगाई से जनाक्रोश को बढ़ावा मिले - " मकरे च यदा शुक्रः सर्व-सस्य-विनाशकृत् । महर्घं जायते सर्वं नात्र कार्या विचारणा ।।" पौष संक्रान्ति रविवारी होने से महंगाई का विषय राजनैतिक पार्टियों के लिए मुद्दा बनेगा- " संक्रान्तिः स्याद्यदा पौषे रविवारेण संयुता । धान्यं द्विगुणं मूल्यं तदा प्राहुर्मनीषिणः ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सूत, सण, रुई, सोना, चान्दी मन्दे रहें । ४ दिसं. के लगभग शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि तेज़ हों । रुई, चान्दी में मन्दे के बाद तेज़ी बने । १२ दिसं. से पक्षान्त तक घी, गुड़, खाण्ड, चावल, रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चान्दी में उठा-पटक के बाद तेज़ी रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (१७ दिसं.)

१० शु. — बु. ८ — ११ — सू. ९ — ७ श. रा. — १२ — मं. ६ — के. १ — गु. ३ — ५ — २ चं. — ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १७ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१	५	७	२	९	६	६	०
१	२६	१०	२४	२३	४	२४	११	११
८	४८	३२	१८	५७	२७	५०	०	०
४६	४६	५६	३९	५०	०	६	१८	१८
६१	७१९	२९	९३	७	१०	६	३	३
२	१३	२६	३०	०	२३	१४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ मूल	२ मृग.	१ हस्त	३ ज्ये.	२ पुन.	३ उ.षा.	२ विशा.	२ स्वा.	४ अश्वि.

आकाशलक्षणः- २ से ६ एवं १२ से १७ दिसं. तक उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर से अनेकत्र हानि के योग बनेंगे । हि.प्र., काश्मीर एवं उत्तराखण्ड के उन्नत भागों में भयंकर बर्फबारी और धुन्द आदि से दुर्घटनाएं घटित हों ।

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, पौष कृष्ण पक्ष १८

(१८ दिसम्बर २०१३ से १ जनवरी, सन् २०१४ ई. तक,)
दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु।

बु. अस्त है । प्रातः श. पूर्वकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्त में और गु. पश्चिम में दिखाई देगा । सायं शु. पश्चिमक्षितिज में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. पौष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३	१	बु.	२४	५८	आर्द्रा	५१	५२	शु.	३७	२३	कौ.	२४	५८	४	१८	२७	१४	मिथुन			७	१८	१७	१९	८	२	९	४७	
२५	२	२	गु.	३१	१०	पुन.	५९	१३	ब्र.	३९	२२	ग.	३१	१०	५	१९	२८	१५	कर्क	४२	२२	७	१९	१७	२०	८	३	१०	५०	
२५	२	३	शु.	३७	३२	पुष्य	६०	०	ऐ.	४१	२८	व.	४	२०	६	२०	२९	१६	कर्क			७	२०	१७	२०	८	४	११	५३	भ. ४/२० से ३७/३२ तक, बुध मूल धनु में ३४/००,
२५	२	४	श.	४३	५१	पुष्य	६	३७	वै.	४३	३०	ब.	१०	४१	७	२१	३०	१७	कर्क			७	२०	१७	२१	८	५	१२	५७	शुक्र वक्री ५०/०८, सूर्य सायन मकर में ३८/१६, (A)
२५	२	५	र.	४९	४४	आश्ले.	१३	५२	वि.	४५	१३	कौ.	१६	४७	८	२२	पौ. १	१८	सिंह	१३	५२	७	२१	१७	२१	८	६	१४	३	वक्री गुरु पुन. १ में ६/३२, शक पौष प्रारम्भ,
२५	२	६	चं.	५४	४६	मघा	२०	३०	प्री.	४६	२०	ग.	२२	१५	९	२३	२	१९	सिंह			७	२१	१७	२२	८	७	१५	८	भ. ५४/४६ बाद,
२५	२	७	मं.	५८	३२	पू.फा.	२६	९	आ.	४६	३२	वि.	२६	४०	१०	२४	३	२०	कन्या	४२	२३	७	२१	१७	२२	८	८	१६	१५	भ. २६/४० तक,
२५	३	८	बु.	६०	०	उ.फा.	३०	२४	सौ.	४५	३२	बा.	२९	३५	११	२५	४	२१	कन्या			७	२२	१७	२३	८	९	१७	२२	क्रिस्मस-डे,
२५	३	८	गु.	०	३८	हस्त	३२	५४	शो.	४३	६	कौ.	०	३८	१२	२६	५	२२	कन्या			७	२२	१७	२४	८	१०	१८	३०	जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब (पं.),
२५	४	९	शु.	०	४७	चित्रा	३३	२६	अ.	३९	३	ग.	०	४७	१३	२७	६	२३	तुला	३	२५	७	२३	१७	२४	८	११	१९	३८	भ. २६/४६ से ५८/५२ तक,
अवम		१०	शु.	५८	५२	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२५	४	११	श.	५४	५१	स्वाती	३१	५५	सु.	३३	२२	ब.	२६	५१	१४	२८	७	२४	तुला			७	२३	१७	२५	८	१२	२०	४७	सूर्य पू.षा. में ५३/२२, बुध पू.षा. में ५६/२५, सफला (B)
२५	५	१२	र.	४८	५८	विशा.	२८	२६	धृ.	२६	७	कौ.	२१	५४	१५	२९	८	२५	वृश्चिक	१४	२७	७	२३	१७	२५	८	१३	२१	५६	सफला एकादशी व्रत (वै.). (देखें पृ.110),
२५	६	१३	चं.	४१	२८	अनु.	२३	१६	शू.	१७	२८	ग.	१५	१३	१६	३०	९	२६	वृश्चिक			७	२४	१७	२६	८	१४	२३	६	भ. ४१/२८ बाद, सोमप्रदोष व्रत,
२५	७	१४	मं.	३२	४६	ज्येष्ठा	१६	४५	गं. वृ.	७ ५७	४० ५	वि.	७	०७	१७	३१	१०	२७	धनु	१६	४५	७	२४	१७	२७	८	१५	२४	१६	भ. ७/७ तक,
२५	८	३०	बु.	२३	१९	मूल	९	२०	धृ.	४६	३	ना.	२३	१९	१८	ज. १	११	२८	धनु			७	२४	१७	२८	८	१६	२५	२६	जनवरी (इंग्लिश नववर्ष सन् २०१४ ई.) प्रारम्भ,

(A) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) एकादशी व्रत (स्मा.)(देखें पृ. 110),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ दिसंबर,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १० १८ ३१	५ १५ १६ ६	५ १४ ५१ ३७	८ ८ २६ ११	२ २२ ५१ १७	९ ४ ३५ १	६ २५ ४४ २५	६ १० ३१ ४१	० १० ३१ ४१
६१ ८	७७६ ५५	२७ ४९	९५ १२	७ ४८	११ २२	५ ४६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२६ दिसं.)

१० शु. | ८
११ | सू. ९ बु. | ७ श. रा.
१२ | चं. मं. ६
के. १ | गु. ३ | ५
२ | ४

लोकभविष्यः– इस पक्ष में सूर्य, बुध धनुःस्थ होकर मंगल, शनि एवं गुरु से दृष्ट हैं । गुरु-शुक्र वक्री हैं । शुक्र उ.षा. (राजद्वार) नक्षत्र में है । जनता में अनेकत्र विशेषतः महानगरों में उग्रवादजन्य किंवा प्राकृतिक प्रकोपजन्य भय से परेशानी रहे । कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के जीवन के लिए भय भी है - "लोके भयं छत्रपतिक्षयं तत्र विनिर्दिशेत् ।" अमावस को मूलनक्षत्र होने से एवं प्रतिपदा-अमावस दोनों बुधवारी होने से कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होना भी संभव है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः– :- पक्षारम्भ से २० दिसं. तक बाज़ार मन्दा रहे । २१ दिसं. के लगभग घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि तेज़ हों । रुई में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी बने । तेज़ी से इस समय जल्दी निकलें, आगे २८ से ३१ दिसं. तक तेज़ी बनेगी ।

कुण्डली सूर्योदय (१ जन.)

१० शु. | ८
११ | सू. ९ बु. चं. | ७ श. रा.
१२ | मं. ६
के. १ | गु. ३ | ५
२ | ४

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१ जनवरी,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १६ २५ २८	८ ९ ४४ ३६	५ १७ ३५ २२	८ १८ १ ३९	२ २२ ३ ४१	९ २ ५० ३९	६ २६ १८ ८	६ १० १२ ३६	० १० १२ ३६
६१ १०	६१९ ०	२६ ३२	९६ ५९	८ ४	२५ २१	५ २४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	द.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षणः– दिसं. २० से २३ तक एवं २८ दिसं. से १ जनवरी (२०१४ ई.) तक भयंकर शीत चले एवं उ. भारत में पर्वतीय भूभाग [illegible] ।

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, पौष शुक्ल पक्ष १९

(२ से १६ जनवरी तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

बु. अस्त है । शु. ६ जन. को पश्चिम में अस्त होकर १५ जन. को पूर्व में उदित हो जाएगा । प्रातः श. पूर्वकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्त में और गु. पश्चिमक्षितिज के पास होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	जनवरी	पौष	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	९	१	गु.	१३	३५	पू.षा. उ.षा.	१ ५३	३० ४७	व्या.	३४	५८	ब.	१३	३५	१९	२	१२	२९	मकर	१४	३१	७	२४	१७	२८	८	१७	२६	३७	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
२५	११	२	शु.	४	५	श्रव.	४६	३९	ह.	२४	१५	कौ.	४	०५	२०	३	१३	र.१	मकर			७	२५	१७	२९	८	१८	२७	४७	रबि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
अवम		३	शु.	५५	१६	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२५	१२	४	श.	४७	३५	धनि.	४०	३५	व.	१४	१४	व.	२१	२५	२१	४	१४	२	कुम्भ	१३	२६	७	२५	१७	३०	८	१९	२८	५८	भ. २१/२५ से ४७/३५ तक, पंचक प्रारम्भ १३/२६, (A)
२५	१४	५	र.	४१	२५	शत.	३५	५९	सि. व्य.	५ ५७	१७ ३९	ब.	१४	३०	२२	५	१५	३	कुम्भ			७	२५	१७	३०	८	२०	३०	८	शनि विशा. ३ में २/४७,
२५	१५	६	चं.	३७	५	पू.भा.	३३	९	व.	५१	३१	कौ.	९	१५	२३	६	१६	४	मीन	१८	४१	७	२५	१७	३१	८	२१	३१	१८	बुध उ.षा. में १३/३०, व. शुक्र उ.षा. १ धनु में ४०/२८, (B)
२५	१७	७	मं.	३४	४४	उ.भा.	३२	१६	प.	४६	५८	ग.	५	५४	२४	७	१७	५	मीन			७	२५	१७	३२	८	२२	३२	२८	भ. ३४/४४ बाद, अवतार दिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,
२५	१९	८	बु.	३४	२४	रेव.	३३	२२	शि.	४३	५८	वि.	४	३५	२५	८	१८	६	मेष	३३	२२	७	२५	१७	३३	८	२३	३३	३७	भ. ४/३५ तक, पंचक समाप्त ३३/२२, बुध मकर में (C)
२५	२१	९	गु.	३५	५६	अश्वि.	३६	१४	सि.	४२	२३	बा.	५	१०	२६	९	१९	७	मेष			७	२५	१७	३४	८	२४	३४	४६	शुक्र पश्चिम में अस्त १७ घं. ३४ मि.,
२५	२३	१०	शु.	३९	६	भर.	४०	४१	सा.	४२	१	तै.	७	३१	२७	१०	२०	८	वृष	५७	०	७	२५	१७	३५	८	२५	३५	५४	सूर्य उ.षा. में ५८/०५,
२५	२५	११	श.	४३	३३	कृत्ति.	४६	२०	शु.	४२	३५	व.	११	२०	२८	११	२१	९	वृष			७	२५	१७	३५	८	२६	३७	२	भ. ११/२० से ४३/३३ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	२८	१२	र.	४८	५४	रोहि.	५२	५०	शु.	४३	५१	ब.	१६	१३	२९	१२	२२	१०	वृष			७	२५	१७	३६	८	२७	३८	९	व. शुक्र पू.षा. में १२/५८,
२५	३०	१३	चं.	५४	५०	मृग.	५९	५२	ब्र.	४५	३३	कौ.	२१	५२	३०	१३	२३	११	मिथुन	२६	१९	७	२५	१७	३७	८	२८	३९	१६	लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर), सोमप्रदोष व्रत,
२५	३२	१४	मं.	६०	०	आर्द्रा	६०	०	ऐं.	४७	३०	ग.	२७	५६	मा.१	१४	२४	१२	मिथुन			७	२५	१७	३८	८	२९	४०	२२	सं. सूर्य मकर में १४/२८, मु. १५, पुण्यकाल सारा दिन, (D)
२५	३५	१४	बु.	१	३	आर्द्रा	७	१०	वै.	४९	३३	व.	१	३	२	१५	२५	१३	कर्क	५७	४२	७	२५	१७	३९	९	०	४१	२७	भ. १/०३ से ३४/१३ तक, शुक्र पूर्व में उदित (E)
२५	३७	१५	गु.	७	२३	पुन.	१४	३२	वि.	५१	३५	ब.	७	२३	३	१६	२६	१४	कर्क			७	२५	१७	४०	९	१	४२	३३	व. गुरु आर्द्रा ४ में १९/२५, पौषी पूर्णिमा, माघस्नान (F)

शुक्र अस्त-६ जनवरी

शुक्र उदित-१५ जनवरी

(A) राहु स्वाती १, केतु अश्वि. ३ में ५२/५२, (B) शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ १७ घं. ३४ मि., (C) १४/४५, (D) मंगल चित्रा में ४४/४७, बुध श्रवण में १४/३५, मकर संक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), (E) ७ घं. २५ मि., श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ८ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	५	८	२	८	६	६	०
२३	२१	२०	२६	२१	२६	२६	६	६
३३	४३	३६	२७	६	१६	५४	५०	५०
३८	१४	३	३८	५७	४२	३३	२०	२०
६१	७७७	२४	६६	८	३५	४	३	३
९	१०	४८	२१	६	४५	५५	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ४	रेव. २	हस्त ४	उ.षा. १	पुन. १	उ.षा. १	विशा. ३	स्वा. १	अश्वि. ३

कुण्डली सूर्योदय (८ जन.)

१० ८ ११ सू. ९ बु. शु. ७ श. रा. चं. १२ मं. ६ के. १ गु. ३ ५ २ ४

लोकभविष्य :- इस चान्द्रमास में पांच वीरवार एवं पांच बुधवार हैं। अतः भारत में सर्वत्र सुख-शान्ति रहे। पश्चिमी देशों में कहीं उग्रवादजन्य अराजकता, हत्याकाण्ड हों-"यत्र मासे पंचवारा जायते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।" इस पक्ष में चतुर्थी शनिवारी होने से प्रजा में विभिन्न प्रकार के रोग फैलें। तीन मास तक कठिन राजनैतिक परिस्थितियों का सामना करना पड़े- "पौषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तु यदा शनिः। तदा प्रजा गदार्ता स्यान्मासत्रयं तु दारुणम्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सूत, रेशम, ऊन व सरसों आदि तिलहन, कालीमिर्च, गुड़, घी, तेल, चावल तेज़ हों । ६ जन. को अनाज, चान्दी, सोना, तांबा एवं शेयर तेज़ रहें । रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी, पीछे तेज़ी रहे । ९ जन. के लगभग सोना, चान्दी, घी, तेल, तिलहन मन्दे रहें, लेकिन १० से १४ जन. के लगभग तक दालदाना, कपास, सरसों आदि तेज़ हों ।

आकाशलक्षण :- ४ से १४ जन. तक अनेकत्र धुन्द का वातावरण रहे । हि.प्र., काश्मीर में हिमपात हो । अनेकत्र खण्डवृष्टि हो एवं उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (१६ जन.)

११ ९ शु. १२ सु. १० बु. ८ के.१ ७ श. रा. २ चं. ४ ६मं. ३ गु. ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	५	९	२	८	६	६	०
१	२९	२३	१२	२०	२४	२७	६	६
४२	३०	४६	४८	३	२७	३१	२४	२४
३४	३०	५१	३७	८	२१	५०	५४	५४
६१	७१२	२२	१००	७	३३	४	३	३
५	५३	३३	२४	४५	३८	१९	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. २	पुन. ३	चित्रा १	श्रवण १	पुन. १	पू.षा. ४	विशा. ३	स्वा. १	अश्वि. ३

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, माघ कृष्ण पक्ष २०

(१७ से ३० जनवरी तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

बु. १६ जन. को पश्चिम में उदित हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिजासन्न, श. पूर्वकपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त में होगा । सायं गु. पूर्वक्षितिज में उदय होता दिखाई देगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. पौष	मु. र.उ.ऊ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.
२५	४०	१	शु.	१३	३८	पुष्य	२१	५०	प्री.	५३	२९	कौ.	१३	३८	४	१७	२७	१५	कर्क			७	२४	१७	४१	९	२	४३	३७
२५	४३	२	श.	१९	४१	आश्ले.	२८	५६	आ.	५५	१०	ग.	१९	४१	५	१८	२८	१६	सिंह	२८	५६	७	२४	१७	४१	९	३	४४	४१
२५	४६	३	र.	२५	२०	मघा	३५	३६	सौ.	५६	२८	वि.	२५	२०	६	१९	२९	१७	सिंह			७	२४	१७	४२	९	४	४५	४५
२५	४९	४	चं.	३०	२१	पू.फा.	४१	३८	शो.	५७	१३	बा.	३०	२१	७	२०	३०	१८	कन्या	५८	१	७	२४	१७	४३	९	५	४६	४९
२५	५२	५	मं.	३४	२७	उ.फा.	४६	४५	अ.	५७	९	कौ.	२	२४	८	२१	मा.१	१९	कन्या			७	२३	१७	४४	९	६	४७	५२
२५	५५	६	बु.	३७	१८	हस्त	५०	३७	सु.	५६	५	ग.	५	५२	९	२२	२	२०	कन्या			७	२३	१७	४५	९	७	४८	५४
२५	५८	७	गु.	३८	३६	चित्रा	५२	५६	धृ.	५३	४५	वि.	७	५७	१०	२३	३	२१	तुला	२२	१	७	२३	१७	४६	९	८	४९	५६
२६	१	८	शु.	३८	६	स्वाती	५३	२८	शू.	५०	०	बा.	८	२१	११	२४	४	२२	तुला			७	२२	१७	४७	९	९	५०	५८
२६	५	९	श.	३५	४०	विशा.	५२	६	गं.	४४	५३	तै.	६	५३	१२	२५	५	२३	वृश्चिक	३७	३८	७	२२	१७	४८	९	१०	५१	५९
२६	८	१०	र.	३१	१८	अनु.	४८	५२	वृ.	३७	५६	व.	३	३०	१३	२६	६	२४	वृश्चिक			७	२१	१७	४९	९	११	५३	०
२६	११	११	चं.	२५	९	ज्येष्ठा	४३	५८	ध्रु.	२९	४४	बा.	२५	०९	१४	२७	७	२५	धनु	४३	५८	७	२१	१७	४९	९	१२	५४	०
२६	१५	१२	मं.	१७	३०	मूल	३७	४०	व्या.	२०	२०	तै.	१७	३०	१५	२८	८	२६	धनु			७	२०	१७	५०	९	१३	५५	०
२६	१८	१३	बु.	८	४४	पू.षा.	३०	२५	ह. व.	१० ५९	१ ८	व.	८	४४	१६	२९	९	२७	मकर	४३	२८	७	२०	१७	५१	९	१४	५५	५८
अवम		१४	बु.	५९	१४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	२२	३०	गु.	४९	३२	उ.षा.	२२	४०	सि.	४८	५	च.	२४	२३	१७	३०	१०	२८	मकर			७	१९	१७	५२	९	१५	५६	५६

म. ५२/३० बाद, शुक्रबाल्य समाप्त ७ घं. २५ मि.,
म. २५/२० तक, बुध पश्चिम में उदित १७ घं. ४२ मि.(A)
सूर्य सायन कुम्भ में ४/५५,
शक माघ प्रारम्भ,
म. ३७/१८ बाद, बुध धनि. मे १८/१५,
म. ७/५७ तक,
सूर्य श्रवण में ४/१०,

म. ३/३० से ३१/१८ तक, बुध कुम्भ में ४१/२२, (B)
नेप्च्यून शत. २ में ५४/३७, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
भौमप्रदोष व्रत,
म. ८/४४ से ३३/५६ तक, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन),
चतुर्दशी तिथिक्षय,
मौनी अमावस,

(A) श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय- देखें पृ. 11), (B) भारत गणतन्त्र दिवस,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २४ जनवरी,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	५	९	२	८	६	६	०
९	७	२६	२५	१९	२०	२८	८	८
५१	१०	३८	५३	३	४६	४	५९	५९
०	४८	१०	७	१९	२७	५	२८	२८
६१	७६४	१९	६१	७	१८	३	३	३
१	२	५१	४८	३	१०	४०	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ४	श्रा. १	विशा. १	धनि. १	आर्द्रा ४	पू.षा. ३	विशा. ३	स्वा. १	कृत्ति. ३

कुण्डली सूर्योदय (२४ जन.)

११ | ९ शु. | १२ | सु. १० बु. | ८ | के.१ | चं. ७ श. रा. | २ | ४ | ६मं. | ३ गु. | ५

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार शुभ हैं; प्रजा में सुख-समृद्धि रहे । देश में नई समृद्धिप्रद योजनाएं बने - "शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम् । प्रजा वृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते ॥" लेकिन बुधोदय भारत के दक्षिण-पश्चिमी भूभाग पर भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदा का संकेत देता है । गुरु-शुक्र का समसप्तक एवं वक्र होना भी राजनैतिक उलट-फेर होने का संकेत देता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से २२ जन. तक रुई, शेयर बाज़ार, सोना, चान्दी मन्दे रहें । २४ जन. को गेहूं, जौ, चावल, सोना, चान्दी, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सुपारी, लौंग तेज़ हों । २६ जन. के करीब अलसी, रुई में मन्दी; चान्दी में मन्दी होकर तेज़ी बने ।

आकाशलक्षणः- १९ से २६ जन. तक हि.प्र., काश्मीर, उत्तराखण्ड में कहीं बादलवर्षा, कहीं हिमपात हो । उत्तरी भारत में वायुवेग रहे, मौसम में कुछ परिवर्तन हो ।

कुण्डली सूर्योदय (३० जन.)

११ बु. | ९ शु. | १२ | सू. १० चं. | ८ | के.१ | ७ श. रा. | २ | ४ | ६मं. | ३ गु. | ५

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ३० जनवरी

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	५	१०	२	८	६	६	०
१५	३	२८	४	१८	१९	२८	८	८
५६	२	३१	१२	२२	३४	२४	४०	४०
५८	२५	२८	४५	४४	२१	४०	२३	२३
६०	६१९	१७	६६	६	३	३	३	३
५७	५५	२७	४७	२०	२१	७	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	द.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	उ.भा. २	विशा. २	धनि. ४	आर्द्रा ४	पू.षा. २	विशा. ३	स्वा. १	कृत्ति. ३

131 (३१ जनवरी से १४ फरवरी तक, सन् २०१४ ई.)

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, माघ शुक्ल पक्ष २१

(३१ जनवरी से १४ फरवरी तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

बु. ८ फर. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा । प्रातः शु. पूर्वक्षितिज के पास, श. याम्योत्तरवृत्त में और मं. इससे कुछ पश्चिम में होगा । सायं गु. पूर्वकपाल में दीखेगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जनवरी	श. माघ	मु. र.उ.लं.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	२६	१	शु.	४०	७	श्रव.	१४	५६	व्य.	३७	१५	किं.	१४	४९	१८	३१	११	२९	कुम्भ	४१	११	७	१९	१७	५३	९	१६	५७	५३	पंचक प्रारम्भ ४१/११, शुक्र मार्गी ४७/३०,
२६	२९	२	श.	३१	२७	धनि.	७	४३	व.	२७	०	बा.	५	४७	१९	फ.१	१२	३०	कुम्भ			७	१८	१७	५४	९	१७	५८	५०	चन्द्रदर्शन, मु. १५, बुध शत. में १८/४५, फरवरी प्रारम्भ,
२६	३३	३	र.	२४	१	शत. पू.भा.	१ ५६	३१ ४६	प.	१७	४५	ग.	२४	०१	२०	२	१३	र.१	मीन	४२	४७	७	१८	१७	५५	९	१८	५९	४५	भ. ५१/०५ बाद, गौरी तृतीया (गौंतरी), वरद-तिल- (A)
२६	३७	४	चं.	१८	१३	उ.भा.	५३	५१	शि.	९	४८	वि.	१८	१३	२१	३	१४	२	मीन			७	१७	१७	५६	९	२०	०	३९	भ. १८/१३ तक,
२६	४१	५	मं.	१४	२२	रेव.	५२	५९	सि. सा.	३ ५८	२२ ३५	बा.	१४	२२	२२	४	१५	३	मेष	५२	५९	७	१६	१७	५७	९	२१	१	३१	पंचक समाप्त ५२/५९, मंगल तुला में १७/३७, (B)
२६	४५	६	बु.	१२	३८	अश्वि.	५४	१२	शु.	५५	३१	तै.	१२	३८	२३	५	१६	४	मेष			७	१६	१७	५७	९	२२	२	२२	
२६	४९	७	गु.	१३	४	भर.	५७	२६	शु.	५४	३	व.	१३	०४	२४	६	१७	५	मेष			७	१५	१७	५८	९	२३	३	१२	भ. १३/०४ से ४४/१७ तक, सूर्य धनि. में १४/४०, (C)
२६	५३	८	शु.	१५	३०	कृत्ति.	६०	०	ब्र.	५३	५६	ब.	१५	३०	२५	७	१८	६	वृष	१३	३४	७	१४	१७	५९	९	२४	४	१	भीष्माष्टमी,
२६	५७	९	श.	१९	३६	कृत्ति.	२	२५	ऐं.	५४	५५	कौ.	१९	३६	२६	८	१९	७	वृष			७	१३	१८	०	९	२५	४	४७	बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. ० मि.,
२७	१	१०	र.	२४	५८	रोहि.	८	४०	वै.	५६	३७	ग.	२४	५८	२७	९	२०	८	मिथुन	४२	८	७	१३	१८	१	९	२६	५	३२	भ. ५८/०१ बाद,
२७	५	११	चं.	३१	५	मृग.	१५	४६	वि.	५८	४५	वि.	३१	०५	२८	१०	२१	९	मिथुन			७	१२	१८	२	९	२७	६	१६	भ. ३१/०५ तक, जया एकादशी व्रत(स.),
२७	९	१२	मं.	३७	३२	आर्द्रा	२३	१५	प्री.	६०	०	ब.	४	१८	२९	११	२२	१०	मिथुन			७	११	१८	३	९	२८	६	५८	भीष्म द्वादशी,
२७	१३	१३	बु.	४३	५६	पुन.	३०	४६	प्री.	१	१	कौ.	१०	४४	फा.१	१२	२३	११	कर्क	१३	५५	७	१०	१८	३	९	२९	७	३९	सं. सूर्य कुम्भ में ४७/३५, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (D)
२७	१८	१४	गु.	५०	०	पुष्य	३८	२	आ.	३	९	ग.	६	०४	२	१३	२४	१२	कर्क			७	९	१८	४	१०	०	८	१८	भ. ५०/० बाद,
२७	२२	१५	शु.	५५	३६	आश्ले.	४४	५२	सौ.	५	०	वि.	२२	४८	३	१४	२५	१३	सिंह	४४	५२	७	८	१८	५	१०	१	८	५५	भ. २२/४८ तक, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, (E)

(A) कुन्द चतुर्थी, रबि-उस्सानी मु. प्रारम्भ, (B) श्री(वसन्त)पंचमी, लक्ष्मी-सरस्वती पूजन, (C) बुध वक्री ४६/५२, आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) दिन मध्याह्न तक, वक्री बुध धनि. में १७/२८, प्रदोष व्रत, (E) श्रीगुरु रविदास जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
७ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	६	१०	२	८	६	६	०
२४	२६	०	९	१७	२०	२८	८	८
४	१७	३८	१६	३६	१३	४६	१४	१४
२	२३	३४	४९	१७	४७	५६	५७	५७
६०	७४०	१३	७	५	१४	२	३	३
४७	३४	४५	२७	६	५८	२१	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. १	भर. ४	चित्रा ३	शत. १	आर्द्रा ४	पू.फा. ३	विशा. ३	स्वा. १	कृत्ति. ३

कुण्डली सूर्योदय (७ फर.)

११ बु. | ९ शु. | १२ | सू. १० | ८ | के.१ चं. | मं. ७ श. रा. | २ | ४ | ६ | ३ गु. | ५

लोकभविष्य:— इस पक्ष में शनि-मंगल-राहु तीनों तुला राशि में एकत्र हैं । भारतीय शासनतन्त्र में भारी उलटफेर होंगे । समुद्रतटवर्ती किंवा दक्षिणोत्तरी भूभाग पर कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि किंवा यानदुर्घटना से भी हानि के योग हैं । सरहदी इलाकों पर सेना की हलचल से कहीं वातावरण अशांत रहेगा । तुला राशि का शुक्र खाद्यवस्तुओं में महंगाई से परेशान करे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- ३१ जन. को सोना, चान्दी तेज़ रहें । ६/७ फरवरी को सोना, चान्दी, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाजों; घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बने । ८ से १० फर. तक रुई में मन्दी, चान्दी तेज़ एवं शेयर मन्दे रहें । १२ फरवरी को घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, चावल, स्वांक में तेज़ी रहे ।

आकाशलक्षण :- जन.३१, फर. ६, ८ एवं १२ को वायुवेग रहे । भारत (उत्तरी भारत) के कुछ भागों में कहीं बादलचाल रहे । ग्रीष्म ऋतु के आगमन की सूचना मिले ।

कुण्डली सूर्योदय (१४ फर.)

१२ | १० | के.१ | सू. ११ बु. | शु.९ | २ | ८ | मं. ७श.रा. | गु.३ | ५ | चं.४ | ६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१४ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	६	१०	२	८	६	६	०
१	२०	२	५	१७	२२	२९	७	७
८	१३	३	४	४	३९	१	५२	५२
५७	०	५८	३	१३	१३	२०	४२	४२
६०	७१९	१०	६५	३	२७	१	३	३
३६	५१	२	२९	५३	५७	४०	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ३	आश्ले. २	चित्रा ३	धनि. ४	आर्द्रा ४	पू.फा. ३	विशा. ३	स्वा. १	कृत्ति. ३

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(१५ फरवरी से १ मार्च तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर–वसन्त ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. माघ	मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	बु. २२ फर. को पूर्व में उदित होगा । प्रातः शु. पूर्वकपाल में, श. याम्योत्तरवृत्त में और मं. इससे पश्चिम की ओर झुका होगा । सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा ।
२७	२६	१	श	६०	०	मघा	५१	७	शो.	६	२८	बा.	२८	०५	४	१५	२६	१४	सिंह			७	७	१८	६	१०	२	९	३२	
२७	३१	१	र.	०	३५	पू.फा.	५६	४४	अ.	७	२९	कौ.	०	३५	५	१६	२७	१५	सिंह			७	७	१८	७	१०	३	१०	६	
२७	३५	२	चं.	४	५३	उ.फा.	६०	०	सु.	७	५७	ग.	४	५३	६	१७	२८	१६	कन्या	१३	३	७	६	१८	८	१०	४	१०	४०	भ. ३६/३५ बाद,
२७	३९	३	मं.	८	२०	उ.फा.	१	३६	धृ.	७	४८	वि.	८	२०	७	१८	२९	१७	कन्या			७	५	१८	८	१०	५	११	१२	भ. ८/२० तक, व. बुध मकर में २६/३५, सूर्य सायन (A)
२७	४४	४	बु.	१०	४८	हस्त	५	३२	शू.	६	५४	बा.	१०	४८	८	१९	३०	१८	तुला	३७	५	७	४	१८	९	१०	६	११	४२	सूर्य शत. में २४/०७,
२७	४८	५	गु.	१२	७	चित्रा	८	२२	ग.	५	९	तै.	१२	०७	९	२०	फा.१	१९	तुला			७	३	१८	१०	१०	७	१२	१२	शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५३	६	शु.	१२	८	स्वाती	९	५७	वृ. धु.	२ ५८	२५ ३०	व.	१२	०८	१०	२१	२	२०	वृश्चिक	५५	१०	७	२	१८	११	१०	८	१२	४०	भ. १२/०८ से ४१/२५ तक, व. गुरु आर्द्रा ३ में (B)
२७	५७	७	श.	१०	४०	विशा.	१०	६	व्या.	५३	२५	ब.	१०	४०	११	२२	३	२१	वृश्चिक			७	१	१८	११	१०	९	१३	६	बुध पूर्व में उदित ७ घं. १ मि.,
२८	२	८	र.	७	४०	अनु.	८	४५	ह.	४७	७	कौ.	७	४०	१२	२३	४	२२	वृश्चिक			७	०	१८	१२	१०	१०	१३	३२	
२८	६	९	चं.	३	८	ज्येष्ठा	५	५४	व.	३९	४०	ग.	३	०८	१३	२४	५	२३	धनु	५	५४	६	५९	१८	१३	१०	११	१३	५६	भ. ३०/०७ से ५७/०६ तक,
अवम		१०	चं.	५७	९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय,
२८	११	११	मं.	५०	१	मूल पू.षा.	१ ५६	४० १३	सि.	३१	१०	ब.	२३	३४	१४	२५	६	२४	धनु			६	५८	१८	१४	१०	१२	१४	१८	विजया एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 110),
२८	१५	१२	बु.	४२	०	उ.षा.	४९	५९	व्य.	२१	५१	कौ.	१६	००	१५	२६	७	२५	मकर	९	४४	६	५६	१८	१५	१०	१३	१४	३९	शुक्र मकर में १२/३०, विजया एकादशी व्रत (वै.) (C) ,
२८	२०	१३	गु.	३३	२७	श्रव.	४३	१७	व.	११	५९	ग.	७	४३	१६	२७	८	२६	मकर			६	५५	१८	१५	१०	१४	१४	५९	भ. ३३/२७ से ५६/०७ तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, प्रदोषव्रत,
२८	२४	१४	शु.	२४	४९	धनि.	३६	३४	प. शि.	१ ५१	५३ ५२	श.	२४	४९	१७	२८	९	२७	कुम्भ	९	५४	६	५४	१८	१६	१०	१५	१५	१७	पंचक प्रारम्भ ६/५४, बुध मार्गी ३१/३०,
२८	२९	३०	श.	१६	३०	शत.	३०	१७	सि.	४२	२२	ना.	१६	३०	१८	मा.१	१०	२८	कुम्भ			६	५३	१८	१७	१०	१६	१५	३४	मंगल वक्री ३७/३५, यूरेनस रेवती १ में ३६/५२, (D)

(A) मीन में ४१/०२, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) १९/०२, शुक्र उ.षा. में १७/२७, (C) (देखें पृ. 110), (D) शनैश्चरी अमा, मार्च प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	६	९	२	८	६	६	०
१०	१३	३	२५	१६	२७	२९	७	७
१३	४७	१२	५६	३६	४३	१२	२४	२४
३३	४३	२७	१४	४	५४	३८	५	५
६०	८३६	४	३६	२	४०	०	३	३
२५	२३	२४	२३	१०	२४	४५	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	अनु. ४	चित्रा ३	धनि. १	आर्द्रा ३	उ.षा. १	विशा. ३	स्वा. १	अश्वि. ३

कुण्डली सूर्योदय (२३ फर.)

१२
१० बु. शु.
के. १
सू. ११
शु. ९
२
८ चं.
मं.
गु. ३
५
७ श. रा.
४
६

लोकभविष्य:– इस चान्द्रमास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार हैं। कहीं दुर्भिक्ष; कहीं राजनैतिक उटा-पटक किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु रो सत्ताहस्तान्तरण का योग है। पांच शनिवार होने से कहीं भयंकर भूकम्प, सुनामी व विस्फोट आदि से जनधनहानि भी सम्भव है -" शनैश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी । ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ।।" कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि एवं महंगाई से जनता भी परेशान रहे । २३ फर. से मार्च के प्रारम्भ तक का समय अधिक नेष्ट है । इस पक्ष में गुरु, बुध वक्री हैं, अतः जनता में रोगविशेष से परेशानी बढ़े । देश की आर्थिक स्थिति बिगड़े – " रोगाधिक्यं गुरौ वक्रे बुधे वक्रे धनक्षयः ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:– पक्षारम्भ में १८ फर. के लगभग रुई, सोना, चान्दी, सूत, सण, तिलहन, जायफल, छुहारा, सौंफ, हल्दी, गुड़ तेज़ रहें । २१/२२ फर. को रुई, सोना, चान्दी में घटाबढ़ी चले। २६ फर. से १ मार्च तक तेल, तिलहन, लालमिर्च, सोना, चान्दी, दालवाना, मोटे अनाज तेज़ रहें ।

आकाशलक्षण :– फर. १८, १९, २१, २२, २६, २८ एवं १ मार्च को श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ भागों में बादलचाल व बून्दाबान्दी हो । उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा एवं वसन्त ऋतु का आगमन होगा ।

कुण्डली सूर्योदय (१ मार्च)

१२
शु. १० बु.
के. १
सू. ११ चं.
९
२
८
मं.
गु. ३
५
७ श. रा.
४
६

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	६	९	२	९	६	६	०
१६	११	३	२४	१६	२	२९	७	७
१५	३८	२८	६	२६	२	१५	५	५
३६	१	२१	५२	०	१२	३३	१	१
६०	८८८	०	५	०	४६	०	३	३
१४	४२	८	५४	५९	२७	७	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ३	शत. २	चित्रा ४	धनि. १	आर्द्रा ३	मूल २	विशा. ३	स्वा. १	अश्वि. ३

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(२ से १६ मार्च तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में, शु. पूर्वकपाल में, श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और मं. इससे कुछ और पश्चिम की ओर दिखाई पड़ेगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त में देखा जा सकता है।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. मार्च	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. र.उ.आ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२८	३४	१	र.	८	५९	पू.भा.	२४	५४	सा.	३३	४०	ब.	८	५९	१९	२	११	२९	मीन	११	९	६	५२	१८	१७	१०	१७	१५	४८	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, शनि वक्री ३७/२२,
२८	३८	२	चं.	२	३९	उ.भा.	२०	५०	शु.	२६	६	कौ.	२	३९	२०	३	१२	ज.१	मीन			६	५१	१८	१८	१०	१८	१६	२	अवतार दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, जमद-उल-अव्वल मु. (A)
अवम		३	चं.	५७	५०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२८	४३	४	मं.	५४	५६	रेव.	१८	२५	शु.	१९	५५	व.	२६	२२	२१	४	१३	२	मेष	१८	२५	६	५०	१८	१९	१०	१९	१६	१३	भ. २६/२२ से ५४/५६ तक, पंचक समाप्त १८/२५, (B)
२८	४७	५	बु.	५४	४	अश्वि.	१७	५५	ब्र.	१५	१६	ब.	२४	३०	२२	५	१४	३	मेष			६	४९	१८	२०	१०	२०	१६	२२	
२८	५२	६	गु.	५५	१४	भर.	१९	२४	ऐं.	१२	१४	कौ.	२४	३९	२३	६	१५	४	वृष	३५	६	६	४७	१८	२०	१०	२१	१६	२९	गुरु मार्गी २३/३५,
२८	५७	७	शु.	५८	१८	कृत्ति.	२२	५१	वै.	१०	४७	ग.	२६	४६	२४	७	१६	५	वृष			६	४६	१८	२१	१०	२२	१६	३४	भ. ५८/१८ बाद,
२९	१	८	श.	६०	०	रोहि.	२७	५९	वि.	१०	४३	वि.	३०	३८	२५	८	१७	६	वृष			६	४५	१८	२२	१०	२३	१६	३७	भ. ३०/३८ तक, राहु चित्रा ४, केतु अश्वि. २ में (C)
२९	६	८	र.	२	५८	मृग.	३४	२५	प्री.	११	४६	ब.	२	५८	२६	९	१८	७	मिथुन	१	२	६	४४	१८	२२	१०	२४	१६	३७	
२९	११	९	चं.	८	४१	आर्द्रा	४१	३९	आ.	१३	३६	कौ.	८	४१	२७	१०	१९	८	मिथुन			६	४३	१८	२३	१०	२५	१६	३६	शुक्र श्रवण में ३२/१७,
२९	१५	१०	मं.	१४	५७	पुन.	४९	१०	सौ.	१५	४९	ग.	१४	५७	२८	११	२०	९	कर्क	३२	१९	६	४२	१८	२४	१०	२६	१६	३२	भ. ४८/०७ बाद,
२९	२०	११	बु.	२१	१७	पुष्य	५६	३१	शो.	१८	५	वि.	२१	१७	२९	१२	२१	१०	कर्क			६	४०	१८	२४	१०	२७	१६	२६	भ. २१/१७ तक, बुध कुम्भ में ७/१६, आमला एकादशी (D)
२९	२५	१२	गु.	२७	१३	आश्ले.	६०	०	अ.	२०	४	बा.	२७	१३	३०	१३	२२	११	कर्क			६	३९	१८	२५	१०	२८	१६	१८	
२९	३०	१३	शु.	३२	२७	आश्ले.	३	२२	सु.	२१	३४	तै.	३२	२७	चै.१	१४	२३	१२	सिंह	३	२२	६	३८	१८	२६	१०	२९	१६	८	सं. सूर्य मीन में ४१/१०, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न (E)
२९	३४	१४	श.	३६	४७	मघा	९	२४	धृ.	२२	२४	ग.	४	३७	२	१५	२४	१३	सिंह			६	३७	१८	२६	११	०	१५	५६	भ. ३६/४७ बाद,
२९	३९	१५	र.	४०	६	पू.फा.	१४	३०	शू.	२२	२९	वि.	८	२७	३	१६	२५	१४	कन्या	३०	३६	६	३६	१८	२७	११	१	१५	४१	भ. ८/२७ तक, होलिकादहन (प्रदोष में), होलाष्टक (F)

होलाष्टक- ८ से १६ मार्च तक

(A) प्रारम्भ, (B) सूर्य पू.भा. में ४०/२०, (C) ४६/००, होलाष्टक प्रारम्भ, (D) व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (E) बाद, प्रदोषव्रत, (F) समाप्त, जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ९ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	६	९	२	९	६	६	०
२४	२९	३	२७	१६	८	२६	६	६
१६	९	८	२५	२३	३६	१३	३९	३९
३९	४२	२३	५	४१	१७	३६	३५	३५
५९	७१९	५	४५	०	५२	०	३	३
५८	१	५६	४	३६	३०	४२	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. २	मृग. २	चित्रा ३	धनि. २	आर्द्रा ३	उ.षा. ४	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

कुण्डली सूर्योदय (९ मार्च)

१२ — सू. ११ — १० बु. शु. — ९ — ८ — ७ श. रा. मं. — ६ — ५ — ४ — ३ गु. — २ चं. — १ के.

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि-मंगल दोनों वक्री होकर राहु के साथ तुला राशि में हैं। इन तीनों खलग्रहों पर गुरु की दृष्टि भी है। अतः अनेक मुस्लिमराष्ट्रों में अराजकता से जनता परेशान रहे; सीमाप्रान्तों पर विशेषतः दक्षिण की ओर अशान्ति रहे- "तुलायां शनि-भौमौ चेत् भवेतां वक्रगामिनौ। हाहाकारस्तदा लोके विशेषाद्दक्षिणे दिशि ॥" मंगल के वक्र होने से आगे भयंकर दुर्भिक्ष रहे, शनि के वक्र होने से भयंकर रोगों से जनजीवन त्रस्त रहे। इनके साथ राहु का संयोग भी है, अतः कहीं भयंकर अग्निकाण्ड या विस्फोट से विशेष जनधनहानि सम्भव है -" भौमे वक्रे त्वनावृष्टिः शनौ वक्रे महाभयम्। वक्रत्रये महाकष्टं राहुःस्यादग्निकारकः।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः-२ मार्च के लगभग सिक्का, गेहूं, कली, पीतल, ज्वार, चावल, घी, तेल, अलसी, सरसों, नेट्रिया, तिल, तम्बाकू, सीमण्ट, सोना, चान्दी, चना, उड़द, बाजरा, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, रुई तेज रहे। ६ मार्च के लगभग मन्दा बन सकता है। १० से १४ मार्च तक तिल, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, तिलहन, शक्कर, रुई, सोना तेज़ रहें।

आकाशलक्षणः- मार्च २, ३, ४, ६, ८, १०, १२, १३ एवं १४ को मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, लंका, बंगाल, आसाम आदि के कुछ भागों में कहीं बादलचाल, कहीं बूंदाबांदी हो। उ.भारत में हवा का ज़ोर रहे एवं गरमी का आगमन हो।

कुण्डली सूर्योदय (१६ मार्च)

१ के. — सू. १२ — ११ बु. — १० शु. — ९ — ८ — ७ रा. मं. श. — ६ — ५ चं. — ४ — ३ गु. — २

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	६	१०	२	९	६	६	०
१	२३	२	३	१६	१४	२९	६	६
१५	६	१०	४७	३१	५६	६	१७	१७
४३	५७	४६	३३	५८	२१	४१	२०	२०
५९	७४५	११	६५	१	५६	१	३	३
४४	५०	१७	३९	५७	३०	२४	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	पू.फा. ३	चित्रा ३	धनि. ४	आर्द्रा ३	श्रवण २	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

श्री वि. सं. २०७०, शाक १९३५, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(१७ से ३० मार्च तक, सन् २०१४ ई.)
उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः बु. पूर्वक्षितिजासन्न, शु. पूर्वकपाल में, श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और मं. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा । सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर दिखाई पड़ेगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. ज.उ.ल.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४४	१	चं.	४२	२३	उ.फा.	१८	३६	गं.	२१	४८	बा.	११	१४	४	१७	२६	१५	कन्या			६	३४	१८	२८	११	२	१५	२५	वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),
२९	४८	२	मं.	४३	३८	हस्त	२१	४२	वृ.	२०	१८	तै.	१३	००	५	१८	२७	१६	तुला	५२	५१	६	३३	१८	२८	११	३	१५	७	सूर्य उ.भा. में २/१५, बुध शत. में ३०/३७,
२९	५३	३	बु.	४३	५०	चित्रा	२३	४९	ध्रु.	१८	१	व.	१३	४५	६	१९	२८	१७	तुला			६	३२	१८	२९	११	४	१४	४७	भ. १३/४५ से ४३/५० तक, गुरु आर्द्रा ४ में ३६/४७,
२९	५८	४	गु.	४३	०	स्वाती	२४	५५	व्या.	१४	५५	ब.	१३	२५	७	२०	२९	१८	तुला			६	३१	१८	३०	११	५	१४	२५	सूर्य सायन मेष में ३६/४७, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव-(A)
३०	२	५	शु.	४१	९	विशा.	२५	०	ह.	११	२	कौ.	१२	०४	८	२१	३०	१९	वृश्चिक	१०	५	६	२९	१८	३०	११	६	१४	१	
३०	७	६	श.	३८	१५	अनु.	२४	५	व.	६	१९	ग.	९	४२	९	२२	चै.१	२०	वृश्चिक			६	२८	१८	३१	११	७	१३	३६	भ. ३८/१५ बाद, शक चैत्र (संवत् १९३६) प्रारम्भ,
३०	१२	७	र.	३४	२२	ज्येष्ठा	२२	११	सि. व्य.	० ५४	४५ २७	वि.	६	२०	१०	२३	२	२१	धनु	२२	११	६	२७	१८	३२	११	८	१३	९	भ. ६/२० तक,
३०	१६	८	चं.	२९	३२	मूल	१९	२०	व.	४७	२५	बा.	१	५७	११	२४	३	२२	धनु			६	२६	१८	३२	११	९	१२	४०	शुक्र धनि. में ३६/३२, श्रीशीतलाष्टमी,
३०	२१	९	मं.	२३	५२	पू.षा.	१५	३८	प.	३९	४५	ग.	२३	५२	१२	२५	४	२३	मकर	२९	३४	६	२४	१८	३३	११	१०	१२	९	भ. ५०/४२ बाद, व. मंगल कन्या में ८/४०,
३०	२६	१०	बु.	१७	३२	उ.षा.	११	१४	शि.	३१	३५	वि.	१७	३२	१३	२६	५	२४	मकर			६	२३	१८	३४	११	११	११	३६	भ. १७/३२ तक,
३०	३०	११	गु.	१०	४५	श्रव.	६	२२	सि.	२३	६	बा.	१०	४५	१४	२७	६	२५	कुम्भ	३३	४७	६	२२	१८	३४	११	१२	११	२	पंचक प्रारम्भ ३३/४७, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
३०	३५	१२	शु.	३	४७	धनि. शत.	१ ५६	१४ १६	सा.	१४	३२	तै.	३	४७	१५	२८	७	२६	कुम्भ			६	२१	१८	३५	११	१३	१०	२६	भ. ५६/५२ बाद, बुध पू.भा. में ३४/३२, वारुणी योग (B)
अवम		१३	शु.	५६	५२	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३०	४०	१४	श.	५०	२८	पू.भा.	५१	४४	शु. शु.	६ ५८	७ ४	वि.	२३	४०	१६	२९	८	२७	मीन	३७	४८	६	१९	१८	३५	११	१४	९	४८	भ. २३/४० तक, मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा),
३०	४४	३०	र.	४४	५०	उ.भा.	४८	०	ब्र.	५०	४४	च.	१७	३९	१७	३०	९	२८	मीन			६	१८	१८	३६	११	१५	९	८	चान्द्र संवत्सर (२०७० वि.) पूर्ण,

(A) दिन, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, मेला श्रीशीतला माता-कुराली (पं.), (B) (७ घं. ५२ मि. से सूर्यास्त तक), प्रदोषव्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) २४ मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	६	१०	२	९	६	६	०
९	८	०	१३	१६	२२	२८	५	५
१२	१५	२०	३१	५२	४१	५२	५१	५१
४१	७	७	१६	४६	१२	५५	५४	५४
५९	८४९	१६	८१	३	५९	२	३	३
२६	५	५८	२१	२५	५८	८	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	मूल ३	चित्रा ३	शत. ३	आर्द्रा ४	श्रव. ४	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

कुण्डली सूर्योदय (२४ मार्च)

भाव	ग्रह
१	के.
२	
३	गु.
४	
५	
६	चं.
७	मं. श. रा.
८	
९	
१०	शु.
११	बु.
१२	सू.

लोकभविष्यः- २४ मार्च तक शनि, मंगल, राहु एकराशिस्थ, वक्र हैं। २५ मार्च को मंगल वक्री होकर कन्याराशि में आता है। कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि के संकेत मिलते हैं। समुद्रतटवर्ती भूभाग पर एवं महानगरों में उपवादजन्य विभीषिका किंवा सुनामी आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। कहीं यावनराष्ट्रों में राजपलट की घटना घटित हो। पक्षान्त में सूर्य-मंगल का समसप्तक भारतीय राजनीति में विशेष परिवर्तन का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १८ मार्च को चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं तेज़ हों। २४/२५ मार्च को चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा आदि अनाज, चान्दी, सोना, रुई, कपास तेज़ रहें। **आकाशलक्षण :-** मार्च १८, १९, २०, २४, २५ एवं २८ को आसाम, मुम्बई, प. राजस्थान, हि. प्र. जम्मू-काश्मीर में तेज़ हवाओं के साथ कहीं-कहीं खण्डवृष्टि संभव है। उत्तर भारत में गर्मी बढ़ने लगेगी।

कुण्डली सूर्योदय (३० मार्च)

भाव	ग्रह
१	के.
२	
३	गु.
४	
५	
६	मं.
७	श. रा.
८	
९	
१०	शु.
११	बु.
१२	सू. चं.

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि.(I.S.T.) ३० मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	५	१०	२	९	६	६	०
१५	४	२८	२२	१७	२८	२८	५	५
६	४८	२९	३	१५	४६	३८	३२	३२
१०	५१	२३	२३	५८	१७	४६	५०	५०
५९	८५१	२०	६०	४	६१	२	३	३
१८	४६	२१	४४	२८	५८	३९	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	उ.भा. १	चित्रा २	पू.भा. १	आर्द्रा ४	धनि. २	विशा. ३	चित्रा ४	अश्वि. २

"चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार-बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय ।।"

श्री वि. सं. 2069 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जनवरी, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	4	मं.	22	0	आश्ले.	11	45	प्री.	28	48	सिंह	11	45	7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, इंग्लिश नववर्ष 2013 ई. प्रारम्भ,
	2	5	बु.	22	29	मघा	12	58	आ.	27	54	सिंह			7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	
	3	6	गु.	22	28	पू.फा.	13	43	सौ.	26	36	कन्या	19	50	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	भ. 22/28 बाद,
	4	7	शु.	21	56	उ.फा.	13	58	शो.	24	53	कन्या			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ. 10/12 तक, शुक्र मूल धनु में 15/33,
	5	8	श.	20	51	हस्त	13	41	अ.	22	45	तुला	25	21	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	बुध पू.षा. में 13/26, वक्री गुरु रोहिणी 1 में 17/22,
	6	9	र.	19	12	चित्रा	12	52	सु.	20	9	तुला			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 30/07 बाद,
	7	10	चं.	17	1	स्वाती	11	30	धृ.	17	9	वृश्चि.	28	10	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 17/01 तक,
	8	11	मं.	14	22	विशा./	9	39	शू.	13	45	वृश्चि.			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	सफला एकादशी व्रत (स.).
						अनु.	31	24																								
	9	12	बु.	11	19	ज्येष्ठा	28	52	गं./	10	3	धनु	28	52	7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	प्रदोष व्रत,
									वृ.	30	7																					
	10	13/	गु.	8	1	मूल	26	11	ध्रु.	26	5	धनु			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	भ. 8/01 से 18/19 तक, सूर्य उ.षा. में 24/29, चतुर्दशी तिथिक्षय,
		14		28	36																											
	11	30	शु.	25	13	पू.षा.	23	32	व्या.	22	4	मकर	28	54	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	
पौष शुक्ल	12	1	श.	22	4	उ.षा.	21	5	ह.	18	12	मकर			7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, लोहड़ी (पं.).
	13	2	र.	19	19	श्रव.	19	2	व.	14	39	कुम्भ	30	12	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	पंचक प्रारम्भ 30/12, सं. सूर्य मकर में 30/59, (A).
	14	3	चं.	17	8	धनि.	17	32	सि.	11	31	कुम्भ			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	भ. 28/24 बाद, शुक्र पू. षा. में 30/56, पोंगल (द.भा.).(B)
	15	4	मं.	15	40	शत.	16	45	व्य./	8	56	कुम्भ			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 15/40 तक, बुध मकर में 22/47.
									व.	31	0																					
	16	5	बु.	15	2	पू.भा.	16	47	प.	29	44	मीन	10	42	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	
	17	6	गु.	15	17	उ.भा.	17	40	शि.	29	9	मीन			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	मंगल धनि. में 8/06,
	18	7	शु.	16	24	रेव.	19	24	सि.	29	11	मेष	19	24	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	18	भ. 16/24 से 29/20 तक, पंचक समाप्त 19/24, (C)
	19	8	श.	18	15	अश्वि.	21	47	सा.	29	42	मेष			7	24	17	43	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	सूर्य सायन कुम्भ में 27/22,
	20	9	र.	20	40	भर.	24	40	शु.	30	32	मेष			7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	
	21	10	चं.	23	22	कृत्ति.	27	49	शु.	—	—	वृष	7	28	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	बुध श्रवण में 22/27,
	22	11	मं.	26	8	रोहि.	30	58	शु.	7	33	वृष			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	भ. 12/45 से 26/08 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	23	12	बु.	28	43	मृग.	—	—	ब्र.	8	32	मिथुन	20	30	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	23	सूर्य श्रवण में 26/46,
	24	13	गु.	30	58	मृग.	9	55	ऐं.	9	22	मिथुन			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	प्रदोष व्रत,
	25	14	शु.	—	—	आर्द्रा	12	32	वै.	9	55	मिथुन			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	मंगल कुम्भ में 18/32, शुक्र उ. षा. में 22/19,
	26	14	श.	8	47	पुन.	14	44	वि.	10	9	कर्क	8	14	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 8/47 से 21/28 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)
	27	15	र.	10	8	पुष्य	16	29	प्री.	10	2	कर्क			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	28	1	चं.	11	1	आश्ले.	17	47	आ.	9	34	सिंह	17	47	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र मकर में 14/10,
	29	2	मं.	11	28	मघा	18	41	सौ.	8	46	सिंह			7	20	17	52	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 23/30 बाद, मंगल अस्त 17/52, बुध धनि. में 15/30,
	30	3	बु.	11	31	पू.फा.	19	12	शो./	7	39	कन्या	25	17	7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	भ. 11/31 तक, गुरु मार्गी 17/08, श्रीगणेश (संकष्ट) (E)
									अ.	30	16																					
	31	4	गु.	11	12	उ.फा.	19	23	सु.	28	36	कन्या			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	

(A) मु. 30, पुण्यकाल आगामी सारा दिन, बुध उ.षा. में 21/53, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मकरसंक्रान्ति, (B) पहला शाही स्नान कुम्भमहापर्व–प्रयाग, (C) शनि स्वाती 4 में 27/09, अवतार दिन श्रीगुरु गोविन्दसिंह जी, (D) भारत गणतन्त्रता दिवस, (E) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 21/06).

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	5	शु.	10	33	हस्त	19	15	धृ.	26	41	तुला	31	2	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	
	2	6	श.	9	34	चित्रा	18	46	शू.	24	29	तुला			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 9/34 से 20/54 तक, मंगल शत. में 28/58, बुध (A)
	3	7/	र.	8	14	स्वाती	17	57	गं.	22	2	तुला			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	
		8		30	33																											अष्टमी तिथिक्षय, कुम्भ महापर्व–प्रयागराज
	4	9	चं.	28	32	विशा.	16	48	वृ.	19	17	वृश्चि.	11	6	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	40	4	10 फरवरी
	5	10	मं.	26	12	अनु.	15	19	ध्रु.	16	17	वृश्चि.			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	भ. 15/22 से 26/12 तक, सूर्य धनि. में 29/59, बुध (B)
	6	11	बु.	23	37	ज्येष्ठा	13	33	व्या.	13	4	धनु	13	33	7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	बुध पश्चिम में उदित 17/59, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	7	12	गु.	20	51	मूल	11	35	ह./	9	39	धनु			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 7/14,
									व.	30	9																					शुक्र अस्त– 10 फरवरी
	8	13	शु.	18	3	पू.षा.	9	30	सि.	26	40	मकर	14	57	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 18/03 से 28/42 तक, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन), (C)
	9	14	श.	15	19	उ.षा./	7	26	व्य.	23	17	मकर			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	9	महोदय योग (15/19 से सूर्यास्त तक),
						श्रव.	29	34																								
	10	30	र.	12	50	धनि.	28	2	व.	20	9	कुम्भ	16	44	7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	45	10	पंचक प्रारम्भ 16/44, शुक्र पूर्व में अस्त 7/12, मौनी (D)
माघ शुक्ल	11	1	चं.	10	45	शत.	27	0	प.	17	23	कुम्भ			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	12	2	मं.	9	13	पू.भा.	26	37	शि.	15	5	मीन	20	39	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 20/00, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (E)
	13	3	बु.	8	23	उ.भा.	26	59	सि.	13	22	मीन			7	9	18	5	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	47	13	भ. 20/21 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी) (परयुता), तिल–(F)
	14	4	गु.	8	19	रेव.	28	9	सा.	12	16	मेष	28	9	7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 8/19 तक, पंचक समाप्त 28/09, बुध पू.भा. में (G)
	15	5	शु.	9	5	अश्वि.	30	3	शु.	11	48	मेष			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	शुक्र धनि. में 29/18,
	16	6	श.	10	37	भर.	—	—	शु.	11	54	मेष			7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	
	17	7	र.	12	46	भर.	8	35	ब्र.	12	28	वृष	15	18	7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	भ. 12/46 से 27/03 तक, (H)
	18	8	चं.	15	19	कृत्ति.	11	32	ऐं.	13	20	वृष			7	4	18	9	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	शनि वक्री 22/33, सूर्य सायन मीन में 17/32, वसंत (I)
	19	9	मं.	18	1	रोहि.	14	39	वै.	14	19	मिथुन	28	13	7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	सूर्य शत. में 10/27, मंगल पू. भा. में 26/36,
	20	10	बु.	20	34	मृग.	17	41	वि.	15	14	मिथुन			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	
	21	11	गु.	22	46	आर्द्रा	20	23	प्री.	15	55	मिथुन			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	21	भ. 9/40 से 22/46 तक, शुक्र कुम्भ में 13/12, (J)
	22	12	शु.	24	26	पुन.	22	36	आ.	16	14	कर्क	16	7	7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	22	भीष्म द्वादशी,
	23	13	श.	25	31	पुष्य	24	16	सौ.	16	7	कर्क			6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	बुध वक्री 15/11, शनिप्रदोष व्रत,
	24	14	र.	26	0	आश्ले.	25	21	शो.	15	32	सिंह	25	21	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भ. 26/00 बाद, गुरु रोहि. 2 में 21/25, राहु विशा. 2, (K)
	25	15	चं.	25	56	मघा	25	53	अ.	14	31	सिंह			6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	भ. 13/58 तक, बुध पश्चिम में अस्त 18/14, (L)
फाल्गु. कृ.	26	1	मं.	25	23	पू.फा.	25	58	सु.	13	6	सिंह			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र शत. में 21/13,
	27	2	बु.	24	27	उ.फा.	25	41	धृ.	11	21	कन्या	7	56	6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	23	6	27	17	55	27	
	28	3	गु.	23	12	हस्त	25	6	शू.	9	19	कन्या			6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	55	28	भ. 11/49 से 23/12 तक,

(A) कुम्भ में 10/28, (B) शत. में 30/21, शुक्र श्रवण में 13/45, (C) प्रदोष व्रत, (D) अमा, कुम्भ महापर्व प्रयागराज (प्रमुख शाही स्नान), (E) प्लूटो पू.षा. 2 में 18/41, (F) वरद–कुन्द चतुर्थी, (G) 23/00, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, लक्ष्मी–सरस्वती पूजन, तीसरा (अन्तिम) शाही स्नान कुम्भ महापर्व–प्रयाग, (H) रथ/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (I) ऋतु प्रारम्भ, भीष्माष्टमी, (J) जया एकादशी व्रत (स.), (K) केतु भरणी 4 में 15/45, (L) माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, प्रकाशोत्सव श्रीगुरु रविदास जी, श्रीसत्यनारायण व्रत.

श्री वि. सं. 2069 | तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) | मार्च, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण	1	4	शु.	21	44	चित्रा	24	17	गं./	7	3	तुला	12	42	6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									वृ.	28	38																					
	2	5	श.	20	5	स्वाती	23	18	ध्रु.	26	5	तुला			6	52	18	18	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	57	2	
	3	6	र.	18	17	विशा.	22	11	व्या.	23	26	वृश्चि.	16	28	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 18/17 से 29/20 तक,
	4	7	चं.	16	22	अनु.	20	57	ह.	20	41	वृश्चि.			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पू. भा. में 16/51, मंगल मीन में 29/39, वक्री (A)
	5	8	मं.	14	21	ज्येष्ठा	19	37	व.	17	51	धनु	19	37	6	48	18	20	6	46	18	20	6	51	18	26	6	21	17	58	5	
	6	9	बु.	12	15	मूल	18	13	सि.	14	58	धनु			6	47	18	20	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 23/11 बाद,
	7	10	गु.	10	7	पू.षा.	16	47	व्य.	12	3	मकर	22	25	6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ. 10/07 तक, विजया एकादशी व्रत (स्मा.),
	8	11/	शु.	7	59	उ.षा.	15	23	व./	9	8	मकर			6	45	18	22	6	43	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	मंगल उ.भा. में 27/07, विजया एकादशी व्रत (वै.), (B)
		12		29	56				प.	30	18																					द्वादशी तिथिक्षय,
	9	13	श.	28	4	श्रव.	14	6	शि.	27	37	कुम्भ	25	32	6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	भ. 28/04 बाद, पंचक प्रारम्भ 25/32, शुक्र पू. भा. में (C)
	10	14	र.	26	30	धनि.	13	2	सि.	25	11	कुम्भ			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 15/17 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	11	30	चं.	25	21	शत.	12	19	सा.	23	4	मीन	30	4	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	सोमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल	12	1	मं.	24	43	पू.भा.	12	3	शु.	21	21	मीन			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध पूर्व में उदित 6/40,
	13	2	बु.	24	43	उ.भा.	12	21	शु.	20	8	मीन			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	चन्द्रदर्शन, मु. 30, जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	14	3	गु.	25	24	रेव.	13	18	ब्र.	19	25	मेष	13	18	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	पंचक समाप्त 13/18, सं. सूर्य मीन में 16/56, मु. 30, (D)
	15	4	शु.	26	44	अश्वि.	14	53	ऐं.	19	15	मेष			6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ. 14/04 से 26/44 तक,
	16	5	श.	28	41	भर.	17	5	वै.	19	32	वृष	23	44	6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	
	17	6	र.	—	—	कृत्ति.	19	47	वि.	20	13	वृष			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. में 25/15, बुध मार्गी 25/32, शुक्र मीन में (E)
	18	6	चं.	7	3	रोहि.	22	48	प्री.	21	7	वृष			6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	
	19	7	मं.	9	39	मृग.	25	51	आ.	22	6	मिथुन	12	21	6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	34	6	7	18	5	19	भ. 9/39 से 22/55 तक, शुक्र उ.भा. में 30/12, (F)
	20	8	बु.	12	11	आर्द्रा	28	44	सौ.	22	56	मिथुन			6	30	18	30	6	29	18	29	6	35	18	34	6	6	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 16/32, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन,
	21	9	गु.	14	26	पुन.	—	—	शो.	23	30	कर्क	24	38	6	29	18	30	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	
	22	10	शु.	16	10	पुन.	7	11	अ.	23	38	कर्क			6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	भ. 28/43 बाद, वक्री शनि स्वाती 3 में 6/40,
	23	11	श.	17	16	पुष्य	9	4	सु.	23	15	कर्क			6	27	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	3	18	7	23	भ. 17/16 तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
	24	12	र.	17	39	आश्ले.	10	17	धृ.	22	20	सिंह	10	17	6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	गुरु रोहिणी 3 में 25/10, गोविन्दद्वादशी, प्रदोष व्रत,
	25	13	चं.	17	21	मघा	10	48	शू.	20	52	सिंह			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	
	26	14	मं.	16	25	पू.फा.	10	42	गं.	18	56	कन्या	16	35	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	भ. 16/25 से 27/41 तक, मंगल रेवती में 8/13, (G)
	27	15	बु.	14	57	उ.फा.	10	4	वृ.	16	35	कन्या			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्री चैतन्य महाप्रभु,
चैत्र कृष्ण	28	1	गु.	13	5	हस्त	8	59	ध्रु.	13	54	तुला	20	19	6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला–मेला (H)
	29	2	शु.	10	55	चित्रा/	7	35	व्या.	11	0	तुला			6	19	18	36	6	19	18	34	6	25	18	39	5	56	18	9	29	भ. 21/45 बाद,
						स्वाती	30	0																								
	30	3/	श.	8	34	विशा.	28	20	ह./	7	57	वृश्चिक	22	45	6	18	18	36	6	17	18	34	6	24	18	39	5	55	18	10	30	भ. 8/34 तक, शुक्र रेवती में 23/34, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
		4		30	9				व.	28	50																					चतुर्थी तिथिक्षय,
	31	5	र.	27	43	अनु.	26	39	सि.	25	43	वृश्चिक			6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	सूर्य रेवती में 12/11,

होलाष्टक 19 से 27 मार्च

(A) बुध शत. में 19/58, (B) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (C) 13/29, यूरेनस उ.भा. 4 में 14/07, शनिप्रदोष व्रत, (D) पुण्यकाल 10/31 बाद, (E) 13/58, (F) होलाष्टक प्रारम्भ, (G) नेप्च्यून शत. 2 में 24/35, होलिकादहन, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.),

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	6	चं.	25	23	ज्येष्ठा	25	3	व्य.	22	40	धनु	25	3	6	16	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	भ. 25/23 बाद, बुध पू. भा. में 15/02,
	2	7	मं.	23	9	मूल	23	34	व.	19	42	धनु			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 12/11 तक,
	3	8	बु.	21	6	पू.षा.	22	15	प.	16	52	मकर	27	57	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	श्री शीतलाष्टमी,
	4	9	गु.	19	16	उ.षा.	21	10	शि.	14	13	मकर			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	मेला श्री शीतलामाता, (कुराली– पं.),
	5	10	शु.	17	40	श्रव.	20	19	सि.	11	45	मकर			6	11	18	40	6	10	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 6/28 से 17/40 तक,
	6	11	श.	16	22	धनि.	19	46	सा.	9	31	कुम्भ	7	59	6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	पंचक प्रारम्भ 7/59, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	7	12	र.	15	25	शत.	19	33	शु./	7	32	कुम्भ			6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	वारुणी पर्व (15/25 से सूर्यास्त तक), प्रदोष व्रत,
									शु.	29	51																					
	8	13	चं.	14	50	पू.भा.	19	44	ब्र.	28	31	मीन	13	39	6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	भ. 14/50 से 26/46 तक,
	9	14	मं.	14	43	उ.भा.	20	21	ऐं.	27	32	मीन			6	6	18	42	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	बुध मीन में 25/53, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
	10	30	बु.	15	5	रेव.	21	29	वै.	26	58	मेष	21	29	6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	पंचक समाप्त 21/29, शुक्र अश्वि. मेष में 17/31, (A)
चैत्र शुक्ल	11	1	गु.	15	59	अश्वि.	23	6	वि.	26	49	मेष			6	4	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, चान्द्र संवत्सर (B)
	12	2	शु.	17	24	भर.	25	14	प्री.	27	3	मेष			6	2	18	44	6	3	18	41	6	10	18	46	5	42	18	15	12	मंगल अश्वि. मेष में 19/36, बुध उ.भा. में 12/14, (C)
	13	3	श.	19	18	कृत्ति.	27	49	आ.	27	38	वृष	7	51	6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	सं. सूर्य अश्वि. मेष में 25/28, मु. 30, पुण्यकाल अगले (D)
	14	4	र.	21	35	रोहि.	—	—	सौ.	28	29	वृष			6	0	18	46	6	1	18	42	6	8	18	47	5	40	18	16	14	भ. 8/26 से 21/35 तक,
	15	5	चं.	24	5	रोहि.	6	42	शो.	29	27	मिथुन	20	14	5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	39	18	17	15	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	16	6	मं.	26	38	मृग.	9	46	अ.	—	—	मिथुन			5	58	18	47	5	59	18	44	6	6	18	48	5	38	18	17	16	स्कन्द षष्ठी,
	17	7	बु.	28	59	आर्द्रा	12	46	अ.	6	26	मिथुन			5	57	18	48	5	58	18	44	6	5	18	48	5	37	18	18	17	भ. 28/59 बाद, शुक्र उदित–20 अप्रैल
	18	8	गु.	—	—	पुन.	15	31	सु.	7	14	कर्क	8	52	5	56	18	48	5	56	18	45	6	4	18	49	5	37	18	18	18	भ. 17/58 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु नक्षत्र (E)
	19	8	शु.	6	55	पुष्य	17	47	धृ.	7	43	कर्क			5	55	18	49	5	55	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	श्रीरामनवमी, सूर्य सायन वृष में 27/34, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (F)
	20	9	श.	8	15	आश्ले.	19	25	शू.	7	44	सिंह	19	25	5	54	18	49	5	54	18	46	6	2	18	50	5	35	18	19	20	बुध रेवती में 28/56, शुक्र पश्चिम में उदित 18/49, (G)
	21	10	र.	8	52	मघा	20	20	गं.	7	12	सिंह			5	52	18	50	5	53	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	भ. 20/48 बाद, शुक्र भरणी में 12/08, अगस्त्य अस्त,
	22	11	चं.	8	43	पू.फा.	20	30	वृ./	6	5	कन्या	26	26	5	51	18	51	5	53	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	भ. 8/43 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव,
									घु.	28	21																					
	23	12	मं.	7	49	उ.फा.	19	57	व्या.	26	4	कन्या			5	50	18	51	5	52	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	श्रीविष्णु–दमनोत्सव, अनंगत्रयोदशी (पूर्वविद्धा), शुक्रबाल्य (H)
	24	13/	बु.	6	14	हस्त	18	47	ह.	23	18	कन्या			5	49	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	भ. 28/04 बाद, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), श्रीशिवदमनोत्सव,
		14	.	28	4																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	25	15	गु.	25	27	चित्रा	17	6	व.	20	8	तुला	6	0	5	48	18	53	5	50	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	भ. 14/46 तक, चैत्री पूर्णिमा, श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.), (I)
वैशाख कृष्ण	26	1	शु.	22	31	स्वाती	15	3	सि.	16	41	तुला			5	47	18	53	5	49	18	49	5	56	18	53	5	30	18	22	26	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रग्रहण 25/26 अप्रैल
	27	2	श.	19	24	विशा.	12	46	व्य.	13	3	वृश्चिक	7	21	5	46	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	सूर्य भरणी में 17/21,
	28	3	र.	16	15	अनु.	10	25	व./	9	22	वृश्चिक			5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	भ. 5/49 से 16/15 तक, बुध अश्वि. मेष में 18/26, (J)
									प.	29	42																					
	29	4	चं.	13	11	ज्येष्ठा	8	6	शि.	26	12	धनु	8	6	5	44	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	बुध पूर्व में अस्त 5/44,
	30	5	मं.	10	20	मूल/	5	59	सि.	22	54	धनु			5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	मंगल भरणी में 14/44, गुरु मृगशिरा 1 में 16/54,
						पू.षा.	28	10																								

(A) चान्द्र संवत्सर 2069 वि. पूर्ण, (B) 2070 वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र–प्राशन, चन्द्रव्रत, (C) प्लूटो वक्री 25/02, (D) दिन मध्याह्न तक, गुरु रोहिणी 4 में 17/40, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्री मत्स्य जयन्ती, मेष संक्रान्ति, वैशाखी (पं.), (E) 15/31 तक), (F) नवरात्र समाप्त, (G) नवरात्र–पारणा, (H) समाप्त 18/51, भौमप्रदोष व्रत, (I) वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 24), (J) राहु विशाखा 1, केतु भरणी 3 में 13/47, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.

श्री वि. सं. 2070 **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** मई, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख कृष्ण	1	6/	बु.	7	48	उ.षा.	26	43	सा.	19	55	मकर	9	45	5	43	18	57	5	44	18	52	5	52	18	55	5	26	18	24	1	भ. 7/48 से 18/43 तक,
		7		29	38																											
	2	8	गु.	27	57	श्रव.	25	42	शु.	17	17	मकर			5	42	18	57	5	43	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	शुक्र कृत्तिका में 7/31,
	3	9	शु.	26	44	धनि.	25	11	शु.	15	2	कुम्भ	13	23	5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	57	5	24	18	25	3	पंचक प्रारम्भ 13/23,
	4	10	श.	26	3	शत.	25	11	ब्र.	13	11	कुम्भ			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	भ. 14/23 से 26/03 तक, शुक्र वृष में 24/28,
	5	11	र.	25	53	पू.भा.	25	41	ऐं.	11	46	मीन	19	30	5	39	18	59	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	26	5	बुध भरणी में 13/14, वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), (A)
	6	12	चं.	26	13	उ.भा.	26	40	वै.	10	45	मीन			5	38	19	0	5	40	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	
	7	13	मं.	27	1	रेव.	28	8	वि.	10	7	मेष	28	8	5	38	19	1	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	भ. 27/01 बाद, पंचक समाप्त 28/08, भौमप्रदोष व्रत,
	8	14	बु.	28	17	अश्वि.	—	—	प्री.	9	52	मेष			5	37	19	1	5	39	18	56	5	47	18	59	5	21	18	28	8	भ. 15/39 तक,
	9	30	गु.	—	—	अश्वि.	6	2	आ.	9	57	मेष			5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	29	9	वक्री शनि स्वाती 2 में 15/53, यूरेनस रेवती 1 में 12/25,
	10	30	शु.	5	58	भर.	8	20	सौ.	10	21	वृष	14	57	5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	
वैशाख शुक्ल	11	1	श.	8	0	कृति.	10	58	शो.	11	0	वृष			5	35	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य कृत्तिका (B)
	12	2	र.	10	19	रोहि.	13	51	अ.	11	52	मिथुन	27	21	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	19	18	30	12	शुक्र रोहिणी में 27/32, श्रीशिवाजी जयन्ती, श्रीपरशुराम(C)
	13	3	चं.	12	48	मृग.	16	53	सु.	12	51	मिथुन			5	33	19	5	5	36	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	भ. 26/04 बाद, बुध वृष में 8/38, अक्षय तृतीया,
	14	4	मं.	15	19	आर्द्रा	19	57	धृ.	13	53	मिथुन			5	32	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	17	18	31	14	भ. 15/19 तक, सं. सूर्य वृष में 22/21, मु. 45, (D)
	15	5	बु.	17	44	पुन.	22	52	शू.	14	49	कर्क	16	9	5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	16	6	गु.	19	50	पुष्य	25	28	गं.	15	34	कर्क			5	31	19	7	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	गुरु मृग. 2 में 8/16, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
	17	7	शु.	21	29	आश्ले.	27	35	वृ.	15	58	सिंह	27	35	5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	भ. 21/29 बाद, बुध रोहिणी में 23/10, श्रीगंगा जन्म,
	18	8	श.	22	30	मघा	29	4	ध्रु.	15	54	सिंह			5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	भ. 9/59 तक, मंगल कृत्तिका में 18/41,
	19	9	र.	22	47	पू.फा.	—	—	व्या.	15	18	सिंह			5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	श्रीजानकी जयन्ती,
	20	10	चं.	22	18	पू.फा.	5	49	ह.	14	6	कन्या	11	53	5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	सूर्य सायन मिथुन में 26/38,
	21	11	मं.	21	3	उ.फा./	5	49	व.	12	16	कन्या			5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	6	5	14	18	35	21	भ. 9/40 से 21/03 तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
						हस्त	29	3																								
	22	12	बु.	19	4	चित्रा	27	36	सि.	9	50	तुला	16	24	5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	प्रदोषव्रत,
	23	13	गु.	16	28	स्वाती	25	35	व्य./	6	52	तुला			5	28	19	11	5	30	19	5	5	39	19	8	5	14	18	36	23	मंगल वृष में 9/12, शुक्र मृग. में 24/16, बुध (E)
									व.	27	26																					
	24	14	शु.	13	22	विशा.	23	7	प.	23	38	वृश्चिक	17	46	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	भ. 13/22 से 23/39 तक, बुध मृग. में 10/54, (F)
	25	15	श.	9	55	अनु.	20	23	शि.	19	37	वृश्चिक			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	9	5	13	18	37	25	सूर्य रोहिणी में 7/43, वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, (G)
ज्येष्ठ कृष्ण	26	1/	र.	6	16	ज्येष्ठा	17	31	सि.	15	30	धनु	17	31	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
		2		26	36																											द्वितीया तिथिक्षय,
	27	3	चं.	23	3	मूल	14	44	सा.	11	26	धनु			5	26	19	13	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	भ. 12/49 से 23/03 तक, बुध मिथुन में 24/43,
	28	4	मं.	19	47	पू.षा.	12	9	शु./	7	31	मकर	17	34	5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									शु.	27	54																					
	29	5	बु.	16	57	उ.षा.	9	58	ब्र.	24	40	मकर			5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	शुक्र मिथुन में 10/55,
	30	6	गु.	14	40	श्रव.	8	18	ऐं.	21	56	कुम्भ	19	41	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 14/40 से 25/52 तक, पंचक प्रारम्भ 19/41,
	31	7	शु.	13	2	धनि.	7	15	वै.	19	44	कुम्भ			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	बुध आर्द्रा में 23/21, गुरु मृग. 3 मिथुन में 6/48,

(A) श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, (B) मे 11/30, बुध कृत्तिका में 19/54, (C) जयन्ती (प्रदोषव्यापिनी तृतीया में), (D) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (E) पश्चिम में उदित 19/11, श्रीनृसिंह जयन्ती, (F) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (G) श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि–प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र--प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
ज्येष्ठ कृष्ण	1	8	श.	12	5	शत.	6	52	वि.	18	6	मीन	25	3	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	गुरु अस्त– 6 जून
	2	9	र.	11	50	पू.भा.	7	12	प्री.	17	2	मीन			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	40	2	भ. 24/03 बाद,
	3	10	चं.	12	16	उ.भा.	8	11	आ.	16	29	मीन			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 12/16 तक, शुक्र आर्द्रा में 21/44, गुरु वार्धक्य (A)
	4	11	मं.	13	19	रेव.	9	47	सौ.	16	24	मेष	9	47	5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	41	4	पंचक समाप्त 9/47, अपरा एकादशी व्रत(स.), भद्रकाली (B)
	5	12	बु.	14	51	अश्वि.	11	54	शो.	16	42	मेष			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	प्रदोषव्रत,
	6	13	गु.	16	48	भर.	14	24	अ.	17	18	वृष	21	4	5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	14	5	11	18	42	6	भ. 16/48 बाद, मगल रोहिणी में 8/33, गुरु अस्त 19/19,
	7	14	शु.	19	2	कृत्ति.	17	11	सु.	18	6	वृष			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	भ. 5/55 तक, नेप्च्यून वक्री 14/00,
	8	30	श.	21	26	रोहि.	20	9	धृ.	19	4	वृष			5	23	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	सूर्य मृग. मे 5/35, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका (C)
ज्येष्ठ शुक्ल	9	1	र.	23	56	मृग.	23	13	शू.	20	6	मिथुन	9	41	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	10	2	चं.	26	25	आर्द्रा	26	15	गं.	21	7	मिथुन			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	चन्द्रदर्शन, मु. 15, बुध पुनर्वसु में 21/31,
	11	3	मं.	28	47	पुन.	29	11	वृ.	22	5	कर्क	22	28	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	रम्भातृतीया, श्रीप्रताप जयन्ती (राज.),
	12	4	बु.	—	—	पुष्य	—	—	ध्रु.	22	53	कर्क			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	भ. 17/51 बाद, बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,
	13	4	गु.	6	55	पुष्य	7	55	व्या.	23	28	कर्क			5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 6/55 तक,
	14	5	शु.	8	43	आश्ले.	10	17	ह.	23	43	सिंह	10	17	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	सं. सूर्य मिथुन में 28/55, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (D)
	15	6	श.	10	2	मघा	12	13	व.	23	33	सिंह			5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
	16	7	र.	10	46	पू.फा.	13	33	सि.	22	53	कन्या	19	47	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 10/46 से 22/48 तक,
	17	8	चं.	10	50	उ.फा.	14	13	व्य.	21	39	कन्या			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	
	18	9	मं.	10	9	हस्त	14	10	व.	19	49	तुला	25	51	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	श्रीगंगा दशहरा (देखें पृष्ठ 106),
	19	10	बु.	8	44	चित्रा	13	22	प.	17	23	तुला			5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	भ. 19/40 बाद, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.)(देखें पृष्ठ 106)
	20	11/	गु.	6	36	स्वाती	11	52	शि.	14	24	वृश्चिक	28	21	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 6/36 तक, निर्जला एकादशी व्रत (वै.), (E)
		12		27	50																											द्वादशी तिथिक्षय,
	21	13	शु.	24	33	विशा.	9	46	सि.	10	55	वृश्चिक			5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य आर्द्रा में 28/33, सूर्य सायन कर्क में 10/34, (F)
	22	14	श.	20	54	अनु./	7	11	सा./	7	2	धनु	28	17	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	भ. 20/54 बाद, शुक्र कर्क में 24/59, श्रीसत्यनारायण व्रत,
						ज्येष्ठा	28	17	शु.	26	53																					
	23	15	र.	17	2	मूल	25	13	शु.	22	36	धनु			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 6/58 तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष),
आषाढ़ कृष्ण	24	1	चं.	13	8	पू.षा.	22	12	ब्र.	18	20	मकर	27	29	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	25	2	मं.	9	23	उ.षा.	19	25	ऐं.	14	13	मकर			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	भ. 19/40 बाद, मंगल मृग. में 8/55, शुक्र पुष्य में (G)
	26	3/	बु.	5	57	श्रव.	17	2	वै.	10	25	कुम्भ	28	3	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	भ. 5/57 तक, पंचक प्रारम्भ 28/03, बुध वक्री 18/38,(H)
		4		27	1																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	27	5	गु.	24	43	धनि.	15	14	वि./	7	3	कुम्भ			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	
									प्री.	28	15																					
	28	6	शु.	23	10	शत.	14	9	आ.	26	4	कुम्भ			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 23/10 बाद, मंगल उदित 5/26,
	29	7	श.	22	26	पू.भा.	13	51	सौ.	24	32	मीन	7	51	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 10/48 तक, गुरु आर्द्रा 1 में 10/16,
	30	8	र.	22	32	उ.भा.	14	23	शो.	23	41	मीन			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	राहु स्वाती 4, केतु भरणी 2 में 11/19,

(A) प्रारम्भ 19/17, (B) एकादशी (पं.), (C) अमा, शनैश्चरी अमा, (D) मध्याह्न तक, गुरु मृग. 4 में 21/11, शुक्र पुनर्वसु में 19/51, वक्री प्लूटो पू.षा. 1 में 12/33, (E) (वै.), (देखें पृष्ठ 106), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (F) दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ, प्रदोषव्रत, (G)18/49, (H) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

श्री वि. सं. 2070 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — जुलाई, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषाढ़ कृष्ण	1	9	चं.	23	25	रेव.	15	41	अ.	23	25	मेष	15	41	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	1	पंचक समाप्त 15/41, बुध पश्चिम में अस्त 19/25, (A)
	2	10	मं.	24	56	अश्वि.	17	40	सु.	23	40	मेष			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	20	5	15	18	48	2	भ. 12/10 से 24/56 तक, **गुरु उदित– 1 जुलाई**
	3	11	बु.	26	57	भर.	20	11	धृ.	24	18	वृष	26	52	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	3	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	4	12	गु.	29	18	कृत्ति.	23	2	शू.	25	12	वृष			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	4	मंगल मिथुन में 25/12, गुरुबाल्य समाप्त 5/29,
	5	13	शु.	—	—	रोहि.	26	5	गं.	26	14	वृष			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	सूर्य पुनर्वसु में 28/09, प्रदोषव्रत,
	6	13	श.	7	48	मृग.	29	11	वृ.	27	18	मिथुन	15	38	5	29	19	25	5	33	19	18	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 7/48 से 21/04 तक, शुक्र आश्लेषा में 18/41,
	7	14	र.	10	19	आर्द्रा	—	—	ध्रु.	28	19	मिथुन			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	
	8	30	चं.	12	44	आर्द्रा	8	11	व्या.	29	13	कर्क	28	21	5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	शनि मार्गी 10/43, सोमवती अमा.
आषाढ़ शुक्ल	9	1	मं.	14	59	पुन.	11	3	ह.	—	—	कर्क			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	10	2	बु.	16	59	पुष्य	13	41	ह.	5	57	कर्क			5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	चन्द्रदर्शन, मु. 15, रथयात्रा (पुरी) (पुष्य नक्षत्र 13/41 तक),
	11	3	गु.	18	41	आश्ले.	16	2	व.	6	28	सिंह	16	2	5	32	19	24	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	48	11	
	12	4	शु.	20	1	मघा	18	3	सि.	6	44	सिंह			5	32	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	19	18	47	12	भ. 7/21 से 20/01 तक,
	13	5	श.	20	56	पू.फा.	19	38	व्य.	6	41	कन्या	25	58	5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	गुरु आर्द्रा 2 में 27/59,
	14	6	र.	21	19	उ.फा.	20	44	व./ प.	6 29	17 27	कन्या			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	मंगल आर्द्रा में 20/15, कुमार षष्ठी,
	15	7	चं.	21	8	हस्त	21	16	शि.	28	8	कन्या			5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	भ. 21/08 बाद, विवस्वत् सप्तमी,
	16	8	मं.	20	19	चित्रा	21	10	सि.	26	18	तुला	9	18	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	भ. 8/43 तक, सं. सूर्य कर्क में 15/45, मु. 30, (B)
	17	9	बु.	18	50	स्वाती	20	25	सा.	23	57	तुला			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	शुक्र मघा सिंह में 19/33, यूरेनस वक्री 22/52,
	18	10	गु.	16	42	विशा.	19	2	शु.	21	4	वृश्चिक	13	26	5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	भ. 27/21 बाद,
	19	11	शु.	14	0	अनु.	17	4	शु.	17	43	वृश्चिक			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	45	19	भ. 14/00 तक, सूर्य पुष्य में 27/37, बुध पूर्व में उदित (C)
	20	12	श.	10	49	ज्येष्ठा	14	38	ब्र.	13	59	धनु	14	38	5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	बुध मार्गी 23/51, शनिप्रदोष व्रत,
	21	13/ 14	र.	7 27	16 32	मूल	11	52	ऐं.	9	58	धनु			5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	24	18	45	21	भ. 27/32 बाद, चतुर्दशी तिथिक्षय,
	22	15	चं.	23	45	पू.षा.	8	56	वै./ वि.	5 25	47 37	मकर	14	12	5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	भ. 13/39 तक, सूर्य सायन सिंह में 21/25, (D)
श्रावण कृष्ण	23	1	मं.	20	9	उ.षा./ श्रव.	6 27	2 20	प्री.	21	35	मकर			5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	24	18	44	23	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	24	2	बु.	16	52	धनि.	25	3	आ.	17	51	कुम्भ	14	8	5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	24	भ. 27/29 बाद, पंचक प्रारम्भ 14/08, बुध पुनर्वसु में (E)
	25	3	गु.	14	6	शत.	23	21	सौ.	14	33	कुम्भ			5	40	19	18	5	43	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	भ. 14/06 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	26	4	शु.	12	1	पू.भा.	22	22	शो.	11	49	मीन	16	32	5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	
	27	5	श.	10	43	उ.भा.	22	13	अ.	9	43	मीन			5	41	19	16	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	
	28	6	र.	10	17	रेव.	22	55	सु.	8	19	मेष	22	55	5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	भ. 10/17 से 22/30 तक, पंचक समाप्त 22/55, (F)
	29	7	चं.	10	42	अश्वि.	24	26	धृ.	7	36	मेष			5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	12	5	27	18	41	29	गुरु आर्द्रा 3 में 9/50,
	30	8	मं.	11	55	भर.	26	38	शू.	7	30	मेष			5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	30	
	31	9	बु.	13	45	कृत्ति.	29	21	गं.	7	55	वृष	9	16	5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	भ. 26/54 बाद,

(A) गुरु उदित 5/27, (B) पुण्यकाल सारा दिन, वक्री बुध आर्द्रा में 24/53, (C) 5/36, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु–शयनोत्सव, (D) गुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) 18/21, अशून्यशयन व्रत, (F) शुक्र पू.फा. में 21/48.

श्री वि. सं. 2070 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अगस्त, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रावण कृष्ण	1	10	गु.	16	2	रोहि.	—	—	वृ.	8	43	वृष			5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	भ. 16/02 तक,
	2	11	शु.	18	32	रोहि.	8	21	घ्रु.	9	43	मिथुन	21	54	5	45	19	12	5	47	19	7	5	55	19	10	5	29	18	39	2	सूर्य आश्ले. में 26/32, कामिका एकादशी व्रत (स.),
	3	12	श.	21	3	मृग.	11	27	व्या.	10	46	मिथुन			5	45	19	11	5	48	19	7	5	56	19	9	5	30	18	38	3	मंगल पुनर्वसु में 19/06,
	4	13	र.	23	26	आर्द्रा	14	27	ह.	11	46	मिथुन			5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	37	4	भ.23/26 बाद, बुध कर्क में 21/29, प्रदोषव्रत,
	5	14	चं.	25	33	पुन.	17	14	व.	12	36	कर्क	10	34	5	47	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	भ. 12/30 तक, श्रावण–शिवरात्रि,
	6	30	मं.	27	21	पुष्य	19	44	सि.	13	12	कर्क			5	47	19	9	5	49	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	6	बुध पुष्य में 27/12, हरियाली अमा., भौमवती अमा,
श्रावण शुक्ल	7	1	बु.	28	47	आश्ले.	21	53	व्य.	13	33	सिंह	21	53	5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	7	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	8	2	गु.	—	—	मघा	23	42	व.	13	36	सिंह			5	48	19	7	5	50	19	3	5	59	19	6	5	32	18	35	8	चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र उ.फा. में 25/35,
	9	2	शु.	5	52	पू.फा.	25	8	प.	13	23	सिंह			5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	9	मधुस्रवा तृतीया (सन्धारातीज), (देखें पृ. 107),
	10	3	श.	6	34	उ.फा.	20	12	शि.	12	52	कन्या	7	26	5	50	19	5	5	51	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	10	भ. 18/43 बाद,
	11	4	र.	6	52	हस्त	26	52	सि.	12	2	कन्या			5	50	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	32	11	भ. 6/52 तक, शुक्र कन्या में 20/48, नागपंचमी (A)
	12	5	चं.	6	46	चित्रा	27	5	सा.	10	51	तुला	15	2	5	51	19	4	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	32	12	बुध पूर्व में अस्त 5/51, श्रीकल्कि जयन्ती,
	13	6/	मं.	6	12	स्वाती	26	49	शु.	9	19	तुला			5	51	19	3	5	53	18	58	6	1	19	2	5	34	18	31	13	भ. 29/09 बाद, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
		7		29	9																											सप्तमी तिथिक्षय,
	14	8	बु.	27	35	विशा.	26	4	शु./	7	23	वृश्चिक	20	18	5	52	19	2	5	54	18	57	6	1	19	1	5	35	18	30	14	भ. 16/22 तक, बुध आश्ले. में 13/28, गुरु आर्द्रा 4 में (B)
									ब्र.	29	2																					
	15	9	गु.	25	32	अनु.	24	49	ऐं.	26	17	वृश्चिक			5	53	19	1	5	54	18	57	6	2	19	0	5	35	18	29	15	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	10	शु.	23	2	ज्येष्ठा	23	6	वै.	23	10	धनु	23	6	5	53	19	0	5	55	18	56	6	2	18	59	5	36	18	28	16	सं. सूर्य मघा सिंह में 24/07, मु. 30, पुण्यकाल अगले (C)
	17	11	श.	20	8	मूल	21	0	वि.	19	44	धनु			5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	27	17	भ. 9/35 से 20/08 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	18	12	र.	16	58	पू.षा.	18	38	प्री.	16	3	मकर	24	1	5	54	18	58	5	56	18	54	6	3	18	57	5	36	18	27	18	मंगल कर्क में 25/59, प्रदोषव्रत,
	19	13	चं.	13	40	उ.षा.	16	8	आ.	12	15	मकर			5	55	18	56	5	56	18	53	6	4	18	56	5	37	18	26	19	
	20	14	मं.	10	22	श्रव.	13	40	सौ./	8	27	कुम्भ	24	30	5	56	18	55	5	57	18	52	6	4	18	55	5	37	18	25	20	भ. 10/22 से 20/49 तक, पंचक प्रारम्भ 24/30, बुध (D)
									शो.	28	47																					
	21	15/	बु.	7	15	धनि.	11	24	अ.	25	24	कुम्भ			5	56	18	54	5	57	18	51	6	5	18	54	5	38	18	24	21	श्रावणी पूर्णिमा,
भाद्रपद कृष्ण		1		28	28																											भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	22	2	गु.	26	13	शत.	9	31	सु.	22	25	मीन	26	28	5	57	18	53	5	58	18	50	6	5	18	53	5	38	18	23	22	सूर्य सायन कन्या में 28/32, शरद् ऋतु प्रारम्भ,
	23	3	शु.	24	37	पू.भा.	8	11	धृ.	19	57	मीन			5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	52	5	39	18	22	23	भ. 13/25 से 24/37 तक, मंगल पुष्य में 29/51, वक्री (E)
	24	4	श.	23	47	उ.भा.	7	33	शू.	18	5	मीन			5	58	18	51	5	59	18	48	6	6	18	51	5	39	18	21	24	श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), (F)
	25	5	र.	23	47	रेव.	7	41	गं.	16	52	मेष	7	41	5	59	18	50	5	59	18	46	6	7	18	50	5	39	18	20	25	पंचक समाप्त 7/41,
	26	6	चं.	24	35	अश्वि.	8	38	वृ.	16	18	मेष			5	59	18	49	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	26	भ. 24/35 बाद,
	27	7	मं.	26	6	भर.	10	20	ध्रु.	16	19	वृष	16	52	6	0	18	48	6	0	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	27	भ. 13/20 तक, बुध पू.फा. में 22/39,
	28	8	बु.	28	10	कृत्ति.	12	41	व्या.	16	49	वृष			6	0	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	28	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स.) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11)(G)
	29	9	गु.	—	—	रोहि.	15	29	ह.	17	39	मिथुन	28	59	6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	29	गोकुलाष्टमी(नन्दोत्सव), श्रीगुग्गा नवमी,
	30	9	शु.	6	34	मृग.	18	30	व.	18	37	मिथुन			6	1	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	भ. 19/49 बाद, सूर्य पू.फा. में 20/09,
	31	10	श.	9	4	आर्द्रा	21	30	सि.	19	35	मिथुन			6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	भ. 9/04 तक, शुक्र चित्रा में 15/31

(A) (देखें पृ. 107). (B) 14/08, श्रीदुर्गाष्टमी. (C) दिन मध्याह्न तक. (D) मघा सिंह में 28/55, शुक्र हस्त में 7/18, श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर), रक्षाबन्धन (राखी) (देखें पृ. 107). ऋक् उपाकर्म, शुक्ल–कृष्ण यजु उपाकर्म (देखें पृ 108). श्रीसत्यनारायण व्रत. (E) नेप्च्यून शतभिषा 1 में 27/55. (F) बहुला चतुर्थी. (G) [अर्धरात्रि में रोहिणी / जयन्ती योग (देखें पृ 108)]. श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (देखें पृ 108).

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भाद्रपद कृष्ण	1	11	र.	11	26	पुन.	24	17	व्य.	20	24	कर्क	17	37	6	3	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	गुरु पुनर्वसु 1 में 12/44, राहु स्वाती 3, केतु भरणी 1 (A)
	2	12	चं.	13	30	पुष्य	26	44	व.	20	57	कर्क			6	3	18	40	6	3	18	38	6	10	18	42	5	42	18	12	2	सोमप्रदोष व्रत,
	3	13	मं.	15	10	आश्ले.	28	45	प.	21	10	सिंह	28	45	6	4	18	39	6	4	18	37	6	11	18	41	5	43	18	11	3	भ. 15/10 से 27/46 तक, बुध उ.फा. में 27/25, (B)
	4	14	बु.	16	22	मघा	—	—	शि.	21	2	सिंह			6	4	18	38	6	4	18	35	6	11	18	40	5	43	18	10	4	
	5	30	गु.	17	6	मघा	6	20	सि.	20	32	सिंह			6	5	18	37	6	5	18	34	6	11	18	39	5	44	18	9	5	बुध कन्या में 24/54, कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,
भाद्रपद शुक्ल	6	1	शु.	17	24	पू.फा.	7	27	सा.	19	41	कन्या	13	40	6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र तुला में 8/40,
	7	2	श.	17	17	उ.फा.	8	10	शु.	18	32	कन्या			6	6	18	34	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	चन्द्रदर्शन, मु. 30, साम उपाकर्म, मेला डेरा बाबा श्रीगोसाईं (C)
	8	3	र.	16	49	हस्त	8	31	शु.	17	5	तुला	20	33	6	7	18	33	6	6	18	31	6	13	18	35	5	45	18	6	8	भ. 28/24 बाद, श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, (D)
	9	4	चं.	16	0	चित्रा	8	31	ब्र.	15	21	तुला			6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	34	5	45	18	5	9	भ. 16/00 तक, बुध पश्चिम में उदित 16/32, श्रीसिद्धि-(E)
	10	5	मं.	14	51	स्वाती	8	11	ऐं.	13	22	वृश्चिक	25	44	6	8	18	31	6	7	18	28	6	14	18	33	5	46	18	4	10	ऋषिपंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन).
	11	6	बु.	13	23	विशा.	7	33	वै.	11	7	वृश्चिक			6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	बुध हस्त में 23/38, शुक्र स्वाती में 26/40, सूर्यषष्ठी व्रत,
	12	7	गु.	11	38	अनु./	6	36	वि./	8	38	धनु	29	21	6	9	18	28	6	8	18	26	6	15	18	31	5	46	18	2	12	भ. 11/38 से 22/36 तक, श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी (F)
						ज्येष्ठा	29	21	प्री.	29	54																					
	13	8	शु.	9	35	मूल	27	51	आ.	26	58	धनु			6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	1	13	सूर्य उ.फा. में 13/55, मंगल आश्ले. में 29/23.
	14	9/	श.	7	16	पू.षा.	26	9	सौ.	23	51	धनु			6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	17	59	14	बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
		10		28	46																											दशमी तिथिक्षय,
	15	11	र.	26	9	उ.षा.	24	19	शो.	20	38	मकर	7	42	6	10	18	24	6	10	18	22	6	16	18	28	5	47	17	58	15	भ. 15/28 से 26/09 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स्मा.).
	16	12	चं.	23	31	श्रव.	22	27	अ.	17	21	मकर			6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	16	सं. सूर्य कन्या में 24/03, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (G)
	17	13	मं.	20	58	धनि.	20	40	सु.	14	8	कुम्भ	9	32	6	12	18	22	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	पंचक प्रारम्भ 9/32, भौमप्रदोष व्रत,
	18	14	बु.	18	40	शत.	19	7	धृ.	11	4	कुम्भ			6	12	18	20	6	11	18	19	6	17	18	24	5	49	17	55	18	भ. 18/40 से 29/42 तक, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (H)
	19	15	गु.	16	43	पू.भा.	17	56	शू./	8	16	मीन	12	11	6	13	18	19	6	12	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध,
									गं.	29	49																					
आश्विन कृष्ण	20	1	शु.	15	16	उ.भा.	17	14	वृ.	27	49	मीन			6	13	18	18	6	12	18	16	6	18	18	22	5	49	17	53	20	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध चित्रा में 14/31, प्लूटो मार्गी (I)
	21	2	श.	14	25	रेव.	17	10	ध्रु.	26	21	मेष	17	10	6	14	18	17	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	भ. 26/20 बाद, पंचक समाप्त 17/10, द्वितीया का श्राद्ध (J)
	22	3	र.	14	16	अश्वि.	17	46	व्या.	25	26	मेष			6	14	18	15	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	भ. 14/16 तक, सूर्य सायन तुला में 26/15, विषुवदिन, (K)
	23	4	चं.	14	50	भर.	19	4	ह.	25	5	वृष	25	29	6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	18	5	50	17	50	23	गुरु पुनर्वसु 2 में 9/03, शुक्र विशाखा में 17/55, भरणी (L)
	24	5	मं.	16	5	कृत्ति.	21	1	व.	25	14	वृष			6	16	18	13	6	14	18	12	6	20	18	17	5	51	17	49	24	पंचमी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
	25	6	बु.	17	56	रोहि.	23	31	सि.	25	47	वृष			6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	25	भ. 17/56 बाद, बुध तुला में 6/35, षष्ठी का श्राद्ध.
	26	7	गु.	20	12	मृग.	26	21	व्य.	26	36	मिथुन	12	54	6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	15	5	52	17	46	26	भ. 7/04 तक, सूर्य हस्त में 29/30, सप्तमी का श्राद्ध, (M)
	27	8	शु.	22	40	आर्द्रा	29	20	व.	27	31	मिथुन			6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	45	27	अष्टमी का श्राद्ध.
	28	9	श.	25	4	पुन.	—	—	प.	28	22	कर्क	25	30	6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	44	28	वक्री यूरेनस उ.भा. 4 में 27/24, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती (N)
	29	10	र.	27	13	पुन.	8	12	शि.	28	59	कर्क			6	18	18	6	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	भ. 14/09 से 27/13 तक, दशमी का श्राद्ध.
	30	11	चं.	28	55	पुष्य	10	47	सि.	29	16	कर्क			6	19	18	5	6	17	18	4	6	22	18	10	5	53	17	42	30	बुध स्वाती में 6/35, इन्दिरा एकादशी व्रत(स.), एकादशी (O)

(A) में 9/01, अजा एकादशी व्रत (स.), (B) शनि स्वाती 3 में 26/40, अगस्त्य उदित, पर्यूषणपर्व प्रारम्भ, (C) आणा (कुराली) पं., (D) कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20/12), हरितालिका चतुर्थी, (E) विनायक व्रत, (F) व्रत प्रारम्भ (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में), (G) मध्याह्न तक, पद्मा एकादशी व्रत (वै.), श्रीवामन जयन्ती, वामन द्वादशी, श्रवण द्वादशी, (H) श्रीसत्यनारायण व्रत, (I) 20/56, महालय (पितृ)पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध, (J) तृतीया का श्राद्ध, (K) दक्षिणगोल प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी का श्राद्ध, (L) श्राद्ध, (इस दिन कोई तिथिश्राद्ध नहीं है।), (M) श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में), (N) श्राद्ध, (O) का श्राद्ध,

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आश्विन कृष्ण	1	12	मं.	30	5	आश्ले.	12	53	सा.	29	7	सिंह	12	53	6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	1	द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध,
	2	13	बु.	—	—	मघा	14	27	शु.	28	31	सिंह			6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	शुक्र वृश्चिक में 14/54, त्रयोदशी का श्राद्ध, प्रदोषव्रत,
	3	13	गु.	6	38	पू.फा.	15	26	शु.	27	28	कन्या	21	35	6	21	18	1	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	भ. 6/38 से 18/38 तक, शस्त्र–विषादि से मृतों (A)
	4	14/ 30	शु.	6 30	37 4	उ.फा.	15	51	ब्र.	25	59	कन्या			6	22	18	0	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	महालय अमा, सर्वपितृश्राद्ध, अज्ञात मृत्युतिथि/चतुर्दशी/(B) अमावस तिथिक्षय,
आश्विन शुक्ल	5	1	श.	29	4	हस्त	15	47	ऐं.	24	7	तुला	27	35	6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	आश्विन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मंगल मघा सिंह में 19/40, (C)
	6	2	र.	27	40	चित्रा	15	18	वै.	21	57	तुला			6	23	17	58	6	20	17	57	6	25	18	4	5	56	17	36	6	चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	7	3	चं.	25	59	स्वाती	14	28	वि.	19	30	तुला			6	23	17	57	6	21	17	56	6	26	18	3	5	56	17	35	7	शनि स्वाती 4 में 17/02,
	8	4	मं.	24	4	विशा.	13	23	प्री.	16	52	वृश्चिक	7	40	6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	2	5	57	17	34	8	भ. 13/01 से 24/04 तक,
	9	5	बु.	22	0	अनु.	12	7	आ.	14	6	वृश्चिक			6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	उपांगललिता व्रत (श्री ललितापंचमी),
	10	6	गु.	19	51	ज्येष्ठा	10	43	सौ.	11	13	धनु	10	43	6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	58	17	32	10	सूर्य चित्रा में 18/25, सास्वती आवाह्न,
	11	7	शु.	17	38	मूल	9	16	शो./ अ.	8 29	18 22	धनु			6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	भ. 17/38 से 28/32 तक, सरस्वती पूजन,
	12	8	श.	15	26	पू.षा./ उ.षा.	7 30	48 22	सु.	26	27	मकर	13	26	6	27	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	बुध विशाखा में 11/56, महाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी, महानवमी (D)
	13	9	र.	13	18	श्रव.	29	1	धृ.	23	36	मकर			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	महानवमी (बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, सरस्वती (E)
	14	10	चं.	11	16	धनि.	27	49	शू.	20	52	कुम्भ	16	24	6	28	17	48	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	भ. 22/20 बाद, पंचक प्रारम्भ 16/24, माध्वाचार्य जयन्ती (F)
	15	11	मं.	9	24	शत.	26	51	गं.	18	17	कुम्भ			6	29	17	47	6	26	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	भ. 9/24 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.),
	16	12/ 13	बु.	7 30	47 29	पू.भा.	26	10	वृ.	15	55	मीन	20	19	6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	16	प्रदोषव्रत, त्रयोदशी तिथिक्षय,
	17	14	गु.	29	34	उ.भा.	25	52	ध्रु.	13	50	मीन			6	30	17	45	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	25	17	भ. 29/34 बाद, सं. सूर्य तुला में 12/00, मु. 45, पुण्यकाल (G)
	18	15	शु.	29	7	रेव.	26	1	व्या.	12	5	मेष	26	1	6	31	17	44	6	27	17	45	6	32	17	52	6	1	17	24	18	भ. 17/22 तक, पंचक समाप्त 26/01, कोजागर व्रत, (H)
कार्तिक कृष्ण	19	1	श.	29	13	अश्वि.	26	40	ह.	10	42	मेष			6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	23	19	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	20	2	र.	29	52	भर.	27	52	व.	9	45	मेष			6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	2	17	22	20	शनि अस्त 17/42,
	21	3	चं.	—	—	कृत्ति.	29	37	सि.	9	14	वृष	10	15	6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	भ. 18/29 बाद, बुध वक्री 15/59,
	22	3	मं.	7	6	रोहि.	—	—	व्य.	9	10	वृष			6	34	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	4	17	21	22	भ. 7/06 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करकचतुर्थी (करवाचौथ) (I)
	23	4	बु.	8	52	रोहि.	7	52	व.	9	29	मिथुन	21	10	6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	23	सूर्य स्वाती में 29/00, सूर्य सायन वृश्चिक में 11/39, (J)
	24	5	गु.	11	3	मृग.	10	32	प.	10	7	मिथुन			6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	5	17	19	24	
	25	6	शु.	13	29	आर्द्रा	13	27	शि.	10	56	मिथुन			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	45	6	5	17	18	25	भ. 13/29 से 26/44 तक,
	26	7	श.	15	59	पुन.	16	25	सि.	11	49	कर्क	9	41	6	36	17	36	6	33	17	37	6	36	17	45	6	6	17	18	26	बुध पश्चिम में अस्त 17/36,
	27	8	र.	18	18	पुष्य	19	13	सा.	12	36	कर्क			6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	मंगल पू.फा. में 28/40, अहोई अष्टमी (पं.–हरि.),
	28	9	चं.	20	14	आश्ले.	21	37	शु.	13	6	सिंह	21	37	6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	28	
	29	10	मं.	21	36	मघा	23	30	शु.	13	14	सिंह			6	39	17	33	6	35	17	34	6	38	17	42	6	8	17	15	29	भ. 8/55 से 21/36 तक, वक्री बुध स्वाती में 10/39,
	30	11	बु.	22	18	पू.फा.	24	43	ब्र.	12	52	सिंह			6	40	17	32	6	35	17	34	6	39	17	41	6	8	17	15	30	शुक्र मूल धनु में 14/24, रमा एकादशी व्रत (स.),
	31	12	गु.	22	17	उ.फा.	25	14	ऐं.	11	57	कन्या	6	54	6	40	17	31	6	36	17	33	6	40	17	41	6	9	17	14	31	गोवत्स द्वादशी,

(A) (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (B) अमा./पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, महालय(श्राद्ध) पक्ष समाप्त, गजच्छाया योग (15/51 से सूर्यास्त तक), (C) शुक्र अनु. में 14/43, नाना–नानी का श्राद्ध, शारद नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती, (D) (पूजा/उपवास के लिए), (E) विसर्जन, विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, (F) भरतमिलाप, (G) सारा दिन, शुक्र ज्येष्ठा में 19/41, (H) शरद पूर्णिमा, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, श्रीवाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत (I) (चन्द्रोदय 20/12), (J) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
कार्ति. कृष्ण	1	13	शु.	21	34	हस्त	25	5	वै.	10	28	कन्या			6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	भ. 21/34 बाद, धनत्रयोदशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (A)
	2	14	श.	20	13	चित्रा	24	19	वि./	8	28	तुला	12	46	6	42	17	30	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	भ. 8/54 तक, नरकचतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली).
									प्री.	30	0																					
	3	30	र.	18	20	स्वाती	23	3	आ.	27	8	तुला			6	43	17	29	6	38	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	3	राहु स्वाती 2, केतु अश्वि. 4 में 7/03, दीपावली, (B)
कार्तिक शुक्ल	4	1	चं.	16	2	विशा.	21	23	सौ.	23	58	वृश्चिक	15	50	6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, शनि विशा. (C)
	5	2	मं.	13	26	अनु.	19	28	शो.	20	37	वृश्चिक			6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	यमद्वितीया, भ्रातृद्वितीया (भाईदूज), श्रीविश्वकर्मा–पूजा, (D)
	6	3	बु.	10	41	ज्येष्ठा	17	26	अ.	17	9	धनु	17	26	6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	37	6	13	17	10	6	भ. 21/17 बाद, सूर्य विशा. में 13/05
	7	4/	गु.	7	54	मूल	15	24	सु.	13	42	धनु			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	भ. 7/54 तक, गुरु वक्री 10/33, ज्ञानपंचमी,
		5		29	13																											पंचमी तिथिक्षय,
	8	6	शु.	26	42	पू.षा.	13	30	धृ.	10	21	मकर	19	3	6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	बुध पूर्व में उदित 6/47, सूर्यषष्ठी (छठ पूजा) (बिहार) .
	9	7	श.	24	27	उ.षा.	11	48	शू./	7	9	मकर			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	भ. 24/27 बाद,
									गं.	28	11																					
	10	8	र.	22	32	श्रव.	10	24	वृ.	25	30	कुम्भ	21	50	6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	भ. 11/30 तक, पंचक प्रारम्भ 21/50, बुध मार्गी (E)
	11	9	चं.	21	0	धनि.	9	21	ध्रु.	23	7	कुम्भ			6	49	17	23	6	45	17	25	6	47	17	34	6	16	17	8	11	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	12	10	मं.	19	53	शत.	8	42	व्या.	21	4	मीन	26	28	6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	
	13	11	बु.	19	11	पू.भा.	8	27	ह.	19	20	मीन			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	भ. 7/32 से 19/11 तक, शुक्र पू.षा. में 10/42, (F)
	14	12	गु.	18	56	उ.भा.	8	37	व.	17	57	मीन			6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त, हरिप्रबोधोत्सव, श्रीतुलसी (G)
	15	13	शु.	19	6	रेव.	9	13	सि.	16	54	मेष	9	13	6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	पंचक समाप्त 9/13, श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी, प्रदोष व्रत.
	16	14	श.	19	43	अश्वि.	10	14	व्य.	16	12	मेष			6	54	17	20	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	5	16	भ. 19/43 बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में 11/48, मु. 15, (H)
	17	15	र.	20	45	भर.	11	40	व.	15	49	वृष	18	5	6	54	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	भ. 8/15 तक, त्रिपुरोत्सव, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक (I)
मार्गशीर्ष कृष्ण	18	1	चं.	22	14	कृत्ति.	13	30	प.	15	45	वृष			6	55	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	मार्गशीर्ष कृष्ण प्रारम्भ,
	19	2	मं.	24	6	रोहि.	15	45	शि.	16	0	मिथुन	28	59	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	22	17	5	19	सूर्य अनु. में 19/10,
	20	3	बु.	26	18	मृग.	18	19	सि.	16	31	मिथुन			6	57	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	भ. 13/12 से 26/18 तक, मंगल उ.फा. में 16/34,
	21	4	गु.	28	45	आर्द्रा	21	10	सा.	17	15	मिथुन			6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	22	5	शु.	–	–	पुन.	24	9	शु.	18	6	कर्क	17	24	6	59	17	18	6	53	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	सूर्य सायन धनु में 9/19,
	23	5	श.	7	19	पुष्य	27	7	शु.	18	58	कर्क			7	0	17	18	6	54	17	21	6	56	17	29	6	25	17	4	23	
	24	6	र.	9	48	आश्ले.	29	52	ब्र.	19	43	सिंह	29	52	7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ 9/48 से 22/55 तक, बुध विशा. में 12/02, (J)
	25	7	चं.	12	1	मघा	–	–	ऐं.	20	12	सिंह			7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी),
	26	8	मं.	13	46	मघा	8	13	वै.	20	18	सिंह			7	2	17	17	6	56	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	मंगल कन्या में 19/32,
	27	9	बु.	14	52	पू.फा.	9	58	वि.	19	52	कन्या	16	18	7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	भ. 27/02 बाद,
	28	10	गु.	15	12	उ.फा.	11	2	प्री.	18	51	कन्या			7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 15/12 तक,
	29	11	शु.	14	44	हस्त	11	18	आ.	17	12	तुला	23	8	7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	शुक्र उ.षा. में 27/12, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	30	12	श.	13	29	चित्रा	10	48	सौ.	14	56	तुला			7	5	17	16	7	0	17	20	7	2	17	29	6	30	17	3	30	शनिप्रदोष व्रत,

(A) (उ.भा.), यमप्रीत्यर्थ दीपदान, प्रदोषव्रत, (B) श्रीमहालक्ष्मी पूजन, महावीर निर्वाणदिवस (जैन),(C) 1 में 28/31, गोवर्धनपूजा (देखें पृ. 109), बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा, (D) हिजरी सन् 1435 प्रा., (E) 26/42, गोपाष्टमी, (F) नेप्च्यून मार्गी 24/16, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), भीष्मपंचक प्रारम्भ, (G) विवाह, (H) पुण्यकाल सारा दिन, (I) जयन्ती, मेला पुष्करराज (राज.), पद्माक योग (11/40 बाद) (पुष्करस्नान माहात्म्य) , भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिकस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (J) शनि उदित 7/00, बलिदानदिन श्रीगुरुतेग़बहादुर जी, (नानकशाही),

श्री वि. सं 2070 | तिथ्यादि पंचाग (भा. स्टैं. टा.) | दिसम्बर, सन् 2013 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. कृष्ण	1	13	र.	11	30	स्वाती	9	34	शो.	12	5	वृश्चिक	26	15	7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	भ. 11/30 से 22/13 तक, बुध वृश्चिक में 10/05,
	2	14/	चं.	8	55	विशा./	7	44	अ./	8	45	वृश्चिक			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	सूर्य ज्येष्ठा में 23/28, सोमवती अमा,
		30		29	52	अनु.	29	26	सु.	29	3																					अमावस तिथिक्षय,
मार्गशीर्ष शुक्ल	3	1	मं.	26	32	ज्येष्ठा	26	50	धृ.	25	6	धनु	26	50	7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध अनु. में 15/03, शनि (A)
	4	2	बु.	23	4	मूल	24	6	शू.	21	2	धनु			7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	4	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पूर्व में अस्त 7/09,
	5	3	गु.	19	38	पू.षा.	21	26	गं.	16	59	मकर	26	47	7	10	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	4	5	भ. 30/01 बाद, शुक्र मकर में 14/16,
	6	4	शु.	16	25	उ.षा.	18	58	वृ.	13	5	मकर			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	भ. 16/25 तक,
	7	5	श.	13	33	श्रव.	16	53	ध्रु./	9	28	कुम्भ	28	1	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	7	पंचक प्रारम्भ 28/01, स्कन्द (गुह)षष्ठी, बलिदान दिन (B)
									व्या.	30	13																					
	8	6	र.	11	10	धनि.	15	18	ह.	27	25	कुम्भ			7	12	17	17	7	6	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	चम्पाषष्ठी, मित्रसप्तमी,
	9	7	चं.	9	22	शत.	14	17	व.	25	6	कुम्भ			7	13	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	भ. 9/22 से 20/47 तक,
	10	8	मं.	8	11	पू.भा.	13	53	सि.	23	18	मीन	7	56	7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	4	10	
	11	9	बु.	7	39	उ.भा.	14	7	व्य.	21	59	मीन			7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	37	17	5	11	
	12	10	गु.	7	43	रेव.	14	56	व.	21	7	मेष	14	56	7	15	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	भ. 20/02 बाद, पंचक समाप्त 14/56, बुध ज्येष्ठा में (C)
	13	11	शु.	8	21	अश्वि.	16	15	प.	20	38	मेष			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	13	भ. 8/21 तक, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती,
	14	12	श.	9	28	भर.	18	1	शि.	20	30	वृष	24	31	7	16	17	18	7	10	17	22	7	11	17	31	6	39	17	6	14	शनिप्रदोष व्रत,
	15	13	र.	10	59	कृत्ति.	20	9	सि.	20	38	वृष			7	17	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	सं. सूर्य मूल धनु में 26/27, मु. 45, पुण्यकाल अगले (D)
	16	14	चं.	12	51	रोहि.	22	34	सा.	21	0	वृष			7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	भ. 12/51 से 25/55 तक, प्लूटो पू.षा. 2 में 22/14, (E)
	17	15	मं.	14	58	मृग.	25	13	शु.	21	34	मिथुन	11	52	7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	यूरेनस मार्गी 23/11,
पौष कृष्ण	18	1	बु.	17	18	आर्द्रा	28	3	शु.	22	16	मिथुन			7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	18	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	19	2	गु.	19	47	पुन.	31	0	ब्र.	23	4	कर्क	24	15	7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	
	20	3	शु.	22	21	पुष्य	—	—	ऐं.	23	55	कर्क			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	43	17	8	20	भ: 9/04 से 22/21 तक, बुध मूल धनु में 20/56,
	21	4	श.	24	52	पुष्य	9	59	वै.	24	44	कर्क			7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	शुक्र वक्री 27/23, सूर्य सायन मकर में 22/40, (F)
	22	5	र.	27	14	आश्ले.	12	53	वि.	25	26	सिंह	12	53	7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	44	17	9	22	वक्री गुरु पुनर्वसु 1 में 11/10,
	23	6	चं.	29	16	मघा	15	33	प्री.	25	53	सिंह			7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	भ. 29/16 बाद,
	24	7	मं.	30	46	पू.फा.	17	49	आ.	25	58	कन्या	24	18	7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	24	भ. 18/01 तक,
	25	8	बु.	—	—	उ.फा.	19	32	सौ.	25	35	कन्या			7	22	17	23	7	16	17	27	7	17	17	36	6	45	17	11	25	क्रिस्मस डे,
	26	8	गु.	7	37	हस्त	20	32	शो.	24	37	कन्या			7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	45	17	11	26	जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब (पं.),
	27	9/	शु.	7	42	चित्रा	20	45	अ.	23	0	तुला	8	45	7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	भ. 19/18 से 30/55 तक,
		10		30	55																											दशमी तिथिक्षय,
	28	11	श.	29	20	स्वाती	20	9	सु.	20	44	तुला			7	23	17	25	7	17	17	28	7	19	17	38	6	46	17	13	28	सूर्य पू.षा. में 28/44, बुध पू.षा. में 31/21, सफला (G)
	29	12	र.	26	59	विशा.	18	46	धृ.	17	50	वृश्चिक	13	11	7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	47	17	13	29	सफलाएकादशी व्रत (वै.) (देखें पृ. 110),
	30	13	चं.	23	59	अनु.	16	42	शू.	14	23	वृश्चिक			7	24	17	26	7	17	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	भ. 23/59 बाद, सोमप्रदोष व्रत,
	31	14	मं.	20	31	ज्येष्ठा	14	6	गं./	10	28	धनु	14	6	7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	14	31	भ. 10/15 तक,
									वृ.	30	14																					

(A) विशाखा 2 में 11/08, (B) श्रीगुरुतेगबहादुर जी (पुरातन परम्परा), (C) 7/20, (D) दिन मध्याह्न तक, मंगल हस्त में 26/48, (E) श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, श्रीरामेश्वरसेतु व्रत, (G) एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृ. 110)

147

जनवरी, सन् 2014 ई.

श्री वि. सं 2070 — **तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)** — **जनवरी, सन् 2014 ई.**

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष कृ.	1	30	बु.	16	44	मूल	11	8	धृ.	25	50	धनु			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	इंग्लिश नववर्ष (2014 ई.) प्रारम्भ,
पौष शुक्ल	2	1	गु.	12	51	पू.षा./	8	1	व्या.	21	24	मकर	13	14	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु 45,
						उ.षा.	28	55																								
	3	2/	शु.	9	3	श्रव.	26	4	ह.	17	7	मकर			7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	
		3		29	31																											तृतीया तिथिक्षय,
	4	4	श.	26	27	धनि.	23	39	व.	13	7	कुम्भ	12	48	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ.15/59 से 26/27 तक, पंचक प्रारम्भ 12/48, राहु (A)
	5	5	र.	23	59	शत.	21	49	सि./	9	32	कुम्भ			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	शनि विशाखा 3 में 8/32, **शुक्र अस्त– 9 जनवरी**
									व्य.	30	29																					
	6	6	चं.	22	15	पू.भा.	20	41	वै.	28	1	मीन	14	54	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	बुध उ.षा. में 12/49, वक्री शुक्र धनु में 23/36,(B)
	7	7	मं.	21	19	उ.भा.	20	20	प.	26	12	मीन			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 21/19 बाद, अवतार दिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,
	8	8	बु.	21	11	रेव.	20	46	शि.	25	0	मेष	20	46	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 9/15 तक, पंचक समाप्त 20/46, बुध मकर में (C)
	9	9	गु.	21	48	अश्वि.	21	55	सि.	24	23	मेष			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	शुक्र पश्चिम में अस्त 17/34, **शुक्र उदित– 15 जनवरी**
	10	10	शु.	23	4	भर.	23	42	सा.	24	14	वृष	30	13	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	सूर्य उ.षा. में 30/39,
	11	11	श.	24	50	कृत्ति.	25	57	शु.	24	27	वृष			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 11/57 से 24/50 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	12	12	र.	26	59	रोहि.	28	33	शु.	24	58	वृष			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	वक्री शुक्र पू.षा. में 12/36,
	13	13	चं.	29	21	मृग.	31	22	ब्र.	25	38	मिथुन	17	56	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	लोहड़ी (पं.–हरि.–जम्मू–काश्मीर), सोमप्रदोष व्रत,
	14	14	मं.	–	–	आर्द्रा	–	–	ऐं.	26	25	मिथुन			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 13/12, मु. 15, पुण्यकाल सारा दिन, (D)
	15	14	बु.	7	50	आर्द्रा	10	17	वै.	27	14	कर्क	30	30	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 7/50 से 21/06 तक, शुक्र पूर्व में उदित 7/25, (E)
	16	15	गु.	10	22	पुन.	13	14	वि.	28	3	कर्क			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	वक्री गुरु आर्द्रा 4 में 15/11, पौषी पूर्णिमा, माघस्नान (F)
माघ कृष्ण	17	1	शु.	12	52	पुष्य	16	9	प्री.	28	48	कर्क			7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	18	2	श.	15	17	आश्ले.	18	58	आ.	29	28	सिंह	18	58	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 28/24 बाद, शुक्रबाल्य समाप्त 7/24,
	19	3	र.	17	32	मघा	21	38	सौ.	29	59	सिंह			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 17/32 तक, बुध पश्चिम में उदित 17/42, श्रीगणेश (G)
	20	4	चं.	19	32	पू.फा.	24	3	शो.	30	17	कन्या	30	36	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 9/22,
	21	5	मं.	21	10	उ.फा.	26	6	अ.	30	15	कन्या			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	
	22	6	बु.	22	18	हस्त	27	38	सु.	29	49	कन्या			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	56	6	48	17	31	22	भ. 22/18 बाद, बुध धनि. में 14/41,
	23	7	गु.	22	49	चित्रा	28	33	धृ.	28	53	तुला	16	11	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 10/34 तक,
	24	8	शु.	22	37	स्वाती	28	46	शू.	27	22	तुला			7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रवण में 9/02,
	25	9	श.	21	38	विशा.	28	12	गं.	25	15	वृश्चिक	22	25	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	10	र.	19	53	अनु.	26	54	वृ.	22	32	वृश्चिक			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 8/45 से 19/53 तक, बुध कुम्भ में 23/54, भारत (H)
	27	11	चं.	17	25	ज्येष्ठा	24	56	ध्रु.	19	14	धनु	24	56	7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	नेप्च्यून शत. 2 में 29/12, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	28	12	मं.	14	21	मूल	22	25	व्या.	15	28	धनु			7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भौमप्रदोष व्रत,
	29	13/	बु.	10	49	पू.षा.	19	30	ह./	11	20	मकर	24	44	7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 10/49 से 20/55 तक, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन),
		14		31	1				व.	30	59																					चतुर्दशी तिथिक्षय,
	30	30	गु.	27	8	उ.षा.	16	24	सि.	26	33	मकर			7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	मौनी अमावस,
माघ शु.	31	1	शु.	23	22	श्रव.	13	17	व्य.	22	13	कुम्भ	23	48	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 23/48, शुक्र मार्गी (I)

(A) स्वाती 1, केतु अश्वि. 3 में 28/34, (B) शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ 17/31, (C) 13/19, (D) मंगल चित्रा में 25/20, बुध श्रवण में 13/15, मकरसंक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) प्रारम्भ, (G) (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय–देखें पृष्ठ 11), (H) गणतन्त्र दिवस, (I) 26/19.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	2	श.	19	53	घनि.	10	23	व.	18	6	कुम्भ			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	चन्द्रदर्शन, मु. 15, बुध शत. में 14/48,
	2	3	र.	16	54	शत./	7	54	प.	14	24	मीन	24	25	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 27/44 बाद, गौरी तृतीया (गौंतरी), वरद–तिल– (A)
						पू.भा.	30	0																								
	3	4	चं.	14	34	उ.भा.	28	49	शि.	11	12	मीन			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भ. 14/34 तक,
	4	5	मं.	13	1	रेव.	28	28	सि./	8	37	मेष	28	28	7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	पंचक समाप्त 28/28, मंगल तुला में 14/19, (B)
									सा.	30	42																					
	5	6	बु.	12	19	अश्वि.	28	57	शु.	29	28	मेष			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	
	6	7	गु.	12	29	भर.	30	13	शु.	28	52	मेष			7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 12/29 से 24/57 तक, सूर्य घनि. में 12/07, बुध (C)
	7	8	शु.	13	26	कृत्ति.	–	–	ब्र.	28	49	वृष	12	39	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भीष्माष्टमी,
	8	9	श.	15	4	कृत्ति.	8	11	ऐं.	29	11	वृष			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	बुध पश्चिम में अस्त 18/00,
	9	10	र.	17	12	रोहि.	10	41	वै.	29	52	मिथुन	24	3	7	13	18	1	7	8	18	3	7	12	18	10	6	41	17	44	9	भ. 30/25 बाद,
	10	11	चं.	19	38	मृग.	13	30	वि.	30	42	मिथुन			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 19/38 तक, जया एकादशी व्रत (स.),
	11	12	मं.	22	12	आर्द्रा	16	29	प्री.	–	–	मिथुन			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भीष्म द्वादशी,
	12	13	बु.	24	44	पुन.	19	29	प्री.	7	35	कर्क	12	44	7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 26/12, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (D)
	13	14	गु.	27	9	पुष्य	22	22	आ.	8	25	कर्क			7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	भ. 27/09 बाद,
	14	15	शु.	29	23	आश्ले.	25	5	सौ.	9	8	सिंह	25	5	7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	भ. 16/16 तक, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु (E)
फाल्गुन कृष्ण	15	1	श.	-	-	मघा	27	35	शो.	9	43	सिंह			7	7	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	16	1	र.	7	21	पू.फा.	29	48	अ.	10	6	सिंह			7	7	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	
	17	2	चं.	9	3	उ.फा.	–	–	सु.	10	16	कन्या	12	19	7	6	18	8	7	2	18	9	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 21/44 बाद,
	18	3	मं.	10	25	उ.फा.	7	43	घृ.	10	12	कन्या			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	भ. 10/25 तक, वक्री बुध मकर में 17/43, सूर्य सायन(F)
	19	4	बु.	11	23	हस्त	9	16	शू.	9	50	तुला	21	53	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 16/43,
	20	5	गु.	11	54	चित्रा	10	24	गं.	9	7	तुला			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	
	21	6	शु.	11	53	स्वाती	11	0	वृ./	8	0	वृश्चिक	29	6	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 11/53 से 23/35 तक, वक्री गुरु आर्द्रा 3 में (G)
									घ्रु.	30	26																					
	22	7	श.	11	17	विशा.	11	3	व्या.	28	23	वृश्चिक			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	बुध पूर्व में उदित 7/01,
	23	8	र.	10	4	अनु.	10	30	ह.	25	51	वृश्चिक			7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	
	24	9/	चं.	8	14	ज्येष्ठा	9	20	व.	22	50	धनु	9	20	6	59	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भ. 19/02 से 29/50 तक,
		10		29	50																											दशमी तिथिक्षय,
	25	11	मं.	26	58	मूल/	7	38	सि.	19	25	धनु			6	58	18	14	6	54	18	14	6	59	18	21	6	28	17	54	25	विजया एकादशी व्रत (स्मा.), (देखें पृ. 110).
						पू.षा.	29	27																								
	26	12	बु.	23	44	उ.षा.	26	56	व्य.	15	41	मकर	10	50	6	56	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	शुक्र मकर में 11/56, विजया एकादशी व्रत (वै.), (H),
	27	13	गु.	20	18	श्रव.	24	14	व.	11	43	मकर			6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 20/18 से 30/34 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, प्रदोषव्रत,
	28	14	शु.	16	50	घनि.	21	32	प./	7	40	कुम्भ	10	52	6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	पंचक प्रारम्भ 10/52, बुध मार्गी 19/30,
									शि.	27	39																					

(A) कुन्द चतुर्थी, (B) श्री(वसन्त)पंचमी, लक्ष्मी/सरस्वती पूजा, (C) वक्री 27/12, रथ/आरोग्यसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादामहोत्सव (जैन), (D) मध्याह्न तक, वक्री बुध धनि. में 14/09, प्रदोषव्रत, (E) रविदास जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) मीन में 23/30, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (G) 14/30, शुक्र उ.षा. में 14/01, (H) (देखें पृ. 110)

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
[illegible]	1	30	श.	13	29	शत.	19	0	सि.	23	50	कुम्भ			6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	मंगल वक्री 21/55, यूरेनस रेवती 1 में 22/50, (A)
फाल्गुन शुक्ल	2	1	र.	10	28	पू.भा.	16	50	सा.	20	20	मीन	11	20	6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, शनि वक्री (B)
	3	2/	चं.	7	55	उ.भा.	15	11	शु.	17	18	मीन			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
		3		29	59																											तृतीया तिथिक्षय,
	4	4	मं.	28	48	रेव.	14	12	शु.	14	48	मेष	14	12	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	भ. 17/23 से 28/48 तक, पंचक समाप्त 14/12, (C)
	5	5	बु.	28	26	अश्वि.	13	59	ब्र.	12	55	मेष			6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	
	6	6	गु.	28	53	भर.	14	33	ऐं.	11	41	वृष	20	49	6	47	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	59	6	गुरु मार्गी 16/13, होलाष्टक – 8 से 16 मार्च
	7	7	शु.	30	6	कृत्ति.	15	55	वै.	11	5	वृष			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	भ. 30/06 बाद,
	8	8	श.	–	–	रोहि.	17	57	वि.	11	2	वृष			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	18	0	8	भ. 19/01 तक, राहु चित्रा 4, केतु अश्वि. 2 में 26/21,(D)
	9	8	र.	7	55	मृग.	20	30	प्री.	11	26	मिथुन	7	10	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	
	10	9	चं.	10	11	आर्द्रा	23	22	आ.	12	9	मिथुन			6	43	18	23	6	41	18	23	6	46	18	29	6	16	18	0	10	शुक्र श्रवण में 19/38,
	11	10	मं.	12	41	पुन.	26	22	सौ.	13	1	कर्क	19	37	6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	भ. 25/56 बाद,
	12	11	बु.	15	11	पुष्य	29	17	शो.	13	54	कर्क			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	भ. 15/11 तक, बुध कुम्भ में 9/34, आमला एकादशी (E)
	13	12	गु.	17	32	आश्ले.	–	–	अ.	14	41	कर्क			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	
	14	13	शु.	19	37	आश्ले.	7	59	सु.	15	16	सिंह	7	59	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	सं. सूर्य मीन में 23/06, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न (F)
	15	14	श.	21	20	मघा	10	22	धृ.	15	34	सिंह			6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	भ. 21/20 बाद,
	16	15	र.	22	38	पू.फा.	12	23	शू.	15	35	कन्या	18	50	6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 9/59 तक, होलिकादहन (प्रदोष में), होलाष्टक (G)
चैत्र कृष्ण	17	1	चं.	23	32	उ.फा.	14	1	गं.	15	17	कन्या			6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला मेला (H)
	18	2	मं.	24	0	हस्त	15	14	वृ.	14	40	तुला	27	42	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 7/27, बुध शत. में 18/48,
	19	3	बु.	24	4	चित्रा	16	3	ध्रु.	13	44	तुला			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 12/02 से 24/04 तक, गुरु आर्द्रा 4 में 21/15,
	20	4	गु.	23	43	स्वाती	16	29	व्या.	12	29	तुला			6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 22/26, उत्तरगोल प्रारम्भ, (I)
	21	5	शु.	22	57	विशा.	16	30	ह.	10	54	वृश्चिक	10	32	6	29	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	
	22	6	श.	21	46	अनु.	16	6	व.	9	0	वृश्चिक			6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	भ. 21/46 बाद, शक संवत् 1936 प्रारम्भ,
	23	7	र.	20	12	ज्येष्ठा	15	19	सि./	6	46	धनु	15	19	6	27	18	32	6	26	18	30	6	31	18	35	6	3	18	7	23	भ. 8/59 तक,
									व्य.	28	14																					
	24	8	चं.	18	15	मूल	14	10	व.	25	24	धनु			6	26	18	32	6	25	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	शुक्र धनि. में 21/03, श्रीशीतलाष्टमी,
	25	9	मं.	15	57	पू.षा.	12	40	प.	22	18	मकर	18	14	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	1	18	7	25	भ. 26/40 बाद, वक्री मंगल कन्या में 9/52,
	26	10	बु.	13	24	उ.षा.	10	53	शि.	19	1	मकर			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	भ. 13/24 तक,
	27	11	गु.	10	40	श्रव.	8	55	सि.	15	37	कुम्भ	19	53	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	पंचक प्रारम्भ 19/53, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.).
	28	12/	शु.	7	52	धनि./	6	52	सा.	12	10	कुम्भ			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	भ. 29/06 बाद, बुध पू.भा. में 20/10, वारुणीयोग (J)
		13		29	6	शत.	28	51																								त्रयोदशी तिथिक्षय,
	29	14	श.	26	31	पू.भा.	27	1	शु./	8	46	मीन	21	27	6	19	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	भ. 15/49 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि),
									शु.	29	33																					
	30	30	र.	24	15	उ.भा.	25	30	ब्र.	26	36	मीन			6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	चान्द्र संवत्सर 2070 वि. पूर्ण,

(A) शनैश्चरी अमा, (B) 21/49, (C) सूर्य पू.भा. में 22/58, (D) होलाष्टक प्रारम्भ, (E) व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (F) बाद, प्रदोषव्रत, (G) समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (I) महाविषुव दिन, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, श्रीशीतला पूजन, मेला श्रीशीतला माता (कुराली-पं.), (J) (7/52 से सूर्यास्त तक), प्रदोषव्रत

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	आश्ले.	10	7	16	34	22	59	5	23
1/2	मघा	11	45	18	6	0	25	6	42
2/3	पू.फा.	12	58	19	12	1	24	7	35
3/4	उ.फा.	13	43	19	50	1	54	7	57
4/5	हस्त	13	58	19	57	1	54	7	49
5/6	चित्रा	13	41	19	32	1	21	7	7
6/7	स्वाती	12	52	18	34	0	15	5	53
7/8	विशा.	11	30	17	5	22	38	4	10
8/9	अनु.	9	39	15	8	20	34	2	0
9	ज्येष्ठा	7	24	12	47	18	10	23	31
10	मूल	4	52	10	12	15	32	20	52
11	पू.षा.	2	11	7	31	12	51	18	11
11/12	उ.षा.	23	32	4	54	10	16	15	40
12/13	श्रव.	21	5	2	32	8	0	13	30
13/14	धनि.	19	2	0	36	6	12	11	51
14/15	शत.	17	32	23	16	5	3	10	52
15/16	पू.भा.	16	45	22	41	4	40	10	42
16/17	उ.भा.	16	47	22	56	5	7	11	22
17/18	रेव.	17	40	0	2	6	26	12	53
18/19	अश्वि.	19	23	1	55	8	30	15	7
19/20	भर.	21	47	4	28	11	11	17	55
21	कृत्ति.	0	40	7	26	14	13	21	1
22/23	रोहि.	3	49	10	36	17	24	0	11
23/24	मृग.	6	58	13	44	20	29	3	13
24/25	आर्द्रा	9	55	16	37	23	17	5	55
25/26	पुन.	12	32	19	8	1	41	8	14
26/27	पुष्य	14	44	21	13	3	40	10	5
27/28	आश्ले.	16	28	22	50	5	11	11	29
28/29	मघा	17	47	0	2	6	16	12	29
29/30	पू.फा.	18	41	0	50	6	59	13	6
30/31	उ.फा.	19	12	1	17	7	20	13	22

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	हस्त	19	23	1	23	7	21	13	19
1/2	चित्रा	19	14	1	9	7	3	12	55
2/3	स्वाती	18	46	0	36	6	24	12	11
3/4	विशा.	17	57	23	42	5	25	11	7
4/5	अनु.	16	48	22	27	4	6	9	43
5/6	ज्येष्ठा	15	19	20	54	2	28	8	1
6/7	मूल	13	33	19	4	0	35	6	5
7/8	पू.षा.	11	34	17	4	22	32	4	1
8/9	उ.षा.	9	30	14	58	20	27	1	57
9/10	श्रव.	7	26	12	57	18	28	0	0
10	धनि.	5	34	11	8	16	45	22	22
11	शत.	4	2	9	43	15	27	21	12
12	पू.भा.	3	0	8	50	14	43	20	39
13	उ.भा.	2	37	8	38	14	42	20	49
14	रेव.	2	59	9	12	15	28	21	47
15	अश्वि.	4	8	10	33	17	0	23	30
16/17	भर.	6	3	12	38	19	15	1	54
17/18	कृत्ति.	8	35	15	17	22	1	4	46
18/19	रोहि.	11	32	18	18	1	5	7	52
19/20	मृग.	14	39	21	26	4	11	10	57
20/21	आर्द्रा	17	41	0	23	7	5	13	45
21/22	पुन.	20	23	2	59	9	34	16	6
22/23	पुष्य	22	36	5	4	11	30	17	54
24	आश्ले.	0	16	6	35	12	52	19	7
25	मघा	1	21	7	32	13	41	19	48
26	पू.फा.	1	53	7	57	13	59	19	59
27	उ.फा.	1	58	7	56	13	52	19	47
28	हस्त	1	41	7	33	13	25	19	16

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	चित्रा	1	6	6	55	12	43	18	30
2	स्वाती	0	17	6	3	11	49	17	34
2/3	विशा.	23	18	5	2	10	46	16	29
3/4	अनु.	22	11	3	53	9	35	15	16
4/5	ज्येष्ठा	20	57	2	38	8	18	13	58
5/6	मूल	19	37	1	17	6	56	12	34
6/7	पू.षा.	18	13	23	52	5	30	11	9
7/8	उ.षा.	16	47	22	26	4	5	9	44
8/9	श्रव.	15	23	21	3	2	43	8	24
9/10	धनि.	14	6	19	49	1	32	7	17
10/11	शत.	13	2	18	49	0	38	6	27
11/12	पू.भा.	12	19	18	12	0	7	6	4
12/13	उ.भा.	12	3	18	4	0	8	6	13
13/14	रेव.	12	21	18	31	0	44	6	59
14/15	अश्वि.	13	17	19	37	2	0	8	25
15/16	भर.	14	53	21	22	3	55	10	29
16/17	कृत्ति.	17	5	23	43	6	23	13	5
17/18	रोहि.	19	47	2	31	9	16	16	1
18/19	मृग.	22	47	5	34	12	20	19	6
20	आर्द्रा	1	51	8	36	15	20	22	2
21/22	पुन.	4	44	11	23	18	1	0	37
22/23	पुष्य	7	11	13	43	20	12	2	39
23/24	आश्ले.	9	4	15	26	21	45	4	2
24/25	मघा	10	16	16	28	22	37	4	44
25/26	पू.फा.	10	48	16	50	22	50	4	47
26/27	उ.फा.	10	42	16	35	22	26	4	16
27/28	हस्त	10	3	15	49	21	34	3	17
28/29	चित्रा	8	59	14	39	20	19	1	58
29/30	स्वाती	7	35	13	12	18	49	0	25
30	विशा.	6	0	11	35	17	10	22	45
31	अनु.	4	20	9	54	15	29	21	4

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	ज्येष्ठा	2	39	8	14	13	50	19	26
2	मूल	1	3	6	40	12	17	17	55
2/ 3	पू.षा.	23	34	5	13	10	53	16	34
3/ 4	उ.षा.	22	15	3	58	9	41	15	25
4/ 5	श्रव.	21	9	2	55	8	42	14	30
5/ 6	घनि.	20	19	2	9	8	0	13	52
6/ 7	शत.	19	45	1	40	7	36	13	34
7/ 8	पू.भा.	19	33	1	33	7	35	13	38
8/ 9	उ.भा.	19	44	1	50	7	59	14	9
9/10	रेव.	20	21	2	35	8	51	15	9
10/11	अश्वि.	21	29	3	50	10	14	16	39
11/12	भर.	23	6	5	36	12	7	18	40
13	कृत्ति.	1	14	7	51	14	29	21	8
14	रोहि.	3	49	10	31	17	14	23	58
15/16	मृग.	6	42	13	28	20	14	3	0
16/17	आर्द्रा	9	46	16	32	23	17	6	2
17/18	पुन.	12	46	19	29	2	11	8	52
18/19	पुष्य	15	31	22	8	4	43	11	16
19/20	आश्ले.	17	47	0	15	6	41	13	4
20/21	मघा	19	25	1	43	7	58	14	10
21/22	पू.फा.	20	20	2	27	8	30	14	32
22/23	उ.फा.	20	30	2	26	8	19	14	9
23/24	हस्त	19	57	1	43	7	26	13	8
24/25	चित्रा	18	47	0	24	6	0	11	34
25/26	स्वाती	17	6	22	37	4	7	9	35
26/27	विशा.	15	3	20	30	1	56	7	21
27/28	अनु.	12	46	18	11	23	36	5	0
28/29	ज्येष्ठा	10	25	15	50	21	15	2	40
29/30	मूल	8	6	13	33	19	1	0	30
30	पू.षा.	5	59	11	30	17	2	22	35

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.षा.	4	10	9	45	15	23	21	2
2	श्रव.	2	43	8	25	14	9	19	55
3	घनि.	1	42	7	32	13	23	19	16
4	शत.	1	11	7	8	13	7	19	8
5	पू.भा.	1	11	7	15	13	22	19	30
6	उ.भा.	1	41	7	53	14	7	20	23
7	रेव.	2	40	9	0	15	21	21	43
8	अश्वि.	4	8	10	34	17	2	23	31
9/10	भर.	6	2	12	34	19	8	1	43
10/11	कृत्ति.	8	20	14	57	21	36	4	16
11/12	रोहि.	10	58	17	40	0	23	7	6
12/13	मृग.	13	51	20	36	3	21	10	7
13/14	आर्द्रा	16	53	23	39	6	26	13	11
14/15	पुन.	19	57	2	42	9	26	16	9
15/16	पुष्य	22	52	5	33	12	13	18	51
17	आश्ले.	1	28	8	3	14	36	21	6
18	मघा	3	35	10	1	16	24	22	45
19	पू.फा.	5	4	11	19	17	32	23	42
20	उ.फा.	5	49	11	53	17	55	23	53
21	हस्त	5	49	11	41	17	31	23	19
22	चित्रा	5	3	10	45	16	24	22	2
23	स्वाती	3	36	9	9	14	39	20	8
24	विशा.	1	35	7	0	12	24	17	46
24/25	अनु.	23	7	4	27	9	46	15	5
25/26	ज्येष्ठा	20	23	1	40	6	57	12	14
26/27	मूल	17	31	22	49	4	6	9	24
27/28	पू.षा.	14	43	20	3	1	24	6	46
28/29	उ.षा.	12	9	17	34	23	0	4	28
29/30	श्रव.	9	58	15	30	21	4	2	40
30/31	घनि.	8	18	13	58	19	41	1	27

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	शत.	7	14	13	5	18	58	0	54
1/ 2	पू.भा.	6	52	12	53	18	57	1	3
2/ 3	उ.भा.	7	12	13	23	19	37	1	53
3/ 4	रेव.	8	11	14	32	20	55	3	20
4/ 5	अश्वि.	9	47	16	16	22	47	5	20
5/ 6	भर.	11	54	18	29	1	6	7	44
6/ 7	कृत्ति.	14	24	21	4	3	46	10	28
7/ 8	रोहि.	17	11	23	55	6	39	13	24
8/ 9	मृग.	20	9	2	55	9	41	16	26
9/10	आर्द्रा	23	12	5	58	12	44	19	30
11	पुन.	2	15	9	0	15	44	22	28
12/13	पुष्य	5	11	11	54	18	35	1	15
13/14	आश्ले.	7	54	14	32	21	9	3	44
14/15	मघा	10	17	16	49	23	19	5	47
15/16	पू.फा.	12	13	18	36	0	57	7	17
16/17	उ.फा.	13	33	19	47	1	58	8	7
17/18	हस्त	14	13	20	16	2	17	8	15
18/19	चित्रा	14	9	20	2	1	51	7	38
19/20	स्वाती	13	22	19	3	0	42	6	18
20/21	विशा.	11	52	17	24	22	53	4	21
21/22	अनु.	9	46	15	10	20	32	1	52
22	ज्येष्ठा	7	11	12	29	17	46	23	2
23	मूल	4	17	9	31	14	45	19	59
24	पू.षा.	1	13	6	27	11	42	16	57
24/25	उ.षा.	22	12	3	29	8	46	14	5
25/26	श्रव.	19	25	0	47	6	10	11	35
26/27	घनि.	17	2	22	32	4	3	9	37
27/28	शत.	15	14	20	54	2	36	8	21
28/29	पू.भा.	14	9	20	0	1	54	7	51
29/30	उ.भा.	13	51	19	54	2	1	8	10

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	रेव.	14	23	20	38	2	56	9	17
1/2	अश्वि.	15	41	22	7	4	36	11	7
2/3	भर.	17	40	0	15	6	52	13	31
3/4	कृति.	20	10	2	52	9	34	16	18
4/5	रोहि.	23	2	5	47	12	33	19	19
6	मृग.	2	5	8	52	15	38	22	24
7/8	आर्द्रा	5	10	11	56	18	42	1	27
8/9	पुन.	8	11	14	55	21	39	4	21
9/10	पुष्य	11	3	17	44	0	24	7	3
10/11	आश्ले.	13	41	20	18	2	54	9	29
11/12	मघा	16	2	22	34	5	5	11	35
12/13	पू.फा.	18	3	0	29	6	54	13	17
13/14	उ.फा.	19	38	1	58	8	15	14	31
14/15	हस्त	20	44	2	55	9	5	15	11
15/16	चित्रा	21	16	3	18	9	18	15	15
16/17	स्वाती	21	10	3	2	8	52	14	40
17/18	विशा.	20	25	2	8	7	48	13	26
18/19	अनु.	19	2	0	35	6	7	11	36
19/20	ज्येष्ठा	17	4	22	30	3	54	9	17
20/21	मूल	14	38	19	58	1	17	6	35
21/22	पू.षा.	11	52	17	9	22	25	3	41
22/23	उ.षा.	8	56	14	12	19	28	0	45
23	श्रव.	6	2	11	20	16	39	21	59
24	घनि.	3	20	8	43	14	8	19	34
25	शत.	1	3	6	34	12	7	17	42
25/26	पू.भा.	23	21	5	2	10	45	16	32
26/27	उ.भा.	22	22	4	15	10	11	16	10
27/28	रेव.	22	13	4	19	10	28	16	40
28/29	अश्वि.	22	55	5	13	11	35	17	59
30	भर.	0	26	6	55	13	27	20	2
31	कृति.	2	38	9	16	15	56	22	38

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	रोहि.	5	21	12	5	18	49	1	35
2/3	मृग.	8	21	15	7	21	54	4	40
3/4	आर्द्रा	11	26	18	12	0	58	7	43
4/5	पुन.	14	27	21	10	3	52	10	34
5/6	पुष्य	17	14	23	53	6	31	13	8
6/7	आश्ले.	19	43	2	18	8	51	15	23
7/8	मघा	21	53	4	22	10	50	17	16
8/9	पू.फा.	23	41	6	5	12	28	18	48
10	उ.फा.	1	8	7	26	13	43	19	58
11	हस्त	2	12	8	24	14	35	20	44
12	चित्रा	2	52	8	58	15	2	21	4
13	स्वाती	3	5	9	4	15	1	20	56
14	विशा.	2	49	8	41	14	30	20	18
15	अनु.	2	4	7	48	13	30	19	10
16	ज्येष्ठा	0	49	6	25	12	0	17	34
16/17	मूल	23	6	4	37	10	6	15	33
17/18	पू.षा.	21	0	2	26	7	51	13	15
18/19	उ.षा.	18	38	0	1	5	23	10	46
19/20	श्रव.	16	8	21	30	2	53	8	16
20/21	घनि.	13	40	19	4	0	30	5	56
21/22	शत.	11	24	16	53	22	24	3	57
22/23	पू.भा.	9	31	15	8	20	47	2	28
23/24	उ.भा.	8	11	13	57	19	46	1	38
24/25	रेव.	7	33	13	30	19	31	1	34
25/26	अश्वि.	7	41	13	51	20	3	2	19
26/27	भर.	8	38	14	59	21	24	3	51
27/28	कृति.	10	20	16	52	23	27	6	3
28/29	रोहि.	12	41	19	21	2	3	8	45
29/30	मृग.	15	29	22	13	4	59	11	44
30/31	आर्द्रा	18	30	1	15	8	1	14	45

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पुन.	21	30	4	13	10	56	17	37
2	पुष्य	0	17	6	56	13	34	20	9
3	आश्ले.	2	44	9	17	15	48	22	17
4	मघा	4	45	11	11	17	36	23	59
5/6	पू.फा.	6	20	12	39	18	57	1	13
6/7	उ.फा.	7	27	13	40	19	52	2	2
7/8	हस्त	8	10	14	18	20	23	2	28
8/9	चित्रा	8	31	14	33	20	33	2	33
9/10	स्वाती	8	31	14	28	20	23	2	18
10/11	विशा.	8	11	14	3	19	54	1	44
11/12	अनु.	7	33	13	20	19	6	0	52
12	ज्येष्ठा	6	36	12	19	18	0	23	41
13	मूल	5	21	11	0	16	38	22	15
14	पू.षा.	3	51	9	27	15	1	20	35
15	उ.षा.	2	9	7	42	13	14	18	47
16	श्रव.	0	19	5	50	11	22	16	54
16/17	घनि.	22	27	3	59	9	32	15	6
17/18	शत.	20	40	2	15	7	51	13	28
18/19	पू.भा.	19	7	0	47	6	28	12	11
19/20	उ.भा.	17	56	23	42	5	31	11	21
20/21	रेव.	17	14	23	10	5	7	11	7
21/22	अश्वि.	17	10	23	15	5	22	11	33
22/23	भर.	17	46	0	1	6	19	12	40
23/24	कृति.	19	4	1	29	7	58	14	28
24/25	रोहि.	21	1	3	36	10	12	16	51
25/26	मृग.	23	30	6	12	12	54	19	37
27	आर्द्रा	2	21	9	6	15	51	22	35
28/29	पुन.	5	20	12	4	18	48	1	30
29/30	पुष्य	8	12	14	53	21	32	4	10

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	आश्ले.	10	47	17	21	23	54	6	24
1/ 2	मघा	12	53	19	20	1	44	8	6
2/ 3	पू.फा.	14	27	20	44	3	0	9	14
3/ 4	उ.फा.	15	25	21	35	3	42	9	48
4/ 5	हस्त	15	51	21	53	3	53	9	51
5/ 6	चित्रा	15	47	21	42	3	35	9	27
6/ 7	स्वाती	15	18	21	7	2	55	8	42
7/ 8	विशा.	14	28	20	13	1	57	7	40
8/ 9	अनु.	13	23	19	5	0	46	6	27
9/10	ज्येष्ठा	12	7	17	46	23	26	5	5
10/11	मूल	10	43	16	22	22	0	3	38
11/12	पू.षा.	9	16	14	54	20	32	2	9
12/13	उ.षा.	7	47	13	26	19	4	0	43
13	श्रव.	6	21	12	1	17	40	23	20
14	घनि.	5	1	10	42	16	24	22	6
15	शत.	3	49	9	33	15	18	21	4
16	पू.भा.	2	51	8	39	14	28	20	19
17	उ.भा.	2	10	8	3	13	58	19	54
18	रेव.	1	52	7	51	13	53	19	56
19	अश्वि.	2	1	8	7	14	16	20	27
20	भर.	2	40	8	54	15	11	21	30
21	कृत्ति.	3	52	10	15	16	40	23	7
22/23	रोहि.	5	37	12	8	18	41	1	16
23/24	मृग.	7	52	14	30	21	10	3	50
24/25	आर्द्रा	10	32	17	15	23	58	6	43
25/26	पुन.	13	27	20	12	2	56	9	41
26/27	पुष्य	16	25	23	8	5	51	12	32
27/28	आश्ले.	19	12	1	51	8	28	15	4
28/29	मघा	21	37	4	9	10	38	17	5
29/30	पू.फा.	23	30	5	52	12	11	18	28
31	उ.फा.	0	43	6	54	13	4	19	10

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	हस्त	1	14	7	15	13	14	19	11
2	चित्रा	1	5	6	57	12	46	18	34
3	स्वाती	0	19	6	2	11	44	17	24
3/ 4	विशा.	23	3	4	40	10	15	15	50
4/ 5	अनु.	21	23	2	56	8	27	13	58
5/ 6	ज्येष्ठा	19	28	0	58	6	28	11	57
6/ 7	मूल	17	26	22	55	4	25	9	54
7/ 8	पू.षा.	15	24	20	55	2	26	7	57
8/ 9	उ.षा.	13	30	19	3	0	37	6	12
9/10	श्रव.	11	48	17	25	23	3	4	43
10/11	घनि.	10	24	16	6	21	50	3	35
11/12	शत.	9	21	15	9	20	58	2	49
12/13	पू.भा.	8	41	14	35	20	31	2	28
13/14	उ.भा.	8	27	14	27	20	28	2	32
14/15	रेव.	8	37	14	43	20	51	3	1
15/16	अश्वि.	9	12	15	25	21	40	3	56
16/17	भर.	10	13	16	33	22	53	5	16
17/18	कृत्ति.	11	40	18	5	0	32	7	0
18/19	रोहि.	13	30	20	2	2	35	9	9
19/20	मृग.	15	44	22	21	4	59	11	39
20/21	आर्द्रा	18	19	1	1	7	43	14	26
21/22	पुन.	21	10	3	54	10	39	17	24
23	पुष्य	0	9	6	54	13	38	20	23
24	आश्ले.	3	6	9	49	16	31	23	12
25/26	मघा	5	52	12	30	19	6	1	40
26/27	पू.फा.	8	12	14	43	21	10	3	36
27/28	उ.फा.	9	58	16	18	22	35	4	50
28/29	हस्त	11	1	17	10	23	15	5	18
29/30	चित्रा	11	18	17	14	23	8	4	59

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2013 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	स्वाती	10	47	16	33	22	16	3	56
1/ 2	विशा.	9	34	15	10	20	43	2	15
2/ 3	अनु.	7	44	13	12	18	36	0	3
3	ज्येष्ठा	5	26	10	48	16	9	21	30
4	मूल	2	50	8	9	13	28	18	47
5	पू.षा.	0	6	5	25	10	45	16	5
5/ 6	उ.षा.	21	26	2	47	8	10	13	33
6/ 7	श्रव.	18	58	0	25	5	52	11	22
7/ 8	घनि.	16	53	22	26	4	1	9	38
8/ 9	शत.	15	18	20	59	2	43	8	28
9/10	पू.भा.	14	17	20	7	2	0	7	56
10/11	उ.भा.	13	53	19	53	1	56	8	0
11/12	रेव.	14	7	20	16	2	27	8	40
12/13	अश्वि.	14	56	21	13	3	32	9	53
13/14	भर.	16	15	22	40	5	5	11	33
14/15	कृत्ति.	18	1	0	31	7	3	13	35
15/16	रोहि.	20	9	2	44	9	20	15	56
16/17	मृग.	22	34	5	13	11	52	18	32
18	आर्द्रा	1	13	7	55	14	37	21	20
19/20	पुन.	4	3	10	47	17	31	0	15
20/21	पुष्य	7	0	13	45	20	30	3	14
21/22	आश्ले.	9	59	16	43	23	27	6	10
22/23	मघा	12	53	19	35	2	15	8	55
23/24	पू.फा.	15	33	22	10	4	45	11	18
24/25	उ.फा.	17	49	0	18	6	45	13	10
25/26	हस्त	19	32	1	51	8	8	14	21
26/27	चित्रा	20	32	2	40	8	45	14	46
27/28	स्वाती	20	45	2	40	8	33	14	22
28/29	विशा.	20	9	1	52	7	33	13	11
29/30	अनु.	18	46	0	18	5	49	11	16
30/31	ज्येष्ठा	16	42	22	6	3	27	8	47

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	मूल	14	6	19	23	0	39	5	54
1/2	पू.षा.	11	8	16	22	21	35	2	48
2	उ.षा.	8	1	13	14	18	27	23	41
3	श्रव.	4	55	10	11	15	27	20	45
4	घनि.	2	5	7	25	12	48	18	12
4/5	शत.	23	39	5	8	10	39	16	13
5/6	पू.भा.	21	49	3	28	9	9	14	54
6/7	उ.भा.	20	41	2	31	8	24	14	21
7/8	रेव.	20	20	2	22	8	27	14	35
8/9	अश्वि.	20	46	2	59	9	15	15	34
9/10	भर.	21	55	4	18	10	44	17	12
10/11	कृत्ति.	23	42	6	13	12	46	19	21
12	रोहि.	1	57	8	35	15	13	21	53
13/14	मृग.	4	33	11	15	17	56	0	39
14/15	आर्द्रा	7	22	14	5	20	49	3	33
15/16	पुन.	10	17	17	1	23	45	6	30
16/17	पुष्य	13	14	19	58	2	42	9	25
17/18	आश्ले.	16	9	22	52	5	34	12	17
18/19	मघा	18	58	1	39	8	20	14	59
19/20	पू.फा.	21	38	4	16	10	53	17	29
21	उ.फा.	0	3	6	36	13	8	19	37
22	हस्त	2	5	8	32	14	56	21	18
23	चित्रा	3	38	9	56	16	11	22	23
24	स्वाती	4	33	10	40	16	45	22	47
25	विशा.	4	45	10	41	16	35	22	25
26	अनु.	4	12	9	57	15	39	21	18
27	ज्येष्ठा	2	54	8	28	14	0	19	29
28	मूल	0	56	6	21	11	44	17	5
28/29	पू.षा.	22	25	3	43	8	59	14	15
29/30	उ.षा.	19	30	0	44	5	57	11	10
30/31	श्रव.	16	23	21	37	2	50	8	3

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	घनि.	13	17	18	32	23	48	5	5
1/2	शत.	10	23	15	44	21	5	2	29
2/3	पू.भा.	7	54	13	22	18	52	0	25
3	उ.भा.	6	0	11	38	17	19	23	3
4	रेव.	4	49	10	39	16	32	22	28
5	अश्वि.	4	28	10	30	16	36	22	45
6	भर.	4	57	11	12	17	29	23	50
7/8	कृत्ति.	6	13	12	39	19	8	1	38
8/9	रोहि.	8	11	14	46	21	23	4	1
9/10	मृग.	10	41	17	21	0	3	6	46
10/11	आर्द्रा	13	30	20	14	2	59	9	44
11/12	पुन.	16	29	23	14	5	59	12	44
12/13	पुष्य	19	28	2	13	8	56	15	39
13/14	आश्ले.	22	22	5	4	11	45	18	25
15	मघा	1	5	7	44	14	22	20	58
16	पू.फा.	3	34	10	9	16	43	23	16
17/18	उ.फा.	5	48	12	19	18	48	1	16
18/19	हस्त	7	43	14	9	20	33	2	55
19/20	चित्रा	9	16	15	36	21	53	4	9
20/21	स्वाती	10	24	16	36	22	46	4	54
21/22	विशा.	11	0	17	4	23	6	5	6
22/23	अनु.	11	3	16	58	22	51	4	41
23/24	ज्येष्ठा	10	30	16	16	21	59	3	41
24/25	मूल	9	20	14	57	20	33	2	6
25/26	पूषा	7	37	13	7	18	35	0	2
26	उ.षा.	5	27	10	50	16	13	21	35
27	श्रव.	2	56	8	16	13	36	18	55
28	घनि.	0	14	5	33	10	52	16	12

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2014 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/1	शत.	21	32	2	53	8	14	13	36
1/2	पू.भा.	19	0	0	25	5	52	11	20
2/3	उ.भा.	16	50	22	22	3	56	9	32
3/4	रेव.	15	11	20	52	2	36	8	23
4/5	अश्वि.	14	12	20	4	1	59	7	57
5/6	भर.	13	59	20	3	2	10	8	20
6/7	कृत्ति.	14	33	20	49	3	8	9	30
7/8	रोहि.	15	55	22	22	4	51	11	23
8/9	मृग.	17	57	0	32	7	10	13	49
9/10	आर्द्रा	20	30	3	12	9	54	16	38
10/11	पुन.	23	22	6	7	12	52	19	37
12	पुष्य	2	21	9	6	15	50	22	34
13/14	आश्ले.	5	17	11	59	18	40	1	20
14/15	मघा	7	59	14	37	21	13	3	48
15/16	पू.फा.	10	22	16	55	23	26	5	55
16/17	उ.फा.	12	23	18	50	1	15	7	39
17/18	हस्त	14	1	20	21	2	40	8	58
18/19	चित्रा	15	14	21	29	3	42	9	53
19/20	स्वाती	16	3	22	12	4	19	10	24
20/21	विशा.	16	28	22	31	4	32	10	32
21/22	अनु.	16	29	22	26	4	21	10	14
22/23	ज्येष्ठा	16	6	21	57	3	46	9	33
23/24	मूल	15	19	21	4	2	47	8	29
24/25	पू.षा.	14	10	19	49	1	27	7	4
25/26	उ.षा.	12	39	18	14	23	48	5	21
26/27	श्रव.	10	53	16	24	21	55	3	25
27/28	घनि.	8	55	14	24	19	53	1	23
28	शत.	6	52	12	21	17	51	23	21
29	पू.भा.	4	51	10	22	15	54	21	27
30	उ.भा.	3	1	8	36	14	13	19	51
31	रेव.	1	30	7	11	12	54	18	39

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 34"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	43	14	8	16	41	14	3	26	43	34	9	10	38	14	8	6	35	49	1	13	43	49	7	25	43	11	6	15	30	6	6	29	33	3	7	0	57	27	-23	0	9	42	-5	7
2	6	47	10	8	17	42	23	4	9	21	31	9	11	25	23	8	8	8	35	1	13	38	14	7	26	58	18	6	15	34	42	6	29	29	52	7	0	50	12	-22	55	5	31	-5	5
3	6	51	7	8	18	43	31	4	22	12	34	9	12	12	33	8	9	41	40	1	13	32	48	7	28	13	25	6	15	39	14	6	29	26	42	7	0	44	51	-22	49	1	1	-4	47
4	6	55	4	8	19	44	40	5	5	18	35	9	12	59	44	8	11	15	7	1	13	27	33	7	29	28	33	6	15	43	41	6	29	23	31	7	0	41	45	-22	43	-3	38	-4	14
5	6	59	0	8	20	45	49	5	18	41	40	9	13	46	57	8	12	48	54	1	13	22	27	8	0	43	42	6	15	48	3	6	29	20	20	7	0	40	45	-22	37	-8	12	-3	27
6	7	2	57	8	21	46	59	6	2	23	44	9	14	34	11	8	14	23	3	1	13	17	32	8	1	58	51	6	15	52	20	6	29	17	9	7	0	41	16	-22	30	-12	28	-2	26
7	7	6	53	8	22	48	8	6	16	26	3	9	15	21	26	8	15	57	35	1	13	12	47	8	3	14	1	6	15	56	33	6	29	13	58	7	0	42	19	-22	22	-16	10	-1	16
8	7	10	50	8	23	49	18	7	0	48	36	9	16	8	43	8	17	32	30	1	13	8	13	8	4	29	11	6	16	0	40	6	29	10	48	7	0	42	49	-22	15	-18	58	0	1
9	7	14	46	8	24	50	27	7	15	29	20	9	16	56	0	8	19	7	50	1	13	3	50	8	5	44	21	6	16	4	43	6	29	7	37	7	0	41	43	-22	6	-20	35	1	19
10	7	18	43	8	25	51	37	8	0	23	37	9	17	43	19	8	20	43	34	1	12	59	38	8	6	59	32	6	16	8	40	6	29	4	26	7	0	38	18	-21	58	-20	47	2	32
11	7	22	39	8	26	52	46	8	15	24	19	9	18	30	38	8	22	19	44	1	12	55	37	8	8	14	43	6	16	12	33	6	29	1	15	7	0	32	21	-21	48	-19	30	3	36
12	7	26	36	8	27	53	56	9	0	22	29	9	19	17	59	8	23	56	22	1	12	51	48	8	9	29	55	6	16	16	20	6	28	58	4	7	0	24	11	-21	39	-16	54	4	24
13	7	30	33	8	28	55	5	9	15	8	49	9	20	5	20	8	25	33	26	1	12	48	10	8	10	45	6	6	16	20	1	6	28	54	54	7	0	14	37	-21	29	-13	13	4	54
14	7	34	29	[illegible]	29	56	13	9	29	35	8	9	20	52	42	8	27	10	59	1	12	44	43	8	12	0	18	6	16	23	38	6	28	51	43	7	0	4	45	-21	19	-8	50	5	5
15	7	38	26	[illegible]	0	57	21	10	13	35	43	9	21	40	5	8	28	49	2	1	12	41	29	8	13	15	29	6	16	27	9	6	28	48	32	6	29	55	43	-21	8	-4	7	4	56
16	7	42	22	9	1	58	29	10	27	7	56	9	22	27	28	9	0	27	34	1	12	38	26	8	14	30	41	6	16	30	34	6	28	45	21	6	29	48	27	-20	56	0	39	4	31
17	7	46	19	9	2	59	35	11	10	12	7	9	23	14	52	9	2	6	37	1	12	35	35	8	15	45	52	6	16	33	55	6	28	42	10	6	29	43	30	-20	45	5	15	3	53
18	7	50	15	9	4	0	41	11	22	50	58	9	24	2	17	9	3	46	12	1	12	32	56	8	17	1	4	6	16	37	9	6	28	39	0	6	29	40	54	-20	33	9	28	3	4
19	7	54	12	9	5	1	46	0	5	8	49	9	24	49	41	9	5	26	18	1	12	30	29	8	18	16	15	6	16	40	18	6	28	35	49	6	29	40	12	-20	20	13	10	2	7
20	7	58	8	9	6	2	50	0	17	10	53	9	25	37	6	9	7	6	57	1	12	28	15	8	19	31	26	6	16	43	22	6	28	32	38	6	29	40	37	-20	8	16	15	1	6
21	8	2	5	9	7	3	54	0	29	2	42	9	26	24	32	9	8	48	9	1	12	26	12	8	20	46	37	6	16	46	20	6	28	29	27	6	29	41	3	-19	55	18	36	0	3
22	8	6	2	9	8	4	56	1	10	49	39	9	27	11	57	9	10	29	53	1	12	24	22	8	22	1	48	6	16	49	12	6	28	26	16	6	29	40	26	-19	41	20	8	-0	59
23	8	9	58	9	9	5	57	1	22	36	42	9	27	59	22	9	12	12	10	1	12	22	44	8	23	16	59	6	16	51	58	6	28	23	6	6	29	37	48	-19	27	20	48	-1	59
24	8	13	55	9	10	6	58	2	4	28	5	9	28	46	48	9	13	54	58	1	12	21	18	8	24	32	10	6	16	54	39	6	28	19	55	6	29	32	31	-19	13	20	32	-2	54
25	8	17	51	9	11	7	57	2	16	27	10	9	29	34	14	9	15	38	17	1	12	20	5	8	25	47	20	6	16	57	14	6	28	16	44	6	29	24	20	-18	58	19	20	-3	42
26	8	21	48	9	12	8	56	2	28	36	23	10	0	21	39	9	17	22	5	1	12	19	4	8	27	2	30	6	16	59	43	6	28	13	33	6	29	13	31	-18	43	17	16	-4	20
27	8	25	44	9	13	9	53	3	10	57	11	10	1	9	5	9	19	6	21	1	12	18	15	8	28	17	41	6	17	2	6	6	28	10	23	6	29	0	42	-18	28	14	23	-4	46
28	8	29	41	9	14	10	50	3	23	30	6	10	1	56	31	9	20	51	2	1	12	17	38	8	29	32	51	6	17	4	23	6	28	7	12	6	28	46	59	-18	12	10	49	-5	0
29	8	33	37	9	15	11	46	4	6	15	3	10	2	43	56	9	22	36	5	1	12	17	14	9	0	48	1	6	17	6	35	6	28	4	1	6	28	33	35	-17	56	6	43	-4	58
30	8	37	34	9	16	12	41	4	19	11	34	10	3	31	22	9	24	21	25	1	12	17	2	9	2	3	11	6	17	8	40	6	28	0	50	6	28	21	45	-17	40	2	15	-4	42
31	8	41	31	9	17	13	36	5	2	19	11	10	4	18	47	9	26	6	57	1	12	17	2	9	3	18	21	6	17	10	40	6	27	57	39	6	28	12	27	-17	24	-2	23	-4	10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 38''

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 45 27	9 18 14 29	5 15 37 44	10 5 6 13	9 27 52 34	1 12 17 14	9 4 33 31	6 17 12 33	6 27 54 29	6 28 6 13	-17 7	-6 58	-3 24
2	8 49 24	9 19 15 22	5 29 7 25	10 5 53 38	9 29 38 10	1 12 17 39	9 5 48 41	6 17 14 20	6 27 51 18	6 28 2 56	-16 50	-11 16	-2 27
3	8 53 20	9 20 16 14	6 12 48 54	10 6 41 3	10 1 23 33	1 12 18 16	9 7 3 51	6 17 16 2	6 27 48 7	6 28 1 55	-16 32	-15 3	-1 20
4	8 57 17	9 21 17 5	6 26 42 55	10 7 28 27	10 3 8 33	1 12 19 5	9 8 19 1	6 17 17 37	6 27 44 56	6 28 1 58	-16 14	-18 3	-0 7
5	9 1 13	9 22 17 56	7 10 49 53	10 8 15 52	10 4 52 55	1 12 20 6	9 9 34 11	6 17 19 6	6 27 41 46	6 28 1 41	-15 56	-20 0	1 7
6	9 5 10	9 23 18 45	7 25 9 10	10 9 3 16	10 6 36 25	1 12 21 19	9 10 49 20	6 17 20 28	6 27 38 35	6 27 59 42	-15 38	-20 42	2 18
7	9 9 6	9 24 19 34	8 9 38 37	10 9 50 40	10 8 18 42	1 12 22 45	9 12 4 30	6 17 21 45	6 27 35 24	6 27 55 6	-15 19	-20 2	3 21
8	9 13 3	9 25 20 21	8 24 14 2	10 10 38 3	10 9 59 26	1 12 24 22	9 13 19 39	6 17 22 55	6 27 32 13	6 27 47 29	-15 0	-18 3	4 11
9	9 17 0	9 26 21 8	9 8 49 26	10 11 25 26	10 11 38 13	1 12 26 12	9 14 34 48	6 17 23 59	6 27 29 3	6 27 37 10	-14 41	-14 54	4 45
10	9 20 56	9 27 21 53	9 23 17 42	10 12 12 48	10 13 14 35	1 12 28 13	9 15 49 56	6 17 24 57	6 27 25 52	6 27 25 2	-14 22	-10 53	4 59
11	9 24 53	9 28 22 37	10 7 31 43	10 13 0 10	10 14 48 1	1 12 30 27	9 17 5 4	6 17 25 49	6 27 22 41	6 27 12 19	-14 2	-6 18	4 55
12	9 28 49	9 29 23 19	10 21 25 39	10 13 47 30	10 16 17 57	1 12 32 52	9 18 20 12	6 17 26 34	6 27 19 30	6 27 0 22	-13 42	-1 31	4 34
13	9 32 46	10 0 24 0	11 4 55 49	10 14 34 50	10 17 43 47	1 12 35 29	9 19 35 19	6 17 27 13	6 27 16 20	6 26 50 18	-13 22	3 13	3 57
14	9 36 42	10 1 24 40	11 18 1 1	10 15 22 10	10 19 4 51	1 12 38 18	9 20 50 26	6 17 27 45	6 27 13 9	6 26 42 52	-13 2	7 40	3 9
15	9 40 39	10 2 25 18	0 0 42 28	10 16 9 28	10 20 20 27	1 12 41 19	9 22 5 32	6 17 28 11	6 27 9 58	6 26 38 13	-12 42	11 38	2 13
16	9 44 35	10 3 25 54	0 13 3 17	10 16 56 45	10 21 29 54	1 12 44 30	9 23 20 37	6 17 28 31	6 27 6 47	6 26 36 1	-12 21	15 0	1 11
17	9 48 32	10 4 26 26	0 25 7 54	10 17 44 1	10 22 32 29	1 12 47 54	9 24 35 42	6 17 28 45	6 27 3 37	6 26 35 26	-12 0	17 38	0 8
18	9 52 29	10 5 27 1	1 7 1 36	10 18 31 16	10 23 27 30	1 12 51 29	9 25 50 46	6 17 28 52	6 27 0 26	6 26 35 25	-11 39	19 28	-0 55
19	9 56 25	10 6 27 32	1 18 50 1	10 19 18 30	10 24 14 18	1 12 55 14	9 27 5 50	6 17 28 54	6 26 57 15	6 26 34 49	-11 18	20 26	-1 55
20	10 0 22	10 7 28 1	2 0 38 39	10 20 5 42	10 24 52 17	1 12 59 11	9 28 20 52	6 17 28 49	6 26 54 4	6 26 32 36	-10 56	20 30	-2 50
21	10 4 18	10 8 28 28	2 12 32 37	10 20 52 53	10 25 20 58	1 13 3 19	9 29 35 55	6 17 28 37	6 26 50 54	6 26 28 1	-10 35	19 38	-3 38
22	10 8 15	10 9 28 53	2 24 36 20	10 21 40 3	10 25 39 56	1 13 7 38	10 0 50 56	6 17 28 20	6 26 47 43	6 26 20 42	-10 13	17 54	-4 17
23	10 12 11	10 10 29 17	3 6 53 13	10 22 27 12	10 25 48 59	1 13 12 8	10 2 5 57	6 17 27 56	6 26 44 32	6 26 10 47	-9 51	15 19	-4 45
24	10 16 8	10 11 29 39	3 19 25 31	10 23 14 19	10 25 47 59	1 13 16 48	10 3 20 57	6 17 27 26	6 26 41 21	6 25 58 52	-9 29	11 59	-4 59
25	10 20 4	10 12 29 59	4 2 14 13	10 24 1 25	10 25 37 6	1 13 21 39	10 4 35 57	6 17 26 50	6 26 38 11	6 25 45 54	-9 7	8 3	-4 59
26	10 24 1	10 13 30 17	4 15 18 57	10 24 48 29	10 25 16 36	1 13 26 40	10 5 50 55	6 17 26 8	6 26 35 0	6 25 33 5	-8 44	3 40	-4 44
27	10 27 58	10 14 30 33	4 28 38 14	10 25 35 32	10 24 47 3	1 13 31 52	10 7 5 54	6 17 25 19	6 26 31 49	6 25 21 40	-8 22	-0 58	-4 13
28	10 31 54	10 15 30 48	5 12 9 52	10 26 22 33	10 24 9 12	1 13 37 14	10 8 20 52	6 17 24 25	6 26 28 39	6 25 12 36	-7 59	-5 38	-3 27

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 42"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 35 51	10 16 31 2	5 25 51 25	10 27 9 33	10 23 24 3	1 13 42 46	10 9 35 49	6 17 23 25	6 26 25 28	6 25 6 29	-7 36	-10 4	-2 29
2	10 39 47	10 17 31 14	6 9 40 44	10 27 56 32	10 22 32 44	1 13 48 28	10 10 50 46	6 17 22 18	6 26 22 17	6 25 3 16	-7 14	-14 1	-1 21
3	10 43 44	10 18 31 24	6 23 36 8	10 28 43 29	10 21 36 35	1 13 54 20	10 12 5 42	6 17 21 6	6 26 19 6	6 25 2 24	-6 51	-17 13	-0 8
4	10 47 40	10 19 31 33	7 7 36 33	10 29 30 24	10 20 37 3	1 14 0 22	10 13 20 37	6 17 19 47	6 26 15 56	6 25 2 49	-6 28	-19 24	1 6
5	10 51 37	10 20 31 40	7 21 41 14	11 0 17 18	10 19 35 36	1 14 6 33	10 14 35 32	6 17 18 23	6 26 12 45	6 25 3 13	-6 4	-20 24	2 17
6	10 55 33	10 21 31 45	8 5 49 25	11 1 4 11	10 18 33 43	1 14 12 55	10 15 50 27	6 17 16 52	6 26 9 34	6 25 2 22	-5 41	-20 7	3 19
7	10 59 30	10 22 31 50	8 19 59 50	11 1 51 1	10 17 32 49	1 14 19 25	10 17 5 21	6 17 15 16	6 26 6 23	6 24 59 22	-5 18	-18 33	4 10
8	11 3 27	10 23 31 52	9 4 10 20	11 2 37 50	10 16 34 12	1 14 26 5	10 18 20 14	6 17 13 34	6 26 3 13	6 24 53 48	-4 55	-15 52	4 45
9	11 7 23	10 24 31 53	9 18 17 46	11 3 24 38	10 15 39 0	1 14 32 55	10 19 35 6	6 17 11 46	6 26 0 2	6 24 45 53	-4 31	-12 15	5 2
10	11 11 20	10 25 31 52	10 2 18 8	11 4 11 23	10 14 48 11	1 14 39 54	10 20 49 58	6 17 9 53	6 25 56 51	6 24 36 17	-4 8	-8 0	5 2
11	11 15 16	10 26 31 49	10 16 7 10	11 4 58 7	10 14 2 31	1 14 47 1	10 22 4 49	6 17 7 53	6 25 53 41	6 24 26 6	-3 44	-3 23	4 43
12	11 19 13	10 27 31 45	10 29 40 54	11 5 44 49	10 13 22 34	1 14 54 18	10 23 19 40	6 17 5 49	6 25 50 30	6 24 16 25	-3 20	1 19	4 9
13	11 23 9	10 28 31 38	11 12 56 27	11 6 31 29	10 12 48 44	1 15 1 44	10 24 34 29	6 17 3 38	6 25 47 19	6 24 8 17	-2 57	5 52	3 22
14	11 27 6	10 29 31 30	11 25 52 27	11 7 18 7	10 12 21 16	1 15 9 18	10 25 49 18	6 17 1 22	6 25 44 8	6 24 2 18	-2 33	10 1	2 25
15	11 31 2	11 0 31 19	0 8 29 10	11 8 4 43	10 12 0 15	1 15 17 1	10 27 4 5	6 16 59 1	6 25 40 58	6 23 58 45	-2 9	13 38	1 22
16	11 34 59	11 1 31 7	0 20 48 26	11 8 51 16	10 11 45 42	1 15 24 53	10 28 18 52	6 16 56 35	6 25 37 47	6 23 57 23	-1 46	16 34	0 17
17	11 38 56	11 2 30 52	1 2 53 26	11 9 37 48	10 11 37 29	1 15 32 53	10 29 33 37	6 16 54 3	6 25 34 36	6 23 57 40	-1 22	18 41	-0 48
18	11 42 52	11 3 30 35	1 14 48 22	11 10 24 17	10 11 35 27	1 15 41 1	11 0 48 22	6 16 51 26	6 25 31 26	6 23 58 46	-0 58	19 58	-1 50
19	11 46 49	11 4 30 16	1 26 38 7	11 11 10 44	10 11 39 22	1 15 49 17	11 2 3 6	6 16 48 44	6 25 28 15	6 23 59 49	-0 35	20 20	-2 47
20	11 50 45	11 5 29 54	2 8 27 55	11 11 57 9	10 11 49 1	1 15 57 42	11 3 17 48	6 16 45 57	6 25 25 4	6 24 0 1	-0 11	19 48	-3 37
21	11 54 42	11 6 29 30	2 20 23 2	11 12 43 31	10 12 4 7	1 16 6 14	11 4 32 29	6 16 43 5	6 25 21 53	6 23 58 42	0 13	18 23	-4 18
22	11 58 38	11 7 29 4	3 2 28 28	11 13 29 51	10 12 24 23	1 16 14 54	11 5 47 10	6 16 40 9	6 25 18 43	6 23 55 33	0 37	16 8	-4 48
23	12 2 35	11 8 28 35	3 14 48 33	11 14 16 8	10 12 49 34	1 16 23 41	11 7 1 49	6 16 37 7	6 25 15 32	6 23 50 32	1 0	13 8	-5 5
24	12 6 31	11 9 28 5	3 27 26 43	11 15 2 24	10 13 19 22	1 16 32 36	11 8 16 27	6 16 34 2	6 25 12 21	6 23 44 1	1 24	9 28	-5 8
25	12 10 28	11 10 27 32	4 10 25 2	11 15 48 36	10 13 53 32	1 16 41 38	11 9 31 4	6 16 30 51	6 25 9 11	6 23 36 38	1 47	5 17	-4 56
26	12 14 25	11 11 26 57	4 23 44 2	11 16 34 46	10 14 31 49	1 16 50 48	11 10 45 40	6 16 27 36	6 25 6 0	6 23 29 10	2 11	0 44	-4 27
27	12 18 21	11 12 26 19	5 7 22 31	11 17 20 54	10 15 13 58	1 17 0 5	11 12 0 15	6 16 24 17	6 25 2 49	6 23 22 29	2 34	-3 59	-3 43
28	12 22 18	11 13 25 40	5 21 17 42	11 18 6 59	10 15 59 47	1 17 9 28	11 13 14 49	6 16 20 54	6 24 59 38	6 23 17 18	2 58	-8 34	-2 45
29	12 26 14	11 14 24 59	6 5 25 39	11 18 53 2	10 16 49 3	1 17 18 59	11 14 29 22	6 16 17 26	6 24 56 28	6 23 14 3	3 21	-12 46	-1 35
30	12 30 11	11 15 24 16	6 19 41 52	11 19 39 3	10 17 41 34	1 17 28 36	11 15 43 54	6 16 13 55	6 24 53 17	6 23 12 45	3 45	-16 16	-0 19
31	12 34 7	11 16 23 31	7 4 1 54	11 20 25 1	10 18 37 9	1 17 38 21	11 16 58 25	6 16 10 20	6 24 50 6	6 23 13 5	4 8	-18 47	0 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 44"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 38 4	11 17 22 44	7 18 21 51	11 21 10 56	10 19 35 39	1 17 48 11	11 18 12 55	6 16 6 40	6 24 46 56	6 23 14 23	4 31	-20 5	2 13
2	12 42 0	11 18 21 56	8 2 38 37	11 21 56 49	10 20 36 54	1 17 58 9	11 19 27 25	6 16 2 57	6 24 43 45	6 23 15 50	4 54	-20 5	3 19
3	12 45 57	11 19 21 6	8 16 49 52	11 22 42 40	10 21 40 45	1 18 8 13	11 20 41 53	6 15 59 11	6 24 40 34	6 23 16 39	5 17	-18 49	4 12
4	12 49 54	11 20 20 14	9 0 53 51	11 23 28 28	10 22 47 6	1 18 18 23	11 21 56 21	6 15 55 21	6 24 37 23	6 23 16 14	5 40	-16 24	4 49
5	12 53 50	11 21 19 20	9 14 49 14	11 24 14 13	10 23 55 50	1 18 28 39	11 23 10 47	6 15 51 27	6 24 34 13	6 23 14 20	6 3	-13 4	5 9
6	12 57 47	11 22 18 24	9 28 34 44	11 24 59 56	10 25 6 50	1 18 39 2	11 24 25 13	6 15 47 31	6 24 31 2	6 23 11 1	6 26	- 9 4	5 11
7	13 1 43	11 23 17 27	10 12 9 4	11 25 45 37	10 26 20 1	1 18 49 30	11 25 39 38	6 15 43 31	6 24 27 51	6 23 6 43	6 48	- 4 39	4 56
8	13 5 40	11 24 16 28	10 25 30 56	11 26 31 15	10 27 35 19	1 19 0 5	11 26 54 2	6 15 39 28	6 24 24 40	6 23 2 1	7 11	- 0 5	4 24
9	13 9 36	11 25 15 27	11 8 39 11	11 27 16 50	10 28 52 38	1 19 10 45	11 28 8 24	6 15 35 23	6 24 21 30	6 22 57 35	7 33	4 25	3 39
10	13 13 33	11 26 14 24	11 21 33 0	11 28 2 22	11 0 11 55	1 19 21 31	11 29 22 46	6 15 31 14	6 24 18 19	6 22 53 57	7 56	8 39	2 44
11	13 17 29	11 27 13 19	0 4 12 7	11 28 47 52	11 1 33 7	1 19 32 23	0 0 37 7	6 15 27 3	6 24 15 8	6 22 51 30	8 18	12 25	1 41
12	13 21 26	11 28 12 12	0 16 37 2	11 29 33 19	11 2 56 11	1 19 43 20	0 1 51 27	6 15 22 50	6 24 11 58	6 22 50 22	8 40	15 34	0 34
13	13 25 23	11 29 11 3	0 28 49 5	0 0 18 43	11 4 21 3	1 19 54 22	0 3 5 45	6 15 18 34	6 24 8 47	6 22 50 27	9 2	17 57	- 0 33
14	13 29 19	0 0 9 52	1 10 50 28	0 1 4 4	11 5 47 43	1 20 5 30	0 4 20 3	6 15 14 16	6 24 5 36	6 22 51 28	9 23	19 30	- 1 38
15	13 33 16	0 1 8 39	1 22 44 11	0 1 49 22	11 7 16 8	1 20 16 43	0 5 34 19	6 15 9 56	6 24 2 25	6 22 53 1	9 45	20 10	- 2 38
16	13 37 12	0 2 7 24	2 4 33 58	0 2 34 37	11 8 46 16	1 20 28 1	0 6 48 34	6 15 5 34	6 23 59 15	6 22 54 40	10 6	19 55	- 3 30
17	13 41 9	0 3 6 6	2 16 24 3	0 3 19 50	11 10 18 7	1 20 39 24	0 8 2 47	6 15 1 11	6 23 56 4	6 22 56 3	10 27	18 48	- 4 14
18	13 45 5	0 4 4 46	2 28 19 4	0 4 4 59	11 11 51 39	1 20 50 52	0 9 17 0	6 14 56 45	6 23 52 53	6 22 56 49	10 48	16 51	- 4 48
19	13 49 2	0 5 3 24	3 10 23 49	0 4 50 5	11 13 26 52	1 21 2 25	0 10 31 11	6 14 52 19	6 23 49 42	6 22 56 50	11 9	14 9	- 5 9
20	13 52 58	0 6 1 59	3 22 42 59	0 5 35 8	11 15 3 46	1 21 14 2	0 11 45 21	6 14 47 51	6 23 46 32	6 22 56 5	11 30	10 47	- 5 16
21	13 56 55	0 7 0 33	4 5 20 47	0 6 20 8	11 16 42 21	1 21 25 44	0 12 59 29	6 14 43 22	6 23 43 21	6 22 54 40	11 50	6 51	- 5 9
22	14 0 52	0 7 59 4	4 18 20 31	0 7 5 5	11 18 22 35	1 21 37 30	0 14 13 37	6 14 38 52	6 23 40 10	6 22 52 52	12 11	2 30	- 4 46
23	14 4 48	0 8 57 33	5 1 44 12	0 7 49 59	11 20 4 31	1 21 49 20	0 15 27 43	6 14 34 21	6 23 37 0	6 22 50 58	12 31	- 2 6	- 4 7
24	14 8 45	0 9 56 1	5 15 32 1	0 8 34 50	11 21 48 7	1 22 1 15	0 16 41 48	6 14 29 49	6 23 33 49	6 22 49 19	12 51	- 6 44	- 3 12
25	14 12 41	0 10 54 26	5 29 42 6	0 9 19 38	11 23 33 25	1 22 13 14	0 17 55 51	6 14 25 17	6 23 30 38	6 22 48 7	13 10	-11 9	- 2 5
26	14 16 38	0 11 52 49	6 14 10 30	0 10 4 23	11 25 20 25	1 22 25 17	0 19 9 54	6 14 20 44	6 23 27 27	6 22 47 31	13 30	-15 0	- 0 48
27	14 20 34	0 12 51 11	6 28 51 31	0 10 49 5	11 27 9 7	1 22 37 24	0 20 23 55	6 14 16 10	6 23 24 17	6 22 47 30	13 49	-17 57	0 34
28	14 24 31	0 13 49 30	7 13 38 20	0 11 33 44	11 28 59 32	1 22 49 35	0 21 37 56	6 14 11 37	6 23 21 6	6 22 47 56	14 8	-19 44	1 53
29	14 28 27	0 14 47 49	7 28 24 0	0 12 18 20	0 0 51 40	1 23 1 49	0 22 51 55	6 14 7 3	6 23 17 55	6 22 48 35	14 27	-20 8	3 5
30	14 32 24	0 15 46 5	8 13 2 11	0 13 2 53	0 2 45 32	1 23 14 8	0 24 5 53	6 14 2 30	6 23 14 44	6 22 49 14	14 45	-19 11	4 4

159

1 मई 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 47"

30 14 32 24 0 15 46 5 8 13 2 11 0 13 2 53 0 2 45 32 1 23 14 8 0 24 5 53 6 14 2 30 6 23 14 44 6 22 49 14 14 45 -19 11 4 4

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मई 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 47"

मई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	36	21	0	16	44	20	8	27	27	58	0	13	47	23	0	4	41	6	1	23	26	30	0	25	19	51	6	13	57	57	6	23	11	34	6	22	49	42	15	4	-16	59	4	47
2	14	40	17	0	17	42	34		11	37	57	0	14	31	50	0	6	38	23	1	23	38	56	0	26	33	47	6	13	53	24	6	23	8	23	6	22	49	54	15	22	-13	49	5	11
3	14	44	14	0	18	40	46	9	25	30	27	0	15	16	14	0	8	37	21	1	23	51	25	0	27	47	42	6	13	48	51	6	23	5	12	6	22	49	50	15	39	-9	56	5	17
4	14	48	10	0	19	38	57	10	9	5	4	0	16	0	35	0	10	37	57	1	24	3	58	0	29	1	37	6	13	44	20	6	23	2	1	6	22	49	35	15	57	-5	37	5	5
5	14	52	7	0	20	37	6	10	22	22	20	0	16	44	53	0	12	40	9	1	24	16	34	1	0	15	30	6	13	39	49	6	22	58	51	6	22	49	17	16	14	-1	7	4	36
6	14	56	3	0	21	35	14	11	5	23	23	0	17	29	8	0	14	43	53	1	24	29	13	1	1	29	23	6	13	35	18	6	22	55	40	6	22	49	4	16	31	3	21	3	54
7	15	0	0	0	22	33	20	11	18	9	36	0	18	13	20	0	16	49	4	1	24	41	56	1	2	43	15	6	13	30	49	6	22	52	29	6	22	48	59	16	48	7	36	3	1
8	15	3	56	0	23	31	25	0	0	42	31	0	18	57	29	0	18	55	35	1	24	54	42	1	3	57	5	6	13	26	21	6	22	49	18	6	22	49	2	17	4	11	27	2	0
9	15	7	53	0	24	29	28	0	13	3	37	0	19	41	35	0	21	3	19	1	25	7	31	1	5	10	55	6	13	21	55	6	22	46	8	6	22	49	9	17	20	14	44	0	54
10	15	11	50	0	25	27	30	0	25	14	27	0	20	25	38	0	23	12	7	1	25	20	22	1	6	24	44	6	13	17	30	6	22	42	57	6	22	49	14	17	36	17	20	-0	13
11	15	15	46	0	26	25	31	1	7	16	41	0	21	9	37	0	25	21	47	1	25	33	17	1	7	38	31	6	13	13	6	6	22	39	46	6	22	49	10	17	52	19	8	-1	19
12	15	19	43	0	27	23	29	1	19	12	15	0	21	53	34	0	27	32	7	1	25	46	14	1	8	52	18	6	13	8	45	6	22	36	35	6	22	48	52	18	7	20	3	-2	21
13	15	23	39	0	28	21	26	2	1	3	20	0	22	37	27	0	29	42	53	1	25	59	14	1	10	6	3	6	13	4	25	6	22	33	24	6	22	48	18	18	22	20	4	-3	17
14	15	27	36	0	29	19	22	2	12	52	37	0	23	21	17	1	1	53	51	1	26	12	17	1	11	19	47	6	13	0	8	6	22	30	14	6	22	47	29	18	37	19	12	-4	4
15	15	31	32	1	0	17	15	2	24	43	8	0	24	5	4	1	4	4	44	1	26	25	22	1	12	33	30	6	12	55	52	6	22	27	3	6	22	46	32	18	51	17	30	-4	40
16	15	35	29	1	1	15	7	3	6	38	27	0	24	48	47	1	6	15	15	1	26	38	29	1	13	47	12	6	12	51	39	6	22	23	52	6	22	45	36	19	5	15	2	-5	5
17	15	39	25	1	2	12	57	3	18	42	31	0	25	32	27	1	8	25	7	1	26	51	39	1	15	0	53	6	12	47	28	6	22	20	41	6	22	44	51	19	19	11	55	-5	16
18	15	43	22	1	3	10	45	4	0	59	33	0	26	16	4	1	10	34	3	1	27	4	51	1	16	14	32	6	12	43	20	6	22	17	31	6	22	44	28	19	32	8	14	-5	14
19	15	47	19	1	4	8	32	4	13	33	51	0	26	59	38	1	12	41	46	1	27	18	5	1	17	28	10	6	12	39	15	6	22	14	20	6	22	44	32	19	45	4	7	-4	56
20	15	51	15	1	5	6	17	4	26	29	23	0	27	43	8	1	14	48	2	1	27	31	21	1	18	41	47	6	12	35	12	6	22	11	9	6	22	45	3	19	58	-0	18	-4	24
21	15	55	12	1	6	4	1	5	9	49	20	0	28	26	35	1	16	52	35	1	27	44	40	1	19	55	22	6	12	31	13	6	22	7	58	6	22	45	56	20	10	-4	51	-3	36
22	15	59	8	1	7	1	43	5	23	35	36	0	29	9	59	1	18	55	13	1	27	58	0	1	21	8	57	6	12	27	16	6	22	4	47	6	22	46	57	20	22	-9	18	-2	35
23	16	3	5	1	7	59	23	6	7	48	8	0	29	53	19	1	20	55	43	1	28	11	22	1	22	22	30	6	12	23	23	6	22	1	37	6	22	47	47	20	34	-13	24	-1	22
24	16	7	1	1	8	57	2	6	22	24	25	1	0	36	36	1	22	53	57	1	28	24	45	1	23	36	2	6	12	19	33	6	21	58	26	6	22	48	8	20	45	-16	47	-0	2
25	16	10	58	1	9	54	40	7	7	19	14	1	1	19	50	1	24	49	45	1	28	38	11	1	24	49	33	6	12	15	46	6	21	55	15	6	22	47	45	20	56	-19	8	1	19
26	16	14	54	1	10	52	16	7	22	25	0	1	2	3	1	1	26	43	0	1	28	51	38	1	26	3	2	6	12	12	2	6	21	52	4	6	22	46	33	21	7	-20	9	2	36
27	16	18	51	1	11	49	51	8	7	32	36	1	2	46	9	1	28	33	37	1	29	5	6	1	27	16	31	6	12	8	23	6	21	48	54	6	22	44	37	21	17	-19	43	3	43
28	16	22	48	1	12	47	26	8	22	32	46	1	3	29	13	2	0	21	30	1	29	18	37	1	28	29	59	6	12	4	46	6	21	45	43	6	22	42	13	21	27	-17	54	4	33
29	16	26	44	1	13	44	59	9	7	17	29	1	4	12	15	2	2	6	36	1	29	32	8	1	29	43	25	6	12	1	14	6	21	42	32	6	22	39	45	21	36	-14	55	5	4
30	16	30	41	1	14	42	31	9	21	40	56	1	4	55	13	2	3	48	52	1	29	45	41	2	0	56	51	6	11	57	46	6	21	39	21	6	22	37	40	21	46	-11	6	5	15
31	16	34	37	1	15	40	3	10	5	40	3	1	5	38	9	2	5	28	16	1	29	59	16	2	2	10	15	6	11	54	21	6	21	36	10	6	22	36	22	21	54	-6	46	5	7

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 51"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	38	34	1	16	37	33	10	19	14	16	1	6	21	1	2	7	4	44	2	0	12	52	2	3	23	39	6	11	51	1	6	21	33	0	6	22	36	1	22	3	-2	14	4	42
2	16	42	30	1	17	35	3	11	2	24	58	1	7	3	50	2	8	38	16	2	0	26	29	2	4	37	2	6	11	47	44	6	21	29	49	6	22	36	39	22	11	2	18	4	2
3	16	46	27	1	18	32	33	11	15	14	49	1	7	46	36	2	10	8	49	2	0	40	7	2	5	50	23	6	11	44	32	6	21	26	38	6	22	37	59	22	18	6	37	3	12
4	16	50	23	1	19	30	1	11	27	47	6	1	8	29	19	2	11	36	22	2	0	53	46	2	7	3	44	6	11	41	24	6	21	23	27	6	22	39	37	22	25	10	33	2	13
5	16	54	20	1	20	27	29	0	10	5	16	1	9	11	59	2	13	0	53	2	1	7	26	2	8	17	4	6	11	38	21	6	21	20	16	6	22	41	0	22	32	13	58	1	9
6	16	58	17	1	21	24	56	0	22	12	34	1	9	54	36	2	14	22	19	2	1	21	7	2	9	30	23	6	11	35	22	6	21	17	6	6	22	41	36	22	39	16	44	0	3
7	17	2	13	1	22	22	22	1	4	11	54	1	10	37	10	2	15	40	38	2	1	34	49	2	10	43	41	6	11	32	28	6	21	13	55	6	22	40	59	22	45	18	45	-1	3
8	17	6	10	1	23	19	48	1	16	5	48	1	11	19	40	2	16	55	47	2	1	48	32	2	11	56	58	6	11	29	39	6	21	10	44	6	22	38	54	22	50	19	55	-2	5
9	17	10	6	1	24	17	13	1	27	56	29	1	12	2	8	2	18	7	43	2	2	2	15	2	13	10	14	6	11	26	54	6	21	7	33	6	22	35	18	22	55	20	11	-3	1
10	17	14	3	1	25	14	37	2	9	45	57	1	12	44	32	2	19	16	24	2	2	15	59	2	14	23	28	6	11	24	14	6	21	4	22	6	22	30	23	23	0	19	34	-3	49
11	17	17	59	1	26	12	0	2	21	36	10	1	13	26	53	2	20	21	44	2	2	29	44	2	15	36	42	6	11	21	39	6	21	1	12	6	22	24	33	23	5	18	5	-4	28
12	17	21	56	1	27	9	22	3	3	29	14	1	14	9	10	2	21	23	41	2	2	43	29	2	16	49	54	6	11	19	9	6	20	58	1	6	22	18	23	23	9	15	50	-4	55
13	17	25	52	1	28	6	43	3	15	27	31	1	14	51	25	2	22	22	9	2	2	57	14	2	18	3	6	6	11	16	45	6	20	54	50	6	22	12	30	23	12	12	54	-5	9
14	17	29	49	1	29	4	3	3	27	33	48	1	15	33	36	2	23	17	3	2	3	11	0	2	19	16	16	6	11	14	25	6	20	51	39	6	22	7	32	23	15	9	25	-5	10
15	17	33	46	2	0	1	23	4	9	51	18	1	16	15	44	2	24	8	19	2	3	24	46	2	20	29	24	6	11	12	11	6	20	48	28	6	22	3	57	23	18	5	28	-4	56
16	17	37	42	2	0	58	41	4	22	23	37	1	16	57	49	2	24	55	50	2	3	38	32	2	21	42	31	6	11	10	2	6	20	45	18	6	22	1	59	23	21	1	13	-4	29
17	17	41	39	2	1	55	59	5	5	14	33	1	17	39	50	2	25	39	31	2	3	52	18	2	22	55	37	6	11	7	58	6	20	42	7	6	22	1	34	23	22	-3	11	-3	47
18	17	45	35	2	2	53	16	5	18	27	43	1	18	21	48	2	26	19	15	2	4	6	5	2	24	8	42	6	11	5	59	6	20	38	56	6	22	2	19	23	24	-7	35	-2	52
19	17	49	32	2	3	50	32	6	2	6	2	1	19	3	43	2	26	54	56	2	4	19	51	2	25	21	45	6	11	4	6	6	20	35	45	6	22	3	32	23	25	-11	45	-1	46
20	17	53	28	2	4	47	47	6	16	11	6	1	19	45	35	2	27	26	28	2	4	33	37	2	26	34	47	6	11	2	19	6	20	32	34	6	22	4	25	23	26	-15	24	-0	32
21	17	57	25	2	5	45	1	7	0	42	22	1	20	27	23	2	27	53	43	2	4	47	23	2	27	47	47	6	11	0	36	6	20	29	24	6	22	4	11	23	26	-18	12	0	47
22	18	1	21	2	6	42	15	7	15	36	22	1	21	9	8	2	28	16	38	2	5	1	8	2	29	0	45	6	10	59	0	6	20	26	13	6	22	2	14	23	26	-19	51	2	4
23	18	5	18	2	7	39	29	8	0	46	29	1	21	50	50	2	28	35	6	2	5	14	54	3	0	13	43	6	10	57	29	6	20	23	2	6	21	58	22	23	25	-20	7	3	14
24	18	9	15	2	8	36	42	8	16	3	25	1	22	32	30	2	28	49	3	2	5	28	39	3	1	26	39	6	10	56	3	6	20	19	51	6	21	52	48	23	25	-18	54	4	10
25	18	13	11	2	9	33	54	9	1	16	30	1	23	14	6	2	28	58	26	2	5	42	23	3	2	39	33	6	10	54	43	6	20	16	40	6	21	46	8	23	23	-16	20	4	48
26	18	17	8	2	10	31	7	9	16	15	26	1	23	55	39	2	29	3	14	2	5	56	7	3	3	52	27	6	10	53	29	6	20	13	30	6	21	39	14	23	21	-12	44	5	6
27	18	21	4	2	11	28	19	10	0	52	1	1	24	37	9	2	29	3	26	2	6	9	51	3	5	5	18	6	10	52	20	6	20	10	19	6	21	33	2	23	19	-8	26	5	4
28	18	25	1	2	12	25	31	10	15	1	11	1	25	18	36	2	28	59	4	2	6	23	34	3	6	18	9	6	10	51	17	6	20	7	8	6	21	28	15	23	17	-3	48	4	42
29	18	28	57	2	13	22	44	10	28	41	15	1	26	0	0	2	28	50	13	2	6	37	17	3	7	30	58	6	10	50	20	6	20	3	57	6	21	25	19	23	14	0	53	4	5
30	18	32	54	2	14	19	56	11	11	53	23	1	26	41	21	2	28	37	0	2	6	50	58	3	8	43	46	6	10	49	29	6	20	0	46	6	21	24	15	23	10	5	22	3	16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2013 ई. को अयनांश 24° 2' 56"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	18 36 50	2 15 17 8	11 24 40 45	1 27 22 39	2 28 19 36	2 7 4 39	3 9 56 33	6 10 48 43	6 19 57 35	6 21 24 34	23 6	9 29	2 19
2	18 40 47	2 16 14 21	0 7 7 38	1 28 3 54	2 27 58 13	2 7 18 20	3 11 9 18	6 10 48 3	6 19 54 25	6 21 25 33	23 2	13 4	1 16
3	18 44 44	2 17 11 34	0 19 18 43	1 28 45 7	2 27 33 9	2 7 31 59	3 12 22 2	6 10 47 29	6 19 51 14	6 21 26 14	22 58	16 2	0 11
4	18 48 40	2 18 8 47	1 1 18 35	1 29 26 16	2 27 4 45	2 7 45 37	3 13 34 45	6 10 47 1	6 19 48 3	6 21 25 44	22 53	18 15	-0 53
5	18 52 37	2 19 6 0	1 13 11 25	2 0 7 22	2 26 33 25	2 7 59 15	3 14 47 26	6 10 46 39	6 19 44 52	6 21 23 18	22 47	19 39	-1 54
6	18 56 33	2 20 3 14	1 25 0 47	2 0 48 26	2 25 59 38	2 8 12 51	3 16 0 6	6 10 46 23	6 19 41 41	6 21 18 28	22 41	20 10	-2 50
7	19 0 30	2 21 0 27	2 6 49 36	2 1 29 26	2 25 23 54	2 8 26 26	3 17 12 45	6 10 46 12	6 19 38 31	6 21 11 9	22 35	19 48	-3 38
8	19 4 26	2 21 57 41	2 18 40 8	2 2 10 23	2 24 46 49	2 8 40 0	3 18 25 22	6 10 46 8	6 19 35 20	6 21 1 41	22 29	18 34	-4 17
9	19 8 23	2 22 54 55	3 0 34 13	2 2 51 18	2 24 9 0	2 8 53 32	3 19 37 58	6 10 46 9	6 19 32 9	6 20 50 40	22 22	16 32	-4 45
10	19 12 19	2 23 52 9	3 12 33 21	2 3 32 9	2 23 31 4	2 9 7 3	3 20 50 32	6 10 46 17	6 19 28 58	6 20 39 2	22 14	13 46	-5 0
11	19 16 16	2 24 49 23	3 24 38 57	2 4 12 57	2 22 53 41	2 9 20 32	3 22 3 4	6 10 46 30	6 19 25 47	6 20 27 46	22 6	10 25	-5 2
12	19 20 13	2 25 46 37	4 6 52 36	2 4 53 42	2 22 17 30	2 9 34 0	3 23 15 35	6 10 46 49	6 19 22 37	6 20 17 53	21 58	6 37	-4 51
13	19 24 9	2 26 43 51	4 19 16 14	2 5 34 24	2 21 43 10	2 9 47 26	3 24 28 3	6 10 47 15	6 19 19 26	6 20 10 9	21 50	2 28	-4 25
14	19 28 6	2 27 41 5	5 1 52 16	2 6 15 3	2 21 11 18	2 10 0 51	3 25 40 30	6 10 47 46	6 19 16 15	6 20 4 59	21 41	-1 51	-3 47
15	19 32 2	2 28 38 19	5 14 43 33	2 6 55 38	2 20 42 27	2 10 14 13	3 26 52 55	6 10 48 23	6 19 13 4	6 20 2 19	21 32	-6 10	-2 56
16	19 35 59	2 29 35 33	5 27 53 10	2 7 36 11	2 20 17 10	2 10 27 34	3 28 5 18	6 10 49 6	6 19 9 54	6 20 1 35	21 22	-10 19	-1 55
17	19 39 55	3 0 32 47	6 11 24 6	2 8 16 40	2 19 55 55	2 10 40 53	3 29 17 39	6 10 49 55	6 19 6 43	6 20 1 50	21 12	-14 3	-0 46
18	19 43 52	3 1 30 1	6 25 18 39	2 8 57 7	2 19 39 8	2 10 54 9	4 0 29 58	6 10 50 50	6 19 3 32	6 20 1 53	21 2	-17 7	0 28
19	19 47 48	3 2 27 16	7 9 37 34	2 9 37 30	2 19 27 11	2 11 7 24	4 1 42 15	6 10 51 50	6 19 0 21	6 20 0 34	20 51	-19 13	1 42
20	19 51 45	3 3 24 30	7 24 19 15	2 10 17 50	2 19 20 21	2 11 20 36	4 2 54 30	6 10 52 57	6 18 57 10	6 19 57 2	20 40	-20 5	2 51
21	19 55 42	3 4 21 45	8 9 19 3	2 10 58 8	2 19 18 54	2 11 33 46	4 4 6 42	6 10 54 9	6 18 54 0	6 19 50 57	20 29	-19 34	3 50
22	19 59 38	3 5 19 0	8 24 29 16	2 11 38 22	2 19 23 1	2 11 46 54	4 5 18 53	6 10 55 27	6 18 50 49	6 19 42 31	20 17	-17 39	4 33
23	20 3 35	3 6 16 16	9 9 39 56	2 12 18 33	2 19 32 50	2 12 0 0	4 6 31 1	6 10 56 51	6 18 47 38	6 19 32 29	20 5	-14 30	4 57
24	20 7 31	3 7 13 33	9 24 40 30	2 12 58 42	2 19 48 29	2 12 13 3	4 7 43 7	6 10 58 20	6 18 44 27	6 19 22 0	19 52	-10 27	5 0
25	20 11 28	3 8 10 50	10 9 21 35	2 13 38 48	2 20 10 0	2 12 26 4	4 8 55 10	6 10 59 55	6 18 41 16	6 19 12 15	19 40	-5 51	4 43
26	20 15 24	3 9 8 7	10 23 36 36	2 14 18 51	2 20 37 27	2 12 39 2	4 10 7 12	6 11 1 36	6 18 38 6	6 19 4 15	19 27	-1 3	4 9
27	20 19 21	3 10 5 26	11 7 22 19	2 14 58 51	2 21 10 48	2 12 51 58	4 11 19 11	6 11 3 23	6 18 34 55	6 18 58 37	19 13	3 38	3 21
28	20 23 17	3 11 2 46	11 20 38 48	2 15 38 48	2 21 50 4	2 13 4 51	4 12 31 8	6 11 5 15	6 18 31 44	6 18 55 23	18 59	8 0	2 24
29	20 27 14	3 12 0 6	0 3 28 41	2 16 18 42	2 22 35 12	2 13 17 41	4 13 43 4	6 11 7 13	6 18 28 33	6 18 54 7	18 45	11 51	1 21
30	20 31 11	3 12 57 28	0 15 56 12	2 16 58 34	2 23 26 9	2 13 30 29	4 14 54 56	6 11 9 16	6 18 25 23	6 18 53 57	18 31	15 3	0 16
31	20 35 7	3 13 54 50	0 28 6 24	2 17 38 23	2 24 22 49	2 13 43 13	4 16 6 47	6 11 11 26	6 18 22 12	6 18 53 46	18 16	17 31	-0 49

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 1"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 39 4	3 14 52 14	1 10 4 34	2 18 18 9	2 25 25 6	2 13 55 55	4 17 18 36	6 11 13 40	6 18 19 1	6 18 52 28	18 1	19 10	-1 50
2	20 43 0	3 15 49 39	1 21 55 46	2 18 57 53	2 26 32 55	2 14 8 33	4 18 30 22	6 11 16 0	6 18 15 50	6 18 49 8	17 46	19 58	-2 45
3	20 46 57	3 16 47 5	2 3 44 28	2 19 37 33	2 27 46 5	2 14 21 9	4 19 42 6	6 11 18 26	6 18 12 40	6 18 43 12	17 31	19 52	-3 33
4	20 50 53	3 17 44 32	2 15 34 27	2 20 17 11	2 29 4 28	2 14 33 41	4 20 53 48	6 11 20 57	6 18 9 29	6 18 34 31	17 15	18 54	-4 12
5	20 54 50	3 18 42 0	2 27 28 39	2 20 56 45	3 0 27 53	2 14 46 10	4 22 5 27	6 11 23 34	6 18 6 18	6 18 23 21	16 59	17 6	-4 40
6	20 58 46	3 19 39 30	3 9 29 14	2 21 36 17	3 1 56 6	2 14 58 35	4 23 17 4	6 11 26 16	6 18 3 7	6 18 10 26	16 42	14 33	-4 56
7	21 2 43	3 20 37 0	3 21 37 41	2 22 15 46	3 3 28 54	2 15 10 57	4 24 28 38	6 11 29 4	6 17 59 56	6 17 56 43	16 26	11 22	-4 59
8	21 6 40	3 21 34 31	4 3 54 55	2 22 55 12	3 5 6 1	2 15 23 15	4 25 40 10	6 11 31 57	6 17 56 46	6 17 43 23	16 9	7 40	-4 48
9	21 10 36	3 22 32 4	4 16 21 37	2 23 34 35	3 6 47 9	2 15 35 30	4 26 51 40	6 11 34 55	6 17 53 35	6 17 31 34	15 52	3 36	-4 23
10	21 14 33	3 23 29 37	4 28 58 24	2 24 13 56	3 8 31 58	2 15 47 41	4 28 3 6	6 11 37 58	6 17 50 24	6 17 22 8	15 34	-0 41	-3 45
11	21 18 29	3 24 27 11	5 11 46 13	2 24 53 13	3 10 20 8	2 15 59 47	4 29 14 30	6 11 41 7	6 17 47 13	6 17 15 36	15 17	-5 0	-2 55
12	21 22 26	3 25 24 46	5 24 46 24	2 25 32 27	3 12 11 16	2 16 11 50	5 0 25 51	6 11 44 21	6 17 44 3	6 17 11 57	14 59	-9 9	-1 56
13	21 26 22	3 26 22 22	6 8 0 45	2 26 11 38	3 14 4 59	2 16 23 49	5 1 37 8	6 11 47 40	6 17 40 52	6 17 10 37	14 41	-12 57	-0 48
14	21 30 19	3 27 19 59	6 21 31 14	2 26 50 46	3 16 0 54	2 16 35 44	5 2 48 23	6 11 51 4	6 17 37 41	6 17 10 35	14 22	-16 8	0 23
15	21 34 15	3 28 17 37	7 5 19 39	2 27 29 51	3 17 58 38	2 16 47 34	5 3 59 34	6 11 54 33	6 17 34 30	6 17 10 34	14 4	-18 28	1 35
16	21 38 12	3 29 15 15	7 19 26 55	2 28 8 53	3 19 57 47	2 16 59 21	5 5 10 43	6 11 58 7	6 17 31 20	6 17 9 22	13 45	-19 44	2 42
17	21 42 9	4 0 12 55	8 3 52 24	2 28 47 52	3 21 57 59	2 17 11 3	5 6 21 47	6 12 1 46	6 17 28 9	6 17 6 2	13 26	-19 45	3 41
18	21 46 5	4 1 10 36	8 18 33 14	2 29 26 49	3 23 58 54	2 17 22 40	5 7 32 49	6 12 5 30	6 17 24 58	6 17 0 7	13 7	-18 26	4 26
19	21 50 2	4 2 8 18	9 3 24 2	3 0 5 42	3 26 0 13	2 17 34 13	5 8 43 47	6 12 9 19	6 17 21 47	6 16 51 48	12 47	-15 52	4 53
20	21 53 58	4 3 6 1	9 18 17 13	3 0 44 33	3 28 1 39	2 17 45 41	5 9 54 41	6 12 13 12	6 17 18 37	6 16 41 49	12 28	-12 16	5 1
21	21 57 55	4 4 3 45	10 3 4 1	3 1 23 20	4 0 2 56	2 17 57 5	5 11 5 32	6 12 17 10	6 17 15 26	6 16 31 16	12 8	-7 56	4 49
22	22 1 51	4 5 1 31	10 17 35 59	3 2 2 5	4 2 3 51	2 18 8 24	5 12 16 20	6 12 21 13	6 17 12 15	6 16 21 20	11 48	-3 12	4 18
23	22 5 48	4 5 59 18	11 1 46 20	3 2 40 47	4 4 13	2 18 19 38	5 13 27 4	6 12 25 21	6 17 9 5	6 16 13 5	11 27	1 35	3 32
24	22 9 44	4 6 57 7	11 15 30 59	3 3 19 27	4 6 3 52	2 18 30 47	5 14 37 44	6 12 29 33	6 17 5 54	6 16 7 10	11 7	6 10	2 35
25	22 13 41	4 7 54 57	11 28 48 45	3 3 58 3	4 8 2 41	2 18 41 51	5 15 48 21	6 12 33 49	6 17 2 43	6 16 3 43	10 46	10 17	1 30
26	22 17 38	4 8 52 49	0 11 40 59	3 4 36 37	4 10 0 32	2 18 52 50	5 16 58 54	6 12 38 10	6 16 59 32	6 16 2 24	10 26	13 48	0 23
27	22 21 34	4 9 50 43	0 24 11 0	3 5 15 8	4 11 57 21	2 19 3 44	5 18 9 23	6 12 42 36	6 16 56 22	6 16 2 26	10 5	16 34	-0 43
28	22 25 31	4 10 48 38	1 6 23 17	3 5 53 36	4 13 53 3	2 19 14 33	5 19 19 49	6 12 47 6	6 16 53 11	6 16 2 51	9 44	18 30	-1 46
29	22 29 27	4 11 46 36	1 18 23 1	3 6 32 2	4 15 47 37	2 19 25 16	5 20 30 10	6 12 51 40	6 16 50 0	6 16 2 37	9 22	19 35	-2 44
30	22 33 24	4 12 44 35	2 0 15 27	3 7 10 25	4 17 40 58	2 19 35 54	5 21 40 29	6 12 56 19	6 16 46 49	6 16 0 52	9 1	19 46	-3 33
31	22 37 20	4 13 42 36	2 12 5 39	3 7 48 45	4 19 33 7	2 19 46 26	5 22 50 43	6 13 1 2	6 16 43 39	6 15 57 2	8 39	19 5	-4 13

163
... 1 सितंबर 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 5"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 5''

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	22	41	17	4	14	40	39	2	23	58	10	3	8	27	2	4	21	24	2	2	19	56	52
2	22	45	13	4	15	38	44	3	5	56	45	3	9	5	16	4	23	13	42	2	20	7	13
3	22	49	10	4	16	36	50	3	18	4	23	3	9	43	27	4	25	2	8	2	20	17	27
4	22	53	7	4	17	34	59	4	0	23	3	3	10	21	36	4	26	49	19	2	20	27	36
5	22	57	3	4	18	33	9	4	12	53	53	3	10	59	41	4	28	35	17	2	20	37	38
6	23	1	0	4	19	31	21	4	25	37	14	3	11	37	43	5	0	20	3	2	20	47	34
7	23	4	56	4	20	29	35	5	8	32	51	3	12	15	43	5	2	3	36	2	20	57	24
8	23	8	53	4	21	27	50	5	21	40	12	3	12	53	39	5	3	45	58	2	21	7	7
9	23	12	49	4	22	26	7	6	4	58	53	3	13	31	32	5	5	27	10	2	21	16	44
10	23	16	46	4	23	24	25	6	18	28	38	3	14	9	22	5	7	7	12	2	21	26	14
11	23	20	42	4	24	22	45	7	2	9	33	3	14	47	9	5	8	46	6	2	21	35	37
12	23	24	39	4	25	21	7	7	16	1	46	3	15	24	53	5	10	23	53	2	21	44	53
13	23	28	36	4	26	19	30	8	0	5	7	3	16	2	34	5	12	0	33	2	21	54	3
14	23	32	32	4	27	17	55	8	14	18	47	3	16	40	12	5	13	36	7	2	22	3	5
15	23	36	29	4	28	16	21	8	28	40	45	3	17	17	46	5	15	10	36	2	22	12	0
16	23	40	25	4	29	14	49	9	13	7	38	3	17	55	18	5	16	44	0	2	22	20	48
17	23	44	22	5	0	13	18	9	27	34	39	3	18	32	46	5	18	16	20	2	22	29	28
18	23	48	18	5	1	11	49	10	11	56	5	3	19	10	11	5	19	47	36	2	22	38	1
19	23	52	15	5	2	10	22	10	26	6	4	3	19	47	33	5	21	17	48	2	22	46	27
20	23	56	11	5	3	8	57	11	9	59	30	3	20	24	53	5	22	46	56	2	22	54	44
21	0	0	8	5	4	7	34	11	23	32	46	3	21	2	9	5	24	14	59	2	23	2	54
22	0	4	5	5	5	6	13	0	6	44	9	3	21	39	22	5	25	41	58	2	23	10	56
23	0	8	1	5	6	4	54	0	19	33	55	3	22	16	32	5	27	7	52	2	23	18	51
24	0	11	58	5	7	3	37	1	2	3	59	3	22	53	39	5	28	32	39	2	23	26	37
25	0	15	54	5	8	2	22	1	14	17	40	3	23	30	43	5	29	56	18	2	23	34	14
26	0	19	51	5	9	1	9	1	26	19	11	3	24	7	44	6	1	18	49	2	23	41	44
27	0	23	47	5	9	59	59	2	8	13	17	3	24	44	42	6	2	40	8	2	23	49	5
28	0	27	44	5	10	58	51	2	20	4	57	3	25	21	37	6	4	0	14	2	23	56	18
29	0	31	40	5	11	57	45	3	1	59	4	3	25	58	28	6	5	19	5	2	24	3	22
30	0	35	37	5	12	56	42	3	14	0	8	3	26	35	17	6	6	36	35	2	24	10	17

सितंबर	शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	5	24	0	54	6	13	5	49	6	16	40	28	6	15	50	52	8	18	17	33	-4	43
2	5	25	11	1	6	13	10	41	6	16	37	17	6	15	42	36	7	56	15	16	-5	0
3	5	26	21	3	6	13	15	36	6	16	34	7	6	15	32	44	7	34	12	17	-5	4
4	5	27	31	2	6	13	20	36	6	16	30	56	6	15	22	6	7	12	8	45	-4	54
5	5	28	40	57	6	13	25	39	6	16	27	45	6	15	11	41	6	50	4	47	-4	30
6	5	29	50	47	6	13	30	47	6	16	24	34	6	15	2	26	6	27	0	32	-3	52
7	6	1	0	33	6	13	35	58	6	16	21	24	6	14	55	9	6	5	-3	49	-3	2
8	6	2	10	14	6	13	41	13	6	16	18	13	6	14	50	16	5	43	-8	3	-2	1
9	6	3	19	51	6	13	46	32	6	16	15	2	6	14	47	49	5	20	-11	57	-0	53
10	6	4	29	22	6	13	51	55	6	16	11	52	6	14	47	24	4	57	-15	17	0	20
11	6	5	38	49	6	13	57	21	6	16	8	41	6	14	48	11	4	34	-17	48	1	32
12	6	6	48	11	6	14	2	51	6	16	5	30	6	14	49	12	4	12	-19	19	2	40
13	6	7	57	27	6	14	8	25	6	16	2	19	6	14	49	26	3	49	-19	39	3	39
14	6	9	6	38	6	14	14	1	6	15	59	9	6	14	48	7	3	26	-18	45	4	26
15	6	10	15	43	6	14	19	42	6	15	55	58	6	14	44	53	3	3	-16	39	4	56
16	6	11	24	42	6	14	25	25	6	15	52	47	6	14	39	49	2	40	-13	30	5	8
17	6	12	33	35	6	14	31	12	6	15	49	37	6	14	33	26	2	16	-9	33	5	0
18	6	13	42	23	6	14	37	2	6	15	46	26	6	14	26	33	1	53	-5	4	4	34
19	6	14	51	4	6	14	42	55	6	15	43	15	6	14	20	3	1	30	-0	22	3	51
20	6	15	59	39	6	14	48	52	6	15	40	4	6	14	14	43	1	7	4	17	2	55
21	6	17	8	7	6	14	54	51	6	15	36	54	6	14	11	5	0	43	8	36	1	50
22	6	18	16	29	6	15	0	53	6	15	33	43	6	14	9	13	0	20	12	22	0	40
23	6	19	24	44	6	15	6	58	6	15	30	32	6	14	9	10	-0	3	15	27	-0	29
24	6	20	32	53	6	15	13	6	6	15	27	22	6	14	10	13	-0	27	17	43	-1	36
25	6	21	40	55	6	15	19	17	6	15	24	11	6	14	11	49	-0	50	19	7	-2	37
26	6	22	48	49	6	15	25	31	6	15	21	0	6	14	13	15	-1	13	19	36	-3	30
27	6	23	56	37	6	15	31	47	6	15	17	49	6	14	13	56	-1	37	19	12	-4	13
28	6	25	4	18	6	15	38	6	6	15	14	39	6	14	13	27	-2	0	17	57	-4	45
29	6	26	11	51	6	15	44	28	6	15	11	28	6	14	11	36	-2	23	15	56	-5	5
30	6	27	19	16	6	15	50	52	6	15	8	17	6	14	8	27	-2	47	13	13	-5	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 7"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 39 34	5 13 55 41	3 26 12 5	3 27 12 2	6 7 52 43	2 24 17 3	6 28 26 34	6 15 57 19	6 15 5 7	6 14 4 16	-3 10	9 54	-5 6
2	0 43 30	5 14 54 42	4 8 38 0	3 27 48 43	6 9 7 22	2 24 23 40	6 29 33 44	6 16 3 48	6 15 1 56	6 13 59 32	-3 33	6 5	-4 44
3	0 47 27	5 15 53 45	4 21 19 56	3 28 25 22	6 10 20 29	2 24 30 8	7 0 40 46	6 16 10 19	6 14 58 45	6 13 54 47	-3 56	1 56	-4 9
4	0 51 23	5 16 52 51	5 4 18 47	3 29 1 57	6 11 31 56	2 24 36 26	7 1 47 40	6 16 16 53	6 14 55 34	6 13 50 35	-4 20	-2 24	-3 20
5	0 55 20	5 17 51 58	5 17 34 15	3 29 38 28	6 12 41 38	2 24 42 35	7 2 54 24	6 16 23 29	6 14 52 24	6 13 47 24	-4 43	-6 44	-2 19
6	0 59 16	5 18 51 8	6 1 5 4	4 0 14 56	6 13 49 26	2 24 48 35	7 4 1 0	6 16 30 7	6 14 49 13	6 13 45 29	-5 6	-10 48	-1 9
7	1 3 13	5 19 50 19	6 14 49 6	4 0 51 20	6 14 55 11	2 24 54 25	7 5 7 27	6 16 36 47	6 14 46 2	6 13 44 52	-5 29	-14 22	0 6
8	1 7 9	5 20 49 32	6 28 43 51	4 1 27 40	6 15 58 44	2 25 0 6	7 6 13 43	6 16 43 29	6 14 42 51	6 13 45 20	-5 52	-17 9	1 22
9	1 11 6	5 21 48 48	7 12 46 39	4 2 3 57	6 16 59 54	2 25 5 36	7 7 19 50	6 16 50 13	6 14 39 41	6 13 46 28	-6 15	-18 56	2 33
10	1 15 3	5 22 48 5	7 26 54 57	4 2 40 10	6 17 58 28	2 25 10 57	7 8 25 47	6 16 56 59	6 14 36 30	6 13 47 46	-6 37	-19 32	3 36
11	1 18 59	5 23 47 24	8 11 6 21	4 3 16 20	6 18 54 11	2 25 16 7	7 9 31 33	6 17 3 47	6 14 33 19	6 13 48 46	-7 0	-18 55	4 26
12	1 22 56	5 24 46 44	8 25 18 38	4 3 52 25	6 19 46 48	2 25 21 7	7 10 37 7	6 17 10 36	6 14 30 9	6 13 49 5	-7 23	-17 6	4 59
13	1 26 52	5 25 46 7	9 9 29 37	4 4 28 27	6 20 36 0	2 25 25 58	7 11 42 30	6 17 17 27	6 14 26 58	6 13 48 33	-7 45	-14 15	5 15
14	1 30 49	5 26 45 31	9 23 37 3	4 5 4 25	6 21 21 29	2 25 30 38	7 12 47 41	6 17 24 20	6 14 23 47	6 13 47 15	-8 7	-10 36	5 11
15	1 34 45	5 27 44 56	10 7 38 31	4 5 40 20	6 22 2 51	2 25 35 7	7 13 52 40	6 17 31 14	6 14 20 36	6 13 45 24	-8 30	-6 22	4 49
16	1 38 42	5 28 44 24	10 21 31 24	4 6 16 10	6 22 39 44	2 25 39 26	7 14 57 25	6 17 38 10	6 14 17 26	6 13 43 21	-8 52	-1 51	4 10
17	1 42 38	5 29 43 54	11 5 13 7	4 6 51 57	6 23 11 39	2 25 43 35	7 16 1 58	6 17 45 7	6 14 14 15	6 13 41 27	-9 14	2 43	3 17
18	1 46 35	6 0 43 25	11 18 41 22	4 7 27 40	6 23 38 9	2 25 47 33	7 17 6 17	6 17 52 5	6 14 11 4	6 13 40 0	-9 36	7 5	2 14
19	1 50 32	6 1 42 58	0 1 54 20	4 8 3 19	6 23 58 43	2 25 51 20	7 18 10 21	6 17 59 5	6 14 7 53	6 13 39 9	-9 57	11 2	1 5
20	1 54 28	6 2 42 33	0 14 51 2	4 8 38 54	6 24 12 48	2 25 54 57	7 19 14 12	6 18 6 6	6 14 4 43	6 13 38 57	-10 19	14 22	-0 7
21	1 58 25	6 3 42 11	0 27 31 26	4 9 14 25	6 24 19 52	2 25 58 22	7 20 17 47	6 18 13 8	6 14 1 32	6 13 39 17	-10 40	16 56	-1 16
22	2 2 21	6 4 41 50	1 9 56 31	4 9 49 53	6 24 19 22	2 26 1 37	7 21 21 6	6 18 20 11	6 13 58 21	6 13 39 59	-11 2	18 38	-2 21
23	2 6 18	6 5 41 32	1 22 8 16	4 10 25 16	6 24 10 45	2 26 4 40	7 22 24 10	6 18 27 16	6 13 55 11	6 13 40 50	-11 23	19 27	-3 18
24	2 10 14	6 6 41 15	2 4 9 35	4 11 0 36	6 23 53 35	2 26 7 33	7 23 26 58	6 18 34 21	6 13 52 0	6 13 41 38	-11 44	19 21	-4 5
25	2 14 11	6 7 41 1	2 16 4 4	4 11 35 51	6 23 27 31	2 26 10 14	7 24 29 28	6 18 41 27	6 13 48 49	6 13 42 15	-12 5	18 23	-4 41
26	2 18 7	6 8 40 49	2 27 55 55	4 12 11 3	6 22 52 23	2 26 12 43	7 25 31 41	6 18 48 34	6 13 45 38	6 13 42 36	-12 25	16 37	-5 5
27	2 22 4	6 9 40 40	3 9 49 40	4 12 46 10	6 22 8 13	2 26 15 2	7 26 33 37	6 18 55 42	6 13 42 28	6 13 42 43	-12 46	14 9	-5 17
28	2 26 1	6 10 40 32	3 21 50 0	4 13 21 13	6 21 15 21	2 26 17 9	7 27 35 13	6 19 2 51	6 13 39 17	6 13 42 39	-13 6	11 4	-5 14
29	2 29 57	6 11 40 27	4 4 1 33	4 13 56 12	6 20 14 31	2 26 19 4	7 28 36 31	6 19 10 0	6 13 36 6	6 13 42 31	-13 26	7 29	-4 58
30	2 33 54	6 12 40 24	4 16 28 31	4 14 31 6	6 19 6 47	2 26 20 47	7 29 37 29	6 19 17 10	6 13 32 55	6 13 42 24	-13 46	3 30	-4 27
31	2 37 50	6 13 40 23	4 29 14 22	4 15 5 56	6 17 53 41	2 26 22 19	8 0 38 7	6 19 24 20	6 13 29 45	6 13 42 24	-14 5	[illegible]	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 10"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 10"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	2 41 47	6 14 40 24	5 12 21 26	4 15 40 41	6 16 37 7	2 26 23 39	8 1 38 23	6 19 31 31	6 13 26 34	6 13 42 32	-14 24	-5 5	-2 45
2	2 45 43	6 15 40 28	5 25 50 35	4 16 15 22	6 15 19 17	2 26 24 47	8 2 38 17	6 19 38 42	6 13 23 23	6 13 42 44	-14 44	-9 17	-1 38
3	2 49 40	6 16 40 33	6 9 40 58	4 16 49 58	6 14 2 35	2 26 25 44	8 3 37 48	6 19 45 54	6 13 20 12	6 13 42 54	-15 2	-13 7	-0 22
4	2 53 36	6 17 40 40	6 23 49 54	4 17 24 29	6 12 49 28	2 26 26 28	8 4 36 56	6 19 53 6	6 13 17 2	6 13 42 55	-15 21	-16 16	0 56
5	2 57 33	6 18 40 49	7 8 13 4	4 17 58 54	6 11 42 15	2 26 27 0	8 5 35 39	6 20 0 18	6 13 13 51	6 13 42 40	-15 39	-18 27	2 12
6	3 1 30	6 19 40 59	7 22 44 59	4 18 33 15	6 10 42 57	2 26 27 21	8 6 33 56	6 20 7 30	6 13 10 40	6 13 42 7	-15 58	-19 28	3 20
7	3 5 26	6 20 41 11	8 7 19 37	4 19 7 31	6 9 53 12	2 26 27 29	8 7 31 46	6 20 14 42	6 13 7 29	6 13 41 19	-16 15	-19 10	4 15
8	3 9 23	6 21 41 25	8 21 51 14	4 19 41 42	6 9 14 12	2 26 27 25	8 8 29 8	6 20 21 54	6 13 4 19	6 13 40 26	-16 33	-17 37	4 54
9	3 13 19	6 22 41 40	9 6 15 3	4 20 15 47	6 8 46 37	2 26 27 9	8 9 26 0	6 20 29 6	6 13 1 8	6 13 39 41	-16 50	-14 58	5 14
10	3 17 16	6 23 41 57	9 20 27 34	4 20 49 47	6 8 30 43	2 26 26 42	8 10 22 22	6 20 36 18	6 12 57 57	6 13 39 17	-17 7	-11 27	5 15
11	3 21 12	6 24 42 15	10 4 26 40	4 21 23 42	6 8 26 23	2 26 26 2	8 11 18 13	6 20 43 29	6 12 54 46	6 13 39 23	-17 24	-7 21	4 56
12	3 25 9	6 25 42 35	10 18 11 24	4 21 57 31	6 8 33 12	2 26 25 10	8 12 13 30	6 20 50 40	6 12 51 35	6 13 40 1	-17 40	-2 56	4 21
13	3 29 5	6 26 42 56	11 1 41 37	4 22 31 15	6 8 50 29	2 26 24 6	8 13 8 13	6 20 57 51	6 12 48 25	6 13 41 4	-17 57	1 33	3 32
14	3 33 2	6 27 43 19	11 14 57 41	4 23 4 54	6 9 17 28	2 26 22 51	8 14 2 20	6 21 5 2	6 12 45 14	6 13 42 18	-18 12	5 55	2 33
15	3 36 59	6 28 43 42	11 28 0 13	4 23 38 27	6 9 53 16	2 26 21 23	8 14 55 49	6 21 12 11	6 12 42 3	6 13 43 22	-18 28	9 55	1 26
16	3 40 55	6 29 44 8	0 10 49 54	4 24 11 54	6 10 36 59	2 26 19 43	8 15 48 40	6 21 19 21	6 12 38 52	6 13 43 54	-18 43	13 24	0 16
17	3 44 52	7 0 44 35	0 23 27 25	4 24 45 16	6 11 27 45	2 26 17 52	8 16 40 50	6 21 26 29	6 12 35 42	6 13 43 38	-18 58	16 12	-0 54
18	3 48 48	7 1 45 3	1 5 53 29	4 25 18 32	6 12 24 43	2 26 15 49	8 17 32 17	6 21 33 37	6 12 32 31	6 13 42 21	-19 12	18 11	-1 59
19	3 52 45	7 2 45 33	1 18 9 1	4 25 51 42	6 13 27 6	2 26 13 34	8 18 23 1	6 21 40 44	6 12 29 20	6 13 40 5	-19 26	19 18	-2 59
20	3 56 41	7 3 46 4	2 0 15 16	4 26 24 47	6 14 34 11	2 26 11 7	8 19 13 0	6 21 47 50	6 12 26 9	6 13 36 58	-19 40	19 30	-3 49
21	4 0 38	7 4 46 37	2 12 13 57	4 26 57 45	6 15 45 19	2 26 8 29	8 20 2 11	6 21 54 56	6 12 22 59	6 13 33 20	-19 54	18 49	-4 29
22	4 4 34	7 5 47 12	2 24 7 26	4 27 30 38	6 16 59 55	2 26 5 39	8 20 50 33	6 22 2 0	6 12 19 48	6 13 29 35	-20 7	17 18	-4 56
23	4 8 31	7 6 47 48	3 5 58 39	4 28 3 24	6 18 17 30	2 26 2 37	8 21 38 4	6 22 9 3	6 12 16 37	6 13 26 11	-20 19	15 4	-5 11
24	4 12 28	7 7 48 26	3 17 51 10	4 28 36 4	6 19 37 37	2 25 59 24	8 22 24 42	6 22 16 5	6 12 13 26	6 13 23 33	-20 32	12 12	-5 13
25	4 16 24	7 8 49 6	3 29 49 6	4 29 8 38	6 20 59 52	2 25 56 0	8 23 10 24	6 22 23 6	6 12 10 15	6 13 21 58	-20 44	8 49	-5 1
26	4 20 21	7 9 49 47	4 11 57 1	4 29 41 5	6 22 23 56	2 25 52 24	8 23 55 10	6 22 30 6	6 12 7 5	6 13 21 35	-20 55	5 2	-4 36
27	4 24 17	7 10 50 30	4 24 19 36	5 0 13 25	6 23 49 32	2 25 48 37	8 24 38 55	6 22 37 5	6 12 3 54	6 13 22 18	-21 7	0 57	-3 58
28	4 28 14	7 11 51 15	5 7 1 27	5 0 45 39	6 25 16 24	2 25 44 39	8 25 21 39	6 22 44 2	6 12 0 43	6 13 23 46	-21 17	-3 17	-3 7
29	4 32 10	7 12 52 1	5 20 6 29	5 1 17 45	6 26 44 21	2 25 40 29	8 26 3 18	6 22 50 58	6 11 57 32	6 13 25 29	-21 28	-7 30	-2 4
30	4 36 7	7 13 52 48	6 3 37 28	5 1 49 45	6 28 13 12	2 25 36 9	8 26 43 49	6 22 57 52	6 11 54 21	6 13 26 48	-21 38	-11 29	-0 54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2013 ई. को अयनांश 24° 3' 14"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	4	40	3	7	14	53	37	6	17	35	18	5	2	21	37	6	29	42	47
2	4	44	0	7	15	54	28	7	1	58	26	5	2	53	22	7	1	13	0
3	4	47	57	7	16	55	19	7	16	42	27	5	3	24	59	7	2	43	44
4	4	51	53	7	17	56	12	8	1	40	16	5	3	56	28	7	4	14	53
5	4	55	50	7	18	57	6	8	16	42	57	5	4	27	49	7	5	46	23
6	4	59	46	7	19	58	0	9	1	41	5	5	4	59	2	7	7	18	11
7	5	3	43	7	20	58	56	9	16	26	23	5	5	30	7	7	8	50	13
8	5	7	39	7	21	59	52	10	0	52	46	5	6	1	4	7	10	22	28
9	5	11	36	7	23	0	49	10	14	56	56	5	6	31	52	7	11	54	52
10	5	15	32	7	24	1	46	10	28	38	11	5	7	2	31	7	13	27	25
11	5	19	29	7	25	2	45	11	11	57	45	5	7	33	2	7	15	0	7
12	5	23	26	7	26	3	43	11	24	58	3	5	8	3	24	7	16	32	55
13	5	27	22	7	27	4	43	0	7	42	3	5	8	33	37	7	18	5	50
14	5	31	19	7	28	5	43	0	20	12	41	5	9	3	41	7	19	38	52
15	5	35	15	7	29	6	43	1	2	32	37	5	9	33	35	7	21	12	1
16	5	39	12	8	0	7	44	1	14	44	2	5	10	3	21	7	22	45	16
17	5	43	8	8	1	8	46	1	26	48	40	5	10	32	56	7	24	18	39
18	5	47	5	8	2	9	48	2	8	47	53	5	11	2	22	7	25	52	9
19	5	51	1	8	3	10	51	2	20	42	59	5	11	31	38	7	27	25	48
20	5	54	58	8	4	11	55	3	2	35	25	5	12	0	45	7	28	59	36
21	5	58	55	8	5	12	59	3	14	26	58	5	12	29	40	8	0	33	33
22	6	2	51	8	6	14	4	3	26	19	57	5	12	58	26	8	2	7	40
23	6	6	48	8	7	15	10	4	8	17	23	5	13	27	0	8	3	41	59
24	6	10	44	8	8	16	16	4	20	22	58	5	13	55	24	8	5	16	29
25	6	14	41	8	9	17	23	5	2	40	59	5	14	23	36	8	6	51	13
26	6	18	37	8	10	18	31	5	15	16	6	5	14	51	37	8	8	26	11
27	6	22	34	8	11	19	39	5	28	13	1	5	15	19	26	8	10	1	23
28	6	26	30	8	12	20	48	6	11	35	53	5	15	47	2	8	11	36	52
29	6	30	27	8	13	21	57	6	25	27	33	5	16	14	27	8	13	12	37
30	6	34	24	8	14	23	7	7	9	48	36	5	16	41	38	8	14	48	39
31	6	38	20	8	15	24	17	7	24	36	24	5	17	8	37	8	16	25	0

दिसंबर	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	25	31	38	8	27	23	11	6	23	4	44	6	11	51	11	6	13	27	5	-21	47	-14	58	0	23
2	2	25	26	57	8	28	1	19	6	23	11	35	6	11	48	0	6	13	25	53	-21	56	-17	39	1	39
3	2	25	22	5	8	28	38	11	6	23	18	24	6	11	44	49	6	13	23	2	-22	5	-19	13	2	52
4	2	25	17	3	8	29	13	43	6	23	25	12	6	11	41	38	6	13	18	42	-22	13	-19	29	3	53
5	2	25	11	51	8	29	47	52	6	23	31	57	6	11	38	27	6	13	13	23	-22	21	-18	22	4	38
6	2	25	6	29	9	0	20	35	6	23	38	40	6	11	35	17	6	13	7	51	-22	29	-16	0	5	5
7	2	25	0	58	9	0	51	48	6	23	45	22	6	11	32	6	6	13	2	54	-22	36	-12	37	5	10
8	2	24	55	17	9	1	21	27	6	23	52	1	6	11	28	55	6	12	59	15	-22	42	-8	33	4	56
9	2	24	49	28	9	1	49	28	6	23	58	38	6	11	25	44	6	12	57	18	-22	48	-4	7	4	24
10	2	24	43	29	9	2	15	48	6	24	5	12	6	11	22	33	6	12	57	3	-22	54	0	26	3	37
11	2	24	37	21	9	2	40	22	6	24	11	45	6	11	19	23	6	12	58	4	-22	59	4	51	2	40
12	2	24	31	6	9	3	3	6	6	24	18	15	6	11	16	12	6	12	59	38	-23	4	8	56	1	36
13	2	24	24	42	9	3	23	56	6	24	24	42	6	11	13	1	6	13	0	48	-23	8	12	32	0	29
14	2	24	18	10	9	3	42	49	6	24	31	7	6	11	9	50	6	13	0	41	-23	12	15	30	-0	39
15	2	24	11	31	9	3	59	40	6	24	37	29	6	11	6	39	6	12	58	33	-23	16	17	43	-1	44
16	2	24	4	44	9	4	14	25	6	24	43	49	6	11	3	29	6	12	54	1	-23	18	19	5	-2	43
17	2	23	57	50	9	4	27	0	6	24	50	6	6	11	0	18	6	12	47	5	-23	21	19	34	-3	34
18	2	23	50	50	9	4	37	23	6	24	56	20	6	10	57	7	6	12	38	7	-23	23	19	10	-4	15
19	2	23	43	43	9	4	45	30	6	25	2	31	6	10	53	56	6	12	27	50	-23	24	17	55	-4	44
20	2	23	36	30	9	4	51	17	6	25	8	40	6	10	50	45	6	12	17	9	-23	25	15	54	-5	1
21	2	23	29	10	9	4	54	41	6	25	14	45	6	10	47	35	6	12	7	2	-23	26	13	13	-5	5
22	2	23	21	46	9	4	55	41	6	25	20	48	6	10	44	24	6	11	58	23	-23	26	10	0	-4	56
23	2	23	14	16	9	4	54	14	6	25	26	47	6	10	41	13	6	11	51	52	-23	26	6	22	-4	34
24	2	23	6	41	9	4	50	19	6	25	32	43	6	10	38	2	6	11	47	47	-23	25	2	26	-3	59
25	2	22	59	1	9	4	43	55	6	25	38	36	6	10	34	51	6	11	46	1	-23	24	-1	40	-3	13
26	2	22	51	17	9	4	35	1	6	25	44	25	6	10	31	41	6	11	46	0	-23	22	-5	47	-2	17
27	2	22	43	29	9	4	23	39	6	25	50	11	6	10	28	30	6	11	46	48	-23	20	-9	47	-1	12
28	2	22	35	37	9	4	9	48	6	25	55	54	6	10	25	19	6	11	47	16	-23	17	-13	25	-0	1
29	2	22	27	42	9	3	53	31	6	26	1	33	6	10	22	8	6	11	46	20	-23	14	-16	27	1	12
30	2	22	19	44	9	3	34	51	6	26	7	8	6	10	18	57	6	11	43	8	-23	10	-18	34	2	24
31	2	22	11	44	9	3	13	52	6	26	12	40	6	10	15	47	6	11	37	18	-23	6	-19	31	3	27

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 20"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 42 17	8 16 25 28	8 9 44 36	5 17 35 22	8 18 1 39	2 22 3 41	9 2 50 39	6 26 18 8	6 10 12 36	6 11 29 2	-23 1	-19 5	4 18
2	6 46 13	8 17 26 38	8 25 3 36	5 18 1 54	8 19 38 38	2 21 55 37	9 2 25 18	6 26 23 32	6 10 9 25	6 11 19 6	-22 56	-17 17	4 51
3	6 50 10	8 18 27 49	9 10 21 56	5 18 28 12	8 21 15 57	2 21 47 32	9 1 57 57	6 26 28 52	6 10 6 14	6 11 8 36	-22 51	-14 15	5 2
4	6 54 6	8 19 28 59	9 25 28 16	5 18 54 15	8 22 53 36	2 21 39 25	9 1 28 44	6 26 34 9	6 10 3 3	6 10 58 49	-22 45	-10 19	4 53
5	6 58 3	8 20 30 9	10 10 13 29	5 19 20 4	8 24 31 36	2 21 31 18	9 0 57 48	6 26 39 21	6 9 59 53	6 10 50 51	-22 38	- 5 50	4 24
6	7 1 59	8 21 31 19	10 24 31 53	5 19 45 39	8 26 9 56	2 21 23 10	9 0 25 21	6 26 44 29	6 9 56 42	6 10 45 21	-22 32	- 1 9	3 39
7	7 5 56	8 22 32 29	11 8 21 26	5 20 10 58	8 27 48 37	2 21 15 3	8 29 51 35	6 26 49 33	6 9 53 31	6 10 42 26	-22 24	3 27	2 43
8	7 9 53	8 23 33 38	11 21 43 14	5 20 36 3	8 29 27 38	2 21 6 57	8 29 16 42	6 26 54 33	6 9 50 20	6 10 41 35	-22 17	7 44	1 39
9	7 13 49	8 24 34 47	0 4 40 24	5 21 0 51	9 1 6 59	2 20 58 51	8 28 40 57	6 26 59 28	6 9 47 9	6 10 41 50	-22 8	11 31	0 32
10	7 17 46	8 25 35 55	0 17 17 9	5 21 25 24	9 2 46 37	2 20 50 47	8 28 4 33	6 27 4 19	6 9 43 59	6 10 41 56	-22 0	14 41	-0 35
11	7 21 42	8 26 37 3	0 29 37 57	5 21 49 41	9 4 26 32	2 20 42 44	8 27 27 47	6 27 9 5	6 9 40 48	6 10 40 37	-21 51	17 6	- 1 38
12	7 25 39	8 27 38 11	1 11 47 5	5 22 13 41	9 6 6 42	2 20 34 43	8 26 50 54	6 27 13 48	6 9 37 37	6 10 36 52	-21 41	18 42	- 2 37
13	7 29 35	8 28 39 17	1 23 48 14	5 22 37 24	9 7 47 3	2 20 26 45	8 26 14 9	6 27 18 25	6 9 34 26	6 10 30 5	-21 31	19 27	- 3 27
14	7 33 32	8 29 40 23	2 5 44 26	5 23 0 51	9 9 27 32	2 20 18 50	8 25 37 49	6 27 22 58	6 9 31 15	6 10 20 10	-21 21	19 19	- 4 7
15	7 37 28	9 0 41 29	2 17 37 57	5 23 24 0	9 11 8 5	2 20 10 57	8 25 2 8	6 27 27 27	6 9 28 5	6 10 7 33	-21 10	18 19	- 4 37
16	7 41 25	9 1 42 34	2 29 30 30	5 23 46 51	9 12 48 37	2 20 3 8	8 24 27 21	6 27 31 50	6 9 24 54	6 9 53 5	-20 59	16 32	- 4 55
17	7 45 22	9 2 43 39	3 11 23 23	5 24 9 24	9 14 29 1	2 19 55 23	8 23 53 43	6 27 36 9	6 9 21 43	6 9 37 54	-20 48	14 4	- 4 59
18	7 49 18	9 3 44 43	3 23 17 48	5 24 31 39	9 16 9 9	2 19 47 42	8 23 21 26	6 27 40 24	6 9 18 32	6 9 23 16	-20 36	11 1	- 4 51
19	7 53 15	9 4 45 47	4 5 15 6	5 24 53 34	9 17 48 51	2 19 40 5	8 22 50 44	6 27 44 33	6 9 15 22	6 9 10 22	-20 24	7 30	- 4 30
20	7 57 11	9 5 46 50	4 17 17 7	5 25 15 10	9 19 27 57	2 19 32 33	8 22 21 47	6 27 48 38	6 9 12 11	6 9 0 7	-20 11	3 40	- 3 56
21	8 1 8	9 6 47 53	4 29 26 17	5 25 36 26	9 21 6 13	2 19 25 6	8 21 54 44	6 27 52 37	6 9 9 0	6 8 52 59	-19 58	- 0 21	- 3 12
22	8 5 4	9 7 48 56	5 11 45 42	5 25 57 22	9 22 43 23	2 19 17 45	8 21 29 46	6 27 56 32	6 9 5 49	6 8 48 56	-19 44	- 4 25	- 2 17
23	8 9 1	9 8 49 58	5 24 19 9	5 26 17 57	9 24 19 8	2 19 10 29	8 21 6 58	6 28 0 21	6 9 2 38	6 8 47 21	-19 31	- 8 22	- 1 16
24	8 12 57	9 9 51 0	6 7 10 48	5 26 38 10	9 25 53 7	2 19 3 19	8 20 46 27	6 28 4 5	6 8 59 28	6 8 47 12	-19 16	-12 2	- 0 8
25	8 16 54	9 10 52 1	6 20 24 50	5 26 58 1	9 27 24 55	2 18 56 16	8 20 28 17	6 28 7 45	6 8 56 17	6 8 47 9	-19 2	-15 12	1 1
26	8 20 51	9 11 53 2	7 4 4 52	5 27 17 30	9 28 54 4	2 18 49 19	8 20 12 33	6 28 11 18	6 8 53 6	6 8 45 53	-18 47	-17 38	2 9
27	8 24 47	9 12 54 2	7 18 12 57	5 27 36 35	10 0 20 3	2 18 42 29	8 19 59 16	6 28 14 47	6 8 49 55	6 8 42 22	-18 32	-19 5	3 12
28	8 28 44	9 13 55 1	8 2 48 33	5 27 55 17	10 1 42 16	2 18 35 46	8 19 48 28	6 28 18 10	6 8 46 45	6 8 36 3	-18 16	-19 20	4 4
29	8 32 40	9 14 56 0	8 17 47 36	5 28 13 35	10 3 0 4	2 18 29 11	8 19 40 10	6 28 21 28	6 8 43 34	6 8 27 3	-18 0	-18 14	4 41
30	8 36 37	9 15 56 58	9 3 2 25	5 28 31 28	10 4 12 45	2 18 22 44	8 19 34 21	6 28 24 40	6 8 40 23	6 8 16 7	-17 44	-15 51	4 59
31	8 40 33	9 16 57 55	9 18 22 20	5 28 48 55	10 5 19 32	2 18 16 24	8 19 31 0	6 28 27 47	6 8 37 12	6 8 4 25	-17 28	-12 20	4 55

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 24"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 30	9 17 58 51	10 3 35 37	5 29 5 57	10 6 19 38	2 18 10 13	8 19 30 6	6 28 30 48	6 8 34 1	6 7 53 18	-17 11	-8 3	4 31
2	8 48 26	9 18 59 46	10 18 31 32	5 29 22 32	10 7 12 14	2 18 4 11	8 19 31 37	6 28 33 44	6 8 30 51	6 7 43 58	-16 54	-3 19	3 48
3	8 52 23	9 20 0 40	11 3 2 10	5 29 38 40	10 7 56 33	2 17 58 18	8 19 35 31	6 28 36 34	6 8 27 40	6 7 37 14	-16 36	1 28	2 52
4	8 56 20	9 21 1 33	11 17 3 21	5 29 54 21	10 8 31 47	2 17 52 33	8 19 41 44	6 28 39 18	6 8 24 29	6 7 33 17	-16 19	6 1	1 46
5	9 0 16	9 22 2 24	0 0 34 30	6 0 9 34	10 8 57 16	2 17 46 58	8 19 50 13	6 28 41 56	6 8 21 18	6 7 31 44	-16 1	10 7	0 37
6	9 4 13	9 23 3 14	0 13 37 51	6 0 24 18	10 9 12 25	2 17 41 33	8 20 0 55	6 28 44 29	6 8 18 8	6 7 31 39	-15 42	13 34	-0 32
7	9 8 9	9 24 4 2	0 26 17 23	6 0 38 34	10 9 16 49	2 17 36 17	8 20 13 47	6 28 46 56	6 8 14 57	6 7 31 52	-15 24	16 16	-1 38
8	9 12 6	9 25 4 49	1 8 37 57	6 0 52 19	10 9 10 16	2 17 31 11	8 20 28 45	6 28 49 17	6 8 11 46	6 7 31 8	-15 5	18 8	-2 37
9	9 16 2	9 26 5 34	1 20 44 36	6 1 5 34	10 8 52 48	2 17 26 15	8 20 45 45	6 28 51 33	6 8 8 35	6 7 28 25	-14 46	19 8	-3 28
10	9 19 59	9 27 6 18	2 2 42 5	6 1 18 19	10 8 24 44	2 17 21 30	8 21 4 44	6 28 53 42	6 8 5 25	6 7 23 4	-14 27	19 15	-4 9
11	9 23 55	9 28 7 0	2 14 34 35	6 1 30 32	10 7 46 44	2 17 16 55	8 21 25 38	6 28 55 45	6 8 2 14	6 7 14 55	-14 7	18 31	-4 39
12	9 27 52	9 29 7 41	2 26 25 34	6 1 42 14	10 6 59 45	2 17 12 30	8 21 48 24	6 28 57 43	6 7 59 3	6 7 4 15	-13 47	16 59	-4 57
13	9 31 49	10 0 8 20	3 8 17 43	6 1 53 23	10 6 5 0	2 17 8 16	8 22 12 57	6 28 59 35	6 7 55 52	6 6 51 47	-13 27	14 44	-5 2
14	9 35 45	10 1 8 57	3 20 13 0	6 2 3 58	10 5 4 3	2 17 4 13	8 22 39 13	6 29 1 20	6 7 52 42	6 6 38 33	-13 7	11 52	-4 53
15	9 39 42	10 2 9 33	4 2 12 51	6 2 14 0	10 3 58 34	2 17 0 20	8 23 7 10	6 29 3 0	6 7 49 31	6 6 25 39	-12 47	8 29	-4 32
16	9 43 38	10 3 10 8	4 14 18 25	6 2 23 27	10 2 50 24	2 16 56 39	8 23 36 44	6 29 4 33	6 7 46 20	6 6 14 12	-12 26	4 44	-3 59
17	9 47 35	10 4 10 41	4 26 30 42	6 2 32 19	10 1 41 24	2 16 53 9	8 24 7 51	6 29 6 1	6 7 43 9	6 6 5 4	-12 5	0 46	-3 14
18	9 51 31	10 5 11 13	5 8 51 0	6 2 40 34	10 0 33 20	2 16 49 49	8 24 40 27	6 29 7 23	6 7 39 59	6 5 58 46	-11 44	-3 17	-2 19
19	9 55 28	10 6 11 44	5 21 21 0	6 2 48 13	9 29 27 50	2 16 46 42	8 25 14 29	6 29 8 38	6 7 36 48	6 5 55 20	-11 23	-7 15	-1 17
20	9 59 24	10 7 12 13	6 4 2 55	6 2 55 15	9 28 26 20	2 16 43 45	8 25 49 54	6 29 9 47	6 7 33 37	6 5 54 18	-11 1	-10 57	-0 10
21	10 3 21	10 8 12 41	6 16 59 26	6 3 1 38	9 27 30 0	2 16 41 0	8 26 26 39	6 29 10 50	6 7 30 27	6 5 54 50	-10 40	-14 12	0 59
22	10 7 18	10 9 13 8	7 0 13 27	6 3 7 22	9 26 39 45	2 16 38 26	8 27 4 40	6 29 11 48	6 7 27 16	6 5 55 48	-10 18	-16 48	2 6
23	10 11 14	10 10 13 33	7 13 47 43	6 3 12 27	9 25 56 14	2 16 36 4	8 27 43 54	6 29 12 38	6 7 24 5	6 5 56 3	-9 56	-18 31	3 9
24	10 15 11	10 11 13 58	7 27 44 6	6 3 16 51	9 25 19 51	2 16 33 54	8 28 24 18	6 29 13 23	6 7 20 54	6 5 54 40	-9 34	-19 10	4 1
25	10 19 7	10 12 14 20	8 12 2 53	6 3 20 33	9 24 50 48	2 16 31 56	8 29 5 49	6 29 14 1	6 7 17 44	6 5 51 7	-9 12	-18 37	4 41
26	10 23 4	10 13 14 41	8 26 41 55	6 3 23 35	9 24 29 8	2 16 30 9	8 29 48 25	6 29 14 34	6 7 14 33	6 5 45 25	-8 50	-16 51	5 3
27	10 27 0	10 14 15 1	9 11 36 11	6 3 25 53	9 24 14 45	2 16 28 34	9 0 32 2	6 29 15 0	6 7 11 22	6 5 38 5	-8 27	-13 56	5 5
28	10 30 57	10 15 15 19	9 26 38 0	6 3 27 29	9 24 7 25	2 16 27 11	9 1 16 39	6 29 15 19	6 7 6 11	6 5 30 1	-8 5	-10 4	4 46

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2014 ई. को अयनांश 24° 3' 27"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 34 53	10 16 15 36	10 11 38 1	6 3 28 21	9 24 6 52	2 16 26 0	9 2 2 12	6 29 15 33	6 7 5 1	6 5 22 15	-7 42	-5 35	4 8
2	10 38 50	10 17 15 50	10 26 26 43	6 3 28 29	9 24 12 46	2 16 25 1	9 2 48 39	6 29 15 40	6 7 1 50	6 5 15 47	-7 19	-0 48	3 13
3	10 42 47	10 18 16 3	11 10 56 3	6 3 27 53	9 24 24 46	2 16 24 13	9 3 35 59	6 29 15 42	6 6 58 39	6 5 11 15	-6 56	3 55	2 7
4	10 46 43	10 19 16 14	11 25 0 33	6 3 26 31	9 24 42 31	2 16 23 38	9 4 24 8	6 29 15 36	6 6 55 29	6 5 8 53	-6 33	8 18	0 54
5	10 50 40	10 20 16 23	0 8 37 50	6 3 24 25	9 25 5 38	2 16 23 15	9 5 13 5	6 29 15 25	6 6 52 18	6 5 8 28	-6 10	12 6	-0 19
6	10 54 36	10 21 16 30	0 21 48 14	6 3 21 33	9 25 33 47	2 16 23 3	9 6 2 48	6 29 15 8	6 6 49 7	6 5 9 23	-5 47	15 10	-1 29
7	10 58 33	10 22 16 35	1 4 34 17	6 3 17 56	9 26 6 37	2 16 23 4	9 6 53 16	6 29 14 44	6 6 45 56	6 5 10 50	-5 23	17 22	-2 33
8	11 2 29	10 23 16 38	1 16 59 52	6 3 13 32	9 26 43 49	2 16 23 16	9 7 44 26	6 29 14 14	6 6 42 46	6 5 11 56	-5 0	18 41	-3 27
9	11 6 26	10 24 16 39	1 29 9 42	6 3 8 23	9 27 25 5	2 16 23 41	9 8 36 17	6 29 13 39	6 6 39 35	6 5 11 58	-4 37	19 5	-4 11
10	11 10 22	10 25 16 37	2 11 8 43	6 3 2 27	9 28 10 9	2 16 24 17	9 9 28 47	6 29 12 57	6 6 36 24	6 5 10 24	-4 13	18 37	-4 44
11	11 14 19	10 26 16 34	2 23 1 43	6 2 55 45	9 28 58 46	2 16 25 5	9 10 21 55	6 29 12 9	6 6 33 13	6 5 7 6	-3 50	17 20	-5 3
12	11 18 16	10 27 16 28	3 4 53 5	6 2 48 17	9 29 50 42	2 16 26 4	9 11 15 40	6 29 11 15	6 6 30 3	6 5 2 10	-3 26	15 18	-5 10
13	11 22 12	10 28 16 20	3 16 46 34	6 2 40 3	10 0 45 43	2 16 27 15	9 12 10 0	6 29 10 15	6 6 26 52	6 4 56 2	-3 3	12 38	-5 4
14	11 26 9	10 29 16 9	3 28 45 14	6 2 31 3	10 1 43 39	2 16 28 38	9 13 4 55	6 29 9 10	6 6 23 41	6 4 49 16	-2 39	9 26	-4 44
15	11 30 5	11 0 15 57	4 10 51 28	6 2 21 18	10 2 44 19	2 16 30 12	9 14 0 22	6 29 7 58	6 6 20 31	6 4 42 36	-2 15	5 48	-4 11
16	11 34 2	11 1 15 43	4 23 6 57	6 2 10 46	10 3 47 33	2 16 31 58	9 14 56 21	6 29 6 41	6 6 17 20	6 4 36 43	-1 52	1 54	-3 27
17	11 37 58	11 2 15 27	5 5 32 47	6 1 59 29	10 4 53 12	2 16 33 55	9 15 52 51	6 29 5 17	6 6 14 9	6 4 32 8	-1 28	-2 10	-2 31
18	11 41 55	11 3 15 8	5 18 9 41	6 1 47 28	10 6 1 9	2 16 36 3	9 16 49 50	6 29 3 48	6 6 10 58	6 4 29 13	-1 4	-6 11	-1 28
19	11 45 51	11 4 14 48	6 0 58 11	6 1 34 41	10 7 11 17	2 16 38 22	9 17 47 18	6 29 2 14	6 6 7 48	6 4 28 2	-0 40	-9 59	-0 19
20	11 49 48	11 5 14 26	6 13 58 47	6 1 21 11	10 8 23 29	2 16 40 53	9 18 45 14	6 29 0 33	6 6 4 37	6 4 28 20	-0 17	-13 22	0 52
21	11 53 45	11 6 14 3	6 27 12 8	6 1 6 58	10 9 37 40	2 16 43 35	9 19 43 36	6 28 58 47	6 6 1 26	6 4 29 37	0 7	-16 7	2 1
22	11 57 41	11 7 13 37	7 10 38 57	6 0 52 2	10 10 53 44	2 16 46 28	9 20 42 23	6 28 56 55	6 5 58 16	6 4 31 18	0 31	-18 2	3 5
23	12 1 38	11 8 13 10	7 24 19 51	6 0 36 25	10 12 11 37	2 16 49 31	9 21 41 36	6 28 54 58	6 5 55 5	6 4 32 41	0 54	-18 56	4 0
24	12 5 34	11 9 12 41	8 8 15 7	6 0 20 7	10 13 31 16	2 16 52 46	9 22 41 12	6 28 52 55	6 5 51 54	6 4 33 17	1 18	-18 43	4 42
25	12 9 31	11 10 12 10	8 22 24 12	6 0 3 9	10 14 52 37	2 16 56 11	9 23 41 10	6 28 50 47	6 5 48 44	6 4 32 47	1 42	-17 20	5 7
26	12 13 27	11 11 11 38	9 6 45 26	5 29 45 34	10 16 15 37	2 16 59 47	9 24 41 31	6 28 48 33	6 5 45 33	6 4 31 9	2 5	-14 52	5 14
27	12 17 24	11 12 11 4	9 21 15 41	5 29 27 22	10 17 40 14	2 17 3 34	9 25 42 13	6 28 46 14	6 5 42 22	6 4 28 41	2 29	-11 26	5 1
28	12 21 20	11 13 10 28	10 5 50 18	5 29 8 35	10 19 6 25	2 17 7 32	9 26 43 15	6 28 43 50	6 5 39 11	6 4 25 47	2 52	-7 19	4 29
29	12 25 17	11 14 9 50	10 20 23 27	5 28 49 15	10 20 34 8	2 17 11 39	9 27 44 36	6 28 41 21	6 5 36 1	6 4 22 59	3 16	-2 45	3 39
30	12 29 14	11 15 9 10	11 4 48 51	5 28 29 23	10 22 3 23	2 17 15 58	9 28 46 17	6 28 38 46	6 5 32 50	6 4 20 45	3 39	1 56	2 36
31	12 33 10	11 16 8 28	11 19 0 37	5 28 9 2	10 23 34 7	2 17 20 26	9 29 48 15	6 28 36 7	6 5 29 39	6 4 19 22	4 2	6 26	1 23

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2070 वि.)

मास	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2013 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2014 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	11 अप्रै.	द. 26	11 मई	द. 5	10 जून	उ. 12	9 जुला.	उ. 32	8 अग.	उ. 38	7 सितं.	उ. 37	6 अक्तू.	उ. 32	*4 नवं	उ. 18	4 दिसं.	0	2 जन.	द. 17	1 फर.	द. 24	2 मार्च	द. 30
+ 15°	11 "	द. 16	11 "	उ. 5	10 "	उ. 22	10 "	उ. 36	8 "	उ. 48	7 "	उ. 48	6 "	उ. 42	5 "	उ. 30	4 "	उ. 11	2 "	द. 7	1 "	द. 14	2 "	द. 20
+ 25°	11 "	द. 6	11 "	उ. 15	10 "	उ. 32	10 "	उ. 47	9 "	उ. 55	7 "	उ. 58	6 "	उ. 52	5 "	उ. 41	4 "	उ. 22	2 "	उ. 3	1 "	द. 3	2 "	द. 10
+ 35°	11 "	उ. 4	11 "	उ. 25	10 "	उ. 42	10 "	उ. 56	9 "	उ. 64	7 "	उ. 67	6 "	उ. 62	5 "	उ. 51	4 "	उ. 31	2 "	उ. 13	1 "	उ. 7	2 "	उ. 1

* 10 से कम उत्तर अक्षांशीय स्थलों पर (द. केरल, द. तामिलनाडू व श्रीलंका में) चन्द्रदर्शन 4 नवंबर, 2013 ई. को ही होगा।
नोट– यहां दिए गए शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं।

Pin- 134 109 , PHONE- 0172-2565303

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013 ई.

तारीख	जनवरी 2013				फरवरी 2013				मार्च 2013				अप्रैल 2013				मई 2013				जून 2013				जुलाई 2013				अगस्त 2013				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	21	18	9	34	23	7	9	57	22	3	8	37	--	--	9	48	--	--	10	47	0	34	12	46	0	22	13	31	0	58	15	0	1
2	22	15	10	8	--	--	10	36	23	6	9	19	0	5	10	48	0	35	11	51	1	10	13	44	0	58	14	27	1	44	15	49	2
3	23	13	10	42	0	10	11	18	--	--	10	5	1	0	11	51	1	17	12	53	1	45	14	41	1	36	15	21	2	31	16	36	3
4	--	--	11	17	1	13	12	6	0	10	10	57	1	51	12	54	1	56	13	53	2	20	15	37	2	17	16	14	3	22	17	19	4
5	0	12	11	55	2	17	13	0	1	11	11	53	2	36	13	57	2	32	14	52	2	57	16	32	3	0	17	5	4	14	17	59	5
6	1	14	12	35	3	19	13	59	2	10	12	54	3	17	14	59	3	7	15	49	3	36	17	26	3	46	17	53	5	7	18	37	6
7	2	18	13	21	4	17	15	3	3	4	13	57	3	55	15	59	3	43	16	46	4	17	18	18	4	35	18	38	6	1	19	13	7
8	3	24	14	13	5	11	16	9	3	53	15	1	4	31	16	58	4	19	17	42	5	2	19	8	6	20	19	20	6	55	19	47	8
9	4	30	15	11	6	0	17	16	4	37	16	5	5	7	17	56	4	56	18	37	5	49	19	55	6	18	19	59	7	50	20	21	9
10	5	33	16	15	6	43	18	21	5	18	17	8	5	42	18	53	5	36	19	31	6	39	20	39	7	12	20	36	8	46	20	56	10
11	6	31	17	23	7	24	19	24	5	56	18	9	6	19	19	49	6	19	20	22	7	30	21	20	8	6	21	11	9	43	21	32	11
12	7	24	18	31	8	1	20	25	6	33	19	9	6	58	20	44	7	5	21	12	8	23	21	58	9	0	21	45	10	41	22	10	12
13	8	11	19	38	8	37	21	24	7	9	20	7	7	40	21	38	7	53	21	58	9	16	22	34	9	55	22	18	11	42	22	53	13
14	8	5[illegible]	20	42	9	13	22	22	7	45	21	4	8	24	22	29	8	44	22	41	10	10	23	8	10	51	22	53	12	43	23	40	14
15	9	30	21	43	9	49	23	18	8	23	22	0	9	10	23	17	9	36	23	21	11	5	23	42	11	48	23	30	13	45	--	--	15
16	10	6	22	42	10	27	--	--	9	2	22	55	9	59	--	--	10	29	23	58	12	0	--	--	12	48	--	--	14	47	0	33	16
17	10	41	23	39	11	7	0	12	9	45	23	47	10	51	0	2	11	22	--	--	12	58	0	17	13	50	0	10	15	45	1	32	17
18	11	16	--	--	11	50	1	5	10	29	--	--	11	43	0	44	12	17	0	34	13	58	0	53	14	54	0	55	16	40	2	36	18
19	11	52	0	34	12	36	1	56	11	17	0	37	12	37	1	23	13	13	1	8	15	1	1	32	15	58	1	46	17	30	3	42	19
20	12	30	1	29	13	25	2	45	12	7	1	24	13	33	2	0	14	11	1	43	16	6	2	15	17	1	2	44	18	15	4	50	20
21	13	11	2	22	14	16	3	31	13	0	2	8	14	29	2	36	15	12	2	19	17	12	3	5	17	59	3	47	18	57	5	57	21
22	13	55	3	14	15	10	4	14	13	54	2	49	15	28	3	11	16	15	2	57	18	18	4	1	18	53	4	55	19	37	7	2	22
23	14	42	4	4	16	6	4	55	14	49	3	28	16	28	3	48	17	21	3	40	19	20	5	3	19	41	6	4	20	16	8	5	23
24	15	32	4	52	17	2	5	33	15	46	4	5	17	31	4	26	18	28	4	27	20	16	6	10	20	25	7	12	20	54	9	7	24
25	16	25	5	37	18	0	6	9	16	45	4	41	18	37	5	7	19	35	5	21	21	7	7	19	21	5	8	18	21	32	10	6	25
26	17	20	6	19	18	59	6	45	17	45	5	17	19	44	5	52	20	39	6	21	21	51	8	27	21	43	9	22	22	13	11	4	26
27	18	16	6	58	19	59	7	21	18	47	5	54	20	50	6	42	21	37	7	26	22	32	9	33	22	20	10	23	22	55	11	59	27
28	19	12	7	35	21	0	7	58	19	50	6	33	21	54	7	38	22	29	8	33	23	10	10	36	22	58	11	22	23	39	12	52	28
29	20	10	8	11					20	55	7	15	22	54	8	39	23	15	9	39	23	46	11	36	23	36	12	19	--	--	13	43	29
30	21	8	8	45					22	1	8	1	23	47	9	42	23	56	10	44	--	--	12	35	--	--	13	15	0	27	14	31	30
31	22	7	9	20					23	5	8	53					--	--	11	46					0	16	14	8	1	16	15	15	31

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gauri at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax. 0160-3002274

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2013–14 ई.

तारीख	सितंबर 2013				अक्तूबर 2013				नवंबर 2013				दिसंबर 2013				जनवरी 2014				फरवरी 2014				मार्च 2014				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	2	7	15	57	2	38	15	45	4	10	16	3	4	56	16	3	6	47	17	41	7	55	19	50	6	27	18	32	1
2	3	0	16	36	3	33	16	20	5	10	16	44	6	1	16	56	7	44	18	50	8	38	20	56	7	9	19	38	2
3	3	53	17	12	4	29	16	55	6	13	17	28	7	6	17	54	8	36	19	59	9	18	21	59	7	50	20	42	3
4	4	48	17	48	6	27	17	31	7	17	18	17	8	8	18	58	9	22	21	6	9	58	23	1	8	30	21	44	4
5	5	43	18	22	6	25	18	10	8	21	19	12	9	6	20	5	10	5	22	11	10	37	--	--	9	12	22	44	5
6	6	39	18	57	7	26	18	51	9	24	20	11	9	59	21	12	10	44	23	14	11	18	24	0	9	55	23	41	6
7	7	37	19	33	8	28	19	36	10	22	21	14	10	46	22	17	11	23	–	–	12	0	0	57	10	39	–	–	7
8	8	36	20	12	9	31	20	26	11	16	22	19	11	28	23	21	12	0	0	14	12	44	1	52	11	26	0	35	8
9	9	36	20	53	10	33	21	21	12	4	23	23	12	7	–	–	12	39	1	12	13	30	2	44	12	14	1	26	9
10	10	37	21	39	11	33	22	20	12	48	–	–	12	45	0	23	13	19	2	9	14	19	3	32	13	4	2	14	10
11	11	39	22	29	12	28	23	22	13	28	0	26	13	22	1	22	14	1	3	4	15	9	4	18	13	55	2	57	11
12	12	39	23	25	13	19	–	–	14	6	1	28	13	59	2	20	14	46	3	57	16	1	5	1	14	47	3	38	12
13	13	37	–	–	14	5	0	26	14	43	2	28	14	38	3	18	15	33	4	48	16	53	5	40	15	39	4	16	13
14	14	32	0	25	14	48	1	30	15	20	3	27	15	18	4	14	16	23	5	36	17	46	6	17	16	32	4	52	14
15	15	22	1	29	15	27	2	33	15	58	4	26	16	2	5	9	17	14	6	20	18	39	6	52	17	26	6	4	15
16	16	8	2	34	16	6	3	35	16	38	5	23	16	48	6	1	18	6	7	2	19	33	7	26	18	20	6	0	16
17	16	50	3	39	16	43	4	36	17	20	6	20	17	37	6	51	18	58	7	40	20	27	8	0	19	16	6	35	17
18	17	31	4	44	17	21	5	36	18	5	7	15	18	27	7	38	19	51	8	16	21	22	8	34	20	12	7	10	18
19	18	9	5	47	18	1	6	35	18	53	8	7	19	19	8	22	20	44	8	51	22	18	9	9	21	10	7	48	19
20	18	48	6	49	18	42	7	33	19	42	8	56	20	11	9	2	21	37	9	24	23	16	9	47	22	9	8	28	20
21	19	27	7	50	19	26	8	30	20	33	9	42	21	3	9	39	22	31	9	57	--	--	10	28	23	9	9	13	21
22	20	7	8	49	20	12	9	24	21	25	10	24	21	56	10	15	23	26	10	31	0	15	11	14	–	–	10	2	22
23	20	49	9	47	21	0	10	15	22	18	11	3	22	49	10	48	–	–	11	7	1	14	12	5	0	7	10	56	23
24	21	33	10	42	21	50	11	3	23	10	11	39	23	43	11	21	0	24	11	46	2	13	13	2	1	4	11	55	24
25	22	20	11	34	22	42	11	47	–	–	12	14	--	--	11	55	1	23	12	30	3	11	14	4	1	58	12	57	25
26	23	9	12	23	23	34	12	27	0	3	12	48	0	38	12	30	2	24	13	19	4	5	15	9	2	48	14	2	26
27	23	59	13	9	–	–	13	5	0	58	13	22	1	36	13	9	3	26	14	15	4	56	16	17	3	35	15	7	27
28	–	–	13	52	0	27	13	41	1	54	13	57	2	36	13	51	4	27	15	17	5	43	17	25	4	19	16	13	28
29	0	51	14	32	1	20	14	16	2	52	14	35	3	38	14	39	5	25	16	23					5	1	17	18	29
30	1	44	15	9	2	15	14	51	3	52	15	16	4	42	15	34	6	20	17	32					5	41	18	22	30
31					3	11	15	26					5	46	16	35	7	10	18	42					6	22	19	25	31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2013 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2013 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 10 43	10 7 2	8 15 16	-20 12	-1 9	-24 15	-0 49	20 54	-0 42	-22 21	0 42	-12 27	2 20	1 15	-0 42	-11 40	-0 37	-19 47	3 20
4	11 10 46	10 7 7	8 15 23	-19 37	-1 9	-24 26	-1 7	20 52	-0 42	-22 42	0 34	-12 31	2 21	1 16	-0 42	-11 38	-0 37	-19 47	3 20
7	11 10 50	10 7 12	8 15 29	-19 0	-1 8	-24 26	-1 23	20 51	-0 41	-22 58	0 27	-12 34	2 22	1 17	-0 42	-11 36	-0 37	-19 47	3 19
10	11 10 54	10 7 17	8 15 36	-18 20	-1 8	-24 13	-1 36	20 49	-0 40	-23 7	0 19	-12 37	2 22	1 19	-0 42	-11 34	-0 37	-19 47	3 19
13	11 10 58	10 7 23	8 15 42	-17 39	-1 7	-23 47	-1 48	20 48	-0 40	-23 10	0 11	-12 40	2 23	1 21	-0 42	-11 32	-0 37	-19 46	3 19
16	11 11 3	10 7 28	8 15 48	-16 57	-1 7	-23 8	-1 57	20 47	-0 39	-23 6	0 4	-12 43	2 23	1 23	-0 42	-11 30	-0 37	-19 46	3 19
19	11 11 8	10 7 34	8 15 54	-16 13	-1 6	-22 15	-2 3	20 46	-0 38	-22 56	-0 4	-12 45	2 24	1 25	-0 42	-11 28	-0 37	-19 46	3 18
22	11 11 14	10 7 40	8 16 0	-15 27	-1 5	-21 9	-2 5	20 46	-0 38	-22 40	-0 12	-12 47	2 25	1 27	-0 42	-11 26	-0 37	-19 46	3 18
25	11 11 20	10 7 46	8 16 6	-14 40	-1 4	-19 49	-2 4	20 46	-0 37	-22 17	-0 19	-12 49	2 25	1 30	-0 41	-11 24	-0 37	-19 45	3 18
28	11 11 26	10 7 53	8 16 12	-13 51	-1 3	-18 15	-1 59	20 46	-0 36	-21 48	-0 26	-12 51	2 26	1 33	-0 41	-11 21	-0 37	-19 45	3 18
31	11 11 33	10 7 59	8 16 18	-13 1	-1 3	-16 28	-1 48	20 47	-0 36	-21 14	-0 33	-12 52	2 27	1 35	-0 41	-11 19	-0 37	-19 45	3 18
फर. 1	11 11 35	10 8 1	8 16 20	-12 44	-1 2	-15 50	-1 43	20 47	-0 35	-21 1	-0 35	-12 52	2 27	1 36	-0 41	-11 18	-0 37	-19 45	3 18
4	11 11 42	10 8 8	8 16 25	-11 53	-1 1	-13 47	-1 25	20 48	-0 35	-20 19	-0 42	-12 53	2 28	1 39	-0 41	-11 16	-0 37	-19 44	3 18
7	11 11 50	10 8 15	8 16 31	-11 1	-1 0	-11 35	-1 1	20 49	-0 34	-19 31	-0 48	-12 54	2 29	1 42	-0 41	-11 14	-0 37	-19 44	3 18
10	11 11 58	10 8 21	8 16 36	-10 8	-0 59	-9 18	-0 30	20 51	-0 33	-18 38	-0 54	-12 54	2 29	1 45	-0 41	-11 11	-0 37	-19 44	3 17
13	11 12 6	10 8 28	8 16 41	-9 14	-0 58	-7 2	0 7	20 53	-0 33	-17 41	-0 59	-12 54	2 30	1 49	-0 41	-11 9	-0 37	-19 43	3 17
16	11 12 14	10 8 35	8 16 46	-8 19	-0 57	-4 55	0 50	20 55	-0 32	-16 39	-1 4	-12 54	2 31	1 52	-0 41	-11 6	-0 37	-19 43	3 17
19	11 12 23	10 8 42	8 16 50	-7 24	-0 55	-3 9	1 37	20 57	-0 31	-15 32	-1 9	-12 53	2 31	1 56	-0 41	-11 4	-0 37	-19 43	3 17
22	11 12 32	10 8 48	8 16 55	-6 28	-0 54	-1 54	2 22	21 0	-0 31	-14 22	-1 13	-12 52	2 32	1 59	-0 41	-11 2	-0 37	-19 43	3 17
25	11 12 41	10 8 55	8 16 59	-5 32	-0 53	-1 18	3 2	21 3	-0 30	-13 8	-1 17	-12 51	2 33	2 3	-0 41	-10 59	-0 37	-19 42	3 17
28	11 12 50	10 9 2	8 17 3	-4 35	-0 51	-1 26	3 30	21 6	-0 29	-11 52	-1 20	-12 50	2 34	2 7	-0 41	-10 57	-0 37	-19 42	3 17
मार्च 1	11 12 53	10 9 4	8 17 4	-4 16	-0 51	-1 38	3 36	21 7	-0 29	-11 25	-1 20	-12 49	2 34	2 8	-0 41	-10 56	-0 37	-19 42	3 17
4	11 13 3	10 9 11	8 17 8	-3 19	-0 49	-2 38	3 41	21 11	-0 29	-10 5	-1 23	-12 48	2 34	2 12	-0 40	-10 53	-0 37	-19 42	3 17
7	11 13 12	10 9 18	8 17 11	-2 22	-0 48	-4 1	3 27	21 14	-0 28	-8 41	-1 24	-12 46	2 35	2 15	-0 40	-10 51	-0 37	-19 41	3 17
10	11 13 22	10 9 25	8 17 15	-1 25	-0 46	-5 30	2 58	21 18	-0 27	-7 16	-1 26	-12 43	2 36	2 19	-0 40	-10 49	-0 37	-19 41	3 17
13	11 13 32	10 9 31	8 17 17	-0 28	-0 45	-6 51	2 18	21 22	-0 27	-5 49	-1 26	-12 41	2 36	2 23	-0 40	-10 46	-0 37	-19 41	3 17
16	11 13 42	10 9 38	8 17 20	0 29	-0 43	-7 55	1 35	21 26	-0 26	-4 21	-1 26	-12 38	2 37	2 27	-0 40	-10 44	-0 37	-19 41	3 17
19	11 13 52	10 9 44	8 17 23	1 26	-0 42	-8 38	0 51	21 30	-0 26	-2 52	-1 26	-12 35	2 37	2 31	-0 40	-10 42	-0 37	-19 40	3 17
22	11 14 2	10 9 50	8 17 25	2 23	-0 40	-9 0	0 9	21 34	-0 25	-1 22	-1 24	-12 32	2 38	2 35	-0 40	-10 40	-0 37	-19 40	3 17
25	11 14 13	10 9 56	8 17 27	3 19	-0 38	-9 1	-0 28	21 39	-0 25	0 9	-1 23	-12 29	2 38	2 40	-0 40	-10 37	-0 37	-19 40	3 17
28	11 14 23	10 10 2	8 17 28	4 15	-0 37	-8 44	-1 1	21 43	-0 24	1 40	-1 20	-12 25	2 39	2 44	-0 40	-10 35	-0 37	-19 40	3 17
31	11 14 33	10 10 8	8 17 29	5 10	-0 35	-8 10	-1 28	21 48	-0 24	3 10	-1 18	-12 22	2 39	2 48	-0 40	-10 33	-0 37	-19 40	3 17

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2013 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2013 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 14 37	10 10 10	8 17 30	5 28	-0 34	-7 55	-1 37	21 49	-0 23	3 40	-1 17	-12 20	2 39	2 49	-0 40	-10 32	-0 37	-19 40	3 17
4	11 14 47	10 10 16	8 17 31	6 23	-0 32	-7 1	-1 58	21 54	-0 23	5 10	-1 13	-12 16	2 40	2 53	-0 40	-10 31	-0 37	-19 40	3 17
7	11 14 57	10 10 21	8 17 31	7 16	-0 31	-5 53	-2 15	21 58	-0 23	6 38	-1 9	-12 12	2 40	2 57	-0 40	-10 29	-0 37	-19 40	3 17
10	11 15 7	10 10 27	8 17 32	8 9	-0 29	-4 32	-2 27	22 2	-0 22	8 6	-1 5	-12 8	2 40	3 1	-0 40	-10 27	-0 37	-19 40	3 17
13	11 15 17	10 10 32	8 17 32	9 1	-0 27	-2 59	-2 34	22 7	-0 22	9 31	-1 0	-12 4	2 41	3 5	-0 40	-10 25	-0 38	-19 40	3 17
16	11 15 27	10 10 36	8 17 32	9 53	-0 25	-1 16	-2 36	22 11	-0 21	10 55	-0 54	-12 0	2 41	3 9	-0 40	-10 23	-0 38	-19 40	3 17
19	11 15 37	10 10 41	8 17 31	10 43	-0 23	0 37	-2 34	22 15	-0 21	12 17	-0 49	-11 56	2 41	3 13	-0 40	-10 22	-0 38	-19 40	3 17
22	11 15 47	10 10 45	8 17 31	11 32	-0 21	2 39	-2 27	22 20	-0 20	13 35	-0 43	-11 51	2 41	3 17	-0 40	-10 20	-0 38	-19 40	3 17
25	11 15 57	10 10 50	8 17 30	12 20	-0 20	4 50	-2 15	22 24	-0 20	14 51	-0 36	-11 47	2 41	3 20	-0 40	-10 19	-0 38	-19 40	3 17
28	11 16 6	10 10 54	8 17 28	13 7	-0 18	7 7	-1 59	22 28	-0 20	16 3	-0 30	-11 43	2 41	3 24	-0 40	-10 17	-0 38	-19 40	3 17
मई 1	11 16 15	10 10 57	8 17 27	13 52	-0 16	9 30	-1 38	22 32	-0 19	17 12	-0 23	-11 38	2 41	3 28	-0 40	-10 16	-0 38	-19 40	3 17
4	11 16 25	10 11 1	8 17 25	14 37	-0 14	11 55	-1 14	22 36	-0 19	18 17	-0 16	-11 34	2 41	3 31	-0 40	-10 15	-0 38	-19 40	3 17
7	11 16 33	10 11 4	8 17 23	15 20	-0 12	14 22	-0 45	22 39	-0 18	19 17	-0 9	-11 30	2 41	3 35	-0 40	-10 14	-0 38	-19 40	3 17
10	11 16 42	10 11 7	8 17 21	16 1	-0 10	16 45	-0 15	22 43	-0 18	20 13	-0 1	-11 26	2 40	3 38	-0 40	-10 13	-0 38	-19 41	3 17
13	11 16 50	10 11 9	8 17 18	16 41	-0 8	18 59	0 17	22 46	-0 18	21 4	0 6	-11 22	2 40	3 41	-0 41	-10 12	-0 38	-19 41	3 17
16	11 16 59	10 11 12	8 17 16	17 20	-0 6	20 59	0 48	22 49	-0 17	21 50	0 13	-11 18	2 40	3 44	-0 41	-10 11	-0 39	-19 41	3 17
19	11 17 6	10 11 14	8 17 13	17 57	-0 4	22 40	1 16	22 52	-0 17	22 30	0 21	-11 14	2 39	3 47	-0 41	-10 11	-0 39	-19 41	3 17
22	11 17 14	10 11 15	8 17 10	18 32	-0 2	23 59	1 39	22 55	-0 17	23 5	0 28	-11 11	2 39	3 50	-0 41	-10 10	-0 39	-19 42	3 17
25	11 17 21	10 11 17	8 17 6	19 6	-0 0	24 55	1 57	22 58	-0 16	23 33	0 35	-11 8	2 39	3 53	-0 41	-10 10	-0 39	-19 42	3 17
28	11 17 28	10 11 18	8 17 3	19 38	0 2	25 27	2 8	23 0	-0 16	23 56	0 42	-11 4	2 38	3 56	-0 41	-10 9	-0 39	-19 43	3 16
31	11 17 35	10 11 19	8 16 59	20 8	0 4	25 38	2 11	23 2	-0 16	24 12	0 49	-11 1	2 38	3 58	-0 41	-10 9	-0 39	-19 43	3 16
जून 1	11 17 37	10 11 19	8 16 58	20 18	0 4	25 37	2 11	23 3	-0 16	24 16	0 51	-11 1	2 37	3 59	-0 41	-10 9	-0 39	-19 43	3 16
4	11 17 43	10 11 19	8 16 54	20 46	0 6	25 24	2 5	23 5	-0 15	24 24	0 58	-10 58	2 37	4 1	-0 41	-10 9	-0 39	-19 44	3 16
7	11 17 49	10 11 20	8 16 50	21 12	0 8	24 57	1 53	23 7	-0 15	24 25	1 4	-10 56	2 36	4 4	-0 41	-10 9	-0 39	-19 44	3 16
10	11 17 54	10 11 19	8 16 46	21 36	0 10	24 18	1 33	23 8	-0 15	24 19	1 10	-10 53	2 36	4 6	-0 41	-10 9	-0 39	-19 45	3 16
13	11 18 0	10 11 19	8 16 42	21 59	0 12	23 32	1 7	23 10	-0 14	24 8	1 15	-10 52	2 35	4 8	-0 41	-10 9	-0 39	-19 45	3 16
16	11 18 4	10 11 18	8 16 38	22 19	0 14	22 39	0 34	23 11	-0 14	23 50	1 20	-10 50	2 34	4 9	-0 41	-10 10	-0 40	-19 46	3 15
19	11 18 9	10 11 17	8 16 33	22 38	0 16	21 44	-0 4	23 12	-0 14	23 25	1 24	-10 49	2 33	4 11	-0 41	-10 10	-0 40	-19 46	3 15
22	11 18 12	10 11 16	8 16 29	22 54	0 18	20 49	-0 47	23 12	-0 13	22 55	1 28	-10 48	2 33	4 12	-0 42	-10 11	-0 40	-19 47	3 15
25	11 18 16	10 11 15	8 16 24	23 9	0 20	19 56	-1 34	23 13	-0 13	22 19	1 32	-10 47	2 32	4 14	-0 42	-10 11	-0 40	-19 47	3 15
28	11 18 19	10 11 13	8 16 20	23 22	0 22	19 8	-2 22	23 13	-0 13	21 37	1 34	-10 47	2 31	4 15	-0 42	-10 12	-0 40	-19 48	3 14

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2013 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2013 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 18 22	10 11 11	8 16 15	23 33	0 23	18 28	-3 9	23 13	-0 13	20 49	1 37	-10 47	2 30	4 16	-0 42	-10 13	-0 40	-19 49	3 14
4	11 18 24	10 11 8	8 16 11	23 42	0 25	17 58	-3 51	23 13	-0 12	19 57	1 38	-10 47	2 30	4 16	-0 42	-10 14	-0 40	-19 49	3 14
7	11 18 26	10 11 6	8 16 6	23 49	0 27	17 39	-4 25	23 13	-0 12	18 59	1 39	-10 47	2 29	4 17	-0 42	-10 15	-0 40	-19 50	3 13
10	11 18 27	10 11 3	8 16 2	23 54	0 29	17 33	-4 47	23 12	-0 12	17 57	1 40	-10 48	2 28	4 17	-0 42	-10 16	-0 40	-19 51	3 13
13	11 18 28	10 11 0	8 15 57	23 57	0 31	17 38	-4 54	23 11	-0 12	16 51	1 39	-10 49	2 27	4 18	-0 42	-10 17	-0 40	-19 51	3 13
16	11 18 28	10 10 57	8 15 53	23 58	0 33	17 54	-4 47	23 10	-0 11	15 40	1 38	-10 50	2 26	4 18	-0 42	-10 18	-0 40	-19 52	3 12
19	11 18 28	10 10 53	8 15 48	23 57	0 34	18 20	-4 27	23 9	-0 11	14 27	1 36	-10 52	2 26	4 18	-0 42	-10 20	-0 40	-19 53	3 12
22	11 18 28	10 10 49	8 15 44	23 55	0 36	18 51	-3 55	23 8	-0 11	13 9	1 34	-10 54	2 25	4 18	-0 42	-10 21	-0 41	-19 53	3 12
25	11 18 27	10 10 46	8 15 40	23 51	0 38	19 25	-3 16	23 6	-0 10	11 49	1 30	-10 56	2 24	4 17	-0 43	-10 23	-0 41	-19 54	3 11
28	11 18 26	10 10 42	8 15 36	23 45	0 40	19 58	-2 33	23 4	-0 10	10 26	1 27	-10 59	2 23	4 17	-0 43	-10 24	-0 41	-19 55	3 11
31	11 18 24	10 10 37	8 15 32	23 37	0 42	20 24	-1 47	23 2	-0 10	9 1	1 22	-11 2	2 22	4 16	-0 43	-10 26	-0 41	-19 56	3 10
अगस्त 1	11 18 23	10 10 36	8 15 31	23 34	0 42	20 31	-1 32	23 2	-0 10	8 32	1 20	-11 3	2 22	4 16	-0 43	-10 26	-0 41	-19 56	3 10
4	11 18 21	10 10 32	8 15 27	23 24	0 44	20 41	-0 47	23 0	-0 10	7 5	1 15	-11 6	2 21	4 15	-0 43	-10 28	-0 41	-19 57	3 10
7	11 18 18	10 10 27	8 15 23	23 12	0 46	20 34	-0 5	22 57	-0 9	5 35	1 8	-11 9	2 21	4 13	-0 43	-10 30	-0 41	-19 57	3 9
10	11 18 15	10 10 22	8 15 20	22 58	0 47	20 6	0 32	22 55	-0 9	4 4	1 1	-11 13	2 20	4 12	-0 43	-10 31	-0 41	-19 58	3 9
13	11 18 12	10 10 18	8 15 17	22 43	0 49	19 13	1 2	22 53	-0 9	2 33	0 54	-11 17	2 19	4 11	-0 43	-10 33	-0 41	-19 59	3 8
16	11 18 8	10 10 13	8 15 14	22 27	0 51	17 57	1 24	22 50	-0 9	1 0	0 46	-11 21	2 18	4 9	-0 43	-10 35	-0 41	-19 59	3 8
19	11 18 4	10 10 8	8 15 11	22 9	0 53	16 21	1 38	22 47	-0 8	-0 32	0 37	-11 25	2 18	4 8	-0 43	-10 37	-0 41	-20 0	3 7
22	11 17 59	10 10 3	8 15 8	21 49	0 54	14 27	1 45	22 45	-0 8	-2 5	0 28	-11 30	2 17	4 6	-0 43	-10 38	-0 41	-20 1	3 7
25	11 17 55	10 9 58	8 15 6	21 28	0 56	12 22	1 45	22 42	-0 8	-3 38	0 18	-11 34	2 16	4 4	-0 43	-10 40	-0 41	-20 2	3 6
28	11 17 49	10 9 53	8 15 4	21 6	0 58	10 8	1 40	22 39	-0 8	-5 10	0 7	-11 39	2 16	4 2	-0 43	-10 42	-0 41	-20 2	3 6
31	11 17 44	10 9 48	8 15 2	20 42	0 59	7 50	1 30	22 36	-0 7	-6 41	-0 3	-11 45	2 15	3 59	-0 43	-10 44	-0 41	-20 3	3 5
सितं. 1	11 17 42	10 9 47	8 15 1	20 34	1 0	7 3	1 25	22 35	-0 7	-7 11	-0 7	-11 46	2 15	3 59	-0 43	-10 45	-0 41	-20 3	3 5
4	11 17 36	10 9 42	8 15 0	20 9	1 2	4 42	1 11	22 32	-0 7	-8 41	-0 18	-11 52	2 14	3 56	-0 44	-10 46	-0 41	-20 4	3 4
7	11 17 30	10 9 37	8 14 58	19 43	1 3	2 21	0 53	22 29	-0 7	-10 10	-0 30	-11 57	2 14	3 54	-0 44	-10 48	-0 41	-20 5	3 4
10	11 17 24	10 9 32	8 14 57	19 15	1 5	0 3	0 33	22 26	-0 6	-11 36	-0 42	-12 3	2 13	3 51	-0 44	-10 50	-0 41	-20 5	3 3
13	11 17 17	10 9 27	8 14 56	18 47	1 7	-2 13	0 12	22 23	-0 6	-13 0	-0 54	-12 9	2 13	3 49	-0 44	-10 52	-0 41	-20 6	3 2
16	11 17 10	10 9 23	8 14 56	18 17	1 8	-4 25	-0 10	22 20	-0 6	-14 22	-1 6	-12 15	2 12	3 46	-0 44	-10 53	-0 41	-20 6	3 2
19	11 17 4	10 9 18	8 14 56	17 47	1 10	-6 33	-0 33	22 17	-0 6	-15 42	-1 18	-12 21	2 12	3 44	-0 44	-10 55	-0 41	-20 7	3 1
22	11 16 57	10 9 14	8 14 56	17 16	1 11	-8 35	-0 56	22 14	-0 5	-16 58	-1 30	-12 27	2 11	3 41	-0 44	-10 57	-0 41	-20 8	3 1
25	11 16 49	10 9 10	8 14 56	16 44	1 13	-10 31	-1 19	22 12	-0 5	-18 11	-1 42	-12 33	2 11	3 38	-0 44	-10 58	-0 41	-20 8	3 0
28	11 16 42	10 9 6	8 14 56	16 11	1 15	-12 21	-1 41	22 9	-0 5	-19 20	-1 55	-12 39	2 10	3 35	-0 44	-11 0	-0 41	-20 9	3 0

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-[illegible]

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2013 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2013 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 16 35	10 9 2	8 14 57	15 37	1 16	-14 4	-2 3	22 6	-0 4	-20 26	-2 6	-12 46	2 10	3 32	-0 44	-11 1	-0 41	-20 9	2 59
4	11 16 28	10 8 58	8 14 58	15 3	1 18	-15 37	-2 23	22 4	-0 4	-21 27	-2 18	-12 52	2 9	3 30	-0 44	-11 2	-0 41	-20 10	2 58
7	11 16 20	10 8 54	8 15 0	14 28	1 20	-17 1	-2 41	22 2	-0 4	-22 24	-2 29	-12 59	2 9	3 27	-0 44	-11 4	-0 41	-20 10	2 58
10	11 16 13	10 8 51	8 15 1	13 53	1 21	-18 14	-2 56	22 0	-0 3	-23 16	-2 40	-13 5	2 9	3 24	-0 44	-11 5	-0 41	-20 11	2 57
13	11 16 6	10 8 48	8 15 3	13 17	1 23	-19 13	-3 8	21 58	-0 3	-24 4	-2 50	-13 12	2 8	3 21	-0 44	-11 6	-0 41	-20 11	2 57
16	11 15 59	10 8 45	8 15 6	12 41	1 25	-19 56	-3 14	21 56	-0 3	-24 46	-3 0	-13 18	2 8	3 18	-0 44	-11 7	-0 41	-20 11	2 56
19	11 15 52	10 8 43	8 15 8	12 4	1 26	-20 18	-3 13	21 55	-0 3	-25 23	-3 9	-13 25	2 8	3 16	-0 44	-11 8	-0 41	-20 12	2 56
22	11 15 45	10 8 40	8 15 11	11 27	1 28	-20 13	-3 3	21 54	-0 2	-25 54	-3 17	-13 31	2 8	3 13	-0 43	-11 9	-0 41	-20 12	2 55
25	11 15 38	10 8 38	8 15 14	10 49	1 29	-19 36	-2 40	21 53	-0 2	-26 21	-3 25	-13 38	2 8	3 10	-0 43	-11 9	-0 41	-20 13	2 54
28	11 15 32	10 8 36	8 15 17	10 12	1 31	-18 21	-2 1	21 52	-0 1	-26 41	-3 31	-13 45	2 7	3 8	-0 43	-11 10	-0 41	-20 13	2 54
31	11 15 26	10 8 35	8 15 21	9 34	1 33	-16 30	-1 8	21 52	-0 1	-26 56	-3 37	-13 51	2 7	3 6	-0 43	-11 10	-0 41	-20 13	2 53
नवं. 1	11 15 24	10 8 34	8 15 22	9 22	1 33	-15 47	-0 48	21 52	-0 1	-27 0	-3 38	-13 53	2 7	3 5	-0 43	-11 11	-0 41	-20 13	2 53
4	11 15 18	10 8 33	8 15 26	8 44	1 35	-13 36	0 13	21 52	-0 1	-27 7	-3 42	-14 0	2 7	3 3	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 53
7	11 15 12	10 8 32	8 15 30	8 6	1 37	-11 45	1 9	21 52	-0 0	-27 10	-3 44	-14 6	2 7	3 0	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 52
10	11 15 7	10 8 32	8 15 34	7 28	1 38	-10 39	1 49	21 52	0 0	-27 6	-3 45	-14 13	2 7	2 58	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 52
13	11 15 2	10 8 32	8 15 38	6 50	1 40	-10 24	2 13	21 53	0 1	-26 58	-3 44	-14 19	2 7	2 56	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 51
16	11 14 57	10 8 32	8 15 43	6 12	1 42	-10 51	2 22	21 54	0 1	-26 45	-3 42	-14 25	2 7	2 55	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 51
19	11 14 53	10 8 32	8 15 48	5 35	1 44	-11 49	2 20	21 56	0 1	-26 28	-3 37	-14 31	2 7	2 53	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 50
22	11 14 49	10 8 33	8 15 53	4 57	1 45	-13 5	2 10	21 57	0 2	-26 6	-3 31	-14 37	2 7	2 52	-0 43	-11 11	-0 41	-20 14	2 50
25	11 14 45	10 8 34	8 15 58	4 20	1 47	-14 31	1 55	21 59	0 2	-25 40	-3 22	-14 43	2 7	2 50	-0 43	-11 10	-0 41	-20 15	2 49
28	11 14 42	10 8 35	8 16 4	3 44	1 49	-16 1	1 36	22 1	0 3	-25 11	-3 11	-14 49	2 7	2 49	-0 42	-11 10	-0 41	-20 15	2 49
दिसं. 1	11 14 39	10 8 37	8 16 9	3 7	1 51	-17 29	1 16	22 3	0 3	-24 39	-2 57	-14 55	2 7	2 48	-0 42	-11 9	-0 41	-20 15	2 48
4	11 14 37	10 8 39	8 16 15	2 31	1 52	-18 53	0 55	22 6	0 3	-24 4	-2 41	-15 0	2 8	2 47	-0 42	-11 9	-0 41	-20 15	2 48
7	11 14 35	10 8 41	8 16 21	1 55	1 54	-20 12	0 33	22 9	0 4	-23 27	-2 21	-15 6	2 8	2 47	-0 42	-11 8	-0 41	-20 15	2 48
10	11 14 34	10 8 43	8 16 26	1 20	1 56	-21 22	0 12	22 11	0 4	-22 49	-1 58	-15 11	2 8	2 46	-0 42	-11 7	-0 41	-20 15	2 47
13	11 14 33	10 8 46	8 16 32	0 46	1 58	-22 24	-0 9	22 14	0 5	-22 10	-1 32	-15 16	2 8	2 46	-0 42	-11 6	-0 41	-20 14	2 47
16	11 14 32	10 8 49	8 16 39	0 12	2 0	-23 16	-0 30	22 18	0 5	-21 30	-1 2	-15 21	2 8	2 46	-0 42	-11 5	-0 40	-20 14	2 46
19	11 14 32	10 8 53	8 16 45	-0 21	2 2	-23 58	-0 48	22 21	0 6	-20 51	-0 28	-15 26	2 9	2 46	-0 42	-11 3	-0 40	-20 14	2 46
22	11 14 33	10 8 56	8 16 51	-0 54	2 4	-24 29	-1 6	22 24	0 6	-20 12	0 10	-15 30	2 9	2 46	-0 42	-11 2	-0 40	-20 14	2 46
25	11 14 33	10 9 0	8 16 57	-1 25	2 6	-24 48	-1 22	22 27	0 6	-19 34	0 51	-15 35	2 9	2 47	-0 41	-11 1	-0 40	-20 14	2 45
28	11 14 35	10 9 4	8 17 4	-1 56	2 8	-24 55	-1 36	22 31	0 7	-18 58	1 35	-15 39	2 10	2 47	-0 41	-10 59	-0 40	-20 14	2 45
31	11 14 37	10 9 9	8 17 10	-2 26	2 10	-24 49	-1 48	22 34	0 7	-18 24	2 21	-15 43	2 10	2 48	-0 41	-10 57	-0 40	-20 13	2 45

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2014 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2014 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल क्रांति	मंगल शर	बुध क्रांति	बुध शर	गुरु क्रांति	गुरु शर	शुक्र क्रांति	शुक्र शर	शनि क्रांति	शनि शर	यूरेनस क्रांति	यूरेनस शर	नेप्च्यून क्रांति	नेप्च्यून शर	प्लूटो क्रांति	प्लूटो शर
2014 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 14 37	10 9 10	8 17 12	-2 36	2 10	-24 44	-1 51	22 35	0 7	-18 13	2 36	-15 44	2 10	2 49	-0 41	-10 57	-0 40	-20 13	2 45
4	11 14 40	10 9 15	8 17 18	-3 5	2 12	-24 21	-2 0	22 38	0 8	-17 42	3 23	-15 48	2 11	2 50	-0 41	-10 55	-0 40	-20 13	2 44
7	11 14 43	10 9 20	8 17 25	-3 33	2 14	-23 43	-2 5	22 42	0 8	-17 14	4 9	-15 52	2 11	2 51	-0 41	-10 53	-0 40	-20 13	2 44
10	11 14 46	10 9 25	8 17 31	-4 0	2 17	-22 52	-2 7	22 45	0 9	-16 49	4 52	-15 55	2 11	2 52	-0 41	-10 51	-0 40	-20 13	2 44
13	11 14 50	10 9 31	8 17 37	-4 25	2 19	-21 47	-2 5	22 48	0 9	-16 28	5 29	-15 59	2 12	2 54	-0 41	-10 49	-0 40	-20 12	2 44
16	11 14 54	10 9 36	8 17 43	-4 50	2 21	-20 28	-1 59	22 51	0 10	-16 12	6 1	-16 1	2 12	2 56	-0 41	-10 47	-0 40	-20 12	2 43
19	11 14 59	10 9 42	8 17 50	-5 13	2 23	-18 56	-1 47	22 54	0 10	-15 59	6 26	-16 4	2 13	2 58	-0 40	-10 45	-0 40	-20 12	2 43
22	11 15 4	10 9 48	8 17 56	-5 35	2 25	-17 13	-1 28	22 56	0 10	-15 51	6 43	-16 7	2 13	3 0	-0 40	-10 43	-0 40	-20 11	2 43
25	11 15 9	10 9 54	8 18 2	-5 56	2 27	-15 21	-1 3	22 59	0 11	-15 47	6 54	-16 9	2 14	3 2	-0 40	-10 41	-0 40	-20 11	2 43
28	11 15 15	10 10 0	8 18 8	-6 15	2 29	-13 25	-0 31	23 1	0 11	-15 47	6 58	-16 11	2 15	3 4	-0 40	-10 39	-0 40	-20 11	2 43
31	11 15 21	10 10 6	8 18 13	-6 33	2 31	-11 32	0 10	23 3	0 11	-15 49	6 57	-16 13	2 15	3 7	-0 40	-10 36	-0 40	-20 10	2 42
फर. 1	11 15 23	10 10 8	8 18 15	-6 38	2 32	-10 57	0 25	23 4	0 11	-15 51	6 56	-16 14	2 15	3 8	-0 40	-10 36	-0 40	-20 10	2 42
4	11 15 30	10 10 15	8 18 21	-6 54	2 34	-9 25	1 13	23 6	0 12	-15 57	6 49	-16 15	2 16	3 10	-0 40	-10 33	-0 40	-20 10	2 42
7	11 15 37	10 10 22	8 18 26	-7 8	2 36	-8 21	2 4	23 8	0 12	-16 4	6 38	-16 17	2 17	3 13	-0 40	-10 31	-0 40	-20 10	2 42
10	11 15 44	10 10 28	8 18 31	-7 21	2 38	-7 56	2 51	23 9	0 12	-16 13	6 24	-16 18	2 17	3 16	-0 40	-10 28	-0 40	-20 9	2 42
13	11 15 52	10 10 35	8 18 37	-7 32	2 40	-8 13	3 26	23 11	0 13	-16 21	6 9	-16 19	2 18	3 19	-0 40	-10 26	-0 40	-20 9	2 42
16	11 16 0	10 10 42	8 18 42	-7 41	2 42	-9 4	3 42	23 12	0 13	-16 28	5 51	-16 19	2 18	3 23	-0 40	-10 23	-0 40	-20 8	2 42
19	11 16 8	10 10 48	8 18 46	-7 48	2 44	-10 15	3 38	23 13	0 13	-16 34	5 32	-16 20	2 19	3 26	-0 39	-10 21	-0 40	-20 8	2 42
22	11 16 17	10 10 55	8 18 51	-7 53	2 46	-11 29	3 16	23 14	0 14	-16 37	5 13	-16 20	2 20	3 29	-0 39	-10 19	-0 40	-20 8	2 42
25	11 16 26	10 11 2	8 18 55	-7 57	2 47	-12 35	2 42	23 15	0 14	-16 39	4 52	-16 20	2 20	3 33	-0 39	-10 16	-0 40	-20 7	2 41
28	11 16 35	10 11 9	8 18 59	-7 58	2 49	-13 26	2 3	23 15	0 14	-16 37	4 32	-16 20	2 21	3 36	-0 39	-10 14	-0 40	-20 7	2 41
मार्च 1	11 16 38	10 11 11	8 19 1	-7 58	2 49	-13 39	1 49	23 15	0 14	-16 36	4 25	-16 19	2 21	3 38	-0 39	-10 13	-0 40	-20 7	2 41
4	11 16 47	10 11 18	8 19 5	-7 56	2 50	-14 6	1 9	23 16	0 14	-16 29	4 4	-16 19	2 22	3 41	-0 39	-10 10	-0 40	-20 7	2 41
7	11 16 57	10 11 25	8 19 8	-7 52	2 51	-14 16	0 31	23 16	0 15	-16 19	3 42	-16 18	2 22	3 45	-0 39	-10 8	-0 40	-20 7	2 41
10	11 17 6	10 11 32	8 19 11	-7 46	2 51	-14 10	-0 4	23 16	0 15	-16 6	3 21	-16 17	2 23	3 49	-0 39	-10 5	-0 40	-20 6	2 41
13	11 17 16	10 11 38	8 19 15	-7 38	2 51	-13 49	-0 36	23 16	0 15	-15 48	3 1	-16 16	2 23	3 53	-0 39	-10 3	-0 41	-20 6	2 41
16	11 17 26	10 11 45	8 19 17	-7 28	2 51	-13 13	-1 4	23 16	0 15	-15 26	2 40	-16 14	2 24	3 57	-0 39	-10 1	-0 41	-20 6	2 41
19	11 17 36	10 11 51	8 19 20	-7 16	2 50	-12 24	-1 28	23 16	0 16	-15 0	2 20	-16 13	2 25	4 1	-0 39	-9 58	-0 41	-20 6	2 41
22	11 17 46	10 11 58	8 19 22	-7 2	2 49	-11 22	-1 47	23 15	0 16	-14 29	2 0	-16 11	2 25	4 5	-0 39	-9 56	-0 41	-20 5	2 41
25	11 17 56	10 12 4	8 19 24	-6 46	2 47	-10 7	-2 3	23 15	0 16	-13 55	1 41	-16 9	2 26	4 9	-0 39	-9 54	-0 41	-20 5	2 41
28	11 18 6	10 12 10	8 19 26	-6 28	2 45	-8 41	-2 15	23 14	0 16	-13 16	1 22	-16 7	2 26	4 13	-0 39	-9 52	-0 41	-20 5	2 41
31	11 18 17	10 12 16	8 19 28	-6 9	2 41	-7 4	-2 22	23 13	0 16	-12 33	1 4	-16 4	2 26	4 17	-0 39	-9 49	-0 41	-20 5	2 41

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gagh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax. 0160-

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र-चरण–चार (1 जनवरी, 2013 से 31 मार्च, 2014 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2013–2014 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	5 01
4		पू.षा.	3	11 31
7		पू.षा.	4	18 00
11		उ.षा.	1	0 29
14	मकर	उ.षा.	2	6 59
17		उ.षा.	3	13 31
20		उ.षा.	4	20 06
24		श्रव.	1	2 46
27		श्रव.	2	9 29
30		श्रव.	3	16 16
फरवरी 2		श्रव.	4	23 06
6		धनि.	1	5 59
9		धनि.	2	12 57
12	कुम्भ	धनि.	3	20 00
16		धनि.	4	3 10
19		शत.	1	10 27
22		शत.	2	17 52
26		शत.	3	1 24
मार्च 1		शत.	4	9 05
4		पू.भा.	1	16 51
8		पू.भा.	2	0 45
11		पू.भा.	3	8 46
14	मीन	पू.भा.	4	16 56
18		उ.भा.	1	1 15
21		उ.भा.	2	9 44
24		उ.भा.	3	18 23
28		उ.भा.	4	3 12
31		रेव.	1	12 11
अप्रैल 3		रेव.	2	21 17
7		रेव.	3	6 32
10		रेव.	4	15 55

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	1 28
17		अश्वि.	2	11 11
20		अश्वि.	3	21 05
24		अश्वि.	4	7 08
27		भर.	1	17 21
मई 1		भर.	2	3 43
4		भर.	3	14 11
8		भर.	4	0 47
11		कृत्ति.	1	11 30
14	वृष	कृत्ति.	2	22 21
18		कृत्ति.	3	9 20
21		कृत्ति.	4	20 28
25		रोहि.	1	7 43
28		रोहि.	2	19 05
जून 1		रोहि.	3	6 31
4		रोहि.	4	18 01
8		मृग.	1	5 35
11		मृग.	2	17 13
15	मिथुन	मृग.	3	4 55
18		मृग.	4	16 42
22		आर्द्रा	1	4 33
25		आर्द्रा	2	16 27
29		आर्द्रा	3	4 21
जुलाई 2		आर्द्रा	4	16 16
6		पुन.	1	4 09
9		पुन.	2	16 01
13		पुन.	3	3 53
16	कर्क	पुन.	4	15 45
20		पुष्य	1	3 37
23		पुष्य	2	15 27
27		पुष्य	3	3 13

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 30		पुष्य	4	14 56
अगस्त 3		आश्ले.	1	2 32
6		आश्ले.	2	14 04
10		आश्ले.	3	1 29
13		आश्ले.	4	12 51
17	सिंह	मघा	1	0 07
20		मघा	2	11 19
23		मघा	3	22 24
27		मघा	4	9 21
30		पू.फा.	1	20 09
सितंबर 3		पू.फा.	2	6 48
6		पू.फा.	3	17 19
10		पू.फा.	4	3 41
13		उ.फा.	1	13 55
17	कन्या	उ.फा.	2	0 03
20		उ.फा.	3	10 01
23		उ.फा.	4	19 51
27		हस्त	1	5 30
30		हस्त	2	14 59
अक्तूबर 4		हस्त	3	0 17
7		हस्त	4	9 25
10		चित्रा	1	18 25
14		चित्रा	2	3 16
17	तुला	चित्रा	3	12 00
20		चित्रा	4	20 34
24		स्वाती	1	5 00
27		स्वाती	2	13 15
30		स्वाती	3	21 21
नवंबर 3		स्वाती	4	5 17
6		विशा.	1	13 05
9		विशा.	2	20 46

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 13		विशा.	3	4 20
16	वृश्चिक	विशा.	4	11 48
19		अनु.	1	19 10
23		अनु.	2	2 25
26		अनु.	3	9 32
29		अनु.	4	16 33
दिसंबर 2		ज्येष्ठा	1	23 28
6		ज्येष्ठा	2	6 17
9		ज्येष्ठा	3	13 03
12		ज्येष्ठा	4	19 47
16	धनु	मूल	1	2 27
19		मूल	2	9 06
22		मूल	3	15 41
25		मूल	4	22 14
29		पू.षा.	1	4 44
सन् 2014 ई.				
जनवरी 1		पू.षा.	2	11 12
4		पू.षा.	3	17 40
8		पू.षा.	4	0 09
11		उ.षा.	1	6 39
14	मकर	उ.षा.	2	13 12
17		उ.षा.	3	19 47
21		उ.षा.	4	2 24
24		श्रव.	1	9 02
27		श्रव.	2	15 43
30		श्रव.	3	22 27
फरवरी 3		श्रव.	4	5 14
6		धनि.	1	12 07
9		धनि.	2	19 08
13	कुम्भ	धनि.	3	2 12
16		धनि.	4	9 25

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र-चरण–चार (1 जनवरी, 2013 से 31 मार्च, 2014 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2014 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 19		शत.	1	16 43
23		शत.	2	0 07
26		शत.	3	7 37
मार्च 1		शत.	4	15 13
4		पू.भा.	1	22 58
8		पू.भा.	2	6 51
11		पू.भा.	3	14 53
14	मीन	पू.भा.	4	23 06
18		उ.भा.	1	7 27
21		उ.भा.	2	15 57
25		उ.भा.	3	0 35
28		उ.भा.	4	9 21
31		रेव.	1	18 16

मंगल–चार (सन् 2013 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 4		श्रव.	2	15 48
8		श्रव.	3	21 23
13		श्रव.	4	2 48
17		धनि.	1	8 06
21		धनि.	2	13 20
25	कुम्भ	धनि.	3	18 32
29		धनि.	4	23 45
फरवरी 3		शत.	1	4 58
7		शत.	2	10 14
11		शत.	3	15 33
15		शत.	4	21 00
20		पू.भा.	1	2 36
24		पू.भा.	2	8 24
28		पू.भा.	3	14 24
मार्च 4	मीन	पू.भा.	4	20 39
9		उ.भा.	1	3 07

मंगल–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 13		उ.भा.	2	9 53
17		उ.भा.	3	16 58
22		उ.भा.	4	0 24
26		रेव.	1	8 13
30		रेव.	2	16 26
अप्रैल 4		रेव.	3	1 04
8		रेव.	4	10 06
12	मेष	अश्वि.	1	19 36
17		अश्वि.	2	5 35
21		अश्वि.	3	16 06
26		अश्वि.	4	3 09
30		भर.	1	14 44
मई 5		भर.	2	2 51
9		भर.	3	15 32
14		भर.	4	4 48
18		कृत्ति.	1	18 41
23	वृष	कृत्ति.	2	9 12
28		कृत्ति.	3	0 21
जून 1		कृत्ति.	4	16 08
6		रोहि.	1	8 33
11		रोहि.	2	1 36
15		रोहि.	3	19 20
20		रोहि.	4	13 47
25		मृग.	1	8 55
30		मृग.	2	4 43
जुलाई 5	मिथुन	मृग.	3	1 12
9		मृग.	4	22 22
14		आर्द्रा	1	20 15
19		आर्द्रा	2	18 53
24		आर्द्रा	3	18 15
29		आर्द्रा	4	18 19

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अगस्त 3		पुन.	1	19 06
8		पुन.	2	20 36
13		पुन.	3	22 54
19	कर्क	पुन.	4	1 59
24		पुष्य	1	5 51
29		पुष्य	2	10 29
सितंबर 3		पुष्य	3	15 55
8		पुष्य	4	22 11
14		आश्ले.	1	5 23
19		आश्ले.	2	13 30
24		आश्ले.	3	22 33
30		आश्ले.	4	8 35
अक्तूबर 5	सिंह	मघा	1	19 40
11		मघा	2	7 56
16		मघा	3	21 29
22		मघा	4	12 21
28		पू.फा.	1	4 40
नवंबर 2		पू.फा.	2	22 35
8		पू.फा.	3	18 23
14		पू.फा.	4	16 18
20		उ.फा.	1	16 34
26	कन्या	उ.फा.	2	19 32
दिसंबर 3		उ.फा.	3	1 43
9		उ.फा.	4	11 52
16		हस्त	1	2 48
22		हस्त	2	23 36
30		हस्त	3	4 03
सन् 2014 ई.				
जनवरी 6		हस्त	4	19 04
15		चित्रा	1	1 20
24		चित्रा	2	7 42

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 4	तुला	चित्रा	3	14 19
25		चित्रा	4	1 36
मार्च 1	वक्री			21 55
6		चित्रा	3	16 24
25	कन्या	चित्रा	2	9 52

बुध–चार (सन् 2013 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 1		मूल	3	6 35
3		मूल	4	10 12
5		पू.षा.	1	13 26
7		पू.षा.	2	16 13
9		पू.षा.	3	18 35
11		पू.षा.	4	20 28
13		उ.षा.	1	21 53
15	मकर	उ.षा.	2	22 47
17		उ.षा.	3	23 11
19		उ.षा.	4	23 04
21		श्रव.	1	22 27
23		श्रव.	2	21 20
25		श्रव.	3	19 46
27		श्रव.	4	17 48
29		धनि.	1	15 30
31		धनि.	2	13 01
फरवरी 2	कुम्भ	धनि.	3	10 28
4		धनि.	4	8 08
6		शत.	1	6 21
8		शत.	2	5 38
10		शत.	3	6 54
12		शत.	4	11 40
14		पू.भा.	1	23 00
18		पू.भा.	2	2 14

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2013 से 31 मार्च, 2014 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2013 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 23	वक्री			15 11	मई 16		कृत्ति.	4	10 04	अगस्त 17		आश्ले.	3	21 47	नवंबर 1		स्वाती	3	4 36
मार्च 1		पू.भा.	1	7 24	17		रोहि.	1	23 10	19		आश्ले.	4	13 22	3		स्वाती	2	19 29
4		शत.	4	19 58	19		रोहि.	2	12 46	21	सिंह	मघा	1	4 55	7		स्वाती	1	2 13
8		शत.	3	3 08	21		रोहि.	3	3 05	22		मघा	2	20 41	11	मार्गी			2 42
12		शत.	2	7 19	22		रोहि.	4	18 24	24		मघा	3	12 48	15		स्वाती	2	9 12
18	मार्गी			1 32	24		मृग.	1	10 54	26		मघा	4	5 24	19		स्वाती	3	2 46
24		शत.	3	5 57	26		मृग.	2	4 52	27		पू.फा.	1	22 39	21		स्वाती	4	23 06
29		शत.	4	1 05	28	मिथुन	मृग.	3	0 43	29		पू.फा.	2	16 36	24		विशा.	1	12 02
अप्रैल 1		पू.भा.	1	15 02	29		मृग.	4	22 43	31		पू.फा.	3	11 19	26		विशा.	2	21 13
4		पू.भा.	2	16 59	31		आर्द्रा	1	23 21	सितंबर 2		पू.फा.	4	6 54	29		विशा.	3	4 19
7		पू.भा.	3	11 52	जून 3		आर्द्रा	2	3 10	4		उ.फा.	1	3 25	दिसंबर 1	वृश्चिक	विशा.	4	10 05
10	मीन	पू.भा.	4	1 53	5		आर्द्रा	3	11 08	6	कन्या	उ.फा.	2	0 54	3		अनु.	1	15 03
12		उ.भा.	1	12 14	8		आर्द्रा	4	0 26	7		उ.फा.	3	23 25	5		अनु.	2	19 31
14		उ.भा.	2	19 41	10		पुन.	1	21 31	9		उ.फा.	4	22 58	7		अनु.	3	23 39
17		उ.भा.	3	0 46	14		पुन.	2	6 53	11		हस्त	1	23 38	10		अनु.	4	3 34
19		उ.भा.	4	3 46	18		पुन.	3	19 27	14		हस्त	2	1 27	12		ज्येष्ठा	1	7 20
21		रेव.	1	4 56	26	वक्री			16 38	16		हस्त	3	4 28	14		ज्येष्ठा	2	10 57
23		रेव.	2	4 26	जुलाई 5		पुन.	2	0 28	18		हस्त	4	8 48	16		ज्येष्ठा	3	14 26
25		रेव.	3	2 26	10		पुन.	1	12 36	20		चित्रा	1	14 31	18		ज्येष्ठा	4	17 46
26		रेव.	4	23 04	17		आर्द्रा	4	0 53	22		चित्रा	2	21 43	20	धनु	मूल	1	20 56
28	मेष	अश्वि.	1	18 26	20	मार्गी			23 51	25	तुला	चित्रा	3	6 35	22		मूल	2	23 54
30		अश्वि.	2	12 39	24		पुन.	1	18 21	27		चित्रा	4	17 27	25		मूल	3	2 40
मई 2		अश्वि.	3	5 50	30		पुन.	2	2 36	30		स्वाती	1	6 35	27		मूल	4	5 09
3		अश्वि.	4	21 57	अगस्त 2		पुन.	3	7 50	अक्तूबर 2		स्वाती	2	22 47	29		पू.षा.	1	7 21
5		भर.	1	13 14	4	कर्क	पुन.	4	21 29	5		स्वाती	3	19 05	31		पू.षा.	2	9 14
7		भर.	2	3 46	7		पुष्य	1	3 12	8		स्वाती	4	21 41	सन् 2014 ई.				
8		भर.	3	17 36	9		पुष्य	2	3 48	12		विशा.	1	11 56	जनवरी 2		पू.षा.	3	10 46
10		भर.	4	6 58	11		पुष्य	3	1 02	17		विशा.	2	13 04	4		पू.षा.	4	11 58
11		कृत्ति.	1	19 54	12		पुष्य	4	20 00	21	वक्री			15 59	6		उ.षा.	1	12 49
13	वृष	कृत्ति.	2	8 38	14		आश्ले.	1	13 28	25		विशा.	1	10 38	8	मकर	उ.षा.	2	13 19
14		कृत्ति.	3	21 18	16		आश्ले.	2	5 57	29		स्वाती	4	10 39	10		उ.षा.	3	13 31

181

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र—चरण—चार (1 जनवरी, 2013 से 31 मार्च, 2014 ई. तक)

बुध—चार (सन् 2014 ई.)

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 12		उ.षा.	4	13 28
14		श्रव.	1	13 15
16		श्रव.	2	13 00
18		श्रव.	3	12 56
20		श्रव.	4	13 20
22		धनि.	1	14 41
24		धनि.	2	17 45
26	कुम्भ	धनि.	3	23 54
29		धनि.	4	12 05
फरवरी 1		शत.	1	14 48
7	वक्री			3 12
12		धनि.	4	14 09
15		धनि.	3	19 05
18	मकर	धनि.	2	17 43
22		धनि.	1	5 23
28	मार्गी			19 30
मार्च 8		धनि.	2	3 02
12	कुम्भ	धनि.	3	9 34
15		धनि.	4	19 03
18		शत.	1	18 48
21		शत.	2	12 33
24		शत.	3	2 06
26		शत.	4	12 25
28		पू.भा.	1	20 10
31		पू.भा.	2	1 46

गुरु—चार (सन् 2013 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 5		रोहि.	1	17 22
30	मार्गी			17 08
फरवरी 24		रोहि.	2	21 25
मार्च 25		रोहि.	3	1 10

गुरु—चार (सन् 2013 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 13		रोहि.	4	17 40
30		मृग.	1	16 54
मई 16		मृग.	2	8 16
31	मिथुन	मृग.	3	6 48
जून 14		मृग.	4	21 11
29		आर्द्रा	1	10 16
जुलाई 14		आर्द्रा	2	3 59
29		आर्द्रा	3	9 50
अगस्त 14		आर्द्रा	4	14 08
सितंबर 1		पुन.	1	12 44
23		पुन.	2	9 03
नवंबर 7	वक्री			10 33
दिसंबर 22		पुन.	1	11 10
सन् 2014 ई.				
जनवरी 16		आर्द्रा	4	15 11
फरवरी 21		आर्द्रा	3	14 39
मार्च 6	मार्गी			16 13
19		आर्द्रा	4	21 15

शुक्र—चार (सन् 2013 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		ज्येष्ठा	4	23 39
4	धनु	मूल	1	15 33
7		मूल	2.	7 25
9		मूल	3	23 16
12		मूल	4	15 06
15		पू.षा.	1	6 56
17		पू.षा.	2	22 47
20		पू.षा.	3	14 37
23		पू.षा.	4	6 28
25		उ.षा.	1	22 19
28	मकर	उ.षा.	2	14 10

शुक्र—चार (सन् 2013 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 31		उ.षा.	3	6 01
फरवरी 2		उ.षा.	4	21 53
5		श्रव.	1	13 45
8		श्रव.	2	5 37
10		श्रव.	3	21 29
13		श्रव.	4	13 23
16		धनि.	1	5 18
18		धनि.	2	21 14
21	कुम्भ	धनि.	3	13 12
24		धनि.	4	5 12
26		शत.	1	21 13
मार्च 1		शत.	2	13 15
4		शत.	3	5 18
6		शत.	4	21 23
9		पू.भा.	1	13 29
12		पू.भा.	2	5 37
14		पू.भा.	3	21 46
17	मीन	पू.भा.	4	13 58
20		उ.भा.	1	6 12
22		उ.भा.	2	22 29
25		उ.भा.	3	14 48
28		उ.भा.	4	7 10
30		रेव.	1	23 34
अप्रैल 2		रेव.	2	16 00
5		रेव.	3	8 28
8		रेव.	4	0 58
10	मेष	अश्वि.	1	17 31
13		अश्वि.	2	10 06
16		अश्वि.	3	2 44
18		अश्वि.	4	19 25
21		भर.	1	12 08
अप्रैल 24		भर.	2	4 55
26		भर.	3	21 45
29		भर.	4	14 37
मई 2		कृत्ति.	1	7 31
5	वृष	कृत्ति.	2	0 28
7		कृत्ति.	3	17 27
10		कृत्ति.	4	10 28
13		रोहि.	1	3 32
15		रोहि.	2	20 39
18		रोहि.	3	13 48
21		रोहि.	4	7 01
24		मृग.	1	0 16
26		मृग.	2	17 34
29	मिथुन	मृग.	3	10 55
जून 1		मृग.	4	4 18
3		आर्द्रा	1	21 44
6		आर्द्रा	2	15 12
9		आर्द्रा	3	8 42
12		आर्द्रा	4	2 15
14		पुन.	1	19 51
17		पुन.	2	13 30
20		पुन.	3	7 13
23	कर्क	पुन.	4	0 59
25		पुष्य	1	18 49
28		पुष्य	2	12 42
जुलाई 1		पुष्य	3	6 38
4		पुष्य	4	0 38
6		आश्ले.	1	18 41
9		आश्ले.	2	12 47
12		आश्ले.	3	6 58
15		आश्ले.	4	1 13

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरण–चार (1 जनवरी, 2013 से 31 मार्च, 2014 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 17	सिंह	मघा	1	19 33
20		मघा	2	13 59
23		मघा	3	8 29
26		मघा	4	3 06
28		पू.फा.	1	21 48
31		पू.फा.	2	16 36
अगस्त 3		पू.फा.	3	11 30
6		पू.फा.	4	6 29
9		उ.फा.	1	1 35
11	कन्या	उ.फा.	2	20 48
14		उ.फा.	3	16 09
17		उ.फा.	4	11 39
20		हस्त	1	7 18
23		हस्त	2	3 06
25		हस्त	3	23 04
28		हस्त	4	19 12
31		चित्रा	1	15 31
सितंबर 3		चित्रा	2	12 00
6	तुला	चित्रा	3	8 40
9		चित्रा	4	5 33
12		स्वाती	1	2 40
15		स्वाती	2	0 02
17		स्वाती	3	21 41
20		स्वाती	4	19 38
23		विशा.	1	17 55
26		विशा.	2	16 32
29		विशा.	3	15 31
अक्तूबर 2	वृश्चिक	विशा.	4	14 54
5		अनु.	1	14 43
8		अनु.	2	15 02
11		अनु.	3	15 54

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 14		अनु.	4	17 28
17		ज्येष्ठा	1	19 41
20		ज्येष्ठा	2	22 47
24		ज्येष्ठा	3	2 50
27		ज्येष्ठा	4	7 59
30	धनु	मूल	1	14 24
नवंबर 2		मूल	2	22 18
6		मूल	3	8 01
9		मूल	4	19 57
13		पू.षा.	1	10 42
17		पू.षा.	2	5 07
21		पू.षा.	3	4 26
25		पू.षा.	4	10 36
30		उ.षा.	1	3 12
दिसंबर 5	मकर	उ.षा.	2	14 16
13		उ.षा.	3	0 47
22	वक्री			3 23
30		उ.षा.	2	22 45
सन् 2014 ई.				
जनवरी 6	धनु	उ.षा.	1	23 36
12		पू.षा.	4	12 36
18		पू.षा.	3	6 36
27		पू.षा.	2	4 02
फरवरी 1	मार्गी			2 19
6		पू.षा.	3	3 37
15		पू.षा.	4	16 04
21		उ.षा.	1	14 01
26	मकर	उ.षा.	2	11 56
मार्च 2		उ.षा.	3	21 27
6		उ.षा.	4	23 13
10		श्रव.	1	[illegible]

तारीख 2014 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 14		श्रव.	2	12 03
18		श्रव.	3	1 22
21		श्रव.	4	12 13
24		धनि.	1	21 03
28		धनि.	2	4 14
31	कुम्भ	धनि.	3	10 02

केतु–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख 2013 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 24		भर.	4	15 45
अप्रैल 28		भर.	3	13 47
जून 30		भर.	2	11 19
सितंबर 1		भर.	1	9 01
नवंबर 3		अश्वि.	4	7 03
जनवरी 5		अश्वि.	3	4 34
मार्च 9		अश्वि.	2	2 21

शनि–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 19		स्वाती	4	3 09
फरवरी 18	वक्री			22 33
मार्च 22		स्वाती	3	6 40
मई 9		स्वाती	2	15 53
जुलाई 8	मार्गी			10 43
सितंबर 4		स्वाती	3	2 40
अक्तूबर 7		स्वाती	4	17 02
नवंबर 5		विशा.	1	4 31
दिसंबर 3		विशा.	2	11 08
जनवरी 5		विशा.	3	8 32
मार्च 2	वक्री			21 49

यूरेनस–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मार्च 9		उ.भा.	4	14 07
मई 9		रेव.	1	12 25
जुलाई 17	वक्री			22 52
सितंबर 29		उ.भा.	4	3 24
दिसंबर 17	मार्गी			23 11
मार्च 1		रेव.	1	22 50

राहु–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 24		विशा.	2	15 45
अप्रैल 28		विशा.	1	13 47
जून 30		स्वाती	4	11 19
सितंबर 1		स्वाती	3	9 01
नवंबर 3		स्वाती	2	7 03
जनवरी 5		स्वाती	1	4 34
मार्च 9		चित्रा	4	2 21

नेप्च्यून–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
मार्च 27		शत.	2	0 35
जून 7	वक्री			14 00
अगस्त 24		शत.	1	3 55
नवं. 14	मार्गी			0 16
जनवरी 28		शत.	2	5 12

प्लूटो–चार (सन् 2013–14 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
फरवरी 12		पू.षा.	2	18 41
अप्रैल 13	वक्री			1 02
जून 14		पू.षा.	1	12 33
सितंबर 20	मार्गी			20 56
दिसंबर 16		पू.षा.	2	22 14

ग्रहों के वक्र/मार्ग, उदय/अस्त अगले पृष्ठ पर देखें।

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2013 से 31 मार्च 2014 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	वक्री	1 मार्च, 2014 ई.	मंगल	अस्त	29 जन., 2013 ई.
बुध	वक्री	23 फरवरी, 2013 ई.	मंगल	उदित	28 जून, 2013 ई.
बुध	मार्गी	18 मार्च, 2013 ई.	बुध	प. में उदित	6 फर., 2013 ई.
बुध	वक्री	26 जून, 2013 ई.	बुध	प. में अस्त	25 फर., 2013 ई.
बुध	मार्गी	20 जुलाई, 2013 ई.	बुध	पूर्व में उदित	12 मार्च, 2013 ई.
बुध	वक्री	21 अक्तूबर, 2013 ई.	बुध	पूर्व में अस्त	29 अप्रैल, 2013 ई.
बुध	मार्गी	11 नवंबर, 2013 ई.	बुध	प. में उदित	23 मई, 2013 ई.
बुध	वक्री	7 फरवरी, 2014 ई.	बुध	प. में अस्त	1 जुलाई, 2013 ई.
बुध	मार्गी	28 फरवरी, 2014 ई.	बुध	पूर्व में उदित	19 जुलाई, 2013 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	12 अगस्त, 2013 ई.
गुरु	मार्गी	30 जनवरी, 2013 ई.	बुध	प. में उदित	9 सितंबर, 2013 ई.
गुरु	वक्री	7 नवंबर, 2013 ई.	बुध	प. में अस्त	26 अक्तूबर, 2013 ई.
गुरु	मार्गी	6 मार्च, 2014 ई.	बुध	पूर्व में उदित	8 नवंबर, 2013 ई.
			बुध	पूर्व में अस्त	4 दिसंबर, 2013 ई.
			बुध	प. में उदित	19 जनवरी, 2014 ई.
शुक्र	वक्री	22 दिसंबर, 2013 ई.	बुध	प. में अस्त	8 फरवरी, 2014 ई.
शुक्र	मार्गी	1 फरवरी, 2014 ई.	बुध	पूर्व में उदित	22 फरवरी, 2014 ई.
शनि	वक्री	18 फरवरी, 2013 ई.	गुरु	अस्त	6 जून, 2013 ई.
शनि	मार्गी	8 जुलाई, 2013 ई.	गुरु	उदय	1 जुलाई, 2013 ई.
शनि	वक्री	2 मार्च, 2014 ई.			
			शुक्र	पूर्व में अस्त	10 फरवरी, 2013 ई.
यूरेनस	वक्री	17 जुलाई, 2013 ई.	शुक्र	पश्चिम में उदित	20 अप्रैल, 2013 ई.
यूरेनस	मार्गी	17 दिसंबर, 2013 ई.	शुक्र	पश्चिम में अस्त	9 जनवरी, 2014 ई.
			शुक्र	पूर्व में उदित	15 जनवरी, 2014 ई.
नेप्च्यून	वक्री	7 जून, 2013 ई.			
नेप्च्यून	मार्गी	14 नवंबर, 2013 ई.	शनि	अस्त	20 अक्तूबर, 2013 ई.
			शनि	उदित	24 नवंबर, 2013 ई.
प्लूटो	वक्री	13 अप्रैल, 2013 ई.			
प्लूटो	मार्गी	20 सितंबर, 2013 ई.			

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहदा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	–35 16
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	– 8 00
उपशी	(का.)	33 52	77 50	–18 40
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	– 0 48
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	–12 08
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	–37 32
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	–23 04
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	–29 36
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	–24 52
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	–34 56
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	–15 20
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	–18 56
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	–24 56
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	–19 48
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	– 5 24
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	–24 32
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	–29 00
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	–53 52
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	– 9 36
औरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	–11 56
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	–25 36
औट	(हि.)	31 47	77 11	–21 16
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	–28 32
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	– 8 12
कटरा	(का.)	32 59	74 57	–30 12
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	–21 32
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	–27 52
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	–21 32
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	–28 20
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	–10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	–28 28
करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	–28 00
कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	–12 52
करनाल	(ह.)	29 42	77 02	–21 52
करसोग	(हि.)	31 23	77 13	–21 08
कराड	(म.)	17 15	74 12	–33 12
करूर	(ता.)	10 58	78 03	–17 48
कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	–21 08
काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	–17 00
करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00
करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	–13 36
करौली	(रा.)	26 30	77 01	–21 56
कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	–17 40
कल्याण	(म.)	19 17	73 11	–37 16
कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	–39 28
कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	– 5 00
कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	–30 00
कसौली	(हि.)	30 55	76 57	–22 12
काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	– 1 08
कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	– 3 52
कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	–24 48
कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	–11 04
काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	–11 52
काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	–46 00
कादियां	(पं.)	31 49	75 23	–28 28
कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	– 8 36
कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	–12 56
कारकाल	(क.)	13 12	74 59	–30 04
कारगिल	(का.)	34 31	76 13	–25 08
कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	–33 24
कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	–10 40
कालका	(ह.)	30 50	76 56	–22 16
कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	–11 12

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कालिकट	(के.)	11 15	75 46	–26 56
कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	– –
कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	–21 40
किरकी	(म.)	18 36	73 57	–34 12
किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	–26 48
किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	–30 32
कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	–23 44
कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	–14 40
कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	–10 44
कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	–21 12
कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	–12 24
कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	–19 44
कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	–21 48
कुराली	(पं.)	30 50	76 35	–23 40
कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	–22 40
कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	–21 36
कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	–13 44
केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
केसरी	(ह.)	30 14	76 54	–22 24
कैथल	(ह.)	29 48	76 26	–24 16
कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कोचीन	(के.)	9 58	76 14	–25 04
कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	–30 24
कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	–19 36
कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	–20 04
कोटा	(रा.)	25 10	75 52	–26 32
कोट्टागुडम	(आं.)	17 32	80 39	– 7 24

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्मालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गोंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11. 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमुई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20
झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28
टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52
टुंकुरे	(क.)	13 21	77 05	−21 40
टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
डगशई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीनापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
ध्रांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

189
अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभनी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 46	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोदातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें –	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh at Kanwal Video...

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

191

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36
मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadri at Kanwal ... Ph. 0160-2641274, Fax. 0160-5002274

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16·15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लादूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपादू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिवनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकटी	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्दवानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

Fax: 0180-5002274

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

मास	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
अप्रैल	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
मई	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०२
	[illegible]	[illegible]	५ ३८											

ज्येष्ठ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०२	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
मई	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
जून	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	[illegible]	[illegible]	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

मास	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३४	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ४३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

197
में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

कार्तिक

मास	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४२
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

पौष

माह	अंग्रेज़ी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	माघ १	७ २८											

माघ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा १	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी १२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च १	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च १४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल १	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
१३	वै.१	६ ०३											

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gaur' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax. 0160-

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+२८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	-३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+२१	+२०	+३	-७	-१७	-२६	-३२	-३०	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+२	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-२	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-६	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२२	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखाशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किन्तु भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जबकि प्राचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी-पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घडीपल भी जोड दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी-पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी-पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी- पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी-पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घडी-पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी-पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी-पलों का "सारणीस्थ घड़ी-पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी-पलों" और "अभीष्ट घड़ी-पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-- विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोडने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण-- मान लीजिए- वि. स. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घडी-पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी-पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी-पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी-पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी-पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. स. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोडने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadri' at Kanwal Video & Photostat, ... Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३३
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरण:– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है! इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घडी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोडने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोडने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	– ७	२०४७	– १३	२०५५	– २०	२०६३	–२६	२०७१	–३३
२०२४	+ ६	२०३२	– १	२०४०	– ८	२०४८	– १४	२०५६	– २१	२०६४	–२७	२०७२	–३४
२०२५	+ ५	२०३३	– २	२०४१	– ९	२०४९	– १५	२०५७	– २२	२०६५	–२८	२०७३	–३५
२०२६	+ ४	२०३४	– ३	२०४२	– ९	२०५०	– १६	२०५८	–२२	२०६६	–२९	२०७४	–३६
२०२७	+ ३	२०३५	– ४	२०४३	–१०	२०५१	– १७	२०५९	–२३	२०६७	–३०	२०७५	–३६
२०२८	+ २	२०३६	– ४	२०४४	–११	२०५२	– १८	२०६०	–२४	२०६८	–३१	२०७६	–३७
२०२९	+ १	२०३७	– ५	२०४५	–१२	२०५३	– १८	२०६१	–२५	२०६९	–३१	२०७७	–३८
२०३०	+ १	२०३८	– ६	२०४६	– १३	२०५४	– १९	२०६२	–२६	२०७०	–३२	२०७८	–३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि ''**अक्षांशादि सारणी** '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सित.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अत: इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टैं.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद-के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रात: १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अत: इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार ०० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. ज़ोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अत:२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टै अन्तर +२३ मि. ३६ से. है; स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अत: इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्ठक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए , तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. . २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं . अं. से कम था अत:-यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं ।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में मां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(द.)		अक्षांश ११°(द.)		अक्षांश १४°(द.)		अक्षांश १७°(द.)		अक्षांश २०°(द.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२२	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३३	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(द.)		अक्षांश ११°(द.)		अक्षांश १४°(द.)		अक्षांश १७°(द.)		अक्षांश २०°(द.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४२	८	५५	९	९	९	२४	९	४२
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७कः है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५२ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

सम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६

सम्पातिक काल घं. मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
१४ ३०.	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

सम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०६	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

ता.	जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०
२	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७
३	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३
४	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१०	२०	१०	२४	२२	८	४०
५	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६
६	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३
७	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०
८	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७
९	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३
१०	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०
११	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६
१२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३
१३	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९
१४	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६
१५	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२
१६	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९
१७	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६
१८	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३
१९	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९
२०	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६
२१	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२
२२	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९
२३	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५
२४	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२
२५	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८
२६	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५
२७	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१
२८	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८
२९	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४
३०	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११
३१	१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७
३२																२३	५९	३

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax. 0160-3002274

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४२
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पू.षा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले. अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पि ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, ...i, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि–मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घडी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हों तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं.,बु.,शु.,श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू.,मं.,बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। **दिनरात्रि बल–**दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

☘ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पडा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ☘ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।☘ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।☘ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बडी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश या चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हो या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से [illegible] मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घ. मि.	गताब्द	वार घ. मि	गताब्द	वार घ. मि.	गताब्द	वार घं. मि	गताब्द	वार घ. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि	गताब्द	वार घ. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए सं. 2052 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, ३ और जोड़ें, ८ से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्ददशा (मास–दिन)							
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग—

वर्ष—कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–**तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी, निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाक्रान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भौम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरोग्य	मरण	कृषता	व्याधि	सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

मुण्डनमुहूर्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्मं वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार, हजामत में नौवें दिन, सध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र मे उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाईं ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों को एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अत: इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । **'मुहूर्तचिन्तामणि'** का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
ोनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्‌भकूट हो।
ाशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हो । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़न. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वा[illegible]

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के	अ, इ,	क, ख, ग,	च,छ,ज,	ट,ठ,ड,	त,थ,द,	प, फ,ब,	य,र,	श,ष,
वर्ण	उ,ए	घ,ङ	झ,ञ	ढ,ण	ध,न	भ,म	ल,व	स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ ½ ,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष नष्ट हो जाता है

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है-सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक, म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर → / कन्या ↓		मेष: अश्वि. 1,2,3,4	मेष: भर. 1,2,3,4	मेष: कृत्ति. 1	वृष: कृत्ति. 2,3,4	वृष: रोहि. 1,2,3,4	वृष: मृग. 1,2	मिथुन: मृग. 3,4	मिथुन: आर्द्रा 1,2,3,4	मिथुन: पुन. 1,2,3	कर्क: पुन. 4	कर्क: पुष्य 1,2,3,4	कर्क: आश्ले. 1,2,3,4	सिंह: मघा 1,2,3,4	सिंह: पू.फा. 1,2,3,4	सिंह: उ.फा. 1	कन्या: उ.फा. 2,3,4	कन्या: हस्त 1,2,3,4	कन्या: चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 व भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग व भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व न त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयन तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर → / कन्या ↓	तुला			दृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
मेष भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
मेष कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
वृष रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
वृष मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
मिथुन आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
मिथुन पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	26 भ	25½ भ त
कर्क पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
कर्क आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
सिंह पूफा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
सिंह उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
कन्या हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व य	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
कन्या चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	1E½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ बवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पूषा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत वनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घडी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाडकर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोडकर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहा छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यो में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) [illegible] पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण, से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम दे खें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु॰प्र॰सा॰)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

- पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
- श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
- नेष्टगुरुः– ४/८/१२
- श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
- पूज्यरविः– २/५/९
- विशेष पूज्य रविः– १/७
- नेष्टरविः– ४/८/१२
- नेष्टचन्द्रः– ४/८
- श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेष्वह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहागकृत्यारम्भ मुहूर्तः 227 (३) युतिदोष

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः

वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९-- इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह--मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि-- इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष--ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाश	भयम्	मृत्यु	भयम	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरणम्	← फलम्

यथा--सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा	मृ.	अ.	कृ.	भ.	कृ.	अ.	रो.	भ.	भ.	अ.	दूषित नक्षत्र
पुन.	आ.	मृ.	आ.	मृ.	श्र.	आ.	ज्ये.	पुन.	श.	ज्ये.	
श.	ज्ये.	ज्ये.	वि.	श.	ध.	उ.षा.	ध.	श.	वि.	ध.	
पू.फा.	ध.	पुष्य	पू.फा.	पू.भा.	पुष्य	पू.भा.	आश्ले.	वि.	उ.फा.	म.	
चि.	म.	ह.	उ.भा.	स्वा.	ह.	पू.षा.	मू.	अनु.	पू.फा.	पू.फा.	
मू.	ह.	रे.	पू.भा.	म.	रे.	पू.फा.	उ.भा.	उ.षा.	मू.	स्वा.	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल.	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रे.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान--चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायाम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	सध्य.योः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड--ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रान्तिसाम्य-दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे-मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि-दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३.	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

'भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन-विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *-कश्यपः*

लत्तादि-दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर-भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी-बंगाल-अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाडे) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहारः— चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध-परिहारः—"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
—(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है- **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः— **ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।**

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :- व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च पापयोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** --पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेदः भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्त्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद दशविंशोपकाधिकंम्।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना-- व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

१०। २१। २४ में बद्धदिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" अन्यच्च– सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तडाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्हिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्हिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खातं राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्धसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौडाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौडे घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैरस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती मे गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में, रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में, पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पूषा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानमः– 'संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ मे बद्धाविन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" अन्यच्च– सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तडाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्हिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्हिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशयारम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।		

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान	पूर्व	आग्ने.
अश्विनी, भरणी, कृत्तिका	पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा	मघा, पू.फा., उ.षा.
मध्यजलम्	जलाभावः	मध्यजलम्
उत्तर	मध्य	दक्षिण
पू.भा., उ.भा., रेवती	रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा	हस्त, चित्रा., स्वाती
मिष्ठजलम्	शीघ्रजलम्	जलाभाव
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्यां
श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा.	मूल, ,पू.षा., उ.षा.	विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा
क्षारजलम्	अमृतजलम्	बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् *अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।*), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या फल	६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, **मृग.**, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	[illegible]	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्				एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्									घट्यात्मक चन्द्रवास
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे										जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।
मेष	वृष	मिथुन	कर्क										
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	
धनु	मकर	कुम्भ	मीन	घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—[illegible] वार—संक्रान्ति—दोष कुलिककुलिकदोष यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोष राहुकेत्वादि दोष हरति सकलदोष चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोडकर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु—घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी—पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत—स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया—त्रयोदशी, चतुर्थी—चतुर्दशी, पञ्चमी—पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	घृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– **अतोऽन्यदभेषु निन्द्याः।**

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– **'मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह–
ताधम् पुष्पं	सुकीर्ति ०	मृतिः मृत्तिका	श्री. ०	वित्त हानि दूर्वा	विपत्ति गोमय	सुख सुयोग ०	फलम् पातनम्	रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७०वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र जो गतवर्ष २०६९ वि. में माघ अमा रविवार (१० फर., २०१३ ई.) को पूर्व में अस्त हुआ था, वह इस वर्ष सं. २०७० वि. में चैत्र शु. ६ श. (२० अप्रै., २०१३ ई.) को पश्चिम में उदित हो जाएगा। इस वर्ष शुक्र पुनः पौष शु. ६ गु.(६ जन., २०१४ ई.) से पौष शु. १४ मं. (१४ जन., २०१४ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष ज्ये. कृ. १३ गु. (६ जून, २०१३ ई.) को अस्त होकर आषा. कृ. ८ चं. (१ जुला., २०१३ ई.) को उदित हो जाएगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्टक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु—शुक्र का उदय—अस्त 'सं. २०७० वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पश्चिम में उदित	२२ अप्रै., २०१३	२१ अप्रै., २०१३	२० अप्रै., २०१३	२१ अप्रै., २०१३
शुक्र पश्चिम में अस्त	८ जन., २०१४	६ जन., २०१४	६ जन., २०१४	६ जन., २०१४
शुक्र पूर्व में उदित	१५ जन., २०१४	१५ जन., २०१४	१५ जन., २०१४	१५ जन., २०१४
गुरु अस्त	८ जून, २०१३	८ जून, २०१३	७ जून, २०१३	६ जून, २०१३
गुरु उदित	३० जून, २०१३	३० जून, २०१३	१ जुला., २०१३	२ जुला., २०१३

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

ध्यान दें - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्टक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य(महापात)दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ 68 पर दिया गया है।

- यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं। जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

इन विवाहमुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

लग्न निर्बल = अत्यावश्यकता में ही इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

दि.ल. = दिन का लग्न।

ल. = **रा. ल.** = रात्रि का लग्न।

पादवेध = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध है।

पादवेधाभाव = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध नहीं है।

दा. = इस ग्रह की दान-पूजा करके इस लग्न में विवाह किया जा सकता है। जैसे-"मं.दा." का अभिप्राय है, इस विवाहलग्न में मंगल की दान-पूजा आवश्यक है। लग्न के समय ३, ४, १०, १२ भावों में स्थित क्रमशः शुक्र, राहु, मंगल, शनि तथा सप्तम में स्थित गुरु, चन्द्र की दान, पूजा आवश्यक मानी गई है।

परि.= सप्तमहीन केन्द्र, त्रिकोणस्थ बु., शु. गु. की स्थिति आदि से लग्नभंगकारक ग्रह का परिहार।

देवज्ञ ध्यान दें

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

आगे दिए जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्त देखने से आपको ज्ञात होगा कि- इस वर्ष शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या पहले की अपेक्षा अधिक है । दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थचन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो । इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवम् अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आ रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं*। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाए तब संहिताकारों का कहना है कि- उस एकमात्र परिहार से ही लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर हमने इस वर्ष से लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का यहां निर्देश किया है, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है ।

यहां संभव है कि- परम्पराभ्यासी कुछ दैवज्ञलोग इन नए से लगने वाले शुद्धतम विवाहलग्नों को भी अनभ्यासवश स्वीकार करने में फिल-हाल कुछ संकोच करें। ऐसे इन दैवज्ञों के लिए हमने यहां (इन शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों में) ऐसे विवाहलग्न भी दिए हैं, जो उनके परम्परागत परिहारनियमों के अनुसार भी शुद्ध (निर्दोष) हैं । ऐसे शुद्ध विवाहलग्नों को हमने यहां अधोरेखांकित (Underlined) कर दिया है । नए परिहारसिद्धान्तों को स्वीकार करने में संकोचशील परम्पराप्रिय ये दैवज्ञ इन अधोरेखांकित लग्नों को प्रयोग में ला सकते हैं ।

ध्यान दें- यहां जो लग्न अधोरेखांकित नहीं हैं, उनके आगे कोष्ठक में उन ग्रहों का निर्देश है, जिनकी लग्नकुण्डली में दोषपूर्ण स्थिति का यहां संहितोक्त केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु आदि किसी विशेष परिहारक स्थिति द्वारा परिहार हुआ है । **जैसे-** २ मई, २०१३ ई. को श्रवण नक्षत्र वाले विवाहमुहूर्त्त में लग्न " ६(बु.शु.परि.)" लिखा है । यहां विवाहमुहूर्त्तकालिक कुण्डली देखने से स्पष्ट हो जाता है कि- कन्या लग्न में अष्टम में शुक्र और लग्नेश बुध का परिहार नवम (त्रिकोण) में स्थित गुरु से हो गया है । इसलिए यह शुद्ध लग्न है । हमारे इस स्पष्टीकरण का अभिप्राय यह है कि-यहां जो लग्न अधोरेखांकित नहीं हैं, उनके आगे कोष्ठकस्थ इन ग्रहों को गलती से पूज्य नहीं समझ लेना चाहिए । इन लग्नों में संहितोक्त विशेषवाक्यों द्वारा जिन दोषपूर्ण ग्रहों का परिहार माना गया है,उनका यहां कोष्ठक में निर्देशमात्र है । उनके निमित्त दानादि नहीं किया जाता, क्योंकि वे लग्न सर्वथा दोषरहित हैं । हां, जो अधोरेखांकित लग्न हैं, उनके आगे कोष्ठक में निर्दिष्ट जो ग्रह हैं, केवल उन्हीं की दान-पूजा अपेक्षित है । **और अधिक स्पष्टता के लिए पृष्ठ 254 पर दिया गया लेख " विवाहमुहूर्त्तशोधन में लग्नभंग-परिहार" अवश्य पढ़ें ।**

*पृष्ठ 254 पर " विवाहमुहूर्त्तशोधन में लग्नभंग-परिहार " लेख पढ़िए।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
चैत्र शु. १२ मं.	वैशा. ११	अप्रै. २३	उ.फा.	कन्या	मेष	वृष	ऽसू.। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., (बुध पादवेध अभाव.),
चैत्र शु. १२ मं.	वैशा. ११	अप्रै. २३	हस्त	कन्या	मेष	वृष	।। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. ८(मं.गु.शु.परि.), ६(गु.परि.), १०, ११(चं.परि.), १२(चं.दा.),
वैशा. कृ. ४ चं.	वैशा. १७	अप्रै. २९	मूल	धनु	मेष	वृष	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. २(८/०६ बाद)(चं.परि.), ३(चं.दा.), ४(चं.रा.परि.), ५, ६(मं.बु.परि.), गोधू., ९(चं.गु.परि.), १०, ११,
वैशा. कृ. ६ बु.	वैशा. १९	मई १	उ.षा.	धनु	मेष	वृष	ऽचं.ऽ ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. २(७/४८ तक)(चं.दा.), (गोधू. में क्रान्तिसाम्य), (२१/०२ से २६/४३ तक गुरुपादवेध),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा. कृ. ६ बु.	वैशा. १९	मई १	श्रव.	मकर	मेष	वृष	ऽबु.श.। ॥ ।ऽरो. ।ऽ ॥	ल. ११(२६/४३ बाद), १२ (निर्बल लग्न),
वैशा. कृ. ८ गु.	वैशा. २०	मई २	श्रव.	मकर	मेष	वृष	ऽबु.श.। ॥ ।ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. २, ३(चं.परि.), ४(चं.रा.दा.), ५, ६(बु.शु.परि.), गोधू., ९(गु.परि.), १०(२५/४२ तक) (चं.परि.),
वैशा. कृ. ८ गु.	वैशा. २०	मई २	धनि.	मकर	मेष	वृष	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. १०(२५/४२ बाद)(चं.परि.), ११,
वैशा. कृ. ९ शु.	वैशा. २१	मई ३	धनि.	मकर	मेष	वृष	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. २, ३(चं.परि.), ४(चं.दा.), ५(१३/२५ तक)(चं.दा.), (१३/२५ बाद मृत्युबाण),
वैशा. कृ. १२ चं.	वैशा. २४	मई ६	उ.भा.	मीन	मेष	वृष	ऽशु.ऽ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ४(११/५७ बाद)(रा.दा.), ५(चं.परि.), ६(चं.बु.परि.), गोधू., ८(मं.श.परि.), १०, ११(२६/४० तक),
वैशा. शु. १ श.	वैशा. २९	मई ११	रोहि.	वृष	मेष	वृष	ऽमं.। ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ५(१३/२४ बाद), ६(बु.परि.), रा.ल. ८(चं.मं.परि.), १०, ११,
वैशा. शु. २ र.	वैशा. ३०	मई १२	रोहि.	वृष	मेष	वृष	ऽमं.। ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. २(चं.परि.), ३, ४, ५(१३/५१ तक),
वैशा. शु. २ र.	वैशा. ३०	मई १२	मृग.	वृष	मेष	वृष	॥ ऽगु.। ॥ ॥ ॥	दि.ल. ५(१३/५१ बाद), ६(बु.परि.), रा.ल. ८(२०/३६ तक) (चं.मं.परि.), (२०/३६ बाद मृत्युबाण),
वैशा. शु. ८ श.	ज्ये. ५	मई १८	मघा	सिंह	वृष	वृष	ऽगु.। ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ४(९/५९ बाद), ५(चं.परि.), ६(१५/५४ तक)(मं.परि.), गोधू., १०(चं.परि.), ११(चं.दा.),
वैशा. शु. १० चं.	ज्ये. ७	मई २०	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृष	वृष	।ऽ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ४, ५(१४/०६ तक), ६(१५/१८ बाद)(चं.परि.), गोधू., १०, ११(चं.परि.),
वैशा. शु. ११ मं.	ज्ये. ८	मई २१	हस्त	कन्या	वृष	वृष	॥ ॥ ।ऽचौ. ॥ ॥	दि.ल. ४(९/४७ तक)(रा.दा.), रा.ल. १०, ११(चं. परि.),
वैशा. शु. १२ बु.	ज्ये. ९	मई २२	चित्रा	कन्या	वृष	वृष	ऽसू.। ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ३(निर्बल लग्न), ४(९/५० तक),
ज्ये. कृ. १ र.	ज्ये. १३	मई २६	मूल	धनु	वृष	वृष	।ऽ ॥ ऽबु.गु.शु.ऽअ. ॥ ॥	ल. गोधू., १०, ११, १२(निर्बल लग्न),
ज्ये. कृ. ३ चं.	ज्ये. १४	मई २७	मूल	धनु	वृष	वृष	।ऽ ॥ ऽबु.गु.शु.ऽअ. ॥ ॥	दि.ल. ३(निर्बल लग्न)(चं.दा.), ४(चं.परि.), ५(१२/४९ तक),
ज्ये. कृ. ४ मं.	ज्यं. १५	मई २८	उ.षा.	धनु	वृष	वृष	॥ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ५(१२/०९ बाद), ६, (१७/३४ से २३/०० तक बुध पादवेध), (२३/०० से २८/२८ तक गुरु-शुक्र पादवेध),
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. १६	मई २९	उ.षा.	मकर	वृष	वृष	॥ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ३(चं.परि.), ४(९/५८ तक)(चं. रा. दा.),
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. १६	मई २९	श्रव.	मकर	वृष	वृष	ऽश.। ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ४(९/५८ बाद) (चं.रा.दा.), ५(चं.परि.), ६, ७(श.रा.के.परि.), गोधू. १०(चं.परि.), ११, १२,
ज्ये. कृ. ६ गु.	ज्ये. १७	मई ३०	श्रव.	मकर	वृष	वृष	ऽश.। ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ३(८/१८ तक)(चं.परि.),
ज्ये. कृ. ६ गु.	ज्ये. १७	मई ३०	धनि.	मकर	वृष	वृष	ऽचं.। ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	दि.ल. ३(८/१८ बाद)(चं.परि.), ४(चं.रा.दा.), ५(चं.परि.), ६(१४/४० तक),

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
ज्ये. कृ. ६ र.	ज्ये. २०	जून २	उ.भा.	मीन	वृष	मिथुन	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ३(७/१२ बाद), ४(रा.दा.), ६(चं.दा.),
ज्ये. कृ. १० चं.	ज्ये. २१	जून ३	रेव.	मीन	वृष	मिथुन	ऽबु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६(चं.दा.), गोधू., (१७/०० बाद मृत्युबाण),
आषा. शु. ३ गु.	आषा. २८	जुला. ११	मघा	सिंह	मिथुन	मिथुन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ८(१६/०२ बाद)(मं.बु.गु.श.परि.), गोधू., १०(चं.परि.), ११(चं.दा.), १२(चं.परि.), १(श.रा.के.परि.), २(निर्बल लग्न),
आषा. शु. ४ शु.	आषा. २९	जुला. १२	मघा	सिंह	मिथुन	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ४(६/४४ तक) (रा.दा.),
आषा. शु. ५ श.	आषा. ३०	जुला. १३	उ.फा.	सिंह/कन्या	मिथुन	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. १०(१६/३८ बाद) (चं.शु.परि.), ११(चं.दा.), १२(चं.परि.), १(चं.श.रा.के.परि.), २ (निर्बल लग्न),
आषा. शु. ६ र.	आषा. ३१	जुला. १४	उ.फा.	कन्या	मिथुन	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ४(६/१७ तक) (रा.दा.), (१३/२६ बाद मृत्युबाण),
आषा. शु. १२ श.	श्राव. ५	जुला. २०	मूल	धनु	कर्क	मिथुन	ऽसू.। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ८(१४/३८ बाद)(मं.बु.गु.श.परि.), ९(चं.मं.बु.गु.परि.), गोधू., ११(शु.परि.), १२, १(श.रा.के.परि.), २(चं.परि.), ३(चं.मं.परि.),
आषा. शु. १३ र.	श्राव. ६	जुला. २१	मूल	धनु	कर्क	मिथुन	ऽसू.। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ५(६/५८ तक),
आषा. शु. १५ चं.	श्राव. ७	जुला. २२	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	मिथुन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ७(१३/३६ बाद)(श.रा.के.परि.), ८(मं.बु.गु.श.परि.), ९(मं.बु.गु.परि.), रा.ल. ११(शु.परि.), १२(शु.दा.), १ (श.रा.के.परि.), २, ३(चं.मं.शु.परि.),
श्राव. कृ. १ मं.	श्राव. ८	जुला. २३	श्रव.	मकर	कर्क	मिथुन	ऽश.। ।। ऽसू.ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ५(चं.परि.), ६(११/२० तक)(मं.दा.), ९(मं.बु.गु.परि.), ११(शु.परि.), १२(शु.दा.), १(श.रा.के.परि.), २, ३(चं.मं.परि.), (११/२० से १६/३६ तक शुक्रपादवेध),
श्राव. कृ. १ मं.	श्राव. ८	जुला. २३	धनि.	मकर	कर्क	मिथुन	ऽरां.। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. ३(२७/२० बाद)(चं.मं.परि.),
श्राव. कृ. २ बु.	श्राव. ९	जुला. २४	धनि.	मकर/कुम्भ	कर्क	मिथुन	ऽरा.। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ५(चं.परि.), ६, ७(श.रा.के.परि.), ८(मं.बु.गु.श.परि.), ९(मं.बु.गु.परि.), गोधू., ११(चं.शु.परि.), १२(शु.दा.), १(श.रा.के.परि.), २(२५/०३ तक),
श्राव. कृ. ४ शु.	श्राव. ११	जुला. २६	उ.भा.	मीन	कर्क	मिथुन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. १२(२२/२२ बाद)(चं.शु.परि.), १(श.रा.के.परि.), २, ३(२७/१४ तक)(मं.परि.),(२७/१४ बाद मृत्युबाण),
श्राव. कृ. ५ श.	श्राव. १२	जुला. २७	रेव	मीन	कर्क	मिथुन	ऽचं.। ।। ।। ।। ।।	ल. ३(२८/२२ बाद)(मं.परि.), (२८/२२ तक मृत्युबाण),
श्राव. कृ. ६ र.	श्राव. १३	जुला. २८	रेव.	मीन	कर्क	मिथुन	ऽचं.। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ५(चं.परि.), ६(१०/१७ तक)(चं.मं.दा.),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
श्राव. कृ. ६ र.	श्राव. १३	जुला. २८	अश्वि.	मेष	कर्क	मिथुन	ऽबु.। ॥ ।ऽअ. ।ऽ ॥	ल. १२(२२/५५ बाद),(शु.दा.), १(चं.श.रा.के.परि.), २, ३(मं.परि.)
श्राव. कृ. ७ चं.	श्राव. १४	जुला. २९	अश्वि.	मेष	कर्क	मिथुन	ऽबु.। ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल.५(७/३६ तक), ६(९/३६ बाद)(चं.परि.), ७(चं.श.रा.के.परि.), ८(चं.मं.श.परि.), ९(१७/५९ तक)(मं.बु.गु.परि.), (१७/५९ बाद शुक्रपादवेध),
श्राव. कृ. १० गु.	श्राव. १७	अग. १	रोहि.	वृष	कर्क	मिथुन	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि.ल. ८(१६/०२ बाद)(चं.मं.श.परि.), ९(चं.मं.बु.गु.परि.), गोधू, ११(शु.परि.), १२(शु.दा.), १(श.रा.के.परि.), २(चं.परि.), ३(मं.परि.)
श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. १८	अग. २	रोहि.	वृष	कर्क	मिथुन	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि.ल. ५(८/२१ तक),
श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. १८	अग. २	मृग.	वृष/मिथुन	कर्क	मिथुन	॥ ॥ ॥ ऽऽ ॥	दि.ल. ५(८/२१ बाद), ६(९/४३ तक), ८(१४/१९ से १५/०७ तक) (चं.मं.बु.गु.परि.), १२(२१/५४ बाद)(शु.दा.), १(श.रा.के.परि.), २, ३(चं.मं.परि.), (१५/०७ से २१/५४ तक चन्द्र पादवेध),
श्राव. कृ. १२ श.	श्राव. १९	अग. ३	मृग.	मिथुन	कर्क	मिथुन	॥ ॥ ।ऽरो. ऽऽ ॥	दि.ल. ५, ६(११/२७ तक), (चन्द्रपादवेधाभाव),
श्राव. शु. २ गु.	श्राव. २४	अग. ८	मघा	सिंह	कर्क	मिथुन	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. ५(चं.परि.), ६, ७(१३/३६ तक)(श.रा.के.परि.),
श्राव. शु. २ शु.	श्राव. २५	अग. ९	उ.फा.	सिंह	कर्क	मिथुन	॥ ऽशु.। ।ऽनृ. ॥ ॥	ल. २(२५/०८ बाद), ३(मं.परि.),
श्राव. शु. ३ श.	श्राव. २६	अग. १०	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	मिथुन	॥ ऽशु. ॥ ऽचौ. ॥ ॥	दि.ल. ५(चं.परि.), ६(चं.परि.), ७(श.रा.के.परि.), ८(मं.गु.श.परि.), ९(मं.गु. परि.),
श्राव. शु. ४ र	श्राव. २७	अग. ११	हस्त	कन्या	कर्क	मिथुन	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि.ल. ५(६/५२ बाद), ६(चं.परि.), ७(श.रा.के. परि.), ८(मं.गु.श.परि.), ९(मं.गु.परि.), गोधू., ११(चं.शु.परि.), १२(चं.शु.दा.), १(चं.श.रा.के.परि.), २, ३(२६/५२ तक)(मं.परि.),
श्राव. शु. ४ र.	श्राव. २७	अग. ११	चित्रा	कन्या	कर्क	मिथुन	।ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ३(२६/५२ बाद)(मं.परि.),
श्राव. शु. ५ चं.	श्राव. २८	अग. १२	चित्रा	कन्या/तुला	कर्क	मिथुन	।ऽ ॥ ।ऽरो. ॥ ॥	दि.ल. ५(निर्बल लग्न), ६(चं.दा.), ७(श.रा.के.परि.), ८(मं.गु.श.परि.), ९(मं.गु.परि.), गोधू., ११(शु.परि.), १२(चं.शु.परि.), १(चं.श.रा.के.परि.), २(चं.परि.), ३(२७/०५ तक)(मं.परि.),
श्राव. शु. १२ र.	भाद्र. ३	अग. १८	उ.षा.	मकर	सिंह	मिथुन	॥ ॥ ऽमं. ऽअ. ॥ ॥	ल. ३(२६/०२ बाद)(चं.मं.परि.), ४(चं.परि.), (२६/०२ तक मृत्युबाण),
श्राव. शु. १३ चं.	भाद्र. ४	अग. १९	उ.षा.	मकर	सिंह	मिथुन	॥ ॥ ऽमं. ऽअ. ॥ ॥	दि.ल. ६, ७(श.रा.के.परि.), ८(गु.श.परि.), ९(१६/०८ तक) (मं.बु.गु.परि.)

शुद्ध विवाहमुहूर्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
श्राव. शु. १४ मं.	भाद्र. ५	अग. २०	धनि.	मकर/कुम्भ	सिंह	मिथुन	ऽश.। ।। ।। ऽऽ ।।	ल. १२(२०/४९ बाद) (शु.परि.), १(शु.श.रा.के.परि.), २, ३, ४(२८/४७ तक) (चं.मं.परि), (बुधपादवेध अभाव),
श्राव. शु. १५ बु.	भाद्र. ६	अग. २१	धनि.	कुम्भ	सिंह	मिथुन	ऽश.। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. ६(चं.परि.), ७(११/२४ तक) (श.रा.के.परि.),
भाद्र. कृ. ३ शु.	भाद्र. ८	अग. २३	उ.भा.	मीन	सिंह	मिथुन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ६(८/११ बाद)(चं.दा.), ७(श.रा.के.परि.), ३(२५/३८ बाद), (१९/४६ से २५/३८ तक शुक्रपादवेध),
भाद्र. कृ. ५ र.	भाद्र. १०	अग. २५	अश्वि.	मेष	सिंह	मिथुन	।ऽ ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ७(११/२८ बाद)(चं.श.रा.के.परि.), ९(मं.गु.दा.), १०(मं.परि.), गोधू., १२(शु.परि.), २, ३, (११/२८ तक क्रान्तिसाम्य),
भाद्र. कृ. ६ चं.	भाद्र. ११	अग. २६	अश्वि.	मेष	सिंह	मिथुन	।ऽ ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ६(८/३८ तक) (चं.परि.),
भाद्र. कृ. ८ बु.	भाद्र. १३	अग. २८	रोहि.	वृष	सिंह	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ९(चं.मं.गु.परि.), १०(मं.बु.परि.), गोधू., १२(शु.परि.), २(चं.परि.), ३,
भाद्र. कृ. ९ गु.	भाद्र. १४	अग. २९	रोहि.	वृष	सिंह	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६, ७(चं.श.रा.के.परि.), ९(१५/२९ तक) (चं.मं.गु.परि.),
भाद्र. कृ. ९ गु.	भाद्र. १४	अग. २९	मृग.	वृष	सिंह	मिथुन	ऽबु.ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ९(१५/२९ बाद)(चं.मं.गु.परि.), १०(१७/३९ तक)(मं.बु.परि.), गोधू. १२(शु.परि), २ (चं.परि.), ३,
भाद्र. कृ. ९ शु.	भाद्र. १५	अग. ३०	मृग.	मिथुन	सिंह	मिथुन	ऽबु.ऽ ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६, ७(श.रा.के.परि.), ९(चं.मं.गु.परि.), १०(चं.मं.परि.),
भाद्र. शु. १ शु.	भाद्र. २२	सितं. ६	उ.फा.	कन्या	सिंह	मिथुन	ऽगु.ऽ ऽबु.। ।। ।। ।।	ल. १२(चं.बु.शु.परि.), ३, ४(मं.परि.), (मकर लग्न में मृत्युबाण),
भाद्र. शु. २ श.	भाद्र. २३	सितं. ७	उ.फा.	कन्या	सिंह	मिथुन	ऽगु.ऽ ऽबु.। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ६(८/१० तक)(चं.परि.),
भाद्र. शु. २ श.	भाद्र. २३	सितं. ७	हस्त	कन्या	सिंह	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ६(८/१० बाद)(चं.परि.), ७(श.रा.के.परि.), रा.ल.१२(१९/५९ बाद)(चं.बु.शु.परि), ३, ४(मं.परि.), (१४/२६ से १९/५९ तक क्रान्तिसाम्य),
भाद्र. शु. ३ र.	भाद्र. २४	सितं. ८	हस्त	कन्या	सिंह	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६(८/३१ तक)(चं.परि.),
भाद्र. शु. ३ र.	भाद्र. २४	सितं. ८	चित्रा	कन्या/तुला	सिंह	मिथुन	।। ऽशु ।। ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ६(८/३१ बाद)(चं.परि.), ७(श.रा.के.परि.), १०(मं.परि.), रा.ल. १२(चं.बु.शु.परि.), ३, ४(२८/२४ तक)(मं.परि.),
भाद्र. शु. ८ शु.	भाद्र. २९	सितं. १३	मूल	धनु	सिंह	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६, ७(श.रा.के.परि.), १०(मं.परि.), गोधू., १२(बु.शु.परि.), (२२/१५ से २७/५१ तक गुरुपादवेध),
आश्वि. शु. ६ गु.	आश्वि.२५	अक्तू. १०	मूल	धनु	कन्या	मिथुन	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ८(१०/४३ बाद)(गु.परि.), ११(मं.परि.), गोधू., ३(२२/०० तक)(चं.शु.परि.), ५(२७/३८ बाद)(मं.परि.), (२२/०० से २७/३८ तक गुरुपादवेध),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
आश्वि. शु. ७ शु.	आश्वि.२६	अक्तू. ११	मूल	धनु	कन्या	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ७(८/१८ तक) (श.रा.के.परि.),
आश्वि. शु. ८ श.	आश्वि.२७	अक्तू. १२	उ.षा.	धनु/मकर	कन्या	मिथुन	।। ।। ऽगु.ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. ७(७/४८ बाद)(श.रा.के. परि.), ८(गु.परि.), ११(मं.परि.), गोधू., ३(चं.शु.परि.), ४(चं.दा.), ५(मं. परि.),
कार्त्ति. कृ. १ श.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	अश्वि.	मेष	तुला	मिथुन	।। ।। ऽसू.ऽअ. ।। ।।	दि.ल ९(१२/१५ बाद)(गु.दा.), ११(मं.परि.), १२, रा.ल. ३(शु.परि), ४, ५(२६/४० तक)(मं.परि.), (१२/१५ तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. कृ. ३ मं.	कार्त्ति. ६	अक्तू. २२	रोहि.	वृष	तुला	मिथुन	।ऽ ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. ८(६/१० बाद)(चं.गु.परि.), ९(चं.गु.परि.), ११(मं.परि.), १२, गोधू., ३(शु.परि.), ४, ५(मं.परि.), ६,
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	कार्त्ति. ७	अक्तू. २३	मृग.	वृष/मिथुन	तुला	मिथुन	।। ।। ऽशुऽचौ. ऽऽ ।।	दि.ल. ८(६/२६ तक)(चं.गु.परि.), ३(२१/४८ बाद)(शु.परि.), ४, ५(मं.परि.), ६,
कार्त्ति. कृ. ५ गु.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	मृग.	मिथुन	तुला	मिथुन	।। ।। ऽशुऽचौ. ऽऽ ।।	दि.ल. ८(१०/३२ तक)(चं.गु.परि.),
कार्त्ति. कृ. ९ चं.	कार्त्ति. १२	अक्तू. २८	मघा	सिंह	तुला	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ३(२१/३७ बाद)(शु.परि.), ४, ५(चं.मं.परि.), ६,
कार्त्ति. कृ. १० मं.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	मघा	सिंह	तुला	मिथुन	ऽबु.। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ८(८/५५ तक)(गु.परि.), रा.ल. ३(२१/३६ बाद)(शु.परि.), ४(२३/३० तक),
कार्त्ति. कृ. ११ बु.	कार्त्ति. १४	अक्तू. ३०	उ.फा.	सिंह	तुला	मिथुन	ऽगु.। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. ५(चं.मं.परि.), ६,
कार्त्ति. कृ. १२ गु.	कार्त्ति. १५	अक्तू. ३१	उ.फा.	कन्या	तुला	मिथुन	ऽगु.। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ८(गु.परि.), ९(११/५७ तक)(गु.दा.),
कार्त्ति. शु. १ चं.	कार्त्ति. १९	नवं. ४	अनु.	वृश्चिक	तुला	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ३(२१/२३ बाद)(चं..शु.परि.), ५(मं.परि.), ६,
कार्त्ति. शु. २ मं.	कार्त्ति. २०	नवं. ५	अनु.	वृश्चिक	तुला	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ९(गु.दा.), (१३/०६ बाद मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. ३ बु.	कार्त्ति. २१	नवं. ६	मूल	धनु	तुला	मिथुन	।। ऽशु.। ।ऽअ. ।। ।।	ल. गोधू., ३(२१/१७ तक)(चं.शु.परि.),
कार्त्ति. शु. ४ गु.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	मूल	धनु	तुला	मिथुन	।। ऽशु.। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ९(चं.गु.परि.), ११(मं.परि.), १२(१५/२४ तक), (गुरुपादवेधाभाव),
कार्त्ति. शु. ७ श.	कार्त्ति. २४	नवं. ९	श्रव.	मकर	तुला	मिथुन	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ११(मं.परि.), १२, गोधू., ३(शु.परि.),
कार्त्ति. शु. ८ र.	कार्त्ति. २५	नवं. १०	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	मिथुन	ऽरा.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ९(गु.दा.), ११(मं.परि.), १२, गोधू., ३(चं.शु.परि.), ५(चं.मं.परि.), ६(चं.परि.),
कार्त्ति. शु. ११ बु.	कार्त्ति. २८	नवं. १३	उ.भा.	मीन	तुला	मिथुन	।ऽ ।। ।। ।। ।।	ल. ३(२०/३२ बाद)(शु.परि.), ५(चं.मं.परि.), ६(चं.दा.),
कार्त्ति. शु. १२ गु.	कार्त्ति. २९	नवं. १४	रेव.	मीन	तुला	मिथुन	ऽसू.। ।। ।। ऽ। ।।	दि.ल. ९(गु.दा.), (१२/०८ बाद मृत्युबाण),
मार्ग.कृ. १ चं.	मार्ग. ३	नवं. १८	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ऽ। ।।	दि.ल. ११(१३/३० बाद)(मं.परि.), १२, १(चं.श.रा.के.परि.), रा.ल.३(शु.परि.), ५(मं.परि.), ६, ७(चं.श.रा.के.परि.),

शुद्ध विवाहमुहूर्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. कृ. २ मं.	मार्ग. ४	नवं. १९	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ऽ। ।।	दि.ल. ६(चं.गु.परि.), ११(मं.परि.), १२, १(१५/४५ तक) (श.रा.के.परि.),
मार्ग. कृ. २ मं.	मार्ग. ४	नवं. १९	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १(१५/४५ बाद)(श.रा.के.परि.), रा.ल. ३(शु.परि.), ५(मं.परि.), ६, ७(श.रा.के.परि.),
मार्ग. कृ. ३ बु.	मार्ग. ५	नवं. २०	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६(चं.गु.दा.), ११(१३/१२ तक)(मं.परि.),
मार्ग. कृ. ६ र.	मार्ग. ९	नवं. २४	मघा	सिंह	वृश्चिक	मिथुन	ऽबु.। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ७(२६/५२ बाद)(श.रा.के.परि.),
मार्ग. कृ. ७ चं.	मार्ग. १०	नवं. २५	मघा	सिंह	वृश्चिक	मिथुन	ऽबु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६(गु.दा.), ११(चं.मं.परि.), १२(चं.मं.परि.), १(श.रा.के.परि.), गोधू., ३(२०/१२ तक)(शु.परि.),
मार्ग. कृ. ९ बु.	मार्ग. १२	नवं. २७	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	मिथुन	ऽगु.। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६(६/५८ बाद)(गु.दा.), ११(चं.मं.परि.), १२(चं.मं.परि.), १(चं.श.रा.के.परि.), गोधू., ३(शु.परि.), ५, ६(२७/०२ तक) (चं.मं.परि.), (भौमयुतिपरिहार),
मार्ग. कृ. १० गु.	मार्ग. १३	नवं. २८	हस्त	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।।।ऽ ।।	दि.ल. १(१५/१२ बाद)(चं.मं.श.रा.के.परि.), गोधू., ३(शु.परि.), ५, ६(चं.मं.परि.), ७(श.रा.के.परि.),
मार्ग. कृ. ११ शु.	मार्ग. १४	नवं. २९	हस्त	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६(गु.दा.), १०(११/१८ तक),
मार्ग. कृ. ११ शु.	मार्ग. १४	नवं. २९	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चिक	मिथुन	ऽमं.। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. १०(११/१८ बाद), ११(चं.मं.परि.), १२(चं.मं.परि.), १(चं.मं.श.रा.के.परि.), गोधू., ३ (शु.परि.), ५, ६(मं.परि.), ७(चं.श.रा.के.परि.)
मार्ग. कृ. १२ श.	मार्ग. १५	नवं. ३०	चित्रा	तुला	वृश्चिक	मिथुन	ऽमं.। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ६(गु.दा.), १०(१०/४८ तक),
मार्ग. शु. ४ शु.	मार्ग. २१	दिसं. ६	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	मिथुन	।। ऽशु.। ऽगु.ऽअ. ।। ।।	ल गोधू., ३(१८/५८ तक)(चं.बु.शु.परि.),
मार्ग. शु. ४ शु.	मार्ग. २१	दिसं. ६	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ३(१८/५८ बाद)(चं.बु.शु.परि.), ६(मं.परि.), ७(श.रा.के.परि.),
मार्ग. शु. ५ श.	मार्ग. २२	दिसं. ७	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६(६/२८ तक)(गु.दा.)(निर्बल लग्न), १२(१३/०४ बाद) (मं.परि.), १(श.रा.के.परि.),
मार्ग. शु. ५ श.	मार्ग. २२	दिसं. ७	धनि.	मकर/कुम्भ	वृश्चिक	मिथुन	ऽश.। ।। ।। ऽ। ।।	ल.गोधू., ३(चं.शु.परि.), ६(मं.परि.), ७(श.रा.के.परि.),
मार्ग. शु. ६ र.	मार्ग. २३	दिसं. ८	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	मिथुन	ऽश.। ।। ।ऽनृ. ऽ। ।।	दि.ल. ६(गु.दा.)(निर्बल लग्न), १०, ११(चं.मं.परि.), १२(मं.परि.), १(१५/१८ तक) (मं.श.रा.के.परि.),
मार्ग. शु. ८ मं.	मार्ग. २५	दिसं. १०	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	मिथुन	।। ।। ऽमं.ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. १२(१३/५३ बाद)(चं.मं.परि.), १(श.मं.रा.के.परि.), गोधू., ३(शु.परि.),

शुद्ध विवाहमुहूर्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृ. २ श.	माघ ५	जन. १८	मघा	सिंह	मकर	मिथुन	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	ल. ५ (सू.चं.परि.), ६(मं.परि.), ७(२५/३६ तक)(श.रा.के.परि.), (२५/३६ बाद बुधपादवेध),
माघ कृ. ३ र.	माघ ६	जन. १९	मघा	सिंह	मकर	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू. ५(२१/३८ तक) (सू.चं.परि.),
माघ कृ. ४ चं.	माघ ७	जन. २०	उ.फा.	सिंह	मकर	मिथुन	।। ।। ।ऽवौ. ।ऽ ।।	ल. ७(२४/०३ बाद)(श.रा.के.परि.), ९(३०/१७ तक)(गु.दा.),
माघ कृ. ५ मं.	माघ ८	जन. २१	उ.फा.	कन्या	मकर	मिथुन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ११(चं.मं.परि.), १२(चं.मं.परि.), १(चं.मं.श.रा.के.परि.), ३(बु.शु.परि.), गोधू., ५(सू.परि.), ६(चं.मं.परि.), ७(२६/०६ तक)(श.रा.के.परि.),
माघ कृ. ५ मं.	माघ ८	जन. २१	हस्त	कन्या	मकर	मिथुन	ऽचं.। ।। ।। ।। ।।	ल. ७(२६/०६ बाद)(श.रा.के.परि.), ९(गु.दा.),
माघ कृ. ६ बु.	माघ ९	जन. २२	हस्त	कन्या	मकर	मिथुन	ऽचं.। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ११(चं.मं.परि.), १२(चं.मं.परि.), १(चं.मं.श.रा.के.परि.), ३(बु.शु.परि.), गोधू., ५(सू.परि.), ६(२२/१८ तक)(चं.मं.परि.),
माघ कृ. ७ गु.	माघ १०	जन. २३	चित्रा	कन्या	मकर	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. १२(१०/३४ बाद)(चं.मं.परि.), १(चं.मं.श.रा.के.परि.), ३(१६/११ तक)(शु.परि.), (१६/११ बाद अपरिहार्यभौमयुति),
माघ कृ. १० र.	माघ १३	जन. २६	अनु.	वृश्चिक	मकर	मिथुन	ऽबु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ११(८/४५ तक)(मं.परि.), (१२/३३ से २६/०२ तक क्रान्तिसाम्य),
माघ कृ. १२ मं.	माघ १५	जन. २८	मूल	धनु	मकर	मिथुन	।। ।। ।ऽनृ. ऽऽ ।।	दि.ल. ११(मं.परि.), १२(मं.परि.), १(श.रा.के.परि.), ३(चं.शु.परि.), रा.ल. ५(सू.बु.परि.), ६(२२/२५ तक)(मं.बु.परि.),
माघ शु. १ शु.	माघ १८	जन. ३१	धनि.	मकर/कुम्भ	मकर	मिथुन	ऽश.रा.ऽ ऽबु.। ।ऽरो. ।। ।।	ल. ७(२३/२२ बाद)(श.रा.के.परि.), ९(गु.दा.),
माघ शु. २ श.	माघ १९	फर. १	धनि.	कुम्भ	मकर	मिथुन	ऽश.रा.ऽ ऽबु.। ।। ।। ।।	दि.ल. ११(चं.मं.परि.), १२(१०/२३ तक)(मं.परि.),
माघ शु. ४ चं.	माघ २१	फर. ३	उ.भा.	मीन	मकर	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ३(१४/३४ बाद)(शु.परि.), गोधू., ५(सू.चं.बु.परि.), ६(चं.मं.बु.परि.), ७(चं.श.रा.के.परि.), ९(२८/४६ तक)(गु.दा.),
माघ शु. ४ चं.	माघ २१	फर. ३	रेव.	मीन	मकर	मिथुन	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ९(२८/४६ बाद)(गु.दा.),
माघ शु. ५ मं.	माघ २२	फर. ४	रेव.	मीन	मकर	मिथुन	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल.११(मं.दा.), १२(चं.मं.परि.), १(मं.श.रा.के.परि.), ३(शु.परि.), गोधू., ५(सू.चं.बु.परि.), ६(चं.बु.परि.), ७(चं.श.रा.के.परि.), ९(२८/२८ तक)(गु.दा.),
माघ शु. ६ श.	माघ २६	फर. ८	रोहि.	वृष	मकर	मिथुन	।। ।। ।। ऽ। ।।	दि.ल. ११, १२(मं.परि.), १(मं.श.रा.के.परि.), ३(शु.परि.), गोधू., ५(सू.बु.परि.), ६(बु.परि.), ७(मं.श.रा.के.परि.), ९(२६/११ तक)(चं.गु.परि.),

शुद्ध विवाहमुहूर्त (सं. २०७० वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ शु. १५ शु.	फाल्गु. ३	फर. १४	मघा	सिंह	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ऽबु.ऽअ. ऽऽ ॥	ल. ६(गु.दा.), १०(चं.मं.परि.),
फाल्गु. कृ. १ श.	फाल्गु. ४	फर. १५	मघा	सिंह	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ऽबु.ऽअ. ऽऽ ॥	दि.ल. १२(६/४३ तक)(चं.मं.परि.), ३(शु.परि.), रा.ल. ६(बु.परि.), ७(मं.श.रा.के. परि.), ६(२७/३५ तक)(गु.दा.),
फाल्गु. कृ. २ चं.	फाल्गु. ६	फर. १७	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. १२(चं.मं.परि.), १(मं.श.रा.के.परि.), ३(शु.परि.), गोधू., ६(२१/४४ तक)(चं.बु.परि.),
फाल्गु. कृ. ३ मं.	फाल्गु. ७	फर. १८	हस्त	कन्या	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ३(शु.परि.), गोधू., ६(चं.परि.), ७(मं.श.रा.के.परि.), ६(गु.दा.), १०,
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फाल्गु. ८	फर. १९	हस्त	कन्या	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि.ल. १२(६/१६ तक)(चं.मं.परि.),
फाल्गु. कृ. ७ श.	फाल्गु. ११	फर. २२	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	मिथुन	ऽबु.शु.। ॥ ॥ ऽ। ॥	दि.ल. ३(चं.शु.परि.), गोधू., ६, ७(२४/०८ तक) (मं.श.रा.के.परि.), (२४/०८ बाद मृत्युबाण),
फाल्गु. कृ. ९ चं.	फाल्गु. १३	फर. २४	मूल	धनु	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ।ऽअ. ऽ। ॥	दि.ल. १(६/२० बाद)(मं.श.रा.के.परि.), ३(चं.बु.शु.परि.), गोधू., १०(२६/५० बाद),
फाल्गु. कृ. १२ बु.	फाल्गु. १५	फर. २६	उ.षा.	मकर	कुम्भ	मिथुन	।ऽ ऽशु । ।ऽनृ. ऽऽ ॥	ल. ६, ७(मं.श.रा.के.परि.), ६(२६/५६ तक)(गु.दा.)(निर्बल लग्न),
फाल्गु. कृ. १२ बु.	फाल्गु. १५	फर. २६	श्रव.	मकर	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ॥ ऽ। ॥	ल. ६(२६/५६ बाद)(गु.दा.)(निर्बल लग्न), (चन्द्रपादवेधाभाव),
फाल्गु. शु. १ र.	फाल्गु. १९	मार्च २	उ.भा.	मीन	कुम्भ	मिथुन	।ऽ ॥ ।ऽरो. ॥ ॥	ल. ६(चं.दा.), ७(मं.श.रा.के.परि.), ६(गु.दा.)(निर्बल लग्न), १०,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु. २०	मार्च ३	उ.भा.	मीन	कुम्भ	मिथुन	।ऽ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. १२(चं.मं.परि.), १(मं.श.रा.के.परि.), २, ३(बु.शु.परि.),
फाल्गु. शु. ७ शु.	फाल्गु. २४	मार्च ७	रोहि.	वृष	कुम्भ	मिथुन	॥ ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	ल. गोधू., ६, ७(चं.मं.श.रा.के.परि.), १०, (शुक्रपादवेधाभाव),

आगामी सं. २०७१ वि. में गुरु-शुक्रास्त- इस संवत् में शुक्र लगभग २ अक्तूबर से २५ नवम्बर तक और गुरु लगभग ११ जुलाई से ४ अगस्त (२०१४ ई.) तक अस्त रहेगा। इस वर्ष अधिकमास नहीं है।

आगामी वर्ष संवत् २०७१ वि. के सम्भावित विवाहमुहूर्तों की तारीखें अगले पृष्ठ पर देखें।

Laser Typesetting by

वि. सं. 2071 में (31 मार्च, 2014 ई. से 20 मार्च, 2015 ई. तक)सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त– *प्रियव्रत शर्मा*

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि– आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन–किन दिनों में संभावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ इस वर्ष से प्रारम्भ किया जा रहा है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि– आगामी वर्ष के किन–किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* संभावित हैं और किन–किन दिनों में नहीं।

नीचे दिए जा रहे इस पृष्ठ पर जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। जहां जिस तारीख के आगे गुणन–चिह्न के साथ प्रश्नचिह्न(?) है, उसदिन शुद्ध विवाहमुहूर्त्त की 50 प्रतिशत संभावना समझनी चाहिए। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त संभावना है।

तारीख	मार्च '14	अप्रैल '14	मई '14	जून '14	जुलाई '14	अगस्त '14	सितंबर '14	अक्तूबर '14	नवंबर '14	दिसंबर '14	जनवरी '15	फरवरी '15	मार्च '15	तारीख
1		×		×	×(?)	×		×	×		×	×	×	1
2		×		×		×		×	×		×	×	×	2
3		×		×		×		×	×		×	×	×	3
4		×	×			×		×	×	×	×	×(?)	×	4
5		×	×			×		×	×		×		×	5
6		×	×			×		×	×		×			6
7		×	×(?)			×		×	×		×			7
8		×			×		×	×	×	×	×			8
9		×			×		×	×	×	×	×			9
10		×			×		×	×	×	×	×			10
11		×			×		×	×	×	×	×			11
12		×			×		×	×	×		×	×		12
13		×	×		×		×	×	×		×	×	×	13
14		×	×	×	×		×	×	×		×		×	14
15				×	×		×	×	×	×			×	15
16					×	×	×	×	×	×		×	×	16
17					×	×	×	×	×	×		×	×	17
18			× (?)	×	×		×	×	×	×	×	×	×	18
19					×		×	×	×	×	×	×	×	19
20					×		×	×	×	×	×		×	20
21					×	×	×	×	×	×				21
22					×	×	×	×	×	×				22
23				×	×	×	×	×	×	×				23
24				×	×	×	×	×	×	×		×		24
25				×	×	×		×	×	×		×		25
26		×	×	×	×	×		×	×	×		×		26
27		×	×	×	×			×	×	×		×		27
28		×	×	×	×			×	×	×		×		28
29		×		×	×		×	×		×		– – –		29
30		×		×	×		×	×		×		– – –		30
31	×	– –	×	– –	×		– –	×	– –	×		– – –		31

सं. २०७० वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७० वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७० वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त इस पंचांग में पृ. 240... पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और वृषराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०७० वि. में जनवरी (२०१४ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जनवरी, २०१४ ई. की १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, ३१ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि वृष के आगे जनवरी की २१, २२, २३, २६, ३१ तारीखें हैं । इसलिए यह समझना चाहिए कि जनवरी, २०१४ ई. में मेष राशि वाले लड़के और वृष राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जनवरी की केवल २१, २२, २३, ३१ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जनवरी की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-वृष) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है ।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७० वि.) (११ अप्रैल, सन् २०१३ ई. से ३० मार्च, सन् २०१४ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
मेष	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३ १४; अग. १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ६, ७, ९, १०, १३, १४; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	ज्येष्ठ , कार्त्तिक ,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३ १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ६, ७, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	- - -
वृष	मई २०(११/५३ बाद), २१, २२, २९, ३०; जून २, ३; जुला. १३(२५/५८ बाद), १४, २२ (१४/१२ बाद), २३, २४, २६, २७, २८, २९ ; अग. १, २, ३, १०(७/२६ बाद), ११, १२; अक्तू. १२(१३/२६ बाद), १९, २२, २३, २४, ३१; नवं. ४, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २७(१६/१८ बाद), २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. २१, २२, २३, २६, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १७(१२/१९ बाद), १८, १९, २२, २६; मार्च २, ३, ७;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रैल २३; मई १ (९/४५ बाद), २, ३, ६, ११, १२, २०(११/५३ बाद), २१, २२, २९, ३०; जून २, ३; जुला. १३(२५/५८ बाद), १४, २२(१४/१२ बाद), २३, २४, २६, २७, २८, २९; अग. १, २, ३ १०(७/२६ बाद), ११, १२, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८; अक्तू. १२(१३/२६ बाद), १९, २२, २३, २४, ३१; नवं. ४, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २७(१६/१८ बाद), २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. २१, २२, २३, २६, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १७(१२/१९ बाद), १८, १९, २२, २६; मार्च २, ३, ७;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७० वि.) (११ अप्रैल, सन् २०१३ ई. से ३० मार्च, सन् २०१४ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मिथुन	अप्रैल २६; मई १ (६/४५ तक), ६, ११, १२; जुला. ११, १२, १३(२५/५८ तक), २०, २१, २२(१४/१२ तक), २४(१४/०८ बाद), २६, २७, २८, २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०(७/२६ तक), १२(१५/०२ बाद), २०(२४/३०बाद), २१, २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ८(२०/३३ बाद), १३; अक्तू. १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०; नवं. ४, ५, ६, ७, १०(२१/५० बाद), १३, १४, १८, १९, २०, २४, २५, २७(१६/१८ तक), २९(२३/०८ बाद), ३०; दिसं. ७(२८/०१ बाद), ८, १०; फर. १४, १५, १७(१२/१९ तक), २२, २४; मार्च २, ३, ७;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २९; मई १ (६/४५ तक), ६, ११, १२, १८, २०(११/५३ तक), २६, २७, २८; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३(२५/५८ तक), २०, २१, २२(१४/१२ तक), २४(१४/०८ बाद),, २६, २७, २८, २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०(७/२६ तक), १२(१५/०२ बाद), २०(२४/३० बाद),, २१, २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ८(२०/३३ बाद), १३; अक्तू. १०, ११, १२(१३/२६ तक), १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०; नवं. ४, ५, ६, ७, १० (२१/५० बाद), १३, १४, १८, १९, २०, २४, २५, २७(१६/१८ तक), २९(२३/०८ बाद), ३०; दिसं. ७(२८/०१ बाद), ८, १०; जन. १८, १९, २०, २३, २६, २८, ३१(२३/४८ बाद); फर. १, ३, ४, ८, १४, १५, १७(१२/१९ तक), २२, २४; मार्च २, ३, ७;	वृष
कर्क	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. २०, २१, २२, २३, २४(१४/०८ तक), २६, २७, २८, २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२(१५/०२ तक), १८, १९, २०(२४/३० तक), २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८(२०/३३ तक), १३; अक्तू. १०, ११, १२; नवं. १८, १९, २४, २५, २७, २८, २९(२३/०८ तक); दिसं. ६, ७(२८/०१ तक), १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१ (२३/४८ तक); फर. ३, ४, ८	माघ,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४(१४/०८ तक), २६, २७, २८, २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२(१५/०२ तक), १८, १९, २०(२४/३० तक), २३, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८(२०/३३ तक), १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १० (२१/५० तक), १३, १४, १८, १९, २४, २५, २७, २८, २९(२३/०८ तक); दिसं. ६, ७(२८/०१ तक), १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१(२३/४८ तक); फर. ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	मिथुन
सिंह	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जुला. ११, १२, १३, १४; अग. १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ६, ७, ९, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, ३१; फर. १, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २६; मार्च ७;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २८(२२/५५ बाद), २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८ ; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, ३१; फर. १, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २४, २६; मार्च ७;	—
कन्या	मई १८, २०, २१, २२, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३, १४, २२(१४/१२ बाद), २३, २४, २६, २७, २८(२२/५५ तक); अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२; अक्तू. १२(१३/२६ बाद), २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २६; मार्च २, ३, ७;	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्त्तिक, माघ ,	अप्रैल २३; मई १ (६/४५ बाद), २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३, १४, २२(१४/१२ बाद), २३, २४, २६, २७, २८(२२/५५ तक); अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २३, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८; अक्तू. १२(१३/२६ बाद), २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २६; मार्च २, ३, ७;	—
तुला	अप्रैल २३, २९; मई १ (६/४५ तक), ६; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२(१४/१२ तक), २४(१४/०८ बाद), २६, २७, २८, २९; अग. २ (२१/५४ बाद), ३, ८, ९, १०, ११, १२, २०(२४/३० बाद), २१, २३, २५, २६, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १९, २३(२१/१० बाद), २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, १०(२१/५० बाद), १३, १४, १९(२८/५९ बाद), २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ७(२८/०१ बाद), ८, १०; फर. १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४; मार्च २, ३;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २३, २९; मई १(६/४५ तक), ६, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२(१४/१२ तक), २४(१४/०८ बाद), २६, २७, २८, २९; अग. २(२१/५४ बाद), ३, ८, ९, १०, ११, १२, २०(२४/३० बाद), २१, २३, २५, २६, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२(१३/२६ तक), १९, २३(२१/१० बाद), २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, १०(२१/५० बाद), १३, १४, १९(२८/५९ बाद), २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ७(२८/०१ बाद), ८, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१(२३/४८ बाद), ; फर. १, ३, ४, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४; मार्च २, ३;	वृष

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७० वि.) (११ अप्रैल, सन् २०१३ ई. से ३०मार्च, सन् २०१४ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	
वृश्चिक	अप्रैल २३, २६; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. २०, २१, २२, २३, २४(१४/०८ तक), २६, २७, २८, २९; अग. १, २(२१/५४ तक), ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०(२४/३० तक), २३, २५, २६, २८, २९ ; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२; नवं. १९(२८/५९ तक), २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७(२८/०१ तक), १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१ (२३/४८ तक); फर. ३, ४, ८;	ज्येष्ठ,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४(१४/०८ तक), २६, २७, २८, २९; अग. १, २(२१/५४ तक), ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०(२४/३० तक), २३, २५, २६, २८, २९; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३(२१/१० तक), २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०(२१/५० तक), १३, १४, १८, १९(२८/५९ तक), २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७(२८/०१ तक), १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१(२३/४८ तक); फर. ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	मिथुन
धनु	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जुला. ११, १२, १३, १४; अग. १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ८ १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २६; मार्च ७;	आषाढ़ , माघ,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २८(२२/५५ बाद), २९; अग. १, २, ३, ८, ९, १०, ११, १२, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३, २४, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०, १८, १९, २०, २४, २५, २७, २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २६; मार्च ७;	- - -
मकर	मई २०(११/५३ बाद), २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. १३ (२५/५८ बाद), १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८ (२२/५५ तक); अग. १, २, ३, १०(७/२६ बाद), ११, १२, अक्तू. १०, ११, १२, २२, २३, २४, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २७(१६/१८ बाद), २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. २१, २२, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १७(१२/१९ बाद), १८, १९, २२, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, २०(११/५३ बाद), २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. १३(२५/५८ बाद), १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८(२२/५५ तक); अग. १, २, ३, १०(७/२६ बाद), ११, १२, १८, १९, २०, २१, २३, २८, २९, ३०; सितं. ६, ७, ८, १३; अक्तू. १०, ११, १२, २२, २३, २४, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २७(१६/१८ बाद), २८, २९, ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. २१, २२, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १७(१२/१९ बाद), १८, १९, २२, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	- - -
कुम्भ	अप्रैल २९; मई १, २, ३, ६; जुला. ११, १२, १३(२५/५८ तक), २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९; अग. २(२१/५४ बाद), ३, ८, ९, १०(७/२६ तक), १२(१५/०२ बाद), १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, ३०; सितं. ८(२०/३३ बाद), १३; अक्तू. १९, २३ (११/१० बाद), २४, २८, २९, ३०; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४, १९(२८/५९ बाद), २०, २४, २५, २७(१६/१८ तक), २९(२३/०८ बाद), ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; फर. १४, १५, १७(१२/१९ तक), २२, २४, २६; मार्च २, ३;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल २९; मई १, २, ३, ६, १८, २०(११/५३ तक), २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३(२५/५८ तक), २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९; अग. २(२१/५४ बाद), ३, ८, ९, १०(७/२६ तक), १२(१५/०२ बाद), १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, ३०; सितं. ८(२०/३३ बाद), १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २३(२१/१० बाद), २४, २८, २९, ३०; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४, १९(२८/५९ बाद), २०, २४, २५, २७(१६/१८ तक), २९(२३/०८ बाद), ३०; दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. १८, १९, २०, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ३, ४, १४, १५, १७(१२/१९ तक), २२, २४, २६; मार्च २, ३;	वृष
मीन	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९; अग. १, २(२१/५४ तक), ८, ९, १०, ११, १२(१५/०२ तक), १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, २९ ; सितं. ६, ७, ८ (२०/३३ तक), १३; अक्तू. १०, ११, १२; नवं. १८, १९(२८/५९ तक), २४, २५, २७, २८, २९ (२३/०८ तक); दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ३, ४, ८;	आश्विन,	अप्रैल २३, २९; मई १, २, ३, ६, ११, १२, १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८, २९, ३०; जून २, ३; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २८, २९; अग. १, २(२१/५४ तक), ८, ९, १०, ११, १२(१५/०२ तक), १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, २९; सितं. ६, ७, ८(२०/३३ तक), १३; अक्तू. १०, ११, १२, १९, २२, २३(२१/१० तक), २८, २९, ३०, ३१; नवं. ४, ५, ६, ७, ९, १०, १३, १४, १८, १९(२८/५९ तक), २४, २५, २७, २८, २९(२३/०८ तक); दिसं. ६, ७, ८, १०; जन. १८, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३१; फर. १, ३, ४, ८, १४, १५, १७, १८, १९, २२, २४, २६; मार्च २, ३, ७;	मिथुन

विवाहमुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार

(एक संशोधन)

(लेखक–प्रियव्रत शर्मा)

(मुहूर्त्तगजानन से उद्धृत)

इस वर्ष से "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में हमने विवाहलग्नशोधन–प्रक्रिया में लग्नभंग के परम्परागत परिहारों के अलावा कई ऐसे अन्य दस परिहारों का भी प्रयोग प्रारम्भ किया है, जिन्हें संहिताकारों ने विवाहलग्न को सर्वथा दोषमुक्तकारक व अत्यन्त शक्तिशाली बनाने की क्षमता वाले बतलाया है। ध्यान रहे– इन परिहारों के अपनाने से विवाह के लिए ग्राह्य लग्नों की संख्या में वृद्धि हो जाने पर विवाह जैसे मंगलकृत्य के लिए शुभकाल पूर्वापेक्षया कहीं अधिक हमें प्राप्त हो रहा है और वह काल अपेक्षाकृत अधिक मंगलकारी भी है। नीचे दिया जा रहा यह लेख दैवज्ञों को ध्यान से पढ़ना चाहिए, इससे उन्हें परम्परागत लग्नभंग–परिहारों की अपूर्णता स्पष्ट हो जाएगी और हमारे द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले इन दस परिहारों की प्रामाणिकता भी वे समझ सकेंगे।

" लग्नभंग " की स्थिति में लग्न विवाह के अयोग्य हो जाता है, बशर्त्ते कि, वहां लग्नभंगदोष का कोई परिहार सम्भव न हो। लग्नभंग कब, किन–किन स्थितियों में होता है, उसका शास्त्रसमर्थित यथार्थ परिहार किन–किन स्थितियों में सम्भव है, इसका यहां विवेचन किया जाएगा। इससे पूर्व हम लग्नभंगकारक सात स्थितियों का निर्देश कर देना उचित समझते हैं।

लग्नभंग इन सात स्थितियों में होता है :–

(1) लग्न में पापनवांश या वर्गोत्तम से भिन्न कोई अन्तिम नवांश हो।

(2) लग्नकर्त्तरी या चन्द्रकर्त्तरी हो।

(3) लग्न में चन्द्र या पापग्रह हो।

(4) षष्ठ में चन्द्र–शुक्र या लग्नेश हो।

(5) सप्तम में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु या केतु हो।

(6) अष्टम में चन्द्र, मंगल, लग्नेश या कोई शुभग्रह हो।

(7) चरराशिस्थ चन्द्र के समय चर लग्न का चरनवांश हो।

लग्नशोधन की आजकल प्रचलित परम्परा में पंचांगकर्त्ता दैवज्ञ लग्नभंग की इन उपरोक्त स्थितियों में से कुछेक को परिहार्य (जिनका परिहार सम्भव है) और कुछेक को अपरिहार्य (जिनका परिहार सम्भव नहीं है) मानते हैं, **जिसका विवरण इस प्रकार है –**

(1) लग्न में पापनवांश तथा अन्तिम नवांश का परिहार नहीं माना गया।

(2) लग्नकर्त्तरी या चन्द्रकर्त्तरी को परिहार्य माना गया है। कर्त्तरी–कारक ग्रह यदि नीचस्थ शत्रुराशिस्थ या अस्त हों तो लग्न एवं चन्द्रकर्त्तरी दोष नहीं रहता अर्थात् तब उसका परिहार हो जाता है। द्वितीयस्थ शुभग्रह या द्वादशस्थ गुरु से लग्नकर्त्तरी का और चन्द्र से द्वितीयस्थ शुभग्रह या द्वादशस्थ गुरु होने पर चन्द्रकर्त्तरी दोष का परिहार हो जाता है।

(3) लग्नस्थ चन्द्र या पापग्रह के दोष का परिहार नहीं माना गया।

(4) षष्ठस्थ चन्द्र नीचराशि या नीचांश में हो तो इसका दोष नहीं रहता। इसी तरह नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ शुक्र का भी षष्ठस्थिति–दोष नहीं रहता, लग्नेश ग्रह तथा लग्नेश होकर षष्ठस्थ चन्द्र और शुक्र का दोष तो अपरिहार्य माना गया है।

(5) चन्द्र और गुरु के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रहों की सप्तम में स्थिति का दोष अपरिहार्य माना गया है।

(6) नीचस्थ या नीचांशस्थ चन्द्र, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ शुक्र और नीचस्थ, शत्रुराशिस्थ या अस्तंगत भौम के अष्टमस्थितिदोष को परिहार्य माना है। लग्नेश ग्रह एवं लग्नेश होकर अष्टम में स्थित चन्द्र, भौम, शुक्र का दोष तो अपरिहार्य माना गया है। **किंच–** अष्टमस्थ बुध, गुरु का दोष भी परिहार के क्षेत्र में नहीं माना जाता।

(7) चरराशिस्थ चन्द्र के समय चरलग्न के चरनवांश का दोष भी अपरिहार्य बतलाया गया है।

विवाहलग्न–शुद्धि के प्रसंग में आजकल के लगभग सभी दैवज्ञ/पंचांगकार प्रचलित परम्पराप्राप्त इन उपरोक्त लग्नभंग–परिहारों के अलावा अन्य (संहिताओं में सप्रपंच चर्चित, नीचे बतलाए जा रहे) महत्त्वपूर्ण इन दस परिहारों में से किसी का भी प्रयोग अक्सर नहीं करते– यह उनके सम्पादित पंचांगों में दिए विवाहमुहूर्तों को देखने से स्पष्ट है। संहिताओं में पदे–पदे उपलब्ध होने वाले इन दस लग्नभंग–परिहारों (जिनमें से प्रत्येक में सभी प्रकार के लग्नभंगदोषों को सर्वथा सम्मार्जित करने की प्रबल क्षमता का संहिताकारों ने दृढ़ता से निर्देश किया है) को देखने से स्पष्ट है, इन दैवज्ञों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले ये उपरोक्त प्रचलित मात्र दो–चार लग्नभंग– परिहार कितने अपूर्ण हैं। **सभी संहिताग्रन्थों में निरपवादरूप से उपलब्ध लग्नभंग–परिहारक ये दस ग्रहादि स्थितियां *हैं, जिन्हें उपेक्षित कर ये दैवज्ञ लग्नभंगपरिहार के क्षेत्र को (या यूं कहिए विवाहकृत्य की मांगलिक वेला को) अत्यन्त संकुचित कर बैठे हैं–**

(i) सप्तमहीन केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित कोई शुभग्रह (गु., शु. बु.)।

(ii) सप्तमहीन केन्द्र में लग्नेश।

(iii) सप्तमहीन केन्द्र में लग्ननवांशेश।

(iv) उच्चस्थ लग्नेश।

(v) वर्गोत्तमगत लग्न।

(vi) वर्गोत्तमगत चन्द्र।

(vii) एकादशस्थ लग्नेश।

(viii) एकादशस्थ लग्ननवांशेश।

(ix) एकादशस्थ सूर्य ।

(x) एकादशस्थ चन्द्र।

लग्नभंग के इन दस परिहारों में से यदि कोई एक भी लग्नकुण्डली में उपलब्ध हो तो लग्नकुण्डलीगत लग्नभंगकारक उपरोक्त सभी (सातों) दोष सर्वथा विलीन हो जाते हैं, ऐसा वसिष्ठ, कश्यप, नारद आदि सभी संहिताओं में ऐकमत्येन लिखा मिलता है। **'मुहूर्तमार्त्तण्ड', 'मुहूर्त्तचिन्तामणि'** आदि परवर्त्ती मुहूर्तग्रन्थों में भी इस मत को बल देकर उपस्थापित किया गया है। **जैसे देखिए– कश्यप कहते हैं–** यदि लग्नकुण्डली में शुक्र, गुरु या बुध केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो सभी दोष (लग्नदोष) इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं– जैसे हरिस्मरण से पापपुञ्ज–

" काव्यो गुरुर्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र–त्रिकोणगः।
नाशं यान्त्यखिला दोषाः पापानीव हरौ स्मृते।।" –*(कश्यप)*

कश्यप का यह दूसरा वाक्य कहता है– वर्गोत्तमगत लग्न होने पर सभी लग्नदोष विलीन हो जाते हैं–

" वर्गोत्तमगते लग्ने लग्नदोषा लयं ययुः।" – *(कश्यप)*

** ये दस ग्रहादि स्थितियां लग्नभंग का परिहार तो करती ही हैं, ये लग्न को बल (विश्वाबल) भी देती हैं (एतदर्थ मेरी पुस्तक 'मुहूर्त्तगजानन' में दिया –" **विवाह–लग्नबलसाधन की परम्परागत पद्धति–एक समीक्षा**"– लेख पढ़िए।)*

इस बारे नारद भी यही कहते हैं–

" दोषाणां हि शतं हन्ति बलवान् केन्द्रगो बुधः।
द्युनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः।।" – (*नारद*)

नारद का यह दूसरा वाक्य देखिए, जो कहता है– लग्नेश या लग्ननवांशेश यदि एकादश या केन्द्र में स्थित हो तो लग्नसम्बन्धी सभी दोष आग में इन्धन की तरह भस्म हो जाते हैं–

" लग्नेट् लग्नांशनाथो वा चायगः केन्द्रगोऽपि वा।
राशिं निहन्ति दोषाणामिन्धनानीव पावकः।। " – (*नारद*)

वसिष्ठ कहते हैं– लग्नकुण्डली में एकादशस्थ सूर्य से सभी दोष नष्ट हो जाते हैं–

" यत्रैकादशगः सूर्यो दोषा नाशं ययुस्तदा।" – (*वसिष्ठ*)

'मुहूर्तचिन्तामणि' कार द्वारा **प्रमिताक्षरा** में उद्धृत यह वाक्य देखिए, जो स्पष्ट कह रहा है कि– लग्नगत पापनवांश तथा लग्नस्थ पापी ग्रह भी त्रिकोण–केन्द्रस्थ गुरु या शुक्र द्वारा शुभफलप्रद बन जाते हैं–

"सक्रूरराशेरशुभोनवांशः प्रोक्तः सपापोऽपि विलग्नसंस्थः।
त्रिकोण–केन्द्रेषु गुरुः सितो वा यदा तदासावशुभोऽपि शस्तः।।"

'मुहूर्तचिन्तामणि' कार ने **विवाहप्रकरण** के निम्नस्थ इन दो श्लोकों में संहिताओं में निर्दिष्ट लग्नभंग– परिहारकारक सभी मतों को इस प्रकार संगृहीत कर लिखा है कि– सप्तमहीन केन्द्र; त्रिकोणगत गुरु–शुक्र– बुध; सप्तमहीन केन्द्रगत लग्नेश/लग्ननवांशेश; एकादशगत सूर्य, चन्द्र, लग्नेश, लग्ननवांशेश तथा वर्गोत्तमगत लग्न, चन्द्र द्वारा दुष्ट मुहूर्त (रविवार को अर्यमा आदि) तथा क्रूरनवांश आदि सभी लग्नदोष आग से रुई की भान्ति भस्म हो जाते हैं, देखिए–

"केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः।।"
– (*मुहूर्तचिन्तामणि*)

किञ्च–

" त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः।
भवेदाये केन्द्रेऽगप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति।।"
–(*मुहूर्तचिन्तामणि*)

उपर्युक्त विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि– प्रचलित परम्परागत (आजकल दैवज्ञों द्वारा प्रयुक्त किए जा रहे) लग्नभंग–दोष–परिहार **254** पृष्ठ पर उक्त सातों लग्नभंगस्थितियों का परिहार नहीं कर सकते। जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं, इनमें से (1), (3), (5) और (7) स्थितियों (लग्नभंग–स्थितियों) के परिहार तो इनसे सर्वथा असम्भव माने गए हैं, शेष केवल तीन [(2), (4), (6)] लग्नभंगस्थितियों को ही इन्होंने परिहार्य माना है, इनमें भी षष्ठ–अष्टमस्थ लग्नेश को परिहार्य नहीं माना। **लेकिन इधर देखिए– इस प्रतिपाद्यमान लग्नभंग–परिहारक पद्धति में लग्नभंग के 10 परिहार हैं और प्रत्येक परिहार लग्नभंग की उक्त सातों स्थितियों के दोष को सहसा (एकसाथ) समाप्त करने की क्षमता रखता है। उदाहरणार्थ देखिए–** विवाहलग्न–कुण्डली में भले ही **'लग्न में पाप या अन्तिमनवांश', 'लग्न–चन्द्रकर्त्तरी', 'लग्नस्थ चन्द्र या पापग्रह'** आदि सातों लग्नभंगस्थितियां क्यों न हों और वहां इन विवेच्यमान 10 लग्नभंगपरिहारक स्थितियों में से एक भी स्थिति उपलब्ध होने पर केवल मात्र उसी से इन सभी (सातों) लग्नभंगस्थितिजन्य दोषों का सहसा परिहार हो जाता है। " समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति " – ऐसे प्रमाणवाक्यों से यह स्पष्ट है। इस पद्धति की यह भारी विशेषता है। इसे अपनाने पर मंगलकृत्यों के विधान के लिए अपेक्षाकृत कहीं अधिक शुभ(शुद्ध)काल भी हमें प्राप्त होता है– यह भी सुस्पष्ट है।

यहां लग्नशोधक दैवज्ञ को यह बतला देना आवश्यक है– उपरि निर्दिष्ट प्रचलित परम्परानुसारी 'लग्नचन्द्र क्रूरकर्त्तरी', 'षष्ठस्थ चन्द्र–शुक्र' एवं 'अष्टमस्थ चन्द्र–मंगल–शुभग्रह' के ये परिहार भी उपेक्ष्य

नहीं हैं। इन्हें इन 10 लग्नभंग--परिहारों के पूरक (Supplements) मानना होगा, क्योंकि लग्नभंग के ये परिहार भी संहिताओं में निर्दिष्ट हैं। अतः इन 10 परिहारों में से यदि कहीं एक भी उपलब्ध न हो तब सम्भव (शक्य) हो तो इन परिहारों का प्रयोग अनिवार्यतः करना होगा।

अपि च– लग्नभंग–परिहार के प्रसंग में यह भी लग्नशोधक के लिए अपरिहार्यरूपेण विचारणीय रहना चाहिए–

शुभता की दृष्टि से गुरु ग्रहमण्डल में अद्वितीय माना गया है। फलितशास्त्र की संहिता--जातक--मुहूर्त आदि सभी शाखा –प्रशाखाओं में गुरु की युति व दृष्टि द्वारा दोषपूर्ण किसी भी योगायोग को निष्प्रभाव कर डालने की अद्भुत क्षमता का प्रचुर निर्देश है। इस निर्देश को दृष्टि में रखते हुए लग्नशोधनप्रक्रिया में गुरु की युति–दृष्टि के आधार पर भी दैवज्ञ को लग्नदूषक (लग्नभंगकारक) योगों के परिहार को प्रामाणिक मानना होगा।

आशा है– इस स्पष्टीकरण से उपरोक्त दस लग्नभंग–परिहारों की प्रामाणिकता दैवज्ञों को समझ में आ गई होगी। पुनरपि, यदि परम्परात्याग की मनोवैज्ञानिक भीतिवश वे इन शास्त्रोक्त तर्कसंगत परिहारों को स्वीकारने में फिल–हाल संकोचशील हैं तो उन्हें पृष्ठ 240 पर दिए गए इन शुद्ध–विवाहमुहूर्त्तों में अधोरेखांकित विवाहलग्नों को प्रयोग में लाना चाहिए, क्योंकि ये विवाहलग्न भी संहितोक्त परम्पराप्राप्त सामान्य परिहारों द्वारा शोधित होने से निर्दोष हैं।

अर्थहीन " दश दोषरेखा "– सम्प्रदाय

(मुहूर्त्तगजानन से उद्धृत)

(लेखक–प्रियव्रत शर्मा)

उत्तरभारत के लगभग सभी पंचांगों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों के साथ एक कॉलम में लत्तादि **'दश दोषरेखाएं'** अंकित रहती हैं। ये दस रेखाएं क्रमशः **लत्ता, पात, युति, वेध, यामित्र, बाणपंचक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य** और **दग्धातिथि**– इन दस दोषों को व्यक्त करती हैं। लत्ता आदि में से जो दोष विवाहमुहूर्त्तकाल में विद्यमान रहता है, उसे वक्र (S) रेखा से और अन्य (दोषरहित)को सरल (।) रेखा से व्यक्त करने की परम्परा है। **उदाहरणार्थ**– ।। S।। SS ।।। इस क्रम में अंकित ये दस रेखाएं व्यक्त करती हैं कि– लत्ता, पात, वेध, यामित्र, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– दोषों का विवाहमुहूर्त्त में अभाव है और युति, बाण एवम् एकार्गल दोष वहां विद्यमान हैं।

शीघ्रबोध'कार **काशिनाथ** का कहना है कि– ये दस दोष विवाहलग्न के समय विद्यमान नहीं होने चाहिएं। इस विषय में उनके ये दो श्लोक हैं–

" लत्ता पातो युतिः वेधो यामित्रं बुधपंचकम्।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं तथाऽपरम्।।
दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः।
एतान् दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः।।"
–(*शीघ्रबोध*)

ये श्लोक बतलाते हैं– लत्ता आदि दोष महाबली (महादोषकारक) हैं। इनसे रहित काल में विद्वान् को विवाहलग्न लगाना चाहिए।

इन श्लोकों से तो सामान्यतः यही अर्थ निकलता है कि– लत्ता आदि ये दस दोष ही विवाह लग्न के विशेषेण दूषक हैं। अतः विशेषेण इन्हीं दोषों से रहित काल में विवाह सम्पन्न होना चाहिए। लेकिन ध्यान रहे– **वसिष्ठसंहिता, नारदसंहिता ज्योतिर्विदाभरण, पूर्वकालामृत, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तकल्पद्रुम, धर्मसिन्धु** आदि में इन दस दोषों को इस प्रकार विशेषरूपेण विचारणीय नहीं लिखा है। इन प्रामाणिक ग्रन्थों में भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, परिघार्ध, गुरुशुक्रास्त, अधिमास, सिंहस्थ गुरु, नक्षत्रान्त, तिथ्यन्त, मासान्त आदि 50 से भी अधिक दोषों, जिनका निर्देश हमने अपनी पुस्तक मुहूर्त्त गजानन के प्रथम प्रकरण में किया है, का निर्देश है, जिन्हें परिहार के अभाव की स्थिति में दृढ़ता से वर्ज्य बतलाया गया है । इन दोषों में लत्तादि दस दोषों का भी निर्देश है। इन्हें इन ग्रन्थकार आचार्यों ने पृथक्ता से इस प्रकार विशेषरूपेण वर्ज्य नहीं माना है। उन्होंने अन्य दोषों की समान श्रेणी का ही इन्हें मंगलकृत्यदूषक बतलाया है। **ध्यान रहे– काशिनाथ** ने अपने **'शीघ्रबोध'** में भद्रादि इन दोषों का फल भी नितान्त अशुभ, भयावह लिखा है। जैसे–

"मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोः भवेत्।।"

तथा–

"कुलिकाख्यो ह्ययं योगो विवाहादौ न शस्यते।"

किञ्च–

"सिंहस्थे गुरौ कार्यो न विवाहो कदाचन।" .... आदि आदि।

ऐसा मानते हुए भी **काशिनाथ** ने लत्तादि केवल दसदोषों की वर्ज्यता पर ही क्यों इतना बल दिया है– समझ में नहीं आता। इनके प्रतिपादन में स्पष्ट विरोध है। इनके इस मत का संहितादि द्वारा प्रतिपादित मंगलकृत्योचित शुभ(शुद्ध)काल के निर्णय, जहां भद्रादि दोषों में से प्रत्येक को समानरूपेण मुहूर्त्तकाल का दूषक माना गया है, से भी सामञ्जस्य नहीं है।

अपि च– लत्तादि दस दोषों की विशेष वर्ज्यता के इस भ्रामकमत को आंख मूंदकर महत्त्व देने वाले ये उत्तरभारतीय पंचांगकार यह भी मत रखते हैं (जबकि उनके इस मत का कोई शास्त्रादेश भी नहीं है) कि– इन दस दोषों में से कोई भी तीन से अधिक दोष [वक्र (S) रेखाएं] विवाहमूहूर्त्त में हों तो वहां लग्नशोधन नहीं करना चाहिए। इस मतानुसार सात से कम रेखाओं [सरल (।) रेखाओं] वाला मुहूर्त अग्राह्य माना जाता है। सात से कम रेखाओं वाले मुहूर्त्त को अल्परेखा (रेखाल्पता) वाला मुहूर्त्त कहा जाता है। इस मत के अनुसार स्पष्ट है– इन लत्ता आदि दस दोषों में से कोई भी तीन दोषों को विवाहमुहूर्त्त में क्षम्य मान लिया गया है। इस मान्यता–अनुसार तो लत्तादि में से किसी एक दोष या किन्हीं दो या तीन दोषों की भी विद्यमानता में विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। जबकि सभी मुहूर्त्तकारों ने इन सभी दोषों के कुपरिणाम [**मंगलाभिलाषी की मृत्यु** जैसे भयावह] बतलाए हैं। लत्ता, पात, यामित्र, एकार्गल और उपग्रहदोष, ठीक है प्रान्तभेद से वर्ज्य हैं, लेकिन क्रूरयुति, वेध, मृत्युबाण, भुजंगपात, क्रान्तिसाम्य दोषों की वर्ज्यता तो सार्वत्रिक है। इस मान्यता को स्वीकार कर लेने पर इन दोषों में से किन्हीं तीन तक के दोष/दोषों की उपस्थिति में भी विवाहलग्न को निर्दोष, वैध मानने की स्थिति पैदा हो जाती है, जिसे कोई भी मुहूर्त्तशास्त्री मान्यता नहीं दे सकता।

किंच– दस दोष–सम्प्रदायानुयायी पंचांगों में शुद्धविवाहमुहूर्त्तों के साथ दी जा रही इन दस दोषरेखाओं को ध्यान से देखिए– वहां क्रूरयुति, क्रूरवेध, क्रान्तिसाम्य जैसे दोषों की वक्र (S) रेखाएं आप कभी नहीं पाएंगे, क्योंकि ऐसे किसी दोष के अस्तित्व में विवाह तब तक सम्भव नहीं होता, जब तक कि उस दोष का परिहार न हो। दोषपरिहार हो जाने पर तो उस दोष का अभाव माना जाता है और दोषाभाव होने पर उस दोष की वक्ररेखा नहीं लग सकती।

[illegible] निम्नलिखित इन पांच " **दश–दोष– रेखा–विन्यासों** " को देखिए–

(i) ।।।।।।।।।S

(ii) ।। Sश.।।।।।।।

(iii) ।।। Sमं.।।।।।।

(iv) ।। Sरा. Sश.।।।।।।

(v) ।। Sके.Sमं.।।।।।S

यहां नं.(i) के **रेखाविन्यास** में केवल एक ही (क्रान्तिसाम्य की) वक्र रेखा है। इसी प्रकार नं.(ii) वाले **विन्यास** में केवल क्रूर युति की, नं.(iii) में क्रूरग्रह के वेध की, नं.(iv) में क्रूरग्रहों की युति एवं वेध की और नं.(v) में क्रूरग्रहों की युति एवं वेध तथा क्रान्तिसाम्य की वक्र रेखाएं हैं। ये पांचों रेखाविन्यासों वाले लग्न दशदोष रेखा सम्प्रदायानुयायी दैवज्ञों के मतानुसार तो विवाह में ग्राह्य होने चाहिएं, क्योंकि इन विन्यासों में सरल (।) रेखाएं कहीं भी सात से कम नहीं हैं, लेकिन उत्तरभारतीय या अन्य कोई भी पंचांगकार इन्हें कदापि ग्राह्य नहीं मान सकता, क्योंकि इन तीन दोषों में से प्रत्येक दोष लग्नभंगकारक है।

उपरोक्त विवेचन से सिद्ध है कि– इस तर्कच्युत लत्तादि दसदोष–सम्प्रदायानुसार इन दोषों के भाव–अभाव की द्योतक वक्र–सरल रेखाओं का अंकन अपने पंचांगों में करते चले आ रहे इन उत्तरभारतीय पंचांगकारों के चरित्र में स्पष्ट विरोध है। इस दस दोष–सम्प्रदाय की अवैधता को जानते हुए भी ये पंचांगकार गड्डलिकाप्रवाहेण ही एतत्सम्बन्धी सरल–वक्र रेखाओं के अंकन की परम्परा बनाए हुए हैं। ध्यान रहे– दक्षिण–भारतीय पंचांगकार इस दस दोष–सम्प्रदाय को अशास्त्रीय मानते हैं, इसीलिए वे इसे अपने पंचांगों में प्रश्रय नहीं देते।

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०७० वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ मे दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि- अमुक नक्षत्र, अमुक दिन या अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*- यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७० वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। -- प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ से चैत्र शु. ११ चं.(२२ अप्रै., २०१३ ई.) तक शुक्रास्त दोष			
चैत्र शु. १३ बु.	अप्रै. २४	हस्त	ग्रहणशूल,
चैत्र शु. १३ बु.	अप्रै. २४	चित्रा	ग्रहणशूल,
चैत्र शु. १५ गु.	अप्रै. २५	चित्रा	ग्रहणदिन,
चैत्र शु. १५ गु.	अप्रै. २५	स्वा.	ग्रहणदिन, शनियुति अपरिहार्य
वैशा. कृ. १ शु.	अप्रै. २६	स्वा.	ग्रहणशूल, शनियुति अपरिहार्य
वैशा. कृ. २ श.	अप्रै. २७	अनु.	ग्रहणशूल, सूर्य-केतुवेध,
वैशा. कृ. ३ र.	अप्रै. २८	अनु.	ग्रहणशूल, सूर्य-केतुवेध,
वैशा. कृ. ५ मं.	अप्रै. ३०	मूल	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. ५ मं.	अप्रै. ३०	उ.षा.	लग्नाभाव,
वैशा. कृ. ११ र.	मई ५	उ.भा.	वैधृति,
वैशा. कृ. १२ चं.	मई ६	रेव.	क्षीणचन्द्र,
वैशा. शु. ३ चं.	मई १३	मृग.	मासान्त,
वैशा. शु. ११ मं.	मई २१	उ.फा.	लग्नाभाव,
वैशा. शु. ११ मं.	मई २१	चित्रा	लग्नाभाव,
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	स्वा.	व्यतिपात, ग्रहणनक्षत्र, शनियुति अपरिहार्य,
वैशा. शु. १३ गु.	मई २३	स्वा.	ग्रहणनक्षत्र, शनियुति अपरिहार्य,
वैशा. शु. १४ शु.	मई २४	अनु.	केतुवेध,
वैशा. शु. १५ श.	मई २५	अनु.	केतुवेध,
ज्ये. कृ. ७ शु.	मई ३१	धनि.	वैधृति,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ३	उ.भा.	भद्रा,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ३	रेव.	भद्रा, गुरुवार्धक्य दोष,
ज्ये. कृ. १० चं. (३ जून, २०१३ ई.) से आषा. कृ. ११ बु. (३ जुला., २०१३ ई.) तक गुरु अस्त रहेगा।			
आषा. कृ. १२ गु.	जुला. ४	रोहि.	भुजंगपात,
आषा. शु. ६ र.	जुला. १४	हस्त	मृत्युबाण,
आषा. शु. ७ चं.	जुला. १५	हस्त	मासान्त, भद्रा,
आषा. शु. ७ चं.	जुला. १५	चित्रा	मासान्त,
आषा. शु. ८ मं.	जुला. १६	चित्रा	संक्रान्ति,
आषा. शु. ८ मं.	जुला. १६	स्वा.	संक्रान्ति,
आषा. शु. ९ बु.	जुला. १७	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य,
आषा. शु. १० गु.	जुला. १८	अनु.	केतुवेध,
आषा. शु. ११ शु.	जुला. १९	अनु.	केतुवेध,
श्राव.कृ. १ मं.	जुला. २३	उ.षा.	लग्नाभाव,
श्राव.कृ. ५ श.	जुला. २७	उ.भा.	मृत्युबाण,
श्राव.कृ. ९ बु.	जुला. ३१	रोहि.	भद्रा,
श्राव.शु. १ बु.	अग. ७	मघा	लग्नाभाव,
श्राव.शु. ३ श.	अग. १०	हस्त	भद्रा,
श्राव.शु. ५ चं.	अग. १२	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य,
श्राव.शु. ६ मं.	अग. १३	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य,
श्राव.शु. ८ बु.	अग. १४	अनु.	केतुवेध, मृत्युबाण,
श्राव.शु. ९ गु.	अग. १५	अनु.	मासान्त, केतुवेध,
श्राव.शु. १० शु.	अग. १६	मूल	संक्रान्ति, भौमवेध,
श्राव.शु. ११ श.	अग. १७	मूल	भौमवेध,
श्राव.शु. १३ चं.	अग. १९	श्रव.	सूर्यवेध,
श्राव.शु. १४ मं.	अग. २०	श्रव.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. ४ श.	अग. २४	उ.भा.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ. ४ श.	अग. २४	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ५ र.	अग. २५	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र. शु. ४ चं.	सितं. ९	चित्रा	भद्रा,
भाद्र. शु. ४ चं.	सितं. ९	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य,
भाद्र. शु. ५ मं.	सितं. १०	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य,
भाद्र. शु. ६ बु.	सितं. ११	अनु.	केतुवेध,
भाद्र. शु. ७ गु.	सितं. १२	अनु.	केतुवेध,
भाद्र. शु. ७ गु.	सितं. १२	मूल	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ९ श.	सितं. १४	उ.षा.	मृत्युबाण,
भाद्र. शु. ११ र.	सितं. १५	उ.षा.	मासान्त,
भाद्र. शु. ११ र.	सितं. १५	श्रव.	मासान्त,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७० वि.)

तिथि-वार	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. शु. १२ चं.	सितं. १६	श्रव.	संक्रान्ति,
भाद्र. शु. १२ चं.	सितं. १६	धनि.	संक्रान्ति, भौमवेध,
भाद्र. शु. १३ मं.	सितं. १७	धनि.	भौमवेध,
भाद्र. शु. १५ गु.	सितं. १९	उ.भा.	प्रोष्ठपदी श्राद्ध,
२० सितं. से ४ अक्तू., २०१३ ई. तक श्राद्धपक्ष रहेगा।			
आश्वि. शु. १ श.	अक्तू. ५	हस्त	क्षीणचन्द्र,
आश्वि. शु. १ श.	अक्तू. ५	चित्रा	क्षीणचन्द्र, वैधृति,
आश्वि. शु. २ र.	अक्तू. ६	चित्रा	वैधृति,
आश्वि. शु. २ र.	अक्तू. ६	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य, मृत्युबाण,
आश्वि. शु. ३ चं.	अक्तू. ७	स्वा.	शनि-राहुयुति अपरिहार्य, मृत्युबाण,
आश्वि. शु. ४ मं.	अक्तू. ८	अनु.	केतुवेध,
आश्वि. शु. ५ बु.	अक्तू. ९	अनु.	केतुवेध,
आश्वि. शु. ९ र.	अक्तू. १३	श्रव.	भौमवेध,
आश्वि. शु. ९ र.	अक्तू. १३	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु. १० चं.	अक्तू. १४	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु. १२ बु.	अक्तू. १६	उ.भा.	मासान्त,
आश्वि. शु. १४ गु.	अक्तू. १७	उ.भा.	संक्रान्ति,
आश्वि. शु. १४ गु.	अक्तू. १७	रेव.	संक्रान्ति, भद्रा,
आश्वि. शु. १५ शु.	अक्तू. १८	रेव.	भद्रा, मृत्युबाण,
आश्वि. शु. १५ शु.	अक्तू. १८	अश्वि.	मृत्युबाण,
कार्त्ति. कृ. ३ चं.	अक्तू. २१	रोहि.	व्यतीपात,
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	अक्तू. २३	रोहि.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. कृ. १२ गु.	अक्तू. ३१	हस्त	वैधृति,

तिथि-वार	तारीख २०१३ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. शु. ६ शु.	नवं. ८	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ७ श.	नवं. ९	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ८ र.	नवं. १०	श्रव.	भद्रा,
कार्त्ति. शु. ९ चं.	नवं. ११	धनि.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. १२ गु.	नवं. १४	उ.भा.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. १३ शु.	नवं. १५	रेव.	मासान्त,
कार्त्ति. शु. १३ शु.	नवं. १५	अश्वि.	मासान्त,
कार्त्ति. शु. १४ श.	नवं. १६	अश्वि.	संक्रान्ति,
मार्ग. कृ. ८ मं.	नवं. २६	मघा	वैधृति,
मार्ग. कृ. १० गु.	नवं. २८	उ.फा.	भद्रा,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. ३०	स्वा.	राहुयुति अपरिहार्य,
मार्ग. कृ. १३ र.	दिसं. १	स्वा.	क्षीणचन्द्र, राहुयुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु. १ मं.	दिसं. ३	मूल	भुजंगपात,
मार्ग. शु. २ बु.	दिसं. ४	मूल	भुजंगपात,
मार्ग. शु. ३ गु.	दिसं. ५	उ.षा.	मृत्युबाण,
मार्ग. शु. ९ बु.	दिसं. ११	उ.भा.	व्यतीपात,
मार्ग. शु. ९ बु.	दिसं. ११	रेव.	भौमवेध,
मार्ग. शु. १० गु.	दिसं. १२	रेव.	भौमवेध,
मार्ग. शु. १० गु.	दिसं. १२	अश्वि.	केतुयुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु. ११ शु.	दिसं. १३	अश्वि.	केतुयुति अपरिहार्य,

मार्ग. शु. १३ र. (१५ दिसं., २०१३) से पौष शु. १३ चं. (१३ जन., २०१४ ई.) तक धनुःस्थ सूर्य।

पौष शु. ९ गु. (९ जन.) से माघ कृ. १ शु. (१७ जन., २०१४ ई.) तक शुक्रास्त दोष।

तिथि-वार	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ कृ. ६ बु.	जन. २२	चित्रा	भद्रा,
माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	स्वा.	भुजंगपात, राहुयुति अपरिहार्य,
माघ कृ. ८ शु.	जन. २४	स्वा.	भुजंगपात, राहुयुति अपरिहार्य,
माघ कृ. ९ श.	जन. २५	अनु.	लग्नाभाव,
माघ कृ. ११ चं	जन. २७	मूल	चन्द्रपादवेध,
माघ शु. १ शु.	जन. ३१	श्रव.	क्षीणचन्द्र, व्यतीपात,
माघ शु. ३ र.	फर. २	उ.भा.	भद्रा,
माघ शु. ५ मं.	फर. ४	अश्वि.	अपरिहार्य केतुयुति,
माघ शु. ६ बु.	फर. ५	अश्वि.	अपरिहार्य केतुयुति,
माघ शु. १० र.	फर. ९	रोहि.	वैधृति,
माघ शु. १० र.	फर. ९	मृग.	वैधृति-विष्कंभ-भद्रा,
माघ शु. ११ चं.	फर. १०	मृग.	भद्रा,
फाल्गु. कृ. १ र.	फर. १६	उ.फा.	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ३ मं.	फर. १८	उ.फा.	भद्रा,
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १९	चित्रा	भुजंगपात, अपरिहार्य भौमयुति,
फाल्गु. कृ. ५ गु.	फर. २०	चित्रा	भुजंगपात, अपरिहार्य भौमयुति,
फाल्गु. कृ. ५ गु	फर. २०	स्वा.	अपरिहार्य राहुयुति, सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ. ६ शु.	फर. २१	स्वा.	अपरिहार्य राहुयुति, सूर्यवेध,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. २३	अनु.	मृत्युबाण,
फाल्गु. कृ. ११ मं.	फर. २५	मूल	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ११ मं.	फर. २५	उ.षा.	व्यतीपात,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त (सं. २०७० वि.)

तिथि-वार	तारीख २०१४ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१७/४२ से २३/०७ तक क्रान्तिसाम्य तदनन्तर मृत्युबाण,
फाल्गु. शु. ४ मं.	मार्च ४	रेव.	मृत्युबाण,
फाल्गु. शु. ४ मं.	मार्च ४	अश्वि.	अपरिहार्य केतुयुति,
फाल्गु. शु. ५ बु.	मार्च ५	अश्वि.	अपरिहार्य केतुयुति,

फाल्गु. शु. ८ श. (८ मार्च, २०१४ ई.) से होलाष्टक प्रारम्भ और तदनन्तर मीनस्थ सूर्य ।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- ***वेध परिहार-*** सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। ***युतिदोष का परिहार-*** नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार-*** मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार-*** मुहूर्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-*** नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार-*** मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-*** शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे- ये लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में ला रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने इस वर्ष (सं. २०७० वि.) से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसके लिए पृष्ठ...254 ....पर दिया **"लग्नभंग परिहार"** लेख पढ़ना चाहिए।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०७० वि.) (सर्वत्र भा.स्टै.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक–एक या दो–दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं, उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	चित्रा	१०/३४ बाद,
माघ कृ. ११ चं.	जन. २७	ज्ये.	१७/२५ तक,
माघ शु. ४ चं.	फर. ३	उ.भा.	१४/३८ बाद,
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १६	चित्रा	११/२३ बाद,
फाल्गु. कृ. ६ चं.	फर. २४	ज्ये.	८/१४ से ६/२० तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से १७/४२ तक,

मुण्डन में विशेषः- किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१३–१४ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
वैशा. शु. ५ बु.	मई १५	पुन.	१४/४६ तक,
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	चित्रा	६/५० तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २९	श्रव.	६/५८ बाद,
ज्ये. कृ. ६ गु.	मई ३०	श्रव.	८/१८ तक,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ३	रेव.	१२/१६ बाद,
माघ कृ. ६ बु.	जन. २२	हस्त	
माघ कृ. ११ चं.	जन. २७	ज्ये.	
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १६	चित्रा	११/२३ बाद,
फाल्गु. कृ. ६ चं.	फर. २४	ज्ये.	८/१४ से ६/२० तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से १७/४२ तक,

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१३–१४ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
वैशा. कृ. ११ र.	मई ५	पू.भा.	११/४६ तक,
वैशा. शु. २ र.	मई १२	रोहि.	१३/५१ तक,
वैशा. शु. २ र.	मई १२	मृग.	१३/५१ बाद,
वैशा. शु. ५ बु.	मई १५	पुन.	१४/४६ तक,
वैशा. शु. ६ गु.	मई १६	पुष्य	
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	चित्रा	६/५० तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २९	उ.षा.	६/५८ तक,
ज्ये. कृ. ६ र.	जून २	उ.भा.	११/५० बाद,
माघ कृ. ६ बु.	जन. २२	हस्त	
माघ कृ. १० र.	जन. २६	अनु.	८/४५ तक,
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १६	चित्रा	१२/१४ बाद,
फाल्गु. कृ. १२ बु.	फर. २६	उ.षा.	१५/४१ बाद,
फाल्गु. शु. १ र.	मार्च २	उ.भा.	१६/५० बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१३–१४ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
वैशा. कृ. ५ मं.	अप्रै. ३०	पू.षा.	५/५६ से १०/२० तक,
वैशा. शु. २ र.	मई १२	रोहि.	१०/१६ तक, तदनन्तर युगादि तिथि,
वैशा. शु. १० चं.	मई २०	उ.फा.	५/४६ बाद,
वैशा. शु. ११ मं.	मई २१	हस्त	५/४६ से ६/४० तक,
ज्ये. कृ. ३ चं.	मई २७	मूल	१२/४६ तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २९	उ.षा.	६/५८ तक,
माघ कृ. ५ मं.	जन. २१	उ.फा.	
माघ शु. ५ मं.	फर. ४	रेव.	१३/०१ तक,
फाल्गु. कृ. २ चं.	फर. १७	उ.फा.	
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०१३–१४ ई.)

तिथि–वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
मार्ग. शु. २ बु.	दिसं. ४	मूल	२४/०६ तक,
मार्ग. शु. ४ शु.	दिसं. ६	श्रव.	१८/५८ बाद,
मार्ग. शु. ७ चं.	दिसं. ९	शत.	६/२२ तक,
मार्ग. शु. ९ बु.	दिसं. ११	रेव.	२१/५६ बाद,
मार्ग. शु. १० गु.	दिसं. १२	रेव.	७/४३ तक,
मार्ग. शु. ११ शु.	दिसं. १३	अश्वि.	८/२१ से १६/१५ तक,
फाल्गु.शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	१५/११ तक,
फाल्गु.शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से १७/४२ तक,
फाल्गु.शु. ५ बु.	मार्च ५	अश्वि.	१३/५६ तक,

गृहारम्भमुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. कृ. ६ बु.	मई १	उ.षा.	७/४८ तक,
*वैशा. कृ. १२ चं.	मई ६	उ.भा.	११/५७ बाद,
*वैशा. शु. १ श.	मई ११	रोहि.	१३/२४ बाद,
*वैशा. शु. ६ गु.	मई १६	पुष्य	
वैशा. शु. १० चं.	मई २०	उ.फा.	५/४६ बाद,
वैशा. शु. १५ श.	मई २५	अनु.	
श्राव. कृ. २ बु.	जुला. २४	धनि.	
*श्राव. कृ. ५ श.	जुला. २७	उ.भा.	
*श्राव. कृ. १० गु.	अग. १	रोहि.	१६/०२ बाद,
*श्राव. कृ. ११ शु.	अग. २	रोहि.	८/२१ तक,
*श्राव. कृ. ११ शु.	अग. २	मृग.	१३/१९ बाद,
*श्राव. कृ. १२ श.	अग. ३	मृग.	११/२७ तक,
*श्राव. शु. ३ श.	अग. १०	उ.फा.	६/३४ तक,
*श्राव. शु. ५ चं.	अग. १२	चित्रा	
श्राव. शु. १५ बु.	अग. २१	धनि.	११/२४ तक,
*कार्ति. कृ. ४ बु.	अक्तू. २३	मृग.	८/५२ बाद,
*कार्ति. कृ. ५ गु.	अक्तू. २४	मृग.	१०/३२ तक,
*कार्ति. कृ. ७ श.	अक्तू. २६	पुष्य	१६/२५ बाद,
*कार्ति. कृ. १२ गु.	अक्तू. ३१	उ.फा.	११/५७ तक,
*कार्ति. शु. ७ श.	नवं. ९	उ.षा.	७/०९ तक, ९/३३ से ११/४८ तक,
कार्ति. शु. १२ गु.	नवं. १४	उ.भा.	८/३७ तक,
मार्ग. कृ. ३ बु.	नवं. २०	मृग.	१३/१२ तक,
*मार्ग. कृ. ११ शु.	नवं. २९	हस्त	११/१८ तक,
*मार्ग. कृ. ११ शु.	नवं. २९	चित्रा	११/१८ बाद,
*मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. ३०	चित्रा	१०/४८ तक,

गृहारम्भमुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*माघ कृ. ६ बु.	जन. २२	हस्त	
*माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	चित्रा	१०/३४ से १६/११ तक,
फाल्गु. कृ. २ चं.	फर. १७	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १९	चित्रा	१६/४३ बाद, (१६/४३ तक भूशयन),
*फाल्गु. कृ. ७ श.	फर. २२	अनु.	११/०३ बाद,
*फाल्गु. कृ. १२ बु.	फर. २६	उ.षा.	१५/४१ बाद,
*फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	१५/११ तक,
*फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से १७/४२ तक,

* तारांकित मुहूर्त्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृष-वास्तुचक्रशुद्धि नहीं है।

नूतन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*वैशा. कृ. ६ बु.	मई १	उ.षा.	७/४८ तक,
वैशा. कृ. १२ चं.	मई ६	उ.भा.	११/५७ बाद,
*वैशा. शु. १ श.	मई ११	रोहि.	१३/२४ बाद,
वैशा. शु. १० चं.	मई २०	उ.फा.	५/४९ से १४/०९ तक, १५/१८ बाद,
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	चित्रा	९/५० तक,
*वैशा. शु. १५ श.	मई २५	अनु.	
*ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २९	उ.षा.	९/५८ तक,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ३	रेव.	१२/१६ से१९/१७ तक,
*माघ कृ. ४ चं.	जन. २०	उ.फा.	२४/०३ से ३०/१७ तक,
*माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	चित्रा	१०/३४ से १६/११ तक,
माघ कृ. ९ श.	जन. २५	अनु.	२८/१२ बाद,
*माघ शु. ४ चं.	फर. ३	उ.भा.	१४/३४ से २८/४९ तक,
माघ शु. ४ चं.	फर. ३	रेव.	२८/४९ बाद,

नूतन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. ९ श.	फर. ८	रोहि.	१५/०४ से २९/११ तक,
*फाल्गु. कृ. २ चं.	फर. १७	उ.फा.	२१/४४ तक,
*फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १९	चित्रा	१२/१४ से २१/५३ तक,
*फाल्गु. कृ. ७ श.	फर. २२	अनु.	११/०३ बाद,
फाल्गु. कृ. १२ बु.	फर. २६	उ.षा.	१५/४१ बाद,
*फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	१५/११ तक,
*फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से १७/४२ तक, २३/०७ बाद,
फाल्गु. शु. ७ शु.	मार्च ७	रोहि.	१५/५५ से ३०/०६ तक,

* तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलशचक्रशुद्धि नहीं है। अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १ शु.	अप्रै. २६	स्वा.	१५/०३ तक,
वैशा. कृ. २ श.	अप्रै. २७	अनु.	१३/०३ बाद,
वैशा. कृ. ६ बु.	मई १	उ.षा.	७/४८ तक, १८/४३ से २६/४३ तक,
वैशा. कृ. ८ गु.	मई २	धनि.	२५/४२ से २७/५७ तक,
वैशा. कृ. ९ शु.	मई ३	शत.	२६/४४ बाद,
वैशा. कृ. १२ चं.	मई ६	उ.भा.	११/५७ से २६/४० तक,
वैशा. कृ. १२ चं.	मई ६	रेव.	२६/४० बाद,
वैशा. शु. १ श.	मई ११	रोहि.	१३/२४ बाद,
वैशा. शु. ३ चं.	मई १३	मृग.	१२/४६ तक,
वैशा. शु. ५ बु.	मई १५	पुष्य	२२/५२ बाद,
वैशा. शु. ६ गु.	मई १६	पुष्य	२५/२० तक,
वैशा. शु. १० चं.	मई २०	उ.फा.	५/४९ से १४/०९ तक, १५/१८ बाद,
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	चित्रा	९/५० तक,
वैशा. शु. १३ गु.	मई २३	स्वा.	६/५२ से २५/३५ तक,

पुरातन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. १४ शु.	मई २४	अनु.	२३/३६ बाद,
ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २६	उ.षा.	६/५८ तक
ज्ये. कृ. ६ गु.	मई ३०	धनि.	८/१८ से १४/४० तक,
ज्ये. कृ. ८ श.	जून १	शत.	६/५२ तक,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ३	रेव.	१२/१६ बाद,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १६	चित्र	१३/२२ तक,
ज्ये. शु. १० बु.	जून १६	स्वा.	१३/२२ से १६/४० तक,
ज्ये. शु. ११ गु.	जून २०	स्वा.	६/३६ से ११/५२ तक,
ज्ये. शु. १३ शु.	जून २१	अनु.	६/४६ से २४/३३ तक,
श्राव. कृ. २ बु.	जून २४	धनि.	२५/०३ तक,
श्राव. कृ. २ बु.	जून २४	शत.	२५/०३ से २७/२६ तक,
श्राव. कृ. ४ शु.	जून २६	उ.भा.	२२/२२ [illegible],
श्राव. कृ. ५ श.	जून २७	उ.भा.	२२/१३ तक,
श्राव. कृ. ५ श.	जून २७	रेव.	२२/१३ बाद,
श्राव. कृ. १० [illegible]	अग. १	रोहि.	१६/०२ बाद,
श्राव. कृ. ११ शु.	अग. २	रोहि.	८/२१ तक,
श्राव. कृ. ११ शु.	अग. २	मृग.	१३/१६ बाद,
श्राव. कृ. १२ श.	अग. ३	मृग.	११/२७ तक,
श्राव. शु. २ शु.	अग. ९	उ.फा.	२५/०८ बाद,
श्राव. शु. ३ श.	अग. १०	उ.फा.	६/३४ तक,
श्राव. शु. ५ चं.	अग. १२	चित्रा	२७/०५ तक,
श्राव. शु. ५ चं.	अग. १२	स्वा.	२७/०५ बाद,
श्राव. शु. ८ बु.	अग. १४	अनु.	२६/०४ से २७/३५ तक,
श्राव. शु. १३ चं.	अग. १६	उ.षा.	१३/४० तक,
श्राव. शु. १५ बु.	अग. २१	धनि.	११/२४ तक,
श्राव. शु. १५ बु.	अग. २१	शत.	११/२४ बाद,
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	अक्तू. २३	मृग.	८/५२ से ६/२६ तक, २१/४८ बाद,
कार्त्ति. कृ. ५ गु.	अक्तू. २४	मृग.	१०/३२ तक,

पुरातन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. कृ. ७ श.	अक्तू. २६	पुष्य	१६/२५ बाद,
कार्त्ति. कृ. ११ बु.	अक्तू. ३०	उ.फा.	२४/४३ बाद,
कार्त्ति. कृ. १२ गु.	अक्तू. ३१	उ.फा.	११/५७ तक,
कार्त्ति. शु. १ चं.	नवं. ४	अनु.	२१/२३ बाद,
कार्त्ति. शु. ६ शु.	नवं. ८	उ.षा.	१३/३० बाद,
कार्त्ति. शु. ७ श.	नवं. ९	उ.षा.	७/०६ तक, ६/०३ से ११/४८ तक,
कार्त्ति. शु. ९ चं.	नवं. ११	शत.	२६/४३ बाद,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	नवं. १३	उ.भा.	१६/११ बाद,
कार्त्ति. शु. १२ गु.	नवं. १४	उ.भा.	८/३७ तक,
कार्त्ति. शु. १२ गु.	नवं. १४	रेव.	८/३७ बाद,
मार्ग. कृ. १ चं.	नवं. १८	रोहि.	१३/३० बाद,
मार्ग. कृ. ३ बु.	नवं. २०	मृग.	१३/१२ तक,
मार्ग. कृ. ५ श.	नवं. २३	पुष्य	२७/०७ तक,
मार्ग. कृ. ९ बु.	नवं. २७	उ.फा.	१४/५२ से २७/०२ तक,
मार्ग. कृ. ११ शु.	नवं. २९	चित्रा	११/१८ बाद,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. ३०	चित्रा	१०/४८ तक,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. ३०	स्वा.	१०/४८ बाद,
मार्ग. शु. ३ गु.	दिसं. ५	उ.षा.	२१/२६ से ३०/०१ तक,
मार्ग. शु. ५ श.	दिसं. ७	धनि.	१६/५३ बाद,
मार्ग. शु. ७ चं.	दिसं. ९	शत.	६/२२ तक,
मार्ग. शु. ९ बु.	दिसं. ११	रेव.	२१/५९ बाद,
मार्ग. शु. १० गु.	दिसं. १२	रेव.	१४/५६ तक,
मार्ग. शु. १४ चं.	दिसं. १६	मृग.	२५/५५ बाद,
माघ कृ. १ शु.	जन. १७	पुष्य	१६/०६ तक,
माघ कृ. ४ चं.	जन. २०	उ.फा.	२४/०३ से ३०/१७ तक,
माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	चित्रा	१०/३४ से २८/३३ तक,
माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	स्वा.	३०/५३ बाद,
माघ कृ. ८ शु.	जन. २४	स्वा.	२२/३७ तक,

पुरातन-गृहप्रवेशमुहूर्त्त (सन् २०१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. २ श.	फर. १	धनि.	१०/२३ तक,
माघ शु. २ श.	फर. १	शत.	१०/२३ से १८/०६ तक, २८/१५ बाद,
माघ शु. ४ चं.	फर. ३	उ.भा.	१४/३४ से २८/४६ तक,
माघ शु. ४ चं.	फर. ३	रेव.	२८/४६ बाद,
माघ शु. ९ श.	फर. ८	रोहि.	१५/०४ से २६/११ तक,
फाल्गु. कृ. २ चं.	फर. १७	उ.फा.	२१/४४ तक,
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १९	चित्रा	१२/१४ बाद,
फाल्गु. कृ. ५ गु.	फर. २०	चित्रा	१०/२४ तक,
फाल्गु. कृ. ५ गु.	फर. २०	स्वा.	१०/२४ बाद,
फाल्गु. कृ. ६ शु.	फर. २१	स्वा.	११/०० तक,
फाल्गु. कृ. ७ श.	फर. २२	अनु.	११/०३ बाद,
फाल्गु. कृ. १२ बु.	फर. २६	उ.षा.	१५/४१ से २६/५६ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	१५/११ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से २६/५६ तक,
फाल्गु. शु. ७ गु.	मार्च ७	रोहि.	१५/५५ से ३०/०६ तक,
फाल्गु. शु. ८ श.	मार्च ८	मृग.	१६/०१ बाद,
फाल्गु. शु. ११ बु.	मार्च १२	पुष्य	१५/११ से २६/१७ तक,

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय– काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

सर्व-देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ६ बु.	मई १	उ.षा.	७/४८ तक,
वैशा. कृ. ८ गु.	मई २	श्रव.	
वैशा. शु. २ र.	मई १२	रोहि.	
वैशा. शु. ५ बु.	मई १५	पुन.	
वैशा. शु. ६ गु.	मई १६	पुष्य	
वैशा. शु. १० चं.	मई २०	उ.फा.	५/४६ बाद,
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	चित्रा	६/५० तक,
वैशा. शु. १५ श.	मई २५	अनु.	
ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २९	उ.षा.	६/५८ तक,
ज्ये. कृ. ६ र.	जून २	उ.भा.	११/५० बाद,
आषा. कृ. १३ शु.	जुला. ५	रोहि.	
पौष शु. १५ गु.	जन. १६	पुन.	
माघ कृ. १ शु.	जन. १७	पुष्य	१०/०० तक,
माघ कृ. ६ बु.	जन. २२	हस्त	
माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	चित्रा	१०/३४ बाद,
माघ कृ. १० र.	जन. २६	अनु.	८/४५ तक,
फाल्गु. कृ. २ चं.	फर. १७	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ७ श.	फर. २२	अनु.	११/०३ बाद,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. २३	अनु.	१०/०० तक,
फाल्गु. कृ. १२ गु.	फर. २७	श्रव.	११/४३ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. शु. २ बु.	जुला. १०	पुष्य	
आषा. शु. ६ र.	जुला. १६	उ.फा.	६/१७ तक,
मार्ग. कृ. ३ बु.	नवं. २०	मृग.	
मार्ग. कृ. ५ शु.	नवं. २२	पुन.	
मार्ग. कृ. ५ श.	नवं. २३	पुष्य	
मार्ग. कृ. ११ शु.	नवं. २९	हस्त	११/१८ तक,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. ३०	चित्रा	१०/४९ तक,
मार्ग. शु. ५ श.	दिसं. ७	श्रव.	६/२८ तक,

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ४ चं.	अप्रै. २९		
ज्ये. कृ. ४ मं.	मई २८		
मार्ग. कृ. ४ गु.	नवं. २१		
माघ कृ. ४ चं.	जन. २०		
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १९		६/५० तक,

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ३ चं.	मई १३		
मार्ग. शु. ३ गु.	दिसं. ५		
माघ शु. ३ र.	फर. २		
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३		७/५५ बाद,

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ४ चं.	अप्रै. २९	मूल	८/०६ बाद,
वैशा. शु. ९ र.	मई १९		
ज्ये. कृ. ३ चं.	मई २७	मूल	
मार्ग. शु. २ बु.	दिसं. ४	मूल	
मार्ग. शु. ८ मं.	दिसं. १०		८/११ बाद,
माघ कृ. १२ मं.	जन. २८	मूल	
माघ शु. ९ श.	फर. ८		
फाल्गु. कृ. ९ चं.	फर. २४	मूल	६/२० बाद,

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आषा. कृ. १४ र.	जुला. ७	आर्द्रा	
मार्ग. कृ. ४ गु.	नवं. २१	आर्द्रा	
मार्ग. कृ. १४ चं.	दिसं. २		८/५५ तक,
माघ शु. १२ मं.	फर. ११	आर्द्रा	
फाल्गु. कृ. १४ शु.	फर. २८		

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त–काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी–देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी– देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें– गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां, जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिवप्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा–मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु–शुक्रास्तकाल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु को वर्जित किया जाता है ।

विपणि मुहूर्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. ६ बु.	मई १	उ.षा.	७/४८ तक
वैशा. कृ. १२ चं.	मई ६	उ.भा.	११/५७ बाद,
वैशा. शु. १ श.	मई ११	रोहि.	१३/२४ बाद,
वैशा. शु. २ र.	मई १२	रोहि.	१३/५१ तक
वैशा. शु. २ र.	मई १२	मृग.	१३/५१ बाद,
वैशा. शु. ६ गु.	मई १६	पुष्य	
वैशा. शु. १० चं.	मई २०	उ.फा.	५/४६ से १४/०६ तक, १५/१८ बाद,
वैशा. शु. १२ बु.	मई २२	चित्रा	६/५० तक,
वैशा. शु. १५ श.	मई २५	अनु.	
ज्ये. कृ. ५ बु.	मई २६	उ.षा.	६/५८ तक,
ज्ये. कृ. ६ र.	जून २	उ.भा.	११/५० बाद,
आषा. शु. २ बु.	जुला. १०	पुष्य	१३/४१ तक,
आषा. शु. ६ र.	जुला. १४	उ.फा.	६/१७ तक,
आषा. शु. ११ शु.	जुला. १६	अनु.	१४/०० से १७/०४ तक,
आषा. शु. १५ चं.	जुला. २२	उ.षा.	१३/३६ बाद,
श्राव. कृ. ५ श.	जुला. २७	उ.भा.	
श्राव. कृ. ६ र.	जुला. २८	रेव.	१०/१७ तक,
श्राव. कृ. ७ चं.	जुला. २६	अश्वि.	७/३६ तक, ६/३६ बाद,
श्राव. कृ. १० गु.	अग. १	रोहि.	१६/०२ बाद,
श्राव. कृ. ११ शु.	अग. २	रोहि.	८/२१ तक,
श्राव. कृ. ११ शु.	अग. २	मृग.	८/२१ से ६/४३ तक १३/१६ बाद,
श्राव. कृ. १२ श.	अग. ३	मृग.	११/२७ तक,
श्राव. शु. ३ श.	अग. १०	उ.फा.	१८/४३ तक,
श्राव. शु. ४ र.	अग. ११	हस्त	६/५२ बाद,
श्राव. शु. ५ चं.	अग. १२	चित्रा	

विपणि मुहूर्त (सन् २०१३ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. शु. १३ चं.	अग. १६	उ.षा.	१३/४० तक,
भाद्र. कृ. ५ र.	अग. २५	अश्वि.	११/२८ बाद,
भाद्र. कृ. ६ चं.	अग. २६	अश्वि.	८/३८ तक,
भाद्र. कृ. ८ बु.	अग. २८	रोहि.	१२/४१ बाद,
भाद्र. कृ. ६ शु.	अग. ३०	मृग.	६/३४ बाद,
भाद्र. शु. १ शु.	सितं. ६	उ.फा.	७/२७ बाद,
भाद्र. शु. २ श.	सितं. ७	उ.फा.	८/१० तक,
भाद्र. शु. २ श.	सितं. ७	हस्त	८/१० से १४/२६ तक,
भाद्र. शु. ३ र.	सितं. ८	हस्त	८/३१ तक,
भाद्र. शु. ३ र.	सितं. ८	चित्रा	८/३१ से १६/४६ तक,
भाद्र. शु. ६ बु.	सितं. ११	अनु.	१२/१६ बाद,
आश्वि. शु. १ श.	अक्तू. ५	हस्त	१५/४७ तक,
आश्वि. शु. १ श.	अक्तू. ५	चित्रा	१५/४७ बाद,
आश्वि. शु. ५ बु.	अक्तू. ६	अनु.	१२/०७ तक,
आश्वि. शु. ८ श.	अक्तू. १२	उ.षा.	७/४८ से १५/२६ तक,
कार्त्ति. कृ. १ श.	अक्तू. १६	अश्वि.	
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	अक्तू. २३	मृग.	८/५२ से ६/२६ तक,
कार्त्ति. कृ. ५ गु.	अक्तू. २४	मृग.	१०/३२ तक,
कार्त्ति. कृ. ७ श.	अक्तू. २६	पुष्य	१६/२६ बाद,
कार्त्ति. कृ. ८ र.	अक्तू. २७	पुष्य	११/५५ तक,
कार्त्ति. कृ. १२ गु.	अक्तू. ३१	उ.फा.	११/५७ तक,
कार्त्ति. शु. ७. श.	नवं. ६	उ.षा.	११!४८ तक,
कार्त्ति. शु. १२ गु.	नवं. १४	उ.भा.	८/३७ तक,
कार्त्ति. शु. १२ गु.	नवं. १४	रेव.	८/३७ बाद,
मार्ग. कृ. १ चं.	नवं. १८	रोहि.	१३/३० बाद,
मार्ग. कृ. ३ बु.	नवं. २०	मृग.	१३/१२ तक,
मार्ग. कृ. ५ श.	नवं. २३	पुष्य	

विपणि मुहूर्त (सन् २०१३-१४ ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
मार्ग. कृ. ६ बु.	नवं. २७	उ.फा.	१४/५२ बाद,
मार्ग. कृ. १० गु.	नवं. २८	हस्त	१५/१२ बाद,
मार्ग. कृ. ११ शु.	नवं. २६	हस्त	११/१८ तक,
मार्ग. कृ. ११ शु.	नवं. २६	चित्रा	११/१८ बाद,
मार्ग. कृ. १२ श.	नवं. ३०	चित्रा	१०/४८ तक,
मार्ग. शु. ४ शु.	दिसं. ६	उ.षा.	१६/२५ बाद,
मार्ग. शु. १० गु.	दिसं. १२	रेव.	१४/५६ तक,
माघ कृ. ६ बु.	जन. २२	हस्त	
माघ कृ. ७ गु.	जन. २३	चित्रा	१०/३४ से १६/११ तक,
माघ कृ. १० र.	जन. २६	अनु.	८/४५ तक,
माघ शु. ४ चं.	फर. ३	उ.भा.	१४/३४ बाद,
माघ शु. ६ श.	फर. ८	रोहि.	१५/०४ बाद,
फाल्गु. कृ. २ चं.	फर. १७	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ४ बु.	फर. १६	चित्रा	१३/२६ बाद,
फाल्गु. कृ. ७ श.	फर. २२	अनु.	११/०३ बाद,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फर. २३	अनु.	१०/०४ तक,
फाल्गु. कृ. १२ बु.	फर. २६	उ.षा.	१५/४१ बाद,
फाल्गु. शु. १ र.	मार्च २	उ.भा.	१६/५० बाद,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	उ.भा.	१५/११ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ३	रेव.	१५/११ से १७/४२ तक,
फाल्गु. शु. ७ शु.	मार्च ७	रोहि.	१५/५५ बाद,

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति–प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी–अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग–शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु–शुक्रास्त काल में पड़े, तब तो उस दिन मूर्त्ति–प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७० वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम **सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि**, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि – इन तिथि–भ–वारज एवं सूर्य और चन्द्र के **नक्षत्र–संयोगोत्पन्न** सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग– जैसा कि, इनके नाम से ही स्पष्ट है, इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु–शुक्रास्त, अधिमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। यहां दिए अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे– गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। **रवि योग**– रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है– रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है– " **कुयोगविध्वंस–कराःशुभेषु**"। **सिद्धियोग–** सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि और रवियोगों की भान्ति ही महत्त्वशाली है। शास्त्रों का कहना है कि, सिद्धियोग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है। **त्रिपुष्करयोग–** इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि आदि) का खरीदना भी त्रिगुणकारी है– ऐसा मुहूर्त्तविदों का कहना है। **द्विपुष्करयोग** भी त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं– यह मौहूर्तिकों का कथन है।

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.
अप्रै. ११	सू. उ.	अप्रै. ११	२३ ०६	(मई १६	सू. उ.	मई १७	१ २८)गु.	(जुला. १४	२० ४४	जुला. १५	सू. उ.)र.	अग. २५	७ ४१	अग. २६	सू. उ.
(अप्रै. १४	३ ४९	अप्रै. १४	सू. उ.)श.	मई २६	१७ ३१	मई २७	सू. उ.	जुला. १८	१९ ०२	जुला. १९	सू. उ.	अग. २७	१० २०	अग. २९	सू. उ.
अप्रै. १५	सू. उ.	अप्रै. १५	६ ४२	जून २	७ १२	जून ३	सू. उ.	जुला. २१	सू. उ.	जुला. २१	११ ५२	सितं. २	० १७	सितं. ३	२ ४४
(अप्रै. १५	६ ४२	अप्रै. १६	० ०५)चं.	(जून ४	९ ४७	जून ५	सू. उ.)मं.	जुला. २८	२२ ५५	जुला. २९	सू. उ.	सितं. ३	सू. उ.	सितं. ४	४ ४५
अप्रै. १६	० ०५	अप्रै. १६	सू. उ.	(जून ८	सू. उ.	जून ८	२० ०९)श.	जुला. ३१	२ ३८	अग. १	सू. उ.	सितं. ६	सू. उ.	सितं. ६	७ २७
अप्रै. १८	सू. उ.	अप्रै. १८	१५ ३१	(जून १३	सू. उ.	जून १३	७ ५५)गु.	अग. ५	१७ १४	अग. ६	सू. उ.	(सितं. ८	सू. उ.	सितं. ८	८ ३२)र.
(अप्रै. १८	१५ ३१	अप्रै. १९	सू. उ.)गु.	जून १६	१३ ५३	जून १७	सू. उ.	अग. ६	१९ ४४	अग. ७	सू. उ.	(सितं. ११	७ ३३	सितं. १२	सू. उ.)बु.
अप्रै. २४	सू. उ.	अप्रै. २४	१८ ४७	जून २३	सू. उ.	जून २४	१ १३	अग. ९	सू. उ.	अग. १०	१ ०८	सितं. १२	सू. उ.	सितं. १२	६ ३६
मई ६	१ ४१	मई ६	सू. उ.	जून ३०	सू. उ.	जून ३०	१४ २३	(अग. ११	सू. उ.	अग. ११	६ ५२)र.	सितं. १५	सू. उ.	सितं. १६	० १९
(मई ८	४ ०८	मई ८	सू. उ.)मं.	(जुला. २	सू. उ.	जुला. २	१७ ४०)मं.	अग. ११	६ ५२	अग. १२	२ ५२	सितं. १६	सू. उ.	सितं. १६	२२ २७
मई ९	सू. उ.	मई ९	६ ०२	जुला. ३	२० ११	जुला. ४	सू. उ.	अग. १५	२ ०४	अग. १६	० ४९	(सितं. २०	१७ १४	सितं. २१	सू. उ.)शु.
(मई ११	१० ५८	मई १२	सू. उ.)श.	जुला. १२	१८ ०३	जुला. १३	सू. उ.	अग. १८	१८ ३८	अग. १९	सू. उ.	सितं. २२	सू. उ.	सितं. २२	१७ ४६
(मई १३	सू. उ.	मई १३	१६ ५३)चं.	जुला. १४	सू. उ.	जुला. १४	२० ४४	अग. १९	१६ ०८	अग. २०	सू. उ.	सितं. २४	सू. उ.	सितं. २४	२१ ०१

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१३-१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.
सितं. २५	सू. उ.	सितं. २६	सू. उ.
सितं. २८	५ २०	सितं. २८	सू. उ.
सितं. २६	८ १२	सितं. ३०	१० ४७
अक्तू. १	सू. उ.	अक्तू. १	१२ ५३
(अक्तू. ६	सू. उ.	अक्तू. ६	१२ ०७)बु.
अक्तू. १३	६ २२	अक्तू. १३	सू. उ.
(अक्तू. १८	सू. उ.	अक्तू. १६	२ ०१)शु.
अक्तू. २२	५ ३७	अक्तू. २२	सू. उ.
अक्तू. २३	सू. उ.	अक्तू. २४	सू. उ.
अक्तू. २५	१३ २७	अक्तू. २६	सू. उ.
अक्तू. २७	सू. उ.	अक्तू. २७	१६ १३
नवं. ३	० १६	नवं. ३	सू. उ.
नवं. ४	२१ २३	नवं. ५	सू. उ.
नवं. ६	११ ४८	नवं. १०	सू. उ.
(नवं. १५	सू. उ.	नवं. १५	६ १३)शु.
नवं. १८	१३ ३०	नवं. १६	सू. उ.
नवं. २०	सू. उ.	नवं. २०	१८ १६
नवं. २१	२१ १०	नवं. २३	० ०६
नवं. ३०	१० ४८	दिसं. १	सू. उ.
दिसं. २	७ ४४	दिसं. ३	५ २६
दिसं. ६	१८ ५८	दिसं. ७	१६ ५३
दिसं. १०	१३ ५३	दिसं. ११	सू. उ.
दिसं. १२	सू. उ.	दिसं. १३	१६ १५
दिसं. १६	सू. उ.	दिसं. १६	२२ ३४
(दिसं. १६	२२ ३४	दिसं. १७	सू. उ.)चं.
दिसं. १६	सू. उ.	दिसं. २०	७ ००
(दिसं. २०	७ ००	दिसं. २०	७ १६)गु.
दिसं. २५	१६ ३२	दिसं. २६	सू. उ.
दिसं. २८	सू. उ.	दिसं. २८	२० ०६
दिसं. ३०	सू. उ.	दिसं. ३०	१६ ४२
(सन् २०१४ ई.)			
जन. ३	सू. उ.	जन. ४	२ ०४
जन. ७	सू. उ.	जन. ७	२० २०
जन. ६	सू. उ.	जन. ६	२१ ५५
(जन. १२	१ ५७	जन. १२	सू. उ.)श.
(जन. १३	सू. उ.	जन. १४	७ २२)चं.
जन. १६	सू. उ.	जन. १६	१३ १४
(जन. १६	१३ १४	जन. १७	सू. उ.)गु.
जन. २२	सू. उ.	जन. २३	३ २८
जन. ३१	सू. उ.	जन. ३१	१३ १७
फर. ३	६ ००	फर. ३	सू. उ.
(फर. ५	४ २८	फर. ५	सू. उ.)मं.
(फर. ८	८ ११	फर. ६	सू. उ.)श.
(फर. १३	सू. उ.	फर. १३	२२ २२)गु.
फर. १७	५ ४८	फर. १७	सू. उ.
फर. १६	सू. उ.	फर. १६	६ १६
मार्च २	१६ ५०	मार्च ३	सू. उ.
(मार्च ४	१४ १२	मार्च ५	सू. उ.)मं.
(मार्च ८	सू. उ.	मार्च ८	१७ ५७)श.
मार्च १६	१२ २३	मार्च १७	सू. उ.
मार्च २३	१५ १६	मार्च २४	सू. उ.
मार्च ३०	सू. उ.	मार्च ३१	१ ३०

रवि योग (सन् २०१३-१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.
अप्रै. १३	१ १४	अप्रै. १४	१ २८
अप्रै. १४	३ ४६	अप्रै. १५	६ ४२
अप्रै. १६	६ ४६	अप्रै. १७	१२ ४६
अप्रै. १६	१७ ४७	अप्रै. २१	२० २०
अप्रै. २३	१६ ५७	अप्रै. २४	१८ ४७
मई १	४ १०	मई २	२ ४३
मई १३	१६ ५३	मई १४	१६ ५७
मई १५	२२ ५२	मई १७	१ २८
मई १६	५ ०४	मई २१	५ ४६
मई २३	३ ३६	मई २४	१ ३५
मई ३०	८ १८	मई ३१	७ १५
जून १२	५ ११	जून १३	७ ५५
जून १४	१० १७	जून १५	१२ १३
जून १७	१४ १३	जून १६	१३ २२
जून २१	६ ४६	जून २२	४ ३३
जून २२	७ ११	जून २३	४ १७
जून २८	१४ ०६	जून २६	१३ ५१
जुला. ११	१६ ०२	जुला. १२	१८ ०३
जुला. १३	१६ ३८	जुला. १४	२० ४४
जुला. १६	२१ १०	जुला. १८	१६ ०२
जुला. २१	११ ५२	जुला. २२	८ ५६
जुला. २७	२२ १३	जुला. २८	२२ ५५
अग. १०	१ ०८	अग. ११	२ १२
अग. १२	२ ५२	अग. १३	३ ०५
अग. १५	२ ०४	अग. १६	२३ ०६
अग. १७	० ०७	अग. १७	२१ ००
अग. १६	१६ ०८	अग. २०	१३ ४०
अग. २६	८ ३८	अग. २७	१० २०
सितं. ८	८ ३१	सितं. ६	८ ३१
सितं. १०	८ ११	सितं. ११	७ ३३
सितं. १३	५ २१	सितं. १३	१३ ५५
सितं. १४	३ ५१	सितं. १६	० १६
सितं. १७	२० ४०	सितं. १८	१६ ०७
सितं. २४	२१ ०१	सितं. २५	२३ ३१
अक्तू. ७	१४ २८	अक्तू. ८	१३ २३
अक्तू. ६	१२ ०७	अक्तू. १०	१० ४३
अक्तू. १०	१८ २५	अक्तू. ११	६ १६
अक्तू. १३	६ २२	अक्तू. १५	३ ४६
अक्तू. १७	२ १०	अक्तू. १८	१ ५२
अक्तू. २५	१३ २७	अक्तू. २६	१६ २५
नवं. ५	१६ २८	नवं. ६	१३ ०५
नवं. ६	१७ २६	नवं. ७	१५ २४
नवं. ८	१३ २०	नवं. ६	११ ४८
नवं. ११	६ २१	नवं. १३	८ २७
नवं. १५	६ १३	नवं. १६	१० १४
नवं. २४	३ ०७	नवं. २५	५ ५२
दिसं. ५	२१ २६	दिसं. ६	१८ ५८
दिसं. ७	१६ ५३	दिसं. ८	१५ १८
दिसं. १०	१३ ५३	दिसं. १२	१४ ५६
दिसं. १४	१८ ०१	दिसं. १५	२० ०६
दिसं. १६	२ २७	दिसं. १६	२२ ३४
दिसं. २३	१५ ३३	दिसं. २४	१७ ४६
(सन् २०१४ ई.)			
जन. ४	२ ०४	जन. ४	२३ ३६
जन. ५	२१ ४६	जन. ६	२० ४१
जन. ८	२० ४६	जन. १०	२३ ४२
जन. ११	६ ३६	जन. १२	१ ५७
जन. १४	७ २२	जन. १५	१० १७
जन. २२	२ ०६	जन. २३	३ ३८
फर. २	७ ५४	फर. ३	६ ००
फर. ४	४ ४६	फर. ५	४ २८

रवि योग
(सन् २०१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१४ ई.	घं. मि.	२०१४ ई.	घं. मि.
फर. ८	८ ११	फर. १०	१३ ३०
फर. १२	१६ २६	फर. १३	२२ २२
फर. २१	११ ००	फर. २२	११ ०३
मार्च ३	१५ ११	मार्च ४	१४ १२
मार्च ४	२२ ५८	मार्च ५	१३ ५९
मार्च ६	१४ ३३	मार्च ७	१५ ५५
मार्च ९	२० ३०	मार्च १२	२ २२
मार्च १४	७ ५९	मार्च १५	१० २२
मार्च २२	१६ ०६	मार्च २३	१५ १९

सिद्धि योग
(सन् २०१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
अप्रै. १८	सू. उ.	अप्रै. १८	१५ ३१
मई २६	१७ ३१	मई २७	सू. उ.
जून २३	सू. उ.	जून २४	१ १३
जुला. ३	२० ११	जुला. ४	सू. उ.
जुला. १२	१८ ०३	जुला. १३	सू. उ.
जुला. २१	सू. उ.	जुला. २१	११ ५२
जुला. ३१	सू. उ.	अग. १	५ २१
अग. ९	सू. उ.	अग. १०	१ ०८
अग. १९	१६ ०८	अग. २०	सू. उ.
अग. २८	सू. उ.	अग. २८	१२ ४१
सितं. ६	सू. उ.	सितं. ६	७ २७
सितं. १६	सू. उ.	सितं. १६	२२ २७
नवं. ३	० १९	नवं. ३	सू. उ.
नवं. २१	२१ १०	नवं. २२	सू. उ.
नवं. ३०	१० ४८	दिसं. १	सू. उ.
दिसं. १०	१३ ५३	दिसं. ११	सू. उ.

सिद्धि योग
(सन् २०१३-१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.
दिसं. १९	सू. उ	दिसं. २०	७ ००
दिसं. २८	सू. उ.	दिसं. २८	२० ०६
(सन् २०१४ ई.)			
जन. ७	सू. उ.	जन. ७	२० २०
जन. १६	सू. उ.	जन. १६	१३ १४
मार्च २३	१५ १६	मार्च २४	सू. उ.

द्विपुष्कर योग
(सन् २०१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
मई २२	५ ०३	मई २२	सू. उ.
जुला. २४	३ २०	जुला. २४	सू. उ.
अग. ३	सू. उ.	अग. ३	११ २७
अक्तू. ६	५ ०४	अक्तू. ६	१५ १८
नवं. १९	१५ ४५	नवं. २०	० ०६
नवं. ३०	सू. उ.	नवं. ३०	१० ४८
दिसं. ८	११ १०	दिसं. ८	१५ १८
(सन् २०१४ ई.)			
फर. १	सू. उ.	फर. १	१० २३
मार्च १८	१५ १४	मार्च १८	२४ ००

त्रिपुष्कर योग
(सन् २०१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
अप्रै. २३	सू. उ.	अप्रै. २३	७ ४९
अप्रै. २७	सू. उ.	अप्रै. २७	१२ ४६
मई ११	८ ००	मई ११	१० ५८
जून २५	सू. उ.	जून २५	९ २३
जून २९	सू. उ.	जून २९	१३ ५१
अग. १४	२ ४९	अग. १४	५ ०९

त्रिपुष्कर योग
(सन् २०१३-१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.
अग. २७	१० २०	अग. २८	२ ०६
सितं. १	११ २६	सितं. २	० १७
सितं. ७	सू. उ.	सितं. ७	८ १०
अक्तू. १६	२ ५१	अक्तू. १६	सू. उ.
अक्तू. २१	३ ५२	अक्तू. २१	५ ५२
अक्तू. २६	सू. उ.	अक्तू. २६	१५ ५९
नवं. ९	सू. उ.	नवं. ९	११ ४८
दिसं. २४	१७ ४६	दिसं. २५	६ ४६
दिसं. २९	५ २०	दिसं. २९	१८ ४६
(सन् २०१४ ई.)			
जन. १२	० ५०	जन. १२	१ ५७
फर. ११	१६ २९	फर. ११	२२ १२
फर. १७	५ ४८	फर. १७	सू. उ.
फर. २२	सू. उ.	फर. २२	११ ०३
फर. २६	५ २७	फर. २६	सू. उ.
मार्च २	१० २८	मार्च २	१६ ५०

अमृतसिद्धि योग
(सन् २०१३ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
(अप्रै. १४	३ ४९	अप्रै. १४	सू. उ.)श.
(अप्रै. १५	६ ४२	अप्रै. १६	० ०५)चं.
(अप्रै. १८	१५ ३१	अप्रै. १९	सू. उ.)गु.
(मई ८	४ ०८	मई ८	सू. उ.)मं.
(मई ११	१० ५८	मई १२	सू. उ.)श.
(मई १३	सू. उ.	मई १३	१६ ५३)चं.
(मई १६	सू. उ.	मई १७	१ २८)गु.
(जून ४	९ ४७	जून ५	सू. उ.)मं.

अमृतसिद्धि योग
(सन् २०१३-१४ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१३ ई.	घं. मि.	२०१३ ई.	घं. मि.
(जून ८	सू. उ.	जून ८	२० ०९)श.
(जून १३	सू. उ.	जून १३	७ ५५)गु.
(जुला. २	सू. उ.	जुला. २	१७ ४०)मं.
(जुला. १४	२० ४४	जुला. १५	सू. उ.)र.
(अग. ११	सू. उ.	अग. ११	६ ५२)र.
(सितं. ८	सू. उ.	सितं. ८	८ ३२)र.
(सितं. ११	७ ३३	सितं. १२	सू. उ.)बु.
(सितं. २०	१७ १४	सितं. २१	सू. उ.)शु.
अक्तू. ९	सू. उ	अक्तू. ९	१२ ०७)बु
(अक्तु. १८	सू. उ.	अक्तू. १९	२ ०१)शु.
(नवं. १५	सू. उ.	नवं. १५	९ १३)शु.
(दिसं. १६	२२ ३४	दिसं. १७	सू. उ)चं.
(दिसं. २०	७ ००	दिसं. २०	७ १९)गु.
सन् २०१४ ई.			
(जन. १२	१ ५७	जन. १२	सू. उ.)श.
(जन. १३	सू. उ.	जन. १४	७ २२)चं.
(जन. १६	१३ १४	जन. १७	सू. उ.)गु.
(फर. ५	४ २८	फर. ५	सू. उ.)मं.
(फर. ८	८ ११	फर. ९	सू. उ.)श.
(फर. १३	सू. उ.	फर. १३	२२ २२)गु.
(मार्च ४	१४ १२	मार्च ५	सू. उ.)मं.
(मार्च ८	सू. उ.	मार्च ८	१७ ५७)श.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2070 वि.) का आयुसाधन विशेषांक

(गतवर्ष से क्रमागत)

(लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :–

आगामी वर्ष सं. 2071 वि. का विशेषांक

सं. 2071 वि. के **श्री मार्त्तण्ड पंचांग** में **आयुनिर्णय** के शेष बचे अन्य प्रकार विस्तार से स्पष्ट किए जाएंगे तथा इन सभी विभिन्न आयुनिर्णायक प्रकारों की विस्तृत तुलनात्मक समीक्षा भी यहां की जाएगी।

इस वर्ष आयुनिर्णय पर हमारा यह विवेचन सम्पन्न हो जाएगा। — प्रियव्रत शर्मा

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्) , पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक का पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए !

- क्या होलिकादहन अर्द्धरात्रि–बाद किया जा सकता है ?
- 'हरिवासर' किसे कहते हैं ?
- आगामी वार के व्रत के निमित्त सूर्योदय से पूर्व क्या स्नानादि किया जा सकता है ?
- ग्रहों की वास्तविक राशि–नक्षत्रों में स्थिति सायन ग्रह बतलाते हैं या निरयण ?
- नगर एवं नगरवासी की ' काकिणी–संख्याओं ' से शुभाशुभ विचार ?
- शून्य अयनांश का वर्ष कौन सा ?
- ' खण्डखाद्य ग्रन्थ ' के रचयिता कौन ?
- मूल–आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे जातक की शान्ति यदि पहले न की गई हो तो क्या विवाह से पूर्व भी यह की जा सकती है ?
- वर्गगणना में 'व' और 'ब' दोनों वर्ण भिन्न–भिन्न हैं, जबकि नक्षत्र–राश्यादि विचार में ये दोनों समान हैं– ऐसा क्यों ?
- उन्नतांशपद्धति से साधित 'गुरु'–'शुक्र' के लोप–दर्शन की तिथियों में भी मतभेद क्यों ?
- 2 मई, 2012 ई. को गुरु का पश्चिमास्त आपके पंचांग में दिखाया गया था, जबकि यह 13 मई तक आकाश में (पश्चिम में) देखा गया– ऐसा क्यों ?
- पंचांगों में दी जाने वाली भरतमिलाप की तिथि *'वाल्मीकि रामायण'* से मेल क्यों नहीं खाती ?
- गतवर्षीय व्रत–पर्व की तिथि में मतभेद का स्पष्टीकरण ज़रूरी क्यों ?

> संक्रान्ति वाले दिन उत्पन्न जातक की सूर्यराशि कौन सी मानी जाए ?
> सूर्य–परमक्रान्ति–साधक सूत्र द्वारा साधित वर्ष 2009 ई. की सूर्य–परमक्रान्ति में अन्तर क्यों ?
> क्या कारण है– सभी अक्षांशों के लिए दशमलग्न–साधन हेतु एक ही सारणी प्रयोग की जाती है ?
> ग्रह की राशि उसके भोगांश में निर्दिष्ट राशि से अग्रिम क्यों मानी जाती है ?
> आशौचों के सम्पात में आशौच की निवृत्ति (शुद्धि) का ज्ञान प्रकार क्या है ?

*****

समस्या– गतवर्ष (सन् 2012 ई.) के ' **होलिका–दहन** ' के बारे में कुछ T.V. Channels ने यह प्रसारित किया कि– पंचांगों में जो 7 मार्च, 2012 ई. को भद्रा में ही होलिकादहन का निर्देश किया था, वह शास्त्रविरुद्ध था, उनका कहना था कि– वहां होलिकादहन भद्रा की समाप्ति के बाद होना चाहिए था ? वहां भद्रा की समाप्ति 28 घं. 31 मिनट पर अर्धरात्रि के बाद थी। यहां प्रश्न है– क्या अर्धरात्रि के अनन्तर होलिका-दहन का काल शास्त्रविहित है ?

श्री उपेन्द्र नाथ भागवत, हाथरस (उ.प्र.)।

समाधान– अर्धरात्रि के बाद यदि भद्रा–समाप्ति हो रही हो तब भद्रा के मुख को छोड़कर अर्धरात्रि से पूर्व भद्रा के काल में ही प्रदोष में होलिकादहन करने का शास्त्र आदेश देते हैं। यहां " **द्वैतनिर्णय मयूख** " का एतद्विषयक यह वाक्य देखिए–

" भद्रायां विहितं कार्यं होलिकायाः प्रपूजनं
मध्यरात्रमतिक्रम्य विष्टि-पूर्तिर्यदा भवेत्।
प्रदोषे ज्वालयेद्वह्निं सुख–सौभाग्यदायकां
प्रदोषान्मध्यरात्रान्तं होलिकादहनं शुभम्।।"

'**लल्ल**' का यह वाक्य भी देखिए, जो स्पष्ट कह रहा है कि– रात्रि के पूर्वार्ध वाली विष्टि (भद्रा) शुभ मानी जाती है–

" दिवापरार्धजा विष्टिः पूर्वार्धोत्था यदा निशि।
तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्।।"

' **ज्योतिर्विदाभरण** ' का यह वचन भी इस विषय में द्रष्टव्य है, जिसमें स्पष्ट लिखा है कि– निशीथ से पूर्व ही होलिका जलाना शुभ है। निशीथानंतर अथवा दिन के समय एवम् प्रतिपदा में इसे जलाने से राजलक्ष्मी का विनाश होता है। देखिए–

" हुताशनीं फाल्गुनपौर्णमास्यां निशीथपूर्वं ज्वलयेच्छुभार्थी।
पश्चात्तमी तज्ज्वलने दिवा वा नृपश्रियं हन्त्यपि पक्षतिर्वा।। "

शास्त्रकारों का परामर्श है कि– ऐसी स्थिति में यदि संभव हो तो भद्रा के मुख का त्याग करना चाहिए। इस दिन 7 मार्च, 2012 ई. को भद्रा का मुख भी निशीथ के बाद भा.स्टैं.टा. अनुसार 25घं. 52मि. से 27 घं. 52 मि. तक था। अतः स्पष्ट है– 7 मार्च, 2012 ई. को अर्धरात्रि से पूर्व भद्रा में ही प्रदोष के समय होलिकादहन शास्त्रशुद्ध था। T.V. channels वालों के परामर्शदाता इन तथाकथित धर्मशास्त्रियों को व्रत–पर्व-निर्णायक ग्रन्थों का गम्भीरता से अध्ययन, परिशीलन करने की सख्त ज़रूरत है।

समस्या–(i) **'हरिवासर' किसे कहते हैं ?**

(ii) **शनिवार का व्रत रखने वालों को कर्मकाण्डी लोग बताते हैं कि– सूर्योदय से पहले ही**

वे पीपलवृक्ष या शनिमन्दिर में दीप जलाएं, पूजा, अर्चना करें, जबकि दिन का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है, क्या यह पूजा शनिवार के दिन में मानी जाएगी या शुक्रवार की रात में ?

(iii) आकाश में ग्रहों की वास्तविक (राशि, नक्षत्र) स्थिति सायन स्पष्टग्रह के अनुसार होती है या निरयण स्पष्टग्रह के अनुसार ?

श्री शेर सिंह राणा, रामपुर, रुड़की (हरिद्वार)।

समाधान– (i) '**हरिवासर**' सामान्यतः एकादशी तिथि के लिए प्रयुक्त होता है। '**हरि**' (विष्णु) का '**वासर**' (तिथि) – यह इसका शब्दार्थ है। क्योंकि, एकादशी व्रत '**विष्णु**' का व्रत है, अतः एकादशी को '**हरिवासर**' संज्ञा दी गई है।

इस शब्द का एक अन्य विशेष अर्थ भी है– "**द्वादशी तिथि का प्रथम चरण**"। एकादशी व्रत की पारणा '**हरिवासर**' काल में नहीं की जाती। **निर्णयसिन्धु** में उद्धृत **'विष्णुपुराण'** का यह वाक्य देखिए–

" द्वादश्याः च प्रथमपादमतिक्रम्य पारणं कार्यम्,
द्वादश्याः प्रथमः पादः हरिवासर संज्ञितः।
तमतिक्रम्य कुर्वीत पारणं विष्णुतत्परः।।"

(ii) किसी भी व्रत का संकल्प व्रतदिन के सूर्योदय से पूर्व ब्रह्ममुहूर्त्त या अरुणोदयकाल में करने का माहात्म्य धर्मशास्त्रकारों ने विशेष माना है। उनका वहां यह भी निर्देश है कि– संकल्प करते समय संकल्प में उसी (सूर्योदयानन्तर प्रवृत्त होने वाले) वार का उच्चारण करना चाहिए, जिस वार का यह व्रत है। इससे स्पष्ट है– ब्रह्ममुहूर्त्त/अरुणोदयकाल को शास्त्रकारों ने अग्रिम वार का भी अंग माना है। यही कारण है–पूर्णिमा, संक्रान्ति आदि पर्वों पर धर्मिष्ठ लोग सूर्योदय से पूर्व ही तीर्थस्नान को महत्त्व देते है। । इस विषय में यह पद्य प्रसिद्ध है–

" उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्।
सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्।।"

(iii) निरयण भोगांशों से ही ग्रहों की तत्तत् वास्तव राशि–नक्षत्रों [अर्थात् राशि–नक्षत्रों के तारापुंजों (Constellations)] में स्थिति ज्ञात होती है, सायन भोगांशों से नहीं। सायन भोगांशों द्वारा प्रदर्शित मेषादि राशि–नक्षत्र काल्पनिक होते हैं। वहां वे वास्तव राशि–नक्षत्र–तारापुंजों से क्रान्तिवृत्त में अयनांशतुल्य पश्चिम की ओर खिसके रहते हैं। आजकल सायन ग्रहों के ये काल्पनिक राश्यादि वास्तव राश्यादि से लगभग 24° (वर्तमान अयनांशतुल्य) पीछे (पश्चिम) में हैं। तदनुसार इन दिनों सायन मेषारम्भ में स्थित माना जाने वाला ग्रह वस्तुतः मीन constellation की सीमा में लगभग 6° पर स्थित होता है।

इससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– आज से लगभग 352 वर्ष बाद (2364 A.D. में) जब अयनांश 30° होगा, सायन मेषारम्भ बिन्दु पर निरयण मीनारम्भ बिन्दु होगा। अर्थात् उस समय सायन मेषारम्भ पर स्थित ग्रह मीन तारापुंज की सीमा में प्रविष्ट होने जा रहा होगा। इस प्रकार आज से लगभग 11,000 वर्ष बाद जब अयनांश 180° हो जाएगा, तब सायन मेष में स्थित ग्रह वस्तुतः तुला तारापुंज (constellation) में स्थित होगा। सायन–निरयण स्थितियों में यह वर्धमान अन्तर सायनगणना के मूल मेषारम्भ बिन्दु 'वसन्त सम्पात' की लगभग 51 विकला वार्षिक वक्रगति के कारण है।

समस्या– **'काकिणी विचार' में दो मत देखने को मिल रहे हैं–(1) " स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।। "– इस वाक्य के अनुसार कुछ लोग अधिक काकिणी वाले को ऋणी (दरिद्र) बतलाते हैं। (2) कुछ लोग वसिष्ठ, नारद, कश्यप के "यस्याधिकाः सोऽर्थदः"– वाक्यानुसार अधिक काकिणी वाले को धनी मानते हैं। उपरोक्त दोनों मतों में से किसे प्रामाणिक माना जाए ?**

रामप्रकश उपाध्याय,
मु.पो. अमौरा, ग़ाज़ीपुर (U.P.)।

समाधान–(1) नगर और नगरवासी (या नगर में निवास चाहने वाले व्यक्ति) की काकिणीसंख्या का निर्णय करने वाले ये दो वाक्य मिलते हैं–

"स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्।
अष्टभिस्तु हरेद्भागंयोऽधिकः स ऋणी भवेत्।।"

[नगर के वर्ग (वर्ग की संख्या) को दुगुना करके उसमें नगरवासी का वर्ग जोड़कर आठ से भाग देने पर जो शेष बचे वह नगर की काकिणियां होंगी। इसी प्रकार नगरवासी के वर्ग को दुगुना करके उसमें नगर का वर्ग जोड़कर आठ का भाग देने पर जो शेष बचे वह नगरवासी की काकिणियां होंगी। जिसकी काकिणियां अधिक होंगी वह दूसरे का ऋणी रहेगा। अर्थात् यदि नगरवासी की काकिणियां अधिक होंगी तो वह नगर का ऋणी रहेगा, अन्यथा नगर उसका ऋणी रहेगा।]

यह वाक्य किस ग्रन्थ या लेखक का है– यह ज्ञात नहीं है।

(2) **" साध्यवर्गं पुरः स्थाप्य पृष्ठतः साधकं न्यसेद् विभजेदष्टभिः शेषं साधकस्य धनं स्मृतम्।**
व्यत्ययेनागतं शेषं साधकस्य ऋणं स्मृतं धनाधिकं स्वल्प-ऋणं सर्वसम्पत्प्रदं स्मृतम्।।"

[साध्य (नगर) की वर्गसंख्या को दाईं ओर रखकर उससे बाईं ओर साधक (नगरवासी) की वर्ग-संख्या को रखें। इससे जो संख्या बने उसे 8 से भाग देकर जो शेष बचे उसे नगरवासी का धन (काकिणियां) समझें। इसी तरह इसके विपरीत साधक (नगरवासी) की वर्गसंख्या को दाईं ओर रखकर उससे बाईं ओर साध्य (नगर) की वर्गसंख्या को रखें। इससे बनी संख्या को 8 से भाग देने पर जो शेष बचे उसे नगरवासी का ऋण (या नगर का धन) समझें। नगरवासी का धन (काकिणियां) यदि उसके ऋण (या नगर के धन) से अधिक हों तो नगर वासी के लिए वह नगर सभी प्रकार की सम्पत्तियाँ देने वाला होगा।]

यह (दूसरा) वाक्य **वसिष्ठ, नारद** और **कश्यप** की संहिताओं में मिलता है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि इन दोनों वाक्यों में दी गईं दोनों गणित– प्रक्रियाओं से काकिणियों की संख्याएं बिल्कुल समान प्राप्त होती हैं। लेकिन पहला वाक्य कहता है कि– नगरवासी की काकिणीसंख्या नगर की काकिणीसंख्या से ज्यादा हो तो वह नगरवासी को ऋणी (धनहीन) बनाती है। जबकि दूसरा वाक्य इससे उलटी बात कहता है कि– नगरवासी की काकिणीसंख्या नगर की काकिणीसंख्या से ज्यादा हो तो उससे नगरवासी धनवान् होता है। इस तरह दोनों वाक्यों में परस्पर विरोध देखने को मिलता है। इस स्थिति में जब इन दोनों वाक्यों में से किसी एक वाक्य को प्रामाणिक मानने का प्रश्न आता है, तब दूसरे (**" साध्यवर्गं पुरः स्थाप्य....."**) वाक्य को ही प्रामाणिकता देना तर्कसंगत लगता है, क्योंकि यह वाक्य संहिताओं से आया है, जिन्हें हमारी परम्परा आर्षवाक्य मानती है।

प्रसिद्ध मुहूर्तग्रन्थ **" मुहूर्तमार्त्तण्ड "**, जिसकी रचना **' मुहूर्तचिन्तामणि '** से पहले हुई है, उसमें भी इस गणितप्रक्रिया द्वारा अधिक काकिणी प्राप्त वाले व्यक्ति (नगरवासी) को 'अर्थद' लिखा है– **" यस्याधिकाःसोऽर्थदः "** । 'अर्थद' शब्द का अर्थ भी **मुहूर्त मार्त्तण्डकार** ने स्वरचित टीका में " धनदाता " (धन देने वाला) लिखा है। **' मुहूर्तचिन्तामणि'**कार ने निवासी और नगर की काकिणीसंख्या ज्ञात करने वाली गणितप्रक्रिया बतलाने वाले अपने श्लोक में **मुहूर्तमार्त्तण्ड** का उपरोक्त पद्यखण्ड (**" यस्याधिकाः सोऽर्थदः "**) यथावस्थित रूप में ले लिया है। **मुहूर्तमार्त्तण्डकार** तो स्पष्ट है, इसका अर्थ यही रखते हैं कि अधिक काकिणियों वाला व्यक्ति **'धनदाता'** (लोगों को धन देने वाला व्यक्ति) होता है। लेकिन **पीयूषधाराकार** ने **" मुहूर्तमार्त्तण्ड "** से उद्धृत इस पद्यखण्ड के **'अर्थद'** शब्द का अर्थ **' धन देने वाला '** यानी **'ऋण का धन चुकाने वाला '**– इस प्रकार बलात् कर डाला। कोई भी शाब्दिक विद्वान् **'अर्थद'** शब्द का अर्थ **'ऋणी'** कभी नहीं कर सकता। यह तो इसका साक्षात् विपरीत अर्थ है। **पीयूषधाराकार** को इसका अर्थ बलात् 'ऋणी' क्यों करना पड़ा, इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

' मुहूर्तचिन्तामणि'कार न नगरवासी और नगर की संख्या जानने की प्रक्रिया ठीक वही बतलाई, जो **" स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा ...... "** वाक्य में है। इस वाक्य में अधिक काकिणी वाले को ऋणी बतलाया है, अतः **पीयूषधारा** कार ने भी यही उचित समझा कि –**" यस्याधिकाः सोऽर्थदः "** का अर्थ यही किया जाए कि–

जिसकी काकिणियां अधिक हों, वह ऋणी होगा। यहां यह भी बतलाने योग्य बात है कि– **पीयूषधारा** कार ने इस स्थल पर यह भी स्पष्ट लिखा है कि– काकिणीसाधन के बारे में **नारद, वसिष्ठ, कश्यप** का मत कुछ और ही (" **स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा ......** " से सर्वथा भिन्न ही) है। उसने वहां " **साध्यवर्गं पुरः स्थाप्य.....**" को उद्धृत कर इसका उदाहरण देकर व्याख्या भी की है। यहां पर दो बातों पर आश्चर्य होता है– पहली बात तो यह है '**मुहूर्त्तचिन्तामणि**'कार और उनके भतीजे **पीयूषधारा** कार ने ऐसे वाक्य को प्रामाणिक मान लिया, जिसका मूल स्रोत ही ज्ञात नहीं है, और संहिताओं के वाक्य को ठुकरा दिया। दूसरी आश्चर्य की बात यह है कि **पीयूषधारा** कार को (शायद '**मुहूर्त्तचिन्तामणि**'कार को भी) यह ज्ञात नहीं था कि–" **स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा ......** " वाक्य में निर्दिष्ट काकिणीसंख्या जानने की गणितप्रक्रिया का मूल " **साध्यवर्गं पुरः स्थाप्य.....**" वाक्य ही है। **ध्यान रहे**– " **स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा ......** " में दी गई प्रक्रिया तो इसका सरलीकृत रूप ही है। नीचे दिए जा रहे साधारण बीजगणितीय विवेचन से यह बात पाठक सरलतापूर्वक समझ जाएंगे–

मान लें–

साध्य (नगर) की वर्गसंख्या = क

साधक (नगरवासी) की वर्गसंख्या = ख

नगरवासी का धन (काकिणी) जानने के लिए " **साध्यवर्गं पुरः स्थाप्य.....**" के अनुसार नगर की वर्गसंख्या को इकाई और नगरवासी की वर्गसंख्या को दहाई के स्थान पर रखकर उसे 8 से भाग देने पर प्राप्त संख्या

$$= \frac{10\text{ ख} + \text{क}}{8}$$

$$= \frac{(8+2)\text{ख} + \text{क}}{8}$$

$$= \frac{8\text{ख} + 2\text{ख} + \text{क}}{8}$$

क्योंकि, हमें 8 से विभाजित इस संख्या का केवल शेष ही लेना है, अतः '8 ख' को इसमें से निकाल देने पर प्राप्त संख्या $= \frac{2\text{ख}+\text{क}}{8}$ ....(i)

इसी प्रकार नगरवासी का ऋण (यानी नगर की काकिणीसंख्या) जानने के लिए " **व्यत्ययेनागतं शेषम्.....**" के अनुसार साधक (नगरवासी) की वर्गसंख्या को इकाई और साध्य (नगर) की वर्गसंख्या को दहाई के स्थान पर रखकर बनी संख्या को 8 का भाग देने पर पूर्ववत् प्राप्त संख्या $= \frac{2\text{क}+\text{ख}}{8}$ ....(ii)

देखिए– ये (i) और (ii) दोनों संख्याएं "**स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा.......**" में बतलाई संख्याएं ही तो हैं, जिनसे प्राप्त शेष संख्याएं क्रमशः नगरवासी और नगर की काकिणियों की संख्या बतलाती हैं।

इस स्पष्टीकरण का अभिप्राय यही है कि– "**स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा.......**" में बतलाई गई काकिणीसाधन की प्रक्रिया का मूल **नारद, वसिष्ठ, कश्यप** का यह वाक्य ही है। इस मूल संहितावाक्य के निर्णय को ठुकरा कर अन्य अज्ञात स्रोत के वाक्य को प्रामाणिकता कदापि नहीं दी जा सकती। किंच-काकिणी (कौड़ी) एक प्राचीन लघुतम मुद्रा है, जैसे कि आजकल पैसा। जिसके पास काकिणियां (पैसे) ज़्यादा हों उसे ऋणी और जिसके पास काकिणियां (पैसे) कम हों उसे धनी कैसे माना जा सकता है ? **स्पष्ट है**– कम काकिणियों वाले को सम्पन्न और अधिक काकिणियों वाले को दरिद्र बतलाने वाला "**स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा........**" वाक्य वैसे भी तर्कसंगत नहीं है।

समस्या– (i) मैंने कहीं पढ़ा है कि 22 मार्च, सन् 285 ई. को अयनांश 0अंश **00**कला **00**विकला **था। परन्तु जब कम्प्यूटर द्वारा मैंने देखा तो विक्रमी सम्वत् 342, शक संवत् 207, मंगल/बुधवार, 3/4 नवम्बर, सन् 285 ई. को रात्रि समय 00**घण्टा **00**मिनट **00**सैकण्ड **को अयनांश 0**अंश **00**कला **00**विकला **प्राप्त हुआ। यह अन्तर क्यों ? जबकि कम्प्यूटर का गणित और अन्य पञ्चांगादि का गणित आपस में बिल्कुल**

मेल खाता है।

(ii) 'खण्डखाद्य' गणित क्या है ? हमारे यहां नव सम्वत् पर कुछ ज्योतिषी इस गणित के द्वारा नववर्ष की ग्रहपरिषद् की स्थिति ज्ञात करते हैं। राजा, मन्त्री, चौधरी, सेनापति, पुरोहित, दूत, कटवाल आदि के पद निकाले जाते हैं। कृपया बताएं कि– यह कौनसा संहिताग्रंथ है, जिसमें यह गणित (खण्डखाद्य) मिलती है ? इस ग्रन्थ का क्या नाम है ?

श्री सुरेश शर्मा, त्राम्बली (कुल्लु)।

समाधान–(i) 22 मार्च 285 ई. को 0° 00′ 00″ अयनांश का निर्धारण P.A.C. Calcutta द्वारा किया गया है। इसे अन्तिम निर्धारण नहीं माना जाता। शून्य अयनांश वर्ष का निर्धारण बहुत ही विवादास्पद विषय है। विभिन्न सिद्धान्त–करणों द्वारा निर्दिष्ट, प्रयुक्त शून्य अयनांश के वर्षों में परस्पर सौ से भी अधिक का अन्तर है। एतद्विषयक असमाधेय विवाद-शान्त्यर्थ कुछ विद्वानों ने सहमति से यह निर्णय लिया है। Computer द्वारा इसे **'इदमित्थम्'** निर्धारित कर सकना कदापि सम्भव नहीं है। एतदर्थ की गई इस Programming में भी Programmer ने उपरोक्त (P.A.C. वाले) निर्धारण को दृष्टि में रखा है। यह उसका मौलिक चिन्तन नहीं है। इस विषय पर विशेष जानकारी के लिए हमारी पुस्तक **"शास्त्रीय पंचांगमीमांसा"** का **' अयनांश–माने वैमत्यम्'** प्रकरण देखना चाहिए।

(ii) **'खण्डखाद्य' ब्रह्मगुप्त** द्वारा (6ठी शती में) लिखित एक करणग्रन्थ है। **ब्रह्मगुप्त** ने अपने ग्रन्थ **' ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त '** की रचना के बाद इस ग्रन्थ की रचना की थी। इसकी गणित **आर्यभट** के **आर्यभटीय** से काफी मिलती है। आजकल इस करणग्रन्थ का पंचांगनिर्माण में प्रयोग नहीं होता, अतः यह किसी ग्रन्थागार में ही उपलब्ध हो सकता है।

समस्या– क्योंकि मूल/आश्लेषा का जन्म ससुर/सास के लिए अशुभ माना जाता है, अतः इनकी शान्ति यदि पहले नहीं की हो तो, क्या मूल–आश्लेषा में जन्म के दोष की शान्ति शादी से पूर्व भी की जा सकती है ?

पं. सुरेश कुमार,
ग्राम सुन्हाड़, डा. सौर, सोलन (हि.प्र.)।

समाधान– हां, की जा सकती है। पीयूषधाराकार का वचन है–

" एतच्च मूला, श्लेषा शान्तिकद्वयं विवाहे उपस्थिते श्वशुरस्य, श्वश्र्वाश्च सत्वे मूलाश्लेषयोरुत्पन्नयोरपि वर–वध्वोः तत्तदनिष्ट–निवृत्त्यर्थं विधेयम्।" अर्थात् – यदि सास–ससुर जीवित हों तो वर–वधू दोनों के मूल–आश्लेषा में जन्म–दोष की शान्ति, यदि पहले न की गई हो तो, विवाह से पूर्व की जा सकती है। इससे सास–ससुर का अनिष्ट निवृत्त हो जाएगा।

समस्या (i) फलित ग्रन्थों में राहु–केतु के स्वगृह, नीचोच्चादि में मतभेद पाये जाते हैं। पराशरीय मत सबसे भिन्न है। कृपया स्पष्ट करें– स्वगृही राहु कन्यास्थ होता है या कुम्भस्थ ? उच्चस्थ राहु वृष का होता है या मिथुन का ? मूलत्रिकोणीय राहु मिथुन का होता है या कर्क का ?

(ii) वर या वधू के नाम के आद्याक्षर 'ब' या 'व' हों तो वर्ग का ज्ञान कैसे करें ? नक्षत्र–राश्यादि ज्ञान हेतु 'ब–व' समान माने जाते हैं, तो वर्ग ज्ञान में 'ब–व' में भिन्नता क्यों ?

ब्रह्मदेव ठक्कुर, शास्त्री,
नौरंगाबाद, अलीगढ़ (U.P.)।

समाधान–(i) राहु–केतु मूलतः ग्रह नहीं हैं। ये चन्द्रकक्षा व क्रान्तिवृत्त के सम्पातबिन्दु हैं। प्राचीन जातक-संहिता-ग्रन्थों में इनका फलादेश तथा इनके मित्र, शत्रु आदि का निर्देश नहीं है। अत्यन्त परवर्ती कुछ

फलित ग्रन्थों में जो इनके मित्रादि बतलाए गए हैं, उनमें भी परस्पर अक्षम्य अन्तर है। **लघुपराशरी**कार भी इस विषय में अनिश्चय का शिकार है। अतः प्रामाणिकता से इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। मेरा मत है– इनके फलादेश का निर्णय पापी ग्रहों के जातकादि में बतलाए गए मित्र–शत्रु–निरपेक्ष सामान्य फलादेश के अनुसार ही करना चाहिए।

(ii) इन दोनों वर्णो के नक्षत्र, राशि तथा वर्गों का निर्णय स्वतन्त्ररूप से करना चाहिए। इनमें परस्पर कोई विरोध नहीं है। वर्ण और वर्ग– दोनों परस्पर निरपेक्ष हैं।

समस्या– वि. सं. 2070 में 'गुरु–शुक्र' के लोप–दर्शन की तिथियां ज्योतिर्गणित से गणना करने पर आपके 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' (2067 वि.) में प्रकाशित सारणियों से साधित तिथियों से अन्तरित आ रहीं हैं – ऐसा क्यों ? किञ्च– उस गणनाप्रक्रिया में आचार्य कल्याणदत्त जी के मतानुसार सर्वत्र स्पष्टर तिथिगण का ही मैंने प्रयोग किया है। क्या यह युक्तियुक्त है ?

(स्पष्टता के लिए मैं अपनी गणितप्रक्रिया साथ भेज रहा हूं। इसे परीक्षित कर देखें, क्या इसमें कोई त्रुटि है ?)

प्रमोदकुमार शर्मा,
फाज़िलाबाद, हिण्डौन सिटी(राज.)।

समाधान– आपकी यह गणितप्रक्रिया मैने सावधानी से देख ली है। इसमें ये दो त्रुटियां हैं–

(1) आपने सर्वत्र स्पष्टतर तिथिगण, जो सायन है, का ही प्रयोग किया है। **ध्यान रहे–** "**वर्षौघात् खाद्रिभिः भक्तात्**........................." से प्राप्त स्पष्टतर तिथिगण सायन है। इसका प्रयोग केवल "**त्रिभोनलग्नस्य व्यस्तक्रांतिः**" साधन में ही होना चाहिए।

(2) दूसरी त्रुटि यह है– आपने सन्ध्यारुण, दृक्कर्म, तिथिशुद्धि, तिथिगण के योग से प्राप्त लोप–दर्शन के मध्यम तिथिगण में वारगति (कोष्ठक–5 से प्राप्त) का संस्कार भी नहीं किया। **ध्यान रहे–** इस संस्कार के बिना लोप–दर्शन की तिथि स्पष्ट (यथार्थ) नहीं होती।

यदि आप इन दोनों त्रुटियों को सम्मार्जित कर गणित करेंगे तो साधित लोप–दर्शन की ये तिथियां **ज्योतिर्गणित** द्वारा साधित लोप–दर्शन की तिथियों से सामान्यतः अन्तरित नहीं होंगी।

ध्यान रहे– इस प्रक्रिया में स्पष्टतर (सायन) तिथिगण का प्रयोग केवल "**त्रिभोनलग्न–व्यस्तक्रान्तिसाधन**" में ही होगा, क्योंकि क्रान्ति सायनगणना से ही प्राप्त होती है। अन्यत्र इस स्पष्टतर तिथिगण का प्रयोग सर्वथा उपपत्तिविरुद्ध है। **ज्योतिर्गणित** देखिए– वहां व्यस्तक्रांति-साधन से अतिरिक्त सभी स्थलों पर स्पष्ट तिथिगण का ही प्रयोग बतलाया है। इस विषय में **आचार्य कल्याणदत्त** जी भ्रान्त हैं।

समस्या– आपके वि.सं. 2069 के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृष्ठ 111 पर 2 मई, 2012 को गुरु का पश्चिमास्त लिखा था, लेकिन मैंने गुरु को पश्चिम में 13 मई, 2012 तक आकाश में देखा है– ऐसा क्यों ?

बजरंग लाल पारीक,
P.O. काल, बीकानेर (राज.)।

समाधान– आप बुरी तरह भ्रान्त हैं। 13 मई, 2012 ई. को तो सायं गुरु सूर्यबिम्ब से पूरी तरह सटा हुआ था। यह इन दोनों ग्रहों के भोगांशों तथा क्रान्तियों से स्पष्ट है। इस दिन क्या, इससे कई दिन पूर्व भी पश्चिम में गुरु के दृश्य होने की बात सोची भी नहीं जा सकती। इन दिनों तो पश्चिम क्षितिज के आसन्न कोई अन्य ताराग्रह (मं. बु. शु. या श.) भी नहीं था, जिसे भ्रान्तिवश आप गुरु समझ बैठे हों।

ध्यान रहे– भारत वर्ष के प्रत्येक स्थल पर गुरु 2/3 मई को ही पश्चिम में लुप्त हो गया था। यह गणित बतलाती है।

समस्या– आपके एवं भारत के अन्य अनेक पंचांगों में विगत कुछ वर्षों से विजयादशमी से दूसरे दिन पापांकुशा एकादशी को **'भरतमिलाप'** लिखा जाने लगा है। लेकिन श्रीमद् वाल्मीकिरामायण में दिए एतत्सम्बन्धी घटनाचक्र से यह मेल नहीं खाता । यह इस पत्र के साथ मेरे द्वारा प्रेषित वाल्मीकिरामायणगत विवरण से स्पष्ट है। इस विरोधाभास का क्या समाधान है ?

मोहनलाल शास्त्री,
P.O. तत्तापानी, मण्डी(हि.प्र.)।

समाधान– मैंने आप द्वारा उद्धृत **श्री वाल्मीकि रामायण** का यह विस्तृत उद्धरण ध्यान से पढ़ा है। इस विवरणानुसार यह तो सिद्ध हो जाता है कि श्रीराम षष्ठी या सप्तमी के दिन ही भरत से मिले थे, लेकिन इन उद्धरणों से यह स्पष्ट नहीं हो रहा कि– वह षष्ठी या सप्तमी आश्विन शुक्लपक्ष की ही थी। क्योंकि – आप द्वारा उद्धृत इस प्रसंग में यह निर्दिष्ट नहीं है। हां, यदि **वादि-परितोषन्यायेन** यह मान लिया जाए कि– वे (श्रीराम) भरत को आश्विन शुक्ल की षष्ठी या सप्तमी को ही मिले थे, तब विजयादशमी (आश्विन शुक्ल दशमी) के दिन रावणवध सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि रावणवध के अनन्तर ही **श्रीराम** अयोध्या के लिए रवाना हुए थे। यहां आपके इस प्रतिपादन में यह स्पष्ट विरोध है। **किञ्च–** वैसे, भरतमिलाप आश्विन–शुक्ल एकादशी को हुआ था– इसका निर्देश किसी पुराण, संहिता या व्रत–पर्व-निर्णायक ग्रन्थ में हमने भी नहीं देखा है। यह पर्व तो, जैसा कि मुझे ज्ञात है, दिल्ली की ' **रामलीला कमेटी** ' की बुद्धि की उपज है। इसकी ही कृपा से कुछ दशाब्दी पूर्व ही इस पर्व को भारत के कुछ पंचांगकार मान्यता देने लगे हैं। इससे पूर्व यह पर्व भारत के किसी भी पंचांग में अंकित/प्रदर्शित नहीं होता था।

अपि च– विजयादशमी का रावणवध से कोई संबंध है– यह भी व्रत–पर्व–निर्णायक संहिता एवं निबंध–ग्रन्थों से स्पष्ट नहीं है।

समस्या (i) मेरा ऐसा विचार है कि गतवर्षीय त्योहारादि की समस्याओं के समाधान नूतन पंचांग में प्रकाशित करना व्यर्थ है, क्योंकि त्योहार का समय तो भ्रान्तिपूर्ण स्थिति में ही व्यतीत हो जाता है। बाद में तो उसका कोई औचित्य नहीं है ?

(ii) यदि किसी बालक का जन्म संक्रान्ति के दिन हो और सूर्य ने अपनी राशि परिवर्तित नहीं की हो, तो कुण्डली में प्रविष्टा एक लिखा जाएगा या नहीं। यदि प्रविष्टा एक लिखते हैं तो सूर्य अभी उस राशि में प्रविष्ट नहीं हुआ है, इस तरह सूर्य गतराशि में ही लगाया जाए या प्रविष्टा एक के स्थान पर क्या लिखा जाए ? कृपया समाधान करें ।

पं. डिकेराम शर्मा,मु. तरौर,
सेगली (मण्डी), हि.प्र.।

समाधान–(i) आपका यह परामर्श तर्कसंगत नहीं है। व्रत–पर्व आदि की समस्याएं भविष्य में भी उसीरूप में अनेकदा आवृत्त होती ही रहती हैं। अतः उनका स्पष्टीकरण आवश्यक है।

(ii) ये सौर प्रविष्टे लोकव्यवहारार्थ हैं। इन प्रविष्टों का सूर्यराशि के अंशों से स्थूल सम्बन्ध है। जिस वार में प्रातः, मध्याह्न, सायं आदि किसी भी समय सूर्यसंक्रान्ति घटित होती है, उसी दिन उस सौर मास का पहला प्रविष्टा मान लिया जाता है। इन प्रविष्टों से सूर्य के राशि अंशों का निर्णय नहीं किया जाता। ये तो अंग्रेज़ी तारीखों की भान्ति दैनिक व्यवहारार्थ हैं। **ध्यान रहे–** जन्मकुण्डली में तो सूर्य उसी राशि में स्थापित किया जाएगा, जिस राशि में वह गणित द्वारा प्राप्त है। स्पष्टता के लिए यूं समझिए– यदि जातक का जन्म सूर्यसंक्रान्ति वाले वार में सूर्यसंक्रान्ति से पहले हुआ है तो उसकी कुण्डली में सूर्य पहली (सूर्यसंक्रान्ति वाली राशि से पूर्ववर्त्ती) राशि में और यदि सूर्यसंक्रमण से बाद में हुआ है तो उसी (सूर्य जिस राशि में प्रविष्ट हुआ है) राशि में लिखा जाएगा। लेकिन व्यवहारार्थ वहां उस दिन (संक्रान्ति वाले दिन) उस

संक्रान्ति –संबंधी मास का पहला प्रविष्टा होगा।

समस्या–(i) आपने अपने **''श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्गम्''** सं. 2066 वि. के पृ. सं. 275 पर इष्टवर्षीय परमक्रान्ति ज्ञात करने का सूत्र दिया है। इस सूत्र में सन् 2000 ई. की दी गई परमक्रान्ति से आगे–पीछे के किसी वर्ष की परमक्रान्ति जानने की विधि दी गई है, साथ ही सन् 2009 ई. की परमक्रान्ति भी दी गई है। मैंने कईबार प्रयास किये, किन्तु अल्पज्ञतावश इस सूत्र से सन् 2009 ई. की वह परमक्रान्ति नहीं ला सका, जो आपने पञ्चाङ्ग में दे रखी है। अतः इस सूत्र को हल करते हुए सन् 2009 ई. की वही परमक्रान्ति निकालने की कृपा करें, जो पञ्चाङ्ग में दी गई है।

(ii) अभीष्ट अक्षांश-देशान्तर का किसी दिनांक–मास–सन् का साम्पातिक काल जानने का सूत्र क्या है ? एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने की अनुकम्पा करें।

(iii) कभी–कभी साम्पातिककाल 48 घण्टे से भी अधिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में क्या 48 घण्टे घटा देना सही है ?

(iv) सभी पञ्चाङ्गों में आपने साम्पातिककाल बनाते समय यह बात ध्यान में रखने को कही है कि ' यदि धन (+) चिन्ह वाले स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीय मध्यमकाल 24 घण्टे या इससे ज्यादा हो जाए तो इसमें 4 मिनट जोड़कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। प्रश्न है कि– ये 4 मिनट अतिरिक्त क्यों जोड़े जाते हैं ? क्या अगली दिनांक के 3 मिनट 56.55536352 सेकण्ड जोड़ने से तात्पर्य है ?

(v) उत्तरगोल के यावन्मात्र अक्षांशों के दशमभाव-साधन के लिए एक ही सारणी या त्रिकोणमितीय सूत्र का और इसी प्रकार दक्षिण गोल के सभी अक्षांशों के लिए एक ही सारणी या त्रिकोणमितीय सूत्र का प्रयोग किया जाता है, जबकि लग्नसाधन में अक्षांशों के अनुसार (भिन्न–भिन्न अक्षांशों के लिए भिन्न–भिन्न अक्षांशों की सारणी का प्रयोग) किया जाता है, ऐसा क्यों ?

नरेन्द्रप्रतापसिंह गौर,
पो. ऑ. दिलकुशा, लखनऊ।

समाधान–(i) सूर्य–परमक्रान्तिसाधक सूत्र के प्रयोग में आप कोई गलती कर रहे हैं। पुनः ध्यानपूर्वक इसका प्रयोग कीजिए। आप ठीक परिणाम पर पहुंचेंगे। अथवा इस सूत्र का प्रयोग करते हुए सन् 2009 ई. की सूर्यपरमक्रान्तिसाधन की प्रक्रिया यदि आप मुझे भेज सकें तो मैं उसमें आपकी त्रुटि को संकेतित कर सकूंगा।

(ii) साम्पातिक काल–साधक सूत्र विगत किसी वर्ष के **समस्या एवम् समाधान** स्तम्भ में बतला चुका हूं। यह अन्त्यन्त साधारण है, वहां देखें। **ध्यान दें**–साम्पातिक काल के साधन में अक्षांश का प्रयोग नहीं होता।

(iii) हां, 48 घण्टा घटा देने चाहिएं।

(iv) स्थानीय मध्यमकालिक तारीख यदि धन/ऋण स्टैंडर्ड अन्तर के संस्कार के कारण स्थानीय/देशीय स्टैं.टा. वाली तारीख से एक आगे/पीछे हो जाए तो साम्पातिककाल (सां. का.) की साधनप्रक्रिया में स्था. म. का. वाली तारीख को ही प्रयोग में लाया जाता है। ऐसा करने पर सां. का. लगभग 4 मिनट (यानी 3 मि. 56.55.....से.) आगे पीछे हो जाता है– यह स्पष्ट है।

(v) **लग्नसाधन** में अक्षांश निर्णायक है, जबकि **दशमसाधन** में स्थानीय याम्योत्तरवृत्त। क्रान्तिवृत्त एवं स्थानीय ऊर्ध्व याम्योत्तरवृत्त का सम्पातबिन्दु ही दशमलग्न है। स्पष्ट है– इस बिन्दु का अक्षांश से कोई लेना–देना नहीं है, जबकि लग्न का संबन्ध स्थानीय पूर्वक्षितिज एवं क्रान्तिवृत्तीय संपातबिन्दु से है, जो अक्षांशभेद से भिन्न–भिन्न होता है।

समस्या– क्या कारण है– स्पष्टग्रह की राशि इसके भोगांश में निर्दिष्ट राशि से अग्रिम मानी जाती है, जैसे– 2 रा. 10 अं. 20 क. भोगांश वाले ग्रह को वृष में नहीं, अपितु मिथुन में माना जाता है ?

पं.महिमादत्त शर्मा,
नालाबलोग (पंचकूला), हरि.

समाधान– क्रान्तिवृत्त (राशिवृत्त) का प्रारम्भबिन्दु (मेषारंभ–बिन्दु) 0 रा. 0 अं. 0 क. 0 वि. माना जाता है। इस बिन्दु से ग्रह जितने राशि–अंश–कला–विकला आगे (पूर्व की ओर) स्थित होता है, वही उसका भोगांश माना जाता है। स्पष्टता के लिए यूं समझिए– यदि कोई ग्रह क्रान्तिवृत्त के इस प्रारंभबिन्दु (0 रा. 0 अं. 0 क. 0 वि.) से 2 रा. 10 अं. 20 क. आगे (पूर्व में) स्थित है, तो समझना चाहिए कि– वह क्रान्तिवृत्त के प्रारम्भबिन्दु से 2 रा. 10 अं. 20 क. पूर्व की ओर है। यानी वह ग्रह क्रान्तिवृत्त के मूल बिन्दु से 2 रा. 10 अं. 20 क. पूर्व की ओर खिसक गया है। अर्थात् वह क्रान्ति–वृत्त के मूल बिन्दु से 2 राशि (वृषभ) पारकर तीसरी राशि (मिथुन) के 10 अं. 20 क. भी पार कर चुका है। इसका अर्थ स्पष्ट है– वह ग्रह तीसरी राशि (मिथुन) में विद्यमान है। दूसरे शब्दों में यूं समझिए ग्रहों के भोगांश यहां उनके भुक्त राश्यादि बतलाते हैं।

समस्या– यदि एक आशौच के मध्य दूसरा आशौच आ पड़े, तो वहां आशौचशुद्धि कब मानीं जाए ?

ओमप्रकाश शर्मा,
P.O. किंगल, शिमला (H.P.)।

समाधान– धर्मसिन्धुकार आशौच-संपात की इस समस्या का समाधान अपने ग्रन्थ **धर्मसिन्धु** में करते हैं। उसी के सामान्यतः उपयोगी भाग का हिन्दी-रूपान्तरण इस प्रकार है–

(1) 10 दिन के मृताशौच में दूसरा 10 दिन या इससे कम दिन का मृताशौच प्राप्त हो तो पहले प्रवृत्त हुए आशौच की समाप्ति पर दूसरा आशौच भी निवृत्त हो जाता है।

(2) 10 दिन के जननाशौच में 10 दिन या इससे कम दिन का दूसरा जननाशौच प्राप्त होने पर पहले आशौच की निवृत्ति पर ही दूसरे आशौच की भी निवृत्ति हो जाती है।

(3) 10 दिनों के मृताशौच में 10 दिन अथवा 3 दिनों वाला जननाशौच आ पड़े तो मृताशौच की समाप्ति पर ही जननाशौच की भी समाप्ति हो जाती है।

(4) 3 दिन वाले मृताशौच में 3 दिन अथवा इससे कम दिनों का मृताशौच अथवा 3 दिन का जननाशौच प्राप्त होने पर प्रथमाशौच के अन्त में शुद्धि हो जाती है।

(5) 3 दिन वाले जननाशौच में पुनः 3 दिनों का जननाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच–निवृत्ति पर ही दूसरे की भी निवृत्ति हो जाती है।

(6) $1\frac{1}{2}$ दिन वाले मृताशौच में $1\frac{1}{2}$ दिन और एक दिन वाला अथवा इनमें से कोई भी मृताशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच के अन्त में सब की शुद्धि हो जाती है।

इसके अतिरिक्त और भी आशौच स्थितियां बनती हैं। विस्तृत जानकारी के लिए धर्मसिन्धु आदि ग्रन्थों का परिशीलन करना चाहिए।

आयुनिर्णय

(गतवर्ष से क्रमागत)

गतवर्ष हमने 'आयुसाधन' प्रक्रिया का परिचयमात्र दिया था। यह विषय उलझा एवं विस्तारापेक्षी है। पाठकों को हम इसे सुगम शैली में स्पष्टता से समझाएंगे।

अब हम गणितागत 'आयुर्दाय' (आयु की वर्षादि अवधि) जानने के प्रमुख चार (जैमिनि, सत्याचार्य, मयादि एवं जातकपद्धतियों द्वारा प्रतिपादित) आयुर्दाय–साधनप्रकार बतलाएंगे। इन चार प्रकारों में से इस वर्ष जैमिनि एवं सत्याचार्य के केवल दो प्रकारों का ही विशकलन करेंगे, क्योंकि अधिकतर ज्योतिषी इन्हीं प्रकारों का आधिक्येन प्रयोग करते हैं। तृतीय एवम् चतुर्थ प्रकार वर्ष 2071 वि. में प्रस्तुत करेंगे। यहां चतुर्थ (जातक पद्धतियों द्वारा प्रतिपादित) प्रकार बहुत विस्तृत है। इसका दैवज्ञों द्वारा प्रयोग भी बहुत विरल है। इस चतुर्थ प्रकार का विशद प्रतिपादन आगामी वर्ष दिया जाएगा। तभी हम गणितागत एवं जातकोक्त (ग्रहयोगोत्पन्न) आयुसाधन के परिणामों की भी तुलनात्मक समीक्षा करेंगे।

जैमिनि–मतानुसार आयुनिर्णय

गतवर्ष हमने वराहमिहिर–सम्मत 'अंशायु–पद्धति' द्वारा आयु स्पष्ट करने का प्रकार बताया था। बहुत से ज्योतिषी जैमिनी–सूत्रोक्त आयु–साधनपद्धति को अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक समझते हैं, उनके लिए हम यहां इस पद्धति को भी नितान्त सरल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस पद्धति में काम आने वाली दो बातों का हम पहले ही स्पष्टीकरण कर देते हैं, जिन्हें हमारे अनेक पाठक जानते नहीं होंगे :–

(1) जैमिनि–सम्मत ग्रहदृष्टि–जैमिनि मुनि के मत में ग्रहों की पारस्परिक दृष्टि ज्योतिष में प्रचलित ग्रहदृष्टि से सर्वथा भिन्न है। पृष्ठ **291** पर "**जैमिनि–सम्मत ग्रहदृष्टि चक्र**" दिया गया है। इसमें बतलाया गया है कि– किस राशि में बैठा ग्रह किन–किन राशियों में बैठे ग्रहों को देखता है। यहां आयुसाधन में सर्वत्र इसी ग्रहदृष्टि को प्रयोग में लाया जाता है।

(2) होरा लग्न :–पृष्ठ **287** पर " होरा लग्नसाधन–सारणी " दी गई हैं। अपने इष्टकाल के घड़ी–पलों द्वारा इस सारणी से राशि–अंश–कलाएं लेकर, उन्हें सूर्योदयकालिक सूर्य की राशि–अंश–कलाओं में जोड़ दें। योग (जोड़) की राशि 12 या 12 से अधिक हो तो उसमें से 12 घटा दें। यह आपका '**होरा लग्न**' होगा। जैसे, मान लीजिए– हमारा इष्टकाल 44 घ. 45 प. और सूर्योदयकालिक स्पष्ट सूर्य 5 रा. 10 अं. 8 क. है। " होरा लग्नसाधन–सारणी " में 42 घ. 30 प. इष्टकाल के आगे 5 रा. 0 अं. लिखा है। इष्टकाल के शेष 2 घ. 15 प. के आगे इसी सारणी में 27 अं. 0 क. है। इन दोनों का योग 5 रा. 27 अं. 0 क. हुआ। इसे उदयकालिक सूर्य में जोड़ने पर 11 रा. 7 अं. 8 क. हमारा '**होरा लग्न**' बन गया।

आयुसाधन–पद्धति

जैमिनि के अनुसार आयु स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित सात पदार्थों की ज़रूरत होती है :–

(1) स्पष्ट लग्न, (2) होरा लग्न, (3) जन्मकुण्डली, (4) स्पष्ट लग्नेश, (5) स्पष्ट अष्टमेश, (6) स्पष्ट चन्द्र, (7) स्पष्ट शनि।

सबसे पहले **कोष्ठक (1)** द्वारा निम्नलिखित तीन प्रकार से आयु–परिमाण (दीर्घ, मध्य या अल्प आयु) का निर्णय करें।

(i) लग्न और होरा लग्न की राशियों से।

(ii) लग्नेश और अष्टमेश की राशियों से।

(iii) शनि और चन्द्र की राशियों से।

कोष्ठक (1) देखें, इसकी सबसे पहली पंक्ति और बाईं ओर के सबसे पहले कॉलम में बारह राशियां लिखी हैं। लग्न की राशि वृश्चिक और होरालग्न की राशि धनु हो तो कोष्ठक में वृश्चिक के आगे धनु के नीचे (अथवा धनु के आगे वृश्चिक के नीचे) देखा तो दीर्घ आयु (आयुपरिमाण) मिली। इसी प्रकार लग्नेश और अष्टमेश की राशियों तथा शनि और चन्द्र की राशियों से भी इस **कोष्ठक (1)** द्वारा आयु–परिमाण जान लें। यदि इन तीनों प्रकार से अथवा दो प्रकार से आयुपरिमाण एक ही आए तो उसे ही स्वीकार कर लें। **यदि तीनों प्रकार से आयु–परिमाण भिन्न–भिन्न आए तो आयु–परिमाण का निर्णय नीचे लिखे ढंग से किया जाए :–**

यदि चन्द्रमा लग्न या सप्तम में पड़ा हो तो शनि और चन्द्रमा की राशियों द्वारा जाने गए आयुपरिमाण को स्वीकार करना चाहिए। यदि चन्द्रमा लग्न और सप्तम के अलावा किसी अन्य भाव में स्थित हो तो लग्न और होरा लग्न की राशियों द्वारा जाने गए आयुपरिमाण को स्वीकार किया जाएगा।

जिस आयुपरिमाण को हमने स्वीकार किया है, वह जितने प्रकार से हमें प्राप्त है, उसके अनुसार **कोष्ठक (2)** से ' आयु की कक्षा ' ज्ञात कर लें। **उदाहरणार्थ, मान लीजिए–** यदि **कोष्ठक (1)** से हमें उपरोक्त तीनों प्रकार से मध्य आयु मिली हो तो **कोष्ठक (2)** में **"तीनों प्रकार से मध्यायु"** के आगे की आयु **'षष्ठा कक्षा'** मिलेगी।

आयुकारक– कोष्ठक (1) द्वारा ज्ञात, जिस आयुपरिमाण को हमने स्वीकार किया है, उसके निर्णय में जिस–जिस ग्रह (शनि, चन्द्र, अष्टमेश, लग्नेश) या लग्न, होरालग्न की राशि का प्रयोग हुआ हो, उस ग्रह, लग्न या होरालग्न को हम **'आयु–कारक'** कहते हैं। **उदाहरणार्थ –** यदि शनि और चन्द्र की राशियों से **कोष्ठक (1)** द्वारा प्राप्त आयुपरिमाण को हमने स्वीकार किया हो तो शनि और चन्द्र दोनों आयु कारक माने जाएंगे। यदि लग्न, होरालग्न से प्राप्त आयुपरिमाण को हमने स्वीकार किया हो तो लग्न और होरा लग्न को हम **'आयुकारक'** कहेंगे।

कक्षाह्रास :– यदि शनि आयुकारक हो और वह **मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक** राशि में हो तो नीचे लिखी स्थितियों में कक्षाह्रास [कोष्ठक (2) से प्राप्त कक्षा में कमी] हो जाएगी–

(i) शनि के साथ कोई अशुभ ग्रह न तो बैठा हो और न उस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि ही हो तो **'कक्षाह्रास'** होता है।

(ii) अशुभ ग्रह से युति या अशुभ ग्रह से दृष्टिसम्बन्ध होने पर भी यदि शनि के साथ कोई शुभ ग्रह बैठा हो या उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भी **'कक्षाह्रास'** होता है।

(iii) शनि का शुभ या अशुभ– दोनों प्रकार के ग्रहों से योग या दृष्टिसम्बन्ध बिल्कुल न हो तो **'कक्षाह्रास'** होता है।

(iv) शनि का केवल शुभग्रह से योग या दृष्टिसम्बन्ध हो तो **'कक्षाह्रास'** होता है।

यहां यह ध्यान रखें कि– 'कक्षाह्रास' के लिए शनि की मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक में स्थिति आवश्यक है।

कक्षाह्रास होने पर **कोष्ठक (2)** से प्राप्त आयु की कक्षा एक नीचे खिसक जाती है। **जैसे–** यदि नवम कक्षा हो तो वह अष्टम कक्षा, अष्टम कक्षा हो तो वह सप्तम कक्षा बन जाएगी।

कक्षा–वृद्धि– यदि गुरु आयुकारक हो और वह लग्न या सप्तम में स्थित हो एवं उसके साथ कोई क्रूर ग्रह न बैठा हो और न ही उसे देख ही रहा हो तो आयु की **'कक्षावृद्धि'** होती है। यदि आयुकारक गुरु लग्न और सप्तम के अलावा किसी अन्य भाव में पड़ा हो और उसके साथ केवल शुभग्रह बैठा हो या उसे केवल शुभ ग्रह देख रहा हो (क्रूर ग्रह का योग या दृष्टिसम्बन्ध न हो) तो भी **'कक्षावृद्धि'** होती है।

कक्षावृद्धि होने पर **कोष्ठक (2)** से प्राप्त आयुकक्षा एक ऊपर उठ जाती है। **जैसे–** पञ्चमकक्षा हो तो वह षष्ठकक्षा, षष्ठकक्षा हो तो वह सप्तमकक्षा बन जाएगी।

'कक्षाह्रास' और 'कक्षावृद्धि' का निर्णय करते समय ग्रहों की दृष्टि **जैमिनि** वाली ही लेनी होगी।

विशेष– यदि कोष्ठक (2) से आयु की कक्षा प्रथम मिली हो और शनि द्वारा कक्षाह्रास हो जाए तब यह समझना चाहिए कि– जातक के बहुत ही छोटी अवस्था में बालारिष्ट आदि से मृत्यु होने के योग हैं। ऐसी स्थिति में जैमिनि के अनुसार आयुसाधन यहीं समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार यदि **कोष्ठक (2)** से आयु की **'नवम कक्षा'** प्राप्त

होने पर गुरु द्वारा कक्षावृद्धि हो जाए तो समझना चाहिए कि– जातक की आयु 120 वर्ष (परमायु) से भी अधिक होगी। इस स्थिति में भी जैमिनि के अनुसार आयु के वर्ष–मास–दिन का साधन सम्भव नहीं है।

आयु के वर्ष–मास–दिन ज्ञात करना– जो ग्रह, लग्न या होरा–लग्न आयुकारक हों, उन सब की राशियों को छोड़कर उनकी केवल अंश–कलाओं को जोड़ें और आयुकारकों की संख्या (जितने आयुकारक हों, उतने) से भाग दें। जो अंश–कलाएं मिलें, उन्हें अलग नोट कर लें। कोष्ठक (3) में अपनी कक्षा वाले कॉलम से इन अंशों द्वारा वर्ष–मास–दिन और कलाओं द्वारा मास–दिन उठा लें। अंशों द्वारा प्राप्त वर्ष–मास–दिन में से कलाओं द्वारा प्राप्त मास–दिन घटा दें। बस, जातक की यही ' स्पष्ट आयु ' है।

यहां आयुकारकों की अंश–कलाओं का योग करते समय यह ध्यान रखें कि– यदि कोई ग्रह **कोष्ठक (1)** द्वारा आयु–परिमाण के निर्णय में आयुकारक के रूप में दो बार प्रयोग में आया हो तो, उसे एक आयुकारक न मानकर दो आयुकारक मानना होगा और तब उसकी अंश–कलाओं को दो बार (दोगुना करके) जोड़ना होगा। **स्पष्टता के लिए उदाहरण (1) और (2) देखें।**

अब यहां आगे दिए जा रहे इन तीनों उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए–

उदाहरण (1)– नीचे एक जातक की कुण्डली और लग्न आदि दिए गए हैं, इसकी आयु स्पष्ट करें ?

	रा.	अं.	क.
लग्न	3	10	20
होरालग्न	5	1	45
लग्नेश (चन्द्र)	7	17	30
अष्टमेश(शनि)	9	15	14
चन्द्र	7	17	30
शनि	9	15	14

जन्मकुण्डली

के. 5 गु. | 3 सू. | 6 मं. | बु. 4 शु. | 2 | 7 | 1 | 8 चं. | 10 श. | 12 | 9 | 11 रा.

कोष्ठक (1) द्वारा **शनि** की राशि मकर और **चन्द्र** की राशि वृश्चिक से मध्य (आयु), लग्नेश (चन्द्र) की राशि वृश्चिक और अष्टमेश (शनि) की राशि मकर से भी मध्य तथा लग्न की राशि कर्क और होरा लग्न की राशि कन्या से अल्प आयु परिमाण मिला। क्योंकि, यहां पहले दो प्रकारों से मध्य आयुपरिमाण मिला है, अतः इसी को हमने स्वीकार किया।

कोष्ठक (2) में " **दो प्रकार से मध्यायु** " के आगे आयु की पंचम कक्षा मिली। यहां शनि आयुकारक तो अवश्य है, परन्तु वह मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक में नहीं है; अतः **'कक्षाह्रास'** का प्रश्न ही नहीं उठता। यहां गुरु आयुकारक नहीं है। अतः कक्षावृद्धि का भी कोई प्रश्न नहीं है। अतः यहां कक्षा पंचम ही रही।

यहां आयुकारक चार हैं– (1) लग्नेश (चन्द्र), (2) अष्टमेश (शनि), (3) शनि, (4) चन्द्र।

(ध्यान दें– यहां चन्द्रमा दो प्रकार से आयुकारक है– (1) लग्नेश के रूप में और (2) केवल चन्द्रमा के रूप में। इसी प्रकार यहां शनि भी दो प्रकार से आयुकारक है– (1) अष्टमेश के रूप में और (2) केवल शनि के रूप में। इसलिए यहां चन्द्र और शनि की अंश–कलाओं को दोहरा–दोहरा जोड़ना होगा।) इन चारों आयुकारकों की राशियों को छोड़कर इनकी अंश–कलाओं का योग किया।

	अंश	कला
लग्नेश(चन्द्र)	17	30
अष्टमेश (शनि)	15	14
चन्द्र	17	30
शनि	15	14
योग	**65**	**28**

इस योग को आयुकारकों की संख्या 4 से भाग देने पर 16 अं. 22 क. मिली। **कोष्ठक (3)** के **"पंचम कक्षा"** वाले कॉलम में 16 अंश के आगे 52 वर्ष 9 मास 18 दिन और 22 कला के आगे 5 मास 8 दिन मिले। 52 वर्ष 9 मास 18 दिन में से 5 मास 8 दिन घटा देने पर **52 वर्ष 4 मास 10 दिन जातक की आयु स्पष्ट हो गई। अर्थात् यह जातक 52 वर्ष 4 मास 10 दिन जीएगा।**

उदाहरण (2)– नीचे लिखी जन्मकुण्डली और लग्न आदि वाले जातक की आयु स्पष्ट करेंगे ?

	रा.	अं.	क.
लग्न	9	5	15
होरा लग्न	8	24	24
लग्नेश (शनि)	8	10	4
अष्टमेश(सूर्य)	10	5	17
चन्द्र	6	12	32
शनि	8	10	4

जन्म-कुण्डली

सू.11 शु. 9 श. 12 बु.रा. 10 गु. 8 1 मं. 7 चं. 2 4 6 के. 3 5

कोष्ठक (1) द्वारा लग्न की राशि मकर और होरा लग्न की राशि धनु से अल्प, लग्नेश शनि की राशि धनु और अष्टमेश सूर्य की राशि कुम्भ से दीर्घ तथा चन्द्र की राशि तुला और शनि की राशि धनु से अल्प आयु-परिमाण मिला। यहां पहले और तीसरे (दो) प्रकारों से अल्प आयु परिमाण मिला है, अतः **'अल्पायु'** को ही हम स्वीकार करेंगे।

कोष्ठक (2) में **"दो प्रकार से अल्पायु"** के आगे आयु की **" द्वितीय कक्षा "** मिली।

यहां आयुकारक शनि धनु में है, अतः कक्षाह्रास नहीं हो सकता। गुरु लग्न में बैठा है। इसके साथ कोई क्रूर ग्रह नहीं है, इस पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। अतः यहां कक्षावृद्धि हो सकती थी, लेकिन गुरु यहां आयुकारक नहीं है, अतः कक्षावृद्धि नहीं बनी।

यहां चार आयुकारक हैं– (1) लग्न, (2) होरा लग्न, (3) चन्द्र, (4) शनि। इनकी अंश–कलाओं के योग (52 अं. 15 क.) को आयुकारक की संख्या 4 से भाग देने पर 13 अं. 4 क. मिली। **कोष्ठक (3)** के द्वितीय कक्षा वाले कॉलम में 13 अंश के आगे 22 वर्ष 1 मास और 18 दिन और 4 कला के आगे 0 मास 26 दिन मिले। 22 वर्ष 1 मास 18 दिन में से 0 मास 26 दिन घटाने पर **22 व. 0 मा. 22 दिन जातक की आयु मालूम हो गई।**

उदाहरण (3)– निम्नलिखित कुण्डली वाले जातक की आयुसाधन कीजिए ?

	रा.	अं.	क.
लग्न	10	6	25
होरा लग्न	7	25	10
लग्नेश (शनि)	3	20	30
अष्टमेश(बुध)	3	26	10
चन्द्र	10	1	30
शनि	3	20	30

जन्म-कुण्डली

12 10 के. 1 शु.मं. 11 चं. 9 2 गु. 8 3 सू. 5 7 रा.बु. 4 श. 6

कोष्ठक (1) द्वारा लग्न और होरा लग्न की राशियों (कुम्भ और वृश्चिक) से अल्प, लग्नेश (शनि) और अष्टमेश (बुध) की राशियों (कर्क और कर्क) से दीर्घ एवं चन्द्र और शनि की राशियों (कुम्भ और कर्क) से मध्य आयु परिमाण मिला। यहां तीनों प्रकारों से भिन्न–भिन्न आयुपरिमाण प्राप्त हुए हैं। क्योंकि, यहां चन्द्रमा लग्न में है, अतः शनि और चन्द्र द्वारा प्राप्त आयुपरिमाण **' मध्यायु '** को ही स्वीकार किया जाएगा।

कोष्ठक (2) में **' एक ही प्रकार से मध्यायु '** के आगे **' चतुर्थ कक्षा '** मिली।

कुण्डली में शनि कर्क में है। इसके साथ क्रूर ग्रह राहु है और इस पर शुभ ग्रह चन्द्रमा और गुरु की दृष्टि भी है। अतः कक्षाह्रास होगा। **कोष्ठक (2) से चतुर्थ कक्षा** प्राप्त हुई थी, कक्षाह्रास के कारण अब यह **'तृतीय कक्षा'** बन गई।

यहां पर आयुकारक केवल दो (चन्द्र और शनि) हैं। इनकी अंश–कलाओं के योग (22 अं. 0 क.) को आयुकारकों की संख्या 2 से भाग देने पर 11 अं. 0 क. प्राप्त हुई। कोष्ठक (3) के तृतीय कक्षा वाले कॉलम में **11 अंश के आगे 28 वर्ष 3 मास 6 दिन प्राप्त हुए। इस जातक की आयु सिर्फ इतनी ही होगी।**

होरा लग्नसाधन सारणी

इष्टकाल के ↓		इष्ट के शेष↓		इष्ट के शेष↓		इष्ट के शेष↓		इष्ट के शेष↓		इष्ट के शेष↓		इष्ट के शेष↓	
घ. प.	रा. अं.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.
0 00	0 00	0 01	0 12	0 26	5 12	0 51	10 12	1 16	15 12	1 41	20 12	2 06	25 12
2 30	1 00	0 02	0 24	0 27	5 24	0 52	10 24	1 17	15 24	1 42	20 24	2 07	25 24
5 00	2 00	0 03	0 36	0 28	5 36	0 53	10 36	1 18	15 36	1 43	20 36	2 08	25 36
7 30	3 00	0 04	0 48	0 29	5 48	0 54	10 48	1 19	15 48	1 44	20 48	2 09	25 48
10 00	4 00	0 05	1 00	0 30	6 00	0 55	11 00	1 20	16 00	1 45	21 00	2 10	26 00
12 30	5 00	0 06	1 12	0 31	6 12	0 56	11 12	1 21	16 12	1 46	21 12	2 11	26 12
15 00	6 00	0 07	1 24	0 32	6 24	0 57	11 24	1 22	16 24	1 47	21 24	2 12	26 24
17 30	7 00	0 08	1 36	0 33	6 36	0 58	11 36	1 23	16 36	1 48	21 36	2 13	26 36
20 00	8 00	0 09	1 48	0 34	6 48	0 59	11 48	1 24	16 48	1 49	21 48	2 14	26 48
23 30	9 00	0 10	2 00	0 35	7 00	1 00	12 00	1 25	17 00	1 50	22 00	2 15	27 00
25 00	10 00	0 11	2 12	0 36	7 12	1 01	12 12	1 26	17 12	1 51	22 12	2 16	27 12
27 30	11 00	0 12	2 24	0 37	7 24	1 02	12 24	1 27	17 24	1 52	22 24	2 17	27 24
30 00	0 00	0 13	2 36	0 38	7 36	1 03	12 36	1 28	17 36	1 53	22 36	2 18	27 36
32 30	1 00	0 14	2 48	0 39	7 48	1 04	12 48	1 29	17 48	1 54	22 48	2 19	27 48
35 00	2 00	0 15	3 00	0 40	8 00	1 05	13 00	1 30	18 00	1 55	23 00	2 20	28 00
37 30	3 00	0 16	3 12	0 41	8 12	1 06	13 12	1 31	18 12	1 56	23 12	2 21	28 12
40 00	4 00	0 17	3 24	0 42	8 24	1 07	13 24	1 32	18 24	1 57	23 24	2 22	28 24
42 30	5 00	0 18	3 36	0 43	8 36	1 08	13 36	1 33	18 36	1 58	23 36	2 23	28 36
45 00	6 00	0 19	3 48	0 44	8 48	1 09	13 48	1 34	18 48	1 59	23 48	2 24	28 48
47 30	7 00	0 20	4 00	0 45	9 00	1 10	14 00	1 35	19 00	2 00	24 00	2 25	29 00
50 00	8 00	0 21	4 12	0 46	9 12	1 11	14 12	1 36	19 12	2 01	24 12	2 26	29 12
52 30	9 00	0 22	4 24	0 47	9 24	1 12	14 24	1 37	19 24	2 02	24 24	2 27	29 24
55 00	10 00	0 23	4 36	0 48	9 36	1 13	14 36	1 38	19 36	2 03	24 36	2 28	29 36
57 30	11 00	0 24	4 48	0 49	9 48	1 14	14 48	1 39	19 48	2 04	24 48	2 29	29 48
60 00	0 00	0 25	5 00	0 50	10 00	1 15	15 00	1 40	20 00	2 05	25 00	2 30	30 00

कोष्ठक (1)

राशि→ ↓	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
वृष	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
मिथुन	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
कर्क	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
सिंह	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
कन्या	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
तुला	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
वृश्चिक	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
धनु	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
मकर	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
कुम्भ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
मीन	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य

कोष्ठक (2)

कितने प्रकार से कौन सी आयु मिली है	आयु की कक्षा	कितने प्रकार से कौन सी आयु मिली है	आयु की कक्षा
तीनों प्रकार से दीर्घायु	नवम कक्षा	एक प्रकार से मध्यायु	चतुर्थ कक्षा
दो प्रकार से दीर्घायु	अष्टम कक्षा	एक प्रकार से अल्पायु	तृतीय कक्षा
एक प्रकार से दीर्घायु	सप्तम कक्षा	दो प्रकार से अल्पायु	द्वितीय कक्षा
तीनों प्रकार से मध्यायु	षष्ठ कक्षा	तीनों प्रकार से अल्पायु	प्रथम कक्षा
दो प्रकार से मध्यायु	पञ्चम कक्षा	-- --	-- --

कोष्ठक (3) [प्रथम भाग]

प्रथम कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
0	0 00 00	1	0 06	31	6 18
1	30 11 06	2	0 13	32	6 25
2	29 10 12	3	0 19	33	7 01
3	28 09 18	4	0 26	34	7 08
4	27 08 24	5	1 02	35	7 14
5	26 08 00	6	1 09	36	7 20
6	25 07 06	7	1 15	37	7 27
7	24 06 12	8	1 21	38	8 03
8	23 05 18	9	1 28	39	8 10
9	22 04 24	10	2 04	40	8 16
10	21 04 00	11	2 10	41	8 22
11	20 03 06	12	2 17	42	8 29
12	19 02 12	13	2 23	43	9 05
13	18 01 18	14	3 00	44	9 12
14	17 00 24	15	3 06	45	9 18
15	16 00 00	16	3 12	46	9 24
16	14 11 06	17	3 19	47	10 01
17	13 10 22	18	3 25	48	10 07
18	12 04 18	19	4 02	49	10 14
19	11 08 24	20	4 08	50	10 20
20	10 08 00	21	4 14	51	10 26
21	9 07 06	22	4 21	52	11 03
22	8 06 12	23	4 27	53	11 09
23	7 05 18	24	5 04	54	11 16
24	6 04 24	25	5 10	55	11 22
25	5 04 00	26	5 16	56	11 28
26	4 03 06	27	5 23	57	12 05
27	3 02 12	28	5 29	58	12 11
28	2 01 18	29	6 06	59	12 18
29	1 00 24	30	6 12	60	12 24

द्वितीय कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
0	4 00 00	1	0 06	31	6 18
1	34 11 06	2	0 13	32	6 25
2	33 10 12	3	0 19	33	7 01
3	32 09 18	4	0 26	34	7 08
4	31 08 24	5	1 02	35	7 14
5	30 08 00	6	1 09	36	7 20
6	29 07 06	7	1 15	37	7 27
7	28 06 12	8	1 21	38	8 03
8	27 05 18	9	1 28	39	8 10
9	26 04 24	10	2 04	40	8 16
10	25 04 00	11	2 10	41	8 22
11	24 03 06	12	2 17	42	8 29
12	23 02 12	13	2 23	43	9 05
13	22 01 18	14	3 00	44	9 12
14	21 00 24	15	3 06	45	9 18
15	20 00 00	16	3 12	46	9 24
16	18 11 06	17	3 19	47	10 01
17	17 10 12	18	3 25	48	10 07
18	16 09 18	19	4 02	49	10 14
19	15 08 24	20	4 08	50	10 20
20	14 08 00	21	4 14	51	10 26
21	13 07 06	22	4 21	52	11 03
22	12 06 12	23	4 27	53	11 09
23	11 05 18	24	5 04	54	11 16
24	10 04 24	25	5 10	55	11 22
25	9 04 00	26	5 16	56	11 28
26	8 03 06	27	5 23	57	12 05
27	7 02 12	28	5 29	58	12 11
28	6 01 18	29	6 06	59	12 18
29	5 00 24	30	6 12	60	12 24

तृतीय कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
0	8 00 00	1	0 06	31	6 18
1	38 11 06	2	0 13	32	6 25
2	37 10 12	3	0 19	33	7 01
3	36 09 18	4	0 26	34	7 08
4	35 08 24	5	1 02	35	7 14
5	34 08 00	6	1 09	36	7 20
6	33 07 06	7	1 15	37	7 27
7	32 06 12	8	1 21	38	8 03
8	31 05 18	9	1 28	39	8 10
9	30 04 24	10	2 04	40	8 16
10	29 04 00	11	2 10	41	8 22
11	28 03 06	12	2 17	42	8 29
12	27 02 12	13	2 23	43	9 05
13	26 01 18	14	3 00	44	9 12
14	25 00 24	15	3 06	45	9 18
15	24 00 00	16	3 12	46	9 24
16	22 11 06	17	3 19	47	10 01
17	21 10 12	18	3 25	48	10 07
18	20 09 18	19	4 02	49	10 14
19	19 08 24	20	4 08	50	10 20
20	18 08 00	21	4 14	51	10 26
21	17 07 06	22	4 21	52	11 03
22	16 06 12	23	4 27	53	11 09
23	15 05 18	24	5 04	54	11 16
24	14 04 24	25	5 10	55	11 22
25	13 04 00	26	5 16	56	11 28
26	12 03 06	27	5 23	57	12 05
27	11 02 12	28	5 29	58	12 11
28	10 01 18	29	6 06	59	12 18
29	9 00 24	30	6 12	60	12 24

कोष्ठक (3) [द्वितीय भाग]

चतुर्थ कक्षा

अंश	व.	मा.	दि.	कला	मा.	दि.	कला	मा.	दि.
0	28	00	00	1	0	07	31	7	13
1	62	09	18	2	0	14	32	7	20
2	61	07	06	3	0	22	33	7	28
3	60	04	24	4	0	29	34	8	05
4	59	02	12	5	1	06	35	8	12
5	58	00	00	6	1	13	36	8	19
6	56	09	18	7	1	20	37	8	26
7	55	07	06	8	1	28	38	9	04
8	54	04	24	9	2	05	39	9	11
9	53	02	12	10	2	12	40	9	18
10	52	00	00	11	2	19	41	9	25
11	50	09	18	12	2	26	42	10	02
12	49	07	06	13	3	04	43	10	10
13	48	04	24	14	3	11	44	10	17
14	47	02	12	15	3	18	45	10	24
15	46	00	00	16	3	25	46	11	01
16	44	09	18	17	4	02	47	11	08
17	43	07	06	18	4	10	48	11	16
18	42	04	24	19	4	17	49	11	23
19	41	02	12	20	4	24	50	12	00
20	40	00	00	21	5	01	51	12	07
21	38	09	18	22	5	08	52	12	14
22	37	07	06	23	5	16	53	12	22
23	36	04	24	24	5	23	54	12	29
24	35	02	12	25	6	00	55	13	06
25	34	00	00	26	6	07	56	13	13
26	32	09	18	27	6	14	57	13	20
27	31	07	06	28	6	22	58	13	28
28	30	04	24	29	6	29	59	14	05
29	29	02	12	30	7	06	60	14	12

पंचम कक्षा

अंश	व.	मा.	दि.	कला	मा.	दि.	कला	मा.	दि.
0	36	00	00	1	0	07	31	7	13
1	70	09	18	2	0	14	32	7	20
2	69	07	06	3	0	22	33	7	28
3	68	04	24	4	0	29	34	8	05
4	67	02	12	5	1	06	35	8	12
5	66	00	00	6	1	13	36	8	19
6	64	09	18	7	1	20	37	8	26
7	63	07	06	8	1	28	38	9	04
8	62	04	24	9	2	05	39	9	11
9	61	02	12	10	2	12	40	9	18
10	60	00	00	11	2	19	41	9	25
11	58	09	18	12	2	26	42	10	02
12	57	07	06	13	3	04	43	10	10
13	56	04	24	14	3	11	44	10	17
14	55	02	12	15	3	18	45	10	24
15	54	00	00	16	3	25	46	11	01
16	52	09	18	17	4	02	47	11	08
17	51	07	06	18	4	10	48	11	16
18	50	04	24	19	4	17	49	11	23
19	49	02	12	20	4	24	50	12	00
20	48	00	00	21	5	01	51	12	07
21	46	09	18	22	5	08	52	12	14
22	45	07	06	23	5	16	53	12	22
23	44	04	24	24	5	23	54	12	29
24	43	02	12	25	6	00	55	13	06
25	42	00	00	26	6	07	56	13	13
26	40	09	18	27	6	14	57	13	20
27	39	07	06	28	6	22	58	13	28
28	38	04	24	29	6	29	59	14	05
29	37	02	12	30	7	06	60	14	12

षष्ठ कक्षा

अंश	व.	मा.	दि.	कला	मा.	दि.	कला	मा.	दि.
0	44	00	00	1	0	07	31	7	13
1	78	09	18	2	0	14	32	7	20
2	77	07	06	3	0	22	33	7	28
3	76	04	24	4	0	29	34	8	05
4	75	02	12	5	1	06	35	8	12
5	74	00	00	6	1	13	36	8	19
6	72	09	18	7	1	20	37	8	26
7	71	07	06	8	1	28	38	9	04
8	70	04	24	9	2	05	39	9	11
9	69	02	12	10	2	12	40	9	18
10	68	00	00	11	2	19	41	9	25
11	66	09	18	12	2	26	42	10	02
12	65	07	06	13	3	04	43	10	10
13	64	04	24	14	3	11	44	10	17
14	63	02	12	15	3	18	45	10	24
15	62	00	00	16	3	25	46	11	01
16	60	09	18	17	4	02	47	11	08
17	59	07	06	18	4	10	48	11	16
18	58	04	24	19	4	17	49	11	23
19	57	02	12	20	4	24	50	12	00
20	56	00	00	21	5	01	51	12	07
21	54	09	18	22	5	08	52	12	14
22	53	07	06	23	5	16	53	12	22
23	52	04	24	24	5	23	54	12	29
24	51	02	12	25	6	00	55	13	06
25	50	00	00	26	6	07	56	13	13
26	48	09	18	27	6	14	57	13	20
27	47	07	06	28	6	22	58	13	28
28	46	04	24	29	6	29	59	14	05
29	45	02	12	30	7	06	60	14	12

कोष्ठक (3) [तृतीय भाग]

सप्तम कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
0	56 00 00	1	0 08	31	8 08
1	94 08 00	2	0 16	32	8 16
2	93 04 00	3	0 24	33	8 24
3	92 00 00	4	1 02	34	9 02
4	90 08 00	5	1 10	35	9 10
5	89 04 00	6	1 18	36	9 18
6	88 00 00	7	1 26	37	9 26
7	86 08 00	8	2 04	38	10 04
8	85 04 00	9	2 12	39	10 12
9	84 00 00	10	2 20	40	10 20
10	82 08 00	11	2 28	41	10 28
11	81 04 00	12	3 06	42	11 06
12	80 00 00	13	3 14	43	11 14
13	78 08 00	14	3 22	44	11 22
14	77 04 00	15	4 00	45	12 00
15	76 00 00	16	4 08	46	12 08
16	74 08 00	17	4 16	47	12 16
17	73 04 00	18	4 24	48	12 24
18	72 00 00	19	5 02	49	13 02
19	70 08 00	20	5 10	50	13 10
20	69 04 00	21	5 18	51	13 18
21	68 00 00	22	5 26	52	13 26
22	66 08 00	23	6 04	53	14 04
23	65 04 00	24	6 12	54	14 12
24	64 00 00	25	6 20	55	14 20
25	62 08 00	26	6 28	56	14 28
26	61 04 00	27	7 06	57	15 06
27	60 00 00	28	7 14	58	15 14
28	58 08 00	29	7 22	59	15 22
29	57 04 00	30	8 00	60	16 00

अष्टम कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
0	68 00 00	1	0 08	31	8 08
1	106 08 00	2	0 16	32	8 16
2	105 04 00	3	0 24	33	8 24
3	104 00 00	4	1 02	34	9 02
4	102 08 00	5	1 10	35	9 10
5	101 04 00	6	1 18	36	9 18
6	100 00 00	7	1 26	37	9 26
7	98 08 00	8	2 04	38	10 04
8	97 04 00	9	2 12	39	10 12
9	96 00 00	10	2 20	40	10 20
10	94 08 00	11	2 28	41	10 28
11	93 04 00	12	3 06	42	11 06
12	92 00 00	13	3 14	43	11 14
13	90 08 00	14	3 22	44	11 22
14	89 04 00	15	4 00	45	12 00
15	88 00 00	16	4 08	46	12 08
16	86 08 00	17	4 16	47	12 16
17	85 04 00	18	4 24	48	12 24
18	84 00 00	19	5 02	49	13 02
19	82 08 00	20	5 10	50	13 10
20	81 04 00	21	5 18	51	13 18
21	80 00 00	22	5 26	52	13 26
22	78 08 00	23	6 04	53	14 04
23	77 04 00	24	6 12	54	14 12
24	75 00 00	25	6 20	55	14 20
25	74 08 00	26	6 23	56	14 28
26	73 04 00	27	7 06	57	15 06
27	72 00 00	28	7 14	58	15 14
28	70 08 00	29	7 22	59	15 22
29	69 04 00	30	8 00	60	16 00

नवम कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
0	80 00 00	1	0 08	31	8 08
1	118 08 00	2	0 16	32	8 16
2	117 04 00	3	0 24	33	8 24
3	116 00 00	4	1 02	34	9 02
4	114 08 00	5	1 10	35	9 10
5	113 04 00	6	1 18	36	9 18
6	112 00 00	7	1 26	37	9 26
7	110 08 00	8	2 04	38	10 04
8	109 04 00	9	2 12	39	10 12
9	108 00 00	10	2 20	40	10 20
10	106 08 00	11	2 28	41	10 28
11	105 04 00	12	3 06	42	11 06
12	104 00 00	13	3 14	43	11 14
13	102 08 00	14	3 22	44	11 22
14	101 04 00	15	4 00	45	12 00
15	100 00 00	16	4 08	46	12 08
16	98 08 00	17	4 16	47	12 16
17	97 04 00	18	4 24	48	12 24
18	96 00 00	19	5 02	49	13 02
19	94 08 00	20	5 10	50	13 10
20	93 04 00	21	5 18	51	13 18
21	92 00 00	22	5 26	52	13 26
22	90 08 00	23	6 04	53	14 04
23	89 04 00	24	6 12	54	14 12
24	88 00 00	25	6 20	55	14 20
25	86 08 00	26	6 28	56	14 28
26	85 04 00	27	7 06	57	15 06
27	84 00 00	28	7 14	58	15 14
28	82 08 00	29	7 22	59	15 22
29	81 04 00	30	8 00	60	16 00

जैमिनि–सम्मत ग्रहदृष्टि–चक्र

इस राशि में स्थित ग्रह	इन राशियों में स्थित ग्रहों को देखता है	इस राशि में स्थित ग्रह	इन राशियों में स्थित ग्रहों को देखता है
मेष	सिंह, वृश्चिक, कुम्भ	तुला	वृष, सिंह, कुम्भ
वृष	कर्क, तुला, मकर	वृश्चिक	मेष मकर, कर्क
मिथुन	कन्या, धनु, मीन	धनु	मीन, मिथुन, कन्या
कर्क	वृश्चिक, कुम्भ, वृष	मकर	सिंह, वृश्चिक, वृष
सिंह	मेष, तुला, मकर	कुम्भ	कर्क, तुला, मेष
कन्या	धनु; मीन, मिथुन	मीन	मिथुन, कन्या, धनु

जैमिनि मत से ग्रहदृष्टि :– ऊपर बने चक्र से ज्ञात होता है कि– मेष में बैठा ग्रह सिंह, वृश्चिक और कुम्भ में बैठे ग्रहों को देखेगा। हम इसे इस प्रकार भी कह सकते है कि– सिंह, वृश्चिक और कुम्भ में बैठे ग्रह ही मेष में बैठे ग्रह को देखेंगे, दूसरे नहीं। इसी प्रकार दूसरी राशियों के लिए भी समझ लेना चाहिए।

सत्याचार्य के मत से आयुनिर्णय

इस पद्धति के अनुसार आयुसाधन करने के लिए राहु–केतु को छोड़कर शेष सूर्यादि 7 ग्रहों तथा लग्न की राशि–अंश–कलाओं और जन्मकुण्डली की आवश्यकता होती है। सबसे पहले सूर्यादि ग्रहों की राश्यादि से सभी ग्रहों की आयु (अंशायु) और लग्न की राश्यादि से लग्न की आयु (अंशायु) जान लीजिए। ग्रहों एवम् लग्न की अंशायु जानने का प्रकार यह है–

ग्रह के भोगांश (स्पष्ट ग्रह के राश्यादि) की कलाएं बनाकर, उन्हें 200 से भाग देने पर लब्धि ग्रह की अंशायु के वर्ष होंगे। शेष कलाओं को 12 से गुणा कर 200 से भाग देने पर लब्धि अंशायु के मास और शेष को 30 से गुणा कर पुनः 200 से भाग देने पर लब्धि अंशायु के दिन होंगे। **स्पष्टता के लिए नीचे दिया गया उदाहरण देखिए–**

मान लें, स्पष्ट सूर्य 6रा. 11अं. 30क. है। इसकी कलाएं 11490 हुईं। इन्हें 200 से भाग देने पर लब्धि 57 सूर्य की अंशायु के वर्ष हैं। शेष 90 को 12 से गुणा कर 200 से भाग देने पर प्राप्त लब्धि 5 अंशायु के मास हैं। शेष 80 को 30 से गुणा कर पुनः 200 से भाग देने पर लब्धि 12 मिली। ये अंशायु के दिन हैं। इस प्रकार यहां सूर्य की आंशायु 57 वर्ष 5 मास 12 दिन हुई।

ध्यान रहे– यदि ग्रह के कलात्मक भोगांश को 200 से भाग देने पर प्राप्त अंशायु के वर्ष 12 या इससे अधिक हों तो उन्हें 12 से विभाजित कर शेष वर्षों को ही स्वीकार किया जाता है। उपरोक्त उदाहरण में सूर्य के कलात्मक भोगांश (11490) को 200 से विभाजित करने पर अंशायुवर्ष 57 मिले हैं। अतः इन्हें 12 से विभाजित कर शेष 9 वर्ष बचे। इस तरह यहां सूर्य की अंशायु वस्तुतः 9 वर्ष 5 मास 12 दिन होगी।

इसी प्रकार जातक के जन्मकालिक सूर्यादि सातों ग्रहों के भोगांशों से उनकी अंशायु अलग–अलग ज्ञात कर लें।

लग्न की अंशायु जानने के ये तीन प्रमुख प्रकार हैं–

(1) लग्न की अंशायुसाधन का प्रथम प्रकार :– स्पष्ट लग्न की राशि को छोड़कर जो अंश–कलाएं बचती हैं, उन्हें कलात्मक बनाकर 200 से भाग देने पर लग्न की अंशायु के वर्ष, शेष को 12 से गुणा कर 200 से भाग देने पर मास और शेष को 30 से गुणा कर पुनः 200 से भाग देने पर लग्न की अंशायु के दिन प्राप्त होते हैं। इसका यह उदाहरण देखिए :–

जन्मकालिक स्पष्ट लग्न 7रा. 18अं. 57क. है। इसकी राशिसंख्या (7) को हटाकर शेष 18अं. 57क. की

1137 कलाओं को 200 से भाग देने पर 5 लब्धि मिली। यह लग्न की अंशायु के वर्ष 5 हुए। शेष 137 को 12 से गुण कर 200 से भाग दिया तो लब्धि 8 मास मिले। शेष 44 को 30 से गुण कर पुनः 200 से भाग देने पर 6 दिन प्राप्त हुए। इसका अभिप्रायः है, यहां लग्न की अंशायु 5 वर्ष 8 मास 6 दिन हुई।

यह लग्न की अंशायुसाधन का प्रथम प्रकार है, जिसका **मय, यवन** एवम् पराशर आचार्यों ने प्रयोग किया है।

(2) लग्न की अंशायुसाधन का दूसरा प्रकार :– लग्न की भुक्तराशिसंख्या के बराबर लग्न के अंशायु वर्ष होते हैं। शेष अंश–कलाओं को कलात्मक बनाकर, उसे 12 से गुण कर 1800 से भाग देने पर प्राप्त लब्धि मास तथा शेष को 30 से गुण कर पुनः 1800 से भाग देने पर लग्न की अंशायु के दिन प्राप्त होते हैं। इसका यह उदाहरण देखें–

स्पष्ट लग्न 7रा. 18अं. 57क. है। इसकी भुक्तराशि तुला (7) की संख्या के तुल्य लग्न की अंशायु का वर्ष 7 हुआ। शेष 18अं. 57क. की कलाओं 1137 को 12 से गुण कर 1800 से भाग देने पर 7 मास और शेष 1644 को 30 से गुण कर पुनः 1800 से भाग देने पर लग्न की अंशायु के दिन 27 मिले। इस प्रकार यहां लग्न की अंशायु 7 वर्ष 7 मास 27 दिन हुई।

यह लग्न की अंशायुसाधन का दूसरा प्रकार है। इसे आचार्य **'मणित्थ'** मान्यता देते हैं।

यहां कुछ आचार्यों का मत है कि– उपरोक्त लग्नांशायुसाधन के प्रथम प्रकार का प्रयोग वहां करना चाहिए, जहां लग्न–नवांशेश बलवान् हो और दूसरा लग्नायुसाधनप्रकार उन स्थलों के लिए है, जहां लग्नेश बलवान् हो।

(3) लग्न की अंशायुसाधन का तृतीय प्रकार :– इस प्रकार को **'सत्याचार्य'** मान्यता देते हैं, जिसे यहां हमने (A) और (B) दो भागों में बांटा है।

(A) लग्न का भुक्तनवांश जिस राशि का है, उस राशि की संख्या के बराबर लग्न की अंशायु के वर्ष होंगे। भोग्य नवांश की भुक्त अंश–कलाओं को कलात्मक बनाकर, उसे 12 से गुणा कर 200 से भाग देने पर लब्धि मास और शेष को 30 से गुणा कर पुनः 200 से भाग देने पर लब्धि दिन होंगे। **इसका उदाहरण लीजिए–**

स्पष्ट लग्न 3रा. 8अं. 22क. है। इस कर्कलग्न के 2 नवांश भुक्त हो चुके हैं। कर्क राशि का द्वितीय नवांश सिंहराशि (यानी 5वीं राशि) का है। अतः उपरोक्त नियमानुसार इस लग्न की अंशायु के वर्ष 5 हैं। शेष (भोग्य कन्या के नवांश) की भुक्त अंश–कलाओं (1 अं. 42 क.) की कलाएं 102 हुईं। इन्हें 12 से गुणा कर 200 से भाग देने पर लब्धि 6 मास और शेष 24 को 30 से गुणा कर 200 से भाग देने पर लब्धि 4 दिन मिले। इसप्रकार इस लग्न की अंशायु 5 वर्ष 6 मास 4 दिन हुई।

लग्नांशायु (लग्न की अंशायु)साधन का यह प्रकार **सत्याचार्य–सम्मत** है। इस उपरोक्त (A) भागान्तर्गत प्रकार के बारे में कुछ आचार्यों का यह मत है कि– यदि लग्न निर्बल है, यानी वह स्वस्वामी, गुरु या बुध से दृष्ट या युत नहीं है, तब तो यह प्रकार स्वयं में पूर्ण है, अन्यथा यदि लग्न स्वस्वामी गुरु या बुध से दृष्ट या युत है (यानी वह बलवान् है), तब निम्नांकित (B) भागान्तर्गत गणना से प्राप्त लग्नांशायु के वर्षादि को भी इसमें [उपरोक्त (A) भागान्तर्गत प्रक्रिया से प्राप्त लग्नांशायु के वर्षादि में] जोड़ देना ज़रूरी है। तभी बलवान् लग्न की अंशायु प्राप्त होगी।

(B) बलवान् लग्न की भुक्त राशि की संख्या के बराबर लग्नांशायु के वर्ष मानिए। शेष भोग्य राशि के भुक्त अंश–कला को कलात्मक बनाकर उसे 12 से गुण कर 1800 से भाग देने पर मास तथा शेष को 30 से गुण कर पुनः 1800 से भाग देने पर दिन मिलेंगे। इस प्रकार प्राप्त वर्ष–मास–दिन को (A) भागान्तर्गत प्रक्रिया से प्राप्त लग्नांशायु के वर्षादि में जोड़ने पर बलवान् लग्न की वास्तविक अंशायु प्राप्त होगी।

बलवान् लग्न की अंशायुसाधन का भी उदाहरण लीजिए–

स्पष्ट लग्न 3रा. 8अं. 22क. [ऊपर दिए (A) भाग वाला ही] है। इसकी भुक्तराशि 3 है। अतः यहां लग्नांशायु के वर्ष 3 हुए। शेष भोग्यराशि (कर्क) के भुक्त अंश 8अं. 22क. की कलाओं को 12 से गुणा कर 1800 से भाग देने पर 3 मास, शेष को 30 से गुणा कर पुनः 1800 से भाग देने पर 11 दिन मिले। इस प्रकार (B) भागान्तर्गत गणनानुसार इस स्पष्ट लग्न की अंशायु 3 वर्ष 3 मास 11 दिन मिली।

अतः बलवान् लग्न की स्थिति में स्पष्ट लग्न 3रा. 8अं. 22क. की वास्तव लग्नांशायु
= (A) भागान्तर्गत गणना से प्राप्त लग्नांशायु + (B) भागान्तर्गत गणना से प्राप्त लग्नांशायु
= (5 वर्ष 6 मास 4 दिन) + (3 वर्ष 3 मास 11 दिन)
= 8 वर्ष 9 मास 15 दिन हुई।

ध्यान दें– लग्नांशायु की उपरोक्त किसी भी प्रक्रिया से प्रप्त वर्ष यदि 12 या 12 से अधिक हों तो उनमें से 12 घटाकर शेष को ही ग्रहण करना चाहिए, जैसा कि ग्रहों की अंशायुसाधन में भी किया जाता है।

लग्नांशायुसाधन के उपरोक्त तीन प्रकारों में से केवल अन्तिम (तीसरा) यानी (A) और (B) भागों में बंटा प्रकार ही **सत्याचार्य** द्वारा आयुनिर्णय में प्रयुक्त है। अतः हम **सत्याचार्य–मतानुसार** आयुनिर्णय की प्रस्तुत प्रक्रिया में इसी का प्रयोग करेंगे। शेष दो (पहली और दूसरी) प्रक्रियाओं का प्रयोग **मय, यवन, पराशर, मणित्थ** द्वारा अपनाई आयुनिर्णय की प्रक्रियाओं, जिनका हम आगामी वर्ष (2071 वि.) के पंचांग में विवेचन करेंगे, में होगा। इनका यहां स्पष्टीकरण प्रसंगवश करना जरूरी था।

ऊपर हमने गणित-प्रक्रिया द्वारा ग्रहों एवम् लग्न की अंशायु जानने का प्रकार बतलाया है। उपरोक्त इस लम्बी गणितप्रक्रिया से बचने के लिए पाठकों की सुविधार्थ आगे पृष्ठ 297 पर दो कोष्ठक [(कोष्ठक–1) एवम् (कोष्ठक–2)] दिए जा रहे हैं। इनसे ग्रहों एवम् लग्न की अंशायु के वर्ष–मास–दिन मौखिक गणनामात्र से जाने जा सकते हैं। इन कोष्ठकों की प्रयोगविधि इस प्रकार है–

कोष्ठक से ग्रह की अंशायुसाधन

स्पष्ट ग्रह की राशि–अंश–कलाओं द्वारा **कोष्ठक (1)** के **भाग (i)** से आयु (ग्रहांशायु) के वर्ष–मास–दिन उठाकर, उसमें भाग **(ii)** से शेष अंश–कला द्वारा उठाए ग्रहांशायु के मास–दिन जोड़ देने पर अभीष्ट ग्रह की अंशायु (वर्ष–मास–दिन) प्राप्त होगी।

जैसे– स्पष्ट सूर्य 6रा. 15अं. 20क. है, तो **कोष्ठक (1) भाग (i)** में 6रा. 13अं. 20क. से 10वर्ष 0मास 0दिन प्राप्त हुए। इसमें शेष 2अं. 00क. द्वारा **भाग (ii)** से 7 मास 6 दिन जोड़ने पर 10 वर्ष 7 मास 6 दिन सूर्य की अंशायु प्राप्त हुई।

कोष्ठक से सत्याचार्यसम्मत लग्नांशायुसाधन

सत्याचार्यसम्मत लग्नांशायु दो प्रकार की है–

(i) निर्बल लग्न की अंशायु [पृष्ठ **292** पर (A) भाग के अन्तर्गत चर्चित], **(ii) बलवान् लग्न की अंशायु** [पृष्ठ **292** पर (B) भाग के अन्तर्गत चर्चित]।

(i) निर्बल लग्न की अंशायु का साधन **कोष्ठक (1)** के **भाग (ii)** से किया जाएगा। यहां स्पष्ट लग्न के भुक्त नवांश की राशिसंख्या के बराबर लग्नांशायु के वर्ष होंगे। लग्न के भोग्यनवांश की भुक्त अंश–कलाओं द्वारा कोष्ठक (1) के भाग (ii) से मास–दिन उठा लीजिए। बस, यह आपके स्पष्ट लग्न की अंशायु के वर्ष–मास–दिन हैं।

जैसे– स्पष्ट निर्बल लग्न 3रा. **8अं. 22क.** है। यह लग्न कन्या के नवांश में है। यानी यहां लग्न का भुक्तनवांश सिंह है। सिंह 5वीं राशि है, अतः इस लग्न की अंशायु के वर्ष 5 हुए। लग्न के भोग्य कन्या नवांश की भुक्त 1अं. **42क.** द्वारा कोष्ठक (1) भाग (ii) से 6 मास 4 दिन मिले। अतः इस निर्बल लग्न की अंशायु 5 वर्ष 6 मास 4 दिन हुई।

(ii) बलवान् लग्न के लिए अपेक्षित अंशायु के वर्षादि **कोष्ठक (2)** के **भाग (i)** और **भाग (ii)** से स्पष्ट लग्न की राशि, अंश, कलाओं द्वारा तुरन्त प्राप्त हो जाते हैं।

जैसे–स्पष्ट लग्न 3रा. **8अं. 22क.** है। इसकी 3 रा. द्वारा कोष्ठक (2) भाग (i) से 3 वर्ष 0 मास प्राप्त किए। शेष 8अं. 22क. द्वारा कोष्ठक (2) के भाग (ii) से 3 मास 11 दिन मिले। इनका योग 3 वर्ष 3 मास 11 दिन हुआ। इसे जैसा कि, पहले बतला चुके हैं, निर्बल लग्न द्वारा प्राप्त अंशायु 5 वर्ष 6 मास 4 दिन में जोड़ने पर 8 वर्ष 9 मास 15 दिन प्राप्त हुए। यह इस 3रा. **8अं. 22क.** वाले बलवान् लग्न की **सत्याचार्यसम्मत** अंशायु हुई।

लीजिए– अब हम 'सत्याचार्य–मतानुसारी' आयुनिर्णय, जिसे 'वराहमिहिर' सर्वाधिक प्रामाणिक मानते हैं, का सोदाहरण प्रतिपादन करेंगे–

उपरोक्त विवेचन में हमने जातक के जन्मकालिक स्पष्ट सूर्यादि 7 ग्रहों एवम् लग्न के वर्षादि अंशायु साधित किए हैं। **ध्यान रहे–** उपरोक्त प्रकार से साधित यह लग्नांशायु तो स्पष्ट (Final) है। अर्थात् इसमें किसी प्रकार के संस्कार की आवश्यकता नहीं होती। इसे आयुनिर्णयार्थ यथावत् प्रयोग में लाया जा सकता है। अतः इसे हम स्पष्ट **लग्नांशायु** कह सकते हैं। लेकिन उपरोक्त प्रक्रिया से साधित ग्रह की अंशायु जरूरी नहीं कि– स्पष्ट ही हो, वह अस्पष्ट भी हो सकती है। किस ग्रह की अंशायु स्पष्ट है और किसकी अस्पष्ट– इसका निर्णय आगे बतलाए जा रहे इन चार संस्कारों से होगा। जो ग्रह इन संस्कारों में से किसी एक भी संस्कार की अपेक्षा रखता है, उसकी अंशायु अस्पष्ट है। अतः उसकी अंशायु अपेक्षित संस्कार या संस्कारों से संस्कृत होने पर ही स्पष्ट (Final) होगी (यानी तभी वह आयुनिर्णय की प्रक्रिया में प्रयोग के योग्य होगी)* । इन चार संस्कारों का विवेचन और इनसे ग्रह की अंशायु को संस्कृत करने की विधि इसप्रकार है।

ग्रहांशायु में दिए जाने वाले चार संस्कार

(1) प्रथम संस्कार (स्वोच्च–वक्रता–वृद्धिसंस्कार)– ग्रह यदि अपनी उच्च राशि में हो या वक्र हो अथवा वह उच्चस्थ भी हो और वक्र भी, तब उसकी अंशायु तिगुनी हो जाती है।

(2) द्वितीय संस्कार (स्वराश्यादि–वृद्धिसंस्कार) –ग्रह यदि **(i) अपनी राशि, (ii) अपने नवांश, (iii) वर्गोत्तम नवांश, (iv) अपने द्रेष्काण**– इन चार वर्गों में से किसी एक में या किन्हीं दो, तीन अथवा चारों में होतो उस ग्रह की अंशायु दुगुनी हो जाती है।

विशेष ध्यातव्य– यदि कहीं उपरोक्त दोनों संस्कारों (प्रथम संस्कार और द्वितीय संस्कार) के घटित होने की स्थिति बन जाए, तब वहां द्वितीय संस्कार को उपेक्षित करदें और वहां केवल प्रथम संस्कार को ही मान्यता दी जाए।

(3) तृतीय संस्कार (शत्रुक्षेत्रास्त–हानिसंस्कार)– यदि कोई मार्गी ग्रह शत्रु की राशि में हो तो उस ग्रह की अंशायु में से उसका तृतीयांश नष्ट (कम) हो जाता है। **ध्यान रहे–** वक्री ग्रह के लिए यह बात नहीं है। **किञ्च–** शुक्र और शनि को छोड़कर यदि कोई अन्य ग्रह अस्त (सूर्य के समीप आ जाने से लुप्त)⊗हो तो उसकी अंशायु का आधा भाग नष्ट हो जाता है। **ध्यान रहे–** यहां यदि कोई शुक्र–शनि से भिन्न मार्गी ग्रह शत्रुराशि में हो और साथ ही वह अस्त भी हो तब उस ग्रह की अंशायु में से उसका आधा ही घटाना चाहिए, तृतीयांश नहीं।

(4) चतुर्थ संस्कार (चक्रार्धहानि–संस्कार)– यदि कोई पापीग्रह (सूर्य, मंगल या शनि)◇ सप्तम भाव में हो तो उसकी अंशायु का छठा, अष्टम में हो तो पांचवां, नवम में हो तो चौथा, दशम में हो तो तीसरा, एकादश भाव में हो तो आधा भाग और द्वादशभाव में हो तो पूरी अंशायु नष्ट हो जाती है। यदि कोई शुभग्रह (चन्द्र–बुध–गुरु या शुक्र) सप्तम में हो तो उसकी अंशायु का 12वां, अष्टम में हो तो 10वां, नवम में हो तो 8वां, दशम में हो तो छठा, एकादशभाव में हो तो चौथा भाग, द्वादशभाव में हो तो आधी अंशायु नष्ट हो जाती है। **ध्यान रहे–** यदि एक ही भाव में अनेक ग्रह बैठे हों तो उनमें से जो अधिक बली हो, केवल उसी की अंशायु में यह

---

* *पाठक को यह जान लेना चाहिए कि– सातों ग्रहों की स्पष्ट अंशायुओं एवम लग्न की अंशायु का योग ही जातक की आयु का परिमाण होता है। अर्थात् वह उसकी जीवनावधि के वर्षादि होते हैं।*

⊗ *ग्रहों के लोप (अस्त) की तिथियां अक्षांशभेद से बहुत भिन्न–भिन्न होती हैं, जिनके निर्धारण के लिए लम्बी जटिल गणितप्रक्रियाएं हैं। दैवज्ञ लोग सामान्यतः चन्द्र का सूर्य से अन्तर 12° से कम, भौम का 17° से, बुध का 13° से, गुरु का 11° से, शुक्र का $6^\circ\frac{1}{2}$ से और शनि का 15° से कम होने पर इन ग्रहों को अस्त मानकर फलादेश करते हैं, जोकि नितान्त स्थूलतामूलक है।*

◇ *ध्यान रहे– इस आयुसाधनप्रक्रिया में केवल सूर्य–मंगल–शनि को ही क्रूर ग्रह माना गया है। यहां क्षीण चन्द्र को क्रूर नहीं माना जाता। राहु–केतु का तो इस प्रक्रिया में प्रयोग ही नहीं होता।*

चक्रार्धहानि–संस्कार करना चाहिए।*

इन चार संस्कारों को ग्रहांशायु (ग्रह की अंशायु) में देते समय इन दो निर्देशों को ध्यान में रखिए–

(i) इस संस्कारों को ग्रहांशायु में देने का कोई निश्चित क्रम नहीं है। इन्हें किसी भी क्रम में प्रयुक्त किया जा सकता है। **जैसे–** ग्रह यदि उच्चस्थ, शत्रुराशिस्थ एवं द्वादशभावस्थ हो, तब उसकी अंशायु में प्रथम (स्वोच्च वक्रतावृद्धि), तृतीय (शत्रु–क्षेत्रास्तहानि) एवं चतुर्थ (चक्रार्धहानि) संस्कारों में से कोई भी संस्कार पहले या बाद में किया जा सकता है। इनके भिन्न–भिन्न क्रमानुसार प्रयोग से परिणाम एकरूप ही मिलेगा।

(ii) **ग्रह की अंशायु में इन संस्कारों को करते समय यह ध्यान रखें–** सबसे पहले किया जा रहा संस्कार ग्रह की अंशायु में ही किया जाएगा, तदनन्तर जो दूसरा संस्कार किया जा रहा है, उसे पहले संस्कार से संस्कृत ग्रहांशायु में और इसके बाद जो तीसरा संस्कार करना है, उसे पूर्ववर्त्ती दो संस्कारों से संस्कृत अंशायु में तथा चौथा संस्कार पूर्ववर्त्ती तीन संस्कारों से संस्कृत ग्रहांशायु में करना होगा।

ग्रह की अंशायु में अपेक्षित संस्कार देने के बाद उपलब्ध (संस्कृत) अंशायु ग्रह की 'स्पष्ट अंशायु' होगी।

यदि कोई ग्रह इन (उपर्युक्त) चारों संस्कारों के क्षेत्र में नहीं आता, अर्थात् इन चारों संस्कारों में से कोई भी संस्कार उस पर लागू नहीं होता, तो उस ग्रह की अंशायु, जिसे हम पहले अस्पष्ट आयु कह चुके हैं, ही स्पष्ट अंशायु मानी जाए।

लग्न की पूर्वसाधित अंशायु तो मूलतः स्पष्ट अंशायु ही होती है– यह हम पहले बतला चुके हैं। ग्रहों एवं लग्न की स्पष्ट अंशायुओं का योग ही जातक की आयु का परिमाण होता है।

अब हमें विश्वास है– पाठक को आयुनिर्णय के सत्याचार्यसम्मत सभी नियम–उपनियम पूरी तरह स्पष्ट हो गए हैं। अतः इस विषय को और भी स्पष्ट करने के लिए उदाहरण के तौर पर एक जातक के जन्मकालीन स्पष्ट ग्रह, स्पष्ट लग्न एवं ग्रहों की तात्कालिक अंशायु तथा स्पष्ट अंशायु यहां नीचे कोष्ठक में दी गई है। इस कोष्ठक में ग्रहों की वक्रता, उच्च, वर्गोत्तम, स्वनवांश, स्वद्रेष्काण, शत्रुराशि में स्थिति आदि का भी निर्देश है, जिनके आधार पर उपरोक्त चार संस्कारों द्वारा ग्रहों की अंशायुओं को उनकी स्पष्ट अंशायुओं में बदलकर जातक की आयु की अवधि (वर्षादि) का यहां निर्णय किया गया है। यहां दी गई ग्रहों की अंशायु का साधन किस प्रक्रिया से किया गया है, इसका यहां विवेचन अनपेक्षित है, क्योंकि अंशायुसाधन की प्रक्रिया को विस्तृत गणितप्रक्रिया एवं एतत्सम्बद्ध कोष्ठकों द्वारा हम पहले ही स्पष्टता से समझा चुके हैं। यहां हम इस जातक की जन्मकालिक ग्रहांशायुओं को उनकी स्पष्ट अंशायुओं में परिवर्त्तन की प्रक्रिया का गणित–प्रदर्शनपूर्वक स्पष्टीकरण करेंगे–

प्रकृत जातक की ग्रहांशायुओं का स्पष्ट अंशायुओं में परिवर्त्तन

सूर्य–अंशायु= 5वर्ष 00मास 27दिन [यहां सूर्य चारों संस्कारों के क्षेत्र से बाहिर है, अतः इसकी अंशायु 5वर्ष 00मास 27दिन ही इसकी स्पष्ट अंशायु है।]

चन्द्र–अंशायु= 8वर्ष 00मास 07दिन [चन्द्र भी यहां चारों संस्कारों के क्षेत्र से बाहिर है, अतः इसकी भी अंशायु 8वर्ष 00मास 07दिन ही इसकी स्पष्ट अंशायु है।]

मंगल–अंशायु= 1वर्ष 11मास 05दिन [मंगल अस्त है, अतः यहां तृतीयसंस्कार 'अर्धहानि' लागू होगा। इस अनुसार इस अंशायु का आधा मान ही (0वर्ष 11मास 17दिन) इसकी स्पष्ट अंशायु है।]

बुध–अंशायु= 8वर्ष 06मास 04दिन [बुध वक्र एवम् वर्गोत्तमगत तथा अस्त है। नियमानुसार यहां प्रथम एवं द्वितीय संस्कारों में से प्रथम संस्कार त्रिगुणवृद्धि ही होगा। तदनुसार 8वर्ष 06मास 04दिन का तिगुना 25वर्ष 06मास 12दिन हुआ। इसमें से अस्तसंस्कार के कारण इसका आधा कम

---

* *यदि दो या अधिक ग्रह समान बली हों तो वहां क्या विकल्प होगा ? – इस बारे में आचार्य मूक हैं। ऐसी स्थिति में मेरी दृष्टि से तो उस भाव में निर्दिष्ट चक्रार्धहानि की मात्रा (षष्ठांश–पंचमांश आदि) को उन समान बली ग्रहों में समान रूप से बांट देना चाहिए।*

हो गया, जिससे बुध की स्पष्ट अंशायु 12वर्ष 09मास 06दिन बनी।]

गुरु–अंशायु= 8वर्ष 04मास 24दिन [गुरु वक्र, स्वनवांशगत एवं स्वद्रेष्काणगत है। यहां नियमानुसार गुरु की अंशायु में केवल प्रथम संस्कार ही लागू होगा। जिसके अनुसार इस ग्रह की अंशायु तिगुनी (25वर्ष 02मास 12दिन) हुई। यही इसकी स्पष्ट अंशायु है।]

शुक्र–अंशायु= 6वर्ष 08मास 28दिन [शुक्र स्वनवांशगत है। अतः इसकी दुगुनी अंशायु (13वर्ष 05मास 26दिन) ही इसकी स्पष्ट अंशायु है।]

शनि–अंशायु= 9वर्ष 08मास 07दिन [शनि वक्र, शत्रुराशिस्थ और नवम भावगत है। वक्र होने के कारण यहां शुत्रु राशिस्थिति वाला संस्कार नहीं होगा। केवल वक्रता तथा नवमभावस्थ–स्थिति वाले संस्कार ही यहां होंगे। तदनुसार वक्रता के कारण शनि की अंशायु तिगुनी (29वर्ष 00मास 21दिन) हुई। नवमभावस्य–स्थिति के कारण इसका चतुर्थांश इसमें से निकल जाने के कारण इसकी स्पष्ट अंशायु 21वर्ष 09मास 16दिन हुई।]
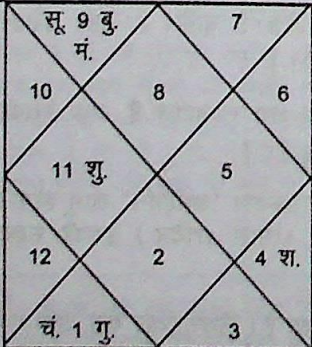
लग्न–अंशायु – 9वर्ष 03मास 05दिन [यही स्पष्ट लग्नांशायु है।]

इन सभी स्पष्ट अंशायुओं का योग 96 वर्ष 6 मास 26 दिन ही इस जातक की स्पष्ट पूर्णायु है।

आयुनिर्णय–प्रक्रिया का पूर्ण उदाहरण

जन्मतारीख : 1 जनवरी, 1977 ई.
जन्मकाल : 5 घं. 30 मि. प्रातः (भा. स्टैं. टा.)
जन्मस्थान : चण्डीगढ़ (U.T.)

जन्मकालिक

जन्मकुण्डली

सू. 9 बु. मं. | 7
10 | 8 | 6
11 शु. | 5
12 | 2 | 4 श.
चं. 1 गु. | 3

स्पष्टग्रह	रा.	अं.	क.	ग्रहांशायु में दिए जाने वाले चार संस्कारों के लिए अपेक्षित उपकरण	अंशायु वर्ष	मास	दिन	स्पष्ट अंशायु वर्ष	मास	दिन
सूर्य	8	16	55	— — — — — — — — —	5	00	27	5	00	27
चन्द्र	0	26	44	— — — — — — — — —	8	00	07	8	00	07
मंगल	8	06	26	अस्त,	1	11	05	0	11	17
बुध	8	28	22	वक्र, वर्गोत्तमगत, अस्त,	8	06	04	12	09	06
गुरु	0	28	00	वक्र, स्वनवांशगत, स्वद्रेष्काणगत,	8	04	24	25	02	12
शुक्र	10	02	29	स्वनवांशगत,	6	08	28	13	05	26
शनि	3	22	17	वक्र, शत्रुराशिगत, नवम–भावस्थ,	9	08	07	21	09	16
लग्न	7	20	53	— — — — — — — — —	9	03	05	9	03	05
जातक की स्पष्ट आयु →								96	06	26

कोष्ठक (1)
(ग्रह एवं लग्न की अंशायु)

भाग (i)

ग्रह या लग्न	ग्रह या लग्न	ग्रह या लग्न	आयु
रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	व. मा. दि.
0 00 00	4 00 00	8 00 00	0 00 00
0 03 20	4 03 20	8 03 20	1 00 00
0 06 40	4 06 40	8 06 40	2 00 00
0 10 00	4 10 00	8 10 00	3 00 00
0 13 20	4 13 20	8 13 20	4 00 00
0 16 40	4 16 40	8 16 40	5 00 00
0 20 00	4 20 00	8 20 00	6 00 00
0 23 20	4 23 20	8 23 20	7 00 00
0 26 40	4 26 40	8 26 40	8 00 00
1 00 00	5 00 00	9 00 00	9 00 00
1 03 20	5 03 20	9 03 20	10 00 00
1 06 40	5 06 40	9 06 40	11 00 00
1 10 00	5 10 00	9 10 00	12 00 00
1 13 20	5 13 20	9 13 20	1 00 00
1 16 40	5 16 40	9 16 40	2 00 00
1 20 00	5 20 00	9 20 00	3 00 00
1 23 20	5 23 20	9 23 20	4 00 00
1 26 40	5 26 40	9 26 40	5 00 00
2 00 00	6 00 00	10 00 00	6 00 00
2 03 20	6 03 20	10 03 20	7 00 00
2 06 40	6 06 40	10 06 40	8 00 00
2 10 00	6 10 00	10 10 00	9 00 00
2 13 20	6 13 20	10 13 20	10 00 00
2 16 40	6 16 40	10 16 40	11 00 00
2 20 00	6 20 00	10 20 00	12 00 00
2 23 20	6 23 20	10 23 20	1 00 00
2 26 40	6 26 40	10 26 40	2 00 00
3 00 00	7 00 00	11 00 00	3 00 00
3 03 20	7 03 20	11 03 20	4 00 00
3 06 40	7 06 40	11 06 40	5 00 00
3 10 00	7 10 00	11 10 00	6 00 00
3 13 20	7 13 20	11 13 20	7 00 00
3 16 40	7 16 40	11 16 40	8 00 00
3 20 00	7 20 00	11 20 00	9 00 00
3 23 20	7 23 20	11 23 20	10 00 00
3 26 40	7 26 40	11 26 40	11 00 00
4 00 00	8 00 00	12 00 00	12 00 00

भाग (ii)

शेष	आयु
अं. क.	मा. दि.
0 00	0 00
0 05	0 09
0 10	0 18
0 05	0 27
0 20	1 06
0 25	1 15
0 30	1 24
0 35	2 03
0 40	2 12
0 45	2 21
0 50	3 00
0 55	3 09
1 00	3 18
1 05	3 27
1 10	4 06
1 15	4 15
1 20	4 24
1 25	5 03
1 30	5 12
1 35	5 21
1 40	6 00
1 45	6 09
1 50	6 18
1 55	6 27
2 00	7 06
2 05	7 15
2 10	7 24
2 15	8 03
2 20	8 12
2 25	8 21
2 30	9 00
2 35	9 09
2 40	9 18
2 45	9 27
2 50	10 06
2 55	10 15
3 00	10 24
3 05	11 03
3 10	11 12
3 15	11 21
3 20	12 00

कोष्ठक (2)
(बलवान् लग्न की अंशायु)

भाग (i)

लग्न	आयु
रा. अं.	व. मा.
0 00	0 00
0 10	0 04
0 20	0 08
1 00	1 00
1 10	1 04
1 20	1 08
2 00	2 00
2 10	2 04
2 20	2 08
3 00	3 00
3 10	3 04
3 20	3 08
4 00	4 00
4 10	4 04
4 20	4 08
5 00	5 00
5 10	5 04
5 20	5 08
6 00	6 00
6 10	6 04
6 20	6 08
7 00	7 00
7 10	7 04
7 20	7 08
8 00	8 00
8 10	8 04
8 20	8 08
9 00	9 00
9 10	9 04
9 20	9 08
10 00	10 00
10 10	10 04
10 20	10 08
11 00	11 00
11 10	11 04
11 20	11 08
12 00	12 00

भाग (ii)

शेष	आयु
अं. क.	मा. दि.
0 00	0 00
0 20	0 04
0 40	0 08
1 00	0 12
1 20	0 16
1 40	0 20
2 00	0 24
2 20	0 28
2 40	1 02
3 00	1 06
3 20	1 10
3 40	1 14
4 00	1 18
4 20	1 22
4 40	1 26
5 00	2 00
5 20	2 04
5 40	2 08
6 00	2 12
6 20	2 16
6 40	2 20
7 00	2 24
7 20	2 28
7 40	3 02
8 00	3 06
8 20	3 10
8 40	3 14
9 00	3 18
9 20	3 22
9 40	3 26
10 00	4 00

इस प्रकार पाठकों को इसवर्ष हमने दो भिन्न–भिन्न आचार्यों (जैमिनि और सत्याचार्य) के मतानुसार जातक की आयु का निर्णयप्रकार बतलाया है। अगले वर्ष दो और गणितात्मक महत्त्वपूर्ण आयुसाधन–प्रकार बतलाएंगे और इन गणितात्मक आयुसाधन–परिणामों तथा जातकोक्त अगण्य आयुनिर्णायक योगायोगों को तर्क–निकष पर भी हम कसेंगे।

मार्त्तण्ड पंचांग के प्रमुख विक्रेता

अग्रवाल बुक डिपो, खारी बावली, दिल्ली
कमल पुस्तकालय, नई सड़क, दिल्ली
अजय पुस्तक भण्डार, नई सड़क, दिल्ली
देहाती पुस्तक भण्डार, नई सड़क, दिल्ली
सुमित पब्लिकेशन्स, चावड़ी बाजार, दिल्ली
रतन बुक कम्पनी, दरीबा कलां, दिल्ली
डी.पी. पब्लिकेशन्स, चावड़ी बाजार, दिल्ली
नाथ पुस्तक भण्डार, दरीबा कलां, दिल्ली
हिंद पुस्तक भवन, खारी बावली, दिल्ली
अमरनाथ जैन बुकसेलर, बजाजा बाजार, करनाल
परदेसी बुक डिपो, बजाजा बाजार, करनाल
भाई गुरुदयाल सिंह एण्ड संस, रेलवे रोड, अम्बाला शहर
गुजराल पुस्तक भण्डार, रेलवे रोड, अम्बाला शहर
रतन बुक डिपो, मोती बाजार, कुरुक्षेत्र
धार्मिक पुस्तक भण्डार, बिरला मंदिर, कुरुक्षेत्र
ज्ञान गंगा अध्यात्मिक सेवा केन्द्र, बिरला मंदिर, कुरुक्षेत्र
ज्ञान गंगा अध्यात्मिक सेवा केन्द्र, पुराना चौक, इन्द्री
जनरल बुक डिपो, यमुनानगर
पाल प्रकाशन, सै. 45 डी, चंडीगढ़
पापुलर बुक डिपो, सै. 22 डी, चंडीगढ़
नेशनल बुक हाउस, सै. 17 सी, चंडीगढ़
गोयल बुक डिपो, कालका
संगत राम एण्ड संस, सोलन
भाग्योदय ज्योतिष केन्द्र, सोलन
बुक सेंटर, लोअर बाजार, शिमला
चेतराम तेलू राम, लोअर बाजार, शिमला
पं. सुंदरदास एण्ड संस, लोअर बाजार, शिमला
रमेश बुक डिपो, लोअर बाजार, शिमला
गोयल बुक डिपो, कैथल
मधु बुक डिपो, बिलासपुर (हि.प्र.)
संजीव बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर शहर
जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर शहर
न्यू भारत बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर शहर
हरबंस बुक डिपो, पुस्तक बाजार, लुधियाना
अमित बुक डिपो, पुस्तक बाजार, लुधियाना
न्यू राकेश पुस्तक भण्डार, पुस्तक बाजार, लुधियाना
मोहन पुस्तकालय, पुस्तक बाजार, लुधियाना
जोधसिंह कर्मजीत सिंह बुकसेलर, पटियाला
बी. चतर सिंह जीवन सिंह एण्ड संस, माई सेवा, अमृतसर
कर्मसिंह अमर सिंह बुकसेलर, बड़ा बाजार, हरिद्वार
रणधीर बुक सेल्स, रेलवे रोड, हरिद्वार
सोनी बुक स्टॉल, घाट रोड, ऋषिकेश
राजकुमार जुगल किशोर बुकसेलर, देहरादून
जवाहर बुक डिपो, 300 स्वामी पाड़ा, मेरठ
जवाहर बुक क., बुढाणा गेट, मेरठ
अग्रवाल बुक डिपो, अमरोहा गेट, मुरादाबाद
जनरल बुक डिपो, रेलवे रोड, हिसार
नाथ पुस्तक भण्डार, रेलवे रोड, रोहतक
खन्ना बुक डिपो, प्रताप चौक, रोहतक
पवन पुस्तक भण्डार, 76डी ब्लॉक, श्रीगंगानगर
गीताजी पुस्तक भण्डार, सर्कुलर रोड, भिवानी
रामचंद्र हीरालाल बुकसेलर, खजांची बिल्डिंग, बीकानेर
सरस्वती प्रकाशन, पुरानी मंडी, अजमेर
ईश्वर लाल जी बुकसेलर, 220 त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
सुधीर एण्ड ब्रादर्स, 273 त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
पदमचनद जैन बुकसेलर, होप सर्कस, अलवर
स. सोहन सिंह बुकसेलर, 35 बक्षी गली, इंदौर
नवभारत स्टोर्स, सिरसा
उप्पल पुस्तक भण्डार, रोशन महल, पानीपत
गुप्ता स्टेशनरी मार्ट, सिटी चौक, जम्मू
बजाज बुक स्टोर, गुम्मट बाजार, जम्मू
सी. एल. अग्रवाल एण्ड संस, अलीगढ़
जनता बुक स्टॉल, चौक, कानपुर
प्रकाश बुक डिपो, श्रीराम रोड, लखनउ
मेहता पुस्तक भण्डार, मैन बाजार, गोहाना
रविन्द्र बुक डिपो, भोपाल
श्री नारायण हरेश चन्द्र बुकसेलर, जौहरी बाजार, आगरा
हिमाचल जनरल किराना स्टोर, कुनिहार
भारत बुक डिपो, रेलवे रोड, सहारनपुर
गिरधारी लाल रिक्खी राम पंसारी, सुबाथु
मोहन न्यूज एजेंसी, रामपुरा बाजार, कोटा
पं. मिश्री लाल मिश्रा, गोल बाजार, बिलासपुर (छ. गढ़)
भारतीय पुस्तक भण्डार, बेगम बाजार, हैदराबाद
गर्ग बुक कं., 106 सी.पी. टैंक, मुम्बई
शर्मा न्यूज एजेंसी, नालागढ़
धनपतराय तरसेन कुमार बुकसेलर, जिंद

इसके अतिरिक्त प्रमुख शहरों के सभी बुक स्टॉल पर पंचांग, उर्दु जंत्री, शिरोमणी तिथ पत्रिका (पंजाबी), बटुक पंचांग उपलब्ध हैं। जिन बुकसेलर्स के नाम इस सूची में नहीं आए हैं वे हमें (रुचिका पब्लिकेशन्स) अपना नाम व पता भेजकर इस सूची में प्रकाशित करा सकते हैं।

पंचांग खरीदते समय टाइटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम, जिस पर 'स्व. इन्द्रचन्द गुप्ताजी' की फोटो लगी हुई है, लगा हुआ अवश्य देख लें। यदि पंचांग पर होलोग्राम नहीं लगा हुआ है तो यह समझिए कि यह नकली पंचांग है। इसकी सूचना हमें निम्नलिखित पते पर दिजिए। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा एवं उसको उचित पुरस्कार दिया जाएगा। यदि किसी भी पुस्तक विक्रेता के यहाँ से बिना होलोग्राम लगा हुआ पंचांग प्राप्त होता है तो उसकी जिम्मेवारी उस विक्रेता की होगी, इसका ध्यान रखें। अतः होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें एवं बेंचें।

रुचिका पब्लिकेशन्स

459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्र आदि कम्प्यूटर से तैयार की गई (स्वनिर्मित) सारणियों से आवश्यक सभी संस्कार देकर बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं। जन्मपत्र आदि बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय लिखना न भूलें। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेशसहित बनाए जाते हैं।

भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 700 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 1200 रु. है। विदेशी जन्मपत्र की फीस कम से कम 1500 रु. है। भारतीय टेवा की फीस 100 रु. एवं दशामात्र टेवे की फीस 500 रु. है।

यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है कि– **इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। भारतीय वर्षफल की फीस 500 रु. व विदेशी वर्षफल की फीस 1,000 रु. है।**

प्रत्यक्ष मिलकर शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने एवम् कुण्डलीमिलान की फीस 251 रु. है। फोन द्वारा मुहूर्त एवं मिलान जानने की फीस 1100 रु. है। सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 201 रु. है।

नोटः– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा। डाकव्यय अलग होगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। **एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन; रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि तथा सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 5000 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50000+500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार विमर्श' के अन्त में देखें।**

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. एवं Pin Code लिखना न भूलें।

पण्डित जी से मिलने हेतु

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय– 7 से 10 A.M.

पंडित जी से मिलने का समय – 9 A.M. से

दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्ता[illegible] दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अदभुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। **मूल्य 2500 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय, कुल राशि 2550 रु. भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।**

सिद्ध शनियन्त्र– विधिपूर्वक शुभमुहूर्त्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। **भेंट– 1100 रु., डाकव्यय अलग।**

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजर्बा लें। **भेंट– 2100 रु.,** डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तुजर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। **भेंट– 1100 रु.,** डाकव्यय अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। **भेंट– 1100 रु.,** डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।
हरवर्ष 21 से 31 दिसंबर तक भी कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्रव्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103,
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]
Website: www.shrimartand.com
... Kurali Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-5002274

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(प्रकाशित हो चुकी है।)

लेखक:— प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है। ध्यान दें– गतवर्षीय विज्ञापन में इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या केवल 120 लिखी गई थी, लेकिन विषयवृद्धि के कारण इसकी पृष्ठसंख्या अब 222 हो गई है। अतः अब इसका संशोधित मूल्य Rs. 500/– निर्धारित किया गया है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303